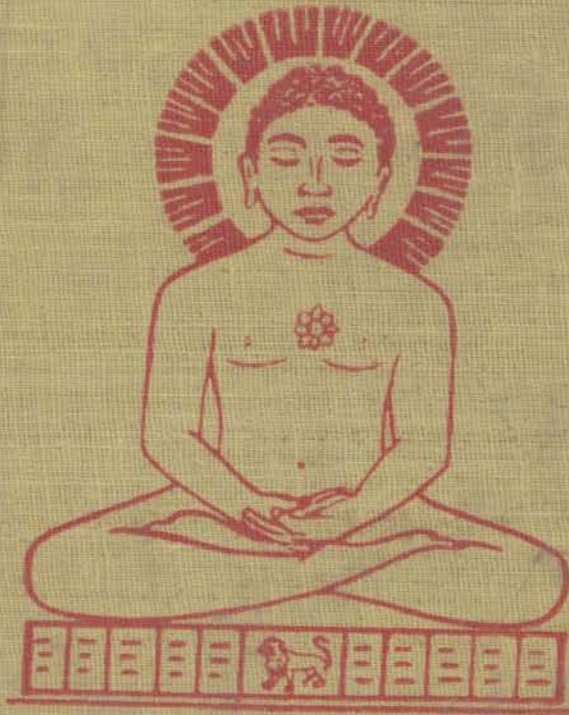


अवंगसत्ताणि

४

[खण्ड १]
ओवाइयं * रायपसेणियं * जीवाजीवाभिगमे



वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
युवाचार्य महाप्रज्ञ

आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में
निर्गम्य पाठ्यक्रम

उवंगसुत्तारिणि ४

(खण्ड १)

ओवाइयं • रायपसेणियं • जीवाजीवाभिगमे

धावना प्रमुखः
आचार्य तुलसी

संपादकः
युवाचार्य महाप्रज्ञ

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

प्रकाशक :

जैन विश्व भारती,
लाडनू

प्रबंध सम्पादक :

श्रीचन्द्र रामपुरिया,

आर्थिक सहयोग :

श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :

विक्रम सम्वत् २०४४ (दीपावली)
ई० १९८७

पृष्ठांक : ८००

मूल्य

४००/-

मुद्रक :

मित्र परिषद् कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित
जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनू (राजस्थान)

On the occasion of Ācārya Tulsi Amrit Mahotsava Year

Niggantḥam Pāvayaṇam

UVANĠA SUTTANĪ

IV

(PART 1)

OVĀIYAM • RĀYAPASEṆIYAM • JĪVĀJĪVĀBHIGAME

(Original Text Critically Edited)

Vācanā-pramukha :
ĀCĀRYA TULSI

Editor :
YUVĀCĀRYA MAHĀPRAJŅA

Publisher :
JAIN VISHVA BHARATI
LADNUN (RAJASTHAN)

Publisher :

**JAIN VISHVA BHARATI
Ladnun—341 306**

Managing Editor :

Shrichand Rampuria,

By Munificence :

**Shri Ramlal Hansraj Golchha
Viratnagar (Nepal)**

Year of Publicatton :

**Vikram Samvat 2044 (Dipavali)
1987 A.D.**

Pages : 800

Price i 400/-

Printers :

**JAIN VISHVA BHARATI PRESS,
[Established through the financial co-operation of
Mitra Parishad, Calcutta)
Ladnun (Rajasthan)**

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तुलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोधपूर्ण-सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है :

संपादक : **युधाचार्य महाप्रज्ञ**

पाठ-संशोधन सहयोगी : **मुनि सुदर्शन**

” **मुनि मधुकर**

” **मुनि हीरालाल**

शब्दकोश : ”

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

समर्पण

पुट्टो वि पण्णापुरितो सुदवखो,
आणा-पहाणी जणि जस्त निच्चं ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्षुस्स तस्स प्पणिहाणपुब्बं ॥

विलीडियं आगममुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं ।
सज्जाय-सज्जाण-रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुब्बं ॥

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मन भाणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुब्बं ॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पट्ट,
होकर भी आगम-प्रधान था ।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से ।

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।
श्रुत-सद्धान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से ।

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में ।
हेतुभूत श्रुत सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से ।



प्रकाशकीय

आगम संपादन एवं प्रकाशन की योजना इस प्रकार है—

१. आगम-सुक्त ग्रंथमाला—मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण ।
२. आगम-अनुसंधान ग्रंथमाला—मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण ।
३. आगम-अनुशीलन ग्रंथमाला—आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण ।
४. आगम-कथा ग्रंथमाला—आगमों से संबंधित कथाओं का संकलन और अनुवाद ।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रंथमाला—आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण ।
६. आगमों के केवल हिंदी अनुवाद के संस्करण ।

प्रथम आगम-सुक्त ग्रंथमाला में निम्न ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं—

- (१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि
- (२) आयरो तह आधारचूला
- (३) निसीहज्झयणं
- (४) उववाइयं
- (५) समवाओ
- (६) अंगसुत्ताणि (खं० १)—इसमें आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग—ये चार अंग समाहित हैं ।
- (७) अंगसुत्ताणि (खं० २)—इसमें पंचम अंग भगवती प्रकाशित है ।
- (८) अंगसुत्ताणि (खं० ३)—इसमें ज्ञाताधर्मकथा, उपायकदशा, अंतकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं ।
- (९) नवसुत्ताणि (खं० ५)—इसमें 'आवस्सयं, दसवेआलियं' उत्तरज्झयणाणि, नंदी, अणुओगदाराइं, दसाओ, कप्पो, ववहारो, निसीहज्झयणं—ये नौ आगम ग्रंथ हैं ।

उक्त में से प्रथम पांच ग्रंथ जैन श्वेताम्बर तेरांथी महासभा, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुए हैं एवं अंतिम चार ग्रंथ जैन विश्व भारती, लाइडन द्वारा प्रकाशित हुए हैं ।

द्वितीय आगम अनुसंधान ग्रंथमाला में निम्न ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं—

- (१) दसवेआलियं

- (२) उत्तरञ्जयणाणि (भाग १ और २)
- (३) ठाणं
- (४) समवाजो
- (५) सूयगडो (भाग १ और भाग २)

उक्त में से प्रथम दो ग्रन्थ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुए हैं और अंतिम तीन ग्रन्थ जैन विश्व भारती, लाडनू द्वारा प्रकाशित हुए हैं। दसवेआलियं का द्वितीय संस्करण भी जन विश्व भारती, लाडनू द्वारा प्रकाशित हुआ है।

तीसरी आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला में निम्न दो ग्रन्थ निकल चुके हैं—

- (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन ।
- (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन ।

चौथी आगम-कथा ग्रन्थमाला में अभी तक कोई ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हो पाया है।

पाँचवीं वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला में दो ग्रन्थ निकल चुके हैं—

- (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति खं० १)
- (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति खं० २)

छठी ग्रन्थमाला में केवल आगम हिंदी अनुवाद ग्रन्थमाला के संस्करण के रूप में एक 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है।

उक्त प्रकाशनों के अतिरिक्त दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन (मूल पाठ मात्र) गुटकों के रूप में प्रकाशित किए जा चुके हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन उबंगमुत्ताणि, खंड १ में (१) ओवाइयं (२) रायपसेणियं और (३) जीवाजीवाभिगमे—इत तीन उपांग आगमों का पाठान्तर सहित मूलपाठ मुद्रित है। साथ ही साथ इन तीनों उपांगों की संयुक्त शब्दसूची भी अन्त में संलग्न कर दी गई है। भूमिका में इन ग्रन्थों का संक्षेप में परिचय प्राप्त है, अतः यहाँ इस विषय पर प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है।

आगम प्रकाशन कार्य की योजना में निम्न महानुभावों का सहयोग रहा—

- (१) सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी) ।
- (२) रामलालजी हंसराजजी गोलछा, विराटनगर ।
- (३) स्व० जयचंदलालजी गोठी, सरदारनगर ।
- (४) रामपुरिया चेरिटेबल ट्रस्ट, कलकत्ता ।
- (५) वेगराज भंवरलाल चोरडिया चेरिटेबल ट्रस्ट ।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है। इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

यह ग्रन्थ जैन विश्व भारती के निजी मुद्रणालय में मुद्रित होकर प्रकाशित हो रहा है। मुद्रणालय के स्थापन में मित्र-परिषद्, कलकत्ता के आर्थिक-सहयोग का सौजन्य रहा, जिसके लिए उक्त

संस्था को अनेक धन्यवाद है।

यह ग्रन्थ आचार्य तुलसी अमृत-महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित हो रहा है।

आगम-संपादन के विविध आयामों के वाचना-प्रमुख हैं आचार्यश्री तुलसी और प्रधान संपादक तथा विवेचक हैं युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी। इस कार्य में अनेक साधु-साध्वी सहयोगी रहे हैं।

इस तरह अथक परिश्रम के द्वारा प्रस्तुत इस ग्रन्थ के प्रकाशन का सुयोग पाकर जैन विश्व भारती अत्यंत कुतर्ज है।

जैन विश्व भारती

१६-११-८७

लाडनू (राज०)

श्रीचंद्र रामपुरिया

कुलपति

सम्पादकीय

प्रस्तुत पुस्तक में तीन ग्रन्थ हैं—ओवाइयं, रायपमेणियं और जीवाजीवाभिगमे ।

ओवाइयं

औपपातिक का पाठ आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर स्वीकार किया गया है । प्रस्तुत सूत्र में वाचनान्तरों की बहुलता है । यह सूत्र वर्णनकोश है । इसलिए अन्य आगमों में स्थान-स्थान पर 'जहा ओववाइए' इस प्रकार का समर्पण-वचन मिलता है । उन आगमों के व्याख्याकारों द्वारा अपने व्याख्या-ग्रन्थों में अवतरित पाठ तथा कहीं-कहीं समर्पण-सूत्रों के पाठ औपपातिक के स्वीकृत पाठ में नहीं मिलते हैं । वे पाठ वाचनान्तर में प्राप्त हैं । समर्पण-वचन पढ़ने वालों के लिए यह एक समस्या बन जाती है ।

प्रस्तुत आगम का पाठ आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर ही नहीं, किन्तु अन्य आगमों व व्याख्या-ग्रन्थों में प्राप्त अवतरणों व समर्पणों के आधार पर भी निर्धारित होना चाहिए था । किन्तु समग्र अवतरणों व समर्पणों का संकलन हुए बिना वैसा करना संभव नहीं ।

इस विषय में कुछ संकलन हमने किया है—

भगवई

७।१७५	एवं जहा ओववाइए जाव
७।१७६	एवं जहा उववाइए (दो बार)
७।१९६	जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते
९।१५७	“जहा ओववाइए जाव एगाभिमुहे ।” “एवं जहा ओववाइए जाव तिविहाए” ।
९।१५८	“जहा ओववाइए जाव सत्यवाह” । “जहा ओववाइए जाव खत्तियकुंडग्गामे” ।
९।१६२	ओववाइए परिसा वण्णओ तथा भाणियव्वं ।
९।२०४	“जहा ओववाइए जाव मगणतसमणुत्तिहंती” । “एवं जहा ओववाइए तहेव भाणियव्वं” ।
९।२०४	जहा ओववाइए जाव महापुरिसं
९।२०८	जहा ओववाइए जाव अभिनंदता
९।२०९	एवं जहा ओववाइए कूणिओ जाव निग्गच्छइ
११।५६	जहा ओववाइए
११।६१	जहा ओववाइए कूणियस्स
११।८५	जहा ओववाइए जाव गहणयाए

११।५८, १६८	एवं जहेव ओववाइए तहेव
११।१३८	जहा ओववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणवरे
११।१५४	एवं जहा दढपइण्णस्स
११।१५६	एवं जहा दढपइण्णे
११।१५६	जहा ओववाइए
११।१६६	जहा अम्मडो जाव बंभलोए
१२।३२	एवं जहा कूणिओ तहेव सव्व
१३।१०७	जहा कूणिओ ओववाइए जाव पज्जुवासइ
१४।१०७	एवं जहा ओववाइए जाव आराहमा
१४।११०	एवं जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया
१५।१८६	एवं जहा ओववाइए दढप्पइण्णवत्तव्वया
१५।१८६	एवं जहा ओववाइए जाव सव्वदुक्खाणमंतं
२५।५६६	जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए
२५।५७०	जहा ओववाइए जाव लूहाहारे
२५।५७१	जहा ओववाइए जाव सव्वगायं

भगवई वृत्ति

पत्र ७	ओपपातिकात् सव्याख्यातोऽत्र दृश्यः
पत्र ११	ओपपातिकवद्वाच्या
पत्र ३१७	“एवं जहा उववाइए” त्ति तत्र चेदं सूत्रमेवम्
पत्र ३१८	“एवं जहा उववाइए जाव” इत्यनेनेदं सूचितम्
पत्र ३१९	“जहा चेव उववाइए” त्ति तत्र चैवमिदं सूत्रम्
पत्र ४६२	“जहा उववाइए” त्ति तत्र चेदं सूत्रमेवं लेशतः
पत्र ४६३	“जहा उववाइए” त्ति तदेव लेशतो दृश्यते
पत्र ४६३	“एवं जहा उववाइए” तत्र चैतदेवं सूत्रम्
पत्र ४६३	“जहा उववाइए” त्ति चेदमेवं सूत्रम्
पत्र ४६३	“जहा उववाइए परिमावन्नओ” त्ति यथा कौणिकस्योपपातिके
पत्र ४७६	“जहा उववाइए” त्ति एवं चैतत्तत्र
पत्र ४७६	“जहा उववाइए” त्ति अनेन यत्सूचितं तदिदम्
पत्र ४८१	“जहा उववाइए” त्ति करणादिदं दृश्यम्
पत्र ४८२	“एवं जहा उववाइए” त्ति अनेन यत्सूचितं तदिदम्
पत्र ५१६	“जहा उववाइए” इत्येतस्मादतिदेशादिदं दृश्यम्
पत्र ५२०	“एवं जहा उववाइए” इत्येतत्करणादिदं दृश्यम्
पत्र ५२१	“एवं जहेवे” त्यादि “एवम्” अनंतरदशितेनाभिलापेन यथोपपातिके सिद्धान-
पत्र ५२१	धिकृत्य संहननाद्युक्तं तथैवेहापि
	वाक्यपद्धतिरौपपातिकप्रसिद्धाऽध्येता

पत्र ५४२	“जहा उववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे” त्ति यथौपपातिकेऽट्टणसाला व्यतिकरो.....
पत्र ५४५	“जहा दढपइन्ने” त्ति यथौपपातिके दूढप्रतिज्जोऽधीतस्तथाऽयं वक्तव्यः तच्चैवम्
पत्र ५४५	“एवं जहा दढपइन्ने” इत्यनेन यत्सूचितं तदेवं दृश्यम्
पत्र ५४८	“जहा उववाइए” इत्यनेनयत्सूचितम्
पत्र ५४९	“जहा अम्मडो” त्ति यथौपपातिके अम्मडोऽधीतस्तथाऽयमिह वाच्यः
पत्र ५६३	“एवं जहा उववाइए जाव आराहण” त्ति इह यावत्करणादिदमर्थतो लेशेन दृश्यम्—
पत्र ५६३	“एवं जहे” त्यादिना यत्सूचितम्
पत्र ६६६	“एवं जहा उववाइए” इत्यादि भावितमेवाभ्मडपरिवाजककथानक इति ।
पत्र ६२४	“जहा उववाइए” त्ति अनेनेदं सूचितम्
पत्र ६२४	“जहा उववाइए” त्ति अनेनेदं सूचितम्
पत्र ६२४	“जहा उववाइए” त्ति अनेनेदं सूचितम्

ज्ञातावृत्ति पत्र २ वर्णकग्रन्थोन्नावसरे वाच्यः—

विवागसुयं

१।१।७०	जहा दढपइण्णे
२।१।३६	जहा दढपइण्णे
२।१।११	जहा दढपइण्णे

रायपसेणियं

सू० ३, ४	असोयवरपायवे पुढविसिलापट्टए वत्तव्वया ओववाइयगमेणं नेया
सू० ६८८	एगदिसाए जहा उववाइए जाव अप्पेगतिया

रायपसेणिय वृत्ति

पृ० ३	सम्प्रत्यस्या नगर्या वर्णकमाह— (यहां औपपातिक का उल्लेख नहीं)
पृ० ८	यावच्छब्दकरणात् “सद्दिए कित्तिए नाए सच्छत्ते” इत्याद्यौपपातिकग्रन्थप्रसिद्ध- वर्णकपरिग्रहः
पृ० १०	अशोकवरपादपस्य पृथिवीशिलापट्टकस्य च वक्तव्यता औपपातिकग्रन्थानुसारेण ज्ञेया ।
पृ० २७	यावच्छब्दकरणाद्राजवर्णको देवीवर्णकः समवसरणं चौपपातिकानुसारेण ताव- द्वक्तव्यं यावत्समवसरणं समाप्तम्
पृ० ३०	यावच्छब्दकरणात् “आइकरे तित्थगरे” इत्यादिकः समस्तोपि औपपातिकग्रन्थ- प्रसिद्धो भगवत्तद्वर्णको वाच्यः, स चातिगरीयानिति न लिख्यते, केवलमौपपातिक- ग्रन्थादवसेयः
पृ० ३६	बह्वे उग्गा भोगा इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्तं सर्वमवसातव्यं यावत् समग्रापि राज- प्रभृतिका परिगत्युपासीता अवतिष्ठते

पृ० ११६ “एवं जहा उच्चवाइए तथा भाणियच्चं” इति एवं यथा औपपातिके ग्रन्थे तथा वक्तव्यम् । तच्च एवं

पृ० २८८ इत्यादिरूपा धर्मकथाऔपपातिकग्रन्थादवसेया

जंबुद्वीवपण्णत्ती

२।६५ एवं जाव णिग्गच्छइ जहा ओववाइए जाव आउलबोलबहुलं
२।८३ एवं जहा ओववाइए रुच्चेव अणगारवण्णओ जाव उड्डं जाणु
३।१७८ एवं ओववाइयगमेणं जाव तस्स

जंबुद्वीवपण्णत्ती वृत्ति

शा० वृ० पत्र १४ “वण्णओ” त्ति ऋद्धस्तिमितसमूहा इत्यादि
“ ” “ ” औपपातिकोपाङ्गप्रसिद्धः समस्तोपि वर्णको द्रष्टव्यः
“ ” “ ” विरातीतमित्यादिर्वर्णकस्तत्परिक्षेपि वनधण्डवर्णकसहितऔपपातिकतोऽवसेयः
“ ” “ ” “वण्णओ” त्ति अत्र राज्ञः “मत्तयाहिमवन्तमहन्ते” त्यादिको राज्ञाश्च “सुकु-
मालपाणिपाये” त्यादिको वर्णकः प्रथमोपाङ्गप्रसिद्धोऽभिधातव्यः
“ ” “ ” यथा च समवसरणवर्णकं तथौपपातिकग्रन्थादवसेयं
“ ” “ ” “तए णं मिहिलाए णयरीए शिघाडमे” त्यादिकं “जाव” पंजलिउडा पज्जुवासंती”
ति पर्यन्तमौपपातिकगतमवगन्तव्यम्
एवोपाङ्गादवगन्तव्यमिति

शा० वृ० पत्र १४३ “यथौपपातिके” एवं यथा प्रथमोपाङ्गे निपातः, औपपातिक-
गमश्चार्यं

शा० वृ० पत्र १५४ यथौपपातिके सर्वोऽणगारवर्णकस्तथाऽत्रापि वाच्यः
शा० वृ० पत्र १५५ कियद्यावदित्याह— ऊर्ध्वजानुनी येषां ते ऊर्ध्वजानवःअत्र यावत्पद-
संग्राह्यः “अप्पेगइया दोमासपरिआया” इत्यादिकः औपपातिकग्रन्थो विस्तर-
भयान्न लिखित इत्यवसेयम्

शा० वृ० पत्र २६४ एवमुक्तक्रमेण औपपातिकगमेन—प्रथमोपाङ्गगतपाठेन तावद् वक्तव्यं यावत्तस्य
राज्ञः पुरतो महाश्वाः

शा० वृ० पत्र ३२५ वृक्षवर्णनं प्रथमोपाङ्गतोऽवसेयम्

सूरपण्णत्ती वृत्ति

पत्र २ यावच्छब्देनौपपातिकग्रन्थप्रतिपादितः समस्तोपि वर्णकः आश्चर्यजनसमूहा” इत्या-
दिको द्रष्टव्यः

पत्र २ तस्यापि चैतस्य वर्णको वक्तव्यः स औपपातिकग्रन्थादवसेयः

पत्र २ तस्य राज्ञः तस्याश्च देव्या औपपातिकग्रन्थोक्तो वर्णकोऽभिधातव्यः

पत्र २ समवसरणवर्णनं च भगवत औपपातिकग्रन्थादवसेयम्

पत्र ३ “बह्वे उग्गा भोगा” इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्तम्

पत्र ३ अत्र यावच्छब्दादिदमौपपातिकग्रन्थोक्तं द्रष्टव्यम्

चंद्रपण्णत्ती हस्तलिखित वृत्ति

पत्र ५	औपपातिकग्रन्थप्रसिद्धः समस्तोपि वर्णको द्रष्टव्यः स च ग्रन्थगौरवभयान्नलिख्यते केवलं तत एवौपपातिकादवसेयः
पत्र ५	औपपातिकग्रन्थोक्तो वेदितव्यः
पत्र ५	तस्य राजस्तस्याश्च देव्या औपपातिक ग्रन्थोक्तो वर्णकोऽभिधातव्यः
पत्र ५	समवसरणवर्णनं च भगवत औपपातिकग्रन्थादवसेयम्
पत्र ६	“बह्वे उग्गा भोगा” इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्तं सर्वमवसेयम्

उक्तांग

१।१४१	जहा दढपइण्णो
२।१३	जहा दढपइण्णो

दसाओ

१०।२	रायवण्णओ एवं जहा ओववातिए जाव चेल्लणाए—
१०।१४-१६	सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिउजमाणेणं उववाइयगमेणं नेयव्वं जाव पज्जु-वासइ—

दसा. हस्त. वृत्ति

वृत्ति पत्र ११	औपपातिकग्रन्थप्रतिपादितः समस्तोपि वर्णको वाच्यः स चेह् ग्रंथगौरवभयान्न लिख्यते केवलं तत एवौपपातिकादवसेयः । दसा. ५।४
द० ५।५ ह०वृ० पत्र ११	चैत्यवर्णको भणितव्यः सोप्यौपपातिकग्रन्थादवसेयः
द० ५।६ वृ० पत्र ११	औपपातिकोक्तं पाठसिद्धं सर्वमवसेयं.....
द० १०।२ ह०वृ० पत्र २५	“तस्य वर्णको यथा औपपातिकान्ति ग्रन्थेऽभिहितस्तथा”
द० १०।२ ह०वृ० पत्र २५	विस्तरव्याख्या तूपपातिकानुसारेण वाच्या—
द० १०।३ ह०वृ० पत्र २५	आदिकरः यावत्करणात्.....समस्तो औपपातिकग्रन्थप्रसिद्धो.....केवल- मौपपातिकग्रन्थादवसेयः—
द० १०।६ ह०वृ० पत्र २६	जावत्ति यावत्करणात् जणवूहेइ वा.....उग्गा भोगा—इत्याद्यौपपातिक- ग्रन्थोक्तम्—
द० १०।१४-१६ ह०वृ०पत्र २८	उववातियगमेणीति औपपातिकग्रन्थोक्तकीणिकवन्दनगमनप्रकारेणाय- मपि निर्गतः
द० १०।२१ ह०वृ० पत्र २९	इहावसरे धर्मकथा औपपातिकोक्ता भणितव्या

अन्य आगमों में ओवाइयं के सूत्र :—

ओवाइयं	भगवई	राय०	जंबु०
सू० ३२	२५।५५६-५६३		
सू० ३३	२५।५६४-५६८		
सू० ३६	२५।५७६-५७९		
सू० ४०	२५।५८२-५९८		

ओवाइयं	भगवई	राय०	जंबु०
सू० ४३	२५।६००-६१२		
सू० ४४	२५।६१३-६१८		
सू० ६४	६।२०४	सू० ४६-५५	३।१७८
सू० ६५			३।१८०
सू० ६६			३।१७९

समर्पण सूत्र

संक्षिप्त पद्धति के अनुसार औपपातिक में समर्पण के अनेक रूप मिलते हैं :—

जाव—उदए जाव भोगे (११७)

एवं जाव—अपडिविरया एवं जाव (१६१)

सेसं तं चेव—परलोगस्स आराहगा सेसं तं चेव (१५७)

एवं—एवं उवज्झायारणं थेराणं (१६)

अभिलावेणं—एवं एएणं अभिलावेणं (७३)

एवं तं चेव—सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव गण्णत्थ गंगामट्टियाए (१२३)

भाणियव्वं—एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं (४०)

कंदमंतो एएसि वण्णओ भाणियव्वो जाव सिविय (१०)

णयव्वं—त चेव पसत्थं णयव्वं । एवं चेव वड्विणओ वि एएहि पएहि चेव णयव्वो (४०)

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं । इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है ।

सूत्र १	कुक्कुड	कुंकड	(ख)
” १	०मुमुंढिं	०मुसुंढिं	(क, ख)
” १	०वक्क	०वक्क	(ग)
” १	०भत्त	०हत्त	(क)
” १	०कीला	०खीला	(क, ख)
” १	०तुरंग	०तुरंग	(क)
” १	दरिसणिज्जा	दरिसणीया	(क, ख)
” २	कालागुरु	कालागुरु	(क)
” २	०कहग	०कहक	(क, ख, ग)
” ४	०निकुरंबभूए	०णितरंबभूए	(ख)
” ५	दरिसणिज्जा	दरिसणिज्जा	(क, ख)
” ५	गुलइय	गुलुइय	(क)
सूत्र ६	अब्भंतर	अब्भंतर	(क)
” ६	बाहिर	वहिर	(ग)
” ६	पीवेहि	णितेहि	(क)

१३	°हलधर°	°हलहर°	(व)
१६	°हणुए	°हणूए	(क)
१६	भुयगीसर°	भुयईसर°	(क, ख, ग)
१६	अकरंडुय°	अकरंदुय°	(क, ख)
१६	°च्छर°	°यब°	(व)
१६	गुप्फे	°गोफे°	(ग)
१६	°वीडेणं	°पीडेणं	(क, ख)
२१	जया	जदा	(क)
२६	आयावाया	आदावाया	(ग)
२६	परवाया	परवादा	(ग)
३१	ओमोयरिया	अवमोयरिया	(व)
३२	बारसभत्ते	बारसमभत्ते	(क)
३२	चउहस°	बारसमेभत्ते	(ग)
३२	सोलस°	चोहसम°	(क, ख)
३२	चउमासिए	चोहसमे°	(ग)
३३	°भोइत्ति	सोलसम°	(क, ख)
३४	दव्वामि°	सोलसमे°	(ग)
४०	इंतस्स	अउम्मासिए	(ख)
४३	°पजुत्ते	°भोईत्ति	(ग)
४३	उसण्ण°	दव्वामि°	(क)
४३	°रुई	इंतस्स	(ग)
४४	दरिसणावरणिज्ज°	°पजुत्ते	(ग)
४६	°वीची°	खोसण्ण°	(क, ग)
४६	तोयपट्टुं	°रुयी	(ग)
४६	°वण्णिय°	दंसणावरणीय	(ख)
५०	विहस्सती	°वीची°	(ग)
५१	°तिरीडधारी	°तोयपट्टुं	(क)
सूत्र ५२	महाफलं	°वण्णिय°	(ग)
५२	गतगया	विहस्सती	(ग)
५२	पच्चोरुहंति	°किरीडधारी	(ख)
५५	पाडियक्कपाडियक्काइं	महाफलं	(क, ख, ग)
५६	पओय-लट्ठिं	गतगया	(क)
		पच्चोरुहंति	(ग)
		पाडियक्कपाडियक्काइं	(ख)
		पतोद-लट्ठिं	(क)
		पयोत्त-लट्ठिं	(ग)

॥ ६३	अम्भंगेहि	अम्भंगेहि	(क)
॥ ६३	°मिसमिसंत°	°मिसमिसंत°	(ग)
॥ ६३	°सुसलिट्ट°	°सुसलिट्ट°	(क, ग)
॥ ६३	°बीइयंगे	°बीइयंगे	(क)
॥ ६४	कूवग्गाहा	कूतुयग्गाहा	(ग)
॥ ६४	°तुरगणं	°तुरगणं	(क)
॥ ६४	सखिखिणी°	°सखिखिणी°	(क)
॥ ६७	°मुदंग°	°मुदंग°	(ग)
॥ ६८	भट्टितं	भट्टितं	(क)
॥ ७१	°कोंच°	°कुच°	(ग, वृ)
॥ ८२	वइर°	वज्ज°	(ख)
॥ ८२	°णिघसं°	°निकसं°	(ख)
॥ ८६	वेयणिज्जं	वेदणिज्जं	(क, ग)
॥ ९०	से जे	सेज्जे	(क, ख)
॥ ९२	से जाओ	सेज्जाओ	(क, ख)
॥ ९२	°उरियाओ	°पुरियाओ	(क, ग)
॥ ९५	कुक्कुइया	कोकुइया	(ख, ग)
॥ ९७	°अहव्वण	°अथव्वण°	(क, ख, ग)
॥ १०५	अलाउ°	लाउ°	(ग)
॥ ११७	चरिमेहि	चरमेहि	(क)
॥ १५८	°वेंटिया	°वंटिया	(ख)
॥ १५९	भूइ°	भूई°	(क, ख, ग)
॥ १६४	अणगारा	अणकारा	(क, ग)
॥ १७०	तेल्ला°	तिल्ल° (क); तेल° (ख)	
॥ १७५	वय°	वइ°	(क, ख, ग)
॥ १९५	गा. १ पइट्टिया	पत्तिट्टिया	(क, ख)

प्रति-परिचय

(क) यह प्रति 'श्रीचन्द्र गणेशदास गर्धया पुस्तकालय', सरदारशहर से श्री मदनचन्द जी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४० तथा पृष्ठ ८० है। प्रत्येक पत्र ११।। इंच लम्बा तथा ४।। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में ४ से १३ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४६ तक अक्षर हैं। पत्र के चारों ओर सूक्ष्माक्षरों में टीका लिखी हुई है। प्रति सुन्दर, कलात्मक तथा पठित मालूम होती है। प्रति के अंत में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है :—

इति श्री उववाईसुचं समाप्तं ॥ ग्रन्थ ११६७ ॥छ॥ संवत् १९२३ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ दिने ।
आगरा नगरे । पातिसाह श्री अकबर जलालदीन राज्य प्रवर्त्तमाने ॥ श्री बृहत् खरतर
गच्छालंकार श्री पूज्यराज श्री ६ जिनरिघसूरिविजयराज्ये पंडित श्रीलब्धिवर्द्धन

मुनिभिरुपपातिका नाम उपांगं लिखापितं ॥छ॥ वाच्यमानं चिरं नद्यात् ॥ शुभं भवतु
लेखकवाचकयोः ॥श्री॥

(ख) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ५६ तथा पृष्ठ ११८ हैं। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में पाठ की ७ से ९ तक पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। पाठ के ऊपर-नीचे दोनों ओर राजस्थानी भाषा का अर्थ है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है :—

श्री उवाई उपांग पढमं समत्तं ॥ ग्रन्थाग्रं १२२५ ॥ ॥छ॥ ॥श्री॥ ॥ संवत् १६६५ वर्षे पोष मासे शुक्लपक्षे सप्तमी तिथौ श्री सोमवारे। श्री श्री विक्रम नगरे। महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंहजी विजयराजे पं० कर्मसिंह लिपीकृता ॥छ॥

(ग) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं। प्रत्येक पत्र १०।। इंच लम्बा तथा ४।। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पंक्ति में १५ पंक्तियाँ तथा प्रत्येक पंक्ति में ४६ से ४८ तक अक्षर हैं। प्रति के अन्त में है—
उवाईयं समत्तं ॥ ग्रन्थाग्रं १२०० शुभमस्तु ॥छ॥ श्री ॥ लिखा है किन्तु संवत् नहीं दिया है। पर पत्र, अक्षर तथा चित्रों के आधार से यह प्रति १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

(वृ) हस्तलिखित वृत्ति की प्रति: यह 'श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय', सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसकी पत्र संख्या ७५ तथा पृष्ठ १५० हैं। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियाँ तथा प्रत्येक पंक्ति में ५५ से ६० तक अक्षर हैं। प्रति १०। इंच लम्बी तथा ४। इंच चौड़ी है। प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है। अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—

शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ लेखकपाठकधीश्व भद्रं भवतु ॥छ॥

संवत् १९९६ वर्षे मार्गशीर्ष शुदि भोमे लिखितं ॥छ॥ श्रीः ॥

यादृशं पुस्तके दृष्ट्वा ॥ तादृशं लिखितं मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धं वा ॥ मम दोषो न दीयते ॥ छ ॥छ॥

(वृ०पा०) वृत्ति-सम्मत पाठान्तर

कुछ विशेष-हस्तलिखित वृत्ति तथा मुद्रित वृत्ति में वाचनान्तर पाठ सदृश नहीं है। हमने मूल आधार हस्तलिखित वृत्ति को माना है।

रायपसेणियं

प्रस्तुत सूत्र का पाठ-निर्णय हस्तलिखित आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर किया गया है। सूर्याभ के प्रकरण में जीवाजीवाभिगम और दृढप्रतिज्ञ के प्रकरण में औपपातिक सूत्र का भी उपयोग किया है। वृत्तिकार ने स्थान-स्थान पर वाचनभेद की प्रचुरता का उल्लेख किया है। वृत्तिकाल में पाठभेद की समस्या उग्र थी, उत्तरकाल में वह उग्रतर हो गई। फिर भी हमने उपलब्ध साधन सामग्री का सूक्ष्मेक्षिकया प्रयोग कर पाठ निर्धारण किया है। अधिकार की भाषा में कोई नहीं कह सकता कि यह पाठ-निर्धारण सर्वात्मना त्रुटि रहित है, किन्तु इतना कहा जा सकता है कि इस कार्य में तटस्थता और धृति का सर्वात्मना उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत सूत्र की पाठपूर्ति अल्पन्त श्रम साध्य हुई है। पाठपूर्ति से सूत्र का शरीर बृहत् हुआ है। साथ-ही-साथ पाठ-बोध की सुगमता और कथावस्तु की सरसता बढ़ी है।

शब्दान्तर और रूपांतर

ध्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं; इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है।

सूत्र संख्या	८	मउड	मतुड	(क)
"	८	°धेयं	°धेज्जं	(क)
"	९	णाइ°	णादि°	(क,ख,ग,च)
"	१०	उकिट्टाए	ओकिट्टाए	(छ)
"	१२	पट्ठे	वट्ठे (ख,ग); मट्ठ	(च)
"	१३	णाह्य	णातिय	(क,ख,ग,घ,च,छ)
"	१५	हंत	हंद	(च)
"	१५	अभिवंदए	अभिवंदते	(छ)
"	२४	आयंस°	आतंस°	(घ,च)
"	३७	मिउ°	मउ°	(क,ख,ग)
"	३७	पासाईए	पासातीए	(क,ख,ग,घ)
"	४०	अतीव	अतीत	(च)
"	४८	तिसोबाण°	तिसोमाण°	(क,ख,ग,च)
"	५६	महालतेणं	महालएणं	(ख,ग,घ)
"	५६	वेमाणित्तेहि	वेमाणित्तेहि	(क,ख,ग,घ)
"	६९	विरचिय	विरतिय	(क,ख,ग,च)
"	७१	°वायाणं	वाइयाणं	(क,ख,ग,छ)
"			वाययाणं	(घ)
"	७५	ओणमंति	तोमंति	(क,घ)
"	७६	मउ	मिउ	(क्वचित्)
"	७७	°टाणं	°ताणं	(क,च,छ)
"	११८	मत्थए	मत्थते	(क,ख,ग,घ)
"	११८	जएणं विजएणं	जतेणं विजतेणं	(क,ख,ग,घ)
"	१२४	बहुईओ	बहुगीओ	(क,ख,ग,घ)
"			बहुगीतो	(च,छ)
"	१२६	दार°	वार°	(क,ख,ग,च,छ;)
"			वार	(घ)
"	१३०	*कवेल्लुयाओ	*कवेलुयातो	(क,ख,ग,घ)
"	१३५	संखलाओ	संखलाओ	(क्वचित्)
"	१३७	पगंठगा	पकंठगा	(घ,च)
"	१५४	साए पहाए पएसे	साते पहाते पतेसे	(क,ख,ग,घ, च,छ)

” १५६	सव्वोउय°	सव्वोउत° (क,ख,ग,घ)
” १७३	पिणद्ध	°विणद्ध° (घ)
” १७३	तिठण	तित्थाण° (क,ख,ग,घ,च,छ)
” १८५	आईणग	आदीणग (क,ख,ग,घ)
” १८६	उद्धं	उद्धं (क)
” १९७	°वेइया	°वेतिया (क,ख,ग,घ,च,छ)
” १९७	फलएसु	°फलतेसु (क,ख,ग,घ,च,छ)
” २१६	तओ	तगो (क); ततो (छ)
” २२८	°बिटा	°बेटा क,ख,ग,छ; बेटा (च)
” २४५	सुविरइ-रयत्ताणे	सुइरइ-रइत्ताणे (क,ख,ग,घ,छ)
” २६२	कडुच्छुयं	कडुच्छयं (क,ख,ग,घ)
” ६५४	चरियासु	चलियासु (क,ख,ग)
” ६६४	पीय°	पील° (क,ख,ग)
” ६८३	°विद°	°वद° (घ)
” ६८७	°वूहे	°पूहे (क,ख,ग)
” ६९५	°परिभाइत्ता	परिभागेत्ता (क,ख,ग,घ,च,छ)
” ७०६	कोट्टयाओ	कोट्टाओ (क,घ)
” ७२०	अगिलाए	अइलाए (क,च)
” ७५४	अओ°	अयो° (क,ख,ग); अय° (घ)
” ७५५	भिच्चा	भेच्चा (घ)
” ७६०	किसिए	कसिए (क,ख,ग,घ,छ)
” ७७१	वाउयागस्स	वाउयागस्स (क,ख,ग,घ,च,छ)
” ७८७	भिक्खुयाणं	भिछुयाणं (घ, च)
” ७९१	°प्पओणेण	प्पयोणेण (घ)

प्रति-परिचय

(क) यह प्रति सरदारसहर 'श्रीचन्द गणेशदास मधैया पुस्तकालय' से प्राप्त है। इसके ४६ पत्र तथा ६८ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०। इंच तथा चौड़ाई ४। इंच है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५० से ५५ तक अक्षर हैं यह प्रति वि० सं० १६७१ की लिखी हुई है। इसकी पुष्पिका निम्नोक्त है—

‘तमो जिणार्णं जियभयणं णमोसुय देव्याए भगवईए णमो पणत्तीए भगवईए णमो भगवओ अरहओ पामस्स पस्से सुपस्से पस्स णणीणभोए । छ । रायपसेणइयं समत्तं । छ । ग्रंथाग्रं २०७६ समथित्त-मिदं सूत्रं छ संवत् १६७१ वर्षे भाद्रवा सुदि ११ ।

आगे भी पुष्पिका है पर उस पर हड़ताल फेरी हुई है।

(ख), (ग) पत्र क्रमशः ५५, ६१। ये दोनों प्रति 'क' प्रति के सदृश ही हैं।

(घ) यह प्रति 'यति कवकचन्दजी' पाली (मारवाड़) की है। इसके पत्र ५४ व पृष्ठ १०८ हैं।

प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०॥ इंच व चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४६-४८ अक्षर हैं। यह प्रति वि० सं० १५६६ की लिखी हुई है। प्रति के अन्त में निम्न पुष्पिका है—

॥छा॥ शुभं भवतु लेखकपाठकयोः श्री संघस्य च ।। सं० १५६६ वर्षे चैत्र सुदि २ तिथौ अष्टौह श्रीमदणहिल्लपत्तने श्री बृहत्खरतरगच्छे श्रीवर्धमानसुसिंताने श्री जिनभद्रसूरिपट्टानुक्रमेण श्री जिन-हंससूरिराज्ये वाचनाचार्यजयाकारगणिशिष्ये वा० धर्मविलासगणवाचनार्थं भ० वस्तुपालभार्यया लीली श्रावकया । पुत्ररत्न भ० सालिगपुमुखपरिवार स श्रीकया सु श्रेयार्थं च लेखितं श्री राजप्रश्नीयोपांगं ।

(च) यह प्रति पूनमचन्द बुद्धमल दुधोड़िया, छापर (राजस्थान) के संग्रह से प्राप्त है। इस प्रति के ४२ पत्र तथा ८४ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १२ इंच तथा चौड़ाई ५ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ५४ तक अक्षर हैं। प्रथम दो पत्रों में २ चित्र हैं। लिपि सुन्दर पर अशुद्धि बहुल है। यह प्रति अनुमानित सोलहवीं शताब्दि की है।

(छ) यह प्रति भी उपरोक्त दुधोड़िया, छापर (राजस्थान) के संग्रह से प्राप्त है इस प्रति के पत्र ४१ व पृष्ठ ८२ हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५७ से ६० अक्षर हैं। लिपि साधारण पर शुद्ध है। अन्त में लिखा है—लिपि सं० १६६५ वर्षे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे सप्तमी शुक्ले बब्बरकपुरे पं० लब्धि कल्लोलगणिलेखि ।

(व) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गर्धया पुस्तकालय' सरदारशहर से प्राप्त है। इसके ५२ पत्र तथा १०४ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०॥ इंच तथा चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रत्येक पत्र में १७ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ६५ से ७० तक अक्षर हैं। यह प्रति वि० सं० १६०५ में लिखी हुई है। इसकी पुष्पिका निम्नोक्त है—

इति मलयगिरिविरचिता राजप्रश्नीयोपांगवृत्तिका समाप्तिमिति । प्रत्यक्षरगणनया ग्रन्थाग्रं ॥छा॥ ॥छा॥ प्रत्यक्षर गणनातो ग्रन्थमानं विनिश्चितं । सप्तत्रिंशत्शतान्यत्र । श्लोकाणां सर्वं संख्ययाः ॥छा॥ ग्रन्थाग्रं श्लोक ३७०० ॥छा॥ श्री ॥ संवत् १६०५ वर्षे श्रावण सुदि १३ भीमे पत्तन वास्तव्यं ॥ पं० रद्रासुत्जिगनाथ लिखितं ॥ शुभं भवतु ॥

जीवाजीवाभिगमे

प्रस्तुत सूत्र का पाठ निर्णय हस्तलिखित आदर्शों तथा वृत्तिके आधार पर किया गया है।

मलयगिरि की वृत्ति प्राचीन आदर्श के आधार पर निर्मित है इसीलिए ताडपत्रीय आदर्श और वृत्ति का पाठ समान चलता है। इस विषय में ३।२।१८, ४।५।७, ५।७।८, ८।२।६ सूत्र तथा इनके पाद टिप्पण द्रष्टव्य है। अर्वाचीन आदर्शों में पाठ का इतना बड़ा अन्तर मिलता है यह बहुत ही विमर्शनीय और अन्वेषणीय है।

जीवाजीवाभिगम के आदर्शों में पाठ की एक समानता नहीं है इसकी सूचना जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के वृत्तिकार शान्तिचन्द्र ने भी दी है।'

१. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वृत्ति पत्र १०८—

अत्र चाधिकारे जीवाभिगमसूत्रादर्शे क्वचिदधिकपदम् अपि दृश्यते तत्तु वृत्तावत्याख्यातं स्वयं पर्यालोच्यमानमपि न नार्थप्रदमिति न लिखितं, तेन तत् सम्प्रदायादवगन्तव्यं, तमन्तरेण सम्यक् पाठशुद्धेरपि कर्तुमशक्यत्वादिति ।

उपाध्याय शान्तिचन्द्र ने कल्पवृक्ष के विवरण का पाठ जीवाजीवाभिगम से उद्धृत किया है। चतुर्थ कल्पवृक्ष के स्वरूप वर्णन में उन्होंने 'कणग निगरण' पाठ उद्धृत किया है। उसका अर्थ किया है सूवर्ण राशि।^१ जीवाजीवाभिगम की वृत्ति में 'कणग निगरण' पाठ व्याख्यात है—“कनकस्य निगरणं कनकनिगरणं गालितं कनकमिति भावः।” लिपि-परिवर्तन के कारण पाठ परिवर्तन हुआ है। आदर्शों में 'कूटागारट्ट' पाठ मिलता है। मुद्रित तथा हस्तलिखित वृत्ति में भी 'कूटागाराद्यानि' पाठ उपलब्ध होता है।

जीवाजीवाभिगम की वृत्ति में यह व्याख्यात नहीं है। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की वृत्ति में इसकी व्याख्या मिलती है—“कूटाकारेण—शिखराकृत्याद्यानि”^२

आचार्य मलयगिरि ने आदर्शगत पाठभेद का स्वयं उल्लेख किया है।^३ वृत्तिकार ने जिन गाथाओं को अन्यत्र कहकर उद्धृत किया है। अर्वाचीन आदर्शों में वे गाथाएं मूल पाठ में समाविष्ट हो गईं।^४

वृत्ति में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की टीका का उल्लेख मिलता है। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के व्याख्याकार मलयगिरि के उत्तरवर्ती ही हैं। इसलिए यह उल्लेख प्रक्षिप्त है अथवा मलयगिरि के सामने उसकी कोई प्राचीन व्याख्या रही है यह अन्वेषण का विषय है।^५

कहीं-कहीं वृत्ति में भी कुछ विमशंसीय लगता है। 'सिरिवच्छ' पाठ की व्याख्या वृत्तिकार ने 'श्रीवृक्ष' की है। प्रकरण की दृष्टि से 'श्रीवत्स' होना चाहिए।^६

मूल टीकाकार और मलयगिरि के सामने पाठभेद तथा अर्थभेद की जटिलता रही है और व्याख्याकारों के समय में इस विषय में कुछ चर्चाएं भी होती रही हैं। इस विषय में वृत्ति का एक उल्लेख बहुत ही ऐतिहासिक महत्त्व का है। वृत्तिकार ने लिखा है कि यह सूत्र विवित्र अभिप्राय वाला होने के कारण दुर्लक्ष्य है। इसकी व्याख्या सम्यक् सम्प्रदाय के आधार पर ही ज्ञातव्य है। सूत्र

१. जम्बूद्वीप वृ० प० १०२—“कनकनिकरः सुवर्णराशिः।”

२. जीवाजीवाभिगम वृ० प० २६७।

३. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति वृ० प० १०७

वेदों जीवाजीवाभिगम ३।५६४ का पादटिप्पण।

४. (क) जीवाजीवाभिगम वृ० प ३२१

“इह बहुषा सूत्रेषु पाठभेदाः परमेतावानेव सर्वत्राप्यर्थो नार्थभेदान्तरमित्येतद्ब्याख्यानुसारेण सर्वेष्यनुगन्तव्या न मोग्धव्यमिति।”

(ख) जीवा० वृ० प० ३७६

इह भूयान् पुस्तकेषु वाचनभेदो गलितानि च सूत्राणि बहुषु पुस्तकेषु ततो यथाऽवस्थितवाचनभेदप्रतिपत्त्यर्थं गलितसूत्रोद्धारणार्थं चैवं सुगमान्यपि विव्रियन्ते।

५. जीवा वृ० प० ३३१, ३३३, ३३४ तथा ३।८२०, ८३०, ८३४, ८३७ के पादटिप्पण द्रष्टव्य हैं।

६. जीवाभिगम वृ० प० ३८२ स्वर्चिस्सिहादीनां वर्णनं दृश्यते तद् बहुषु पुस्तकेषु न दृष्टमित्युपेक्षितं अवश्यं चेत्तद्व्याख्यानेन प्रयोजनं तर्हि जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति टीका परिभाषनीया, तत्र सविस्तरं तद् व्याख्यानस्य कृतत्वात्।

७. जीवा जीवाभिगम वृ० प० २७१—

“श्रीवृक्षेणांकितं—लाञ्छितम् वृक्षो येषां ते श्री वृक्षलाञ्छित वक्षसः”।

के अभिप्राय को जाने बिना भनमाने ढंग से व्याख्या करना उनकी अवहेलना करना है।^१ सूत्र की आशातना या अवहेलना न हो। इस दृष्टिकोण में पाठ और अर्थ की परम्परा को सुरक्षित रखने में काफी योग दिया है फिर भी बुद्धि की तरतमता और लिपिप्रमाद के कारण पाठ और अर्थ में परिवर्तन हुआ है। पाठ की विविधता के कारण हमें भी पाठ के विधारेण में काफी श्रम करना पड़ा है। पाठान्तर और उनके टिप्पणों से उसका अंकन किया जा सकता है।

‘ता’ संकेतित प्रति संक्षिप्त पाठप्रधान है, जैसे १:४१ सूत्र से --“ताई भते कि पुडाईं आहारेंति अपु मोयमा पुडा णो अपु। आंगा णो अणोगा अणंतरो णवरं अणूइं पि आ बायराईं पिआ उड्ढं वि इ आदि पि इ सन्निसए णो अन्निसए आणुपुव्वि णो अणानुपुव्वि अःच्छदि वाघातं प सिय तिदिसि ष्क। नो वण्णतो काला नी गंधतो सु २ असतो नो फासहो तेति पोरारणं विपरिणामेत्ता अपुव्व वण्ण गुण ष्क उप्पाएत्ता आतसरीर खेतंतागडे पोग्गले सब्बप्पणत्ताए आहारआहारेंति”।

लिपि-दोष के कारण “कि तिदिसि के स्थान में “कतिदिसि” (क)। ‘ता’ का अनेक जगह पाठान्तर नहीं लिया है, वहां पाठ बहुत संक्षिप्त है।

शब्दान्तर और रूपान्तर

१।१	जिणक्खायं	जिणक्खायं (ख)	जिणक्खातं (ता)
”	अणुवीइ	अणुवीतियं	(क,ख)
”	रोएमाणा	रोतमाणा	(ता)
१।१४	संघयण	संघतण	(ता)
”	सण्णाओ	सण्णातो	(क)
”	जोगुवतोगे	जोगुवतोगे	(क)
१।१६	कोहकसाए	कोहकसाते	(क)
१।२१	कण्हलेस्सा	किण्हलेस्सा	(ग,ट)
१।२६	आणपाणु°	आणपाणु°	(ट)
१।७२	छिरविरालिया	छिरविरालिया (क)	छिरिविरालिया (ख;)

१. जीवाजीवाभिगम वृ०प० ४५० —

“सूत्राणि ह्यमूनि विचित्राभिप्रायतथा दुर्लक्ष्याणीति सम्यक्संप्रदायादवसातस्थानि, सम्प्रदायश्च यथोक्तस्वरूप इति न काचिदनुपपत्तिः, न च सूत्राभिप्रायमज्ञात्वा अनुपपत्तिरुद्भावनीया, महाशातनायोगतो महाजनर्थप्रसक्तेः सूत्रकृतो हि भगवन्तो भहीयांसः प्रमाणोक्ताश्च महोयस्तरैस्तत्कालवर्त्तिभिरन्यैविद्विद्विस्ततो न तत्सूत्रेषु जनागप्यनुपपत्तिः, केवलं सम्प्रदायावसाये यत्नो विधेयः ये तु सूत्राभिप्रायमज्ञात्वा यथा कथञ्चिदनुपपत्तिमुद्भावयन्ते ते महतो महीयस आशातयन्तीति दीर्घतरसंसारभाजः, आह च टीकाकारः --“एषं विचित्राणि सूत्राणि सम्यक्संप्रदायादवसेयानोत्पत्तिनाय तदभिप्रायं नानुपपत्तिचोदना कार्या, महाशातनायोगतो महाजनर्थप्रसंगदिति” एवं च ये सम्प्रति दुष्प्रमानुभावतः प्रवचनस्योपप्लवाय धूमकेतव इवोस्थिताः सकलकाल सुकराव्यवच्छिन्नसुविधिभागान्छात्सुविहितसाधुषु मस्तरिणस्तेऽपि वृद्धपरम्परायातसम्प्रदायादवसेयं सूत्राभिप्रायमसायोत्सुत्रं प्ररूपयन्तो महाशातनाभाजः प्रतिपत्तव्या अपकर्णयितव्याश्च वृत्तस्तत्त्ववेदिभिरिति कृतं प्रसङ्गेन”।

१।७३	थीह	छिरियविरालिया (ग,ट); छीरवीराली (ता)
१।१००	तहूपगारा	धिभु (क)
१।१०१	दुआगइया	तहूपकारा (क,ख,ग,ट)
१।११६	आहारो	दुयागतिया (ग)
२।५६	पलिवोवमाई	आघारो (ता)
२।६०	अभधियाई	पलितोवमाई (क,ख,ग,ट)
२।७४	फुफुअग्गि	अभधियाई (ग)
२।६२	वासपुहत्तं	फुफुअग्गि (क); फुफुअग्गि (ग)
२।२४१	एतासि	वासपुहत्तं (क); वासपुहुत्तं (ग,ट)
२।१४६	वणस्सति°	एतेसि (क,ख,ग,ट); एगासि (ता)
३।५	जोयण	वणस्सति° (क,ख,ग)
३।६	आवबहुले	जोतण (क)
३।३३	अबाघाए	अवबहुले (क); आवबहुले (ता)
३।४८	जे णं इमं	आबाघाए (क,ख,ट)
३।७३	असीउत्तरे	जेणिसं (ता)
३।७७	अडहत्तरे	आसीउत्तरे (ता)
३।७७	किण्णपुड	अडसत्तरी (ग); अट्टुत्तरे (ता)
३।८०	बाहल्लेणं	किण्णपुड (क,ग)
३।६४	केरिसगा	पाहलेणं (ता)
३।६६	फुडित°	केरिसगा (क,ख,ग)
३।११८	उसिणवेदणिज्जेसु	फुडिगं (ता); स्फुटित° (मवृ)
३।११८	विरचिय	उसिणवेदणिज्जेसु (ता)
३।११६	एगाहं	विरइय (क,ग,ट)
३।२३४	एत्थ	एकाहं (ख,ग,ट)
३।३२३	जंबूणतमया	तत्थ (क,ख,ग,ट); यत्थ (ता)
३।३७१	उवगारियलयणे	जंबूणतमया (क); जंबूणतामया (ग,ट,ता)
३।३७२	खंभुग्गय	ओवारियलयणे (क,ख,ग,ट,त्रि;)
३।४१२	धूवधडियाओ	उवकारियलयणे (ता)
३।५६३	ओविय°	धंभुग्गय (क,ग)
३।७३३	बायालीसं	धूमधडियाओ (क,ख)
३।७५०	,	उभितिय (क,ख); उव्विय (ग)
३।७४८	केलासे	बादालीसं (ता)
३।७६४	एगुणयालं	वातालीसं (ता)
		केतिलासि (ख); कइलासे (ग,ट,त्रि)
		इऊयालं (क); ऊयालं (ख,ता;)
		इगुयालं (ग)

३।७६८	इगयालीसं	एयालीसं (क,ख,ट);	एगयालीसं (ग)
		इतालीसं	(ता)
३।८२६	तेणट्ठेणं	एएणट्ठेणं	(ग,त्रि)
३।८३८।१३	मणुस्ताणं	मणूसणं	(ता)
३।८४०	कयाइ	कदायी	(ता)
३।८४१	बलाहका	बलाहता	(ता)
३।८४१	बादरे विञ्जुकारे	वातरे विञ्जुतारे	(ता)
	बादरे थणियसहे	वातरे थणितसहे	(ता)
३।८४१	नदीओइ वा णिहीति वा	णंदीति वा णिधयोति वा	(ता)
३।८६०	सुपक्कखोयरसेइ	सुपिक्कखोतरसेति	(ता)
३।८७७	खोदवरणं	खोयवरणं	(क,ख,ग,ट,त्रि)
३।९४९	खोदसरिसं	खोतोदसरिसं	(ता)
३।९६८	हेट्ठिपि	हट्ठिपि (ग,ट,ता); हिट्ठिपि	(त्रि)
३।१००७	सव्वहेट्ठिल्लं	सव्वहेट्ठिमयं	(ता)
३।१००७	सव्वोवरिल्लं	सव्वुप्परिल्लं	(क,ख,ट)
३।१००७	सव्वब्भितरिल्लं	सव्वब्भंतरं	(ता)
५।३७	णिओदा	णिओता	(ता)
५।५४	°णिओदजीवा	°णिओदजीवा	(क,ख,ग,ट,त्रि)
५।५८	°णिओदजीवा	°णिओयजीवावि	(क,ख,ग,ट,त्रि)
६।११	अणाइए	अणादीए	(ता)
६।२८	सकासाई	सकवादी	(ता)
६।१३१	ओहिदंसणी	अवघिदंसणी	(ग,त्रि)
		ओघिदंसणि	(ता)

प्रति परिचय

(क) (मूलपाठ) पत्र ६४ संवत् १५७५ (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गर्धैया पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र ६४ व पृष्ठ १८८ हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ५३-५६ तक अक्षर हैं। इसकी लम्बाई १३। इंच व चौड़ाई ५ इंच है। यह अति सुन्दर लिखी हुई है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

संवत् १५७५ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ भृगुवासरे पत्तननगरमध्ये मोढजातीय जोशी वीट्टलमुत्त लटकणलिखितम् । छ।

यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥१॥ शुभं भवतु, लेखक-पाठकयोः कल्याणमस्तु छ । छ । श्री । श्री । छ । प्र० ५२००

(ख) (मूलपाठ) पत्र ८०

यह 'प्रति' पूर्वलिखित सरदारशहर की है। इसके पत्र ८० व पृष्ठ १६० हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ६१ करीब अक्षर हैं। इसकी लम्बाई १२ इंच व चौड़ाई ४। इंच है।

‘प्रति’ प्राचीन है व बहुत जीर्ण है, अन्त में लिपि संवत् नहीं है परन्तु अनुमानतः १६ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

(ग) (मूलपाठ) पत्र ६० सचित्र

यह प्रति श्रीचन्द्र गणेशदास गधैया पुस्तकालय की है। इसके पत्र ६० व पृष्ठ १८० हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्ति में ६३ करीब अक्षर लिखे हुए हैं। इसकी लम्बाई ११।॥ इंच व चौड़ाई ४।॥ इंच है। प्रति के आदि पत्र में तीर्थंकर देव की प्रतिमा का सुनहरी स्याही में सुन्दर चित्र है। प्रति बहुत सुन्दर लिखी हुई है। ‘प्रति’ के मध्य ‘बावडी’ व उसके मध्य लाल बिन्दु है।

इस प्रति के अन्त में पुष्पिका व लिपि संवत् नहीं है परन्तु अनुमानतः १६ वीं शताब्दी की होनी चाहिए। यह प्रति ‘ताडपत्रीय प्रति’ व टीका से प्रायः मेल खाती है।

‘ता’ ताडपत्रीय फोटो प्रिन्ट (जैसलमेर भण्डार)

यह प्रति टीका से प्रायः मिलती है। इसमें तीसरी ‘प्रतिपत्ति’ के १०५ सूत्र से ११५ सूत्र तक के पत्र नहीं हैं।

(ट) (टब्बा) लिपि संवत् १८०० यह प्रति संघीय ग्रन्थालय लाडनू की है। यह प्रति कालू-गणी द्वारा पठित (पारायणकृत) है व उनके द्वारा स्थान-स्थान पर पाठ संशोधन भी किया हुआ है।

जीवाजीवाभिगम टीका (हस्तलिखित)

यह प्रति ‘श्रीचन्द्रजी गणेशदासजी गधैया’ पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र २५० व पृष्ठ ५०० हैं। प्रत्येक पत्र में पंक्ति १५ अक्षर ६५ करीब है। लम्बाई १० × ४ $\frac{1}{2}$ लिपि सं० १७१७, प्रति की लिपि सुन्दर है।

सहयोगानुभूति

जैन-परंपरा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवद्विगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गये थे, वे इस लंबी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गये हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थदृष्टिसमन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारंभ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कार्य के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुस्तर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूँ।

प्रस्तुत ग्रन्थ के ओवाइयं तथा रायपसेणियं के पाठ सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी तथा जीवाजीवाभिगमे के पाठ सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी और मुनि हीरा-

लालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है। जीवाजीवामिगमे के पाठ सम्पादन में मुनि छत्रमल जी, मुनि बालचंदजी, मुनि हंसराजजी और मुनि मणिलाल जी का भी सहयोग रहा है।

ओवाइयं की शब्द सूची मुनि श्रीचन्दजी तथा रायपसेणियं और जीवाजीवामिगमे की मुनि हीरालालजी ने तैयार की है। प्रूफ संशोधन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि हीरालालजी और साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी व समणी कुसुम प्रज्ञा का सहयोग रहा है।

ओवाइयं तथा रायपसेणियं का ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलालजी "आमेठ" ने तैयार किया है। इस ग्रन्थ के प्रथम दो परिशिष्ट मुनि हीरालालजी ने तैयार किए हैं। पाठ के पुनर्निरीक्षण के समय भी मुनि हीरालालजी विशेषतः संलग्न रहे हैं।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचंदजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया/कुलपति-जैन विश्व भारती/प्रारंभ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर वे अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष खेमचन्दजी सेठिया और मंत्री श्रीचन्द बंवाणी का भी योग रहा है। संपादकीय और भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद जैन विश्व भारती के अन्तर्गमन (अनेकान्त) छावपीठ के डायरेक्टर नयमल टांटिया ने तैयार किया है।

एक लक्ष्य के लिये समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार पूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अध्यात्म साधना केन्द्र, महरोली

अक्षय तृतीया

१ मई, १९८७

नई दिल्ली

—युवाचार्य महाप्रज्ञ

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक का नाम उद्वेगमुत्तानि है। इसमें बारह उपांगों का पाठान्तर तथा संक्षिप्तपाठ सहित मूलपाठ है। इसके दो खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में तीन उपांग हैं:—

१. ओवाइयं
२. रायपसेणियं
३. जीवाजीवाभिगमे।

द्वितीय खंड में नौ उपांग हैं—

१. पणवणा
२. जंबुद्वीवपण्णती
३. चंदपण्णती
४. सुरपण्णती
५. निरयावलियाओ [कप्पियाओ]
६. कप्पवडितियाओ
७. पुप्फियाओ
८. पुप्फचूलियाओ
९. वण्हदसाओ

प्राचीन व्यवस्था के अनुसार आगम के दो वर्गीकरण मिलते हैं।

१. अंगप्रविष्ट

२. अंगबाह्य

उपांग नाम का वर्गीकरण प्राचीनकाल में नहीं था। नन्दीसूत्र में उपांग का उल्लेख नहीं है। उससे पहले के किसी आगम में उपांग की कोई चर्चा नहीं है। तत्त्वार्थभाष्य में उपांग का प्रयोग मिलता है। उपलब्ध प्रयोगों में सम्भवतः यह सर्वाधिक प्राचीन है।^१

अंग और उपांग की संबन्ध योजना

तत्त्वार्थभाष्य में उपांग शब्द का उल्लेख है, किन्तु उसमें अंगों और उपांगों का सम्बन्ध चर्चित नहीं है। इसकी चर्चा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की वृत्ति तथा निरयावलिका के वृत्तिकार श्रीचन्द्रसूरि द्वारा रचित सुखबोधा सामाचारी नामक ग्रन्थ में मिलती है।^१ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की वृत्ति के अनुसार अंगों और उपांगों की सम्बन्ध-योजना इस प्रकार है:—

अंग

आचारांग

सूत्रकृतांग

स्थानांग

समवायांग

भगवती

उपांग

औपपातिक

राजप्रश्नीय

जीवाजीवाभिगम

प्रज्ञापवा

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति

१. तत्त्वार्थभाष्य १/२० : तस्य च महाविषयत्वात्तत्तानर्थानर्थिकृत्य
प्रकरणसामर्थ्यपेक्षमंगोपांगनानात्वम् ।

२. सुखबोधा सामाचारी, पृष्ठ ३४ ।

ज्ञाताधर्मकथा	चन्द्रप्रज्ञप्ति
उपासकदशा	सूर्यप्रज्ञप्ति
अन्तकृतदशा	निरयावतिका [कल्पिका]
अनुत्तरोपपातिकदशा	कल्पावतसिका
प्रश्नव्याकरण	पुष्पिका
विपाकभृत	पुष्पचूलिका
दृष्टिवाद	वृष्णिदशा ^१

१. ओवाइयं

नाम बोध

प्रस्तुत आगम का नाम ओवाइयं [औपपातिक] है। इस का मुख्य प्रतिपाद्य उपपात है। समवसरण इसका प्रासंगिक विषय है। मुख्य प्रतिपाद्य के आधार पर प्रस्तुत सूत्र का नाम 'ओवाइयं' किया गया है। इसका संस्कृत रूप औपपातिक होता है। प्राकृत नियम के अनुसार वकार का लोप करने पर 'ओववाइयं' का 'ओवाइयं' रूप बन गया। नन्दी सूत्र में यही नाम उपलब्ध होता है।^१

विषय-वस्तु

औपपातिक का मुख्य विषय पुनर्जन्म है। उपपात के प्रकरण में अमुक प्रकार के आचरण से अमुक प्रकार का आगामी उपपात होता है, यही विषय चर्चित है।

उपोद्घात प्रकरण में अनेक वर्णक हैं—नगरी वर्णक, चैत्य वर्णक, उद्यान वर्णक, राज वर्णक आदि-आदि। इन वर्णकों से प्रस्तुत सूत्र वर्णक सूत्र बन गया। इन्हीं वर्णकों के कारण अनेक समर्पणों में इसका उपयोग हुआ है।

व्याख्या ग्रंथ

औपपातिक का प्रथम व्याख्या ग्रन्थ नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरिकृत वृत्ति है। उसके प्रारम्भिक श्लोक से यह ज्ञात होता है कि अभयदेवसूरि को इस वृत्ति से पूर्व कोई अन्य वृत्ति प्राप्त नहीं थी। उन्होंने अन्य ग्रन्थों का अवलोकन कर इसका निर्माण किया था। स्वयं उन्होंने लिखा है—

श्रीवद्धमानमानम्य, प्रायोऽन्यग्रन्थवीक्षिता ।

औपपातिकशास्त्रस्य, व्याख्या काचिद्विधीयते ॥

वृत्तिकार ने कुछ स्थलों पर पूर्वज आचार्यों के अभिमतों का उल्लेख भी किया है—

१. स्नानाद्वा पाण्डुरीभूत्तगात्रा इति वृद्धाः [वृत्ति, पृ० १७१] ।

२. खूर्णिकारस्त्वाह [वृत्ति पृ० २२४]

३. अस्य च वृद्धोक्तस्थाधिकृतगाथादिवरणस्यार्थं भावार्थः । [वृत्ति, पृ० २२५]

१. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, शान्तिचन्द्रीया वृत्ति, पत्र १, २ ।

२. नन्दी, सूत्र ७६ ।

यह वृत्ति न बहुत विस्तृत है और न अति संक्षिप्त । इसके मध्यम आकार में विवेचनीय स्थल अधिकांशतया व्याख्यात हैं ।^१

प्रस्तुत सूत्र में वाचनान्तरों की बहुलता है । वृत्तिकार ने प्रथम सूत्र की व्याख्या में लिखा है—इस सूत्र में बहुत वाचनाभेद है । जं बुद्धिगम्य हीगा उसकी मैं व्याख्या करंगा ।^२ सम्भवतः इतने वाचनान्तर किसी अन्य सूत्र में प्राप्त नहीं हैं । यदि वृत्तिकार ने इनका संकलन नहीं किया होता तो ये लुप्त हो जाते ।

वृत्ति के अन्त में त्रिश्लोकी प्रशस्ति है । उसमें वृत्तिकार ने अपने गुरु श्री जिनेश्वरसूरि, चन्द्रकुल तथा रचनास्थल—अणहिलपाटकनगर और वृत्ति के संशोधक द्रोणाचार्य का उल्लेख किया है—

चन्द्रकुल-विपुल-भूतल-युगप्रवर-वर्धमानकल्पतरोः ।

कुसुमोपमस्य सूरिः, गुणसौरभ-भरित-भवनस्य ॥१॥

मिस्सम्बन्धविहारस्य सर्वदा श्रीजिनेश्वराह्वस्य ।

शिष्येणाभयदेवाख्यसूरिण्यं कृता वृत्तिः ॥२॥

अणहिलपाटकनगरे श्रीमद्द्रोणाख्यसूरिमुख्येन ।

पण्डितगुणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चैयम् ॥३॥

इसका दूसरा व्याख्या-ग्रन्थ स्तबक है । यह विक्रम की अठारहवीं शती का है । इसके कर्ता संभवतः धर्मसी मुनि हैं ।

२. रायपसेणियं

नाम बोध

प्रस्तुत सूत्र का नाम 'रायपसेणियं' है । पं० बेचरदास दोशी ने प्रस्तुत सूत्र का नाम 'रायपसेणइयं' रखा है । उन्होंने सिद्धसेनगणी द्वारा उल्लिखित 'राजप्रसेनकीय' और मुनि चन्द्रसूरि द्वारा उल्लिखित 'राजप्रसेनजित' को इसका आधार माना है ।^३

प्रस्तुत सूत्र का सर्वाधिक प्राचीन उल्लेख नंदी सूत्र में मिलता है । वहां इसका नाम 'रायपसेणियं' है ।^४ नंदी की चूर्णि और उसकी हरिभद्रसूरि तथा आचार्य मलयगिरि कृत वृत्तियों में इसकी व्याख्या नहीं है । आचार्य मलयगिरि ने प्रस्तुत सूत्र के विवरण में 'राजप्रश्नीय' नाम का उल्लेख किया है । राजा प्रदेशी ने केशीस्वामी से प्रश्न पूछे थे । प्रस्तुत सूत्र में उनका वर्णन है । अतः इसका नाम 'राजप्रश्नीय' है ।^५

१. औपपातिक, वृत्ति, पृ० २ : इह च बहवो वाचनाभेदा वृश्यन्ते, तेषु च यमेवावभोत्स्यामहे तमेव व्याख्यास्यामः ।

२. रायपसेणइयं, प्रवेशक, पृ० ६, ७ ।

३. नंदी, सू० ७७ ।

४. (क) रायपसेणिय वृत्ति, पृ० १ :

अथ कस्माद् इदमुपाङ्गं राजप्रश्नीयाभिधानमिति ? उच्यते, इह प्रवेशिनामा राजा भगवतः केशिकुमारभ्रमणस्य समीपे यान् जीवविषयान् प्रश्नानकार्षात्, यानि च तस्मै केशिकुमारभ्रमणो गणभूत् व्याकरणानि व्याकृतवान् ।

(ख) रायपसेणिय वृत्ति, पृ० २ राजप्रश्नेषु भवं राजप्रश्नीयम् ।

विषय-वर्णन की दृष्टि से मलयगिरि की व्याख्या उचित है और उसके आधार पर उनके द्वारा स्वीकृत नाम भी अनुचित प्रतीत नहीं होता, किन्तु शब्दशास्त्रीय दृष्टि से उनके द्वारा स्वीकृत नाम समालोच्य है। पं० बेचरदासजी ने उसकी समालोचना की है। उनका तर्क है—‘प्रथम शब्द का प्राकृत रूप ‘पण्ह’ और ‘पसिण’ होता है, किन्तु ‘पसेण’ नहीं होता। उच्चारण शास्त्र की वैज्ञानिक रीति से ‘पसिण’ तक का परिवर्तन ही उचित नहीं लगता है। प्राकृत व्याकरण की दृष्टि से भी ‘पसेण’ रूप घटित नहीं होता। इसे आर्ष रूप मान तो फिर शुद्धाशुद्ध प्रयोग की भ्रमसाही ही टूट जाएगी।’

पण्डितजी का तर्क बलवान् है फिर भी अभीमांस्य नहीं है। हमारी दृष्टि के अनुसार—

[१] ‘पसेणिय’ का मूल रूप ‘पसिणिय’ [सं० प्रथित] है। इकार का एकार होना उच्चारण शास्त्र की दृष्टि से असंगत नहीं है। यह परिवर्तन अनेक स्थानों में मिलता है। उदाहरण के लिए कुछ शब्द यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं:—

पिह्वणीणं	पेह्वणेणं	[दे०]
णिव्वाणं	णेव्वाणं	[सं० निर्वाणम्]
णिव्वुती	णेव्वुती	[सं० निर्वृत्तिः]
तिगिच्छियं	तेगिच्छियं	[सं० चिकित्सितम्]
बिटा	बेटा	[सं० वृत्तम्]
बि	बे	[सं० द्वि]
तिकालं	तेकालं	[सं० त्रिकालम्]

[२] आगम-सूत्रों तथा प्राचीन ग्रन्थों में ‘रायपसेणिय’ पाठ उपलब्ध है। ‘रायपसेणिय’ पाठ कहीं भी उपलब्ध नहीं है। नंदी सूत्र में ‘रायपसेणिय’ नाम मिलता है। इसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। पाक्षिक सूत्र में भी ‘रायपसेणिय’ पाठ मिलता है।^१ पाक्षिक सूत्र के अवचूरि-कार ने भी इसका संस्कृत रूप ‘राजप्रथिनयं’ किया है।^१

[३] प्रसेनजित् का प्राकृत रूप ‘पसेणिय’ बनता है। स्वानांग में पांचवें कुलकर का नाम ‘पसेणिय’ है।^२ अन्यत्र भी अनेक स्थलों में यह मिलता है।

प्रस्तुत सूत्र का विषयवस्तु यदि राजा प्रसेनजित् से संबद्ध होता तो इसका नाम ‘रायपसेणिय’ होता, किन्तु इसकी विषयवस्तु राजा पक्षी से संबद्ध है। इस दृष्टि से भी ‘रायपसेणिय’ नाम संगत नहीं है। दीघनिकाय में पायासी राजा प्रसेनजित् के सामंत रूप में उल्लिखित है। किन्तु प्रस्तुत सूत्र में राजा प्रसेनजित् का कोई उल्लेख नहीं है। अतः ‘रायपसेणिय’ नाम का कोई आधार प्राप्त नहीं होता।

१. रायपसेणियं, प्रवेशक, पृ० ६

२. पाक्षिक सूत्रम्, पृ० ७६

३. पाक्षिक सूत्रम्, अवचूरि, पृ० ७७

राजः प्रवेशि नाम्नः प्रसनानि, तान्यधिकृत्य कृतमध्ययनम्—राजप्रथिनयम् ।

४. ठाणं, ७१६२

विषयवस्तु के आधारपर 'रायपणिस्यं' नाम की कल्पना की जा सकती है। किन्तु इसका कोई प्राचीन आधार प्राप्त नहीं है।

राजा प्रदेशी के प्रश्न प्रस्तुत सूत्र की रचना के आधार रहे हैं, इसलिए इसका नाम 'रायपणिस्यं' ही होना चाहिए।

व्याख्या ग्रन्थ

प्रस्तुत सूत्र के व्याख्या-ग्रंथ दो हैं—[१] वृत्ति और [२] स्तबक [टब्बा, बालावबोध]। वृत्ति संस्कृत में लिखित है और स्तबक गुजराती मिश्रित राजस्थानी में। वृत्ति के लेखक सुप्रसिद्ध टीकाकार आचार्य मलयगिरि हैं और स्तबककार हैं पार्श्वचन्द्रगणी [१६ वीं शती] और मुनि धर्मसिंह [१८ वीं शती]। स्तबक संक्षिप्त अनुवाद ग्रन्थ है। प्रस्तुत सूत्र के रहस्यों को स्पष्ट करने वाला व्याख्या ग्रन्थ वास्तव में वृत्ति ही है। वृत्तिकार ने सूत्र के सब विषयों को स्पष्ट नहीं किया है, फिर भी उन्होंने अनेक स्थलों में अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएं दी हैं।

वृत्तिकार को वृत्ति-निर्माण में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके सामने सबसे बड़ी कठिनाई पाठ-भेद की थी। इसका उन्होंने स्थान-स्थान पर उल्लेख किया है।^१ वर्तमान कठिनाइयों के आधार पर वृत्ति दो भागों में विभक्त हो गई। पूर्वभाग में वृत्तिकार ने सुगमपदों की भी व्याख्या की है। उत्तरभाग में केवल विषमपदों की व्याख्या की है। अतएव पूर्वभाग की व्याख्या विस्तृत और उत्तरभाग की संक्षिप्त है। पूर्वभाग की विस्तृत व्याख्या के उन्होंने दो हेतु बतलाए हैं—

१. विषय की नवीनता

२. पाठ-भेद की प्रचुरता

उत्तरभाग की संक्षिप्त व्याख्या के भी तीन हेतु बतलाए हैं—

१. पाठ की सुगमता

२. पूर्व व्याख्यातपदों की पुनरावृत्ति

३. पाठ-भेद की अल्पता।^२

वृत्तिकार ने लौकिक विषयों को लौकिक कला के निष्णात व्यक्तियों से जानने का अनुरोध किया है।^३ राजप्रशनीय और जीवाभिगम में अनेक स्थलों पर प्रकरण की समानता है। दोनों के व्याख्याकार आचार्य मलयगिरि हैं। इसलिए उनके समप्रकरणों की वृत्ति में भी प्रचुर समानता है। वृत्तिकार को जीवाभिगम की मूल टीका प्राप्त थी। उसका वृत्तिकार ने प्रस्तुत वृत्ति में स्थान-स्थान

१. रायपणिस्यं वृत्ति, पृ० २०४, २४१, २५६

२. रायपणिस्यं वृत्ति, पृ० २३६ :

इह प्राक्तनो ग्रन्थः प्रायोऽपूर्वः भूयानपि च पुस्तकेषु वाचनावेदस्ततो भाऽभूत् शिष्याणां सम्मोह इति क्वापि सुगमोऽपि यथावस्थितवाचनाक्रमप्रदर्शनार्थं लिखित, इत ऊर्ध्वं नु प्रायः सुगमः प्राग्ख्याख्यातस्वरूपश्च न च वाचना-भेदोऽप्यतिबाध इति स्वयं परिभावनोयः, विषमपदव्याख्या तु विधास्यते इति ।

३. वही, पृ० १४५ :

एते नर्तनविषयः अभिनयविषयश्च नाट्यकुशलेभ्यो वेदितव्यः ।

पर उल्लेख किया है।^१ एक स्थान पर जीवाभिगम-चूर्ण का भी उल्लेख किया है।

वृत्ति का ग्रन्थ परिमाण तीन हजार सात सौ श्लोक है—

प्रत्यक्षरगणनातो ग्रन्थमानं विनिश्चितम् ।
सप्तत्रिंशच्छतान्यत्र श्लोकानां सर्वसंख्यया ॥

१. (क) रायपसेणियवृत्ति पृ० १००

आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्-विजयदूष्यं वस्त्रविशेषः इति ।

(ख) वही, पृ० १५८

आह च जीवाभिगममूलटीकाकारः अगंलाप्रासादा यत्रार्गला नियम्यन्ते इति ।
जीवाभिगममूलटीकाकारेण—आवर्त्तनपीठिका यत्रेन्द्रकीलको भवति इति ।

(ग) वही, पृ० १५९

आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्—कूटो माडभागः उच्छयः शिखरम् इति ।
आह च—जीवाभिगममूलटीकाकृत्—अंकमयाः पक्षास्तदेकदेशभूता एवं पक्ष बाहवोऽपि
ब्रूयन्ते इति ।

(घ) वही, पृ० १६०

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकाकारेण ओहाडणी हारग्रहणं ? महत् क्षुल्लकं च पुंछनी इति ।

(च) वही, पृ० १६१

आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्—नैषेधिकी निषीदनस्थानम् इति ।

(छ) वही, पृ० १६८

आह च जीवाभिगममूलटीकाकारः प्रकण्ठी पीठविशेषी इति ।

(ज) वही, पृ० १६९

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्—प्रासादावतंसकौ प्रासादविशेषौ इति ।

(झ) वही, पृ० १७६

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्—मनोगुलिका नाम पीठिका” इति ।

(ट) वही, पृ० १७७

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकाकारेण-ह्यकण्ठी—ह्यकण्ठप्रमाणौ रत्नविशेषौ एवं सर्वेऽपि
कण्ठा वाच्ये इति ।

(ठ) वही, पृ० १८०

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्—तैलसमुद्गकौ सुगन्धितैलाधारौ ।

(ड) वही, पृ० १८९

जीवाभिगममूलटीकायामपि ४६—“उष्पित्थं इवासयुषतम्” इति ।

(ढ) वही, पृ० १९५

उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्—दगमण्डपाः स्फाटिका मण्डपा इति ।

(त) वही, पृ० २२६

जीवाभिगममूलटीकाकारः—“विब्वोयणा-उपधानकान्युच्यन्ते” इति ।

वृत्ति के प्रारंभ में वृत्तिकार ने भगवान् महावीर को नमस्कार किया है और गुरु के आदेश से राजप्रश्नीय सूत्र के विवरण की सूचना दी है:—

प्रथमतः-वीरजिनेश्वरचरणयुगं परमपाटलच्छायम् ।
अधरीकृतमतवासवमुकुटस्थितरत्नरुचिचक्रम् ॥
राजप्रश्नीयमहं, विवृणोमि यथाजामं गुरुनियोगात् ।
तत्र च शक्तिमशक्ति, गुरवो जानन्ति का चिन्ता ॥१॥

वृत्ति की परिसमाप्ति में वृत्तिकार ने गुरु की विजयकामना और पाठक की ज्ञानकामना की है—

अधरीकृतचिन्तामणि-कल्पलता-कामवेनुमाहात्म्याः ।
विजयन्तां गुरुपादाः विमलीकृतशिष्यमतिविभवाः ।
राजप्रश्नीयमिदं गम्भीरार्थं विवृण्वता कुशलं ।
यद्वापि मलयगिरिणा साधुजनस्तेन भवतु कृती ।

३. जीवाजीवाभिगमे

नामबोध

प्रस्तुत आगम का नाम जीवाजीवाभिगमे है। इसमें जीव और अजीव इन दो मूलभूत तत्त्वों का प्रतिपादन है। इसलिए इसका नाम जीवाजीवाभिगमे रखा गया है। इसमें नौ प्रतिपत्तियाँ [प्रकरण] हैं। इनमें जीवों के संख्यापरक वर्गीकरण किए गए हैं।

१. संसारीजीव के दो प्रकार—त्रस और स्थावर ।
२. संसारीजीव के तीन प्रकार—स्त्री, पुरुष और नपुंसक ।
३. संसारीजीव के चार प्रकार—नैरयिक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव ।
४. संसारीजीव के पांच प्रकार—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय ।
५. संसारीजीव के छह प्रकार—पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक वनस्पति-कायिक और त्रसकायिक ।
६. संसारीजीव के सात प्रकार—नैरयिक, तिर्यञ्च, तिर्यञ्चणी, मनुष्य, मनुष्यणी, देव और देवी ।
७. संसारीजीव के आठ प्रकार—प्रथम समय नैरयिक, अप्रथम समय नैरयिक, प्रथम समय तिर्यञ्च, अप्रथम समय तिर्यञ्च ।
प्रथम समय मनुष्य, अप्रथम समय मनुष्य
प्रथम समय देव, अप्रथम समय देव ।
८. संसारीजीव के नौ प्रकार—पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक वायुकायिक, वनस्पति-कायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय ।
९. संसारीजीव के दस प्रकार—प्रथम समय एकेन्द्रिय, अप्रथम समय एकेन्द्रिय
प्रथम समय द्वीन्द्रिय, अप्रथम समय द्वीन्द्रिय ।

प्रथम समय त्रीन्द्रिय, अप्रथम समय त्रीन्द्रिय
 प्रथम समय चतुरिन्द्रिय, अप्रथम समय चतुरिन्द्रिय
 प्रथम समय पञ्चेन्द्रिय, अप्रथम समय पञ्चेन्द्रिय ।

नीचीं प्रतिपत्ति के आठवें सूत्र से अन्त तक सर्वं जीवाभिगम का निरूपण किया गया है। वह वर्गीकरण भिन्न दृष्टि से किया गया है, उदाहरणस्वरूप—जीव के दो प्रकार सिद्ध और असिद्ध ।

जीव के तीन प्रकार सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यक्मिथ्यादृष्टि ।

प्रस्तुत आगम में अवान्तर विषय विपुल मात्रा में उपलब्ध है। इसमें भारतीय समाज और जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। स्वापत्य कला की दृष्टि से पद्मवरवेदिका और विजयद्वार का वर्णन बहुत महत्त्वपूर्ण है।

प्रस्तुत आगम में आदेशों का संकलन मिलता है। एक विषय में स्थविरों के अनेक मत थे। मत के लिए आदेश शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत आगम उत्तरवर्ती ग्रन्थ है। इसलिए इसमें स्थविरों के अनेक मतों का संकलन मिलता है। वृत्तिकार ने आदेश का अर्थ प्रकार किया है।^१ तात्पर्याय में अनेक मतों का संकलन भी सिद्ध होता है। जीवा० २/२० में चार आदेशों का संकलन है। २/४८ में पांच आदेश उपलब्ध हैं। वृत्तिकार ने लिखा है कि पांच आदेशों में कौन सा आदेश समीचीन है, इसका निर्णय अतिशय ज्ञानी ही कर सकते हैं। सूत्रकार स्थविरों के समय में वे अतिशयज्ञानी उपलब्ध नहीं थे इसलिए सूत्रकार ने इस विषय में कोई निर्णय नहीं किया, केवल उपलब्ध आदेशों का संकलन कर दिया।^२

रचनाकार

प्रस्तुत आगम की रचना स्थविरों ने की है। इसका आगम के प्रारंभ में स्पष्ट निर्देश है।^३

व्याख्या ग्रन्थ

प्रस्तुत आगम की दो व्याख्याएं उपलब्ध हैं एक आचार्य हरिभद्रकृत और दूसरी आचार्य मलयगिरिकृत। आचार्य हरिभद्रकृत टीका संक्षिप्त है, मलयगिरिकृत टीका बहुत विस्तृत है। मलयगिरि ने अपनी वृत्ति में 'इतिबृद्धाः' तथा मूलटीका, मूलटीकाकार और चूर्ण का अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है।

१. जीवजीवाभिगम वृ० प० ५३ "आदेश शब्द इह प्रकारवाची" आदेशोक्ति पगारो "इतिवचनात्, एकेन प्रकारेण, एक प्रकारमधिकृत्येतिभावार्थः"
२. वही वृ० प० ५६ "अमीषां च पञ्चानामादेशानामन्यतमादेशसमीचीनतानिर्णयोऽतिशयज्ञानिभिः सर्वोत्कृष्ट-श्रुतलब्धि-संपन्नेर्वा कर्तुं शक्यते, ते च सूत्रकृतप्रतिपत्तिकाले नासीरन्निति सूत्रकृष्ण निर्णयं कृतवानिति" ।
३. जीवाजीवाभिगमे १/१—'इह खलु जिणमयं जिणाणुमयं जिणाणुलोमं जिणप्पणीतं जिणपरुवियं जिणक्खायं जिणाणुचिण्णं जिणपग्गत्तं जिणदेसियं जिणपसस्यं अणुवीइ तं सइहमाणा तं पत्तियमाणा तं रोएमाणा थेरा भगवन्तो जीवाजीवाभिगमे णामज्जयणं पणवइंसु" ।

‘इतिवृद्धाः’^१

इयं च व्याख्या मूलटीकानुसारेण कृता ।^२

“उक्तञ्च मूलटीकायाम्” ।^३

‘आह च मूलटीकाकृत्’^४

‘ताइ च मूलटीकाकृता वैविक्रयेन न व्याख्याता इति संप्रदायादवसेयाः’^५

‘मूलटीकाकारेणाव्यख्यानात्’^६

‘आह च मूलटीकाकारः’ — ‘उक्तं चूणी’^७

‘आह च मूलटीकाकारः’ — ‘उक्तञ्च मूलटीकाकारेण’ ।^८

उक्तं मूलटीकायाम्^९

‘आह च मूलटीकाकारः’^{१०}

‘उक्तं च मूलटीकायाम्’^{११}

‘आह च मूलटीकाकारः’^{१२}

‘आह च मूलटीकाकारः’^{१३}

‘उक्तं च मूलटीकायां’^{१४}

‘उक्तं च मूलटीकाकारेण’^{१५}

‘आह च मूलटीकाकारः’ — ‘चूणिकारस्त्वेवमाह’^{१६}

‘आह च मूलटीकाकारः’ — ‘आह च चूणिकृत्’^{१७}

‘उक्तं च मूलटीकायां’ — ‘जीवाभिगम मूलटीकायां’^{१८}

‘आह च मूलटीकाकारोपि’ — ‘आह च चूणिकृत्’^{१९}

‘तथा चाह मूलटीकाकारः’^{२०}

‘आह च मूलचूणिकृत्’^{२१}

‘मूलटीकाकारोप्याह... चूणिकारोप्याह’^{२२}

‘आह चूणिकृत्’^{२३}

‘तथा चाह मूलटीकाकारः’^{२४}

‘आह च चूणिकृत्’^{२५}

‘उक्तं चूणी’^{२६}

‘आह च मूलटीकाकारः’^{२७}

‘आह चूणिकृत् आह च टीकाकारः’^{२८}

‘मूलटीकाकारेणापि’^{२९}

‘आह च मूलटीकाकारः’^{३०}

१. वृ० प० २७	९. वृ० प० १४१	१७. वृ० प० २१०	२४. वृ० प० ४३८
२. वृ० प० ६४	१०. ११. वृ० प० १४२	१८. वृ० प० २१४	२५. वृ० प० ४४१
३. वृ० प० १०९	१२. वृ० प० २७७	१९. वृ० प० ३२१	२६. वृ० प० ४४२
४. वृ० प० १२२	१३. वृ० प० १८४	२०. वृ० प० ३५४	२७. वृ० प० ४४४
५. ६. वृ० प० १३६	१४. वृ० प० २०४	२१. वृ० प० ३६९	२८. वृ० प० ४५०
७. वृ० प० १३७	१५. वृ० प० २०५	२२. वृ० प० ३७०	२९. वृ० प० ४५२
८. वृ० प० १८०	१६. वृ० प० २०९	२३. वृ० प० ३८४	३०. वृ० प० ४५७

कार्य-संपूर्ति

इसके संपादन का बहुत कुछ श्रेय युवाचार्य महाप्रज्ञ को है, क्योंकि इस कार्य में अर्हानिश ने जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य संपन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तररहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनयशीलता, श्रमपरायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण-भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्तव्यपरता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

प्रस्तुत आगमों के पाठ संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

अपने शिष्य-साधु-साध्वियों के सहयोग से पाठ संशोधन का बृहत् कार्य सम्यग् रूप से सम्पन्न हो सका है, इसका मुझे परम हर्ष है।

अक्षय तृतीय, १ मई १९८७
अध्यात्म साधना केन्द्र,
महरोली—नई दिल्ली

आचार्य तुलसी

EDITORIAL

The present volume consists of three *āgamas*—*Ovāiyam*, *Rāyapaseṇiyam* and *Jivājivābhigame*.

OVĀIYAM

The text of *Aupapātika sūtra* has been constituted on the basis of the manuscripts and the *vr̥tti*. The references to different ancient versions in this *sūtra* are in abundance. It is a repository of descriptions. That is why we find at various places the instruction—*jahā ovavāie* (as in *Ovavāia*), referring to similar describers of the other *āgamas*. Neither the commentaries of those *āgamas* nor their authentic texts of the latter contain the describers accepted in the *Aupapātika*. Those describers, however, are available in other versions. It poses a problem for those who study the describers.

The text of this *Āgama* must be determined not only on the basis of *ādarśas* and *vr̥tti* but also on the basis of the describers available in the *āgamic* commentaries and the texts of the other *āgamas*. But it is difficult to do so without the compilation of the totality of describers.

Some of the describers are as follows :

Bhagavaī :

- 7/175 : evaṁ jahā ovavāie jāva
- 7/176 : evaṁ jahā uvavāie, evaṁ jahā uvavāie
- 7/196 : jahā kūṇio jāva pāyacchitte
- 9/157 : “jahā ovavāie jāva egābhimuhe” “evaṁ jahā ovavāie jāva tivihāe”
- 9/158 : “jahā ovavāie jāva satthavāha” “jahā ovavāie jāva khattiya-kupḍaggāme”
- 9/162 : ovavāie parisā vannaō tahā bhāṇiyavvaṁ
- 9/204 : “jahā ovavāie jāva gagaḍatalamanulihantī” “evaṁ jahā ovavāie taheva bhāṇiyavvaṁ”
- 9/204 : jahā ovavāie jāva mahāpurisa
- 9/208 : jahā ovavāie jāva abhinandatā
- 9/209 : evaṁ jahā ovavāie kūṇio jāva niggaḍchai
- 11/59 : jahā ovavāie
- 11/61 : jahā ovavāie kūṇiyassa
- 11/85 : jahā ovavāie jāva gahaṇayāe

- 11/88 : 198 : evaṃ jaheva ovavāie taheva
 11/138 : jahā ovavāie taheva aṭṭaṇasālā taheva majjapaghare
 11/154 : evaṃ jahā daḍhapainṇassa
 11/156 : evaṃ jahā daḍhapainṇe
 11/159 : jahā ovavāie
 11/169 : jahā ammaḍo jāva bambhaloe
 12/32 : evaṃ jahā kūṇio taheva savvam
 13/107 : jahā kūṇio ovavāie jāva pajjuvāsai
 14/107 : evaṃ jahā ovavāie jāva ārāhagā
 14/110 : evaṃ jahā ovavāie ammaḍassa vattavvayā
 15/186 : evaṃ jahā ovavāie daḍhappainṇavattavvayā
 15/189 : evaṃ jahā ovavāie jāva savvadukkhāṇamantam
 25/569 : jahā ovavāie jāva suddhesaṇṇe
 25/570 : jahā ovavāie jāva lūhāhāre
 25/571 : jahā ovavāie jāva savvagāya

Bhagavaī Vṛtti :

- patra 7 : aupapātikāt savyākhyāno'tra dṛśyaḥ
 ,, 11 : aupapātikavadvācyā
 ,, 317 : "evaṃ jahā uvavāie" tti tatra cedaṃ sūtramevam.....
 ,, 318 : "evaṃ jahā uvavāie jāva" ityanenedaṃ sūcitam.....
 ,, 319 : "jahā ceva uvavāie" tti tatra caivamidam sūtram.....
 ,, 462 : "jahā uvavāie" tti tatra cedaṃ sūtramevaṃ leśatab.....
 ,, 463 : "jahā uvavāie" tti tadeva leśato darśyate.....
 ,, 463 : "evaṃ jahā uvavāie" tatra caitadevaṃ sūtram.....
 ,, 463 : "jahā uvavāie" tti cedamevaṃ sūtram.....
 ,, 463 : "jahā uvavāie parisāvanna" tti yathā kauṇikasyaupapātike
 ,, 476 : "jahā uvavāie" tti evaṃ caitattatra.....
 ,, 479 : "jahā uvavāie" tti anena yatsūcitaṃ tadidam.....
 ,, 481 : "jahā uvavāie" tti karaṇādidaṃ dṛśyam.....
 ,, 482 : "evaṃ jahā uvavāie" tti anena yatsūcitaṃ tadidam.....
 ,, 519 : "jahā uvavāie" ityetasmādatidesādidaṃ dṛśyam.....
 ,, 520 : "evaṃ jahā uvavāie" ityetakaraṇādidaṃ dṛśyam.....
 ,, 521 : "evaṃ jaheve" tyādi "evam", anantaradarśitenābhilāpena yathau-
 papātike siddhānadhikṛtya saṃhananādyuktaṃ tathaivehāpi.....
 ,, 521 : vākyapaddhatiraupapātikaprasiddhā'dhyetā.....
 ,, 542 : "jahā uvavāie taheva aṭṭaṇasālā taheva majjapaghare" tti yathau-
 papātike'tṭaṇasālā vyatikaro.....
 ,, 545 : "jahā daḍhapainne" tti yathaupapātike dṛḍhapratijñō'dhīstastathā'
 yaṃ vaktavyaḥ taccaivam.....
 ,, 545 : "evaṃ jahā daḍhapainno" ityanena yatsūcitaṃ tadevaṃ dṛśyam.....
 ,, 548 : "jahā uvavāie" ityanena yatsūcitam
 ,, 549 : jahā ammaḍo" tti yathaupapātike ammaḍo'dhīstastathā'yamiha
 vācyāḥ

- patra 563 : “evaṃ jahā uvavāie jāva ārāhaga” tti iha yāvatkaraṇādīdamarthato
leśena dṛśyam.....
- „ 563 : “evaṃ jahe” tyādinā yatsūcitam.....
- „ 696 : “evaṃ jahā uvavāie” ityādi bhāvitamevāmmaḍaparivṛājakakathā-
naka iti
- „ 924 : “jahā uvavāie” tti anenedaṃ sūcitam.....
- „ 924 : “jahā uvavāie” tti anenedaṃ sūcitam
- „ 924 : “jahā uvavāie” tti anenedaṃ sūcitam.....

Jñātāvṛtti

- „ 2 : “varṇakagrantho”trāvasare vācyah.....

Vivāgasuyam

- 1/1/70 : jahā daḍhapaiṇṇe
- 2/1/36 : jahā daḍhapaiṇṇe
- 2/10/1 : jahā daḍhapaiṇṇe

Rāyapaseṇiyam

- sūtra 3,4 : asoyavarapāyave puḍhavisilāpaṭṭae vattavvayā ovavāiyagameṇaṃ
neyā
- „ 688 : egadisāe jahā uvavāie jāva appeḡatiyā

Rāyapaseṇiya vṛtti

- page 3 : sampratyasyā nagaryā varṇakamāha—(Here *Aupapātika* has not
been mentioned)
- „ 8 : yāvachchabdakaraṇāt “saddie kittie nāe sacchatte” ityādyaupapātika-
granthaprasiddhavarṇakaparigrahaḥ
- „ 10 : aśokavarapādapasya pṛthivīśilāpaṭṭakasya ca vaktavyatā aupapātika-
granthānusāreṇa jñeyā
- „ 27 : yāvachchabdakaraṇādrājavarṇako devīvarṇakaḥ samavasaraṇaṃ
caupapātikānusāreṇa tāvadvaktavyaṃ yāvatsamavasaraṇaṃ samāp-
tam
- „ 30 : yāvachchabdakaraṇāt “āikare titthagare” ityādikaḥ samasto`pi
aupapātikagrānthaprasiddho bhagavadvarṇako vācyah, sa cātiga-
rīyāniti na likhyate, kevalamaupapātikagrānthādavaseyah
- „ 39 : bahave uggā bhogā ityādyaupapātikagrānthoktaṃ sarvamavasātav-
yaṃ yāvat samagrāpi rājaprabhṛtikā pariṣatparyupāsīnā avatiṣṭhate
- „ 116 : “evaṃ jahā uvavāie tāhā bhāṇiyavvaṃ” iti evaṃ yathā aupapālike
grānthe tathā vaktavyaṃ. tacca evaṃ
- „ 288 : ityādirūpā dharmakathāaupapātikagrānthādavaseyā

Jambuddivapaṇṇattī

- 2/65 : evaṃ jāva ṇiggacchai jahā ovavāie jāva āulabolabahulam
- 2/83 : evaṃ jahā ovavāie sacceva aṇagāraṇṇao jāva uḍḍhañjāṇū
- 3/178 : evaṃ ovavāiyagameṇaṃ jāva tassa

Jambuddivapaṇṇattī Vṛtti :

- Śā. Vṛ. pa tra 14 : “vaṇṇao” tti ṛddhastimitasamṛddhā ityādi
 ,, aupapātīkopāṅgaprasiddhaḥ samasto’pi varṇako draṣṭavyaḥ
 ,, cirātītamityādīrvarṇakastatparikṣepi vanakhaṇḍavarṇa kasahita-
 aupapātīkato’vaseyaḥ
 ,, “vaṇṇao” tti atra rājñō “mahayāhimavantamahante” tyādikorā-
 jñāśca “sukumālapāṇīpāye” tyādikovarṇakaḥ prathamopāṅgapra-
 siddho’bhīdhātavyaḥ
 ,, yathā ca samavasaraṇavarṇakam tathaupapātīkagranthādavaseyam
 ,, “tae ṇam mihīlāe ṇayaīe sīṅghāḍage” tyādikam “jāva” pañjaliuḍā
 pajjuvāsantī” ti paryantamaupapātīkagatamavagantavyam... . evo-
 pāṅgādavagantavyamiti
 ,, 143 : “yathaupapātīke” evam yathā prathamopāṅge... . nipātaḥ, aupa-
 pātīkagamaścāyam
 ,, 154 : yathaupapātīke sarvo’ṇagāravarnakastathā’trāpi vācyāḥ
 ,, 155 : kiyadyāvādityāha—ūrdhva m jānunī yeṣāṃ te ūrdhvajānavaḥ..... atra
 yāvātpadasamgrāhyaḥ “apegaiyā domāsapariāyā” ityādikāḥ aupa-
 pātīkagrantho vistarabhayāṇna likhita ityavaseyam
 ,, 264 : evamuktakrameṇa aupapātīkagameṇa prathamopāṅgatatapāṭhena
 tāvad vaktavyam yāvattasya rājñāḥ purato mahāśvāḥ
 ,, 325 : vṛkṣavarṇanam prathamopāṅgato’vaseyam

Sūrapaṇṇattī Vṛtti

- pa tra 2 : “yāvacchabdenaupapātīkagranthapratīpādītaḥ samasto’pi varṇakaḥ
 āinnajāṇasamūhā” ityādikō draṣṭavyaḥ
 ,, 2 : tasyāpi caityasya varṇako vaktavyaḥ sa caupapātīkagranthādava-
 seyaḥ
 ,, 2 : tasya rājñāḥ tasyāśca devyā aupapātīkagranthokto varṇako’bhīdhā-
 tavyaḥ
 ,, 2 : samavasaraṇavarṇanam ca bhagavata aupapātīkagranthādavaseyam
 ,, 3 : “bahave uggā bhogā” ityādyaupapātīkagranthovaktam
 ,, 3 : atra yāvacchabdādidamaupapātīkagranthoktam draṣṭavyam

Candrapaṇṇattī (Ms. Vṛtti)

- pa tra 5 : aupapātīkagranthaprasiddhaḥ samasto’pi varṇako draṣṭavyaḥ sa ca
 granthagauravabhayāṇna likhyate kevalam tata evaupapātīkādava-
 seyaḥ
 ,, 5 : aupapātīkagranthokto veditavyaḥ
 ,, 5 : tasya rājñāstasyāśca devyā aupapātīkagranthokto varṇako’bhīdhā-
 tavyaḥ
 ,, 5 : samavasaraṇavarṇanam ca bhagavata aupapātīkagranthādavaseyam
 ,, 6 : “bahave uggā bhogā” ityādyaupapātīkagranthoktam sarvamava-
 seyam

Uvaṅgā

- 1/141 : jahā dadhapaṅṅo
2/13 : jahā dadhapaṅṅo

Dasāo

- 10/2 : rāyavaṅṅao evaṁ jahā ovavātie jāva cellaṅṅe—
10/14-19 : sakoreṅṅamalladāmeṅṅaṁ chatteṅṅaṁ dharijjamāṅṅeṅṅaṁ uvavāiyaga-
meṅṅaṁ neyavvaṁ jāva pajjuvāsai.....

Dasā. (Ms. Vṛtti)

Vṛtti patra 11 : aupapātikagranthapratipāditaḥ samasto'pi varṅako vācyah sa
ceha granthagauravabhayāna likhyate kevalaṁ tata evaupapā-
tikādavaseyah. Dasā, 5/4

- D. 5/5, Ms. Vṛtti patra 11 :
caityavarṅako bhaṅṅitavyah sopyaupapātikagranthādavaseyah
D. 5/6, Ms. Vṛttipatra 11 :
aupapātikoktaṁ pāṅṅhasiddhaṁ sarvamavaseyam.....
D. 10/2, Ms. Vṛttipatra 25 :
“tasya varṅako yathā aupapātikānāmnigranthe'bhīhitastathā”
D. 10/2, Ms. Vṛttipatra 25 :
vistaravyākhyā tūpatatikānusāreṅṅa vācyā.....
D. 10/3, Ms. Vṛttipatra 25 :
ādikaraḥ yāvatkaraṅṅāt..... samasto aupapātikagranthaprasiddho ..
...kevalamaupapātikagranthādavaseyah...
D. 10/6, Ms. Vṛttipatra 26 :
jāvatti yāvatkaraṅṅāt jaṅṅavūhei vā.....uggā bhogā.....ityādyaupā-
pātikagranthoktaṁ
D. 10/14-19, Ms. Vṛttipatra 28 :
uvavātiyagameṅṅiti aupapātikagranthoktakauṅṅikavandanagamana-
prakāreṅṅāyamapi nirgataḥ
D. 10/21, Ms. Vṛttipatra 29 :
ihāvasare dharmmakathā aupapātikoktā bhaṅṅitavyā

Sūtras of Ovāiyam in other āgamas :

<i>Ovāiyam</i>	<i>Bhagavaī</i>	<i>Rāya.</i>	<i>Jambu.</i>
Sūtra 32	25/559-563	—	
„ 33	25/564-568	—	
„ 36	25/576-579	—	
„ 40	25/582-598	—	
„ 43	25/600-612	—	
„ 44	25/613-618	—	
„ 64	9/204	Sū. 49-55	3/178

„ 65	—	—	3/180
„ 66	—	—	3/179

The Describer sūtras

The Describer *sūtras* take several concise forms in the *Aupapātika*. These are :—

jāva :	udae jāva jhīṇe (117)
evaṃ jāva :	apaḍivirayā evaṃ jāva (161)
sesaṃ taṃ ceva :	paraḷogassa ārāhagā sesaṃ taṃ ceva (157)
evaṃ :	evaṃ uvajjhāyānaṃ therānaṃ (16)
abhiḷāveṇaṃ :	evaṃ eenaṃ abhiḷāveṇaṃ (73)
evaṃ taṃ ceva :	sagaḍaṃ vā evaṃ taṃ ceva bhāṇiyavvaṃ jāva ṇaṇṇattha gaḅgāmaṭṭhiyāe (123)
bhāṇiyavvaṃ :	evaṃ ceva pasatthaṃ bhāṇiyavvaṃ (40) kandaṃanto eesiṃ vaṇṇao bhāṇiyavvo jāva siviya (10).
ṇeyavvaṃ :	taṃ ceva pasatthaṃ ṇeyavvaṃ. evaṃ ceva vaiviṇṇao vi eehiṃ paehiṃ ceva ṇeyavvo. (40)

Variant words and forms

The variant words and forms as approved by Grammar and holy usage in *Āgamas* are important from the linguistic standpoint. Hence they have been distinguished from the variant readings and are given below :

Sūtra 1	kukkuḍa	kuṅkaḍa	(kha)
„ 1	°musundhi°	°musandhi°	(ka, kha)
„ 1	°vaṃka	°vakka	(ga)
„ 1	°bhatta°	°hatta°	(ka)
„ 1	°kīlā°	°khīlā°	(ka, kha)
„ 1	°turaga°	°turaṅga°	(ka)
„ 1	darisaṇijjā	darisaṇiyā	(ka, kha)
„ 2	kālāgaru	kālāguru°	(ka)
„ 2	°kahaga°	°kahaka°	(ka, kha, ga)
„ 4	°nikurambabhūe	°ṇiurambabhūe	(kha)
„ 5	darisaṇijjā	darasaṇijjā	(ka, kha)
„ 5	gulaiya	guluiya	(ka)
„ 6	abbhintara°	abbhantara°	(ka)
„ 6	bāhira	bahira	(ga)
„ 9	ṇīvehiṃ	ṇitehiṃ	(ka)
„ 13	°haladhara°	°halahara°	(vr)
„ 19	°haṇue	°haṇūe	(ka)
„ 19	bhuyagīsara°	bhuyaīsara°	(ka, kha, ga)
„ 19	akaraṇḍuya°	akaranduya°	(ka, kha)
„ 19	°ccharu°	°tharu°	(vr)

Sūtra 19	gupphe	°gophe°	ga)
„ 19	°vīdheṇam	°pīdheṇam	(ka, kha)
„ 21	jayā	jadā	(ka)
„ 26	āyāvāyā	ādāvāyā	(ga)
„ 26	paravāyā	paravādā	(ga)
„ 31	omoyariyā	avamoyariyā	(vr)
„ 32	bārasabhatte	{ bārasamabhatte	(ka)
		{ bārasamebhatte	(ga)
„ 32	cauddasa°	{ coddasama°	(ka, kha)
		{ coddasame°	(ga)
„ 32	solasa°	{ solasama°	(ka, kha)
		{ solasame°	(ga)
„ 32	caumāsie	caummāsie	(kha)
„ 33	°bhoitti	°bhoitti	(ga)
„ 34	davvābhi°	davvabhi°	(ka)
„ 40	entassa	intassa	(ga)
„ 43	°pautte	°pajutte	(ga)
„ 43	usaṇṇa°	osaṇṇa°	(ka, ga)
„ 43	°rūi	°ruyi	(ga)
„ 44	darisaṇṇāvaraṇijja°	daṁsaṇṇāvaraṇiya	(kha)
„ 46	°vīci°	°vīti°	(ga)
„ 46	toyapaṭṭham	°toyavaṭṭham	(ka)
„ 49	°vaṇṇiya°	°paṇṇiya°	(ga)
„ 50	vihassati	vahassati	(ga)
„ 51	tiriḍadhāri	kirīḍadhāri	(kha)
„ 52	mahapphalam	mahāphalam	(ka, kha, ga)
„ 52	gayagayā	gatagatā	(ka)
„ 52	paccoruhanti	paccorubhanti	(ga)
„ 58	pāḍiyakkapāḍiyakkāim	pāḍiekkapāḍiekkāim	(kha)
„ 59	paoya-laṭṭhim	{ patoda-laṭṭhim	(ka)
		{ payotta-laṭṭhim	(ga)
„ 63	abbhimgehim	abbaṁgehim	(ka)
„ 63	°misimisanta°	°mismisanta°	(ga)
„ 63	°susiliṭṭha°	°susaliṭṭha°	(ka, ga)
„ 63	°vīyaṅge	°vīiyaṅge	(ka)
„ 64	kūvaggāhā	kūtuyaggāhā	(ga)
„ 64	°turagāṇam	°turaṅgāṇam	(ka)
„ 64	sakhiṅkhiṇi°	sakiṅkiṇi°	(ka)
„ 67	°mūṅga°	°mudaṅga°	(ga)
„ 68	bhaṭṭittam	bhaṭṭattam	(ka)
„ 71	°koṅca°	°kuṅca°	(ga, vr)

„ 82	vaira°	vajja°	(kha)
„ 82	°pighasa°	°nikasa°	(kha)
„ 86	veyañijjam	vedañijjam	(ka, ga)
„ 90	se je	sejje	(ka, kha)
„ 92	se jāo	sejjāo	(ka, kha)
„ 92	°uriyāo	°puriyāo	(ka, ga)
„ 95	kukkuiyā	kokuiyā	(kha, ga)
„ 97	°ahavvaṇa	°athavvaṇa°	(ka, kha, ga)
„ 105	alāu°	lāu	(ga)
„ 117	carimehim	caramehim	(ka)
„ 158	°veñṭiyā	°vañṭiyā	(kha)
„ 159	bhūi°	bhūi°	(ka, kha, ga)
„ 164	aṇagārā	aṇakārā	(ka, ga)
„ 170	teliā°	{ tilla°	(ka)
		{ tela°	(kha)
„ 175	vaya°	vai°	(ka, kha, ga)
„ 195	gā. 1, paiṭṭhiyā	pattiṭṭhiyā	(ka, kha)

Description of the Manuscripts

(क) This was obtained from Gadhaiyā Library, Sardarshahar, through Shri Madanchandji Gauthi. It contains 40 leaves and 80 pages. Each leaf is 11-3/4" long and 4-1/2" wide. There are 4 to 13 lines in each leaf, each line containing 40 to 46 letters. Commentary is inscribed in very small letters in the margin on all sides. The manuscript is beautiful, artistic and appears to have been used and read. The following eulogy is given at the end of the copy—

“iti śrī uvavāisūtraṃ samāptaṃ. grantha 1167. cha. Saṃvat 1623 varṣe phālguna sudi 3 dine. Agra nagare. pātisāha śrī Akbara Jalāludīna rājya pravartamāne. śrī vṛhat kharataragacchālaṅkāra śrī pūjyarāja śrī 6 Jinasiṅgha-sūrivijayarāje paṇḍita śrī Labdhivardhanamunibhirupapātikā nāma upāṅgaṃ likhāpitam. cha. vācyamānam ciraṃ nandyāt. śubham bhavatu lekhaḥakavācakayoḥ. śrī.”

(ख) This manuscript was also obtained through Shri Madanchandji Gauthi from Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 59 leaves and 118 pages. Each page is 10-1/4" long and 4-1/2" wide. There are 7 to 9 lines in each leaf and each line contains 40 to 45 letters. The upper and lower margins of the page contain the translation of the text in Rajasthani language. The following eulogy by the scribe appears at the end of the manuscript—

“śrī uvāi upāṅgaṃ paḍhamam samattam. granthāgraṃ 1225. cha. śrī. Saṃvat 1665 varṣe paṇḍa māsē śuklapakṣe saptamī tithau śrī somavāsare. śrī śrī vikrama nagare mahārājādhirāja mahārāja śrī rāyasinghji vijayarāje paṇḍita karmasiṅghena lipikṛtā. cha.”

(૧) This manuscript was also obtained through Sri Madanchandji Gauthi from Gadhaiyā Library, Sardarshahar. Each page contains 26 leaves and 52 pages. Each page is 10-1/2" long and 4-1/2" wide. Each page contains 15 lines with 46 to 48 letters in each line. The manuscript concludes with— "uvāīyam samattam, granthāgra 1200, subhamastu cha. śrī," but the year is not mentioned therein. Looking at its leaves, letters and illustrations, the copy must be belonging to the 17th century.

(૨) This manuscript of the vṛtti was obtained through Shri Madanchandji Gauthi from Gadhaiyā Library, Sardarshahar. It has 75 leaves and 150 pages. Each leaf contains 13 lines with 55 to 60 letters in each line. The size of the leaf is 10-1/4" × 4-1/4". The manuscript is revised and clear. In the eulogy the following is inscribed— "Subham bhavatu. kalyānamastu. lekhaḥkapāṭhakayośca bhadrām bhavatu, cha. saṃvat 1996 varṣe Mārgaśīrṣa sudi 1, bhaume likhitam, cha. śrī yādṛśam pustake dṛṣṭvā, tādṛśam likhitam mayā|yadī suddhamaśuddham vā, mama doṣo na dīyate|| cha. cha.

(૩. ૧.) Variant readings based on the Vṛtti

There are no identical readings of different versions in the special manuscript of the vṛtti and the printed vṛtti. We have taken the manuscript vṛtti as authoritative.

Rāyapaseṇiyam

The text of this sūtra has been determined on the basis of manuscripts and the Vṛtti. Jivājivābhigama and Aupapātika-sūtras have also been used for determining the texts of the Sūryābha and the Dṛḡhapratijñā chapters respectively. The commentator has mentioned the abundance of variant readings in different versions at every step. At the time of composing the commentary it posed a serious problem, but in later times it assumed still more serious dimensions. Even then we have revised the text by analysing the available material very minutely. None can claim that the revision of this text is totally flawless but this much can be asserted that we have maintained utmost neutrality and patience in our attempt to perform the task.

The construction of the text of this sūtra has exacted vast labour, and resulted in the enlargement of the body of the sūtra, as also in the intelligibility of the text and the tastefulness of the subject-matter.

Variant words and forms

The variant words and forms as approved by grammatical rules and holy usage in Āgamas are important from the linguistic standpoint, so they have been distinguished from the variant readings and are given below—

Sūtra No. 8 mauḍa matuḍa (ka)

..	8	°dheyam	°dhejjam	(ka)
..	9	ṇāi°	ṇādi°	(ka, kha, ga, ca)
..	10	ukitṭhāe	okitṭhāe	(cha)
..	12	paṭṭhe	{ vaṭṭhe	(kha, ga)
			{ maṭṭhe	(ca)
..	13	ṇāiya	ṇāiya	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
..	15	hanta	handa	(ca)
..	15	abhivandae	abhivandate	(cha)
..	24	āyaṁsa°	ātaṁsa°	(gha, ca)
..	37	miu°	mau°	(ka, kha, ga)
..	37	pāsāṭe	pāsāṭie	(ka, kha, ga, gha)
..	40	atīva	atīta	(ca)
..	48	tisovāṇa°	tisomāṇa°	(ka, kha, ga, ca)
..	56	mahālateṇam	mahālaeṇam	(kha, ga, gha)
..	56	vemāṇiehim	vemāṇitehim	(ka, kha, ga, gha)
..	69	viraciya	viratiya	(ka, kha, ga, ca)
..	71	°vāyāṇam	{ vāiyāṇam	(ka, kha, ga, cha)
			{ vāyayāṇam	(gha)
..	75	oṇamanti	tonamanti	(ka, gha)
..	76	mau	mju	(kvacit)
..	77	°ṭāṇam	°ṭāṇam	(ka, ca, cha)
..	118	matṭhae	matṭhate	(ka, kha, ga, gha)
..	118	jaeṇaṁ vijaṇam	jateṇaṁ vijateṇam	(ka, kha, ga, gha)
..	124	bahuṭo	{ bahugṭo	(ka, kha, ga, gha)
			{ bahugṭo	(ca, cha)
..	129	dāra°	{ vāra	(ka, kha, ga, ca, cha)
			{ bāra	(gha)
..	130	°kavelḷuyāo	°kaveluyāto	(ka, kha, ga, gha)
..	135	saṅkalāo	saṅkhalāo	(kvacit)
..	137	pagaṅṭhagā	pakaṅṭhagā	(gha, ca)
..	154	sāe pahāe paese	sāte pahāte patese	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
..	159	savvouya°	savvouta°	(ka, kha, ga, gha)
..	173	°piṇaddha	°vinaddha°	(gha)
..	173	tīṭhāṇa°	tīṭhāṇa°	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
..	185	āṭṭaga	āḍṭaga	(ka, kha, ga, gha)
..	189	uḍḍham	uddham	(ka)
..	197	°veiyā	°vetiyā	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
..	197	phalaesu	°phalatesu	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)

..	219	tao	{ tago tato	(ka) (cha)
..	228	°binṭā	{ °benṭā bethā	(ka kha, ga, cha) (ca)
..	245	suvirai-rayattāṇe	suirai-raittāṇe	(ka, kha, ga, gha, cha)
..	292	kaḍucchuyam	kaḍucchayam	(ka, kha, ga, gha)
..	654	cariyāsu	caliyāsu	(ka, kha, ga)
..	664	pīya°	pīla°	(ka, kha, ga)
..	683	°vinda°	°vanda°	(gha)
..	687	°vūhe	°pūhe	(ka, kha, ga)
..	695	°paribhāittā	paribhāgettā	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
..	706	koṭṭhayāo	koṭṭhāo	(ka, gha)
..	720	agilāe	ailāe	(ka, ca)
..	754	ao°	{ ayo° aya°	(ka, kha, ga) (gha)
..	755	bhiccā	bheccā	(gha)
..	760	kisie	kasie	(ka, kha, ga, gha, cha)
..	771	vāukāyassa	vāuyāgassa	(ka, kha, ga, gha, ca, cha)
..	787	bhikkhuyāṇam	bhichuyāṇam	(gha, ca)
..	791	°ppaogeṇa	°ppayogeṇa	(gha)

Description of the Manuscript

(क) This manuscript was obtained from Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 49 leaves and 98 pages. Each leaf is 10-1/2 "x 4-1/2", with 13 lines in each leaf and 50-55 letters in each line. It was scribed in V.S 1671 and the following is its colophon :

“namo jīṇāpaṃ jīya bhayāṇaṃ ṇamosuya devayāe bhagavaṇe ṇamo paṇṇattfe bhagavaṇe ṇamo bhagavao arahao pasassa passe supasse passavaṇiṇabho. cha. Rāyapaseṇaiyaṃ samattam. cha. granthāgraṃ 2079 samarhitamidam sūtram. cha. saṃvat 1671 varṣe bhādravā sudi 11”

This colophon runs still further, but this faint portion is coloured with yellow.

(ख) They contain 55 and 61 leaves respectively.

(ग) Both of them are similar to the manuscript (क).

(घ) This manuscript belongs to Yati Kanakachandji of Pali (Marwar). Its size is 10½" x 4½". It contains 54 leaves and 108 pages, with 13 lines in each page and 46 to 48 letters in each line.

It was scribed in V.S 1566. The following colophon is appended at the end of the manuscript :—

“cha. śubham bhavatu lekha-ka-pāṭhakayoḥ śrī saṅhasya ca. saṁvat 1566 varṣe caitra sudi 2 tithau adyeha śrīmadanaḥillapattane śrī vṛhat-kharatara-gacche śrī Vardhamānasūrisantāne śrī jinabhadrasūripaṭṭānukrameṇa śrī jinahaṁsasūrirajye vācanācharyajayākāragañiśiṣya vā. dharma-vilāsagaṇi-vācanārtham bha. vastupālabhāryayā lili śravikayā. Putraratna bha, sāliga pumukhaparivāra saśrīkayā suśreyārtham ca lekhitam śrī Rājaprasāniyo-pāṅgam.

(च) This manuscript was obtained from the collection of Punamchand Buddhamai Dudheria of Chhapar (Rajasthan). Each leaf is 12”×5”. There are 42 leaves and 84 pages in this copy, with 15 lines in each page and 48 to 54 letters in each line. Two illustrations are given in the first two pages. The script is beautiful but abounds in mistakes. Approximately it belongs to the sixteenth century.

(छ) This manuscript also was obtained from the collection of Punamchand Buddhamai Dudheria of Chhapar (Raj.) It contains 41 leaves and 82 pages, with 15 lines in each page and 57 to 60 letters in each line. The script is ordinarily fair but flawless. It ends with the following colophon—“lipi saṁvat 1665 varṣe kārtika māse śukla pakṣe saptamī śukre Babberakapure paṇḍita Labdhikallolagaṇinā lekhi.”

(ज) It was obtained from Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. Its size is 10½”×4½”. It contains 52 leaves and 104 pages, with 17 lines in each page and 65 to 70 letters in each line. This manuscript was scribed in V.S. 1605 and ends with the following colophon :—

“iti malayagiriviracitā rājaprasāniyopāṅgavṛttikā samarthitā. samāptam iti. pratyakṣaragaṇanayā granthāgram. cha, cha. pratyakṣaragaṇanāto granthamānam viniścitam. saptatrimśatsatānyatra. ślokānām sarvasaṁkhyayāḥ. cha, granthāgram śloka 3700, cha. śrī. saṁvat 1605 varṣe śrāvaṇa sudi 13, bhāume pattana vāstavyam, paṇḍita Rudrasuta Jiganātha likhitam. śubham bhavatu.

JIVĀJIVĀBHIGAME

The text of this sūtra has been revised on the basis of manuscripts and its *vṛtti*.

The *vṛtti* by Malayagiri is based on old *ādarśa*, hence the texts of palm leaf and the *vṛtti* are identical. The *sūtras* 3/218, 457, 578, 826 together with their footnotes may be consulted in this connection. A great variety of readings in the relatively later editions provides ample room for deliberation and research.

The fact regarding the dissimilarity of readings in the manuscripts of *Jivājivābhigama* has also been pointed out by Śānticaṇḍra, the commentator of *Jambūdvīpaprajñapti*.¹

Upādhyāya Śānticaṇḍra has quoted the text about the description of the *Kalpavṛkṣa* from *Jivājivābhigama*. In describing the fourth *Kalpavṛkṣa* he has quoted the reading 'Kaṇaga-nigaraṇa' which he explains as 'the heap of gold.'¹ In the *Vṛtti* of *Jivājivābhigama* the term 'Kaṇaganigaraṇam' has been explained as 'Kanakasya nigaraṇam, kanaka-nigaraṇam, gālitaṁ, kanakamiti bhāvah'². The change in script has led to change in reading. We find the reading "Kūḍāgā-raṭṭha" in some manuscripts. In the printed editions as well as the hand-written copy we find the reading 'Kūṭāgārādyāni'. It has not been explained in the *Vṛtti* of *Jivājivābhigama*. Of course, it has been explained in the *Vṛtti* of "*Jambūdvīpa-prajñapti*"—"Kūṭākāreṇa—śikharākṛtyāḍhyāni."³

Acarya Malayagiri has himself mentioned the variant readings of the manuscripts.⁴ The verses, which the commentator quotes from other sources, have been included in the original text in comparatively recent manuscripts.⁵

In the *Vṛtti* we find the mention of the commentary on *Jambūdvīpa-prajñapti*. The commentators of *Jambūdvīpa-prajñapti* definitely belong to a period later than that of Malayagiri. Hence it is a matter worthy of investigation whether this mention is an interpolation or whether Malayagiri had really got with him some old commentary of *Jambūdvīpa-prajñapti*.⁶

At some places the *vṛtti* contains a lot of matter worth deliberation. The commentator has explained the term "*Śrivacchu* as *śrivṛkṣa*. Looking to the context it should be *śrivatsa*.⁷

1. Jambūdvīpaprajñapti Vṛtti. p. 108 :

atra cādhikāre jivābhigamasūtrādarṣe kvacidadhikapadam api dṛśyate tattu vṛttāvatyākhyātam svayaṁ paryālocyamānamapi na nārthapradamīti na likhitaṁ, ten tat sampradāyāda vagantavyam, tamantareṇa samyak pāṭhaśuddherapi kartumaśakyatvādīti.

1. Jambūdvīpa Vr. patra 102 : kanakanikaraḥ suvarṇarāśiḥ.

2. Jivājivābhigama, Vr. p. 267.

3. Jambūdvīpaprajñapti Vr. p. 107 : See the footnote of *Jivājivābhigama*, 3/594.

4. (a) Ibid. Vr. p. 321 :

iha bahudhā sūtreṣu pāṭhabhedāḥ parametāvāneva sarvatrāpyartha nārthabhedāntaramitye-tadvyākhyānusāreṇa sarvepyanugantavyā na mogghavyamīti.

(b) Ibid. Vr. p. 376 :

"iha bhūyān pustakeṣu vācanābhedo galitāni ca sūtrāṇi baḥṣu pustakeṣu tato yathā-vasthitavācanābhedaḥpratiṭṭhāyārtham galitasūtrōddharaṇārtham caivaṁ sugamānyapi vivriyante.

5. Ibid, Vṛtti p. 331, 333, 334, 334; 3/820, 830, 834, 837 : The footnotes are worth seeing.

6. Jivābhigama, Vṛtti p. 382 :

kvacit siṁhādīnāṁ varṇanāṁ dṛśyate tad baḥṣu pustakeṣu na dṛṣṭamityupekṣitaṁ, avāśyaṁ cettadvyākhyānena prayojanāṁ tarhi Jambūdvīpaprajñapti śikā paribhāvānyā tatra savistaraṁ tadvyākhyānasya kṛtatvāt.

7. Ibid., vṛtti p. 271 :

"Śrivṛkṣeṇānūkitam—lāñchitam vṛkṣo yeṣāṁ te śrivṛkṣalāñchita vakṣasaḥ."

The original commentator and Malayagiri had before them the intricacies of variant readings and different expositions and in the times of later commentators also such discussions were often held. In this connection, a topic mentioned in the *vṛtti* is of historical importance. The commentator writes that this *sūtra* is obscure on account of the peculiarity of aim and purpose. It can be explained only on the basis of the right tradition and solid ground. It is sheer repudiation of the *sūtra* if it is explained carelessly and whimsically.¹ Due care had been taken that the *sūtra* may not be repudiated or wrongly interpreted. Consequently, attempt was made to preserve the text and its meaning. Even then due to variation in intelligence and scribe's carelessness discrepancies in readings and expositions have taken place. On account of the variant readings we had to take great pains in arriving at the correct text. The reader can estimate the labour involved by the variant readings and notes thereon appended in the edition.

The manuscript marked 'tā' is an abridged version of the text, e.g. the following *sūtra* 1/41—"tāim bhante kiṃ puḍāim āhārenti apu goyamā puṭṭhā ṇo apu. ogā ṇo aṇogā aṇantaro ṇavaram aṇūim pi ā bāyarāim piā uḍḍham vi i ādim pi i savisae ṇo avisae āṇupuvvim ṇo aṇāṇupuvvim ācchaddi vāghhātam pa siya tidisi ṣka. ṇo vaṇṇato kālā nī gandhato su 2 rasato ṇo phāsaho tesim porā-ṇam vipariṇāmettā apuvva vaṇṇa guṇa ṣka uppāettā ātasarīra khettogāḍḍhe poggale savvappaṇattāe āhāramāhārenti."

Due to the flaw in script the reading like *katidisim* (ka) has found place in place of *kimtidisim*. We have not accepted the readings of the ૪I manuscript in many places, because they are too much abridged.

Variant words and forms

1/1	Jiṇakkāyam	Jiṇakhāyam	(kha)
		Jiṇakhātam	(tā)
„	aṇuvī	aṇuvītiyam	(ka, kba)
„	roemāṇā	rotamāṇā	(tā)
1/14	saṅghayaṇa	saṅghataṇa	(tā)

I. Ibid., Vṛtti p. 450 :

sūtrāṇi hyamūni vicitrābhiprāyatayā durlakṣyāṇiṭi samyaksampradāyādavasātavyāni, sampradāyaśca yathoktasvarūpa itī na kācidanupapattīḥ, na ca sūtrābhiprāyamajñātvā anupapattirudbhāvanīyā, mahāśātanāyogato mahā'narthaprasakteḥ, sūtrakṛto hi bhagavanto mahīyānsaḥ pramāṇikṛtāśca mahīyastaraistatkālavarttibhiranyaicvidvadbhīstato na tatsūtreṣu manāgapyanupapattīḥ, kevalam sampradāyāvasāye yatṇo vidheyāḥ, ye tu sūtrābhiprāyamajñātvā yathā-kathāñcidanupapattimudbhāvayante te mahato mahīyasa āśātayantīti dīrghatārasaṃsārabhājāḥ, āha ca ṭikākārah—“evam vicitrāṇi sūtrāṇi samyaksampradāyādavaseyāṇītyavijñāya tadabhiprāyaṃ nānupapatticodanā kāryā, mahāśātanāyogato mahā'narthaprasaṅgādīti” evam ca ye samprati duṣṣamānubhāvataḥ pravacanasyopaplavāya dhūmaketava ivotṭhitāḥ sakalakālasukarāvya vacchinna suvidhimārgānuṣṭhātṛsuvihitasādhuṣu matsariṇaste'pi vṛddhaparamparāyātasampradāyādavaseyaṃ sūtrābhiprāyamapāsyotsūtram prarūpayanto mahāśātanābhājāḥ pratipattavyā apakarṇayitavyāśca dūratatattvavedibhīriti kṛtam prasaṅgena”.

	saṅṅāo	saṅṅāto	(ka)
	joguvaoge	joguvatoge	(ka)
1/19	kohakasāe	kohakasāte	(ka)
1/21	kaṅhalessā	kiṅhalessā	(ga, ṭa)
1/26	āṅapāṅu°	āṅapāna°	(ṭ)
1/72	chīravirāliya	chiravirāliya	(k)
		chirivirāliya	(kha)
		chirivavirāliā	(ga, ṭa)
		chīravirāli	(tā)
1/73	thihū	thibhu	(ka)
1/100	tahappagārā	tahappakārā	(ka, kha, ga, ṭa)
1/101	duāgaiyā	duyāgatiyā	(ga)
1/119	āhāro	ādāhāro	(tā)
2/59	paliovamāim	palitovamāim	(ka, kha, ga, ṭa)
2/60	abbhahiyāim	abbhadhiyāim	(ga)
2/74	phumphuaggi	phumphaaggi	(ka)
		pumpḥaaggi	(ga)
2/92	vāsapuhattam	vāsapudhattam	(ka)
		vāsapuhuttam	(ga, ṭa)
2/241	etāsi	etesi	(ka, kha, ga, ṭa)
		egāsi	(tā)
2/149	vaṅassati°	vaṅapphai°	(ka, kha, ga)
3/5	joyaṅa°	jotaṅa	(ka)
3/6	āvabahule	avabahule	(ka)
		āvabahule	(tā)
3/33	ābādḥāe	ābādḥāe	(ka, kha, ṭa)
3/48	je ṅam imam	jeṅimam	(tā)
3/73	asīuttaram	āsīuttare	(tā)
3/77	aḍahattare	aḍasattari	(ga)
		aṭṭhuttare	(tā)
3/77	kiṅhapuḍa	kiṅṅapuḍa	(ka, ga)
3/80	bāhaleṅam	pāhaleṅam	(tā)
3/94	kerisagā	kerisatā	(ka, kha, ga)
3/96	phuḍita°	phuḍiga°	(tā)
		sphuḍita°	(ma, vṛ)
3/118	usiṅavedaṅijjesu	usunavedaṅijjesu	(tā)
3/118	viraciya	viraiya	(ka, ga, ṭa)
3/119	egāham	ekāham	(kha, ga, ṭa)
3/234	ettha	tattha	(ka, kha, ga, ṭa)
		yattha	(tā)
3/323	jambūṅadamayā	jambūṅatamayā	(ka)
		iambūṅatāmāyā	(ga, ṭa, tā)

3/371	uvagāriyālayaṇe	ovāriyalayaṇe	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
		uvakāriyalayaṇe	(tā)
3/372	khambhuggaya	thambhuggaya	(ka, ga)
3/412	dhūvadhāḍiyāo	dhūmadhāḍiyāo	(ka, kha)
3/593	oviya°	uvvitiya	(ka, kha)
		uvviya	(ga)
3/733	bāyālisam	bādālisam	(tā)
3/750	bāyālisam	bātālisam	(tā)
3/748	kelāse	ketilāse	(kha)
		kailāse	(ga, ṭa, tri)
3/794	egunayālam	iūyālam	(ka)
		ūyālam	(kha, tā)
		iguyālam	(ga)
3/798	egayālisam	eyālisam	(ka, kha, ṭa)
		egayālisam	(ga)
		itālisam	(tā)
3/829	teṇaṭṭheṇam	eeṇaṭṭheṇam	(ga, tri)
3/838/13	maṇussāṇam	maṇūsāṇam	(tā)
3/840	kayāi	kadāyī	(tā)
3/841	balāhakā	balāhatā	(tā)
3/841	bādare vijjukāre	vātare vijjutāre	(tā)
	badare thaṇiyasadde	vātare thaṇitasadde	(tā)
3/841	nadī oi vā ṇihīti vā	ṇandīti vā ṇidhayoti vā	(tā)
3/860	supakkakhoyarasei	supikkakhot araseti	(tā)
3/877	khodavarāṇṇam	khoyavarāṇṇam	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
3/949	khodasarisaṃ	khotodasarisam	(tā)
3/998	heṭṭhimpī	haṭṭhimpī	(ga, ṭa, tā)
		hiṭṭhampī	(tri)
3/1007	savvaheṭṭhillam	savvaheṭṭhimayam	(tā)
3/1007	savvovarillam	savvupparillam	(ka, kha, ṭa)
3/1007	savvabbhīmtarillam	savvabbhantaram	(tā)
5/37	ṇiodā	ṇiotā	(tā)
5/54	°ṇiodajīvā	°ṇigodajīvā	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
5/58	°ṇiodajīvā	°ṇioyajīvāvi	(ka, kha, ga, ṭa, tri)
9/11	aṇāie	aṇādie	(tā)
9/28	sakāsāi	sakasādī	(tā)
9/131	ohidaṃsaṇi	avadhidaṃsaṇi	(ga, tri)
		odhidaṃsaṇi	(tā)

Description of the Manuscript

(क) Original text : leaves 94; saṃvat 1575; Hand-written.

This Ms. belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 94 leaves and 188 pages with 15 lines in each page and 53-56 letters in each line. Its size is $13\frac{1}{4}'' \times 5''$. It is beautifully scribed. The following is the eulogy at the end :—

“Saṁvat 1575 varṣe āśvinamāse kṛṣṇapakṣe trayodaśyām tithau bhṛguvāsare pattananagaramadhye moḍhajātiya Joṣī vīṭṭhalasuta latakaṇalikhitaṁ. cha. yādīśaṁ pustake dṛṣṭaṁ, tādīśaṁ likhitaṁ mayā/yadi śuddhamaśuddhaṁ va mama doṣo na dīyate //1// śubham bhavatu lekhaka-pāṭhakayoḥ kalyāṇamastu. cha. cha. śrī. śrī. cha. granthāgra 5200.

(६) Original text : leaves 80.

This Ms. belongs to Sardarshahar mentioned above. It contains 80 leaves and 160 pages, with 15 lines in each page and nearly 61 letters in each line. Its size $12'' \times 4\frac{1}{4}''$. The Ms. is very old and tattered. The scribing year is not mentioned at the end, but most probably it must belong to the 16th century.

(७) Original text : leaves 90. Illustrated.

It belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 90 leaves and 180 pages with 15 lines in each page and about 63 words per line. Its size is $11\frac{1}{2}'' \times 4\frac{1}{2}''$. On the first page there is beautiful illustration in golden ink of the image of the Tirthaṅkaradeva. It is very beautifully scribed. In the centre there is *bāvaḍī* and in the middle of that there is a red circular spot.

There is no puṣpikā and scribing year at the end of the ms., but most probably it belongs to the 16th century.

It almost tallies with the palmleaf manuscript and the commentary.

(८) Palmleaf photo-print of Jaisalmer Bhaṇḍāra.

This copy mostly tallies with the commentary. It does not contain the pages containing the sūtras 105-115 of the third *pratipatti*.

(९) टब्बा : Scribing year 1800. It belongs to the Order's Library, Ladnun. It had been thoroughly studied by Ācārya Kālūgaṇī (the eighth pontiff) and the text had been corrected by him at various places.

Jivājivābhigama ṭikā (Hand-written)

It belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 250 leaves, and 500 pages with 15 lines per page and about 65 letters per line. Its size is $10'' \times 4\frac{1}{4}''$. The scribing year is saṁvat 1717. The script is very beautiful.

Acknowledgements

Jainism has a long tradition of councils held for compiling the texts of the *Āgamas*. Ere 1500 years from today there had been four councils on *Āgama*. After Devarddhigaṇī no well-planned *Āgama* council was held. The *Āgamas*

compiled at that time fell into disorder during this long interval. So a well-organised council was the need of the hour to revise the *Āgamas* again. Ācārya Tulsī tried his best for a general consensus on *Āgama*-editing but it could not materialise. Lastly it was decided that if our editing of *Āgamas* is research-oriented, unbiased and punctilious, it will be universally accepted. On this consideration we started our work of holding the council for critically editing the *Āgamas*.

Ācāryaśrī Tulsī is the chief of this *vācanā*. *Vācanā* means “teaching”, that comprises so many activities like search of the correct text, translation, critical and comparative study, and so on. In all these activities the active cooperation, guidance and encouragement from the Ācāryaśrī is always available to us. It was our forte for undertaking such onerous task.

Instead of expressing my gratitude to the Ācāryaśrī and thereby feeling relieved from the burden of his gratefulness, I feel it better to require more energy through his blessings and become heavier for taking up the next assignment.

In editing the texts of *Ovāiyam* and *Rāyapaseṇiyam* of this book Muni Sudarshan, Muni Madhukara, Muni Hiralal and in editing the text of *jīvājīvābhigame* Muni Sudarshan & Muni Hiralal have worked with diligence and perseverance. Muni Chatramal, Muni Balchand, Muni Hansraj and Muni Maṇilal have also lent remarkable cooperation in editing the text of *Jīvājīvābhigame*.

Word index of *Ovāiyam* has been prepared by Muni Shrichand and that of *Rāyapaseṇiyam* and *Jīvājīvābhigame* by Muni Hiralal. Muni Sudarshan, Muni Hiralal and Sādhvī Siddhaprajñā, and Samaṇī Kusumaprajñā actively cooperated in correcting the proofs of the book.

The general get-up of *Ovāiyam* and *Rāyapaseṇiyam* has been prepared by Muni Mohanlal “Amet”. The first two indexes have been prepared by Muni Hiralal. In the revision of the text also he was remarkably helpful.

While evaluating their cooperation in the accomplishment of this assignment I express my gratefulness to all of them.

The services of Late Madanchand Gauthi, who had a deep insight into the *Āgamas* and who helped me in editing the text of the *Āgamas*, cannot be forgotten at this stage. If he had been alive, he would have been very happy at this achievement.

Shri Shrichand Rampuria, Kulapati, Jain Vishva Bharati and the Managing Editor of *Āgama* Literature, has been actively involved in the *Āgama* work from the very beginning. He is fully-determined and working hard to reach the *Āgama* literature to the laymen. Having relieved himself of his well-set Advocate’s job he has been devoting most of his time to the *Āgama* programme. Shri

Khemchand Sethia, President and Shri Shrichand Bengani, Secretary of Jain Vishva Bharti have also actively cooperated in this task. The English rendering of the Editorial and the Introduction were done under the supervision of Dr. N. Tatia and Dr. V. P. Jain by Shri R.S. Soni & Samaṅīs Chinmayaprājñā and Ujjvalaprājñā have also been actively associated with it.

It is simple formality to mention the names of those proceeding in the same direction with the same speed for a common goal. Really it is a sacred duty for us and we have all fulfilled it.

—Yuvācārya Mahāprajña

Adhyātma Sadhanā Kendra,
Mehrauli, Delhi.
Akṣaya Tṛtīyā, 1st May, 1987.

INTRODUCTION

The present book is *Uvaṅgasuttānti*. It contains the original text of twelve *Upāṅgas* with variant readings and abbreviated texts. It has two parts. The first part contains three Āgamas (1) *Ovāiyam*, (2) *Rāyapaseṇiyam* and (3) *Jivājivābhigame*. The second part contains nine *āgamas* : (1) *Paṇṇavaṇṇā*, (2) *Jambuddīva-panṇattī*, (3) *Candapanṇattī*, (4) *Sūrapanṇattī*, (5) *Nirayāvallyāo* (*Kappiyāo*), (6) *Kappavaḍḍisiyāo* (7) *Pupphiyāo*, (8) *Pupphacūliyāo*, (9) *Vaṅhidasāo*.

In the ancient tradition we find the following two classifications of the *āgamas* :—

(1) *Aṅgapraviṣṭa* and (2) *Aṅgabdhya*.

There was no such categorisation as *Upāṅga* in the old tradition. *Nandīsūtra* bears no mention of any *Upāṅga*. In any older *āgama* too, *Upāṅga* has not been mentioned. The *Tattvārthabhāṣya* uses this word for the first time, which is the earliest in the available texts.¹

Relation between Aṅga and Upāṅga

Tattvārthasūtra mentions the word *Upāṅga*, but it does not indicate any relationship between them. We find it mentioned in the *vr̥tti* of *Jambūdvīpaprajñapti* and the *Sukhabodhā Sāmācārī* at page 34, composed by Shrichandra Sūri, the commentator of *Nirayāvalikā*. According to *Jambūdvīpaprajñapti*, the interrelationship between *aṅgas* and *upāṅgas* is shown as under :—

<i>Aṅga</i>	<i>Upāṅga</i>
Ācārāṅga	—Aupapātika
Sūtrakṛtāṅga	—Rājaprasnīya
Sthānāṅga	—Jivājivābhigama
Samavāyāṅga	—Prajñāpanā
Bhagavatī	—Jambūdvīpaprajñapti
Jñātādharmakathā	—Candraprajñapti
Upāsakadaśā	—Sūryaprajñapti
Antakṛddaśā	—Nirayāvalikā(Kalpikā)
Anuttaropapātikadaśā	—Kaipāvatansikā

1. *Tattvārthabhāṣya*, 1/20 : tasya ca mahāviṣayatvāttānāstānarthānadhikṛtya prakaraṇasamāptya-pekṣamaṅgopāṅganānātvaṃ.

Praśnavyākaraṇa	—Puṣpikā
Vipākaśruta	—Puṣpacūlikā
Dṛṣṭivāda	—Vṛṣṇidaśā ¹

1. *Ovāiyam*

Nomenclature

The present *āgama* is called *Ovāiyam* (Aupapātikā). Its main theme is *upapāta*. *Samavasaraṇa* is its incidental treatment. On the basis of the main theme treated herein, it is known as *Ovāiyam* (Skt. Aupapātika). On deleting letters “va” as per the Prakrit Grammar Rule, we get *ovāiyam* form in place of *ovavāiyam*. We come across the same name in the Nandīsūtra.²

Subject-Matter

The main theme enunciated in the *Aupapātika* is ‘rebirth’, that so and so *upapāta* (instantaneous rebirth) takes place because of such and such conduct.

The exordium consists of many types of descriptions of town, monastery, garden, king etc. The present sūtra has come to be known as a Varṇaka (describer) sūtra because of these descriptions and has been used in various epilogues for this reason.

Commentaries

The first commentary of the *Aupapātika* is the *vṛtti* by Abhayadeva Sūri, the commentator of the nine *āgamas*. The introductory verse shows that Abhayadeva Sūri had got no other earlier *vṛtti* in front of him. He composed this *vṛtti* with the help of other texts. He himself mentions :—

śrīvarddhamānamānamya prāyo’nyagranthavikṣitā /
aupapātikaśāstrasya vyākhyā kācidvidhiyate //

The commentator has mentioned the views of the foregoing ācāryas at several places.

1. snānādvā pañḍurībhūtagātrā iti vṛddhāḥ/(Vṛtti p. 171)
2. cūrṇikārastvāha/(Vṛtti p. 224)
3. asya ca vṛddhoktasyādhiḥkṛtagāthāvivarāṇasyārtham bhāvārthaḥ/
(Vṛtti p. 225)

This commentary is neither too elaborate nor too abridged. Its medium size contains most of the points worth discussing.

The *Ovāiyam* contains numerous variant readings. Abhayadeva has described the first sūtra thus—“This sūtra is abundant in variant readings. I shall deal with only what is intelligible.”³ Most probably such variant readings do

1. Jambūdvīpaprajñapti, Śāntīcandriyā Vṛtti, patra 1, 2.

2. Nandīsūtra, 76.

3. Aupapātika, vṛtti, page 2 :

iha ca bahavo vācānābheda dṛśyante, teṣu ca yamevāvabhotsyāmahe tameva vyākhyāsyāmaḥ.

not appear in any other sūtra. If the commentator had not compiled them, they would have passed into oblivion.

The commentary ends with an eulogy in three verses, in which the commentator mentions the names of his *guru*—Shri Jineśvara Sūri, of the Candra lineage, and the place of composition—Aṇahi'apāṭakanagar and Droṇācārya who revised the Vṛtti :

candrakula-vipula-bhūtala-yugapravara-varḍhamānakalpataroḥ /
 kusumopamasya sūreḥ guṇasaurabha-bharita-bhavanasya //
 nissambandhavihārasya sarvadā śrījineśvarāhvasya /
 śiṣyeṇābhayadevākhyasūriṇeyam kṛtā vṛttiḥ //
 aṇahilapāṭakanagare śrīmaddroṇākhyasūrimukhyena /
 paṇḍitaguṇena guṇavatpriyeṇa saṁśodhitā ceyam //

The second commentary on the *Ovāya* is '*Stabaka*', which was probably composed by Muni Dharmasī and belongs to the eighteenth century of the Vikram era.

2. Rāyapaseṇiyam

Nomenclature

This sūtra is called *Rāyapaseṇiyam*. Pt. Becharadas Doshi has named it as *Rāyapaseṇaiyam*, stating that it is based on the '*Rājaprasenakiya*' referred to by *Siddhasenaganī* and *Rājaprasenajīta* referred to by Muni Candrasūri.¹

The earliest mention of this sūtra is found in *Nandīsūtra*, under the name *Rāyapaseṇiya*.² The name has not been explained in the *Nandī cūrṇi* and its commentaries by Haribhadrasūri and Ācārya Malayagiri who has named it as '*Rājaprasṇīya*' while dealing with it. King Pradeśī had asked some questions to Keśīsvāmī. The present sūtra contains replies to the questions and hence the name '*Rājaprasṇīya*'.³

From the point of view of treatment of the subject-matter, Malayagiri's commentary is quite in order and the name does not sound awkward or improper on that account. But lexicographically the name is open to criticism, specially by Pt. Becharadas who contends that—"the word '*praśna*' takes the forms '*paṇha*' and '*paṣiṇa*' in Prakrit, and not the form '*paseṇa*'. There is no form as '*paseṇa*' according to Prakrit grammar. If we recognise it

1. Rāyapaseṇaiyam, praveśaka, page 6 & 7.

2. Nandī, sūtra 77.

3. (a) Rāyapaseṇīya vṛtti, page 1 :

atha kasmād idam upāṅgam rājaprasṇīyābhīdhānamīti? ucyate, iha pradeśināmā rājā bhagavataḥ keśikumāraśramaṇasya samīpe yān jivaviṣayān praśnānakārṣit, yāni ca tasmai keśikumāraśramaṇogaṇabhṛt vyākaraṇāni vyākṛtavān.

(b) Rāyapaseṇīya Vṛtti, page 2 :

rājaprasṇeṣu bhavaṃ rājaprasṇīyam.

as an authoritative form (*ārṣa*), all rules about the correct or wrong usage of words in Prakrit would have been set to naught.¹

Pt. Becharadas's contention may be valid, but it is not irrefutable. In our view—

(1) The original form of '*paseṇiya*' is '*paṣiṇiya*' (Skt. *praśnita*). In pronunciation, assumption of the form 'i' by 'e' is quite consistent. We find such departure elsewhere too. For example :—

pihuṇiṇam	=	pehuṇeṇam	(Deśi)
nivvāṇam	=	nevvāṇam	(Skt. <i>nirvāṇam</i>)
nivvutī	=	nevvutī	(Skt. <i>nirvṛttiḥ</i>)
tigicchiyam	=	tegicchiyam	(Skt. <i>cikitsitam</i>)
binṭā	=	benṭā	(Skt. <i>vṛttam</i>)
bi	=	be	(Skt. <i>dvi</i>)
tikālam	=	tekālam	(Skt. <i>trikālam</i>)

(2) In the *Āgama-sūtras* and old scriptures we find the text as *rāyapaseṇiya*'. The usage '*rāyapaseṇaiya*' is not available anywhere. In the *Nandisūtra* we come across '*rāyapaseṇiya*' as mentioned earlier. In '*Pākṣika sūtra*' too, '*rāyapaseṇiya*' occurs.² The composer of the *avacūri* of *Pākṣika sūtra* gives its Sanskrit form as '*rājapraśniyam*'.³

(3) *Prasenajit* takes the form '*paseṇaiya*' in Prakrit. In the *Sthānāṅga sūtra* the fifth *kulakara* is named as '*paseṇaiya*'.⁴ This form is available at various other places too.

If the subject-matter of the present *sūtra* had been related to King *Prasenajit*, the name could have been "*Rāyapaseṇaiyam*". But in fact the subject-matter relates to King *Paesī*; hence the form "*rāyapaseṇaiya*" is not compatible. In the *Dīghanikāya* King *Pāyāsī* is mentioned as a feudal lord to *Prasenajit*. But here we find no mention of King *Prasenajit*. Therefore the usage '*Rāyapaseṇaiyam*' has no basis.

From the point of view of the subject-matter we may conjecture about the name '*Rāyapaeṣiyam*', but there is no basis for such a conjecture.

King *Pradeśī*'s queries form the basis of the composition of the *sūtra* in question. Therefore its name must be '*Rāyapaseṇiya*' and none else.

Commentaries

Its two commentaries are named as (i) *vṛtti*, and (ii) *stabaka* (ṭabbā or

1. *Rāyapaseṇaiyam*, *praveśaka*, page 6.

2. *Pākṣikasūtram*, page 76.

3. *Pākṣikasūtram* *Avacūri*, page 77 :

Rājñaḥ pradeśi nāmnaḥ praśnāni, tānyadhikṛtya kṛtam adhyayanam—rājapraśniyam.

4. *Ṭhāṇam*, 7/62

bālāvabodha). The former is in Sanskrit while the latter is in the admixture of Rajasthani and Gujarati. Vṛtti was composed by the renowned annotator Ācārya Malayagiri while the stabaka was written jointly by Pārśvacandraḡaṇī (16th Century) and Muni Dharmasingh (18th Century). Stabaka is a short piece of translation but vṛtti is the real commentary which clarifies the underlying meaning of the sūtra. Although the vṛtti has not been able to explain the whole theme, yet the commentator has provided valuable information at various places.

The author had to face many obstacles in writing the vṛtti, the most difficult of them being the variations in text. He has mentioned this difficulty at several places.¹ To surmount these obstacles the vṛtti has been bifurcated in two parts :—

(i) The first part : for commentary of intelligible words, and (ii) the later part : for commentary of technical terms. Thus the first part is quite extensive, while the later part is brief. The causes of detailed treatment in the first part are twofold :—

- (a) Novelty of the subject-matter.
- (b) Abundance of variant readings.

Likewise the later part has been treated in brief due to the following reasons :

- (a) Intelligibility of the text.
- (b) Repetition of the terms already explained.
- (c) Small number of variant readings.²

The commentator desires us to learn the mundane topics from the experts of that art.³ Both Rājaprasnīya and Jivābhigama bear identical topics at various places. Ācārya Malayagiri is the commentator of both of them. That is why the topics of the commentaries are largely identical. The commentator had obviously got the original commentary of Jivābhigama, which fact has been mentioned time and again in this commentary.⁴

1. Rāyapasenīya Vṛtti, p. 204,241,259.

2. Rāyapasenīya Vṛtti, page 239 :

iha prāktano granthaḡ prāyo'pūrvaḡ bhūyānapi ca pustakeṣu vācanābhedaṣṭato mā'bhūt śiṣyāṇaṃ sammoha itī kvāpi sugamo'pi yathāvasthitavācanākramapradarśanārthaṃ likhita, ita ūrdhvaṃ tu prāyaḡ sugamaḡ prāgyākyātasvarūpaṣca na ca vācanābhedo'pyatibādara itī svayaṃ paribhāvanīyaḡ, viṣamapadavyākhyā tu vidhāsyate ita.

3. Ibid., page 145 :

ete nartanaividhayaḡ abhinayavidhayaṣca nāṭyakuṣalebhyo veditavyāḡ.

4. (a) Ibid, page 100 :

āha ca jivābhigamamūlaṭīkākṛt vijayadūṣyam vastraviṣeṣaḡ itī.

(b) Ibid, page 158 :

āha ca jivābhigamamūlaṭīkākāraḡ argalāprāsādā yatrārgalā niyamyante itī.

At one stage Jivābhigama cūrpi has also been mentioned.

Vṛtti contains 3700 ślokaḥ :—

pratyakṣaragaṇanāto granthamānaṁ viniścitam /
saptatrimśacchatānyatra ślokānāṁ sarvasamkhyayā //

At the very outset, the commentator remembers Lord Mahāvīra reverentially and with guru's permission proceeds with the commentary on the Rājaprasānya sūtra :—

praṇamata vīrajineśvaracaranayugaṁ paramapāṭalacchāyam /
adharīkṛtanatavāsavamukūṣasthitaratnarucicakram //
rājaprasānyamaham vivṛṇomi yathā'gamaṁ guruniyogāt /
tatra ca śaktimaśaktiṁ guravo jānanti kā cintā //

At the end, the commentator prays for the victory of his preceptor as also attainment of knowledge for the reader :—

adharīkṛtacintāmaṇi-kalpalatā-kāmadhenu-māhātmyāḥ /
vijayantāṁ gurupādāḥ vimalīkṛtaśiṣyamativibhavāḥ //
rājaprasānyamidam gambhīrārtham vivṛṇvatā kuśalam /
yadavāpi malayagirinā sādhujanastena bhavatu kṛtī //1//

jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa—āvarṭtanapīṭhikā yatrendrakīlako bhavati iti.

(c) Ibid, page 159 :

āha ca jivābhigamamūlaṭīkākṛt—kūto māḍabhāgaḥ ucchayaḥ śikharam iti.

āha ca—jivābhigamamūlaṭīkākṛt—aṅkamayāḥ pakṣāstadekadeśabhūtā evaṁ pakṣa bhāvo'pi dṛṣṭavyā iti.

(d) Ibid, p. 160 :

uktañca jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa ohāḍaṇi hāragrahaṇam ? mahat kṣullakam ca puñchanī' iti.

(e) Ibid, p. 161 :

āha ca jivābhigamamūlaṭīkākṛt—naiśedhikī niśīdanasthānam iti.

(f) Ibid, p. 168 :

āha ca jivābhigamamūlaṭīkākāraḥ—prakaṇṭhau pīṭhaviśeṣī iti.

(g) Ibid, p. 169 :

uktañ ca jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa—prāsādāvatamsakau prāsādaviśeṣau iti.

(h) Ibid, p. 176 :

uktañ ca jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa—manogulikā nāma pīṭhikā iti.

(i) Ibid, p. 177 :

uktañ ca jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa—haya kaṇṭhau—hayakaṇṭhapramāṇau ratnaviśeṣau evaṁ sarve'pi kaṇṭhā vācyā iti.

(j) Ibid, p. 180 :

uktañ ca jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa—tailasamudgakau sugandhitaiḥādihārau.

(k) Ibid, p. 189 :

jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa—haya kaṇṭhau—hayakaṇṭhapramāṇau ratnaviśeṣau evaṁ sarve'pi kaṇṭhā vācyā iti.

(l) Ibid, p. 195 :

uktañ ca jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa—dagamaṇḍapāḥ-sphāṭikā maṇḍapā iti.

(m) Ibid, p. 226 :

jivābhigamamūlaṭīkākāreṇa—bibhōyaṇā—upadhānakānyucyante iti.

JIVĀJIVĀBHIGAME

Nomenclature

The āgama under review is Jivājivābhigame. Jīva and ajīva—the two basic tattvas—have been dealt with herein, hence it has been named as Jivājivābhigama. It contains nine chapters in which the sentient beings have been numerically classified :—

1. Two kinds of mundane beings—mobile and immobile.
2. Three kinds of mundane beings—woman, man and eunuch.
3. Four kinds of mundane beings—hellish-beings, animals, men and gods.
4. Five kind of mundāne beings—one-sensed, two-sensed, three-sensed, four-sensed and five-sensed.
5. Six kinds of mundane beings—earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, air-bodied, vegetation-bodied and mobile-bodied beings.
6. Seven kinds of mundane beings—hellish, male animals, female animals, men, women, gods and goddesses.
7. Eight kinds of mundane beings—first time hellish, second time hellish, first time animal, second time animal, first time man, second time man, first time god, second time god.
8. Nine kinds of mundane beings—earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, air-bodied, vegetation-bodied, two-sensed, three-sensed, four-sensed and five-sensed.
9. Ten kinds of mundane beings—one time one-sensed, second time one-sensed, one time two-sensed, second time two-sensed, one time three-sensed, second time three-sensed, one time four-sensed, second time four-sensed, first time five-sensed, second time five-sensed.

The whole of Jivābhigama has been dealt with upto the end of the eighth sūtra of the ninth *pratipatti*. This classification is based on various other criteria, e.g., two kinds of sentient beings—emancipated (*siddha*) and non-emancipated (*asiddha*).

A sentient being has three other categories too—one possessing right vision, perverted vision and right-cum-perverted vision.

In this āgama secondary subjects are available in abundance, which provide detailed information about Indian society and life. From the architectural point of view the description of 'padmavara' (lotus) altar and 'vijyadvāra' (gate of victory) is very important.

The āgama is a compilation of various *ādeśas* (view-points). The sthaviras

held divergent views on single topics. The word *ādeśa* was used for a view-point. This *āgama* is supplementary in nature. Hence it embodies various view-points of the *sthaviras*. The commentator uses *ādeśa* in the sense of “kinds”.¹ In essence the compilation of various viewpoints is clearly proved. In *Jivājivābhigama*, 2/20, we find four *ādeśas* whereas in 2/48 there are five. The commentator is of the view that only the extraordinarily gifted persons can pass a judgment as to which of five *ādeśas* is proper. There were no such gifted persons during the period of the *sthaviras*, hence the commentator has obviously abstained from expressing his own views on the subject. He has simply compiled the available *ādeśas*.²

The *sthaviras* are the authors of this *āgama*. This is clearly indicated at the beginning of the *āgama*.³

Commentaries

Two commentaries are available on this *sūtra*—one by Ācārya Haribhadra, and the other by Ācārya Malayagiri. The former is concise whereas the latter is quite elaborate. Malayagiri's *vṛtti* contains the ascription “*iti vṛddhāḥ*” as well as the mention of the original text, the commentator and the *cūrṇi* at several places :

‘*iti vṛddhāḥ*’⁴

‘*iyam ca vyākhyā mūlaṭīkānusāreṇa kṛtā*’⁶

‘*uktaṅca mūlaṭīkāyām*’⁶

‘*āha ca mūlaṭīkāḥ*’⁷

‘*tāi ca mūlaṭīkāḥ kṛtā vaiviktyena na vyākhyātā iti sampradāyādvavaseyāḥ*’⁸

‘*mūlaṭīkāḥ kārēṇāvyākhyānāt*’⁹

‘*āha ca mūlaṭīkāḥ kārāḥ—uktaṁ cūrṇau*’¹⁰

‘*āha ca mūlaṭīkāḥ kārāḥ—uktaṁ mūlaṭīkāḥ kārēṇa*’¹¹

1. *Jivājivābhigama*, *Vṛtti* p. 53 :

“*ādeśa śabda iha prakāravāci*”—*ādesotti pagaro*’*iti vacanāt, ekenaprakāreṇa, ekaprakāra-madhikṛtyetibhāvārthah*’.

2. *Ibid.*, p. 59 :

amiśam ca pañcānāmādeśānāmanyatamādeśasamicīnatānirṇayo’*tisayajñānibhiḥ sarvotkrṣṭa-śruta labdhisampannairvā kartum śakyate te ca sūtrakṛtpratipattikāle nāsīranniti sūtrakṛṇa nirṇayam kṛtavāniti*’.

3. *Jivājivābhigama*, 1/1 :

“*iha khalu jīnamayaṁ jīṇānumayaṁ jīṇānulomaṁ jīṇāpṇāṇitaṁ jīṇāparūviyaṁ jīṇākkhāyaṁ jīṇānucīṇaṁ jīṇāpṇāṇataṁ jīṇādesiyam jīṇāpasatthṁ aṇuvīi taṁ saddahamāṇā taṁ pattiya-māṇā taṁ pattiyaṁ māṇā taṁ roemaṇā therā bhagavanti jivājivābhigame ṇāmajjhayaṇaṁ paṇṇavaimsu*”.

4. *Vṛtti*, p. 27

8. „ p. 136

5. „ p. 64

9. „ p. 136

6. „ p. 109

10. „ p. 137

7. „ p. 122

11. „ p. 180

- 'uktaṃ mūlaṭīkākārah'¹
 'āha ca mūlaṭīkākārah'²
 'uktaṃ ca mūlaṭīkākārah'³
 'āha ca mūlaṭīkākārah'⁴
 'āha ca mūlaṭīkākārah'⁵
 'uktañca mūlaṭīkākārah'⁶
 'uktañca mūlaṭīkākārah'⁷
 'āha ca mūlaṭīkākārah', 'cūrṇikāstvevamāha'⁸
 'āha ca mūlaṭīkākārah' 'āha ca cūrṇikṛt'⁹
 'uktañca mūlaṭīkākārah', 'Jīvābhigama mūlaṭīkākārah'¹⁰
 'āha ca mūlaṭīkākārah' 'āha ca cūrṇikṛt'¹¹
 'tathā cāha mūlaṭīkākārah'¹²
 'āha ca mūlacūrṇikṛt'¹³
 'mūlaṭīkākārah'pyāha.....cūrṇikāro'pyāha'¹⁴
 'āha cūrṇikṛt'¹⁵
 'tathā cāha mūlaṭīkākārah'¹⁶
 'āha ca cūrṇikṛt'¹⁷
 'uktaṃ cūrṇau'¹⁸
 'āha ca mūlaṭīkākārah'¹⁹
 'āha cūrṇikṛt āha ca ṭīkākārah'²⁰
 'mūlaṭīkākārah'pi'²¹
 'āha ca mūlaṭīkākārah'²²

Fulfilling the assignment

The credit of editing this text goes to a great extent to Yuvācārya Mahāprajāna, because the work has been accomplished through his perseverance day and night, otherwise this onerous task was difficult to be finalised. He is basically inclined towards yoga. Therefore it is easy for him to maintain his equipoise (concentration). Not only that, being engrossed in the study of the *Āgamas* in a routine manner he has developed a keen intellect in grasping the inner mysteries of things. The credit of his intellectual development goes to his humbleness, diligence and total surrender to his preceptor. He has been displaying such inclination since childhood. Since he came over to me, this

1. Vṛtti, p. 141	12. Vṛtti, p. 354
2. „ p. 142	13. „ p. 369
3. „ p. 142	14. „ p. 370
4. „ p. 277	15. „ p. 384
5. „ p. 186	16. „ p. 438
6. „ p. 204	17. „ p. 441
7. „ p. 205	18. „ p. 442
8. „ p. 209	19. „ p. 444
9. „ p. 210	20. „ p. 450
10. „ p. 214	21. „ p. 452
11. „ p. 321	22. „ p. 457

learning has been gradually increasing. I am quite satisfied with his capacity to work and his dutifulness.

Several other saints have cooperated in revising the text of this *āgama*. I heartily bless them and wish that their work-born capacity should develop all the more.

My joy knows no bounds to see that the gigantic task of text revision has been successfully brought to completion through the cooperation of my disciples—the monks and nuns of the order.

Adhyātma Sādhanā Kendra,
Mehrauli—New Delhi,
Akṣaya Tṛtīyā,
1st May, 1987.

—Ācārya Tulsī

रायपसेणियं

सूरियाभो

सूत्र १ से ६६८

पृ० १ से १६१

उक्खेव-पदं १, सूरियाभस्स ओहिपओग-पदं ७, सूरियाभेण भगवओ वंदण-पदं ८, आभिओ-
गिय-देव-पेसण-पदं ९, आभिओगिय-देवेहि भगवओ वंदण-पदं १०, वंदणाणुमोदण-पदं ११,

आभिओगिर्णह जोयणमंडलनिव्वत्तण-पदं १२, सूरियाभस्स गमण-ओसणा-पदं १३, सूरिया-
 भविमाणवासिदेवाणं समवसरण-पदं १६, जाणविमाण-विउव्वण-पदं १७, ०तिसोवाणपडिक्खम-
 विउव्वण-पदं १९, ०तोरण-पदं २०, ०अट्टमंगल-पदं २१, ०झय-पदं २२, ०छत्तातिच्छत्तादि-
 पदं २३, ०भूमिभाग-विउव्वण-पदं २४, ०मणि-वण्णावाप्त-पदं २५, ०पेच्छाघरमंडव-विउव्वण-
 पदं ३२, ०पेच्छाघरमंडवे भूमिभाग-विउव्वण-पदं ३३, ०पेच्छाघरमंडवे उल्लोय-विउव्वण-पदं
 ३४, ०पेच्छाघरमंडवे अक्खाडग-विउव्वण-पदं ३५, ०अक्खाडए मणिपेडिया-विउव्वण-पदं ३६,
 ०मणिपेडियाए सीहासण-विउव्वण-पदं ३७, ०सीहासणे विजयदूस-विउव्वण-पदं ३८, ०विजयदूसे
 अंकुस-विउव्वण-पदं ३९, ०अंकुसे मुत्तादाम-विउव्वण-पदं ४०, ०भद्रासण-विउव्वण-पदं
 ४१, जाणविमाण-विउव्वणस्त निगमण-पदं ४५, जाणविमाणारोहण-पदं ४७, पयाण-सज्जा-
 पदं ४९, जाणविमाण-पच्चोरुहण-पदं ५६, सूरियाभस्स वंदण-पदं ५८, वंदणाणुमोदण-पदं ५९,
 पज्जुवासणा-पदं ६०, धम्मदेसणा-पदं ६१, पण्ह-वागरण-पदं ६२, नट्टविहि-उवदंसण-पदं ६३,
 कूडागारसाला-दिट्ठंत-पदं १२१, सूरियाभ-विमाण-पदं १२४, ०पामार-पदं १२७, ०कविसीस-
 पदं १२८, ०दार-पदं १२९, ०वदणकलस-पदं १३१, ०णागदंत-पदं १३२, ०मालभजिया-पदं
 १३३, जालकडग-पदं १३४, ०घंटा-पदं १३५, ०वणमाला-पदं १३६, ०पगंठग-पदं १३७,
 ०तोरण-पदं १३८, ०दार-पदं १६२, ०वणसंड-पदं १७०, ०वणसंड-भूमिभाग-पदं १७१,
 ०वणसंड-जलासय-पदं १७४, ०वणसंड-घरम-पदं १८२, ०वणसंड-मंडवग-पदं १८४,
 ०वणसंड-पासायवडेंसग-पदं १८६, ०भूमिभाग-पदं १८७, ०उवगारिया-लयण-पदं १८८,
 ०उवमवरवेइया-पदं १८९, ०उवगारिया-लयण-पदं २०२, ०भूमिभाग-पदं २०३, मूलपासाय-
 वडेंसम-पदं २०४, ०पासायवडेंसग-पदं २०५, ०सुहम्म-सभा-पदं २०९, ०सुहम्म-सभा-दार-
 पदं २१०, ०मुहमंडव-पदं २११, ०दार-पदं २१२, ०भूमिभाग-उल्लोय-पदं २१३, ०मंगलग-
 पदं २१४, ०पेच्छाघर-मुहमंडव-पदं २१५, ०भूमिभाग-उल्लोय-पदं २१६, ०अक्खाडग पदं २१७,
 ०मणिपेडिया-पदं २१८, ०सीहासण-पदं २१९, ०मंगलग-पदं २२०, ०मणिपेडिया-पदं २२१,
 ०चेइयथूभ-पदं २२२, मंगलग-पदं २२३, ०मणिपेडिया-पदं २२४, जिणपडिसा-पदं २२५,
 ०मणिपेडिया-पदं २२६, ०वेइयह्वख-पदं २२७, मंगलग-पदं २२९, ०मणिपेडिया-पदं २३०,
 ०महिदज्जय-पदं २३१, ०मंगलग-पदं २३२, ०नंदापुक्खरिणी-पदं २३३, ०तिसोवाणपडिक्खम-
 पदं २३४, ०मणीमुलिया-पदं २३५, ०गोमाणसिया-पदं २३६, ०भूमिभाग-पदं २३७,
 ०मणिपेडिया-पदं २३८, ०चेइय-खंभ-पदं २३९, जिण-पकहा-पदं २४०, ०मंगलग-पदं २४१,
 ०मणिपेडिया-पदं २४२, ०सीहासण-पदं २४३, ०मणिपेडिया-पदं २४४, ०देवसयणिज्ज-पदं
 २४५, ०मणिपेडिया-पदं २४६, ०महिदज्जय-पदं २४७, ०मंगलग-पदं २४८, ०पहरणकोस-पदं
 २४९, ०मंगलग-पदं २५०, सिद्धायतण-पदं २५१, ०मणिपेडिया-पदं २५२, ०जिणपडिसा-पदं
 २५३, ०उववायसभा पदं २६०, ०अभिसेगसभा-पदं २६५, ०अलंकारियसभा-पदं २६७,
 ०ववसायसभा-पदं २६९, सूरियाभदेव-पदं २७४, सूरियाभस्स अभिसेग-पदं २७७, अभिसेग-
 काले देवकिच्च-पदं २८१, वद्धावण-पदं २८२, अलंकरण-पदं २८३, सिद्धायतणपवेस-पदं २८८,
 ०थुइ-पदं २९२, ०दाहिणिल्लं पइ गमण-पदं २९४, उत्तरिल्लं पइ गमण-पदं ३१३, ०पुरवि-
 मिल्लं पइ गमण-पदं ३३२, ०सुहम्मसभापवेस-पदं ३५१, ०उववायसभापवेस-पदं ४१४,
 ०अभिसेगसभापवेस-पदं ४७४, ०अलंकारसभापवेस-पदं ५३४, ०ववसायसभापवेस-पदं ५९४,
 ०सूरियाभविमाणे अच्चणिया-पदं ६५४, ०नंदापुक्खरिणी-गमण-पदं ६५६, ०सुहम्मसभा-निसीदण-
 पदं ६५६, ०सूरियाभ-वण्णग-पदं ६६५ ।

पएसि कहाणं

सूत्र ६६८ से ८१७

१६२ से २१२

केयइ-अद्ध-पदं ६६८, सेयविया-पदं ६६९, मिगवण-पदं ६७०, पएसि-पदं ६७१, सूरियकंता-
 पदं ६७२, सूरियकंत-पदं ६७३, चित्त-सारहि-पदं ६७५, कुणाला-पदं ६७६, सावत्थी-पदं
 ६७७, कोट्ठय-पदं ६७८, जियसत्तु-पदं ६७९, पाहुड-उवणयण-पदं ६८०, चित्तस्स आवास-
 पदं ६८५, केसि-आगमण-पदं ६८६, चित्तस्स जिण्णासा-पदं ६८७, कंचुइपुरिसस्स निवेदण-
 पदं ६८९, चित्तस्स केसि-समीवे गमण-पदं ६९०, धम्मदेसणा-पदं ६९३, चित्तस्स गिहि-
 धम्म-पडिवज्जण-पदं ६९५, समणोवासय-वण्णग-पदं ६९८, जियसत्तुणा पाहुड-पेसण-पदं ६९९,
 चित्तस्स निवेयण-पदं ७००, केसिस्स पडिवयण-पदं ७०३, पुणोनिवेयण-अब्भुवगमण-पदं ७०४,
 उज्जाणपाल-निट्ठेसण-पदं ७०६, पाहुड-उवणयण-पदं ७०८, केसिस्स सेयविया-आगमण-पदं
 ७११, उज्जाणपालगणं चित्तस्स निवेदण-पदं ७१३, चित्तस्स केसि-पज्जुवासणा-पदं ७१४,
 चाउज्जाम-धम्मदेसणा-पदं ७१७, चित्तस्स निवेदण-पदं ७१८, केसिस्स पडिवयण-पदं ७१९,
 चित्त-पएसि-पदं ७२३, पएसि-केसि-पदं ७३६, जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७४८, तज्जीव-तच्छरीर-
 पदं ७५०, जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७५१, तज्जीव-तज्जरीर-पदं ७५२, जीव-सरीर-अणत्त-पदं
 ७५३, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७५४, जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७५५, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७५६,
 जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७५७, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७५८, जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७५९,
 तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७६०, जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७६१, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७६२,
 जीव-सरीर-अणत्त-पदं ७६३, तज्जीव-तच्छरीर-पदं ७६४, मूढ-कट्ठहारय-पदं ७६५,
 अक्कोसं पइ पएसिस्स वित्तवकणा-पदं ७६६, केसिस्स समाधान-पदं ७६७, पएसिस्स पडिकूल-
 वट्टण-हेउ-पदं ७६८, ववहारग-पदं ७६९, जीवोवदंसणट्ठ-निवेदण-पदं ७७०, केसिस्स
 समाधान-पदं ७७१, हरिथ-कुंथु-जीव-समाणत्त-पदं ७७२, कुल-परपरागयदिट्ठि-अच्छट्टण-पदं
 ७७३, अयहारग-दिट्ठंत-पदं ७७४, पएसिस्स गिहिधम्म-पडिवज्जण-पदं ७७५, आयरिय-
 विणयपडिवत्ति-पदं ७७६, पएसिस्स अत्त-निवेदण-पदं ७७७, पएसिस्स खामणा-पदं ७७८,
 चाउज्जामधम्म-कहण-पदं ७७९, रमणिज्ज-अरमणिज्ज-पदं ७८०, पएसिणा रज्जस्स चउभाग-
 करण-पदं ७८८, पएसिस्स समणोवासयत्त-पदं ७८९, पएसिस्स रज्जोवरह-पदं ७९०, सूरिकंताए
 सूरियकंताए भंतणा-पदं ७९१, सूरियकंताए विसण्णओग-पदं ७९३, पएसिस्स समाहि-मरण-पदं
 ७९५, सूरियाभ-देव-पदं ७९७, दठपइण्णग-पदं ७९९ ।

संकेत-निर्देशिका

- ० ये दोनों बिन्दु पाठ-पूर्ति के द्योतक हैं। पाठ-पूर्ति के प्रारम्भ में भरे बिन्दु और समापन में रिक्त बिन्दु ० का संकेत किया गया है। देखें, पृष्ठ ८, सू ८
- ' ' यह दो या उससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है।
 - ० पाठ में संलग्न दिया गया एक बिन्दु अपूर्ण पाठ होने का सूचक है। देखें, पृष्ठ ३, पाठान्तर १२, पृ० ११६, सूत्र १४२
- [?] कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिह्न आदर्शों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें, पृ० २२, सूत्र ३२
- × कोस पाठ नहीं होने का द्योतक है। देखें, पृ० ६ पाठान्तर ६
जाव आदि पर जो अंक है वे पूर्ति आधार स्थल के द्योतक हैं। जैसे—पृ० ६, पाठान्तर १५
पृ० १०२ सूत्र ६६ पाठान्तर का अंक ६
पृ० ६७, सूत्र ४५, पाठान्तर का अंक ५
पृ० ११५, सूत्र १३६, पाठान्तर का अंक १४
पृ० ११६, सूत्र १४२, पाठान्तर का अंक २
पृ० १२५, सूत्र १२६, पादटिप्पणांक १, २, ३ आदि
सं० पा० संक्षिप्त पाठ

नाधू० नायाधम्मकहाओ वृत्ति
 जं० पुवृ० जंबुहीवपण्णत्ती पुण्यसागरीयवृत्ति
 ,, शाधू० ,, ,, शान्तिचन्द्रीयवृत्ति
 ,, हीवृ० ,, ,, हीरविजयवृत्ति
 राय० वृ० रायपसेणियं वृत्ति
 राय० सू० रायपसेणियं सूत्र
 ओ०सू० ओवाइयं सूत्र
 उत्त० उत्तरज्जयणाणि
 भ० भगवती
 पण्ण० पण्णवणा
 जी० जीवा० जीवाजीवाभिगमे
 जंबु०/जंबू० जंबुहीवपण्णत्ती
 पण्हा० पण्हावागरणं

रायपसेणइयं

सूरियाभो

उक्त्वेव-पदं

१. तेणं^१ कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा नामं^२ नयरी होत्था—‘रिद्ध-त्थिमिय’^३-समिद्धा जाव^४ पासादीया दरिसणीया^५ अभिरूवा पडिरूवा ॥

२. तीसे णं आमलकप्पाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अंवसालवणे नामं चेइए होत्था—चिराईए^६ जाव^७ पडिरूवे ॥

३. *तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे असोगवरपायवे पण्णत्ते ॥

४. तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा ईसि खंधसमत्तीणे, एत्थ णं महं एकके पुढवि-सिलापट्टए पण्णत्ते^८ ॥

५. सेयो राया । धारिणी देवी ॥

६. सामी समोसडे । परिसा निग्गया जाव^९ राया पज्जुवासइ ॥

सूरियाभस्स ओहिपओग-पदं

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरियाभे^{१०} देवे सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे सभाए सुहम्माए सूरियाभंसि सीहासणंसि चउहि सामाणियसाहस्सीहि, चउहि अग्गमहिसीहि सपरिवाराहि, तिहि परिसाहि, सत्तहि अणिएहि, सत्तहि अणियाहिवईहि, सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि, अन्नेहि वहूहि सूरियाभविमाणवासीहि वेमाणिएहि देवेहि देवीहि य सद्धि संपरिवुडे महयाहयनट्ट^{११}-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवादिय-रवेणं^{१२} दिव्वाइ भोगभोगाइं भूजमाणे विहरति, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्वीवं दीवं विउलेणं

१. नमो अरिहंतारणं नमो सिद्धारणं नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्व साहूणं ।

तेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. नाम (क, ख, छ); णाम (च) ।

३. रिद्धत्थिमिय (क, ख, ग, च); रिद्धित्थिमिय (घ, छ) ।

४. ओ० सू० १ ।

५. दरिसणिज्जा (वृ) ।

६. पोरारणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. ओ० सू० २-७ ।

८. सं० पा०—असोगवरपायवे पुढविसिलापट्टए वत्तव्वया ओववाइयगमेणं नेया । पूर्णपाठार्थं इष्टव्यं ओ० सू० ८-१३ ।

९. ओ० सू० १९-६६ ।

१०. सूरियाभे णामं (वृ) ।

११. महतामहतनट्ट^{११} (क, ख, ग, च) ।

१२. परुप्पवादियरवेणं (ख) ।

ओहिणा आभोएमाणे-आभोएमाणे पासति' ॥

सूरियाभेण भगवओ वंदण-पदं

८. तत्थ^१ समणं भगवं महावीरं जंबुदीवे (दीवे ?) भारहे वासे आमलकप्पाए नय-
रीए वहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरुवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं
भावेमाणं पासति, पासित्ता हट्टुट्टु-वित्तमाणंदिए पीइमणे^२ परमसोमणस्सिए हरिसवस^३-
विसप्पमाणहियए विगसियवरकमलणयणे^४ पयलिय^५-वरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-
हार-विरायंतरइयवच्छे पालंब-पलंबमाण-धोलंत-भूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं सुरवरे
सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहत्ता एगसाडियं
उत्तरासंणं करेति, करेत्ता 'तित्थयराभिमुहे सत्तट्टुपयाइ'^६ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं
अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं^७ धरणितलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि 'निवेसेइ,
निवेसेत्ता'^८ ईसि पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता 'कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ,
पडिसाहरेत्ता'^९ करयलपरिग्गहियं 'दसणहं सिरसावत्तं'^{१०} मत्थए अंजलि कट्टु एवं वयासी—
नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं^{११} 'पुरिसुत्तमाणं
पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं'^{१२} लोमुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं
लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं जीवदयाणं सरणदयाणं
बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरच्चाउरंतचक्क-
वट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं वियट्टुछउमाणं^{१३} जिणाणं जावयाणं^{१४} 'तिण्णाणं तारयाणं
बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं'^{१५} 'सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं'^{१६} सिवमयलमरुयमणंतमक्खय-
मव्वावाहमपुणारावत्तयं^{१७} सिद्धिगइनामधेयं^{१८} ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स भगवओ
महावीरस्स आइगरस्स तित्थयरस्स जाव सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामस्स । वंदामि
णं भगवंतं तत्थगयं इहगते, पासइ^{१९} मे भगवं तत्थगते इहगतं ति कट्टु वंदति णमंसति,
वंदिता णमंसित्ता 'सीहासणवरगए पुव्वाभिमुहं सण्णिसण्णं'^{२०} ॥

- | | |
|--|--|
| १. पासइ पासित्ता (क, छ) । | १३. × (क, ख, ग, घ) । |
| २. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १४. विउट्टुछम्माणं (क); × (ख, ग, घ);
विउट्टुछउमाणं (च) । |
| ३. पीयमणे (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १५. जाणगाणं (क, ख, ग, घ) । |
| ४. हरसवस (घ) । | १६. बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं तिण्णाणं
तारयाणं (क, ख, ग, घ) । |
| ५. विहसियं (छ) । | १७. × (क, ख, ग, घ); सव्वण्णूणं सव्वदंसीणं
(च) । |
| ६. पचलिय (च) । | १८. 'मपुणारावत्ति (च) । |
| ७. सत्तट्टुपयाइ तित्थयराभिमुहे (क, ख, ग, घ,
च, छ) । | १९. 'नामधेज्जं (क) । |
| ८. जाणं (च, छ) । | २०. पासउ (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ९. णिमेइ णिमेत्ता (क, ख, ग, घ) । | २१. × (क, ख, ग, घ, च, छ); सिहासनवरगतः
गत्वा च° (वृ) । |
| १०. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । | |
| ११. सिरसावत्तं दसनहं (क, ख, ग, घ, च, छ) । | |
| १२. सहमंबुद्धाणं (ओ० सू० २१) । | |

आभिओगिय-देव-वेसण-पदं

६. 'तए णं तस्स सूरियाभस्स' इमे एथारूवे 'अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे'^१ समुपज्जित्था—सेयं' खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्तए नमंसित्तए सक्कारि-त्तए सम्माणित्तए कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासित्तएत्ति कट्ठु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहा-पडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं गच्छह णं तुमे'^२ देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं आमलकप्पं नयरीं अंबसालवणं चेइयं समणं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेह, करेत्ता वंदह णमंसह, वंदित्ता णमंसित्ता साइं-साइं नामगोयाइं साहेह, साहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सब्बओ समंता जोयणपरिमंडलं जं किंवि 'तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा'^३ अमुइं अचोक्खं पूइयं दुब्बिभगंधं तं सब्बं आहुणिय-आहुणिय एगंते एडेह, एडेत्ता णच्चोदगं णाइमट्टियं पविरल-फुसियं^४ रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदयवासं वासह, वासित्ता णिहयरयं णट्टरयं भट्टरयं^५ उवसंतरयं पसंतरयं करेह, करेत्ता जलयथलयभासुरप्पभूयस्स वेंट्टाइस्स दसद्धवणस्स कुसु-मस्स जन्तुस्सेहपमाणमेत्ति^६ ओहिं^७ वासं वासह, वासित्ता कालागरु-पवरकुंदुरुक्क^८—तुरुक्क-धूव^९—मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधं^{१०}—वरगंधं गंधियं^{११} गंधवट्टिभूतं दिव्वं सुरवराभि-

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. मणोगए अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए संकप्पे (वृ) ।

३. 'सेयं खलु' अतः प्रारभ्य 'पज्जुवासित्तएत्ति कट्ठु' इतिपर्यन्तः पाठो वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । ज्ञाताधर्मकथायां अस्य संवादी पाठो लभ्यते । द्रष्टव्यं अंगसुत्ताणि भाग ३ पृष्ठ ३७१ : नायाधम्मकहाओ २।१।१।१२ । आदर्शेषु विस्तृतः पाठो लभ्यते—एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमल-कप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं महाफलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं णामगोयस्स वि सबणयाए किमंग पुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सबणयाए किमंग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं

गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासांमि । एयं मे पेच्चा हियाए सुहाए खमाए दयाए णिस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सतित्ति कट्ठु ।

४. तुब्भे (छ) ।

५. तूणं वा, काष्ठं वा, काष्ठशकलं वा, पत्रं वा, कचवरं वा (वृ) ।

६. पफुसियं (क, ख, ग, घ, च) ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. 'पमाणमेत्तं (क, ख, ग, घ) ।

९. ओह (क, घ, च) ।

१०. 'कुंदुरुक्क (क, ख, ग, घ, च); 'कुंदुरुक्क (छ) ।

११. धूय (क, ख, ग, घ); धूमय (च) ।

१२. सुगंधि (पडण्णगसमवाओ सु० १४४) ।

१३. वरगंधियं (घ) ।

गमणजोगं करेह य 'कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता" य खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

आभिओगिय-देवोहं भगवओ वंदण-पदं

१०. तए णं ते आभिओगिया देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्टुं *चित्तमाणंदिआ पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं हियया करयल-परिगहियं दसणहं" सिरसावत्तं 'मत्थए अंजलि" कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, तं जहा—रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगत्ताणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं" जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहावायरे पोग्गले परिसाडेत्ति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायंति, परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उव्विकट्टाए" तुरियाए 'चवलाए चंडाए" जवणाए" सिग्घाए उद्धूयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुट्ठाणं मज्झमज्झेणं वीईवयमाणा-वीईवयमाणा जेणेव जंबुदीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव आमलकप्पा णयरी जेणेव अंवसालवणे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं महावीरं तिक्खुत्तो 'आयाहिणं पयाहिणं" करेत्ति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अम्हे णं भंते ! सूरियाभस्स देवस्स आभियोग्गा देवा देवाणुप्पियं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं भंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो ॥

वंदणाणुमोदण-पदं

११. देवाइ" ! समणे भगवं महावीरे 'ते देवे" एवं वयासी—'पोराणमेयं देवा ! जायमेयं देवा ! किच्चमेयं देवा ! करणिज्जमेयं" देवा ! आइण्णमेयं देवा ! अब्भणुण्णाय-मेयं देवा ! जण्णं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवा अरहंते भगवते वंदंति

- | | |
|---|--|
| १. कारावेह करेत्ता य कारावेत्ता (क, ख, ग, घ, च) । | ६. ओकिट्टाए (घ) । |
| २. सर्वादर्शेषु 'एवमाणत्तियं' पाठोस्ति, किन्तु अर्थविचारणया तथा औपपातिकं (६१ सूत्रं) अनुसृत्य 'एयमाणत्तियं' पाठः स्वीकृतः । 'एवमाणत्तियं' लिपिदोषाज्जात इति संभाव्यते । | १०. चंडाए चवलाए (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ३. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियया । | ११. जयणाए (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १२. आयाहिणपयाहिणं (क, छ) । |
| ५. अंजलि मत्थए (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १३. देवाय (क, ख, ग, घ, च, छ); तए णं देवा य (घ) । |
| ६. जोइरसाणं (घ, च) । | १४. देवा (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ७. रयणाणं जाव (च, छ) । | १५. जुत्तमेयं देवा पोराणमेयं देवा किच्चमेयं देवा(छ); पोराणमेतत्....जीतमेतत्....अभ्यनु-जातमेतत्....करणीयमेतत्आचीर्णमेतत्.... (वृ) । |
| ८. समोहणंति (क, ख, ग, घ, छ) । | |

नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता तओ साइं-साइं णामगोयाइं सार्हिहि, तं पोरानमेयं देवा !
 *जीयमेयं देवा ! किच्चमेयं देवा ! करणिज्जमेयं देवा ! आइण्णमेयं देवा !^० अब्भ-
 णुण्णायमेयं देवा ! ॥

आभिओगिएहं जोयणमंडलनिव्वत्तण-पदं

१२. तए णं ते आभिओगिया देवा^१ समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा
 हट्ठं *तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं^० हियया समणं
 भगवं महावीरं वंदंति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमंति,
 अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसि-
 रंति, तं जहा—रयणाणं^२ *वइराणं वेरुलियाणं लोहियवखाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं
 पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं
 फलिहाणं^३ रिट्ठाणं अहावायरे^४ पोगले परिसाडेंति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोगले परिया-
 यंति, परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संवट्टयावाए^५
 विउव्वंति, से जहाणामए—भइयदारए^६ सिया तरुणे 'वलवं जुगवं जुवाणे'^७ अप्पायंके^८
 थिरग्गाहत्थे 'दढपाणि-पाय-पिट्ठंतरोरुपरिणए'^९ घण-णिचिय-वट्टवलियखंधे^{१०} चम्मेट्टुग-
 दुघण-मुट्टिय-समाहय-निचियगत्ते उरस्सवलसमण्णागए तलजमलजुयलवाहू लंघण-पवण-
 जइण-पमहणसमत्थे^{११} छेए दक्खे पत्तट्ठे^{१२} कुसले मेधावी णिउणसिप्पोवगए एगं महं 'दंड-
 संपुच्छंणि वा सलागाहत्थगं वा'^{१३} वेणुसलाइयं वा गहाय रायगणं वा रायंतेउरं वा 'आरामं
 वा उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा पवं वा'^{१४} अतुरियमचवलमसंभंतं निरंतरं सुनिउणं सव्वतो
 समंता संपमज्जेज्जा, एवामेव^{१५} तेवि सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा संवट्टयावाए^{१६}

१. पोरानमेयं (क, ख, ग, घ, च) ।
२. सं० पा०—देवा जाव अब्भणुण्णायमेयं ।
३. देवा २ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।
५. सं० पा०—रयणाणं जाव रिट्ठाणं ।
६. अहावायरे (क, ख, ग, घ, च) ।
७. संवट्टयावाए (क) ।
८. कम्मादारए (क, ख, ग, घ, च); भइयदारए कम्मादारए (छ) ।
९. जुगवं बलवं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१०. अप्पायंके थिरसंघयणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
११. पडिपुण्णपाणिपाए पिट्ठंतरोरुपरिणए (क, ख, ग, घ, च, छ); दढपाणिपायपासपिट्ठंतरोरुपरिणते (अणु० ४१६, जी० ३११८) ।
१२. वलियवलिखंधे (क, ख, ग, घ, छ); वलिय-वलियखंधे (च); अतः परं आदर्शेषु पाठानां-

- कमो भिन्नो विद्यते—लंघणवग्गणजवणवायाम-समत्थे (°गयणवायामणसमत्थे—च, °जयणवायामपमहणसमत्थे—छ) चम्मेट्टुदुघणमुट्टिय-समाहयनिचियगत्ते (°गायगत्ते—क, ख, ग, घ) उरस्सवलसमण्णागए तालजमलजुयल-वाहू (°जुयलफलिहनिभवाहू (क, ख, ग, घ, च) ।
१३. वायामणसमत्थे (वृपा) ।
१४. पट्ठे—प्रष्ठे—वाग्गी (वृ, जी० ३११८) ।
१५. सलागाहत्थगं वा दंडसंपुच्छंणि वा (वृ) ।
१६. देवउलं वा सभं वा पवं वा आरामं वा उज्जाणं वा (वृ) ।
१७. एवमेव (च); एवमे (छ) ।
१८. संवट्टयावाए (क, ख, ग, घ, छ); संवट्टयावाए (च) ।

विउव्वंति, विउव्वित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वतो समंता जोयणपरिमंडलं जं किच्चि 'तणं वा पत्तं वा' *कट्टु' वा सक्करं वा असुइं अचोक्खं पूइयं दुब्धिगंधं तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय एगंते एड्ढेति, एडित्ता खिप्पामेव उवसमंति, उवसमित्ता—दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता अब्भवह्लए विउव्वंति, से जहाणामए— भइयदारगे सिया तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए एगं महं दगवारगं वा 'दगथालगं वा दग-कलसगं वा दगकुंभगं वा' गहाय आरामं वा *उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा पवं वा अतुरियं *मच्चवलमसंभंतं निरंतरं सुनिउणं सव्वतो समंता आवरिसेज्जा, एवामेव तेवि सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा अब्भवह्लए विउव्वंति, विउव्वित्ता खिप्पामेव पतणतणायंति, पतणतणाइत्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति, विज्जुयाइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं णच्चोदगं णातिमट्टियं तं पविरल-फुसियं रयरैणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगं वासं वासंति, वासेत्ता णिहयरयं णट्टुरयं भट्टुरयं उव-संतरयं पसंतरयं करेति, करेत्ता खिप्पामेव उवसामंति, उवसामित्ता—

तच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता पुप्फवह्लए विउव्वंति, से जहाणामए—मालागारदारए सिया तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए एगं महं 'पुप्फछज्जियं वा पुप्फपडलगं वा पुप्फचंगेरियं वा' गहाय रायंगणं वा *रायंतेउरं वा आरामं वा उज्जाणं वा देवउलं वा सभं वा पवं वा अतुरियमच्चवलमसंभंतं निरंतरं सुनिउणं सव्वतो समंता कयग्गह्गहियकरयलपढ्भट्टुविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेज्जा, एवामेव ते सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा पुप्फवह्लए विउव्वंति, विउ-व्वित्ता खिप्पामेव पतणतणायंति, *पतणतणाइत्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति, विज्जुयाइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं जलयथलयभासुरप्पभूयस्स बेट्टाइस्स दसद्धवण्णकुसुमस्स जण्णुस्सेहपमाणमेत्ति ओहिं वासं वासंति, वासित्ता कालागरु-पवरकुंदुरुक्कं—तुरुक्कं-धूव-मघमघेत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूतं दिव्वं सुरवराभिग्गमणजोगं करेति य कारवेत्ति य करेत्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव उवसामंति, उवसामित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं

१. सं० पा०—पत्तं वा तहेव ।

२. तृणकाष्ठादि (वृ) ।

३. उवसमिति (च, छ); पच्चुवसमंति (वृ) ।

४. विउव्वंति अब्भवह्लए विउव्वित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. दगवेलगं (क, ख, ग, घ, च); दगथालगं (छ); दगकुंभगं वा दगथालगं वा दगकलसगं वा (वृ) ।

६. सं० पा०—आरामं वा जाव पवं ।

७. सं० पा०—अतुरिय जाव सव्वतो ।

८. पतणतणायति (क, ख, ग, घ, छ) ।

९. पफुसियं (क, ख, ग, घ) ।

१०. पुप्फडलगं वा पुप्फचंगेरियं वा पुप्फवस्थियं वा (क, ख, ग, घ, च); पुप्फपडलगं वा पुप्फ-पस्थियं वा पुप्फचंगेरियं वा पुप्फछज्जियं वा (छ) ।

११. सं० पा० रायंगणं वा जाव सव्वतो ।

१२. पतणतणायति (क, ख, ग, घ, छ); सं०पा०—पतणतणायति जाव जोयणपरिमंडलं ।

१३. उव्विं (क); ओहं (च) ।

१४. कुंदरुक्क (ख, ग, घ, च) ।

१५. गंधवरगंधियं (च, छ) ।

महावीरं तिकखुत्तो^१ *आयाहिणं पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदंति नमंसति^२, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ अंवसालवणाओ चेइयाओ पडिणिकखमंति, पडिणिकखमित्ता ताए उक्किट्ठाए^३ *तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्जेणं^४ वीईवयमाणा-वीईवयमाणा जेणेव सोहम्मं कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव सभा सुहम्मं जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

सूरियाभस्स गमण-घोसणा-पदं

१३. तए णं से सूरियाभे देवे तेसि आभोगियाणं देवाणं अंतिए^५ एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु^६ - *चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^७ हियए पायत्ताणियाहिवइं देवं सद्दावेत्ति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सूरियाभे विमाणे सभाए सुहम्मं मेघोघरसियगंभीरमहुरसइं जोयणपरिमंडल सूसरं घटं तिकखुत्तो उल्लालेमाणे-उल्लालेमाणे महया-महया सट्टेणं उग्घोसेमाणे-उग्घोसेमाणे एवं 'वयाहि—आणवेइ' णं भो ! सूरियाभे देवे, गच्छति णं भो ! सूरियाभे देवे जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए णयरीए अंवसालवणे चेइए समणं भगवं महावीरं अभिवंदाए, तुब्भेवि णं भो ! देवाणुप्पिया ! सव्विड्डीए^८ *सव्वजुतीए सव्ववलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडिय-सइसण्णिनाएणं महया इड्डीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमग-पडुप्पवाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि-णिग्घोसं^९ णाइयरवेणं^{१०} णियगपरिवालसद्धि संपरिवुडा साइं-साइं जाणविमाणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं^{११} चैव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं^{१२} पाउब्भवह ॥

१४. तए णं से पायत्ताणियाहिवती देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्टुत्तु^{१३} - *चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^{१४} हियए^{१५} करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव सभा सुहम्मं जेणेव मेघोघरसियगंभीरमहुरसइं जोयणपरिमंडला सुस्सरा घंटा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं मेघोघ-

१. सं० पा०—तिकखुत्तो जाव वंदित्ता ।

९. अंतिके (वृ) ।

२. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव वीईवयमाणा ।

१०. सं० पा०—हट्टुत्तु जाव हियए ।

३. अंते (क, ख, ग) ।

११. अतः परं 'क, च, छ' इत्यादर्शेषु 'एवं देवो'

४. सं० पा०—हट्टुत्तु जाव हियए ।

'ख, ग' आदर्शयोः 'एवं देवा' इत्येव पाठो

५. वयासी आणवेसि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

विद्यते । वृत्तौ 'जाव पडिसुणित्ता' इति संक्षिप्त-

६. सव्विड्डीए (छ); सं० पा०—सव्विड्डीए

पाठस्य निर्देशोस्ति—यावच्छब्दकरणात् 'कर-

जाव णाइयरवेणं ।

यलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए

७. णातियरवेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

अंजलि कट्टु एवं देवा ! तहत्ति आणाए

८. अकालपरिहीणा (ख, ग, घ, च, छ) ।

विणएणं वयणं पडिसुणेइ' ति द्रष्टव्यम् ।

रसियगंभीरमहुरसहं जोयणपरिमंडलं सूसरं घटं तिकखुत्तो उल्लालेति ।

तए णं तीसे^१ मेघोघरसियगंभीरमहुरसहाए जोयणपरिमंडलाए सूसराए घंटाए तिकखुत्तो उल्लालियाए समाणीए^२ से सूरियाभे विमाणे पासायविमाण-णिकखुडावडिय-सद्वघंटापडिसुया^३-सयसहस्ससंकुले जाए यावि होत्था ॥

१५. तए णं तेसिं सूरियाभविमाणवासिणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगंतरइपसत्त-तिच्चप्पमत्त-विसय-सुहमुच्छियाणं सूसरघंटाख-विउलवोल-‘तुरिय-ववल’-पडिवोहणे कए समाणे घोसणकोऊहलदिण्णकण्ण-एग्गचित्त-उवउत्त-माणसाणं से पाय-त्ताणीयाहिवई देवे तस्सि घंटाखंसि णिसंत-पसंतंसि महया-महया सदेणं उग्घोसेमाणे एवं वयासी—हंतं^४ सुणंतु भवंतो सूरियाभविमाणवासिणो बहूवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सूरियाभविमाणपइणो वयणं हियसुहत्थं । आणवेइ णं भो ! सूरियाभे देवे, गच्छइ णं भो ! सूरियाभे देवे जंबुद्वीवं दीवं भारहं वासं आमलकप्पं नयारि अंवसालवणं चेइयं समणं भगवं महावीरं अभिवंदए, तं तुभेवि णं देवाणुप्पिया ! सव्विड्डीए^५ अकालपरिहीणं^६ चैव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउबभवह ॥

सूरियाभविमाणवासिदेवाणं समवसरण-पदं

१६. तए णं ते सूरियाभविमाणवासिणो बहूवे वेमाणिया देवा य देवीओ य पायत्ता-णियाहिवइस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्टुट्टु^७-*चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं^८ हियया अप्पेगइया वंदणवत्तियाए अप्पेगइया पूयणवत्तियाए अप्पेगइया सक्कारवत्तियाए अप्पेगइया सम्माणवत्तियाए^९ अप्पेगइया कोऊ-हलवत्तियाए^{१०} ‘अप्पेगइया असुयाइं सुणिस्सामो, अप्पेगइया सुयाइं अट्टाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो, अप्पेगइया सूरियाभस्स देवस्स वयणमणुयत्तेमाणा^{११}’ अप्पेगइया अण्णमण्णमणुवत्तेमाणा^{१२} अप्पेगइया जिणभतिरागेणं ‘अप्पेगइया धम्मो त्ति’^{१३} अप्पेगइया जीयमेयं ति कट्टु सव्विड्डीए जाव’^{१४} अकालपरिहीणं^{१५} चैव^{१६} सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउबभवति ॥

१. तीए (ख, ग, घ, च, छ) ।

२. समाणाए (घ) ।

३. *वडिसुया (क, ख, ग, घ, च) ।

४. × (ख, ग, घ, च) ।

५. हंतं (च); अहं भो (छ) ।

६. पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यं त्रयोदशसूत्रम् ।

७. अकालपरिहीणा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियया ।

९. अतः परं औपपातिके (सू० ५२) जम्बुद्वीप-प्रज्ञप्तौ (५१२७) च ‘दंसणवत्तियं’ पाठो विद्यते । नात्रासौ लभ्यते ।

१०. कोऊहलवत्तियाए (क, घ); कोऊहलवत्तियाए (च); कुतूहलजिनभक्तिरागेण (वृ) ।

११. अप्पेगइया सूरियाभस्स देवस्स वयणमणुयत्ते-माणा अप्पेगइया अस्सुयाइं सुणेस्सामो अप्पेग-इया सुयाइं निस्सकियाइं करिस्सामो (वृ) ।

१२. अण्णमण्णमन्नेमाणा (च, छ) ।

१३. × (वृ) ।

१४. राय० सू० १३ ।

१५. अकालपरिहीणा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१६. एव (क, घ); एवं (ख, ग, च) ।

जाणविमाण-विउव्वण-पव

१७. तए णं से सूरियाभे देवे ते सूरियाभविमाणवासिणो वह्वे वेमाणिया देवा य देवीओ य सव्विड्डीए जाव^१ अकालपरिहीणं चेव अंतियं पाउव्वभमाणे पासति, पासित्ता हट्टुट्टु^२-^३चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण^४ हियए आभिओ-गियं देवं सहावेति. सहावेत्ता एवं वयासी --खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! अणेगखंभ-सयसण्णिविट्ठं लीलट्टियसालभंजियागं^५ ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्तर-रु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्तं खंभुग्गय-वइरवेइया^६-परिगयाभिरामं विज्जाहर-जमलजुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं^७ रुवगसहस्सकलियं भिसमाणं^८ भिब्भिसमाणं^९ चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरुवं घंटावलि-चलिय-महुर-मणहरसरं सुहं कंतं दरिसणिज्जं णिउणओवियं^{१०}-मिसिमिसेत्तरयणघंटियाजाल-परिखित्तं^{११} जोयणसयगहस्सवित्थिण्णं टिव्वं गमणसज्जं सिग्घगमणं गाम जाणविमाणं विउव्वाहि, विउव्वित्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं^{१२} पच्चप्पिणाहि ॥

१८. तए णं से आभिओगिए देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्टुट्टु^{१३} *चित्त-माणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^{१४} हियए करयलपरिग्गहियं^{१५} *दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं^{१६} पडि-सुणेइ, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमत्ति, अवक्कमत्ति वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं^{१७} *दंडं निसिरति, तं जहा--रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगलाणं हंसगवभाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरुवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहावायरे पोग्गले 'परिसाडंइ, परिसाडित्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाएइ, परियाइत्ता^{१८} दोच्चं पि वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणति, समोहणित्ता अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं^{१९} *लीलट्टियसालभंजियागं ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्तर-रु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउम-लयभत्तिचित्तं खंभुग्गय-वइरवेइया-परिगयाभिरामं विज्जाहर-जमलजुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं रुवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरुवं घंटावलि-चलिय-महुर-मणहरसरं सुहं कंतं दरिसणिज्जं णिउण-

१. सय० सू० १३ ।

२. मं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियए ।

३. *सालिभंजियागं (च, छ) ।

४. वरवइरवेइया (क, ख, ग, घ, च); पवरवइर-वेइया (छ) ।

५. अच्चीसहस्समालणीयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. भासिमाणं (क, ख, घ, च) ; भासमाणं (ग) ; भिसिमाणं (छ) ।

७. भिब्भिसिमाणं (क, ख, ग, घ) ।

८. *उचित्तानि (वृ) ।

९. मिसिमिसेत्तरयणं (क, ख, ग, घ, च) ।

१०. एवमाणत्तियं (ख, ग, घ, च, छ) ।

११. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियाए ।

१२. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव पडिसुणेइ ।

१३. सं० पा०—जोयणाइं जाव अहावायरे ।

१४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१५. सं० पा०—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव जाणविमाणं ।

ओविय-मिसिमिसेंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं जोयणसयसहस्सवित्थिण्णं दिव्वं गमणसज्जं सिग्घगमणं णाम दिव्वं जाणविमाणं वेउव्विउं पवत्ते यावि होत्था ॥

० तिसोवाणपडिरूवग-विउव्वण-पदं

१९. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिंसिं तिसोवाण-पडिरूवए विउव्वति, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं । तेसिं तिसोवाणपडिरूवगाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया णिम्मा, रिट्टामया पतिट्टाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवण्णरूपामया फलगा, लोहितवखमइयाओ सूईओ, वइरामया संघी, णाणामणिमया अवलंबणा अवलंबणबाहाओ यं पासादीयां *दरिसणिज्जा अभिरूवां पडिरूवा ॥

० तोरण-पदं

२०. तेसिं णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं तोरणा पण्णत्ता । तेसिं णं तोरणाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—तेणं तोरणा णाणामणिमया, णाणामणिएसुं थंभेसु उवनिविट्ठसण्णिविट्ठा, 'विहिमुत्तंतरारूवोवचिया', विविहतारारूवोवचिया' *ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्तर-रुह-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गय-वइरवेइया-परिगयाभिरामा विज्जाहर-जमलजुयल-जंतजुत्ता पिव अच्चीसहस्समालणीया रूवगसहस्सकलिया भिसमाणा भिभिंसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा घंटावलि-चलिय-महुर-मणहरसरा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवां पडिरूवा ॥

० अट्टमंगल-पदं

२१. तेसिं णं तोरणाणं उप्पि अट्टमंगलगा पण्णत्ता, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-वट्ठमाणग-भट्टासण-कलस-मच्छ-दप्पणा' *सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्टा मट्टा पीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा समरीइया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवां पडिरूवा ॥

० भय-पदं

२२. तेसिं णं तोरणाणं उप्पि बहवे किण्हचामरज्झए' *नीलचामरज्झए लोहियचामर-

- | | |
|---|--|
| १. विउव्वियं (क, ख, ग, च, छ) ; वेउव्वियं (घ) । | मणिमया णाणामणिमएसु (वृ) । |
| २. तिदिंसि ततो (क, ख, ग, घ, च) । | ७. विविहमुत्तंतरोवचिया (जी० ३।२८८) । |
| ३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । | ८. विविहतारारूवोवचिया विविहमुत्तंतरोवचिया (क, ख, ग, घ, च, छ); सं० पा०—विविहतारारूवोवचिया जाव पडिरूवा । |
| ४. सं० पा०—पासादीया जाव पडिरूवा । | क्वचिदेतत्साक्षाल्लिखितमपि दूश्यते (वृ) । |
| ५. तिसोमाणं (च) । | ९. सं० पा०—दप्पणा जाव पडिरूवा । |
| ६. पुरतो तोरणे विउव्वति ते णं तोरणा णाणामणिमएसु (क, ख, ग, घ); पुरतो तोरणा विउव्वति ते णं तोरणा णाणामणिमएसु (छ); पुरतो तोरणे विउव्वइ तोरणा णाणा- | १०. सं० पा०—किण्हचामरज्झए जाव सुविकल-चामरज्झए । |

ज्झए हालिह्चामरज्झए^० सुक्किलचामरज्झए अच्चे सण्हे हप्पपट्टे वइरदंडे^१ जलयामल-गंधिए सुरम्मे^२ पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे विउव्वइ ॥

० छत्तातिछत्तआदि-पदं

२३. तेसि णं तोरणणं उप्पि बह्वे छत्तातिछत्ते 'पडागाइपडागे घंटाजुगले चामर-जुगले'^३ उप्पलहत्थए पउम^४ - णलिण - सुभग - सोगंधिय-पोंडरीय-महापोंडरीय-सतपत्त-सहस्सपत्तहत्थए सव्वरयणामए अच्चे^५ *सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे णीरए निम्मले तिप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे समरीइए सउज्जोए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे^० पडिरूवे विउव्वइ ॥

० भूमिभाग-विउव्वण-पदं

२४. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरम-णिज्जं भूमिभागं विउव्वति, से जहाणामए—आलिगपुक्खरेइ वा मुइंगपुक्खरेइ वा 'परिपुण्णे सरतलेइ'^६ वा करतलेइ वा चंदमंडलेइ वा सूरमंडलेइ वा आयंसमंडलेइ वा उरब्भचम्मेइ वा 'वसहचम्मेइ वा'^७ वराहचम्मेइ वा सीहचम्मेइ वा वग्घचम्मेइ वा 'मिग-चम्मेइ वा'^८ दीवियचम्मेइ वा अणेगसंकुकीलगसहस्सवितते^९, आवड-पच्चावड-सेट्ठि-पसेट्ठि- 'सोत्थिय-सोवत्थिय'^{१०}—पूसमाणव-वद्धमाणग- 'मच्छंडग-मगरंडग'^{११}—'जार-मार'^{१२}— फुल्लावलि-पउमपत्त-सागरतरंग-वसंतलय-पउमलयभत्तिचित्तेहि सच्छाएहि सप्पभेहि समरीइएहि सउज्जोएहि णाणाविहंपंचवण्णेहि मणीहि उवसोभिए, तं जहा— किण्हेहि णीलेहि लोहि-एहि हालिदेहि सुक्किलेहि ।

० मणि-वण्णावास-पदं

२५. तत्थ णं जेते किण्हा मणी, तेसि णं मणीणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहाणामए—जीमूतएइ वा अंजणेइ वा खंजणेइ वा कज्जलेइ वा 'मसीइ वा मसीगुलियाइ वा'^{१३} गवलेइ वा गवलगुलियाइ वा भमरेइ वा भमरावलियाइ वा भमरपतंगसारेइ^{१४} वा

१. वइरामयदंडे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सुक्कमे (क, ख, ग, घ) ।

३. घंटाजुयले पडागाइपडागे (क, ख, ग, घ, च) ;

घंटाजुयले चामरजुयले पडागाइपडागे (छ) ।

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (४।३०) गंगामहानद्यास्तोर-

णवर्णने तथा जीवाजीवाभिगमे (३।२६१ वापी-

वर्णने च स्वीकृतपाठस्य संवादी पाठो लभ्यते ।

४. अत्र सर्वासु प्रतिषु 'कुमुद' इति पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्तौ 'पद्महस्तकाः' पाठो व्याख्यातोस्ति तथा १३८ सूत्रे जाव 'पउमहत्था' एवंविधः पाठः प्राप्यते, तेनात्र 'पउम' इति पाठो युज्यते ।

५. सं० पा०—अच्चे जाव पडिरूवे ।

६. परिपुण्णसरतलेइ (वृ) ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. छगलचम्मेइ वा (वृ); जीवाजीवाभिगमे

(३।२७७) 'विगचम्मेति वा' इति पाठोस्ति ।

९. 'सहस्सवितते जाणाविहंपंचवग्नेहि मणीहि

उवसोभिते (वृ) ।

१०. सोवत्थिय (च); सोत्थिय (छ) ।

११. मच्छंडा-मगरंडा (च, छ) ।

१२. जारा-मारा(च) ।

१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ); क्वचित् 'मसी

इति वा मसीगुलिया इति वा' न दृश्यते (वृ)।

१४. पत्तसारेइ (क, ख, ग, घ, छ) ।

जंबूफलेइ वा अहारिट्ठेइ वा परपुट्ठेइ^१ वा गएइ वा गयकलभेइ वा 'किण्हसप्पेइ वा'^२ किण्हकेसरेइ वा आगासथिग्गलेइ वा किण्हसोएइ वा किण्हकणवीरेइ वा किण्हबंधुजीवेइ वा भवे एयारूवे सिया ? गो^३ इणट्ठे समट्ठे, 'ते णं किण्हा' मणी इत्तो इट्ठतराए चैव कंततराए चैव 'पियतराए चैव'^४ मणुण्णतराए चैव मणामतराए चैव वण्णेणं पण्णत्ता ॥

२६. तत्थ णं जेते नीला मणी, तेसि णं मणीणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहाणामए—भिग्गेइ वा भिगपत्तेइ वा सुएइ वा सुयपिच्छेइ वा चासेइ वा चासपिच्छेइ वा णीलीइ वा णीलीभेदेइ वा णीलीगुलियाइ वा सामाएइ वा 'उच्चंतगेइ वा'^५ वणरातीइ वा हलधरवसणे इ वा मोरग्गीवाइ वा 'पारेवयग्गीवाइ वा'^६ अयसिकुसुमेइ वा 'वाणकुसुभेइ वा'^७ अजणकेसियाकुसुमेइ वा नीलुप्पलेइ वा णीलासोगेइ वा 'णीलकणवीरेइ वा णीलबंधुजीवेइ वा'^८ भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं णीला मणी एत्तो इट्ठतराए चैव^९ *कंततराए चैव पियतराए चैव मणुण्णतराए चैव मणामतराए चैव^{१०} वण्णेणं पण्णत्ता ॥

२७. तत्थ णं जेते लोहिया मणी, तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहाणामए—'ससरुह्तिरेइ वा उरब्भरुह्तिरेइ वा वराहरुह्तिरेइ वा मणुप्सरुह्तिरेइ वा महिसरुह्तिरेइ वा बालिदगोवेइ'^{११} वा बालिदवाकरेइ वा संस्रभरागेइ वा गुजद्धरागेइ वा जासुअणकुसुमेइ वा किसुयकुसुमेइ वा पालियायकुसुमेइ वा जाइहिगुलएइ वा सिलप्पवालेइ वा पवालअंकुरेइ वा लोहियवखमणीइ वा लवखारमगेइ वा किमिरागकंबलेइ'^{१२} वा चीणपिट्ठरासीइ वा 'रत्तुप्पलेइ वा'^{१३} रत्तासोगेइ वा रत्तकणवीरेइ वा रत्तबंधुजीवेइ वा भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं लोहिया मणी इत्तो इट्ठतराए चैव^{१४} *कंततराए चैव पियतराए चैव मणुण्णतराए चैव मणामतराए चैव^{१५} वण्णेणं पण्णत्ता ॥

२८. तत्थ णं जेते हालिदा मणी, तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहाणामए—चंपएइ वा चंपगच्छलीइ वा 'चंपगभेएइ वा'^{१६} हालिदाइ वा हालिदाभेदेइ वा हालिदागुलियाइ वा हरियालियाइ वा हरियालभेदेइ वा हरियालगुलियाइ वा 'चिउरेइ वा

१. परट्ठेइ (क, ख, ग, च) ; परट्ठेइ (घ) । १०. सं० पा०—इट्ठतराए चैव जाव वण्णेणं ।
 २. × (क, ख, ग, घ, च) । ११. उरब्भरुह्तिरेइ वा ससरुह्तिरेइ वा नररुह्तिरेइ वा वराहरुह्तिरेइ वा बालिदगोवेइ (क, ख, ग, घ) ; उरब्भरुह्तिरेइ वा नररुह्तिरेइ वा वराहरुह्तिरे वा बालिदगोवेइ (च) ; उरब्भरुह्तिरेइ वा ससरुह्तिरेइ वा वराहरुह्तिरे वा बालिदगोवेइ (छ) ।
 ३. गोयमा ! णो (जी० ३।२७८) । १२. किमिकंदलेइ (क, ख, ग) ; किमिरागरत्तकंबलेइ (जी० ३।२८०) ।
 ४. ओवम्मं समणाउसो ! ते णं किण्हो (वृ) । १३. × (क, ख, ग, घ) ।
 ५. × (वृ) । १४. सं० पा०—इट्ठतराए चैव जाव वण्णेणं ।
 ६. उच्चंतंति वा (क, ख, ग, घ) । १५. × (क, ख, ग, घ) ।
 ७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
 ८. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ; इत्त उर्ध्वं क्वचित्—'इदनीलेइ वा महानीलेइ वा मरगतेइ वा' इति दृश्यते (वृ) ।
 ९. णीलबंधुजीवेइ वा णीलकणवीरेइ वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

चिउरंगरातेइ वा" 'वरकणगेइ वा" वरकणगनिघसेइ वा" वरपुरिसवसणेइ वा अल्लकी-कुसुमेइ वा चंपाकुसुमेइ वा कुहंडियाकुसुमेइ वा 'कोरंटकदामेइ वा" तडवडाकुसुमेइ वा घोसेडियाकुसुमेइ वा सुवण्णजूहियाकुसुमेइ वा सुहिरण्णकुसुमेइ वा 'वीययकुसुमेइ वा" नीयासोमेइ वा पीयकणवीरेइ वा पीयबंधुजीवेइ वा भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं हालिद्दा मणी एत्तो इट्ठतराए चेव" *कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्ण-तराए चेव मणामतराए चेव" वण्णेणं पण्णत्ता ॥

२९. तत्थ णं जेतै सुक्किला मणी, तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए—अंकेइ वा 'संखेइ वा चंदेइ वा कुमुद-उदक-दयरय-दहिघण-खीर-खीरपूरेइ वा कोंचावलीइ वा हारावलीइ वा हंसावलीइ वा वलागावलीइ वा चंदावलीइ वा" सारतिय-बलाहएइ वा धंतधोयरुप्पट्ठेइ वा सालिपिट्टरासीइ वा कुंदपुप्फरासीइ वा कुमुदरासीइ वा सुवक्खिवाडीइ वा पिहुणमिजियाइ वा भिसेइ वा मणालियाइ वा मयदंतेइ वा लवंग-दलएइ वा पोंडरियदलएइ वा" सेयासोमेइ वा सेयकणवीरेइ वा सेयबंधुजीवेइ वा भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं सुक्किला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव" *कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव" वण्णेणं पण्णत्ता ॥

३०. तेसि णं मणीणं इमेयारूवे गंधे पण्णत्ते, से जहाणामए—कोट्टपुडाण वा तगर-पुडाण वा एलापुडाण वा चोयपुडाण वा चंपापुडाण वा दमणापुडाण वा कुंकुमपुडाण वा चंदणपुडाण वा उसीरपुडाण वा मरुआपुडाण वा जातिपुडाण वा जूहियापुडाण वा मल्लिया-पुडाण वा ष्हाणमल्लियापुडाण वा केतमिपुडाण वा पाडलिपुडाण वा णोमालियापुडाण" वा अगुरुपुडाण वा लवंगपुडाण वा 'वासपुडाण वा कप्पूरपुडाण वा" अणुवायंसि वा" ओभिज्ज-माणण वा कोट्टिज्जमाणण वा भंजिज्जमाणण" वा उक्किरिज्जमाणण वा विक्किरिज्ज-माणण वा परिभुज्जमाणण" वा भंडाओ" भंडं साहरिज्जमाणण वा" ओराला मणुण्णा मणहरा घाणमणनिव्वुतिकरा सव्वओ समंता गंधा अभिनिस्सवंति" भवे एयारूवे सिया ?

१. चउरंगेइ वा चउरंगरातेइ वा (क, च, छ);
चउरंगेइ वा चिउरंगरातेइ वा (ख, ग);
चिउरंगेइ वा चिउरंगरातेइ वा (घ) ।
२. × (वृ) ।
३. वा सुवण्णसिप्पेइ वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
५. कोरंटवरमल्लदामेति वा (क, ख, ग, च, छ);
वीअकुसुमेइ वा कोरंटवरमल्लदामेति वा
(घ) ।
६. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं ।
७. संखेति वा चंदेति वा कुंदेति वा दंतेति वा
हंसावलीति वा कोंचावलीति वा हारावलीति
वा चंदावलीति वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
८. वा सिधुवारमल्लदामेति वा (जी० ३१२८२) ।
९. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं ।
१०. णेमालिया" (च) ।
११. कप्पूरपुडाण वा वासपुडाण वा (क, ख, ग, घ,
च, छ) ।
१२. वा पडिकूलवायंसि (छ) ।
१३. रुचिज्जमाणण (जी० ३१२८३) ।
१४. परिभाइज्जमाणण वा (वृपा) ।
१५. भंडाओ वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१६. × (छ) ।
१७. अभिनिस्सदंति (क, ख, ग); अभिनिस्सरंति
(छ, वृ); अभिनिस्सवन्ति (वृपा) ।

णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव' *कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्ण-तराए चेव मणामतराए चेव' गंधेणं पण्णत्ता ॥

३१. तेसि णं मणीणं इमेयारूवे फासे पण्णत्ते, से जहानामए—आइणेइ वा रूएइ वा बूरेइ वा णवणीएइ वा हंसगभत्तूलियाइ वा सिरीसकुसुमनिचयेइ वा बालकुमुदपत्तरासीइ' वा भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव' *कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव' फासेणं पण्णत्ता ।

० पेच्छाघरमंडव-विउव्वण-पदं

३२. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स बहुमज्जदेसभागे, एत्थ णं महं पिच्छाघरमंडवं विउव्वइ—अणेगखंभसयसन्नित्ठं अंभुग्गय - सुकय-वइरवेइया' -तोरणवररइय' -सालभंजियागं' सुसिलिट्ठ - विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-वेरुलिय-विमलखंभं णाणामणिकणगरयणखचिय-उज्जलबहुसमसुविभत्तभूमिभागं' ईहामिय-उसभ-तुरग - नर - मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ - चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्तं 'खंभुग्गय - वइरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्स-मालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुत्तोयणलेसं सुहफासं सत्तिसरीय-रूवं' कंचणमणिरयणभूमियागं णाणाविहपंचवण्णघंटापडागपरिमंडियग्गसिहरं चवलं मरीतिकवयं' विणिम्मयंतं लाउल्लोइयमहियं' गोसीस-सरस-रत्तचंदण-दट्ट-दिन्नपंचंगुलितलं उवचियवंदणकलसं वंदणघड-सुकय-तोरणपडिदुवारदेसभागं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय-मल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरभिमुक्क - पुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेतंगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूतं 'अच्छर-गण-संघ-संविक्किणं दिव्वतुडियसट्संपणाइयं' अच्छ' *सण्हं लण्हं घट्ठं मट्ठं णीरयं निम्मलं निप्पं कं निककंडच्छायं सप्पभं समरीइयं सउज्जोयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं' पडिरूवं ।

० पेच्छाघरमंडवे भूमिभाग-विउव्वण-पदं

३३. तस्स णं पिच्छाघरमंडवस्स अंतो' बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति जाव' मणीणं फासो ॥

१. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव गंधेणं ।

२. बालकुसुमपत्तरासीइ (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

३. सं० पा०—इट्ठतराए चेव जाव फासेणं ।

४. वरवेइया (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्तावपि 'वरवेइका' इति व्याख्यातमस्ति, किंतु जीवा-जीवाभिगमस्य (३।३७२) सूत्रस्य तथा ज्ञाता-धर्मकवायाः (१।१।५६) सूत्रस्य सन्दर्भे 'वइर-वेइया' इति पाठ उपयुक्तोस्ति । प्रस्तुतसूत्रस्य (१७) सूत्रे यानविमानवर्णनेपि 'वइरवेइया' इति पाठो लभ्यते ।

५. तोरणवरवइर (क, ख, ग, घ) ।

६. सालिभंजियागं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. 'सुविभत्तदेसभायं (क, ख, ग, घ, च); 'सुविभत्तदेसभूमिभायं (छ) ।

८. × (च) ।

९. मीरीति' (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. लाइयउल्लोइयमहियं (वृ) ।

११. दिव्वतुडियसट्संपणाइयं अच्छरघणसंघसंविइण्णं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. सं० पा०—अच्छं जाव पडिरूवं ।

१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१४. राय० सू० २४-३१ ।

० पेच्छाघरमंडवे उल्लोय-विउव्वण-पदं

३४. तस्स णं पेच्छाघरमंडवस्स उल्लोयं विउव्वति—पउमलयभत्तिचित्तं^१ अच्छं^२ *सण्हं लण्हं घट्ठं मट्ठं पीरयं निम्मलं निप्पकं निक्कंकडच्छायं सप्पभं समरीइयं सउज्जोयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं^३ पडिरूवं ॥

० पेच्छाघरमंडवे अक्खाडग-विउव्वण-पदं

३५. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्जदेसभाए, एत्थ णं महं एगं वइरामयं अक्खाडगं विउव्वति ॥

० अक्खाडए मणिपेडिया-विउव्वण-पदं

३६. तस्स णं अक्खाडयस्स बहुमज्जदेसभागे, एत्थ णं महेगं मणिपेडियं विउव्वति— अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं वाहल्लेणं, सव्वमणिमयं अच्छं^२ *सण्हं लण्हं घट्ठं मट्ठं पीरयं निम्मलं निप्पकं निक्कंकडच्छायं सप्पभं समरीइयं सउज्जोयं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं^३ पडिरूवं ॥

० मणिपेडियाए सीहासण-विउव्वण-पदं

३७. तीसे णं मणिपेडियाए उव्वरि, एत्थ णं महेगं सीहासणं विउव्वइ। तस्स णं सीहासणस्स इमेयारूसे वण्णावासे पण्णत्ते—तवणिज्जामया चक्कला, रययामया सीहा, सोवणिणया पाया, णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं, जंबूणयमयाइं गत्ताइं, वइरामया संधी, णाणामणिमए वेच्चे^४ से णं सीहासणे ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किन्तर-रुह-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलयभत्तिचित्ते ससारसारोवच्चियमणिरयणपायपीढे^५ अत्थरग-मिउमसूरग-णवतयकुसंत-लिं^६-केसर-पच्चत्थुयाभिरामे^७ 'आईणग-रूय-बूर-णव-

१. जीवाजीवाभिगमे (३।३०८) 'पउमलयाभत्ति- चित्ता जाव सामलयाभत्तिचित्ता सव्वतवणिज्ज- मया' इति पाठो लभ्यते । किन्तु प्रस्तुतसूत्रा- दर्शेषु केवलं पक्षलताया एव उल्लेखो विद्यते, वृत्तावपि इत्यमेवास्ति — पक्षलताभक्तिचित्रं 'जाव पडिरूवमि' ति, यावच्छब्दकरणात् 'अच्छं सण्हं' मित्यादिविशेषणकदम्बकपरिग्रहः ।

२, ३. सं० पा०—अच्छं जाव पडिरूवं ।

४. वच्चे (च) ।

५. संसारं (क, ख, ग, च, छ) ।

६. प्रस्तुतसूत्रे अस्य पदस्य द्वौ पाठभेदौ लभ्येते— लिक्ख (क); लिंव (ख, ग, घ, च, छ) । ज्ञाताधर्मकथायां (१।१।१८) अस्य पदस्य 'लिंव' इति पाठभेदो विद्यते । जीवाजीवा- भिगमे (३।३।११) मूलपाठे 'लिंव' इति पदं विद्यते, पाठान्तरे च 'लिक्ख' इति पदमस्ति ।

एतैः पाठभेदज्ञायते 'लिंव' इति पाठस्य 'लिंव' इति रूपे परावर्तनं जातम् । वृत्तिकारै- र्यथा यथा पाठो लब्धस्तथा तथा व्याख्यातः— नायाधम्मकहाओ (वृत्तिपत्र १७) लिंवो- बालोरभ्रस्योर्णायुक्ताकृत्तिः । जीवाजीवाभिगमे (वृत्तिपत्र २१०) लिंवानि—नमनशीलानि च केशराणि । रायपसेणइयवृत्तौ लिंवानि कोमलानि नमनशीलानि च केशराणि मध्ये यस्य मसूरकस्य तत् नवत्वक्कुशान्तलिंव- केशरम् । रायपसेणइयवृत्तौ कोमलानि, जीवा- जीवाभिगमस्य वृत्तौ नमनशीलानि इति व्याख्यातमस्ति । अनेन अर्थसादृश्यं प्रतीयते । 'लिंव' इति पदं लिपिकाराणां प्रसादत एव जातमस्ति ।

७. पत्थयाभिरामे (च); पडुत्थुयाभिरामे (छ) ।

णीय-तूलफासे सुविरइयरयत्ताणे ओयवियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे रत्तंसुअसंबुए सुरम्मे^१ पासाईए^२ दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

० सीहासणे विजयदूस-विउव्वण-पदं

३८. तस्स णं सीहासणस्स उवरि, एत्थ णं महेणं विजयदूसं विउव्वइ^३—संखं^४-कुंद-दगरय-अमयमहियफेणपुंजसन्निगासं सव्वरयणामयं अच्छं सण्हं^५ पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥

० विजयदूसे अंकुस-विउव्वण-पदं

३९. तस्स णं सीहासणस्स उवरि विजयदूसस्स य बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं एगं वयरामयं अंकुसं विउव्वति^६ ॥

० अंकुसे मुत्तादाम-विउव्वण-पदं

४०. तस्सि च णं वयरामयंसि अंकुसंसि कुंभिकं मुत्तादामं विउव्वति^७ । से णं कुंभिके मुत्तादामे अण्णेहि चउहि कुंभिकेहि^८ मुत्तादामेहि तदद्दुच्चत्तपमाणमेत्तेहि^९ सव्वओ समंता संपरिखित्ते । ते णं दामा तथणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरमंडियागा^{१०} णाणा-मणिरयणवित्रिहहारद्धहारउवसोभियसमुदाया^{११} ईसि अण्णमण्णमसंपत्ता^{१२} पुव्वावरदाहिणुत्तरागएहि वाएहि मंदायं-मंदायं^{१३} एज्जमाणा-एज्जमाणा^{१४} पलंबमाणा^{१५}-पलंबमाणा^{१६} पडंझमाणा^{१७}-पडंझमाणा उरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं कण्णमण्णिव्वुत्तिकरेणं सहेणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा-आपूरेमाणा सिरीए अतीव^{१८}-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

० भट्टासण-विउव्वण-पदं

४१. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स सीहासणस्स अवरुत्तरेणं^{१९} उत्तरेणं उत्तरपुर-
१. सुविरइ-रयत्ताणे (रइत्ताणे - ख, ग, घ) १०. °पयरमंडियागा (ख, ग); °पइरमंडियागा (च); × (वृ) ।
 - ओयविय (उवचिय—क, च, छ) खोमदुगुल्लपट्ट- ११. °समुदाया (वृ) ।
 - पडिच्छायणे रत्तंसुअसंबुए (संबुडे - च, छ) १२. °संपत्ता वाएहि (घ, च, छ) ।
 - सुरम्मे आईणगरूयवूरणवणीयतूलफासमउए १३. एईज्जमाणां २ (क, ख, ग); एइज्जमाणां २ (घ); एइज्जमाणां एइज्जमाणां (च) ; एयज्जमाणां एयज्जमाणां (छ) ।
 - (क, ख, ग, घ, च, छ) । १४. वलंबमाणा (क, ख, ग) ।
 २. पासातीए (क, ख, ग, घ) । १५. पलंबमाणां (घ) ।
 ३. विउव्वंति (वृ) । एकवचनस्य कर्ता कथं बहु- १६. पडंझमाणा (क) ; पडंझमाणा (ख, ग, च, छ) ।
 - वचनं क्रियायाम् । १७. अतीव (च) ।
 ४. संख (घ, छ, वृ) । १८. 'अवरुत्तरेणं' अत्र सप्तमी स्थाने तृतीया वर्तते ।
 ५. जीवाजीवामिसमे (३।४।२) जाव पदेन पूर्णः १९. 'स्थानाङ्गसूत्रे वृत्तिकारेण 'दाहिणेणं' 'एतादुशेषु प्रयोशेषु 'णं' वाक्यालंकारत्वेन स्वीकृतम् । किन्तु अत्र वृत्तिकृता तृतीया सप्तमी विभक्तिरूपेण व्याख्याता ।
 - पाठः सूचितोस्ति ।
 - ६, ७. विउव्वंति (वृ) । एक वचनस्य कर्ता कथं बहुवचनं क्रियायाम् ।
 ८. अडकुंभिकेहि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
 ९. °पमाणेहि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

त्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ ॥

४२. तस्स णं सीहासणस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चउण्हं अग्गमहिस्सीणं सपरिवाराणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ ॥

४३. तस्स णं सीहासणस्स दाहिणपुरत्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स अन्निभतरपरिसाए अट्टण्हं देवसाहस्सीणं अट्ट भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ । एवं—दाहिणेणं मज्झिमपरिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति । दाहिणपच्चत्थिमेणं वाहिरपरिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं वारस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति । पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणियाहि्वतीणं सत्त भद्दासणे विउव्वति ॥

४४. तस्स णं सीहासणस्स चउर्दिसं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं सोलस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति, तं जहा—पुरत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, दाहिणेणं चत्तारि साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ ॥

जाणविमाण-विउव्वणस्स निगमण-पदं

४५. तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए—अइरुग्गयस्स वा हेमंतियवालियसूरियस्स^१, खयरिगालाण वा रत्ति पज्जलियाणं, जवाकुसुमवणस्स^२ वा केसुयवणस्स वा पारियायवणस्स वा सव्वतो समंता संकुसुमियस्स भवे एयारूवे सिया ? णो इणट्ठे^३ समट्ठे । तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स एत्तो इट्ठतराए चेव^४ *कंततराए चेव पियतराए चेव मणुण्णतराए चेव मणामतराए चेव^५ वण्णे पण्णत्ते । गंधो य फासो य जहा^६ मणीणं ॥

४६. तए णं से आभियोमिए देवे दिव्वं जाणविमाणं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं^७ *दसण्हं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता तमाणत्तियं^८ पच्चप्पिणति ॥

जाणविमाणारोहण-पदं

४७. तए णं से सूरियाभे देवे आभियोगस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्महट्ठं^९ *तुट्टु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^{१०} हियए दिव्वं जिणिंदाभिगमणजोगं उत्तरवेउव्वियरूवं विउव्वति, विउव्वित्ता चउर्हि अग्गमहिस्सीहि सपरिवाराहि, दोहि अणिएहि, तं जहा—गंधव्वाणिएण य णट्टाणिएण य सर्द्धि संपरिवुडे तं दिव्वं जाणविमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिभिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं दुरुहति,

१. *बालसूरियस्स (छ) ।

५. राय० सू० ३०, ३१ ।

२. जासुमणस्स (क, ख, ग, घ, च) ; जावसुमणस्स (छ) ।

६. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव पच्चप्पिणति ।

३. इणमट्ठे (क, ख, ग, घ, च) ।

७. सं० पा०—हट्टु जाव हियए ।

४. सं० पा०—इट्टतराए चेव जाव वण्णे ।

दुरुहिता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिसण्णे ॥

४८. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ तं दिव्वं जाण-विमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणा उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरुहंति, दुरुहिता पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वणत्थेहिं भद्दासणेहिं णिसीयंति । अवसेसा देवा य देवीओ य तं दिव्वं जाणविमाणं *अणुपयाहिणीकरेमाणां° दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरुहंति, दुरुहिता पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वणत्थेहिं भद्दासणेहिं निसीयंति ॥

पयाण-सज्जा-पदं

४९. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स तं दिव्वं जाणविमाणं दुरुहस्स समाणस्स अट्ठममलां पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ^१-*णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ^२-दप्पणा ॥

५०. तयणंतरं च णं पुण्णकलसभिगार-दिव्वायवत्तपडागां सच्चामरा दंसणरइया आलोयदरिसणिज्जा^३ वाउद्धयविजयवेजयंतीपडागा ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ॥

५१. तयणंतरं च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदाभोवसोभितं चंदमंडल-निभं समुस्सियं विमलमायवत्तं पवरसीहासणं च मणिरयणभत्तिचित्तं सपायपीढं सपाउया-जोयसमाउत्तं बहुकिंकरामरपरिग्गहियं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थियं ॥

५२. तयणंतरं च णं वइरामय-वट्ट-लट्ट-संठिय-सुसिलिट्ट-परिषट्ट-मट्ट-सुपत्तिट्टिए विसिट्ठे^४ अणेगवरपंचवण्णकुडभी-सहस्सपरिमंडियाभिरामे^५ वाउद्धयविजयवेजयंतीपडा-गच्छत्तात्तिच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे जोयणसहस्समूसिए महत्तिमहालए महिदज्जए पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिए ॥

५३. तयणंतरं च णं सुरूव^६-णेवत्थ-परिकच्छिया सुसज्जा सव्वालंकारभूसिया महया भड-चडगर-पहगरेणं पंच अणीयाहिवइणो पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ॥

५४. तयणंतरं च णं बह्वे आभियोगिया देवा देवीओ य सएहिं-सएहिं रूवेहिं, 'सएहिं-सएहिं, विसेसेहिं, सएहिं-सएहिं विहवेहिं, सएहिं-सएहिं णिज्जोएहिं,^७ सएहिं-सएहिं णेवत्थेहिं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ॥

१. सं० पा०—जाणविमाणं जाव दाहिणिल्लेणं ।

९. सहस्सुस्सिए (वृ) ।

२. मंगलगा (वृ) ।

१०. सुरूव (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—सिरिवच्छ जाव दप्पणा ।

११. एतत्सूत्रं वृत्तो नास्ति व्याख्यातम् ।

४. दिव्वा य छत्तपडागा (ओ० सू० ६४, जं० ३।१७८) ।

१२. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (३।१७८) चिह्नाद्धित-पाठस्य स्थाने एतादृशः पाठो विद्यते—'एवं वेसेहिं चिधेहिं निजोएहिं' । अस्य पाठस्य 'वेसेहिं' इति पदं सम्यक् प्रतिभाति । 'विसे-सेहिं' इति पदस्य कश्चिद् विशिष्टोर्थो नैव ज्ञायते । *णेज्जाएहिं (क, ख, ग, घ) ।

५. लोयदरिसणिज्जा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. तयाणंतरं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. समाउया^४ (क, ख, ग, घ) ।

८. सिट्ठो (क, ख, ग); सिट्ठे (घ, च, छ) ।

५५. तयणंतरं च णं सूरियाभविमाणवासिणो बह्वे वेमाणिया देवा य देवीओ य सन्विड्डीए जाव' नाइयरवेणं सूरियाभं देवं पुरतो पासतो य मग्गतो य समणुगच्छंति ॥

जाणविमाण-पच्चोरुहण-पदं

५६. तए णं से सूरियाभे देवे तेणं पंचाणीयपरिखित्तेणं वइरामयवट्ट-लट्ट-संठिय^१-
 *सुसिलिट्ट-परिघट्ट-मट्ट-मुपतिट्टिएणं विसिट्ठेणं अणेगवरपंचवण्णकुडभी-सहस्सपरिमडिया-
 भिरामेणं वाउद्धयविजयवेजयंतीपडागच्छत्तातिच्छत्तकलिएणं तुणेणं गगणतलमणुलिहंतसिह-
 रेणं^२ जोयणसहस्समूसिएणं महतिमहालतेणं मंहिदज्झएणं पुरतो कडिडज्जमाणेणं चउहिं
 सामाणियसाहस्सीहिं^३, *चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं
 सत्तहिं अणियाहिं वईहिं^४ सोअसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं य वहूहिं सूरियाभविमाण-
 वासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडे सन्विड्डीए जाव' नाइयरवेणं सोध-
 म्मस्स कप्पस्स मज्झंमज्झेणं तं दिव्वं देविं डिड्ढं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं उवदंसेमाणे-
 उवदंसेमाणे 'पडिजागरेमाणे-पडिजागरेमाणे'^५ जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स उत्तरिल्ले
 णिज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छति, जोयणसयसाहस्सिएहिं विग्गहेहिं ओवयमाणे वीतिवय-
 माणे^६ ताए उक्किट्टाए^७ *तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए
 देवगईए^८ तिरियमसंखिज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीतीवयमाणे-वीतीवयमाणे
 जेणेव 'नंदीसरवरे दीवे'^९ जेणेव दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरपव्वाए तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता तं दिव्वं देविं डिड्ढं^{१०} *दिव्वं देवजुतिं^{११} दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरेमाणे-
 पडिसाहरेमाणे पडिसंखेवेमाणे-पडिसंखेवेमाणे जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव
 आमलकप्पा नयरी जेणेव अंबसालवणे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं^{१२} तिक्खुत्तो आयाहिणं
 पयाहिणं करेइ, करेत्ता^{१३} समणस्स भगवओ महावीरस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे^{१४} तं दिव्वं
 जाणविमाणं ईसिं चउरंगुलमसंपत्तं धरणित्तलंसि ठवेई, ठवेत्ता चउहिं अग्गमहिसीहिं
 सपरिवाराहिं, दोहिं अणिएहिं य-गंधव्वाणिएणं य णट्टाणिएणं य सद्धिं संपरिवुडे ताओ
 दिव्वाओ जाणविमाणाओ पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति ॥

५७. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ ताओ
 दिव्वाओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति । अवसेसा
 देवा य देवीओ य ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं
 पच्चोरुहंति ॥

१. राय० सू० १३ ।

२. सं० पा०—संठिय जाव जोयणसहस्समूसिएणं ।

३. सं० पा०—सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोल-
 सहि ।

४. राय० सू० १३ ।

५. उवलालेमाणे उवलालेमाणे (वृ) ।

६. वयमाणे (क, ख, ग, घ, च) ।

७. सं० पा०—उक्किट्टाए जाव तिरियमसं-
 खिज्जाणं ।

८. नन्दीश्वरो द्वीपः (वृ) ।

९. सं० पा०—देविं डिड्ढं जाव दिव्वं ।

१०. विमाणेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. × (क, ख, ग, घ, च) ।

१२. दिसाभागे (क, ग, च) ।

सूरियाभस्स-वंदण-पदं

५८. तए णं से सूरियाभे देवे [चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं ?]' चउहिं अग्गमहि-
सीहिं' *सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं',
सोलसहिं आयरखदेव-साहस्सीहिं अण्णेहि य वहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं
देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्डीए जाव' णाइयरवेण' जेणेव समणे भगवं महावीरे
तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं
करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--अहण्णं भंते ! सूरियाभे
देवे देवाणुप्पियं वंदामि नमंसामि' *सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं'
पज्जुवासामि ॥

वंदणाणुमोदण-पदं

५९. सूरियाभाइ ! समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी—पोराणमेयं
सूरियाभा ! 'जीयमेयं सूरियाभा !' किच्चमेयं सूरियाभा ! करणिज्जमेयं सूरियाभा !
आइण्णमेयं सूरियाभा ! अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा ! जण्णं भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-
वेमाणिया देवा अरहंते भगवंते वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता तओ पच्छा साइं-साइं
नाम-गोत्ताइं साहंति, त' पोराणमेयं सूरियाभा ! जाव अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा !

पज्जुवासणा-पदं

६०. तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ'
*तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्टाए उट्ठेति,
उट्ठेत्ता' समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासण्णे नातिदूरे
सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासति ॥

धम्मदेसणा-पदं

६१. तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभस्स देवस्स तीसे य महत्तिमहालियाए
'इसिपरिसाए मुणिपरिसाए जतिपरिसाए विदुपरिसाए देवपरिसाए खत्तियपरिसाए इक्खाग-
परिसाए कोरव्वपरिसाए अणेगसयाए अणेगवंदाए अणेगसयवंदपरिवाराए परिसाए ओहवले
अइवले महव्वले अपरिमियवल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंतिजुत्ते सारय-णवत्थणिय-महुरगंभीर-
कोच्चणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे, उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए' अमम्म-

१. सप्तमसूत्रानुसारेणान्त्रैष पाठो युज्यते ।
२. सं० पृ०—अग्गमहिसीहिं जाव सोलसहिं ।
३. राय० सू० १३ ।
४. णाइएणं (क, ख, ग, घ, च) ।
५. सप्तमसूत्रानुसारेणान्त्रैष पाठो युज्यते ।
६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
८. सं० पृ०—हट्ठ जाव समणं ।

९. रायपसेणइयवृत्तौ आचार्यमलयगिरिणा औपपातिकस्य पाठः समुद्धृतः, स च अभयदेवसूरिव्याख्यात-
पाठात् किञ्चिद् भिद्यते—

(ओवाइय वृत्ति पृ० १४७)
अगरलयाए अमम्मणाए सब्बक्खरसण्णि-
वाइयाए पुण्णरत्ताए सब्बभासाणुगामिणीए
सरस्सईए

(रायपसेणइय वृत्ति पृ० ११६
पं० बेचरदास द्वारा संपादित)
अग्गयाए अमम्मणाए फुडविसयमहुरगंभीर-
गाहिणाए सब्बक्खरसन्निवाइयाए गिराए

णाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयण-णीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ—अरिहा धम्मं परिकहेइ” जाव परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

पण्ह-वागरण-पदं

६२. तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठ^१-*चित्तमाणंदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण^०-हियए उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते ! सूरियाभे देवे किं भवसिद्धिए ? अभवसिद्धिए ? सम्मदिट्ठी ? मिच्छ-दिट्ठी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभवोहिए ? दुल्लभवोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?

सूरियाभाइ ! समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी—सूरियाभा ! तुमण्णं भवसिद्धिए, नो अभवसिद्धिए^१ । *सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी । परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए । सुलभवोहिए, नो दुल्लभवोहिए । आराहए, नो विराहए^० । चरिमे, नो अचरिमे ॥

नट्टविहि-उवदंसण-पदं

६३. तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठुट्ठ-चित्तमाणंदिए* पीइमाणे परमसोमणस्सिए^० हरिसवस-विसप्पमाणहियए समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—तुभे णं भंते ! सव्वं जाणह सव्वं पासह, ‘सव्वओ जाणह सव्वओ पासह’, सव्वं कालं जाणह सव्वं कालं पासह, ‘सव्वे

सव्वभासाणुगामिणीए सव्वसंसयविमोयणीए
अपुणरत्ताए सरस्सईए

अत्र ‘अगरलयाए,’ ‘पुण्णरत्ताए’ इति शब्दद्वयं आलोच्यमस्ति । ‘अगरलयाए’ (सुविभक्ताक्षरतया) इति पाठापेक्षया ‘अगग्गयाए’ (अगद्गदया) इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति ।

‘पुण्णरत्ताए’ इति पाठस्य व्याख्या अभयदेवसूरिणा इत्थं कृतास्ति—‘पूर्णा च स्वरकलाभिः रक्ता च—गेयरागानुरक्ता या सा तथा तथा ।’

वृत्तिकारेण आदर्शे एतादृश एव पाठो लब्धस्तेन तथा व्याख्यातः ।

रायपसेणइयवृत्तो (पृ० १६०) गेयस्य अष्टगुणानां व्याख्या प्रसंगे ‘पूर्ण’, ‘रक्त’ इतिगुणद्वयं व्याख्यातमीरितं यथा—तत्र यत् स्वरकलाभिः परिपूर्णं गीयते तत् ‘पूर्णम्,’ गेयरागानुरक्तेन यद् गीयते तद् ‘रक्तम्’ । एषा व्याख्या अभयदेवसूरिकृत ‘पूर्णरक्त’ व्याख्यया तुल्यास्ति । अनया ज्ञायते सा व्यर्था नास्ति, तेन आचार्यमलयगिरिणा समुद्धृतः औपपातिकपाठो वाचनानुभेदस्य प्रतीयते ।

१. चिन्हाङ्कितपाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते । एष ४. सं० पा०—चित्तमाणंदिए जाव परमसोमण-वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । द्रष्टव्यानि औपपाति-स्सिए ।

कस्य ७१ से ७६ सूत्राणि ।

५. *सोमणसे (क, ख, ग, च, छ) ।

२. सं० पा०—हट्ठुट्ठ जाव हियए ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—अभवसिद्धिए जाव चरिमे ।

भावे जाणह सव्वे भावे पासह" । जाणंति णं देवाणुप्पिया ! मम पुब्बिं वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वगं गोयमातियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं वत्तीसतिवद्धं नट्टविहिं उवदंसित्तए ॥

६४. तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे सूरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परियाणइ तुसिणीए संचिट्ठति ॥

६५. तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी— तुब्भे णं भंते! सव्वं जाणहं "सव्वं पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्वं कालं जाणह सव्वं कालं पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह । जाणंति णं देवाणुप्पिया ! मम पुब्बिं वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वगं गोयमातियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं वत्तीसतिवद्धं नट्टविहिं उवदंसित्तएत्ति कट्टु समणं भगवं महावीरं तिकखुत्ती आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ^१, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरत्ति^२, *तं जहा—रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहावायरे पोग्गले परिसाडेति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाएइ परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति, समोहणित्ता^३ बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति, से जहानामए—आलिगपुक्खरेइ वा जाव^४ मणीणं फासो ॥

६६. तस्म णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्जदेसभागे पिच्छाघरमंडवं विउव्वति—अणेगखंभसयसन्निविट्ठं वण्णओ^५ अंतो बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं उल्लोयं अक्खाडगं च मणिपेढियं च विउव्वति ॥

६७. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं सीहासणं सपरिवारं जाव^६ दामा चिट्ठंति ॥

६८. तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवतो महावीरस्स आलोए पणामं करेत्ति, करेत्ता अणुजाणउ मे भगवंति कट्टु सीहासणवरगए तित्थयराभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

६९. तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए नाणामणिकणगरयणविमल-महरिह- 'निउण-ओविय'^७-मिसिमिसेतविरवियमहाभरण-कडग^८-तुडियवरभूसणुज्जलं पीवरं पलंबं दाहिणं भुयं पसारेत्ति ।

१. × (क, ख, ग, च, छ) ।

२. सं० पा०—जाणह जाव उवदंसित्तए ।

३. समोहणइ (क, ख, ग, च, छ) ।

४. सं० पा०—निसिरत्ति अहावायरे अहासुहुमे

दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं जाव बहुसम^० ।

५. राय० सू० २४-३१ ।

६. राय० सू० ३२-३६ ।

७. राय० सू० ३७-४४ ।

८. निउणोविय (क, ख, ग); निउणोवचिय (घ, च) ।

९. कणग (क, ख, ग, घ, च) ।

तओ णं सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिब्बयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोव्वेयाणं एगाभरण-वसणगहियणिज्जोयाणं दुहओ संवेल्लियग्गणियत्थाणं 'आविद्धतिलयामेलाणं पिणद्धगेव्वेज्जकंचुयाणं' उप्पीलिय-चित्तपट्ट-परियर-सफेणकावत्तरइय-संगय-पलंब-वत्थंत-चित्त-चिल्ललग-नियंसणाणं एगावलि-कंठरइय-सोभंत-वच्छ-परिहत्थ-भूसणाणं अट्टसयं नट्ट-सज्जाणं देवकुमाराणं णिग्गच्छइ ॥

७०. तयणंतरं च णं नानामणिं *कणगरयणविमल-महरिह-निउण-ओविय-मिसि-मिसेतविरचियमहाभरण-कडग-तुडियवरभूसणुज्जलं पीवरं पलंबं वामं भुयं पसारैति ।

तओ णं सरिसियाणं सरित्तयाणं सरिब्बतीणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोव्वेयाणं एगाभरण-वसणगहियणिज्जोईणं दुहओ संवेल्लियग्गणियत्थीणं आविद्धतिलयामेलाणं पिणद्धगेव्वेज्जकंचुईणं नानामणि-कणग^१-रयण-भूसण-विराइयंगमंगीणं चंदाणणाणं चंदद्ध-समनिलाडाणं चंदाहियसोमदंसणाणं उक्का इव उज्जोवेमाणीणं सिगारागारचारुवेसाणं संगयागय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलासललिय-संलावनिउणजुत्तोवयारकुसलाणं गहिया-उज्जाणं अट्टसयं नट्टसज्जाणं देवकुमारीणं णिग्गच्छइ ॥

७१. तए णं से सूरियाभे देवे 'अट्टसयं संखाणं विउव्वइ, अट्टसयं संखवायाणं विउव्वइ, अट्टसयं सिगाणं विउव्वइ, अट्टसयं सिगवायाणं विउव्वइ, अट्टसयं संखियाणं विउव्वइ, अट्टसयं संखियवायाणं विउव्वइ', अट्टसयं खरमुहीणं विउव्वइ, अट्टसयं खरमुहिवायाणं विउव्वइ, अट्टसयं पेयाणं विउव्वइ, अट्टसयं पेयावायाणं विउव्वइ, अट्टसयं पिरिपरियाणं^२ विउव्वइ, अट्टसयं पिरिपरियावायाणं विउव्वइ', एवमाइयाइं^३ एगूणपण्णं आउज्जविहा-णाइं विउव्वइ, विउव्वित्ता तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयाओ य सद्दावेति ॥

७२. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य सूरियाभेणं देवेणं सद्दाविया समाणा हट्टं^४ *तुट्ट-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण-हियया^५ जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरि-ग्गहियं^६ *दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेत्ति^७, वद्धावेत्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं कायव्वं ॥

७३. तए णं से सूरियाभे देवे ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य एवं वयासी— गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेह,

१. × (वृ) ।

२. तयाणंतरं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—नानामणि जाव पीवरं ।

४. सरिसयाणं (क, ख, ग, वृ) ।

५. 'भेलाणं (छ) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च) ।

७. × (ख, ग, घ) ।

८. परिपरियाणं (च, छ) ।

९. अतः परं वृत्तौ अन्येषां आतोद्यानां नामान्यपि उल्लिखितानि सन्ति द्रष्टव्यानि वृत्तिपत्राणि १२६-१२८ । ७७ सूत्रे शेषातोद्यानां नामानि साक्षाल्लिखितानि सन्ति ।

१०. एवमातियाणं (क, ख, ग, घ, छ); एवमाति-याणि (च) ।

११. सं० पा०—हट्ट जाव जेणेव ।

१२. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता ।

करेत्ता वंदह नमंसह, वंदित्ता नमंसित्ता गोयमाइयाणं^१ समणाणं निग्गंथाणं तं दिव्वं देविडिडं दिव्वं देवजुति दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं वत्तीसइवद्धं^२ णट्टविहि उवदंसेह, उवदंसित्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

७४. तए णं ते वह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्टं^३ *तुट्ट-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं^४ पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं^५ *तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता^६ नमंसित्ता जेणेव गोयमादिया समणा निग्गंथा तेणेव निग्गच्छंति ॥

७५. तए णं ते वह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समामेव समोसरणं करेति, करेत्ता समामेव पंतीओ बंधंति, बंधित्ता समामेव ओणमंति, ओणमित्ता समामेव उण्णमंति^७, उण्णमित्ता एवं सहियामेव ओणमंति, ओणमित्ता सहियामेव उण्णमंति, उण्णमित्ता संगयामेव^८ ओणमंति, ओणमित्ता संगयामेव उण्णमंति, उण्णमित्ता थिमियामेव^९ ओणमंति, ओणमित्ता थिमियामेव उण्णमंति, उण्णमित्ता समामेव पसरंति, समामेव आउज्जविहाणाइं गेण्हंति, गेण्हित्ता समामेव पवाएसु समामेव पगाइंसु समामेव पणच्चिंसु ॥

७६. किं ते ? उरेण मंदं, सिरेण तारं, कंठेण वितारं, तिविहं तिसमयं^{१०}-रेयग-रइयं गुंजावंककुहरोवगूढं^{११} रत्तं तिट्ठाणकरणसुद्धं सकुहरगुंजंतं^{१२}-वंस-तंती-तल-ताल-लय-गहसुसंप-उत्तं महुरं समं सललियं मणोहरं मउरिभियपयसंचारं सुरइं सुणति वरचारुव्वं दिव्वं णट्टसज्जं रोयं पगीया^{१३} वि होत्था ॥

७७. 'किं ते'^{१४}? उद्धमंताणं—संखाणं सिगाणं संख्याणं खरमुहीणं पेयाणं पिरिपिरियाणं, आहम्मंताणं—पणवाणं पडहाणं, अप्फालिज्जमाणं—भंभाणं होरंभाणं, तालिज्जंतीणं—भेरीणं झल्लरीणं दुंदुहीणं, आलवताणं^{१५}—मुरयाणं^{१६} मुइंगाणं नंदीमुइंगाणं, उत्तालिज्जंताणं—आलिगाणं कुतुंवाणं गोमुहीणं मट्टलाणं^{१७}, मुच्छिज्जंताणं—वीणाणं विपंचीणं वल्लकीणं, कुट्टिज्जंतीणं—महंतीणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं, सारिज्जंताणं—बद्धीसाणं सुधोसाणं नदिघोसाणं, फुट्टिज्जंतीणं^{१८}—भामरीणं छभामरीणं^{१९} परिवायणीणं, छिप्पंताणं—

१. गोयमातियाणं (च) ।

१०. सकुहरकुंजंतं (क, ख, ग, च) ।

२. द्वात्रिंशद्विधम् (वृ) ।

११. गीया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—हट्ट जाव करयल जाव पडिसुणंति ।

१२. किं च ते देवकुमारा देवकुमारिकाश्च प्रगीतवन्त प्रनतितवन्तश्च ? (वृ) ।

४. सं० पा०—महावीरं जाव नमंसित्ता ।

१३. महीलीणं मट्टलाणं (घ) ।

५. उब्भमंति (क, ख, ग) ।

१४. आलिपंताणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. थिमियमेव (क, घ, च); थिमियामेव (छ) ।

१५. मुरयवराणं (क, छ); मुरजवराणं (घ) ।

७. संगयामेव (क, घ, च) ।

१६. महीलीणं मट्टलाणं (घ) ।

८. तिसम (क, ख, ग, घ, च) ।

१७. स्पन्दनम् (वृ) ।

९. कुंजावंकं (क) । गुंजा + अवंकं = गुंजावंकं ।

१८. उब्भामरीणं (क, ख, ग) ।

तूणाणं तुंबवीणाणं, आमोडिज्जंताणं—आमोटाणं^१ झंझाणं^२ नउलाणं, अच्छिज्जंतीणं—
मुगुंदाणं हुडुक्कीणं विचिक्कीणं, वाइज्जंताणं—करडाणं डिडिमाण किणियाणं^३ कडंबाणं^४,
ताडिज्जंताणं—दहरगाणं दहरिगाणं कुतुंबराणं^५ कलसियाणं मडडयाणं^६ आताडिज्जंताणं^७—
तलाणं तालाणं कंसतालाणं, घट्टिज्जंताणं—रिगिसियाणं^८ लत्तियाणं मगरियाणं सुंसुमारि-
याणं, फूमिज्जंताणं—वंसाणं^९ वेलूणं वालीणं परिलीणं बद्धगाणं^{१०} ॥

७८. तए णं से दिव्वे गीए 'दिव्वे नट्टे दिव्वे वाइए'^{११}, 'अब्भुए गीए अब्भुए नट्टे
अब्भुए वाइए, सिगारे गीए सिगारे नट्टे सिगारे वाइए, उराले गीए उराले नट्टे उराले
वाइए, मणुण्णे गीए मणुण्णे नट्टे मणुण्णे वाइए^{१२}, 'मणहरे गीए मणहरे नट्टे'^{१३} मणहरे
वाइए, उप्पिजलभूते कहकहभूते^{१४} दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

७९. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स
सोत्थिय-सिरिवच्छ-नदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पण-मंगलभत्तिचित्तं णामं
दिव्वं नट्टविधि उवदंसंति ॥

८०. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समाभेव समोसरणं करंति, करेत्ता
तं चेव भाणियव्वं जाव^{१५} दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

८१. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स
आवड-पच्चावड-सेठि-पसेठि-सोत्थिय-सोवत्थिय^{१६}-पूसमाणव^{१७}-वद्धमाणग-मच्छंडा-मगरंडा-
जारा-मारा^{१८}-फुल्लावलि-पउमपत्त-सागरतरंग-वसंतलता^{१९}-पउमलयभत्तिचित्तं णामं दिव्वं
णट्टविहि उवदंसंति ॥

८२. एवं च एक्किक्कियाए णट्टविहीए समोसरणादिया एसा वत्तव्वया जाव^{२०} दिव्वे
देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

८३. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स

- | | |
|---|---|
| १. आमोताणं (क, च, छ) । | १२. सं० पा०—एवं अब्भुए सिगारे उराले
मणुन्ने । |
| २. कुंभाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १३. मणहरे नट्टे मणहरे गीते (क, ख, ग, घ, च,
छ) । |
| ३. किरियाणं (क, ख, ग, घ) । | १४. 'कहा' (क, ख, ग, घ, च, छ); 'कहग'
(घ) । |
| ४. करंबाणं (क) । | १५. राय० सू० ७५-७८ । |
| ५. कुतुंबाणं (क, ख, ग, घ, च, छ); एतत्पदं
वृत्त्याधारेण स्वीकृतम् । वृत्तेः १२७ पृष्ठेपि
'कुस्तुम्बराणाम्' इति पदं दृश्यते । | १६. + (च, छ) । |
| ६. मडडयाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १७. पूसमाणग (क, ख, ग, घ, छ); पूसमाण
(घ) । |
| ७. आवडिज्जंताणं (क, ख, ग, घ, छ) । | १८. मच्छंडग-मगरंडग-जार-मारा (छ) । |
| ८. गिरिसियाएणं (क); गिरिसियाणं (ख, ग,
घ, च, छ) । | १९. चतुर्विंशतितमे सूत्रे 'लय' शब्दो विद्यते अत्र तु
'लता' । |
| ९. कुमिवंसाणं (क) । | २०. राय० सू० ७५-७८ । |
| १०. पव्वगाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) । | |
| ११. दिव्वे वाइए दिव्वे नट्टे (वृ) । | |

ईहामिअ-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग - बालग-किन्नर-रुह - सरभ-चमर - कुंजर- वणलय-
पउमलयभत्तिचित्तं णामं दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

८४. एगओवकं, 'एगओखहं दुहओखहं', 'एगओचक्कवालं दुहओचक्कवालं चक्कद्ध-
चक्कवालं' णामं दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

८५. चंदावलिपविभत्ति च^१ सूरावलिपविभत्ति च वलयावलिपविभत्ति^२ च हंसावलिप-
विभत्ति च एगावलिपविभत्ति च तारावलिपविभत्ति च 'मुत्तावलिपविभत्ति च कणगाव-
लिपविभत्ति च'^३ रयणावलिपविभत्ति च 'आवलिपविभत्ति च'^४ णामं दिव्वं णट्टविहि उवदं-
सेति ॥

८६. चंदुग्गमणपविभत्ति च सूरुग्गमणपविभत्ति च उग्गमणुग्गमणपविभत्तिं च णामं
दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

८७. चंदाग्गमणपविभत्ति च सूराग्गमणपविभत्तिं च आग्गमणाग्गमणपविभत्तिं च णामं
दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

८८. चंदावरणपविभत्ति च सूरावरणपविभत्तिं च आवरणावरणपविभत्तिं च णामं
दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

८९. चंदत्थमणपविभत्ति च सूरत्थमणपविभत्तिं च अत्थमणत्थमणपविभत्तिं च णामं
दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

९०. चंदमंडलपविभत्तिं च सूरमंडलपविभत्तिं च नागमंडलपविभत्तिं च जक्खमंडल-
पविभत्तिं च भूतमंडलपविभत्तिं च 'रक्खस-महोरग-गंधव्वमंडलपविभत्तिं च'^५ मंडलपवि-
भत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

९१. 'उसभमंडलपविभत्तिं च सीहमंडलपविभत्तिं च'^६, ह्यविलंबियं गयविलंबियं,
'ह्यविलसियं गयविलसियं'^७, मत्तह्यविलसियं मत्तगयविलसियं, 'मत्तह्यविलंबियं मत्तगय-
विलंबियं'^८ दुयविलंबियं णामं दिव्वं णट्टविहि उवदंसेति ॥

९२. सागरपविभत्तिं^९ च नागरपविभत्तिं च सागर-नागरपविभत्तिं च णामं दिव्वं
णट्टविहि उवदंसेति ॥

९३. नंदापविभत्तिं च चंपापविभत्तिं च नंदा-चंपापविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहि

१. × (ख, ग, वृ) ।

२. चक्कदुचक्कवालं (क, घ) ।

३. वा (घ) ।

४. वलियावलि° (क, ख, ग) ।

५. कणगावलिपविभत्तिं च मुत्तावलिपविभत्तिं च
(घ) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । आदर्शेषु एतेषां
नाट्यविधीनां पाठः सर्वत्र एकरूपो नास्ति ।
क्वचित् नाट्यविश्लेषभौतिकं नाम लिखितमुप-
लभ्यते, यथा—उग्गमणुग्गमणपविभत्तिं आग्गम-

णाग्गमणपविभत्तिं, क्वचिद् एतद् नास्ति । अत्र

जीवाजीवाभिगमवृत्ति (पत्र २४६) रपि द्रष्टव्या

७. णट्टविहं (घ, च, छ) ।

८. × (वृ) ।

९. उसभल्लियविककंतं सीहल्लियविककंतं (क, ख,
ग, घ, च, छ) ।

१०. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. सग्गडुद्धियपविभत्तिं च साग्गं (क, ख, ग, घ,
च, छ) ।

उवदंसेति ॥

६४. मच्छंडापविभक्तिं च मयरंडापविभक्तिं च 'जारापविभक्तिं च मारापविभक्तिं च' मच्छंडा-मयरंडा-जारा-मारापविभक्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

६५. 'क' ति ककारपविभक्तिं च 'ख' ति खकारपविभक्तिं च 'ग' ति गकारपविभक्तिं च 'घ' ति घकारपविभक्तिं च 'ङ' ति ङकारपविभक्तिं च ककार-खकार-गकार-घकार-ङकार-पविभक्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

६६. एवं—चकारवग्गो वि ॥

६७. टकारवग्गो वि ॥

६८. तकारवग्गो वि ॥

६९. पकारवग्गो वि' ॥

१००. असोयपल्लवपविभक्तिं च अंबपल्लवपविभक्तिं च जंबूपल्लवपविभक्तिं च कोसंबपल्लवपविभक्तिं च पल्लवपविभक्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०१. पउमलयापविभक्तिं* च नागलयापविभक्तिं च असोगलयापविभक्तिं च चंपगलयापविभक्तिं च चूयलयापविभक्तिं च वणलयापविभक्तिं च दासंतियलयापविभक्तिं च अइ-मुत्तयलयापविभक्तिं च कुंदलयापविभक्तिं च सामलयापविभक्तिं च लयापविभक्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०२. दुयं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०३. विलंबियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०४. दुयविलंबियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०५. अंचियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०६. रिभियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०७. अंचियरिभियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०८. आरभडं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१०९. भसोलं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

११०. आरभडभसोलं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

१११. उप्पायनिवायपवत्तं* संकुचिय-पसारियं रियारियं भंतसंभंतं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति ॥

११२. तए णं ते वहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समामेव समोसरणं करेति जाव' दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था ॥

१. जारपविभक्तिं च मारपविभक्तिं च (छ) ।

२. तवग्गो वि पवग्गो वि (क, ख, ग, घ, छ) ।

३. पल्लव २ पविभक्तिं च (क, ख, ग, घ) ।

४. सं० पा०—पउमलयापविभक्तिं जाव सामलया-पविभक्तिं ।

५. लया २ पविभक्तिं (घ) ।

६. उप्पायनिवायपवत्तं (क, ख, ग, घ, च) ; उप्पायनिवायपविभक्तिं (छ) ; अयं पाठो वृत्त्यनुसारी स्वीकृतः ।

७. रयारइयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ; रेवकारचित्तं (व) ।

८. राय० सु० ७५-७८ ।

११३. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स 'चरमपुव्वभवणनिबद्धं च चरमचवणनिबद्धं च चरमसाहरणनिबद्धं च चरमजम्मणनिबद्धं च चरमअभिसेअनिबद्धं च चरमबालभावनिबद्धं च चरमजोव्वणनिबद्धं च चरमकामभोगनिबद्धं च चरमनिक्खमणनिबद्धं च चरमतवचरणनिबद्धं च चरमणाणुप्पायनिबद्धं च चरमतित्थ-पवत्तणनिबद्धं च चरमपरिनिव्वाणनिबद्धं च चरमनिबद्धं च" णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदसेंति ॥

११४. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारीओ य चउव्विहं वाइत्तं वाएंति, तं जहा—ततं विततं घणं सुसिरं ॥

११५. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारियाओ च चउव्विहं मेयं गायंति, तं जहा—'उक्खित्तं पायंतं मंदायं रोइयावसाणं च" ॥

१. पुव्वभवचरियनिबद्धं च देवलोयचरियणिबद्धं च चवणचरियणिबद्धं च साहरणचरियणिबद्धं च जम्मणचरियणिबद्धं च अभिसेअचरियनिबद्धं च बालभावचरियनिबद्धं च कामभोगचरियनिबद्धं च तवचरणचरियनिबद्धं च तित्थपवत्तणचरियनिबद्धं च परिनिव्वाणचरियनिबद्धं च चरिमचरियनिबद्धं च (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. भूसिरं (जी० ३।४४७) ।

३. रायपसेणइय (सू० ११५) रायपसेणइय (सू० २८१) स्थानांग (४।६३४) जीवाजीवाभिगम (३।४४७)

उक्खित्तं	उक्खित्तायं	उक्खित्तए	उक्खित्तं
पायंतं	पायंतायं	पत्तए	पवत्तं
मंदायं	मंदायं	मंदए	मंदायं
रोइयावसाणं	रोइयावसाणं	रोविदए	रोइयावसाणं

रायपसेणइय (सू० ११५) वृत्ति :—उत्क्षिप्तं प्रथमतः समारभ्यमाणम् पादान्तम्—पादवृद्धम् वृद्धादि-चतुर्भागरूपपादवृद्धम् इति भावः । मध्यभागे मूर्च्छनादिगुणोपेततया मन्दं मन्दं धोलनात्मकम् रोचितावसानम् इति—रोचितं यथोचितलक्षणोपेततया भावितम्—सत्यापितम् इति यावत् अवसानं यस्य तद् रोचितावसानम् (वृत्ति, पृ० १४४, १४५) ।

रायपसेणइय सू० २८१ । अत्र वृत्तिकृता नास्ति किञ्चिद् व्याख्यातम् स्थानाङ्ग (४।६३४) वृत्तिकारेण लिखितमत्र—नाट्यगेयाभिनयसूत्राणि सम्प्रदायाभावान्न विवृतानि (वृत्ति, पत्र २७२) ।

जीवाजीवाभिगम (३।४४७) । वृत्ति :—'उत्क्षिप्तं' प्रथमतः समारभ्यमाणम् 'प्रवृत्तम्' उत्क्षेपाव-स्थातो विक्रान्तं मनाग्भरेण प्रवर्तमानं मन्दायमिति—मध्यभागे मूर्च्छनादि गुणोपेततया मन्दं मन्दं धोलनात्मकं 'रोचितावसानं' मिति रोचितं—यथोचितलक्षणोपेततया भावितं सत्यापितमिति यावत् अवसानं यस्य तद् रोचितावसानम् (वृत्ति, पत्र २४७) ।

रायपसेणइयसूत्रे द्विवारं मेयस्य उल्लेखोस्ति, तत्र द्वितीयवारे प्रथमवर्तिनो द्वयोः शब्दयोः स्वार्थिकः क प्रत्ययः कृतोस्ति तेन 'उक्खित्तायं, पायंतायं' पाठो जातः । यद्यपि आदर्शेषु 'पायंतायं' पाठो दृश्यते किन्तु लिपि दोषाद् एव जातः प्रतीयते । तेन अस्माभिर्मूले 'पायंतायं' पाठः स्वीकृतः ।

जीवाजीवाभिगमे त्रयः शब्दाः रायपसेणइयशब्देश्यस्तुल्या वर्तन्ते केवलं द्वितीयशब्दो भिन्नोस्ति । स्थानांगे 'पत्तए, रोविदए' द्वौ शब्दौ भिन्नौ वर्तन्ते । असौ वाचनाभेदोस्ति अथवा लिपिदोषेण परिवर्तनं जातमिति न निश्चेतुं शक्यते ।

११६. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चउव्विहं णट्टविहिं उवदंसेति, तं जहा—अचियं रिभियं आरभडं भसोलं च ॥

११७. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चउव्विहं अभिणयं' अभिणेति, तं जहा—'दिट्ठतियं पाडतियं' सामन्नओविणिवाइयं' लोगमज्जावसाणियं' च' ॥

११८. तए णं ते बह्वे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य गोयमादियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविंइह दिव्वं देवजुति दिव्वं देवाणुभावं' दिव्वं वत्तीसइबद्धं' नट्टविहिं उवदंसित्ता समणं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदंति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अज्जलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता एयमाणत्तियं' पच्चप्पिणंति ॥

११९. तए णं से सूरियाभे देवे तं दिव्वं देविंइह दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरइ, पडिसाहरेत्ता खणेणं जाते एमे एगभूए ।

१२०. तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवं महावीरं तिवखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ वंदंति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नियगपरिवालसद्धिं संपरिवुडे तमेव दिव्वं जाण-विमाणं दुरुहति, दुरुहित्ता जामेव दिस्सिं पाउब्भूए ताभेव दिस्सिं पडिगए ॥

१. णट्टं अभिणयं (क, ख, ग, घ, च) ।

२. पाडियंतियं (क, घ); पाडियं (ख, ग, च, छ); २८१ सूत्रेपि सर्वप्रतिष 'पाडतियं' पाठो विद्यते ।

३. सामंतोवणिवाइयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. अंतोमज्जावसाणियं (क, ख, ग, घ); २८१ सूत्रे एतत्तुल्यप्रकरणे सर्वासु प्रतिषु 'लोगमज्जावसाणियं' इति पाठोस्ति तथा जीवाजीवाभिगमे (३।४४७) पि एष पाठो लभ्यते ।

५. रायपसेणइय (सू० ११७, २८१)	स्थानांग (४।६३७)	जीवाजीवाभिगम (३।४४७)
दिट्ठतियं	दिट्ठतिते	दिट्ठतियं
पाडतियं	पाडिसुते	पाडिसुयं
सामन्नओविणिवाइयं	सामन्नओविणिवाइयं	सामन्नतोविणिवातियं
लोगमज्जावसाणियं	लोगमज्जावसिते	लोगमज्जावसाणियं

स्थानाङ्गवृत्ती नास्ति व्याख्यातोसौ पाठः ।

रायपसेणइयसूत्रे प्रथमवारमसौ व्याख्यातोस्ति—'दाष्टान्तिकम् प्रात्यन्तिकम् सामान्यतोविनिपातम् लोकमध्यावसानिकम् ।' (वृत्ति, पृ० १४५) । वृत्त्यनुसारेणात्र 'सामन्नओविणिवातं' पाठो युज्यते । जीवाजीवाभिगमवृत्तावपि 'सामान्यतोविनिपातिकम्' इति व्याख्यातमस्ति । आदर्शेषु 'सामंतोवणिवाइयं' जातम् । सम्भवतः 'सामन्नओ' स्थाने 'सामन्नो' जातः अस्यैव 'सामन्नो' रूपे परिवर्तनं जातमिति प्रतीयते । स्थानांगे 'पडिसुते' पाठस्तथा जीवाजीवाभिगमवृत्ती 'प्रतिश्रुतिकम्' इति व्याख्यातोस्ति पाठः । एतौ द्वावपि 'रायपसेणइयसूत्रस्य' 'पाडतियं' शब्दाद् वाचनाभेदं गच्छतः ।

६. देवाणुभागं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. वत्तीसइनिबद्धं (क, ख, च, छ) ।

८. एवमाणत्तियं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

कूडागारसाला-दिट्ठंत-पदं

१२१. 'भंतेत्ति' ! भयवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी'^३—

१२२. सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स एसा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे कर्हि गते कर्हि अणुप्पविट्ठे ? गोयमा ! सरीरं गए सरीरं अणुप्पविट्ठे ॥

१२३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सरीरं गए सरीरं अणुप्पविट्ठे ? गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहतो लिक्का गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा । तीसे णं कूडागारसालाए अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे 'जणसमूहे एगं' महं अब्भवद्दलं वा वासवद्दलं वा महावायं वा एज्जमाणं' पासति, पासित्ता तं कूडागारसालं अंतो अणुप्पविसित्ताणं चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—सरीरं गए, सरीरं अणुप्पविट्ठे ॥

सूरियाभ-विमाण-पदं

१२४. 'कर्हि णं'^४ भंते ! सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे नामं विमाणे पणत्ते ? गोयमा ! जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागतो उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-ताराख्वाणं पुरओ^५ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं 'बहुईओ जोयणकोडीओ बहुईओ जोयणकोडाकोडीओ'^६ उड्ढं दूरं वीतीवइत्ता, एत्थ णं सोहम्मं नामं

१. भंतेत्ति (क, ख, ग) ।

२. पुस्तकान्तरे तु इदं वाचनान्तरं दृश्यते—'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जिट्ठे अन्तेवामी' इत्यादि—'इदंभूई नामं अणगारे गोयमसमोत्ते सत्तुस्सेहे समचउरंसंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंधयणे कणगपुलगनिघसपम्हगारे उग्गतवे दित्ततवे महातवे उराले घोरे घोरगुणं घोरतवस्सी घोरवंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविपुलतेयलेस्से चउदसपुव्वी चउनाणावगए सब्बक्खरसन्निकाइं समणस्स भगवतो महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे भाणकोट्टोवगए संजमेण तथसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले, उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले, समुप्पणसड्ढे समुप्पणसंसए समुप्पणकोउहल्ले, उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवंतं महावीरं तिवक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, तिवक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी'—(वृ) ।

३. जणसमूहे चिट्ठति, तए णं से जणसमूहे एगं (च, छ); जनसमूहः तिष्ठति, स च एकं (वृ) ।

४. एज्जमाणं वा (क, ख, ग, घ) ।

५. कहणं (क); कहणं (ख, ग, च, छ); कहं णं (घ) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च) ।

७. बहुगीतो जोयणसहस्सातो बहुगीतो जोयणकोडाकोडीतो बहुगीतो जोयणसहस्सकोडीओ (क, ख, ग, च); बहुगीतो जोयणकोडीतो बहुगीतो जोयणकोडाकोडीतो बहुगीतो जोयणसहस्सकोडीतो (घ) ।

कप्पे पण्णत्ते—पाईणपडीणायते उदीणदाहिणवित्थिण्णे अद्धचंदसंठाणसंठित्ते अच्चिम्मालि-
भासरासिवण्णाम्भे, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविकखंभेणं, असंखेज्जाओ
जोयणकोडाकोडीओ परिकखेवेणं, 'सव्वरयणामए अच्छे सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे पीरए
निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे समरीइए सउज्जोए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे
पडिरूवे', एत्थं णं सोहम्मणं देवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्साइं' भवंति इति
मक्खायं' । ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१२५. तेसि णं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं जहा—असोग-
वडेंसए सत्तवण्णवडेंसए चंपगवडेंसए चूयवडेंसए मज्झे सोधम्मवडेंसए ते णं वडेंसगा
सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१२६. तस्स णं सोधम्मवडेंसगस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमेणं तिरियं असंखेज्जाइं
जोयणसयसहस्साइं वीईवइत्ता', एत्थं णं सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे विमाणे पण्णत्ते—
अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं आयामविकखंभेणं, गुणयालीसं च सयसहस्साइं वावन्नं च
सहस्साइं अट्ट य अडयाले जोयणसते परिकखेवेणं, [सव्वरयणामए अच्छे जाव
पडिरूवे' ?] ॥

० पागार-पदं

१२७. से णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते । से णं पागारे तिण्णि
जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले एगं जोयणसयं विकखंभेणं, मज्झे पन्नासं जोयणाइं
विकखंभेणं, उप्पि पण्णीसं जोयणाइं विकखंभेणं । मूले वित्थिण्णे मज्झे संखित्ते उप्पि तणुए,
गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

० कविसीस-पदं

१२८. से णं पागारे णाणाविहपंचवण्णेहिं कविसीसएहि उवसोभिए, तं जहा—
किण्हेहि नीलेहि लोहितेहि हालिदेहि सुक्किलेहि कविसीसएहि । ते णं कविसीसगा एगं
जोयणं आयामेणं, अद्धजोयणं विकखंभेणं, देसूणं जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, सव्वरयणामया
अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१. प्रतिषु एष पाठो नास्ति । वृत्तिगतस्य
'सव्वत्तिमता रत्तमयं: यावत् करणात् अच्छे
सण्हे घट्ठे' इति पाठस्यानुसारेण स्वीकृतोयं
पाठः ।

२. तत्र (वृ) ।

३. विमाणवासं (क, ख, ग, छ) ।

४. मक्खाया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. सहिवण्णं (क, ख, ग) ।

६. रायं सू० २१ ।

७. वीतीवइज्जा (क, ख, ग, घ) ।

८. ऊयालीसं (क, ख, ग, घ) ।

९. कोष्ठकवर्ती पाठः प्रतिषु नोपलभ्यते, किन्तु
१२४ सूत्रक्रमेण अत्रासौ युज्यते । संक्षिप्त-
पद्धत्यनुसारेण लिपिकारैर्न लिखित इत्यनु-
मीयते ।

१०. पण्णीसं (घ) ।

११. सव्वकणगामए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. रायं सू० २३ ।

१३. णाणामणिपंचवण्णेहिं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१४. सव्वमणिया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१५. रायं सू० २१ ।

० द्वार-पदं

१२६. सूरियाभस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए दारसहस्सं-दारसहस्सं भवतीति मक्खायं । ते णं दारा पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खं-भेणं, तावइयं चैव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुह-सरभ-चमर-कुंजर - वणलय - पउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गय - वइरवेइया-परिगयाभिरामा विज्जाहर-जमल-जुयल-जंतजुत्ता पिव अच्चीसहस्समालणीया^१ रूवग-सहस्सकलिया भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा ॥

१३०. वण्णो दाराणं तेसिं होइ, तं जहा—वइरामया णिम्मा, रिट्ठामया पइट्ठणा, वेरुलियमया खंभा, जायरूवोवचिय - पवरपंचवण्णमणिरयणकोट्टिमत्ता, हंसगभमया^२ एलुया, गोभेज्जमया इंदकीला, लोहियक्खमईओ दारचेडाओ, जोईरसमया उत्तरंगा,^३ लोहियक्खमईओ सूईओ, वइरामया संधी, नाणामणिमया समुग्गया, वइरामया अग्गला अग्गलपासाया, रययामईओ^४ आवत्तणपेढियाओ, अंकुत्तरपासगा, निरंतरीयघणकवाडा, भित्तीसु चैव भित्तिगुलिया छप्पन्ना तिण्णि होति, गोमाणसिया तत्तिया, णाणामणिरयण-वालरूवग^५-लीलट्टियसालभंजियागा, वइरामया कूडा, रययामया^६ उरसेहा, सव्वतवणिज्जमया उल्लोया, णाणामणिरयणजालपंजर-मणिवंसग^७-लोहियक्ख-पडिवसग^८-रययभोमा^९, अंका-मया पक्खा पक्खबाहाओ, जोईरसमया^{१०} वंसा वंसकवेल्लुयाओ^{११}, रययामईओ पट्टियाओ, जायरूवमईओ ओहाडणीओ, वइरामईओ उवरिपुंछणीओ, सव्वसेयरययामए छायणे, अंकमय-कणगकूडतवणिज्जथूभियागा, सेया 'संखतल-विमल-निम्मल-दधिघण-गोखीरफेण-रययणिरर-प्पगासा, तिलग-रयणद्वचंदचित्ता'^{१२}, नाणामणिदामालंकिया, अंतो बहिं च सण्हा, तवणिज्ज-वालुया-पत्थडा, सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

० वंदणकलस-पदं

१३१. तेसिं णं दाराणं उभओ पासे^१ दुहओ निसीहियाए सोलस-सोलस वंदणकलस-परिवाडीओ पण्णत्ताओ । ते णं वंदणकलसा वरकमलपइट्ठणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा

१. 'मालिणीया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

पाठः ।

२. 'गया (क, ख, ग, घ, च) ।

७. 'वंस (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. अतः परं जीवाजीवाभिमये (३।३००)

८. 'वंस (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

'वेरुलियामया कवाडा'इति पाठो विद्यते ।

९. 'भोम्मा (क, ख, ग, च) ।

४. वइरामई (जी० ३।३००); आह च जीवा-भिमममूलटीकाकारः—'अग्गलाप्रासादा यत्रा-ग्गला नियम्यते' इति । एतौ द्वौ अपि वज्जरत्त-मयो (वृ) ।

१०. 'रसा' (क, ख, ग, छ) ।

११. 'कवेडयातो (छ) ।

१२. संखतल - विमल-निम्मल- दधिघण-गोखीरफेण-रययनियर-प्पगासद्वचंदचित्ताइं (वृपा); 'इत्ता

५. वालगरूवग (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

(क, ख, ग, घ, च) ।

६. रययामय (क, ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवा-भिममस्य (३।३००) अनुसारेण स्वीकृतोयं

१३. पासा (क, ख, ग, घ, छ) ।

चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिधाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव' पडिरूवा' महया-महया म'हिदकुंभसमाणा' पण्णत्ता समणाउसो ! ॥

० णागदंत-पदं

१३२. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस णागदंतपरिवाडीओ पण्णत्ताओ । ते णं नागदंता मुत्ताजालंतरुसियहेमजाल-गवक्खजाल-खिखिणीघंटाजालपरिक्खत्ता' अब्भुग्गया अभिणिसिद्धा तिरियं सुसंपग्गहिया' अहेपन्नगद्धरूवगा पन्नगद्धसंठाणसंठिया सव्ववइरामया अच्छा जाव' पडिरूवा महया-महया गयदंतसमाणा पण्णत्ता समणाउसो !

तेसु णं णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा णीलमुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा लोहितमुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा हालिद्दसुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा सुक्किलमुत्तबद्धा वग्घारियमल्लदामकलावा ।

ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरमंडियगा' नाणामणिरयण-विविहहारद्धहार उवसोभियसमुदया' *ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता पुव्वावरदाहिणुत्तरागएहि वाएहि मंदायं-मंदायं एज्जमाणा-एज्जमाणा पलंबमाणा-पलंबमाणा पझंझमाणा-पझंझमाणा उरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं कण्णमणणिव्वुत्तिकरेणं सट्ठेणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा-आपूरेमाणा' सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।

तेसि णं णागदंताणं उव्वरि अण्णाओ सोलस-सोलस नागदंतपरिवाडीओ पण्णत्ताओ । ते णं नागदंता' *मुत्ताजालंतरुसियहेमजाल - गवक्खजाल - खिखिणीघंटाजालपरिक्खत्ता अब्भुग्गया अभिणिसिद्धा तिरियं सुसंपग्गहिया अहेपन्नगद्धरूवा पन्नगद्धसंठाणसंठिया सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा महया-महया' गयदंतसमाणा पण्णत्ता समणाउसो !

तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता । तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडीओ पण्णत्ताओ । ताओ णं धूवघडीओ कालागरु-पवरकुंदुरुक्कतुरुक्क-धूव-मघमघेतसंधुद्धुयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं घाणमणणिव्वुत्तिकरेणं गंधेणं ते पदेसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा-आपूरेमाणा' *सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा' चिट्ठंति ॥

० सालभंजिया-पदं

१३३. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस सालभंजिया-

१. राय० सू० २१ ।

२. पडिरूवगा (वृ) ।

३. इवकुंभसमाणा (क. ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवाभिगमे (३।३०१) पि 'म'हिदकुंभसमाणा' इति पाठो विद्यते ।

४. 'जाला-खिखिणीजाल' (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. सुसंपग्गहिया (वृ) ।

६. राय० सू० २१ ।

७. 'मण्डितानि (वृ) : 'पतरगमंडिता (जी० ३।३०२); प्रस्तुतागमस्य चत्वारिंशत्तमे सूत्रे 'पयरमंडियागा' इति पाठो विद्यते ।

८. सं० पा०—'सभुदया जाव सिरीए ।

९. सं० पा०—नागदंता तं चैव गयदंतसमाणा ।

१०. सं० पा०—आपूरेमाणा जाव चिट्ठंति ।

परिवाडीओ पण्णत्ताओ । ताओ णं सालभजियाओ लीलट्टियाओ सुपइट्टियाओ सुअलं-
कियाओ^१ णाणाविहरागवसणाओ णाणामल्लपिणद्धाओ मुट्टिगेज्जसुमज्जाओ आमेलग-जमल-
जुयल-वट्टिय-अब्भुण्णय-पीण-रइय-संठियपओहराओ^२ रत्तावंगाओ असियकेसीओ मिउ-
विसय-पसत्थ-लक्खण-संवेल्लियग्गसिरयाओ ईसि असोगवरपायवसमुट्टियाओ वामहत्थग्ग-
हियग्गसालाओ ईसि अद्धच्छिकडक्खच्चिट्ठित्तेहि^३ लूसमाणीओ^४ विव, चक्खुल्लोयणलेसेहि^५
अण्णमण्णं खिज्जमाणीओ विव, पुढविपरिणामाओ सासयभावमुवगयाओ चंदाणणाओ
चंदविलासिणीओ चंदद्वसमणिडालाओ चंदाहियसोमदंसणाओ उक्का विव उज्जोवेमाणाओ
विज्जु-घण-मिरिय-सूर-दिप्पंत-तेय-अहिययर-सन्निकासाओ सिगारागारचारुवेसाओ पासाई-
याओ^६ *दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ तेयसा अतीव-अतीव उवसोभेमाणीओ-
उवसोभेमाणीओ^७ चिट्ठंति ॥

० जालकडग-पदं

१३४. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस 'जालकडगा पण्णत्ता'^८ । ते णं जालकडगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० घंटा-पदं

१३५. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस घंटापरिवाडीओ पण्णत्ताओ । तासि णं घंटाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तं जहा—जंबूणयामईओ घंटाओ. वइरामईओ लालाओ, णाणामणिमया घंटापासा, तवणिज्जामईओ संकलाओ, रययामयाओ रज्जूओ । ताओ णं घंटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ हंसस्सराओ कुंचस्सराओ सीहस्सराओ दुंदुहिस्सराओ णंदिस्सराओ णंदिघोसाओ मंजुस्सराओ मंजुघोसाओ सुस्सराओ सुस्सर-
घोसाओ^९ ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं कण्णमणनिव्वुतिकरेणं सद्देणं ते पदेसे सव्वओ समंता आपूरेमाणाओ-आपूरेमाणाओ^{१०} *सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणाओ-उवसोभे-
माणाओ^{११} चिट्ठंति ॥

० वणमाला-पदं

१३६. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस वणमाला-
परिवाडीओ पण्णत्ताओ । ताओ णं वणमालाओ णाणादुमलय-किसलय-पल्लव-समाउलाओ
छप्पयपरिभुज्जमाण-सोहंत-सस्सिरीयाओ पासाईयाओ^{१२} *दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

याम् ।

२. संठियपीवरपओहराओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. *माणाओ (घ) ।

५. *लेसातो (क, ख, ग, घ) ।

३. *कडक °(क, घ, च); *कडक्क °(ख, ग);
वृत्तिकारेण 'अर्ध' तिर्यग् वलितं इति व्याख्या-
तम् । जीवःजीवाभिगमस्य (पत्र २०७) वृत्तौ
'अड्डु' तिर्यग् वलितं इति व्याख्यातमस्ति ।
अत्रापि 'अड्डु' इति पदं युक्तमस्ति । एतद्
देशीभाषा पदं विद्यते, 'आडो' इति भाषा-

६. सं० पा०—पासाईयाओ जाव चिट्ठंति ।

७. जालकडगपरिवाडीओ पण्णत्ताओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. *णिघोसाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. सं० पा०—आपूरेमाणाओ जाव चिट्ठंति ।

१०. सं० पा०—पासाईयाओ ।

पडिरूवाओ° ॥

० पगंठग-पदं

१३७. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस-सोलस पगंठगा पण्णत्ता । ते णं पगंठगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं आयाम-विकखंभेणं, पणवीसं जोयणसयं बाहल्लेणं, सव्ववइरामया अच्छा जाव^१ पडिरूवा । तेसि णं पगंठगाणं उवररि पत्तेयं-पत्तेयं पासायवडेंसगा पण्णत्ता । तेणं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पणवीसं^३ जोयणसयं विकखंभेणं^३, अब्भुग्गयमूसिय-पहसिया^५ इव, विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवैजयंतीपडाग-च्छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतर-रयणं^६ पंजरुम्मिलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्त-पोंडरीय^५-तिलगरयणद्वचंद-चित्ता^९ अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्ज^८-वालुयापत्थडा सुहफासा ससिसरीयरूवा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा जाव दामा^{१०} ॥

० तोरण-पदं

१३८. तेसि णं दाराणं उभओ पासे [दुहओ णिसीहियाए^{१०} ?] सोलस-सोलस तोरणा पण्णत्ता—णाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उवणिविट्टुसन्निविट्ठा जाव^{११} पउमहत्थगा ॥

१३९. तेसि णं तोरणणं पुरओ^{१३} दो दो सालभंजियाओ^{१३} पण्णत्ताओ । जहा हेट्ठा तहेव^{१३} ॥

१४०. तेसि णं तोरणणं पुरओ नागदंतगा पण्णत्ता । जहा हेट्ठा जाव^{१३} दामा ॥

१४१. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो ह्यसंघाडा गयसंघाडा नरसंघाडा किन्नरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा जाव^{१३} पडिरूवा^{१३} ॥

१. राय० सू० २१ ।

२. पणु° (च) ।

३. अत्र 'आयाम-विकखंभेणं' इति पाठः अपेक्षितोस्ति । जीवाजीवाभिगमे (३।३०७) एतत्तुल्यप्रकरणे 'आयाम-विकखंभेणं' इति पाठो विद्यते ।

४. पहासिया (छ, वृ) ।

५. सूत्रे चात्र विभक्तिलोपः प्राकृतत्वात् (वृ) ।

६. °रीया (क, ख, ग, घ) ।

७. अतोत्रे आदर्शेषु 'णाणामणिदामालंकिया' इति पाठो लभ्यते । वृत्तौ नास्ति व्याख्यातोसौ । जीवाजीवाभिगमवृत्तावपि (पत्र २०६) नास्ति व्याख्यातः । मुद्रितवृत्तौअसौकेनापि प्रक्षिप्तः । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेर्वृत्तित्रयेसौ व्याख्यातो दृश्यते ।

८. °णिज्जा (क, ख, ग, घ, च) ।

९. जावदामा उवररि पगंठगाणं उभया छत्ताइच्छत्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) 'दामा' इति पाठ-ग्रहणेन३३-४० सूत्रस्य 'चिट्ठंति' पर्यन्तः पाठो ग्राह्यः ।

१०. उभयोः पाश्र्वयोरैकैकनैषेधिकीभावेन या द्विधा नैषेधिकी तस्याम्—इति वृत्त्यनुसारेण कोष्ठ-कान्तर्गतः पाठो युज्यते ।

११. राय० सू० २०-२३ ।

१२. पुरतः प्रत्येकम् (वृ) ।

१३. सालि° (च छ) ।

१४. राय० सू० १३३ ।

१५. राय० सू० १३२ ।

१६. राय० सू० २१ ।

१७. अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।३१८) संक्षिप्तपाठ एव स्वीकृतोस्ति ।

१४२. *तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो हयपंतीओ^३ ॥

१४३. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो हयवीहीओ^३ ॥

१४४. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो हयमिहुणाइं^३ ॥

१४५. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो पउमलयाओ^३ *दो दो नागलयाओ दो दो असोगलयाओ दो दो चंपगलयाओ दो दो चूयलयाओ दो दो वणलयाओ दो दो वासंतिय-लयाओ दो दो अइमुत्तयलयाओ दो दो कुंदलयाओ दो दो सामलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ^३ *णिच्चं माइयाओ णिच्चं लवइयाओ णिच्चं थवइयाओ णिच्चं गुलइयाओ णिच्चं गोच्छि-याओ णिच्चं जमलियाओ णिच्चं जुवलियाओ णिच्चं विणमियाओ णिच्चं पणमियाओ [णिच्चं सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरीओ ?] णिच्चं कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरीओ^३ 'सव्वरयणामईओ अच्छाओ'^३ *सण्हाओ लण्हाओ वट्ठाओ मट्ठाओ णीरयाओ निम्मलाओ निप्पंकाओ निक्ककंडच्छायाओ सप्पभाओ समरीइयाओ सउज्जोयाओ पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ^३ पडिरूवाओ ॥

१४६. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो दिसासोवत्थिया^३ पणत्ता—सव्वरयणामया^३ अच्छा पडिरूवा ॥

१४७. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो वंदणकलसा पणत्ता । ते णं वंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा^३ *सुरभिवरवारिपडिपुण्णा चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पल-पिधाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा महया-महया महिंदकुंभसमाणा पणत्ता समणाउसो^३ ! ॥

१४८. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो भिंगारा पणत्ता । ते णं भिंगारा वरकमलपइ-ट्ठाणा^३ *सुरभिवरवारिपडिपुण्णा चंदणकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिधाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा^३ महया मत्तगयमहामुहाकतिसमाणा^३ पणत्ता समणा-उसो ! ॥

१४९. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो आयंसा पणत्ता । तेसि णं आयंसाणं इमेयारूवे वण्णावासे पणत्ते, तं जहा—तवणिज्जमया पगंठगा,^३ अंकामया मंडला 'अणुग्घसितनिम्म-

१. सं० पा०—एवं पंतीओ वीही मिहुणाइं ;

वीहीतो पंतीतो (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. राय० सू० १४१ ।

३. सं० पा०—पउमलयाओ जाव सामलयाओ ।

४. सं० पा०—कुसुमियाओ सव्वरयणामईओ ।

५. *मय अच्छा (वृ); सं०पा०—अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ।

६. अक्खयसोवत्थिया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. जाम्बूनदमया (वृपा) ।

८. सं० पा०—वरकमलपइट्ठाणा तहेव ।

९. सं० पा०—वरकमलपइट्ठाणा जाव महया ।

१०. मत्तगयमुहाकति^३ (क, ख, ग, घ, च, छ); मत्तगयमहामुहागिइं^३ (वृ) ।

११. अतः परं प्रयुक्तादर्शेषु एतादृशः पाठो लभ्यते—'वेरुलियमया सुरया वइरामया दोवारंगा नानामणिया मंडला' एष वृत्ती नास्ति व्याख्यातः । जीवाजीवाभिगमादर्शेषु (३।३२२) एष पाठः किञ्चिद्भेदेतोप-लभ्यते—'वेरुलियमया छरूहा वइरामया वरंगा णाणामणिमया वलक्खा अंकमया मंडला । तस्य

लाए छायाए^१ समणुबद्धा, चंदमंडलपडिणिकासा महया-महया अद्धकायसमाणा पणत्ता समणाउसो ! ॥

१५०. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो वइरनाभा थाला पणत्ता—अच्छ-तिच्छाडिय-सालि^२-तंदुल-णहसंदिट्ट-पडिपुण्णा इव चिट्ठंति सव्वजंबूणयमया अच्छा जाव पडिरूवा महया-महया रहचक्कसमाणा^३ पणत्ता समणाउसो ! ॥

१५१. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो पातीओ पणत्ताओ । 'ताओ णं'^४ पातीओ अच्छोदगपरिहत्थाओ णाणाविहस्स^५ फलहरियगस्स बहुपडिपुण्णाओ विव चिट्ठंति सव्व-रयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ महया-महया गोकलिजगचक्कसमाणीओ^६ पणत्ताओ समणाउसो ! ॥

१५२. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो सुपइट्टगा^७ पणत्ता । 'ते णं सुपइट्टगा सुसव्वो-सहिपडिपुण्णा णाणाविहस्स च पसाधणभंडस्स बहुपडिपुण्णा'^८ इव चिट्ठंति सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१५३. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो मणोगुलियाओ^९ पणत्ताओ । तासु णं मणोगु-लियासु बहवे सुवण्णरूपामया फलगा पणत्ता । तेसु णं सुवण्णरूपामएसु फलगेसु बहवे वइरामया नागदंतया पणत्ता । तेसु णं वइरामएसु णागदंतएसु बहवे रययामया^{१०} सिक्कगा पणत्ता । तेसु णं रययामएसु^{११} सिक्कगेसु बहवे वायकरगा पणत्ता । ते णं वायकारगा किण्हसुत्तसिक्कग^{१२}-गवच्छिया^{१३} णीलसुत्तसिक्कग-गवच्छिया लोहियसुत्तसिक्कग-गवच्छिया हालिद्दसुत्तसिक्कग-गवच्छिया सुक्किलसुत्तसिक्कग-गवच्छिया सव्ववेरुलियमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

वृत्तावपि (पत्र-२१३) असौ व्याख्यातोस्ति ।

प्रस्तुतागमे वृत्तिकारेण मलयगिरिणा उपलब्धा-दर्शेषु नैष पाठो दृष्टः, तेन न व्याख्यातः अथवा उत्तरवर्तिभिर्लिपिकारैः जीवाजीवा-भिगमादर्शमनुसृत्य अत्रापि प्रक्षिप्तः अथवा वाचना भेदस्यापि संभावनाकर्तुं शक्या ।

१. 'निम्मलाते छायाते (क, ख, ग, घ);

× (च, छ) ।

२. सालिय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. रहचक्कवालसमाणा (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्तौ 'रथचक्रसमानानि' इति व्याख्यात-मस्ति । जीवाजीवाभिगमे (३।३२३) पि 'रहचक्कसमाणा' इति पाठोस्ति ।

४. तोणं (क, ख, ग, घ, च) ।

५. णाणामणिपंचवण्णस्स (क, ख, ग, घ, छ) ।

६. गोकलिजरं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सुपइट्टा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. णाणाविहभंडविरइया (क, ख, ग, घ, च, छ); मूलपाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतोस्ति । जीवाजीवाभिगमे (३।३२५) पि एतादृश एव पाठो दृश्यते ।

९. मणगुं (क, ख, ग, घ); मणिगुं (च, छ) ।

१०. वइरामया (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्तौ तथा जीवाजीवाभिगमस्य (३।३२६) आदर्शेषु वृत्तावपि (पत्र २१४) च रजतप-दमुपलभ्यते । प्रस्तुतागमस्यादर्शेषु 'वइर' इति पदं केनापि लिपिदोषादिकारणेन प्रविष्टम-भूत् ।

११. वइरामएसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. 'सिक्का (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. गवत्थिता (घ) ।

१५४. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो चित्ता रयणकरंडगा पण्णत्ता—से जहाणामए रण्णो चाउरंतच्चक्कवट्टिस्स चित्ते रयणकरंडए वेरुलियमणि^१-फालियपडल^२-पच्चोयडे साए पहाए ते पएसे सव्वतो समंता ओभासेति उज्जोवेति तावेति पभासेति^३, एवमेव तेवि चित्ता रयणकरंडगा साए पभाए ते पएसे सव्वओ समंता ओभासेति उज्जोवेति तावेति पभासेति^४ ।

१५५. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो हयकंठा गयकंठा नरकंठा किन्नरकंठा किपुरिसकंठा महोरगकंठा गंधव्वकंठा उसभकंठा सव्वरयणामया^५ अच्छा जाव पडिर्वा ॥

१५६. 'तेसि णं तोरणणं पुरओ'^६ दो दो पुप्फचंगेरीओ मल्लचंगेरीओ चुण्णचंगेरीओ गंधचंगेरीओ वत्थचंगेरीओ आभरणचंगेरीओ सिद्धत्थचंगेरीओ^७ लोमहत्थचंगेरीओ पण्णत्ताओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिर्वाओ ॥

१५७. 'तेसि णं तोरणणं'^८, पुरओ दो दो पुप्फपडलगाइं^९ *मल्लपडलगाइं चुण्ण-पडलगाइं गंधपडलगाइं वत्थपडलगाइं आभरणपडलगाइं सिद्धत्थपडलगाइं^{१०} लोमहत्थपडलगाइं पण्णत्ताइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं^{११} *सण्हाइं लण्हाइं घट्टाइं मट्टाइं णीरयाइं निम्मलाइं निप्पकाइं निक्ककंडच्छायाइं सप्पभाइं समरीइयाइं सउज्जोयाइं पासादीयाइं दरिसणिज्जाइं अभिर्वाइं^{१२} पडिर्वाइं ॥

१५८. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो सीहासणा पण्णत्ता । तेसि णं सीहासणाणं वण्णाओ जाव^{१३} दामा ॥

१५९. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो रूपमया^{१४} छत्ता पण्णत्ता । ते णं छत्ता वेरुलियविमलदंडा^{१५} जंबूणयकण्णिया वइरसंधी मुत्ताजालपरिगया अट्टसहस्सवरकंचण-सलागा दहरमलयमुगंधि-सव्वोउयसुरभिसीयलच्छाया मंगलभत्तिचित्ता चंदागारोवमा ॥

१६०. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो चामराओ पण्णत्ताओ । ताओ णं चामराओ 'चंदप्पभ-वेरुलिय-वइर-नानामणिरयणखचियचित्तदंडाओ'^{१६} 'सुहुमरययदीहवालाओ संखंक-कुंद - दगरय - अमयमहियफेणपुंसन्निगासातो'^{१७} सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिर्वाओ ॥

१. वेरुलिया^१ (क, ख, ग, घ, च) ।

२. फलिह^२ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. पगासति (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. पगासेति (क, ख, ग, घ) ।

५. 'वइरामया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. तेसु णं हयकंठाएसु जाव उसभकंठाएसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सिद्धत्था^७ (ख, ग, च, छ) ; सिद्धत्थम^७ (वृ) ।

८. तासु णं पुप्फचंगेरीसु जाव लोमहत्थचंगेरीसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. सं० पा०—पुप्फपडलगाइं जाव लोमहत्थपडलगाइं ।

१०. सं० पा०—अच्छाइं जाव पडिर्वाइं ।

११. राय० सू० ३७-४० ।

१२. रूपच्छदा (जीवा० ३१३३२) ।

१३. तिविट्ठदंडा (क, ख, ग) ; निविट्ठदंडा (घ) ।

१४. णाणामणिकणमरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्ज-लविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१५. संखंक-कुंद - दगरय-अमयमहियफेणपुंसन्निगा-साओ सुहुमरययदीहवालाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१६१. तेसि णं तोरणणं पुरओ दो दो तेल्लसमुग्गा कोट्टसमुग्गा पत्तसमुग्गा^१ चोयग-समुग्गा तगरसमुग्गा एलासमुग्गा हरियालसमुग्गा हिगुलयसमुग्गा^२ मणोसिलासमुग्गा अंजणसमुग्गा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिंरुवा ॥

० दार-पदं

१६२. सूरियाभे णं विमाणे एगमेगे दारे^३ अट्टसयं चक्कज्झयाणं, एवं^४ मिगज्झयाणं^५ गरुडज्झयाणं^६ रुच्छज्झयाणं^७ छत्तज्झयाणं पिच्छज्झयाणं सउणिज्झयाणं सीहज्झयाणं, उसभज्झयाणं, अट्टसयं सेयाणं चउ-विसाणाणं नागवरकेऊणं ॥

१६३. एवामेव सपुव्वावारेणं सूरियाभे विमाणे एगमेगे दारे 'असीयं असीयं'^८ केउ-सहस्सं भवति इति मक्खायं ॥

१६४. 'तेसि णं दाराणं एगमेगे दारे'^९ पण्णाट्टि-पण्णाट्टि भोमा पण्णत्ता । तेसि णं भोमाणं भूमिभागा उल्लोया य भाणियव्वा^{१०} [तेसि णं भोमाणं बहुमज्झदेसभाए जाणि तेत्तीसभाणि भोमाणि^{११}] । तेसि णं भोमाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं पत्तेयं सीहासणे [पण्णत्ते ?] सीहासणवण्णओ^{१२} सपरिवारो । अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं-पत्तेयं 'सीहासणे पण्णत्ते'^{१३} ॥

१६५. तेसि णं दाराणं उत्तरागारा^{१४} सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया, तं जहा—रयणेहिं^{१५} *वइरेहिं वेरुलिएहिं लोहियक्खेहिं मसारगल्लेहिं हंसगब्भेहिं पुलगेहिं सोगंधिएहिं जोईरसेहिं अंजणेहिं अंजणपुलगेहिं रयएहिं जायरुवेहिं अंकेहिं फलिहेहिं^{१६} रिट्ठेहिं ॥

१६६. तेसि णं दाराणं उप्पिं अट्टट्ट मंगलगा^{१७} *पण्णत्ता^{१८} ।

१. × (क, ख, ग, घ) ।

२. हिगुरूपं (क); हिगुलुयं (ख, ग, घ) ।

३. वारे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. अट्टसयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. मिगि (च) ।

६. जंग० (च, छ) ।

७. पण्डितवेचरदासजीसंपादितवृत्तौ (पृ० १८०)

'रुद्ध' इतिपदं मुद्रितमस्ति, किन्तु नास्यात्रसङ्ग-तिर्दृश्यते । प्रस्तुतसूत्रस्य हस्तलिखितवृत्तौ 'ऋच्छ' इति पदमस्ति । 'घ' संकेतितादर्शेपि 'ऋच्छ' इतिपदं लभ्यते । जीवाजीवाभिगम-सूत्रस्य (३।३२५) हस्तलिखितवृत्तावपि 'ऋच्छ' इतिपदं निर्दिष्टमस्ति । शेषप्रयुक्ता-दर्शेषु एतत् पदं अस्य स्थाने वा अन्यत् पदमनु-पलब्धमस्ति ।

८. आसीयं (क, ख, ग, घ); असीयं (घ, छ) ।

९. सूरियाभे विमाणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. राय० सू० २४-३१, ३४ ।

११. कोष्ठकवर्तिपाठः आदर्शेषु नोपलभ्यते, वृत्ता-वस्ति व्याख्यातः—बहुमध्यदेशभागे यानि त्रयस्त्रिंशत्तमानि भौमानि । जीवाजीवाभिगमे (३।३३६) एतत् संवादी पाठो विद्यते ।

१२. राय० सू० ३७-४४ ।

१३. भद्रासणा पण्णत्ता (क, ख, ग, घ, च, छ); शेषेषु च भौमेषु प्रत्येकमेकं सिंहासतं परिवारहितम् (वृ) ।

१४. उत्तिमां (क, ख, ग, घ, च, छ); उवरिमां (वृपा) ।

१५. सं० पा०—रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं ।

१६. सं० पा०—मंगलगा सज्जया जाव छत्ताति-छत्ता ।

१७. राय० सू० २१ ।

१६७. तेसि णं दाराणं उप्पिं वह्वे किण्हचामरज्झया^१ ॥

१६८. तेसि णं दाराणं उप्पिं वह्वे^२ छत्तातिछत्ता^३ ॥

१६९. 'एवामेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे चत्तारि दारसहस्सा भवन्तीति मक्खाय'^४ ॥

० वणसंड-पदं

१७०- सूरियाभस्स विमाणस्स चउहिसिं पंच जोयणसयाइं अवाहाए^५ चत्तारि वण-संडा पणत्ता, तं जहा—'असोगवणे, सत्तावणवणे चंपगवणे, चूयवणे'^६ पुरत्थिमेणं^७ असोगवणे, दाहिणेणं सत्तवणवणे, पच्चत्थिमेणं चंपगवणे, उत्तरेणं चूयवणे । ते णं वणसंडा साइरेगाइं अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं^८ आयामेणं, पंच जोयणसयाइं विक्खभेणं, 'पत्तेयं पत्तेयं'^९ पागारपरिखित्ता 'किण्हा किण्होभासो'^{१०} *नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिक्वा तिक्वोभासा किण्हा किण्हच्छाया नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया तिक्वा तिक्वच्छाया घणकडिय-कडच्छाया^{११} रम्मा महामेहणिकुरंवभूया^{१२} वणसंडवणओ^{१३} ।

० वणसंड-भूमिभाग-पदं

१७१. तेसि णं वणसंडाणं अंतो बहुसमरणिज्जा भूमिभागा पणत्ता—से जहानामए आलिगपुक्खरेति वा जाव^{१४} णाणाविह^{१५} पंचवण्णेहिं 'मणीहि य'^{१६} तणेहि य उवसोभिया^{१७} ।

१७२. तेसि णं गंधो फासो णायव्वो^{१८} जहक्कमं ॥

१७३. तेसि णं भंते ! तणाण य मणीण य पुव्वावरदाहिणुत्तरागतेहिं वातेहिं

१. राय० सू० २२ ।

२. राय० सू० २३ ।

३. × (वृ)? एवामेव...मक्खायं (वृपा) ।

४. आवाहाते (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. पुव्वेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. जोयणसहस्साइं (च, छ) ।

८. पत्तेयं (क, ख, ग, घ, च) ।

९. किण्हा किण्होभासा जाव पडिमोयणा सुरम्मा

(वृ); अत्र वृत्तिकृतान्येपि केचिच्छब्दा व्याख्याताः । सं० पा०—किण्होभासा ते णं पायवा मूलमंतो ।

१०. वृत्तौ यावत्पदसूचितः पाठो व्याख्यातोस्ति ।

तत्र 'घणकडितडियच्छाया' इति पाठस्य व्याख्या उपलभ्यते—'घनकडितडियच्छाया,

इति इह शरीरस्य मध्यभागे कटिस्ततोऽन्य-
स्यापि मध्यभागः कटिरिव कटिरित्युच्यते,
कटिस्तदमिव कटितटं घना—अन्योऽन्यशाखा-
प्रशाखानुप्रवेशतो निविडा कटितटे-मध्यभागे
छाया येषां ते तथा—मध्यभागे निविड-
तरच्छाया इत्यर्थः । अस्माभिः यावत्पदसूचितः
पाठः औपपातिकदवतारितः तेन तदनुसारी एव
पाठः स्वीकृतः । द्रष्टव्यं औपपातिक (सू० ४)
सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

११. ओ० सू० ५-७ ।

१२. राय० सू० २४ ।

१३. णाणामणि (क) ।

१४. × (क, च, छ) ।

१५. राय० सू० २४-२६ ।

१६. राय० सू० ३०, ३१ ।

‘मंदायं-मंदायं’ एइयाणं वेइयाणं ‘कंपियाणं चालियाणं फंदियाणं’ घट्टियाणं खोभियाण उदीरियाणं केरिए सहे भवइ ? गोयमा ! से जहानामए सीयाए वा संदभाणीए वा रहस्स वा सच्छत्तस्स सज्जयस्स सघटस्स सपडागस्स सत्तोरणवरस्स सनंदिघोसस्स सखिखणिहेमजालपरिखित्तस्स हेमवय-चित्तविचित्त^१-तिणिस-कणगणिज्जुत्तदास्यायस्स^२ सुसंपिणद्वारकमंडलधुरागस्स^३ कालायससुकयणेमिजंतकम्मस्स आइण्णवरतुरगसुसंपउत्तस्स कुसलणरच्छेयसारहि-सुसंपरिग्गहियस्स^४ सरसय-वत्तीस-तोण-परिमंडियस्स सककडावयंस-गस्स^५ सचाव-सर-पहरण-आवरण-भरियजोहज्जुत्त-सज्जस्स रायंगणंसि वा रायंतेउरंसि वा, रम्मंसि वा मणिकोट्टिमत्तलंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं अभिघट्टिज्जमाणस्स उराला^६ मणुण्णा मणोहरा^७ कण्णमणनिव्वुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिणित्तसंवति, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे । से जहाणामए वेयालियवीणाए उत्तरमंदा-मुच्छियाए^८ अंके^९ सुपइट्टियाए कुसलभरनारिसुसंपग्गहियाते चंदण-सार-निम्मिय-कोण-परिघट्टियाए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयम्मि मंदायं-मंदायं एइयाए वेइयाए [कंपियाए^{१०}] चालियाए [फंदियाए^{११}] घट्टियाए खोभियाए उदीरियाए ओराला मणुण्णा मणहरा कण्णमण-निव्वुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिणित्तसंवति, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे । से जहानामए किन्नराण वा किंपुरिसाण वा महोरगाण वा गंधव्वाण वा भद्दसालवण-गयाण वा नंदणवणगयाणं वा ‘सोमणसवणगयाणं वा’^{१२} पडगवणगयाणं वा हिमवंत-मलय-मंदरगिरि^{१३}-गुहासमन्नागयाणं वा एगओ^{१४} सहियाणं^{१५} सन्निसन्नाणं समुव्विट्ठाणं^{१६} पमुइय-पक्कीलियाणं गीयरइ-गंधव्वहरिसियमणाणं^{१७} गज्जं पज्जं कत्थं^{१८} गेयं पयवद्धं पायवद्धं

१. मंदायं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. चालियाणं (क, ख, ग, घ, च); चालियाणं स्पन्दियाणं (छ) ।

३. छ प्रतौ ‘विचित्त’ इति पाठोऽस्ति, अन्यासु च प्रतिषु ‘चित्त’ इति पाठः, किन्तु वृत्तौ जीवा-जीवाभिगमे (३।२८५) तद्वृत्तौ (पत्र १६२) च—चित्तविचित्तं—मतोहारिचित्तोपेतम् इति व्याख्यातमस्ति ।

४. ‘णिज्जत्त’ (क, ख, ग, घ, च) ।

५. ‘द्धाचक्क’ (क, ख, ग, घ, च) ।

६. ससंपग्गं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. कंकडां (क, ख, ग, घ, च) ।

८. भरियज्ज (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. नियट्टिज्जमाणस्स उराला (छ) ।

१०. × (वृ) ।

११. समुच्छियाए (च, छ) ।

१२. अंक (क, च, छ); अंके (ख, ग, घ) ।

१३, १४. अस्मिन्नेव सूत्रे पूर्वं ‘कंपियाणं चालियाणं

फंदियाणं’ इति पाठः, तद्वत् अत्र ‘कंपियाए—फंदियाए’ इति पाठो न लभ्यते । जीवाजीवाभि-गमे (३।२८५) एष पाठ उपलब्धोऽस्ति ।

१५. × (क, ख, ग, घ, च) ।

१६. कंदरं (क, ख, ग, घ); मंदिरं (छ) ।

१७. एकयओ (क, ख, ग, घ) ।

१८. संगहियाणं (च, छ) ।

१९. सहिताणं समुहागयाणं समुपविट्ठाणं संनिवि-ट्ठाणं (जीवा० ३।२८५) ।

२०. अत्रादर्शेषु ‘गंधव्वरइहसियमणाणं’ इति पाठो लभ्यते । वृत्तौ नास्त्यसौ व्याख्यातः । पंडित बेचरदाससम्पादिते प्रस्तुतसूत्रे ‘गंधव्वहसियम-णाणं’ इति पाठो दृश्यते । किन्तु अर्थं विचार-णया नैषोपि सम्यक् प्रतिभाति । जीवाजीवाभि-गमस्य (३।२८५) सन्दर्भे असौ पाठः स्वी-कृतोऽस्ति ।

२१. गच्छं (क, ख, ग, घ, च) ।

‘उक्खित्तायं पयत्तायं’ मंदायं रोइयावसाणं सत्तसरसमन्नागयं अट्टरसमुसंपउत्तं छट्ठोस-
विप्पमुक्कं एक्कारसालंकारं अट्टगुणोक्केयं, गुंजावंककुहरोक्कं रत्तं तिट्ठाणकरणसुद्धं
*सकुहरगुंजंतवंस-तंती-तल-ताल-लय-गहमुसंपउत्तं महुरं समं सललियं मणोहरं मउरिभिय-
पयसंचारं सुरइं सुणत्ति वरचारुक्कं दिव्वं णट्टसज्जं गेयं पगीयाणं भवेयारुक्के सिया ?
हंता सिया ॥

० वणसंड-जलासय-पदं

१७४. तेसि णं वणसंडाणं तत्थ तत्थ ‘देसे तहिं तहिं’^१ बहूओ खुड्डा-खुड्डियाओ वावीओ
पुक्खरिणीओ दीहियाओ गुंजालियाओ सरसीओ^२ सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ विल-
पंतियाओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ^३ समतीराओ वयरामयपासाणाओ
तवणिज्जतलाओ सुवण्ण-सुज्झं^४-रयय-वालुयाओ वेरुलिय-मणि-फालिय-पडल-पच्चोयडाओ
सुओयार^५-सुउत्ताराओ णाणामणि-तित्थं^६-सुबद्धाओ चाउक्कोणाओ आणुपुव्वसुजायवप्प-
गंभीरसीयलजलाओ^७ संछन्नपत्तभिस-मुणालाओ बहुउप्पल-कुमुय-नलिण-सुभग-सोगंधिय-
पोंडरीय-सयवत्त-सहस्सपत्त-केसरफुल्लोवचियाओ छप्पयपरिभुज्जमाणकमलाओ अच्छ-
विमलसलिलपुण्णाओ ‘पडिहत्थभमंतमच्छकच्छभ-अणेगसउणमिहुणगपविचरिताओ पत्तेयं-
पत्तेयं पउमवरवेदियापरिक्खित्ताओ पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ’^८ अप्पेगइयाओ
आसवोयगाओ अप्पेगइयाओ वारुणोयगाओ^९ अप्पेगइयाओ खीरोयगाओ अप्पेगइयाओ
घओयगाओ अप्पेगइयाओ खोदोयगाओ^{१०} अप्पेगत्तियाओ पगईए^{११} उयगरसेणं पण्णत्ताओ
पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥

१७५. तासि णं खुड्डाखुड्डियाणं वावीणं^{१२} *पुक्खरिणीणं दीहियाणं गुंजालियाणं
सरसीणं सरपंतियाणं सरसरपंतियाणं^{१३} विलपंतियाणं पत्तेयं-पत्तेयं चउट्टिसि चत्तारि

१. ओक्खित्तायं पयत्तायं (च, छ); उक्खित्तायं पयत्तायं (जीवा० ३।२८५) ।
२. × (क, ख, च, छ); जीवाजीवाभिगमे (३।२८५) प्यसावस्ति ।
३. गुंजावक्कं (क, ख, ग, घ, च, छ) । गुंजा + अवंकं...गुंजावंकं ।
४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
५. सं० पा०—तिट्ठाणकरणसुद्धं पगीयाणं ।
६. तहिं तहिं देसे देसे (क, छ); तहिं देसे देसे (ख, ग, घ, च) । जीवाजीवाभिगमे (३।२८६) पि ‘देसे तहिं तहिं’ इत्येव दृश्यते ।
७. × (क, ख, ग, घ, च, छ); वृत्त्याधारेण स्वीकृतोसौ पाठः । जीवाजीवाभिगमे (३।२८६) पि दृश्यते, तद्वृत्तावपि चास्ति व्याख्यातः ।

८. कूडाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
९. सज्झं (क, ख, ग, घ, च); सुब्भं (जीवा० ३।२८६) ।
१०. सुहोयार (जीवा० ३।२८६) ।
११. × (क, ख, ग, घ, च) ।
१२. अणुं (क, ख, ग, घ, च) ।
१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवाभिगमे (३।२८६) प्यसावस्ति ।
१४. × (क, ख, ग, घ, च) ।
१५. खोयगातो (घ) । अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।२८६) एतत् अतिरिक्तं विशेषणं लभ्यते—अप्पेगत्तियाओ अमयरससमरसोदाओ ।
१६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१७. सं० पा०—वावीणं जाव विलपंतियाणं ।

तिसोमाणपडिरूवगा पण्णत्ता । तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं 'अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया नेमा रिट्टामया पतिट्टाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवण्णरूपमया फलगा, लोहितक्खमइयाओ सूइओ, वयरामया संधी, णाणामणिमया अबलंबणा अबलंबण-वाहाओ य पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा" ॥

१७६. *तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं तोरणं पण्णत्तं" ॥

१७७. तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं उप्पि अट्टमंगलगा पण्णत्ता" ॥

१७८. तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं उप्पि बह्वे किण्हचामरज्झया" ॥

१७९. तेसि णं तिसोमाणपडिरूवगाणं उप्पि बह्वे छत्तातिछत्ता" ॥

१८०. 'तासि णं खुड्डाखुड्डियाणं वावीणं *पुक्खरिणीणं दीहियाणं गुंजालियाणं सरसीणं सरपंतियाणं सरसरपंतियाणं° बिलपंतियाणं" तत्थ तत्थ 'देसे तहि तहि" बह्वे उप्पायपव्वयगा नियइपव्वयगा" जगईपव्वयगा" दारुइज्जपव्वयगा दगमंडवा दगमंचगा" दगमालगा दगपासायगा" उसड्डा" खुड्डुखुड्डुगा अंदोलगा पक्खंदोलगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१८१. तेसु" णं उप्पायपव्वएसु" *नियइपव्वएसु जगईपव्वएसु दारुइज्जपव्वएसु दगमंडएसु दगमंचएसु दगमालएसु दगपासायएसु उसड्डएसु खुड्डुखुड्डुएसु अंदोलएसु° पक्खंदोलएसु बहूइं हंसासणाइं कौंचासणाइं गरुलासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं 'भट्टासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं" सीहासणाइं" पउमासणाइं दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं ॥

० वणसंड-घरग-पदं

१८२. तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ 'देसे तहि तहि" बह्वे आलिघरगा मालिघरगा कयलिघरगा लयाघरगा अच्छणघरगा पिच्छणघरगा मज्जणघरगा" पसाधणघरगा गब्भ-

- | | |
|---|---|
| १. वण्णो (क, ख, ग, घ, च); वण्णतो (छ) । | ११. जई° (क, ख, ग) । |
| २. सं० पा०—तोरणाणं भया छत्ताइछत्ता य णेयव्वा । | १२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ३. राय० सू० २० । | १३. °पव्वयमा (क, ख, ग, घ, च) । |
| ४. राय० सू० २१ । | १४. उसरदगा (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ५. राय० सू० २२ । | १५. तेसि (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ६. राय० सू० २३ । | १६. सं० पा०—उप्पायपव्वएसु पक्खंदोलएसु । |
| ७. सं० पा०—वावीणं जाव बिलपंतियाणं । | १७. पक्खासणाइं मगरासणाइं भट्टासणाइं (क, ख, ग, घ, छ) । |
| ८. तामु (तासि) णं खुड्डावावीसु जाव बिलपंतियासु (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १८. उसभासणाइं सीहासणाइं (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ९. तहि तहि देसे देसे (क, ख, ग, घ); तेहि तेहि देसे देसे (च, छ) । | १९. तहि तहि देसे देसे (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| १०. नियय° (क, ख, ग, घ, च, छ, वृपा) । | २०. × (क, ख, ग, घ, च) । |

घरगा मोहणघरगा^१ सालघरगा जालघरगा 'कुसुमघरगा चित्तघरगा'^२ गंधव्वघरगा आयंस-
घरगा^३ सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१८३. तेसु णं आलिघरगेसु^४ *मालिघरगेसु कयलिघरगेसु लयाघरगेसु अच्छणघरगेसु
पिच्छणघरगेसु मज्जणघरगेसु पसाधणघरगेसु गब्भघरगेसु मोहणघरगेसु सालघरगेसु
जालघरगेसु कुसुमघरगेसु चित्तघरगेसु गंधव्वघरगेसु^५ आयंसघरगेसु तहिं तहिं घरएसु
वहूइं हंसासणाइं^६ *कोचासणाइं गरूलासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं
भद्दासणाइं पक्खासणाइं मगरासणाइं सीहासणाइं पउमासणाइं^७ दिसासोवत्थियासणाइं
सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं ॥

० वणसंड-मंडवग-पदं

१८४. तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ देसे^८ तहिं तहिं वहूवे जाइमंडवगा^९ जूहियामंडवगा
'मल्लियामंडवगा णोमालियामंडवगा'^{१०} वासंतिमंडवगा^{११} 'दहियासुयमंडवगा सूरिल्लि-
मंडवगा'^{१२} तंबोलिमंडवगा मुहियामंडवगा णागलयामंडवगा अतिमुत्तलयामंडवगा अप्फोया-
मंडवगा^{१३} मालुयामंडवगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१८५. तेसु णं जाइमंडवएसु^{१४} *जूहियामंडवएसु मल्लियामंडवएसु णोमालियामंडवएसु
वासंतिमंडवएसु दहियासुयमंडवएसु सूरिल्लिमंडवएसु तंबोलिमंडवएसु मुहियामंडवएसु
णागलयामंडवएसु अतिमुत्तलयामंडवएसु अप्फोयामंडवएसु^{१५} मालुयामंडवएसु वहूवे
पुढविसिलापट्टगा अप्पेगतिया हंसासणसंठिया जाव अप्पेगतिया दिसासोवत्थियासण-
संठिया अण्णे य वहूवे वरसयणासणविसिट्टसंठाणसंठिया^{१६} पुढविसिलापट्टगा पणत्ता
समणाउसो! आईणग-रूय-बूर^{१७}-णवणीय-तूल-फासा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ।
तत्थ^{१८} णं वहूवे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्ठंति
हसंति^{१९} रमंति ललंति कीलंति कित्तंति^{२०} मोहेंति पुरा पोरणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं
सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलविवारं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति^{२१} ॥

१. मोहं (क, ख, ग, घ) ।

२. चित्तघरगा कुसुमघरगा (क, ख, ग, घ,
च, छ) ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—आलिघरगेसु जाव आयंसघरगेसु ।

५. सं० पा०—हंसासणाइं जाव दिसासोवत्थियास-
णाइं ।

६. देसे देसे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. जातिमंडवसंठाणगा (क, ख, ग, घ, छ) ।

८. णेमालिया^{१०} मल्लिया^{११} (घ); नोमालिया^{१२}
मल्लियं^{१३} (छ) ।

९. वासंतियं (क, ख, ग, घ) ।

१०. सुरिल्लिमंडवगा दहियासुयमंडवगा (क, ख,
ग, घ) ।

११. अणया^{१२} (क, ख, ग, घ) ।

१२. सं० पा०—जाइमंडवएसु जाव मालुयामंडव-
एसु ।

१३. संसलसुघट्टविसिट्टं (क, ख, ग, घ, च, छ,
वृषा) ।

१४. पुर (क, ख, ग, घ) ।

१५. अत्थि (क, ख, ग, घ, च) ।

१६. × (वृ) ।

१७. × (वृ) ।

१८. चिट्ठंति विहरंति (च, छ) ।

० वणसंड-पासायवडेंसग-पदं

१८६. तेसि णं वणसंडाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं पासायवडेंसगा पण्णत्ता । ते णं पासायवडेंसगा पंच जोयणसयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय-पहसिया इव^१ तहेव^२ बहुसमरमणिज्जभूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं^३ । तत्थं णं चत्तारि देवा महिड्ढिया^४ *महज्जुइया महावला महायसा महासोक्खा महाणुभागा^५ पलिओवमट्ठितीया परिवसंति, तं जहा—असोए^६ सत्तपण्णे चंपए चूए^७ ॥

० भूमिभाग-पदं

१८७. सूरियाभस्स णं देवविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते^८ जाव^९ तत्थ णं बहुवे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति^{१०} *सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्ठंति, हंसंति रमंति ललंति कीलंति कित्तंति मोहंति पुरा पोरणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं कल्लाणं फलविवागं पच्चणुब्भवमाणा^{११} विहरंति ॥

० उवगारिया-लयण-पदं

१८८. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसे, एत्थ णं महेगे उवगारिया^{१२}-लयणे पण्णत्ते—एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसय-सहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिन्नि य कोसे अट्टावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अट्ठंगुलं च किंचिविसेसूणं परिवखेवेणं, जोयणं वाहल्लेणं, सव्व-जंजूणयामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

० पउमवरवेइया-पदं

१८९. से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेण सव्वओ समंता संपरिखित्ते । सा णं पउमवरवेइया अड्ढजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं, उवकारिय-लेणसमा परिवखेवेणं ॥

१९०. तीसे णं पउमवरवेइयाए इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामया^{१३}

१. राय० सू० १३७ ।

२. राय० सू० २४-३४ ।

३. राय० सू० ३७-४४ ।

४. सं० पा०—महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठितीया ।

५. आसोए (क, ख, ग, घ, च) ।

६. वृत्तौ अतोप्रे अधिकं विवृतमस्ति—ते णं इत्यादि, ते अण्णोकादयो देवाः स्वकीयस्य वनखण्डस्य स्वकीयस्य प्रासादावतंसकस्य, सूत्रे बहुवचनं प्राकृतत्वात् प्राकृते वचनव्यत्य-योऽपि भवतीति, स्वकीयानां सामानिकदेवानां स्वासां स्वासामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वासां स्वासां परिषदां स्वेषां स्वेषामनीकानां स्वेषां स्वेषामनीकाधिपतीनां स्वेषां स्वेषामात्म-

रक्षाणां 'आहेवच्चं पोरेवच्चं' इत्यादि प्राग्वत् ।

'प्राग्वद्' इति वृत्तिकारस्य सूचनया ज्ञायते वृत्तिकारस्य सम्मुखे भिन्नवाचनायाः मूलपाठः आसीत् ।

७. पण्णत्ते, तं जहा—वणसंडविहूणे (क, ख, ग, घ, च, छ) । यद्यप्यसौ पाठः सर्वासु प्रतिषु लभ्यते तथापि नावश्यकः प्रतिभाति । वृत्तावपि नास्ति गृहीतोसौ ।

८. राय० सू० २४-३१ ।

९. सं० पा०—आसयंति जाव विहरंति ।

१०. उवगारिय (घ); उवाइय (छ) ।

११. सं० पा०—वइरामया भुवण्णरूपामया फलगा नाणामणिमया ।

*नेमा रिट्टामया पइट्टाणा वेरुलियामया खंभा सुवण्णरूपामया फलगा लोहितक्खमईयो सूईओ वइरामया संधी° नाणामणिमया कलेवरा णाणामणिमया कलेवरसंघाडगा णाणामणिमया रूवा णाणामणिमया रूवसंघाडगा अंकामया' *पक्खा पक्खावाहाओ, जोईरसमया वंसा वंसकवेल्लुयाओ रययामईओ पट्टियाओ जायरूवमईओ ओहाडणीओ, वइरामईओ° उवरि-पुंछणीओ 'सव्वसेयरययामए छायणे'^१ ॥

१६१. सा णं पउमवरवेइया एगमेगेणं हेमजालेणं एगमेगेणं गवक्खजालेणं एगमेगेणं खिंखिणीजालेणं एगमेगेणं 'घंटाजालेणं एगमेगेणं मुत्ताजालेणं'^२ एगमेगेणं मणिजालेणं एगमेगेणं कणगजालेणं एगमेगेणं रयणजालेणं^३ एगमेगेणं पउमजालेणं^४ सव्वतो समंता संपरिखित्ता' । ते णं जाला° तवणिज्जलंबूसगा जाव° उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

१६२. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे^५ तहिं तहिं वहवे हयसंघाडा° *गयसंघाडा नरसंघाडा किन्नरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा° उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा'' ॥

१६३. *तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं वहवे हयपंतीओ°^६ ॥

१६४. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं वहवे हयवीहीओ°^७ ॥

१६५. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं बहईं हयमिहुण्णाईं°^८ ॥

१६६. तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं वहवे पउमलयाओ°^९ ॥

१६७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पउमवरवेइया पउमवरवेइया ? गोयमा ! पउमवरवेइयाए णं तत्थ तत्थ देसे^५ तहिं तहिं वेइयासु वेइयावाहासु य वेइयफलएसु^{१०} य वेइयपुडंतरेसु य, खंभेएसु खंभवाहासु खंभसीसेसु^{११} खंभपुडंतरेसु, सूईसु सूईमुखेसु सूईफलएसु

१. सं० पा०—अंकामया...उवरिपुंछणीओ ।

२. सव्वरयणामए अच्छायणे (ख, ग, घ, च, छ); जीवाजीवाभिगमवृत्ती (३।२६४, वृत्ति पत्र १८०)'सव्वसेयरययामए छायणे' इति पाठो व्याख्यातोस्ति । रायपसेणीयवृत्ती 'सव्वरयणामए' इति पाठो लिपिदोषाज्जातः । वृत्तिकृता 'एतत् सर्वं द्वारवत् भावनीयं' इत्युल्लिखितम् । तत्रापि च 'सव्वसेयरययामए' इति पाठोस्ति (राय० सू० १३०), वृत्तावपि (पु० १६०) 'रजतमयं' इति व्याख्यातमस्ति ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. रयणजालेणं सव्वरयणजालेणं (क, ख, ग, घ, च); सव्वरयणजालेणं (छ) ।

५. × (छ) ।

६. परिक्षिप्ताः (वृ) ।

७. दामा (क, ख, ग, घ, च, वृपा) ।

८. राय० सू० ४० ।

९. देसे देसे (क, ख, ग, घ, छ) ।

१०. सं० पा०—हयसंघाडा जाव उसभसंघाडा ।

११. सं० पा०—पडिरूवा जाव पंतीतो वीहीतो मिहुणाणि लयाओ ।

१२, १३, १४. राय सू० १६२ ।

१५. राय० सू० १४५ ।

१६. देसे देसे (क, ख, ग, घ, छ) ।

१७. × (वृत्ति, जी० ३।२६६) ।

१८. °फलतेसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

सूर्इपुडंतरेसु, पक्खेसु पक्खवाहासु 'पक्खपेरंतेसु पक्खपुडंतरेसु' बहुयाइं उप्पलाइं^१ पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं पौडरीयाइं महापौडरीयाइं सयवत्ताइं सहस्सवत्ताइं सव्वरयणाभयाइं अच्छाइं^२ पडिरूवाइं महया वासिक्कलत्तसमाणाइं^३ पण्णत्ताइं समणाउसो ! से एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पउमवरवेइया पउमवरवेइया ॥

१६८. पउमवरवेइया णं भंते ! किं सासया असासया ? गोयमा ! सिय सासया सिय असासया ॥

१६९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय सासया सिय असासया ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, वण्णपज्जेवेहिं गंधपज्जेवेहिं रसपज्जेवेहिं फासपज्जेवेहिं असासया ! से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय सासया सिय असासया ॥

२००. पउमवरवेइया णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! ण कयाति णासि, ण कयाति णत्थि, ण कयाति न भविस्सइ, भुविं 'च भवइ य' भविस्सइ य, धुवा णियया सासया अक्खया अब्बया अवट्ठिया णिच्चा पउमवरवेइया ॥

२०१. सा णं पउमवरवेइया एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता । से णं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविकखंभेणं, उवयारिया^४-लेणसमे परिकखेवेणं । वणसंडवण्णओ भाणियव्वो जाव^५ विहरंति ॥

० उवयारिया-लयण-पदं

२०२. तस्स णं उवयारिया^४-लेणस्स चउट्ठिसि चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता वण्णओ तोरणा^६ ज्ञया छत्ताइच्छत्ता^७ ॥

० भूमिभाग-पदं

२०३. तस्स णं उवयारिया-लयणस्स उव्वरि बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव^५ मणीणं फासो ॥

० मूलपासायवडैसण-पदं

२०४. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महेगे मूलपासायवडैसए पण्णत्ते । से णं मूलपासायवडैसते^८ पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विकखंभेणं अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ^९ भूमिभागो उल्लोओ^{१०} सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं^{११} अट्ठट्ट मंगलगा ज्ञया छत्ताइच्छत्ता ॥

- | | |
|--|--|
| १. × (वृत्ति); जीवाजीवाभिगमे (३।२६६) | ८. राय० सू० १७०-१८५ । |
| १. 'पक्खपेरंतेसु' इत्येकमेव पदमस्ति । | १०. अतः परं 'अट्ठट्टमंगलगा इति पदं गम्यमस्ति । |
| २. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । | ११. राय० सू० १६-२३ । |
| ३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १२. राय० सू० २४-३१ । |
| ४. राय० सू० १५७ । | १३. पासाय ^४ (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ५. वासिक्कय ^३ (क, ख, ग, घ, छ) । | १४. राय० सू० १३७ । |
| ६. भवइ (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १५. 'राय० सू० २४-३४ । |
| ७, ८. उवयारिया (क, ख, ग, घ, च) । | १६. राय० सू० ३७-४४ । |

० पासायवडेंसग-पदं

२०५. से णं मूलपासायवडेंसगे^१ अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाण-
मेत्तेहिं सव्वओ समंता संपरिखित्ते^२ । ते णं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं
उच्चत्तेणं पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय जाव वण्णओ^३ भूमिभागो
उल्लोओ^४ सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं^५ अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता^६ ॥

२०६. ते णं पासायवडेंसया अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं
सव्वओ समंता संपरिखित्ता । ते णं पासायवडेंसया पणवीसं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं,
वावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ भूमिभागो उल्लोओ
सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ॥

२०७. ते णं पासायवडेंसगा अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं
सव्वओ समंता संपरिखित्ता । ते णं पासायवडेंसगा वावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च
उड्ढं उच्चत्तेणं, एककीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं वण्णओ^७ उल्लोओ^८ सीहासणं
अपरिवारं^९ अट्ठट्ठ^{१०} मंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ॥

२०८. ते^{११} णं पासायवडेंसया अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसगेहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं
सव्वतो समंता संपरिखित्ता । ते णं पासायवडेंसगा एककीसं जोयणाइं कोसं च उड्ढं
उच्चत्तेणं, पन्नरसजोयणाइं अड्ढाइज्जे कोसे विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ भूमि-
भागो जाव^{१२} झया छत्तातिच्छत्ता ॥

० सुहम्म-सभा-पदं

२०९. तस्स णं मूलपासायवडेंसयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं सभा सुहम्मा पण्णत्ता—
एणं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, वावत्तरिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं,
अणेगखंभसयसन्निविट्ठा जाव^{१३} अच्छरगणसंघसंविक्किण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणाइया अच्छा
जाव पडिस्सवा ॥

१. पासाय^१ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. परिक्खित्तः (वृ) ।

३. राय० सू० १३७ ।

४. राय० सू० २४-३४ ।

५. राय० सू० ३७-४४ ।

६. राय० सू० २१-२३ ।

७. राय० सू० १३७ ।

८. राय० सू० २४-३४ ।

९. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. पासायउवरिं अट्ठट्ठ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. 'च, छ' प्रत्योरेतस्सूत्रं नैव दृश्यते । वृत्तौ

(पृ० २१३) अर्द्धतृतीयक्रोशाधिकपंचदश

योजनोर्ध्वानां प्रासादावतंसकानां सूत्रमस्ति

व्याख्यातम् । यथा—'ते पि प्रासादावतंसका

अन्यैश्चतुर्भिः प्रासादावतंसकैस्तदद्धोच्चत्व

प्रमाणैः अनन्तरोक्तप्रासादावतंसकाद्धोच्चत्व-

प्रमाणैर्मूलप्रासादावतंसकापेक्षया षोडशभाग-

प्रमाणैः सर्वतः समंतात् संपरिक्खित्ताः ;

तदद्धोच्चत्वप्रमाणमेव दर्शयति—एकत्रिंशत्

योजनानि क्रोशं च ऊर्ध्वमुच्चैस्त्वेन पंचदश-

योजनानि अर्द्धतृतीयांश्चैवक्रोशान् विष्क-

म्भतः । एतेषामपि स्वरूपादि वर्णनमनन्त-

रोक्तम् ।

१२. राय० सू० २०५ ।

१३. राय० सू० ३२ ।

० सुहम्म-सभा-दार-पदं

२१०. सभाए ण सुहम्माए तिदिसिं तओ दारा पणत्ता, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं । ते णं दारा^१ सोलस^२ जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं, अट्ट जोयणाइं विक्खभेणं, तावतियं चैव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा^३ जाव^४ वणमालाओ^५ ॥

० मुहमंडव-पदं

२११. तेसि णं दाराणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं मुहमंडवे पणत्ते । ते णं मुहमंडवा एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं "अणेगखंभसयसन्निविट्ठा जाव" अच्छरणसंघसंविक्किणा दिव्वतुडियसद्द-संपणाइया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० दार-पदं

२१२. तेसि णं मुहमंडवाणं तिदिसिं तओ दारा पणत्ता, तं जहा—पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं । ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं अट्ट जोयणाइं विक्खभेणं, तावतियं चैव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा जाव^६ वणमालाओ ॥

० भूमिभाग-उल्लोय-पदं

२१३. तेसि णं मुहमंडवाणं भूमिभागा उल्लोया^७ ॥

० मंगलग-पदं

२१४. तेसि णं मुहमंडवाणं उवरि अट्ट मंगलग्गा झया छत्ताइच्छत्ता^८ ॥

० पेच्छाघर-मुहमंडव-पदं

२१५. तेसि णं मुहमंडवाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं पेच्छाघरमंडवे पणत्ते । मुहमंडव-वत्तव्वया^९ जाव^{१०} दारा ॥

० भूमिभाग-उल्लोय-पदं

२१६. "तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं भूमिभागा उल्लोया^{११} ॥

० अक्खाडग-पदं

२१७. तेसि णं वहूसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं वहुमज्जदेसभाए पत्तेयं-पत्तेयं वहिरामए अक्खाडए पणत्ते ॥

० मणिपेडिया-पदं

२१८. तेसि णं वहिरामयाणं अक्खाडगाणं वहुमज्जदेसभागे पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेडिया

१. दारा साइरेगाइं (छ) ।

८. राय० सू० १२६-१३६ ।

२. सोलस सोलस (व) ।

९. राय० सू० २४-३४ ।

३. वरकमलं (छ) ।

१०. राय० सू० २१-२३ ।

४. राय० सू० १२६-१३६ ।

११. मुहमंडवा वण्णयव्वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. वणमालाओ तेसि णं दाराणं उवरि मंगलरूवा

१२. राय० सू० २११, २१२ ।

छत्ताइच्छत्ता (छ) ।

१३. सं० पा०—भूमिभागा उल्लोया ।

६. सं० पा०—वण्णओ सभाए सरिसो ।

१४. राय० सू० २४-३४ ।

७. राय० सू० ३२ ।

पण्णत्ता । ताओ णं मणिपेढियाओ अट्टु जोयणाइं आयामविकखंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाह्ल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

० सोहासण-पदं

२१६. तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं-पत्तेयं सीहासणे पण्णत्ते । सीहासणवण्णओ^१ सपरिवारो ॥

० मंगलग-पदं

२२०. तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं उवरिं अट्टु मंगलगग झया छत्तातिछत्ता^१ ॥

० मणिपेढिया-पदं

२२१. तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ । ताओ णं मणिपेढियाओ सोलस जोयणाइं आयामविकखंभेणं, अट्टु जोयणाइं बाह्ल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

० चेइयथूभ-पदं

२२२. तासि णं मणिपेढियाणं^१ उवरिं पत्तेयं-पत्तेयं चेइयथूभे^२ पण्णत्ते । ते णं चेइय-थूभा सोलस जोयणाइं आयामविकखंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सेया संखं^३-^४कुंद-दगरय-अमय-महिय-फेणपुंजसन्निगासा^५ सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० मंगलग-पदं

२२३. तेसि णं चेइयथूभाणं उवरिं अट्टु मंगलगग झया छत्तातिछत्ता जाव सहस्स-पत्तहत्थया ॥

० मणिपेढिया-पदं

२२४. तेसि णं चेइयथूभाणं 'पत्तेयं-पत्तेयं चउट्ठिसि'^६ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ । ताओ णं मणिपेढियाओ अट्टु जोयणाइं आयामविकखंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाह्ल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

० जिणपडिमा-पदं

२२५. तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमातो जिणुस्सेहपमाणमेत्ताओ पलियंकनिसन्नाओ^७ थूभाभिमुहीओ सन्निखित्ताओ चिट्ठति, तं जहा—उसभा बद्धमाणा चंदाणणा वारिसेणा ॥

० मणिपेढिया-पदं

२२६. तेसि णं चेइयथूभाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ । ताओ णं मणिपेढियाओ सोलस जोयणाइं आयामविकखंभेणं, अट्टु जोयणाइं बाह्ल्लेणं,

१. राय० सू० ३७-४४ ।

'चेइय' इति पदं युज्यते ।

२. राय० सू० २१-२३ ।

५. सं० पा०—संखं सव्वरयणामया ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. चउट्ठिसि पत्तेयं-पत्तेयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. थूभे (क, ख, ग, घ, च, छ) ; वृत्तेस्तथा

जीवाजीवाभिगमस्य (३।३८१) अनुसारेण ७. 'सन्निसण्णा (वृ) ।

सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिक्खाओ ॥

० चेइयरुक्ख-पदं

२२७. तासि णं मणिपेडियाणं उवरि पत्तेयं-पत्तेयं चेइयरुक्खे पण्णत्ते । ते णं चेइय-रुक्खा अट्ट जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं, अट्टजोयणं उव्वेहेणं, दो जोयणाइं खंधो, 'अट्टजोयणं विक्खंभेणं', छ जोयणाइं विडिमा, बहुमज्झदेसभाए अट्ट जोयणाइं आयामविक्खंभेणं', साइरेगाइं अट्ट जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता ॥

२२८. तेसि णं चेइयरुक्खाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वइरामयमूल-रययसुपइट्टियविडिमा' रिट्टामय-विउलकंद-वेरुलिय"-रुइलखंधा सुजायवरजायरुक्खपढमग-विसालसाला नाणामणिमयरयणविविहसाहृप्पसाह-वेरुलियपत्त-तवणिज्जपत्तबिटा जंबूणय-रत्त-मउय-सुकुमाल-पवाल-पल्लव-वरंकुरधरा" विचित्तमणिरयणसुरभि-कुसुम-फल-भर"-नमियसाला 'सच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया" अहियं नयणमणिव्वु-इकरा' अमयरससमरसफला' पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिक्खा" ॥

१. अट्टजोयणाइं (क, ख, ग, घ, च, छ); 'अट्टजोयणं विक्खंभेणं' एष वृत्त्यनुसारी पाठोस्ति । प्रत्यनुसारी पाठ इत्थमस्ति—'अट्ट जोयणाइं विक्खंभेणं' प्रतीनां 'अट्ट जोयणाइं' एष पाठः अशुद्धः प्रतीयते । जीवाजीवाभिगमे (३।३८६) 'अट्टजोयणं विक्खंभेणं' इत्येव पाठो दृश्यते ।
२. विक्कम्भेन (वृ) ।
३. 'सुविडिमा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. विउलाकंदा वेरुलिया (क, ख, ग, घ, च), वृत्तौ 'विउल' शब्दो न व्याख्यातः ।
५. सोभियावरंकुरगसिहरा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
६. भरभरिय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
८. मणनयणणिं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
९. 'फला सच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउ-ज्जोया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१०. २२८ सूत्रानन्तरं प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ एवं व्याख्यातमस्ति—एते च चैत्यवृक्षा अन्यैर्बहु-भिस्तिलकलवक - छत्रोपग- शिरीष-सप्तपर्ण - दधिपर्ण-लोघ्न-धव-चन्दन-नीप-कुटज-पनस-ताल-

तमाल- प्रियाल- प्रियङ्गु- पारापत - राजवृक्ष = नन्दिवृक्षः सर्वतः समन्तात् सम्परिक्षिप्ता, ते च तिलका यावन्तन्दिवृक्षा मूलमन्तः कन्द-मन्त इत्यादि सर्वमशोकपादपवर्णनायामिव तावद् वक्तव्यं यावत् परिपूर्णं लतावर्णनम् । प्रयुक्तादर्शेषु एतद्व्याख्यानुसारी पाठो नैव लभ्यते । किन्तु जीवाजीवाभिगस्य आदर्शेषु तादृशः पाठो लभ्यते स चैवमस्ति—तेणं चेइयरुक्खा अण्णेहि बहूहि तिलय-लवय-छत्रोपग-सिरीष-सत्तिवण्ण-दहिवण्ण-लोद्ध-धव-चंदण-(अज्जुण?) नीव-कुडय-कयंब - पणस - ताल-तमाल-पियाल-पियंगु - पारावय-रायरुक्ख-नंदिरुक्खेहि सव्वग्गे समंता संपरिक्खत्ता । ते णं तिलया जाव नंदिरुक्खा कुस-विकुस-विसुद्ध-रुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो जाव मुरम्मा । ते णं तिलया जाव नंदिरुक्खा अण्णाहि बहूहि पउमलयाहि जाव सामलयाहि सव्वतो समंता संपरिक्खत्ता । ताओ णं पउमलयाओ जाव सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ जाव पडिक्खाओ (जीवा० ३।३८८-३९०) । जीवाजीवाभिगमस्य वृत्तावपि एष व्याख्या-तोस्ति ।

० मंगलग-पदं

२२९. तेसि णं चेइयरुक्खाणं उवरि अट्टु मंगलगा झया छत्ताइछत्ता ॥

० मणिपेढिया-पदं

२३०. तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरओ पत्तेयं-पत्तेयं मणिपेढिया पणत्ता । ताओ णं मणिपेढियाओ अट्टु जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं वाह्ल्लेणं, सव्वमणि-मईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥

० मंहिदज्झय-पदं

२३१. तासि णं मणिपेढियाणं उवरि पत्तेयं-पत्तेयं मंहिदज्झए पणत्ते । ते णं मंहिद-ज्झया सट्ठि जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं उव्वेहेणं, अद्धकोसं^१ विक्खंभेणं वइरामय-वट्ट-^२लट्ट-संठिय-सुसिलिट्ट^३-परिघट्ट-मट्ट-सुपत्तिट्ठिया विसिट्ठा^४ अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्स-परिमंडियाभिरामा वाउद्धुयविजय-वेजयंती-पडाग-च्छत्तातिच्छत्तकलिया^५ तुंगा गगणतल-मणुलिहंतसिहरा^६ पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

० मंगलग-पदं

२३२. तेसि णं मंहिदज्झयाणं उवरि अट्टु मंगलगा झया छत्तातिछत्ता ॥

० नंदापुक्खरिणी-पदं

२३३. तेसि णं मंहिदज्झयाणं पुरतो पत्तेयं-पत्तेयं नंदा^१ पुक्खरिणी पणत्ता । ताओ णं पुक्खरिणीओ एमं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस^२ जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छाओ जाव^३ पगईए^४ उदगरसेणं पणत्ताओ^५ *पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ^६ । पत्तेयं-पत्तेयं पउमवरवेइयापरिविक्खत्ताओ, पत्तेयं-पत्तेयं वणसंड-परिविक्खत्ताओ^७ ।

० तिसोवाणपडिरूवग-पदं

२३४. तासि णं णंदाणं पुक्खरिणीणं तिदिसि तिसोवाणपडिरूवगा पणत्ता । तिसोवाणपडिरूवगाणं वण्णओ^१ तोरणा झया छत्तातिछत्ता ।

० मणोगुलिया-पदं

२३५. सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं मणोगुलियासाहस्सीओ पणत्ताओ, तं जहा— पुरत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, दाहिणेणं अट्टसाहस्सीओ, उत्तरेणं अट्टसाहस्सीओ । तासु णं मणोगुलियासु बह्वे सुवण्णरूप्यामया फलगा पणत्ता । तेसु णं सुवण्णरूप्यामएसु फलगेसु बह्वे वइरामया णागदंतया पणत्ता । तेसु णं वइरामएसु

१. जोयणं (क, ख, ग, घ); जोइणं (च, छ) ।

७. द्वाविशं (छ) ।

२. लट्टि पसिलिट्ट (क, ख, ग, घ, च) ।

८. राय० सू० १७४ ।

३. X (क, ख, ग, घ, च) ।

९. पागइयाओ (क, ख, ग, घ, च); पगइयाओ

४. ०छत्तकलिया (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

(छ) ।

५. गगणतलमभिकंखमाणं (क, ख, ग, घ, च,

१०. सं० पा०—पणत्ताओ ।

छ) ।

११. राय० सू० १८६-२०१ ।

६. नंदाओ (क, ख, ग) ।

१२. राय० सू० १९-२३ ।

णागदंतएसु किण्हसुत्तबद्धा बग्घारियमल्लदामकलावा' चिट्ठंति ॥

० गोमाणसिया-पदं

२३६. सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं गोमाणसियासाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—
 १*पुरत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, दाहिणेणं अट्टसाहस्सीओ,
 उत्तरेणं अट्टसाहस्सीओ । तासु णं गोमाणसियासु बह्वे सुवण्णरूपामया फलगा पण्णत्ता ।
 तेसु णं सुवण्णरूपामएसु फलगेसु बह्वे वइरामया नागदंतया पण्णत्ता* । तेसु णं वइरामएसु
 णागदंतएसु बह्वे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता । तेसु णं रययामएसु सिक्कगेसु बह्वे
 वेहलियामइओ धूवघडियाओ पण्णत्ताओ । ताओ णं धूवघडियाओ कालागरु-पवर'
 *कुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूवमघमघंतगंधुद्धयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ
 ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं धाणमणणिव्वुत्तिकरेणं गंधेणं ते पदेसे सव्वओ समंता
 आपूरेमाणा-आपूरेमाणा सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा° चिट्ठंति ॥

० भूमिभाग-पदं

२३७. सभाए णं सुहम्माए अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव' मणीहि
 उवसोभिए मणिफासो य उल्लोओ य ॥

० मणिपेढिया-पदं

२३८. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महेगा
 मणिपेढिया पण्णत्ता—सोलस जोयणाइं आयामविकखंभेणं, अट्ट जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्व-
 मणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० चेइय-खंभ-पद

२३९. तीसे णं मणिपेढियाए उवरि, एत्थ णं माणवए चेइयखंभे पण्णत्ते—सट्ठि जोय-
 णाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, जोयणं उव्वेहेणं, जोयणं विकखंभेणं, 'अडयालीसअंसिए अडयालीसइ-
 कोडीए अडयालीसइविग्गहिए'^१ सेसं जहा' महिदज्झयस्स ॥

० जिण-सकहा-पदं

२४०. माणवगस्स णं चेइयखंभस्स उवरि बारस जोयणाइं ओगाहेत्ता, हेट्ठावि बारस
 जोयणाइं वज्जेत्ता, मज्झे छत्तीसाए° जोयणेसु, एत्थ णं बह्वे सुवण्णरूपामया फलगा
 पण्णत्ता । तेसु णं सुवण्णरूपामएसु फलएसु बह्वे वइरामया णागदंता पण्णत्ता । तेसु णं
 वइरामएसु नागदंतैसु बह्वे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता । तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु
 बह्वे वइरामया गोलवट्टसमुग्गया पण्णत्ता । तेसु णं वयरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहुयाओ^१

१. अत्र समर्पणसूचकः संकेतः केनापि कारणेन
 वृद्धितोस्ति । १३२ सूत्रमिह प्राप्तमस्ति ।

द्वट्ठव्वं जीवाजीवभिगमस्य ३।३६७ सूत्रम् ।

२. सं० पा०—जहा मणोमुलिया जाव णागदंतया ।

३. सं० पा०—कालागरुपवर जाव चिट्ठंति ।

४. राय० सू० २४-३४ ।

५. अडयालीसं असीइए अडयालीसं सइकोडिए

अडयालीसं सइविग्गहे (क, ख, ग, घ, च,
 छ) ।

६. राय० सू० २३१, २३२ ।

७. वत्तीसाए (क, ख, ग); छव्वीसाए (च);
 तीसाए (छ) ।

८. बह्वे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

जिण-सकहाओ संनिखित्ताओ चिट्ठंति । ताओ णं सूरियाभस्स देवस्स अन्नेसि च बहूणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ' *वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ माणणिज्जाओ सक्कार-णिज्जाओ कत्ताणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासणिज्जाओ ॥

० मंगलग-पदं

२४१. माणवगस्स चेइयखंभस्स उवरिं अट्ठु मंगलगा ज्ञया छत्ताइच्छत्ता ॥

० मणिपेढिया-पदं

२४२. तस्स माणवगस्स चेइयखंभस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठु जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० सीहासण-पदं

२४३. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महेगे सीहासणे पण्णत्ते—सीहासण-वण्णतो° सपरिवारो ॥

० मणिपेढिया-पदं

२४४. तस्स णं माणवगस्स चेइयखंभस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठु जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

० देवसयणिज्ज-पदं

२४५. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महेगे देवसयणिज्जे पण्णत्ते । तस्स णं देवसयणिज्जस्स इमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते, तं जहा—णाणामणिमया पडिपाया, सोव-णिमया पाया, णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं, जंबूणयामयाइं गत्तगाइं, 'वइरामया संधी', णाणामणिमए वेच्चे, रययामई तूली, 'लोहियक्खमया विब्बोयणा, तवणिज्जमया गंडो-वहाणया' । से णं देवसयणिज्जे 'सालिगणवट्टिए उभओविब्बोयणे' दुहओ उण्णते मज्जे णयगंभीरे' गंगापुलिणवालुया' उट्ठालसालिसए सुविरइयरयत्ताणे ओयवियखोमदुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे' रत्तंसुयसंबुए सुरम्मे आईणग-रूय-बूर-णवणीय-तूलफासे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

० मणिपेढिया-पदं

२४६. तस्स णं देवसयणिज्जस्स उत्तरपुरत्थिमेणं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—अट्ठु जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥

१. सं० पा०—अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणि-ज्जाओ ।

२. राय० सू० ३७-४४ ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. तवणिज्जमया गंडोवहाणया लोहियक्खमया (मई) विब्बोयणा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. णयगंभीरे सालिगणवट्टीए (क, ख, ग, घ, च) ।

७. 'बाल (क, ख, ग, घ, च); 'वालुए (छ) ।

८. अत्र वृत्तौ 'प्रतिच्छदनं' विद्यते, किन्तु ३७ सूत्रे 'प्रतिच्छादनम्' अस्ति ।

० महिदज्जभय-पदं

२४७. तीसे णं मणिपेढियाए उर्वरि, एत्थ णं खुड्डुए^१ महिदज्जाए पण्णत्ते—सट्ठि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं^२ उव्वेहेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, वइरामयवट्टलट्टसंठिय-सुसिलिट्ठ^३-परिघट्ट-मट्ट-सुपतिट्ठिए विसिट्ठे अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्सपरिमंडिया-भिरामे वाउद्धयविजय-वेजयंतीपडागच्छत्तातिच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे^० पडिरूवे ॥

० मंगलग-पदं

२४८. तस्स णं खुड्डामहिदज्जयस्स उर्वरि अट्टट्ट मंगलगा ज्ञया छत्तातिच्छत्ता ॥

० पहरणकोस-पदं

२४९. तस्स णं खुड्डामहिदज्जयस्स पच्चत्थिमेणं, एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स महं एगे चोप्पाले नाम पहरणकोसे पण्णत्तो—सक्कवइरामए अच्छे जात्र पडिरूवे । तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स फलिहरयण-खग्ग-गया-धणुप्पमुहा बहवे पहरणरयणा संनिखित्ता चिट्ठंति—उज्जला निसिया मुतिकखधारा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

० मंगलग-पदं

२५०. सभाए णं सुहम्माए उर्वरि अट्टट्ट मंगलगा ज्ञया छत्तातिच्छत्ता ॥

० सिद्धायतण-पदं

२५१. सभाए णं सुहम्माए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगे सिद्धायतणे पण्णत्ते—एगं जोयणसयं आयामेणं, पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं, वावत्तरि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सभागमएणं जाव गोमाणिसियाओ, भूमिभागा उल्लोया तहेवे^१ ॥

० मणिपेढिया-पदं

२५२. तस्स णं सिद्धायतणस्स बहुमज्जदेसभाए, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता—सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, अट्ट जोयणाइं वाहल्लेणं^१ ॥

० जिणपडिमा-पदं

२५३. तीसे णं मणिपेढियाए उर्वरि, एत्थ णं महेगे देवच्छंदए पण्णत्ते—सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सक्करयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

२५४. तत्थ णं अट्टसयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहप्पमाणमित्ताणं संनिखित्तं संचिट्ठति । तासि णं जिणपडिमाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—तवणिज्जमया हत्थतल-पायतला, अंकामयाइं नक्खाइं अंतोलीहियक्खपडिसेगाइं^१, कणगामईओ जंघाओ, कणगामया

१. खुड्डु (क, ग) ।

२. २३१ सूत्रे 'अद्धकोसं' पाठो विद्यते, अत्र तु सर्वासु प्रतिषु 'जोयणं' पाठो लभ्यते । वृत्त्यनुसारेणापि 'अद्धकोसं' पाठो युज्यते, यथा—'तस्य प्रमाणं वर्णकश्च महेन्द्रध्वजवद् वक्तव्यम्' ।

३. सं० पा०—सुसिलिट्ठ पडिरूवे ।

४. राय० सू० २०९-२३६ ।

५. राय० सू० २४-३४ ।

६. राय० सू० २३८ ।

७. अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।४।१५) अत्र एष पाठो विद्यते—'कणगामया पादा, कणगामया गोप्फा' । आनखशिखवर्णने एष उपयुक्तोस्ति ।

जाणू, कणगामया ऊरू, कणगामईओ गायलट्टीओ, 'तवणिज्जमईओ नाभीओ, रिट्टामईओ रोमराईओ, तवणिज्जमया चूचुया', तवणिज्जमया सिरिवच्छा', सिलप्पवालमया ओट्टा, फालियामया दंता, तवणिज्जमईओ जीहायो, तवणिज्जमया' तालुया, कणगामईओ नासिगाओ अंतोलोहियक्खपडिसेगाओ, अंकामयाणि अच्छीणि अंतोलोहियक्खपडिसेगाणि', 'रिट्टामईओ ताराओ', रिट्टामयाणि अच्छिपत्ताणि, रिट्टामईओ भमुहाओ, कणगामया कवोला', कणगामया सवणा, कणगामईओ णिडालपट्टियाओ, वइरामईओ सीसघडीओ, तवणिज्जमईओ केसंतकेसभूमीओ, रिट्टामया उवरिमुद्धया ॥

२५५. तासि णं जिणपडिमाणं पिट्टतो पत्तेयं-पत्तेयं छत्तधारगपडिमाओ पण्णत्ताओ । ताओ णं छत्तधारगपडिमाओ हिमरययकुंदेदुप्पगासाइं सकोरंटमल्लदामं-धवलाइं आयवत्ताइं सलीलं 'धारेमाणीओ-धारेमाणीओ' चिट्ठंति ॥

२५६. तासि णं जिणपडिमाणं उभओ पासे 'दो दो' चामरधारपडिमाओ^{१०} पण्णत्ताओ । ताओ णं चामरधारपडिमाओ चंदप्पह-वइर-वेरुलिय-नानामणिरयणखचिय-चित्तदंडाओ^{११} 'सुहुमरययदीहवालाओ संखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ'^{१२} 'धवलाओ चामराओ'^{१३} 'गहाय सलीलं वीजेमाणोओ'^{१४} 'सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिह्वाओ'^{१५} ॥

२५७. तासि णं जिणपडिमाणं पुरतो दो दो नागपडिमाओ 'जक्खपडिमाओ भूय-पडिमाओ'^{१६} कुंडधारपडिमाओ संनिखित्ताओ चिट्ठंति—सव्वरयणामईओ अच्छाओ

१. तवणिज्जमया चूचुया तवणिज्जामईओ नाभीओ रिट्टामईओ रोमराईओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. अतः परं जीवाजीवाभिगमे (३।४१५) अत्र एष पाठो विशते—'कणगमईओ बाहाओ, कणगमईओ पासाओ, कणगमईओ गीवाओ, रिट्टामए मंसु' ।

३. तवणिज्जा^० (च, छ) ।

४. 'सेगाओ (च, छ) ।

५. × (वृ) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. 'दामाइं (च, छ) । वृत्तो एकवचनं व्याख्यातम् ।

८. उधारेमाणीओ-उधारेमाणीओ (क, ख, ग, घ, च) ।

९. पत्तेयं पत्तेयं (क, ख, ग, घ, च, छ); मूल-पाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः । पूर्ववर्ती 'पत्तेयं पत्तेयं' इति पाठस्य 'एकैका' इति व्याख्यात-मस्ति । अत्र 'प्रत्येकम् उभयोः पार्श्वयोः द्वे

द्वे' इति व्याख्यातमस्ति, अनेन 'दो दो' इति पाठः सङ्गच्छते । द्रष्टव्यम्—जीवाजीवा-भिगमस्य ३।४१७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१०. 'धारगं' (क, ख, ग, घ) ।

११. णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहत्तवणिज्जु - ज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. संखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ सुहुमरययदीहवालाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१४. सलीलं उधारेमाणीतो २ (क, ख, ग, घ); सलीलं धारेमाणीओ २ (च, छ) । स्वीकृतपाठः वृत्त्यनुसारी वर्तते । जीवाजीवाभिगम- (३।४१७) सूत्रेण एष एव पाठः स्वीकृतोस्ति ।

१५. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१६. भूयपडिमाओ जक्खपडिमाओ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

जाव पडिरूवाओ ॥

२५८. 'तत्थ णं देवच्छंदए' जिणपडिमाणं पुरतो अट्टसयं घंटाणं अट्टसयं वंदणकलसाणं अट्टसयं भिगाराणं एवं—आयंसणं थालाणं पाईणं सुपइट्ठाणं मणोगुलियाणं वायकरगाणं चित्ताणं रयणकरंडगाणं, ह्यकंठाणं *गयकंठाणं नरकंठाणं किन्नरकंठाणं किपुरिसकंठाणं महोरगकंठाणं गंधव्वकंठाणं, °उसभकंठाणं पुप्फचंगेरीणं *मल्लचंगेरीणं चुण्णचंगेरीणं गंध-चंगेरीणं वत्थचंगेरीणं आभरणचंगेरीणं सिद्धत्थचंगेरीणं° लोमहत्थचंगेरीणं, पुप्फपडलगाणं *मल्लपडलगाणं चुण्णपडलगाणं गंधपडलगाणं वत्थपडलगाणं आभरणपडलगाणं सिद्धत्थपड-लगाणं° लोमहत्थपडलगाणं, सीहासणाणं छत्ताणं चमराणं, तेल्लसमुग्गाणं *कोट्टसमुग्गाणं पत्तसमुग्गाणं चोयससमुग्गाणं तगरसमुग्गाणं एलासमुग्गाणं हरियालसमुग्गाणं हिंगुलय-समुग्गाणं मणोसिलासमुग्गाणं °अंजणसमुग्गाणं, अट्टसयं झयाणं', अट्टसयं धूवकडुच्छुयाणं संनिखित्तं चिट्ठति ॥

२५९. तस्स णं सिद्धायतणस्स उवरिं अट्टमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ॥

°उववायसभा-पदं

२६०. तस्स णं सिद्धायतणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा उववायसभा पण्णत्ता जहा सभाए सुहम्माए तहेव जाव° उल्लोओ य° ॥

२६१. 'तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्जदेशभागे, एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता°—अट्टजोयणाइं° *आयाम-विक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा° । देवसयणिज्जं तहेव सयणिज्जवण्णओ° । अट्टट्ट° मंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ॥

२६२. तीसे णं उववायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगे हराए पण्णत्ते—एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं तहेव° ॥

१. तासि णं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सं० पा०—ह्यकंठाणं जाव उसभकंठाणं ।

३. सं० पा०—पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगे-रीणं ।

४. सं० पा०—पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडल-गाणं ।

५. सं० पा०—तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजण-समुग्गाणं ।

६. वृत्ती सङ्ग्रहणीगाथाद्वयमपि दृश्यते—

चंदणकलसा भिगारमा य, आयंसया य थाला य ।

पातीउ सुपइट्ठा मणगुलिका वायकरगा य ॥१॥

चिता रयणकरंडा, ह्य-नाय-नरकंठमा य चंगेरी ।

पडलग-सीहासण-छत्त-चामरा समुग्गय-भया य

७. राय० सू० २०९-२३७; तस्याश्च सुधमग्निमेन स्वरूपवर्णन-पूर्वादिद्वारत्रयवर्णनमुखमण्डप-प्रेक्षा-गृहमण्डपादिवर्णनादिप्रकाररूपेण तावत् वक्तव्यं यावत् उल्लोकवर्णनम् (वृ) ।

८. X (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. असौ पाठो वृत्त्यनुसारी स्वीकृतः—तस्य च बहुसमरणीयभूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागेत्र महत्येका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता (वृ) ।

१०. सं० पा०—अट्टजोयणाइं ।

११. राय० सू० २४५ ।

१२. अत्र प्रारम्भे 'उववायसभाए णं उवरिं' इति वाक्यशेषः ।

१३. राय० सू० २३३ ।

२६३. से णं हराए एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसंडेण सव्वओ समंता संपरि-
क्खित्ते । पउमवरवेइया वणसंडवण्णओ' ॥

२६४. तस्स णं हरयस्स त्तिदिसं तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता' ॥

० अभिसेगसभा-पदं

२६५. तस्स णं हरयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा अभिसेगसभा पण्णत्ता
सुहम्मागमएणं जाव' गोमाणसियाओ । मणिपेढिया' सीहासणं अपरिवारं' जाव'

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । राय० सू० १८६-२०१ ।

२. राय० सू० २३४ ।

३. राय० सू० २०६-२३७ ।

४. राय० सू० २६१ ।

५. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ) । २६५, २६७, २६६ एषु त्रिष्वपि सूत्रेषु 'सीहासणं अपरिवारं'
इति पाठो युज्यते, यद्यपि आदर्शेषु तथा पंडितवेचरदास-संपादितवृत्तौ 'सीहासणं सपरिवारं' पाठो
लभ्यते, किन्तु २६५ सूत्रे 'जाव दामा' इति समर्पणवाक्येन 'सीहासणं अपरिवारं' अस्यैव पाठस्य
पुष्टिर्जायते । वृत्तिकृता अपरिवारं सिहासनं व्याख्यातम्, किन्तु लिपिदोषेण मुद्रणदोषेण वा अपरि-
वारस्य स्थाने सपरिवारं जातम् । जीवाजीवाभिगमवृत्त्यवलोकनेन एतत् स्पष्टं भवति ।

जीवाजीवाभिगमवृत्ति (पत्र २३६)

सिहासनवर्णकः प्राग्वत्, नवरमत्र परिवार-
भूतानि भद्रासनानि न वक्तव्यानि ।

तस्याश्चाभिषेकसभाया उत्तरपूर्वस्यां
दिशि अत्र महत्येकालंकारसभा प्रज्ञप्ता,
सा च प्रमाणस्वरूपद्वारत्रयमुखमण्डप-
प्रेक्षागृहमण्डपादिवर्णनप्रकारेणाभिषेक -
सभावत्तावद्वक्तव्या यावदपरिवारं
सिहासनम् ।

तस्या अलंकारसभाया उत्तरपूर्वस्यां
दिशि अत्र महत्येका व्यवसायसभा प्रज्ञप्ता,
सा चाभिषेकसभावत्प्रमाणस्वरूपद्वारत्रय-
मुखमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद्वक्तव्या
यावदपरिवारं सिहासनम् ।

रायपसेणइयवृत्तौ 'न वक्तव्यानि' स्थाने 'च वक्तव्यानि' मुद्रितमस्ति । वृत्त्यनुसारेण अलंकारस-
भायाः व्यवसायसभायाश्च अभिषेकसभावत् वर्णनमस्ति तेनानयोरपि सूत्रयोरपरिवारं सिहासनं
युज्यते । अत्र वृत्तौ च 'यावदपरिवारं सिहासनं' स्थाने 'यावत् परिवारसिहासनं' तथा 'यावत्
सिहासनं सपरिवारं' इति मुद्रितमस्ति । जीवाजीवाभिगमवृत्तेः सन्दर्भे तथा प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तेर्हर्दिने
मुद्रितपाठोऽशुद्धः प्रतीयते । तेनास्माभिः 'अपरिवारं' इति पाठः स्वीकृतः ।

६. राय० सू० ३७-४० ।

रायपसेणइयवृत्ति (पृ० २३५, २३६)

सिहासनवर्णकः प्राग्वत् नवरमत्र परिवार-
भूतानि भद्रासनानि च वक्तव्यानि ।

तस्याश्च अभिषेकसभाया उत्तरपूर्वस्यां
दिशि अत्र महत्येका अलंकारसभाप्रज्ञप्ता,
सा अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-द्वारत्रय-
मुखमण्डप - प्रेक्षागृहमण्डपादिवर्णनप्रकारेण
तावद् वक्तव्या यावत् परिवारसिहासनम् ।

तस्याश्च अलंकारसभाया उत्तरपूर्वस्यां
दिशि अत्र महत्येका व्यवसायसभा प्रज्ञप्ता,
सा च अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-
द्वारत्रय-मुखमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद्
वक्तव्या यावत् सिहासनं सपरिवारम् ।

दामा चिट्ठंति ॥

२६६. तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सुबहु अभिसेयभंडे' संनिखित्ते चिट्ठइ । अट्ठइ मंगलगा तहेव' ॥

• अलंकारियसभा-पदं

२६७. तीसे णं अभिसेगसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, 'एत्थ णं महेगा' अलंकारियसभा पण्णत्ता । जहा' सभा सुधम्ममा मणिपेढिया अट्ठ जोयाणाइं' सीहासणं अपरिवारं" ॥

२६८. 'तत्थ णं' सूरियाभस्स देवस्स सुबहु अलंकारियभंडे संनिखित्ते चिट्ठति । सेसं तहेव' ॥

• ववसायसभा-पदं

२६९. तीसे णं अलंकारियसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा ववसायसभा पण्णत्ता । जहा उववायसभा जाव'" मणिपेढिया सीहासणं अपरिवारं" अट्ठइ" मंगलगा ॥

२७०. तत्थ'" णं सूरियाभस्स देवस्स एत्थ णं महेगे पोत्थयरयणे सन्निखित्ते चिट्ठइ । तस्स णं पोत्थयरयणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—'रिट्ठामईओ कंविआओ"', तवणिज्जमए"' दोरे, नाणामणिमए मंठी, अंकमयाइं पत्ताइं"', वैरुलियमए"' लिप्पासणे"', 'तवणिज्जमई संकला, रिट्ठामए छादणे"', रिट्ठामई मसी, वइरामई लेहणी"', रिट्ठामयाइं अवखराइं, धम्मिए लेखे"' ॥

१. आभि" (क, ख, ग, घ) ।

२. अत्र प्रारम्भे 'अभिसेयसभाए णं उव्वरि' इति वाक्यशेषः ।

३. राय० सू० २१-२३ ।

४. महा (क, ख, ग, घ) ।

५. अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-द्वारत्रय-मुखमण्डप-प्रेक्षागृहमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद् वक्तव्या यावत् परिवारसिंहासनम् (वृ) । राय० सू० २०९-२३७ ।

६. राय० सू० २६१ ।

७. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ) ; द्रष्टव्यं २६५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् । राय० सू० ३७-४० ।

८. तओ (क, ख, ग, घ) ।

९. राय० सू० २६६ ।

१०. अभिषेकसभावत् प्रमाण-स्वरूप-द्वारत्रय-मुखमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद् वक्तव्या यावत् सिंहासनं सपरिवारम् (वृ) । राय० सू० २६०-२६१ ।

११. सपरिवारं (क, ख, ग, घ, च, छ) ; द्रष्टव्यं २६५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् । राय० सू० ३७-४० ।

१२. अत्र प्रारम्भे 'ववसायसभाए णं उव्वरि' इति वाक्यशेषः । राय० सू० २१-२३ ।

१३. तस्स (क, ख, ग, घ) ।

१४. रयणामइयाइं रिट्ठाइं उकंठियाइं (क, ख, ग, च, छ) ; रिट्ठकंठियाइं रयणामयाइं (घ) ।

१५. रयणामए (वृ) ; जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र २३७) रजतमयी दवरगः ।

१६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१७. नाणामणिमए (वृ) ; जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र २३७) नाणामणिमयं लिप्पासनम् ।

१८. लिवासणे (क, ख, ग, च) ; लिवीमाणे (घ) ।

१९. रिट्ठामए छंदणे तवणिज्जामई संकला (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२०. लेहिणी (घ) ।

२१. सत्थे (क, ख, ग, घ, च, छ, वृपा) ।

२७१. ववसायसभाए णं उवरि अट्टुमंगलगा^१ ॥

२७२. तीसे^२ णं ववसायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं, महेगे बलिपीढे पण्णत्ते—अट्टु जोय-णाइं आयामविवखंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाह्ल्लेणं, सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥

२७३. तस्स णं वलिपीढस्स उत्तरपुरत्थिमेणं, एत्थ णं महेगा^३ नंदा पुवखरिणी पण्णत्ता । हरयसरिसा^४ ॥

सूरियाभदेव-पदं

[तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरियाभे देवे सूरियाभे विमाणे उववात्सभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिते अंगुलस्स असंखेज्जतिभागमेत्तीए ओगाहणाए उववण्णे ।]^५

२७४. तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववण्णमित्तए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं^६ गच्छइ, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए सरीस्पज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाण-पज्जत्तीए भासमणपज्जत्तीए]^७ ॥

२७५. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था—‘किं मे पुंवि करणिज्जं ? किं मे पच्छा करणिज्जं ? किं मे पुंवि सेयं ? किं मे पच्छा सेयं ? किं मे पुंवि पि पच्छा वि’^८ हियाए सुहाए खमाए गिस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ? ॥

२७६. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा सूरियाभस्स देवस्स इमेयारूवं अज्झत्थियं^९ *चितियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं^{१०} समुपपण्णं समभिजाणित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं सूरियाभे विमाणे सिद्धायतणंसि जिणपडिमाणं जिणुस्सेहपमाणमेत्ताणं अट्टुसयं संनिखित्तं चिट्ठति । सभाए णं सुहम्माए माणवए चेइए खंभे, वइरामएसु गोलवट्टुसमुग्गएसु बहूओ जिण-सकहाओ संनिखित्ताओ चिट्ठंति । ताओ णं देवाणुप्पियाणं अण्णेसि च बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य अच्छणिज्जाओ^{११} *वंदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ माणणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं^{१२} पज्जुवासणिज्जाओ । तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पुंवि करणिज्जं, तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पच्छा करणिज्जं, तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पुंवि सेयं, तं एयण्णं देवाणुप्पियाणं पच्छा सेयं, तं एयण्णं^{१३} देवाणुप्पियाणं

१. राय० सू० २१-२३ ।

२. प्रयुक्तादर्शेषु २७२, २७३ सूत्रयोः क्रमभेदो विद्यते ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. राय० सू० २६२-२६४ ।

५. एतत् कोष्ठकवर्तिसूत्रं आदर्शेषु नोपलभ्यते, वृत्तौ व्याख्यातमस्ति ।

जीवाजीवाभिगमस्य ३।४३६ सूत्रेणापि अस्य समर्थनं जायते ॥

६. पज्जत्तभावं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. कोष्ठकान्तरवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

८. किं मे पुंवि सेयं किं मे पुंवि पच्छाएवि (क, ख, ग, घ, च)

९. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव समुपपण्णं ।

१०. सं० पा०—अच्छणिज्जाओ जाव पज्जुवास-णिज्जाओ ।

११. एतं णं (क, ख, ग, घ) ।

पुंवि पि^१ पच्छा वि हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति ॥

सूरियाभस्स अभिसेग-पदं

२७७. तए णं से सूरियाभे देवे तेसि सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु^२ *चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^३ हियए^४ सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता उववायसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छइ, जेणेव हरए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हरयं अणुपयाहिणीकरे-माणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता पुरत्थि-मिल्लेणं^५ तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जलावगहं करेइ, करेत्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकिड्डं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परममूर्ईभूए हरयाओ पच्चोत्तरइ, पच्चोत्तरित्ता जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अभिसेयसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिसण्णे ॥

२७८. तए णं सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा आभिओगिए देवे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सूरियाभस्स देवस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्टवेह ॥

२७९. तए णं ते आभिओगिआ देवा सामाणियपरिसोववण्णेहि देवेहि एवं वुत्ता समाणा हट्टु^६ *तुट्टु-चित्तमाणंदिआ पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं^३ हियया करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवा ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं^७ पडिसुणंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं^८ *दंडं निसिरंति, तं जहा—रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रयणाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहावायरे पोग्गले परिसाडेति, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायंति, परियाइत्ता^९ दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता अट्टसहस्सं^{१०} सोवण्णियाणं कलसाणं, अट्टसहस्सं रूपमयाणं कलसाणं, अट्टसहस्सं मणिमयाणं कलसाणं, अट्टसहस्सं सुवण्णरूपामयाणं कलसाणं, अट्टसहस्सं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं, अट्टसहस्सं रूपमणिमयाणं कलसाणं, अट्टसहस्सं सुवण्णरूपमणिमयाणं कलसाणं, अट्टसहस्सं भोमिज्जाणं कलसाणं, एवं—भिगाराणं आयंसाणं थालाणं पाईणं

१. × (क, ख, ग, घ) ।

२. सं० पा०—हट्टुत्तु जाव हियए ।

३. ह्यहियए (ख, ग, घ, च, छ) ।

४. पुरत्थिमेणं (क, ख, ग, घ, च) ।

५. सं० पा०—हट्टु जाव हियया ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सं० पा०—जोयणाइं जाव दोच्चं ।

८. अट्टसयं (क, ख, ग, घ, च) ।

सुपतिट्टाणं 'मणोगुलियाणं वायकरगाणं चित्ताणं' रथणकरंडगाणं, पुप्फचंगेरीणं^१
 *मल्लचंगेरीणं चुण्णचंगेरीणं गंधचंगेरीणं वत्थचंगेरीणं आभरणचंगेरीणं सिद्धत्थचंगेरीणं^२
 लोमहत्थचंगेरीणं, पुप्फपडलगाणं^३ *मल्लपडलगाणं चुण्णपडलगाणं गंधपडलगाणं वत्थ-
 पडलगाणं आभरणपडलगाणं सिद्धत्थपडलगाणं^४ लोमहत्थपडलगाणं, सीहासणाणं छत्ताणं
 चामराणं, तेल्लसमुग्गाणं^५ *कोट्टसमुग्गाणं पत्तसमुग्गाणं चोयमसमुग्गाणं तगरसमुग्गाणं
 एलासमुग्गाणं हरियालसमुग्गाणं हिगुलयसमुग्गाणं मणोसिलासमुग्गाणं^६ अंजणसमुग्गाणं
 अट्टसहस्सं झयाणं, अट्टसहस्सं^७ धूवकडुच्छुयाणं^८ विउव्वंति, विउव्वित्ता ते साभाविए य वेउ-
 व्विए य कलसे य जाव कडुच्छुए य गिण्हति, गिण्हित्ता सूरियाभाओ विमाणाओ पडि-
 निक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्टाए तुरियाए चवलाए^९ *चंडाए जवणाए सिग्धाए
 उद्धयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्जेणं^{१०} वीतिवयमाणा-
 वीतिवयमाणा जेणेव खीरोदयसमुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता खीरोयगं
 गिण्हंति, गिण्हित्ता 'जाइं तत्थुप्पलाइं'^{११} *पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं
 पोंडरीयाइं महापोंडरीयाइं सयवत्ताइं^{१२} सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव
 पुक्खरोदए समुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरोदयं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं
 तत्थुप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हंति, गिण्हित्ता^{१३} जेणेव समयखेत्ते जेणेव
 भरहेरवयाइं वासाइं जेणेव मागहवरदामपभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति,
 उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता तित्थमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव
 गंग-सिधू-रत्ता-रत्तवईओ महानईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं^{१४}
 गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चुल्लहिमवंतसिहरिवासहर-
 पव्वया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतुयरे^{१५} सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले
 सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पउम-पुंडरीयदहा^{१६} तेणेव उवागच्छंति,
 उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं
 गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव हेमवय-एरण्णवयाइं वासाइं जेणेव रोहियं^{१७}-रोहियंस-सुवण्णकूल-
 रूपकूलाओ महानईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सं० पा०—पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थ-
चंगेरीणं ।

३. सं० पा०—पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थ-
पडलगाणं ।

४. सं० पा०—तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणस-
मुग्गाणं ।

५. अट्टसयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. च्छुयाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सं० पा०—चवलाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं
जाव वीतिवयमाणा ।

८. सं० पा०—तत्थुप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ।

९. जाइं तत्थुप्पलाइं ताइं गेण्हंति गेण्हित्ता (क,
ख, ग, घ) ।

१०. सरितोदगं (जी० ३।४४५) ।

११. सव्वतुयरे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. दहे (छ) ।

१३. × (क, ख, ग, घ) ।

उभओकूलमट्टियं गिण्हंति, गिण्हिता जेणेव 'सद्वावाति-वियडावाति'-वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सव्वतूयरे^१ *सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहि-सिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हिता^० जेणेव महाहिमवंत-रुप्पिवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छंति', *उवागच्छिता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति गिण्हिता^० जेणेव महापउम-महापुंडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता दहोदगं गिण्हंति, गिण्हिता^० *जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, गेण्हिता^० जेणेव हरिवासरम्मगवासाइं जेणेव हरि'-हरिकंत-नरनारिकंताओ^१ महाणईओ तेणेव उवा-गच्छंति', *उवागच्छिता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हिता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति गेण्हिता^० जेणेव गंधावाति-मालवंतपरियागा वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव^१ *उवागच्छंति, उवागच्छिता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हिता^० जेणेव गिसढ-णीलवंत-वासधरपव्वया^१ *तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हिता^० जेणेव तिगिच्छि'-केसरि-द्दहाओ तेणेव उवागच्छंति', *उवागच्छिता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हिता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, गेण्हिता^० जेणेव पुव्वविदेहावरविदेहवासाइं^{१३} जेणेव सीता^{११}-सीतोदाओ महाणदीओ तेणेव उवागच्छंति', *उवागच्छिता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हिता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति, गेण्हिता^० जेणेव सव्वक्कवट्टिविजया जेणेव सव्वमागहवरदामपभासाइं तित्थाइं *तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता तित्थोदगं गेण्हंति, गेण्हिता तित्थमट्टियं गेण्हंति, गेण्हिता जेणेव^{१४} सव्वंतरणईओ^{१५} *तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हिता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति, गेण्हिता^० जेणेव सव्वक्खारपव्वया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सव्वतूयरे^{१६} *सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हिता^० जेणेव मंदरे पव्वते जेणेव भट्टसालवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हिता जेणेव णंदणवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सव्वतूयरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं गिण्हंति, गिण्हिता जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सव्वतूयरे जाव

१. सद्वावतिवियडावतिपरियागा (क, ख, ग, घ, च, छ) स्वीकृतपाठः वृत्त्यनुसारी वसंति । द्रष्टव्यं 'ठाणं' ४।३०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
२. सं० पा०—सव्वतूयरे तहेव जेणेव ।
३. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव ।
४. सं० पा०—गिण्हिता तहेव जेणेव ।
५. हरिसलिल (क, ख, ग घ, च, छ) ।
६. नरकंतो (घ); नारिकंताओ (छ) ।
७. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव ।
८. सं० पा०—तेणेव तहेव जेणेव ।
९. सं० पा०—वासधरपव्वया तहेव जेणेव ।
१०. तिगिच्छि (क, घ, ग, घ, च) ।
११. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव ।
१२. महाविदेहेवासे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
१३. × (क, ख, ग, घ) ।
१४. सं० पा०—उवागच्छंति तहेव जेणेव ।
१५. जीवाजीवाभिगमे (३।४४५) 'वक्खारपव्वया' पाठः अतः पूर्वं विद्यते ।
१६. सं० पा०—सव्वंतरणईओ जेणेव ।
१७. सं० पा०—सव्वतूयरे तहेव जेणेव ।

सव्वोसहिंसिद्धत्थए य सरसं च गोसीसचंदणं च दिव्वं च 'सुमणदामं गिण्हंति, गिण्हत्ता जेणेव पंडगवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छत्ता सव्वतूयरे जाव सव्वोसहिंसिद्धत्थए च सरसं च गोसीसचंदणं च दिव्वं च' सुमणदामं दहरमलयसुगंधियगंधे गिण्हंति, गिण्हत्ता एगतो मिलायंति, मिलाइत्ता ताए उक्किट्टाए^१ *तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा- वीईवयमाणा^२ जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव अभिसेयसभा जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छत्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वट्ठावेत्ति, वट्ठावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं^३ उवट्ठवेत्ति ॥

२८०. ताए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ, चत्तारि अगमहिसीओ सपरिवारातो, तिण्णि परिसाओ, सत्त अणियाओ, सत्त अणियाहिवइणो^४, *सोलस आयरक्ख- देवसाहस्सीओ^५, अण्णेवि बहवे सूरियाभविमाणवासिणो देवा य देवीओ य तेहिं साभाविएहि य वेउव्विएहि य वरकमलपइट्ठाणेहि^६ सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहि चंदणकयचच्चाएहि आविद्धकंठेगुणेहि पउमुप्पलपिहाणेहि^७ सुकुमालकरयलपरिग्गहिएहि अट्ठसहस्सेणं^८ सोवणि- याणं कलसाणं^९, *अट्ठसहस्सेणं रूपमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं सुवण्णरूपामयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसह- स्सेणं रूपमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सेणं सुवण्णरूपमणिमयाणं कलसाणं^{१०}, अट्ठसहस्सेणं भोमिज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहि सव्वमट्ठियाहिं सव्वतूयरेहिं^{११} *सव्वपुप्फेहि सव्वगंधेहि सव्वमत्तेहिं^{१२} सव्वोसहिंसिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए जाव^{१३} नाइयरवेणं^{१४} महया-महया इंदाभिसेएणं अभिसिचंति ॥

अभिसेगकाले देवकिच्च-पदं

२८१. ताए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स महया-महया इंदाभिसेए वट्ठमाणे—अप्पेग- तिया देवा सूरियाभं विमाणं नच्चोयगं नातिमट्ठियं पविरलफुसियरयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगवासं वासंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं हयरयं तट्टुरयं भट्टुरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुइ^{१५}-संमट्ठरत्थंतरावणवीहियं करेति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं मंचाइमंचकलियं करेति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं णाणाविहरागोसियझयपडागाइपडागमंडियं करेति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं लाउल्लोइयमहियं गोसीससरसरत्तचंदणदहर-

१. × (क, ख, घ, ङ) ।

२. सं० पा०—उक्किट्टाए जाव जेणेव ।

३. *सेयं तो (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—अणियाहिवइणो जाव अण्णेवि ।

५. *ट्ठाणेहि य (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. *सएणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—कलसाणं जाव अट्ठसहस्सेणं ।

९. सं० पा०—सव्वतूयरेहिं जाव सव्वोसहिंसिद्ध- त्थएहि ।

१०. राय० सू० १३ ।

११. नाइएणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. सुइं (क, ख, ग, घ); सुयं (छ) ।

दिष्णपंचंगुलितलं करेति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं उवचियवंदणकलसं वंदण-
घडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभासं करेति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं आसत्तोसत्त-
विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं पंचवण्ण-
सुरभि^१-मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं कालागरु-
पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेतंगंधुद्धुयाभिरामं करेति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं
विमाणं सुगंधगंधियं^२ गंधवट्टिभूतं करेति, अप्पेगतिया देवा हिरण्णवासं वासंति, सुवण्ण-
वासं वासंति, रयणवासं वासंति, वइरवासं वासंति, पुप्फवासं वासंति, 'फलवासं वासंति'^३,
मल्लवासं वासंति, गंधवासं वासंति, चुण्णवासं वासंति, आभरणवासं वासंति, अप्पेगतिया
देवा हिरण्णविहिं भाएंति, एवं—सुवण्णविहिं रयणविहिं^४ पुप्फविहिं फलविहिं मल्लविहिं
गंधविहिं चुण्णविहिं आभरणविहिं^५ भाएंति, अप्पेगतिया देवा चउव्विहं वाइत्तं वाएंति—
ततं वित्तं घणं भुसिरं, अप्पेगइया देवा चउव्विहं मेयं गायंति, तं जहा—उक्खित्तायं
पायंतायं^६ मंदायं रोइयावसाणं^७, अप्पेगतिया देवा दुयं नट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगतिया देवा
विलंबियं णट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगतिया देवा दुय-विलंबियं णट्टविहिं उवदंसेति,
अप्पेगतिया देवा अंचियं नट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगतिया देवा रिभियं नट्टविहिं उवदंसेति,
अप्पेगइया देवा अंचिय-रिभियं नट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगइया देवा आरभडं नट्टविहिं
उवदंसेति, अप्पेगइया देवा भसोलं नट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगइया देवा आरभड-भसोलं
नट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगइया देवा उप्पायनिवायपसत्तं संकुचिय-पसारियं रियारियं^८
भंत-संभंतं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगतिया देवा चउव्विहं अभिणयं अभिण-
यंति, तं जहा—दिट्ठंतियं पाडंतियं सामन्नओविणिवाइयं^९ लोगमज्जावसाणियं, अप्पे-
गतिया देवा बुक्कारेति, अप्पेगतिया देवा पीणेति, अप्पेगतिया लासेति, अप्पेगतिया
तंडवेति^{१०}, अप्पेगतिया बुक्कारेति, पीणेति, लासेति, तंडवेति, अप्पेगतिया अप्फोडेति,
अप्पेगतिया वग्गंति, अप्पेगतिया तिवइं छिंदंति, अप्पेगतिया अप्फोडेति, वग्गंति, तिवइं
छिंदंति, अप्पेगतिया ह्यहेसियं करेति, अप्पेगतिया हत्थिगुलगुलाइयं करेति, अप्पेगतिया
रहघणघणाइयं करेति, अप्पेगतिया ह्यहेसियं करेति, हत्थिगुलगुलाइयं करेति, रहघण-
घणाइयं करेति, अप्पेगतिया उच्छलेति, अप्पेगतिया पोच्छलेति^{११}, अप्पेगतिया उक्कट्टियं

१. वण्णसरस्सुरभि (ओ० सू० २) ।

२. सुगंधियं (घ); सुगंधवरगंधगंधिए (ओ०
सू० २) ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. अतः परं 'वइरविहिं' इति पाठः प्राप्तोस्ति,
किन्तु आदर्शेषु नोपलभ्यते जीवाजीवाभिगम-
वृत्ती 'वइरवासं वइरविहिं' एतौ द्वावपि न स्तो
व्याख्यातो ।

५. तत्थ अप्पेगइया देवा आभरणं (क, ख, ग,
घ, च, छ) ।

६. पायत्तायं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. रोइदां (क, ख, ग, घ, च, छ); द्रष्टव्यं
११५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

८. रेयाइयं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. सामंतो (क, ख, ग, घ, च, छ); द्रष्टव्यं ११७
सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१०. वक्कारेति अप्पेगतिया पीणेति अप्पेगतिया
आयासेति अप्पेगतिया तंडावेति (क, च) ।

११. उच्छलेति अप्पेगतिया पोच्छलेति (क, ख, ग,
घ) ।

करेति, अप्पेगतिया उच्छलेति, पोच्छलेति, उक्किट्टियं करेति, अप्पेगतिया ओवयंति^१, अप्पेगतिया उप्पयंति, अप्पेगतिया परिवयंति, अप्पेगइया तिण्णि वि, अप्पेगइया सीहनायं नयंति, अप्पेगतिया पाददहरयं करेति, अप्पेगतिया भूमिच्चवेडं दलयंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि, अप्पेगतिया गज्जंति, अप्पेगतिया विज्जुयायंति, अप्पेगइया वासं वासंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि करेति, अप्पेगतिया जलंति, अप्पेगतिया तवंति, अप्पेगतिया पतवेंति, अप्पेगतिया तिण्णि वि, अप्पेगतिया हक्कारेति, अप्पेगतिया थुक्कारेति^२, अप्पेगतिया थक्कारेति, अप्पेगतिया 'साइं साइं नामाइं साहेति'^३, अप्पेगतिया चत्तारि वि, अप्पेगतिया^४ देवसण्णिवायं करेति, अप्पेगतिया देवुज्जोयं करेति, अप्पेगइया देवुक्कलियं करेति, अप्पेगइया देवकहकहगं^५ करेति, अप्पेगतिया देवदुहुहुगं^६ करेति, अप्पेगतिया चेलुक्खेवं करेति, अप्पेगइया देवसण्णिवायं, देवुज्जोयं, देवुक्कलियं, देवकहकहगं, देवदुहुहुगं, चेलुक्खेवं करेति, अप्पेगतिया उप्पलहत्थगया जाव सहस्सपत्तहत्थगया, अप्पेगतिया वंदणकलसहत्थगया अप्पेगतिया भिगारहत्थगया जाव^७ धूवकडुच्छुयहत्थगया हट्टुट्टु^८ *चित्तमाणंदिद्या पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणं^९हियया^{१०} सन्वओ समंता आहावंति परिधावंति ॥

वद्धावण-पदं

२८२. तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्ख-देवसाहस्सीओ अण्णे य बहवे^{१०} सूरियाभरायहाणिवत्थव्वा देवा य देवीओ य महया-महया इदाभिसेगेणं अभिसिचंति, अभिसिचित्ता पत्तेयं-पत्तेयं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं वयासी—जय-जय नंदा ! जय-जय भट्टा ! 'जय-जय नंदा ! भट्टं ते'^{११}, अजियं जिणाहि, जियं च पालेहि, जियमज्जे वसाहि—इंदो इव देवाणं, चंदो इव ताराणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, भरहो इव मणुयाणं—बहूइं पलिओवमाइं बहूइं सागरोवमाइं बहूइं पलिओवम-सागरोवमाइं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव आयरक्ख-देवसाहस्सीणं सूरियाभस्स विमाणस्स अण्णेसि च बहूणं सूरियाभविमाणवासीणं देवाण य देवीण य 'आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहराहि त्ति कट्टु महया-महया सद्देणं'^{१२} जय-जय सद्दं पउंजंति ॥

१. जीवाजीवाभिगमे (३।४४७) केषाञ्चित् १०. बहवे य (क, ख, ग, घ) ।

पदानां व्यत्ययो दृश्यते ।

११. जय नंदा भट्टं ते (क, ख, ग, छ); जय जय भट्टं ते (घ) ।

२. बुक्कारेति (च, छ); थूक्कुर्वन्ति (वृ) ।

३. साइं नामाइं सावेंति (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. यद्यपि प्रतिषु 'आहेवच्चं जाव महया-महया कारेमाणे पालेमाणे विहराहि' एवं पाठो लभ्यते, किन्तु लिपिदोषादसौ पाठः अशुद्धो जात इति प्रतीयते । जीवाजीवाभिगमे (३।४४८) एष पाठः समीचीनो वर्तते—आहेवच्चं जाव आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहराहित्ति कट्टु महया-महया सद्देणं जय-जय सद्दं पउंजंति ।

४. अप्पेगइया देवा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. देवां (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. दुहुदुहुगं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. राय० सू० २७६ ।

८. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियया ।

९. अतः परं 'सूरियाभे विमाणे' इति पाठोपेक्ष्यते, द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।४४७ सूत्रम् ।

अलंकरण-पदं

२८३. तए णं से सूरियाभे देवे महया-महया इंदाभिसेगेणं अभिसित्ते समाणे^१ अभिसेयसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छति, निग्गच्छत्ता जेणेव अलंकारियसभा^२ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता अलंकारियसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरे-माणे अलंकारियसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

२८४. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा अलंकारियभंडं उवट्टवेति ॥

२८५. तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिपति, अणुलिपित्ता नासा-नीसास-वाय-वोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्तां ह्यलालापेलवातिरेणं धवलं कणग-खच्चियंत-कम्मं आगासफालिय-सम्पभं दिव्वं देवदूसजुयलं नियंसेति, नियंसेत्ता हारं पिणिद्धेति, पिणिद्धेत्ता अद्धहारं पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता एगावलि पिणिद्धेति, पिणिद्धेत्ता मुत्तावलि पिणिद्धेति, पिणिद्धेत्ता रयणावलि पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता एवं—अंगयाइं केयूराइं कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं^३ दसमुद्दाणंतगं विकच्छसुत्तगं मुरविं कठमुरविं पालंबं कुडलाइं चूडा-मणिं चित्तरयणसंकडं^४ मउडं—पिणिद्धेइ, पिणिद्धेत्ता गथिम-वेदिम-पूरिम-संघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्पस्सखगं पिव अप्पाणं अलंकिय-विभूसियं करेइ, करेत्ता दहरमलय-सुगंधगंधिएहिं गायाइं भुकुडेति^५ दिव्वं च सुमणदामं पिणिद्धेइ ॥

२८६. तए णं से सूरियाभे देवे केसालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं वत्था-लंकारेणं—चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकियविभूसिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता अलंकारियसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिणिकखमइ, पडि-णिकखमित्ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छति, ववसायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे-अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे^६ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे^७ सण्णिसण्णे ॥

२८७. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगा देवा पोत्थयरयणं उवणेंति^८ ॥

सिद्धायत्तणपवेस-पदं

२८८. तते णं से सूरियाभे देवे पोत्थयरयणं गिण्हति, गिण्हत्ता 'पोत्थयरयणं मुयइ,

१. माणे (क, ख, ग, घ) ।

इति पाठो व्याख्यातोस्ति ।

२. आलंकारिया^१ (क, ख, ग) ।

५. भखंडेइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ; द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।४५१ सूत्रस्य पादटिप्प-णम् ।

३. कडिसुत्तगा (क, ख, ग, घ, च) ।

४. प्रयुक्तादर्शेषु एष पाठो नोपलभ्यते, वृत्तौ एष व्याख्यातोस्ति । भगवत्यां (६।१६०) 'एवं जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं' इति समर्पणपाठोस्ति, तद्वृत्तौ 'रयणसंकडुक्कडं'

६. सं० पा०—सीहासणे जाव सण्णिसण्णे ।

७. उवणमंति (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

मुहत्ता" पोत्थयरयणं विहाडेइ, विहाडित्ता पोत्थयरयणं वाएति, वाएत्ता धम्मियं ववसायं 'ववसइ, ववसइत्ता" पोत्थयरयणं पडिणिक्खवइ', पडिणिक्खवित्ता सीहासणातो अब्भु-ट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता ववसायसभातो पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव नंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता णंदं पुक्खरिणिं पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं तिसोवाणपडिरूवणं पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता हत्थपादं पक्खालेति, पक्खालेत्ता आयंते चोक्खे परमसुईभूए' एगं महं सेयं रययामयं विमलं सलिलपुण्णं मत्तमयमहामुहा-गित्तिसमाणं भिगारं पणेहति, पणेहित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं" *पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं सुभगाइं सोमंधियाइं पोंडरीयाइं महापोंडरीयाइं सयवत्ताइं° सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हति, गेण्हित्ता णंदातो पुक्खरिणीतो 'पच्चोत्तरति, पच्चोत्तरित्ता" जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहा-रेत्थ गमणाए ॥

२८६. तए णं 'तस्स सूरियाभस्स देवस्स" चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अण्णे य वहवे सूरियाभविमाणवासिणो' *वेमाणिया देवा य° देवीओ य अप्पेगतिया उप्पलहत्थगया जाव सहस्सपत्ताहत्थगया सूरियाभं देवं पिट्ठतो-पिट्ठतो समणुगच्छंति ।

२९०. तए णं 'तस्स सूरियाभस्स देवस्स" आभिओगिया देवा य देवीओ य अप्पेगतिया वंदणकलसहत्थगया जाव" अप्पेगतिया धूवकडुच्छुयहत्थगया हट्टुट्टु"-*चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया° सूरियाभं देवं पिट्ठतो-पिट्ठतो समणुगच्छंति ॥

२९१. तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहि जाव आयरक्खदेवसाह-स्सीहि अण्णेहिं वहहिं य" *सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं° देवेहिं य देवीहिं य सद्धि संपरिवुडे सव्विड्डीए जाव" गातियरवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिद्धायतणं" पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. राय० सू० १३ ।

२. गिण्हिति गिण्हित्ता (क, ख, ग) ; गिण्हति गिण्हित्ता (घ) ।

१४. जीवाजीवाभिगमे (३।४५७) अतोप्रे यः पाठोस्ति स प्रकरणदृष्ट्या सङ्गतोस्ति । प्रस्तुतसूत्रादर्शे स नोपलभ्यते । वृत्तिश्च संक्षिप्तास्ति किन्तु तं पाठं बिना प्रकरण-सम्बन्धो नैव जायते, स च एवमस्ति— अणुपयाहिणीकरेमाणे - अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपवि-सित्ता आलोए जिणपडिमाणं णणामं करेति, करेत्ता जेणेव मणिपेट्टिया जेणेव देवच्छंदए जेणेव जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसति, परामु-सित्ता जिणपडिमाओ पमज्जति, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधारए ण्हावेति, ण्हावित्ता सरसेणं

३. पडिणिक्खवइ (क); पडिक्खवइ (ख, ग, घ) ।

४. × (क, ख, ग, च, छ) ।

५. सं० पा०—उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं ।

६. पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. तं सूरियाभं देवं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—सूरियाभविमाणवासिणो जाव देवीओ ।

९. तं सूरियाभं देवं (क, ख, ग, च, छ) ।

१०. राय० सू० २७६ ।

११. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव सूरियाभं ।

१२. सं० पा०—बहहिं य जाव देवेहिं ।

जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता जिणपडिमाणं आलोए पणाम करेति, करेत्ता लोमहत्थयं गिण्हति, गिण्हिता 'जिणपडिमाणं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जिता' जिणपडिमाओ सुरभिणा' गंधोदएणं ष्हाएइ, ष्हाइत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायार्इ अणुलिपइ, अणुलिपइत्ता, जिणपडिमाणं अहयाइ देवदूसजुयलाइं नियंसेइ, नियंसेत्ता 'अग्गेहि वरेहि गंधेहि मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं वण्णारुहणं चुण्णारुहणं गंधारुहणं आभरणारुहणं' करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहग्गहियकरयलपब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता जिणपडिमाणं पुरतो अच्छेहि सण्हेहि' रययामएहि अच्छरसा'-तंदुलेहि अट्टट्ट' मंगले आलिहइ, तं जहा—सोत्थियं' *सिरिवच्छं नंदियावत्तं वद्धमाणं भद्दासणं कलसं मच्छं' दप्पणं ॥

० थुइ-पदं

२६२. तयाणंतरं च गं चंदप्पभ-वइरवेरुलिय'-विमलदंडं कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गंधुत्तमाणुविद्धं च धूववट्टि विणिम्मयंतं वेरुलियमयं कडुच्छयं पग्गहिय पयत्तेणं' धूवं दाऊण जिणवराणं सत्तट्ट पदाणि ओसरति, ओसरिता दसंगुलि अंजलि करियमत्थयम्मि य पयत्तेणं,' अट्टसयविमुद्धगंथजुत्तेहि अत्थजुत्तेहि'' अपुणरुत्तेहि महावित्तेहि संथुणइ, संथुणित्ता' वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टट्ट तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवाडेइ'', निवाडित्ता ईसि पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टट्ट एवं वयासी--नमोत्थुणं अरहंताणं भगवताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोमुत्तमाणं लोमणाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं

गोसीसचंदणेणं गाताइ अणुलिपइ, अणुलिपित्ता जिणपडिमाणं अहमाइ देवदूसजुयलाइं नियंसेइ, नियंसेत्ता अग्गेहि वरेहि गंधेहि मल्लेहि य अच्चेति, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं वण्णारुहणं चुण्णारुहणं गंधारुहणं आभरणारुहणं करेति, करेत्ता जिणपडिमाणं पुरतो अच्छेहि सण्हेहि रययामएहि अच्छरसा-तंदुलेहि अट्टट्ट-मंगले आलिहति, आलिहित्ता कयगाहग्गहित-करतलपब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलितं करेति, करेत्ता चंदप्पभ'

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सुरभि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. × (क, ख, ग, घ, छ) ; स्वीकृतः पाठो जीवा-जीवाभिगमवृत्तावपि (पत्र २५४) व्याख्या-

तोस्ति ।

४. सण्हेहि सेएहि (च, छ) ।

५. अच्छरसाहि (क, ख, ग, घ, च, छ) ; जीवा-जीवाभिगमवृत्तौ (पत्र २५४) अच्छरस-तन्दुलाः, पूर्वपदस्य दीर्घान्तता प्राकृतत्वात् ।

६. अट्ट (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सं० पा०—सोत्थियं जाव दप्पणं ।

८. रयणवइरवेरुइय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. पत्तयं (क, ख, ग, घ, च) ; पत्तयं (घ) ।

१०. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. संथुणित्ता सत्तट्टपयाइं पच्चोसक्कइ पच्चोस-क्कित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. निवडेइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिह्यवरणाण-
दंसणधराणं विअट्टच्छउमाणं जिणाणं जावथाणं तिष्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं
मोयगाणं सब्बण्णूणं सब्बदरिसीणं सिवं अयलं अरुअं अणंतं अक्खयं अब्बावाहं अपुणरावित्ति-
सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता—

२६३. जेणेव सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता^१
दिब्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेण गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं 'दलयइ,
दलइत्ता'^२ कयग्गहगहियं^३ *करयलपब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्ववण्णेणं कुसुमेणं पुप्फं पुंजोवयार-
कलियं करेइ, करेत्ता धूवं दलयइ, दलयित्ता—

० दाहिणिल्लं पइ गमण-पदं

२६४. जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता
लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थ-
एणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिब्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेण गोसीसचंद-
णेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तं^४
*विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्टविप्पमुक्केणं
दसद्ववण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता^५ धूवं दलयइ, दलयित्ता—

२६५. जेणेव दाहिणिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झ-
देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता बहुमज्झ-
देसभागं लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिब्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता
सरसेण गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ, आलिहित्ता कयग्गहगहियं^६ *करयल-
पब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्ववण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता^७ धूवं दलयइ,
दलयित्ता—

२६६. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए
य लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिब्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेण
गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता
आसत्तोसत्तं^४ *विउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयल-
पब्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्ववण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता^५ धूवं दलयइ,

१. उवागच्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता
सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं
पमज्जति पमज्जित्ता (क, ख, ग, घ, च,
छ) ।

२. पंचंगुलितलं ददाति (वृ); मंडलगं आलिहइ,
आलिहित्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. कयग्गह^३ (क, ख, ग, घ, छ) ।

सं० पा०—कयग्गहगहियं जाव पुंजोवयारक-
लियं ।

४. सं० पा०—आसत्तोसत्त जाव धूवं ।

५. सं० पा०—कयग्गहगहिय जाव धूवं ।

६. सं० पा०—आसत्तोसत्त कयग्गहगहिय धूवं ।

दलयित्ता—

२६७. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ला खंभपती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थं परामुसइ, परामुसित्ता खंभे य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता जहा चैव पच्चत्थिमिल्लस्स दारस्स जाव' धूवं दलयइ, दलयित्ता—

२६८. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थं परामुसति, परामुसित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता तं चैव' सव्वं ॥

२६९. जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दारचेडाओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता तं चैव' सव्वं ॥

३००. जेणेव दाहिणिल्ले पेच्छाघरमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्जदेसभागे जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेडिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थं परामुसइ, परामुसित्ता अक्खाडगं च मणिपेडियं च सीहासणं च लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसत्तदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं *जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गह्गहियकरयलं पम्भट्टविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ, दलयित्ता—

३०१. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे° तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चैव' ॥

३०२. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे (उत्तरिल्ला खंभपती° ?) तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चैव ॥

३०३. जेणेव दाहिणिल्लरस पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चैव ॥

३०४. जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° तं चैव ॥

१. राय० सू० २६६ ।

२. राय० सू० २६६ ।

३. राय० सू० २६६ ।

४. सं० पा०—पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं ।

५. सं० पा०—पच्चत्थिमिल्ले दारे तं चैव, उत्तरिल्ले दारे तं चैव, पुरत्थिमिल्ले दारे तं चैव, दाहिणिल्ले दारे तं चैव ।

६. राय० सू० २६६ ।

७. यथा—२६७ सूत्रे 'उत्तरिल्ला खंभपती,' ३२५, ३३० सूत्रयोः 'दाहिणिल्ला खंभपती' ३३५, ३४० सूत्रयोः 'पच्चत्थिमिल्ला खंभपती'—इति पाठो विद्यते, अतः अस्मिन् सूत्रे 'उत्तरिल्ले दारे' इत्यस्य स्थाने 'उत्तरिल्ला खंभपती' इति पाठो युज्यते । किन्तु एष पाठो वृत्तौ प्रतिषु च क्वापि नोपलब्धः तेन मूलपाठे 'उत्तरिल्लेदारे' इत्येव सुरक्षितः ।

३०५. जेणेव दाहिणिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' *लोमहृत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता चेइयं थूभं च मणिपेढियं च' *लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता° दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं' *जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय-मल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपढभट्टुविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपूंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ, दलयित्ता--

३०६. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणपडिमाए आलोए पणामं करेइ, करेत्ता तं चेव' ॥

३०७. जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव' सव्वं ॥

३०८. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव' ॥

३०९. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवाग-च्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव' सव्वं ॥

३१०. जेणेव दाहिणिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ, 'उवागच्छित्ता लोमहृत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता चेइयरुक्खं च मणिपेढियं च लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता° तं चेव' ॥

३११. जेणेव दाहिणिल्ले महिदज्जए' *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहृत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता महिदज्जयं च मणिपेढियं च लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता° तं चेव' सव्वं ॥

३१२. जेणेव दाहिणिल्ला नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहृत्थगं परामुसित्ति, परामुसित्ता तोरणं य तिसोवाणपडिरूवए य सालभजियाओ य वालरूवए य लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं' *चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपढभट्टु-विप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फपूंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयति, दलयित्ता--

० उत्तरिल्लं पइ गमण-पदं

३१३. सिद्धायतणं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला नंदापुक्खरिणी तेणेव

१. सं० पा०—उवागच्छित्ता थूभं ।

९. राय० सू० २९४ ।

२. सं० पा०—मणिपेढियं च दिव्वाए ।

१०. सं० पा०—महिदज्जए तं चेव ।

३. सं० पा०—पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं ।

११. राय० सू० २९४ ।

४. राय० सू० २९१, २९२ ।

१२. सं० पा०—गोसीसचंदणेणं पुप्फारुहणं आस-
त्तोसत्त धूवं ।

५, ६, ७. राय० सू० २९१, २९२ ।

८. सं० पा०—उवागच्छइ तं चेव ।

उवागच्छति, उवागच्छिता तं चेव' ॥

३१४. जेणेव उत्तरिल्ले महिदज्जाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३१५. जेणेव उत्तरिल्ले चेइयसुखे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ॥

३१६. जेणेव उत्तरिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३१७. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा' *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं चेव' ॥

३१८. जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं चेव' ॥

३१९. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं चेव' ॥

३२०. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं चेव' ॥

३२१. जेणेव उत्तरिल्ले पेच्छाघरमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्झदेसभागे जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता जा चेव दाहिणिल्ले वत्तव्वया सा चेव' सव्वा ॥

३२२. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२३. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२४. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२५. जेणेव उत्तरिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ला खंभपती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२६. जेणेव उत्तरिल्लस्स दारे मुहमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२७. जेणेव उत्तरिल्ले मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२८. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३२९. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ,

१. राय० सू० ३१२ ।

२. राय० सू० ३११ ।

३. राय० सू० ३१० ।

४. सं० पा०—जिणपडिमा तं चेव ।

५, ६, ७, ८. राय० सू० ३०६ ।

९. राय० सू० ३०० ।

१०, ११, १२. राय० सू० २९६ ।

१३. राय० सू० २९७ ।

१४. राय० सू० २९५ ।

१५, १६. राय० सू० २९६ ।

उवागच्छिता^१ ॥

३३०. जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ला खंभपती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^१ ॥

३३१. जेणेव सिद्धायतणस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता तं चेव^१ ॥

० पुरत्थिमिल्लं पइ गमण-पदं

३३२. जेणेव सिद्धायतणस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^१ ॥

३३३. जेणेव पुरत्थिमिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभासे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^१ ॥

३३४. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे^१ *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^१ ॥

३३५. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ला खंभपती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^१ ॥

३३६. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^१ ॥

३३७. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ॥^०

३३८. जेणेव पुरत्थिमिल्ले पेच्छाघरमंडवे^{१०} *जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघर-मंडवस्स बहुमज्झदेसभाए जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^१ ॥

३३९. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^१ ॥

३४०. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ला खंभपती तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^१ ॥

३४१. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता^१ ॥

१. राय० सू० २६६ ।

२. राय० सू० २६७ ।

३. राय० सू० २६४ ।

५. राय० सू० २६५ ।

६. सं० पा०—दाहिणिल्ले दारे पच्चत्थिमिल्ला खंभपती उत्तरिल्ले दारे तं चेव पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव ।

७. राय० सू० २६६ ।

८. राय० सू० २६७ ।

९. राय० सू० २६६ ।

१०. सं० पा०—पेच्छाघरमंडवे एवं थूभे जिण-पडिमाओ चेइयरुक्खा महिदउक्कया नंदापुक्ख-रिणी तं चेव जाव धूवं दलइ रत्ता ।

११. राय० सू० ३०० ।

१२. राय० सू० २६७ ।

१३. राय० सू० २६७ ।

१४. राय० सू० २६६ ।

३४२. जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४३. जेणेव पुरत्थिमिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४४. जेणेव दाहिणिल्ला मणिपेढिया जेणेव दाहिणिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४५. जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४६. जेणेव उत्तरिल्ला मणिपेढिया जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४७. जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४८. जेणेव पुरत्थिमिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३४९. जेणेव पुरत्थिमिल्ले महिदज्झए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३५०. जेणेव पुरत्थिमिल्ला नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

सुहम्मसभापवेस-पदं

३५१. जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसिता जेणेव' माणवए चेइयखंभे जेणेव वइरामया गोलवट्टसमुग्गा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता लोमहत्थेणं परामुसइ, परामुसिता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जिता वइरामए गोलवट्टसमुग्गए विहाडेइ, विहाडेता जिणसकहाओ लोमहत्थेणं पमज्जइ, पमज्जिता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालेता अग्गेहि वरेहिं गंधेहि य मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेता धूवं दलयइ, दलयिता जिणसकहाओ वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु पडिणिकिखवइ, पडिणिकिखवित्ता माणवगं चेइयखंभं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जिता दिग्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयिता पुप्फारुहणं जाव' धूवं दलयइ,

१. राय० सू० २९६ ।

२. राय० सू० ३०५ ।

३,४,५. राय० सू० ३०६ ।

६. राय० सू० ३०६ ।

७. राय० सू० ३१० ।

८. राय० सू० ३११ ।

९. राय० सू० ३१२ ।

१०. अतः 'पडिणिकिखवइ' पर्यन्तं वृत्ती (पृष्ठ २६४) भिन्नः पाठो व्याख्यातोस्ति—यत्रैव मणिपीठिका तत्रागच्छति, आलोके च जिनसकथां प्रणामं करोति, कृत्वा यत्र माणवक-

चैत्यस्तम्भो यत्र वज्रमयाः गोलवृत्ताः समुद्रकाः तत्रागत्य समुद्रकान् गृह्णाति, गृहीत्वा विघाटयति, विघाट्य च लोमहस्तकं परामृश्य तेन प्रमाज्यं उदकधारया अभ्युक्ष्य गोक्षीर्षचन्दनेनानुलिम्पति, ततः प्रधानगन्धमाल्यैरर्चयति धूपं दहति, तदनन्तरं भूयोऽपि वज्रमयेषु गोलवृत्तसमुद्रकेषु प्रतिनितिक्षिपति । द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिममस्य—३।५।१६ सूत्रम् ।

११. राय० सू० २९४ ।

दलयित्ता—

३५२. जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे' *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थयं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता तं चेव' ॥

३५३. जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे' *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थयं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च देवसयणिज्जं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता° तं चेव' ॥

३५४. जेणेव मणिपेढिया जेणेव खुड्डागमहिदज्जए' *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थयं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च खुड्डागमहिदज्जयं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता° तं चेव' ॥

३५५. जेणेव पहरणकोसे चोप्पालए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहत्थयं परामुसइ, परामुसित्ता फलिहरयणपामोक्खाइं पहरणरयणाइं' लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलयित्ता पुप्फारुहणं' *जाव आभरणाहरुणं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदाम-कलावं करेइ, करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपढ्ढट्टविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं पुप्फ-पुंजोवयारकलियं करेइ, करेत्ता° धूवं दलयइ, दलयित्ता—

३५६. जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्जदेसभाए' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव'° धूवं दलयइ, दलयित्ता—

३५७. जेणेव सभाए सुहम्माए दाहिणिल्ले दारे'° *तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

१. सं० पा०—सीहासणे तं चेव ।

२. राय० सू० २६४ ।

३. सं० पा०—देवसयणिज्जे तं चेव ।

४. राय० सू० २६४ ।

५. सं० पा०—खुड्डागमहिदज्जए तं चेव ।

६. राय० सू० २६४ ।

७. पहरणकोसे चोप्पालं (क, ख, ग, घ, च, छ) ; २४६ सूत्रस्य सन्दर्भे आदर्शगतः पाठः सम्यग् न प्रतिभाति ।

८. सं० पा०—पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं ।

९. प्रस्तुतसूत्रस्य तथा जीवाजीवाभिगमस्य (पत्र ३५७) सभायाः सुधर्माया बहुमध्यदेशभागेऽर्चनिका पूर्ववत् करोति—इति विवरणानुसारी पाठोत्र स्वीकृतः । यद्यपि प्रतिषु जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्जदेसभाए जेणेव मणिपेढिया

जेणेव देवसयणिज्जे तेणेव—इति पाठोस्ति किन्तु 'जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे' अयं पाठः पूर्वपंक्तावेवागतस्तेन पुनर्न युज्यते ।

१०. राय० सू० २६३ ।

११. सं० पा०—दाहिणिल्ले दारे तहेव अभिसेयसभासरिसं जाव पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २ ता तोरणे य तिसोवाणे य सालिभंजियाओ बालरूवए य तहेव, जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता तहेव सीहासणे च मणिपेढियं च सेसं तहेव आययणसरिसं जाव पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता जहा अभिसेयसभा तहेव सव्वं जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता तहेव लोमहत्थयं परामुसइ, पोत्थयरयणे लोमहत्थएणं पमज्जइ २ ता दिव्वाए दगधाराए

३५८-३७५. (जहा २६४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

३७६. सभं सुहम्मं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ॥

३७७-३९३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

३९४. जेणेव सभाए सुहम्माए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

३९५. जेणेव सभाए सुहम्माए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता--

३९६-४१३. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

० उववायसभापवेस-पदं

४१४. जेणेव उववायसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता उववायसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ अणुपविसिता जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसिता मणिपेढियं च देवसयणिज्जं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जिता' ॥

४१५. जेणेव उववायसभाए बहुमज्जदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

४१६. जेणेव उववायसभाए दाह्णिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता--

४१७-४३४. (जहा २६४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

४३५. उववायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता--

४३६-४५२. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

४५३. जेणेव उववायसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता' ॥

४५४. जेणेव उववायसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता--

४५५-४७२. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

४७३. जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसिता तोरणे य तिसोवाणपडिरूवए य सालभंजियाओ य बालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जिता' ॥

० अभिसेगसभापवेस-पदं

४७४. जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अभिसेयसभं पुरत्थि-

अर्धोहि वरोहि य गंधोहि भल्लोहि य अच्चेइ
२ ता मणिपेढियं सीहासणे च सेसं तं चेव,
पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी । (जेणेव हरए
तेणेव उवागच्छइ २ ता तोरणे य तिसोवाणं
य सालभंजियाओ य बालरूवए य तहेव) ।
कोष्ठकवर्ती पाठः सर्वासुप्र तिषु वर्तते, किन्तु अस्य
सूत्रस्य वृत्तौ (पृष्ठ २६७) तथा जीवाजीवा-
भिगमस्य वृत्तौ (पत्र २५८) चापि तासौ

व्याख्यातोस्ति । उपपातसभाया अनन्तरमसौ
पाठोऽविकलरूपेण समायातः । संभवतः
लिपिदोषेण सोत्रापि पुनर्लिखितः ।

१. राय० सू० ३३१ ।

२. राय० सू० २६४ ।

३. राय० सू० २६३ ।

४. राय० सू० ३३१ ।

५. राय० सू० ३३२ ।

मिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहृत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता' ॥

४७५. जेणेव अभिसेयभंडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहृत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता अभिसेयभंडं लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता' ॥

४७६. जेणेव अभिसेयसभाए बहुमज्जदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' ॥

४७७. जेणेव अभिसेयसभाए दाह्णिगिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

४७८-४८५. (जहा २६४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

४८६. अभिसेयसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

४८७-५१३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

५१४. जेणेव अभिसेयसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' ॥

५१५. जेणेव अभिसेयसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५१६-५३३. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

० अलंकारसभापवेस-पदं

५३४. जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अलंकारियसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहृत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता' ॥

५३५. जेणेव अलंकारियभंडे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोमहृत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता अलंकारियभंडं लोमहृत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता' ॥

५३६. जेणेव अलंकारियसभाए बहुमज्जदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' ॥

५३७. जेणेव अलंकारियसभाए दाह्णिगिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५३८-५५५. (जहा २६४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

५५६. अलंकारियसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५५७-५७३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

५७४. जेणेव अलंकारियसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' ॥

५७५. जेणेव अलंकारियसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५७६-५८३. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

१,२. राय० सू० २६४ ।

३. राय० सू० २६३ ।

४. राय० सू० ३३१ ।

५,६. राय० सू० २६४ ।

७. राय० सू० २६३ ।

८. राय० सू० ३३१ ।

० ववसायसभापवेस-पदं

५६४. जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ववसायसभं पुरत्थि-
मिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पोत्थयरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता पोत्थयरयणं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता
दिब्बाए दग्धाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता
अग्गेहि वरेहि य गंधेहि मल्लेहि य अच्चेइ, अच्चेत्ता पुप्फारुहणं^१ ॥

५६५. जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता लोम-
हत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ,
पमज्जित्ता^२ ॥

५६६. जेणेव ववसायसभाए बहुमज्जदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता^३ ॥

५६७. जेणेव ववसायसभाए दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

५६८-६१५. (जहा २६४-३१२ सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

६१६. ववसायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा पुक्खरिणी तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

६१७-६३३. (जहा ३१३-३३० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि) ॥

६३४. जेणेव ववसायसभाए उत्तरिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता^४ ॥

६३५. जेणेव ववसायसभाए पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता—

६३६-६५३. (जहा ३३२-३५० सुत्ताणि तहेव णेयव्वाणि)^० ॥

० सूरियाभविमाणे अच्चणिया-पदं

६५४. 'जेणेव वलिपीढे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वलिविसज्जणं करेइ, करेत्ता
आभियोगिए देवे सद्दावेइ", सद्दावेत्ता एवं वयासी —खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सूरियाभे
विमाणे सिघाडएसु तिएसु चउक्केसु चच्चरेसु चउम्महेसु महापहपहेसु पागारेसु^५ अट्टालएसु
चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु आरामेसु उज्जाणेसु काणणेसु वणेसु वणसंडेसु
वणराईसु^६ अच्चणियं करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥

६५५. तए णं ते आभियोगिया देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा^७ *हड्डुत्तु-
चित्तमाणंदिथा पीडमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं
दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं
पडिसुणंति^८, पडिसुणेत्ता सूरियाभे विमाणे सिघाडएसु तिएसु चउक्कएसु चच्चरेसु

१, २. राय० सू० २६४ ।

३. राय० सू० २६३ ।

४. राय० सू० ३३१ ।

५. वृत्ती (पृष्ठ २६७) अस्य पाठस्य स्थाने भिन्नः
पाठो व्याख्यातोस्ति—बलिपीठे समागत्य तस्य
बहुमध्यदेशभागवत् अर्चनिकां करोति, कृत्वा
च आभियोगिकदेवान् शब्दापयति । बलि-

विसज्जणं करेइ' इति पाठः ६५६ सूत्रे 'तए णं
से सूरियाभे देवे' इति पाठान्तरं व्याख्यात-
मस्ति ।

६. पागारएसु (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. वणेसु वणराईसु काणणेसु वणसंडेसु (क, ख,
ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—समाणा जाव पडिसुणेत्ता ।

चउम्मुहेसु महापहपहेसु पागारेसु अट्टालएसु चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु आरामेसु उज्जाणेषु काणणेषु वणेषु वणसंडेसु वणराईसु अच्चणियं करेति, करेता जेणेव सूरियाभे देवे' *तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छिता सूरियाभं देवं करयलपरिगगहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता तमाणत्तियं० पच्चप्पिणंति ॥

० नंदापुक्खरिणी-गमण-पदं

६५६. तए णं से सूरियाभे देवे जेणेव णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता नंदं पुक्खरिणि पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति, पच्चोरुहिता हत्थपाए पक्खालेइ, पक्खालेत्ता णंदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरेइ, पच्चुत्तरेत्ता जेणेव सभा सुधम्मा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

० सुहम्मसभा-निसीदण-पदं

६५७. तए णं से सूरियाभे देवे चउर्हि सामाणियसाहस्सीहि जाव सोलर्हि आयरक्ख-देवसाहस्सीहि अण्णेहि य' वूर्हि सूरियाभविमाणवासीहि वेमाणिर्हि' देवेहि य देवीहि य सर्द्धि संपरिवुडे सव्विड्ढीए' *सव्वजुतीए सव्ववलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूर्ईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुष्पगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडियसद्दसण्णिनाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया वलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमम-पडुप्प-वाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहिनिगघोस० नाइयरवेणं जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसिता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सणिसण्णे ॥

६५८. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ चउसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति ॥

६५९. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पुरत्थिमेणं चत्तारि अग्गमहिसीओ चउसु भद्दासणेसु' निसीयंति ॥

६६०. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपुरत्थिमेणं अम्भितरियाए परिताए अट्ट देवसाहस्सीओ अट्टसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति ॥

६६१. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणेणं मज्झिमाए परिताए दस देवसाह-

१. सं० पा०—देवे जाव पच्चप्पिणंति ।

५. सं० पा०—सव्विड्ढीए जाव नाइयरवेणं ।

२. वृत्ती (पृष्ठ २६८) भिन्नः पाठो व्याख्या-तोस्ति—ततः सूर्याभदेवो बलिपीठे बलिवि-सर्जनं करोति, कृत्वा चोत्तरपूर्वां नन्दापुष्क-रिणीमनुप्रदक्षिणीकुर्वन् पूर्वतोरणेनानुप्रविशति अनुप्रविश्य च हस्तौ पादौ प्रक्षालयति । द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य ३।५५६ सूत्रम् ।

६. ४१ सूत्रे उत्तरेणं पाठोस्ति तदनुसारेणात्राप्यसौ युज्यते । जीवाजीवाभिगमे (३।५५८) प्यस्मिन्नेव प्रकरणे चासौ विद्यते ।

७. ४२ सूत्रे 'चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ' इति पाठोस्ति । अत्र 'चउसु भद्दासणेसु निसीयंति' तत्र संभवतः सपरिवारवर्णने साहस्सीओ इति पाठः कृतः ।

३. X (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. वेमाणिय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

स्सीओ दसहि भद्दासणसाहस्सीहि निसीयंति ॥

६६२. तए ण तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाह्णिपच्चत्थिमेणं बाहिरियाए परिसाए वारस देवसाहस्सीतो वारसहि भद्दासणसाहस्सीहि निसीयंति ॥

६६३. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पच्चत्थिमेणं सत्त अणियाहिवइणो सत्तहि भद्दासणेहि णिसीयंति ॥

६६४. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चउट्ठिसि सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ सोलसहि भद्दासणसाहस्सीहि णिसीयंति, तं जहा—पुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि साहस्सीओ, दाह्णिणेणं चत्तारि साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ, ते णं आयरक्खा सण्णद्ध-वद्ध-वम्मियकवया उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध'-विमल-वरचिधपट्टा गहियाउहपहरणा ति-णयाणि ति-संधीणि वयरामय-कोडीणि धणूइं पणिज्ज परिआइय-कंडकलावा णीलपाणिणो पीतपाणिणो रत्तपाणिणो चाव-पाणिणो चारुपाणिणो चम्मपाणिणो दंडपाणिणो खगपाणिणो पासपाणिणो नील-पीय-रत्त चाव-चारु-चम्म-दंड-खग-पासधरा' आयरक्खा रक्खोवगा गुत्ता गुत्तपालिया जुत्ता जुत्त-पालिया पत्तेयं-पत्तेयं समयओ विणयओ 'किंकरभूया इव' चिट्ठंति' ॥

० सूरियाभ-वण्णग-पदं

६६५. सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

६६६. सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । एमहिड्ढीए एम-हज्जुईए एमहव्वले एमहायसे एमहासोव्वे एमहाणुभागे सूरियाभे देवे । 'अहो णं' भंते ! सूरियाभे देवे महिड्ढीए' *महज्जुईए महव्वले महायसे महासोव्वे° महाणुभागे ॥

६६७. सूरियाभेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुई से दिव्वे देवाणुभागे—किण्णा° लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? पुव्वभवे के आसी ? किणामए वा ? को वा गोत्तेणं ? कयरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संवाहंसि वा सण्णिवेसंसि वा ? किं वा दच्चा ? किं वा भोच्चा ? किं वा किच्चा ? किं वा समायरित्ता ? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा 'माहणस्स वा' अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म जण्णं सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी' *सा दिव्वा देवज्जुई से दिव्वे° देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ?

१. बद्धआविद्ध (च, छ) ।

२. पासवरधरा (क, ख, ग, घ, च) ।

३. 'भूयाइ (च); 'भूयाइं (छ) ।

४. भतोत्रे 'छ' प्रती 'एएहि चउहि सामाणिय-साहस्सीहि जाव दिव्वाइं'; वृत्तौ (पृष्ठ २७१) च—तेहि चउहि सामाणियसाहस्सीहि, इत्यादि सुगमं, यावत् 'दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे

विहरति' । द्रष्टव्यं जीवाजीवाभिगमस्य

३।५६३ सूत्रम् ।

५. अभ्हाणं (छ) ।

६. सं० पा०—महिड्ढीए जाव महाणुभागे ।

७. किण्हा (च) ।

८. × (क, ख, ग, घ) ।

९. सं० पा०—देविड्ढी जाव देवाणुभागे ।

पएसि-कहाणगं

केयइ-अद्ध-पदं

६६८. गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेषं कालेणं तेषं समएणं इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे केयइ^१-अद्धे नामं जणवए होत्था—रिद्ध^२-त्थिमियसमिद्धे पासादीए^३ *दरिसणिज्जे अभिरूवे^४ पडिरूवे ॥

सेयविया-पदं

६६९. तत्थ णं केइय^५-अद्धे जणवए सेयविया णामं नगरी होत्था—रिद्ध-त्थिमिय-समिद्धा जाव^६ पडिरूवा ॥

मिगवण-पदं

६७०. तीसे णं सेयवियाए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं मिगवणे णामं उज्जाणे होत्था—रम्मे नंदणवणप्पगासे सव्वोउय-पुष्फ^७-फलसमिद्धे सुभसुरभिनीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासादीए^८ *दरिसणिज्जे अभिरूवे^९ पडिरूवे ॥

पएसि-पदं

६७१. तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसि णामं राया होत्था—महयाहिमवंत^{१०}-*महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे अच्चंतविसुद्ध-दीहरायकुल-वंससुप्पसूए णिरंतरं रायलक्खण-विराइ-यंगमंगे बहुजणवहुमाणपूइए सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुइए मुद्धाहिसित्ते माउपिउसुजाए दयपत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुंसिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए सेउकरे केउकरे नरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए पुरिस-वरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिन्न-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुधण-वहुजायरूवरयए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डिय-पउरभत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए पडिपुण्ण-जंत-कोस-कोट्टागाराउधगारे वलवं दुव्वलपच्चामित्ते—ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं ओहयसत्तुं निहयसत्तुं मलियसत्तुं उद्धियसत्तुं

१. केइ (छ) ।

२. रिद्धि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे ।

४. केयइ (छ) ।

५. ओ० सू० १ ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सं० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे ।

८. सं० पा०—महयाहिमवंत जाव विहरइ ।

निज्जियसत्तुं पराइयसत्तुं ववगयदुब्भिवखं मारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिवखं पसंतडिबड-मरं रज्जं पसासेमाणे° विहरइ । अधम्मिए अधम्मिट्ठे अधम्मकखाई अधम्माणुए अधम्मपलोई अधम्मपलज्जणे° अधम्मसीलसमुयाचारे अधम्मेण चैव वित्तिं कप्पेमाणे हण-छिद-भिद-पवत्तए° 'लोहियपाणी पावे चंडे रुद्दे खुद्दे' साहस्सीए उक्कंचण-वंचण°-माया-नियडि-कूड-कवड-साइसंपओगबहुले° निस्सीले निव्वए निम्मुणे निम्मेरे निप्पच्चवखाणपोसहोववासे, बहूणं दुप्पय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सरिसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणयाए° अधम्मकेऊ समुट्टिए,° गुरूणं णो अब्भुट्ठेइ णो विणयं पउंजइ, 'समण-माहणाणं नो अब्भुट्ठेइ नो विणयं पउंजइ', सयस्स वि य णं जणवयस्स णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ ॥

सूरियकंता-पदं

६७२. तस्स णं पएसिस्स रण्णो सूरियकंता नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया°
 *अहीणपडिपुण्णपंचिदियसरीरा लक्खणवंचणगुणोववेया माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजाय-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमाकारकंतपियदंसणा सुरूवा करयलपरिमियपसत्थितिवलीवलियमज्झा कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुइरयणियरविमलपडिपुण्णसोमवयणा सिगारागार चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवया रकुसला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा°, पएसिणा रण्णा सद्धि अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्द°-
 *फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणी° विहरइ ॥

सूरियकंत-पदं

६७३. तस्स णं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए° *अहीणपडिपुण्णपंचिदियसरीरे लक्खणवंचणगुणोववेए माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे° पडिरूवे° ॥

१. °पज्जणे (क, ख, ग); °पज्जवमाणे (घ); °पज्जणे (च, छ, वृ); वृत्तौ 'अधम्मपज्जणे' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—'अधमं प्रकर्षेण जनयति—उत्पादयति लोकानामपीत्यधमं-प्रजननः' । वृत्तिकारेण यादृशः पाठो लब्ध-स्तादृशो व्याख्यातः । किन्तु अत्यागमानां संदर्भेसौ पाठो विचार्यते तदा 'अधम्मपलज्जणे' इति पाठः संगतिमर्हति । सूत्रकृतान्ते (२।२। ५७) 'अधम्मपलज्जणा' इति पाठोस्ति । औपपातिके (सू० १६१) 'धम्मपलज्जणा' इति पाठोस्ति । अत्रापि 'अधम्मपलज्जणे' पाठ आसीत् । पाठसंशोधने प्रयुक्तादर्शत्रयेभ्योऽस्य पुष्टिर्जायते । तत्र 'पज्जणे' इति पाठो लभ्यते । अत्र लकारो लिपिदोषेण त्यक्तोस्ति । केषु-

चिदादर्शेषु लिपिदोषेण वर्णविपर्ययो जातस्तेन 'अधम्मपज्जणे' इति पाठः संवृत्तः ।
 २. भिदा० (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
 ३. चंडे रुद्दे खुद्दे लोहियपाणी (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
 ४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
 ५. °संपओगे (क, ख, ग, च) ।
 ६. उच्छणयाउ (क, ख, ग, च, छ) ।
 ७. समट्टिओ (क, ख, ग, घ) ।
 ८. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
 ९. सं०पा०—सुकुमालपाणिपाया धारिणी वण्णओ ।
 १०. सं० पर०—सद्द जाव विहरइ ।
 ११. सं० पा०—सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे ।
 १२. सुकुमालपाणिपाए जाव सुन्दरे (वृ) ।

६७४. से णं सुरियकंते कुमारे जुवराया वि होत्था । पएसिस्स रण्णो रज्जं च रट्ठं च वलं च वाहणं च 'कोसं च' कोट्टारं च पुरं च अंतेउरं च' सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥

चित्त-सारहि-पदं

६७५. तस्स णं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे भाउय-वयंसए चित्ते णामं सारही होत्था — अड्ढे* दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे° बहुजणस्स अपरिभूए साम-दंड-भेय-उवप्पयाण-अत्थसत्थ-ईहामइविसारए, उप्पत्तियाए वेणत्तियाए कम्मयाए पारिणामियाए—चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुवेसु य 'मंतेसु य'° 'रहस्सेसु य गुज्जेसु य सावत्थीरहस्सेसु य निच्छएसु य'° ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे° मेढी पमाणं आहारे आलंवणं चक्खू, मेढिभूए पमाणभूए आहारभूए आलंवणभूए चक्खुभूए, सव्वट्ठाणं-सव्वभूमियासु लद्धपच्चए° विदिण्णविचारे रज्जधुराचितए आवि होत्था ॥

कुणाला-पदं

६७६. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला° नामं जणवए होत्था—रिद्ध-त्थिमियसमिद्धे° *पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे° ॥

सावत्थी-पदं

६७७. तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नामं नयरी होत्था—रिद्ध-त्थिमियसमिद्धा जाव° पडिरूवा ॥

कोट्ठय-पदं

६७८. तीसे णं सावत्थीए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए कोट्टए नामं चेइए होत्था—पोराणे° जाव° पासादीए ॥

जियसत्तु-पदं

६७९. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पएसिस्स रण्णो अंतेवासी जियसत्तु नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिदसारे जाव° रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥

पाहुड-उवणयण-पदं

६८०. तए णं से पएसी राया अण्णया कयाइ महत्थं महर्धं महर्हिं विउलं रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ, सज्जावेत्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छ णं

१. × (क, ख, ग, घ, च) ।

२. कोट्टागारं (छ) ।

३. च जणवयं च (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—अड्ढे जाव बहुजणस्स ।

५. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. गुज्जेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य (वृ) ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सव्वट्ठा (क, ख, ग, घ, छ) ।

९. लद्धओवलद्धपच्चए (छ) ।

१०. कुणाल (क,ख,ग,घ,च) ।

११. सं० पा०—°समिद्धे ।

१२. ओ० सू० १ ।

१३. अत्र 'चिराइए' स्थाने 'पोराणे' पाठः प्रतीयते ।

१४. ओ० सू० २-७ ।

१५. राय० सू० ६७१ ।

चित्ता ! तुमं सार्वत्थि नगरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं^१ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^२ पाहुडं उवणेहिं^३, जाइं तत्थ रायकज्जाणि य रायकिच्चाणि य रायणीईओ य रायववहारा^४ य ताइं जियसत्तुणा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहिं त्ति कट्टु विसज्जिए ॥

६८१. तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठं^५ *तुट्ठ-चित्तमाणं-दिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइं^६, पडिसुणेत्ता तं महत्थं^७ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^८ पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता पएसिस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं महत्थं^९ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^{१०} पाहुडं ठवेइ, ठवेत्ता कोडुंविउपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणु-प्पिया ! सच्छत्तं^{११} *सज्जयं सघटं सपडागं सतोरणवरं सनंदिघोसं सखिखिणि-हेमजाल-परिखित्तं हेमवथ-चित्त-विचित्त-तिणिस-कणगणिज्जुत्तदारुयायं सुसंपिणद्धारकमंडलधुरायं कालायससुकयणेमिजंतकम्मं आइणवरतुरगसुसंपउत्तं कुसलणरच्छेयसारहिंसुसंपरिग्गहियं सरसयबत्तीसतोणपरिमंडियं सकंकडावयंसगं सचाव-सर-पहरण-आवरण-भरियजोहजुज्झ-सज्जं^{१२} चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेहं^{१३}, उवट्ठवेत्ता एयमाणत्तियं^{१४} पच्चप्पिणह ॥

६८२. तए णं ते कोडुंविउपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

६८३. तए णं से चित्ते सारही कोडुंविउपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं^{१५} *सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^{१६} हियए प्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते सण्णद्ध-वद्ध-वम्मियकवए उप्पीलिय-सरासण-पट्टिए पिणद्धगेविज्जविमलं^{१७}-वरचिधपट्टे गहियाउहपहरणे तं महत्थं^{१८} *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^{१९} पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घटं आसरहं दुरुहेति, दुरुहेत्ता बहुहिं पुरिसेहिं सण्णद्धं^{२०}-वद्ध-वम्मियकवए उप्पीलिय-सरासणपट्टिए पिणद्धगेविज्जविमल-वरचिधपट्टे गहियाउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं-धरेज्जमाणेणं महया भड-चडगर-रहपहकर-विदपरिखित्ते^{२१} साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, सुहेहिं

१. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

२. अवणेहिं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. ववहारा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—हट्ठ जाव पडिसुणेत्ता ।

५. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

६. सं० पा०--महत्थं जाव पाहुडं ।

७. सं० पा०—सच्छत्तं जाव चाउग्घटं ।

८. सं० पा०—उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह ।

९. सं० पा०—एयमट्ठं जाव हियए ।

१०. सनद्धगेविज्जवद्धवद्धविमल (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

१२. सं० पा०—सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणेहिं ।

१३. पंडुपरिं (क, ख, ग, घ, छ) ।

वासोर्हि पायरासोर्हि नाइविकिट्ठोर्हि अंतरा वासोर्हि वसमाणे-वसमाणे केयइ-अद्धस्स^१ जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कुणालाजणवए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छइ, सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो गिहे जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरए निगिण्हइ, रहं ठवेति, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं^२ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^३ पाहुडं गिण्हइ, जेणेव अंब्भतरिया उवट्ठाणसाला जेणेव जियसत्तु राया तेणेव उवागच्छइ, जियसत्तु रायं करयलपरिग्गहियं^४ *दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं^५ कट्टु जएणं विजएणं वट्ठावेइ, तं महत्थं^६ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^७ पाहुडं उवणेइ ॥

६८४. तए णं से जियसत्तु राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं^८ *महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^९ पाहुडं पडिच्छइ^{१०}, चित्तं सारर्हि सक्कारेइ सम्माणेइ^{११} पडिविसज्जेइ, रायमग्गमोगाढं च से आवासं दलयइ ॥

चित्तस्स आवास-पदं

६८५. तए णं से चित्ते सारही विसज्जिते समाणे जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव 'चाउघटं आसरहे'^{१२} तेणेव उवागच्छइ, चाउघटं आसरहं दुरुहइ, सावत्थि नगरि मज्झंमज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, तुरए निगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकिए जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे पुक्वावरण्हकालसमयंसि गंधव्वेहि य णाडगेहि य उवन्नच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

केसि-आगमण-पदं

६८६. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमार-समाणे जातिसंपण्णे कुल-संपण्णे वलसंपण्णे रूवसंपण्णे विणयसंपण्णे नाणसंपण्णे दंसणसंपण्णे चरित्तसंपण्णे लज्जा-संपण्णे लाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी^{१३} जसंसी^{१४} जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियणिहे जित्तिदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे^{१५} गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे निच्छयप्पहाणे^{१६} अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे भुत्तिप्पहाणे^{१७} मुत्तिप्पहाणे विज्जप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे

१. अद्धए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

३. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु ।

४. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

५. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

६. पिच्छइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. चाउघटं आसरहं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. वच्चंसि सोहग्गंसि (छ) ।

१०. जसंसि वार्यंसि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. वयप्पहाणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१३. × (क, ख, ग, घ, च) ।

वेयप्पहाणे' नयप्पहाणे' नियमप्पहाणे' सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे ओराले' *घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विपुलतेयलेस्से °चउदसपुव्वी चउणाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धि संपरिवुडे पुव्वाणु-पुर्व्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्टुए चेइए तेणेव उवागच्छइ, सावत्थीनयरीए वहिया कोट्टुए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

चित्तस्स जिण्णासा-पदं

६८७. तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया जणसहे इ वा जणवूहे' इ वा 'जणवोले इ वा' जणकलकले इ वा 'जणउम्मी इ वा' जणसण्णिवाए इ वा *वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जातिसंण्णे' पुव्वाणुपुर्व्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नगरीए वहिया कोट्टुए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं महक्कलं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं थेराणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्टस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! केसि कुमार-समणं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो ।

एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं दुपडोयारेणं—राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता, अण्णे य वहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुविय-इब्भ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभित्तयो अप्पेगइया वंदणवत्तियं अप्पेगइया पूयणवत्तियं अप्पेगइया सक्कारवत्तियं अप्पेगइया सम्माणवत्तियं अप्पेगइया दंसणवत्तियं अप्पेगइया कोऊहलवत्तियं अप्पेगइया अस्सुयाइं सुणेस्सामो सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो अप्पेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, अप्पेगइया गिहि-धम्मं' पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जीयमेयंति कट्टु पहाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सिरसा कंठेमालकडा आविद्धमणिसुवण्णा कप्पियहारद्धहार-तिसर-पालं व-

१. × (क, ख, ग, घ, च) ।

पज्जुवासइ ।

२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. राय० सू० ६८६ ।

३. × (घ) ।

१०. अत्र औपपातिके ५२ सूत्रे 'पंचाणुव्वइयं सत्त-सिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं' इति पाठो विद्यते, किन्तु अर्थसमीक्षयास्माभिरत्र 'गिहिधम्मं' इत्येव पाठः स्वीकृतः । अर्थ-समीक्षार्थं द्रष्टव्यं ६६५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

४. सं० पा०—ओराले चउदसपुव्वी ।

५. जणसपूहे (छ) ।

६. × (क, ख, ग, घ) ।

७. × (क, ख, ग, घ) ।

८. सं० पा०—जणसण्णिवाए इ वा जाव परिसा

पलंवमाण-कडिसुत्त-सुकयसोहाभरणा पवरवत्थपरिहिया चंदणोलित्तगायसरीरा, अप्पेगइया ह्यगया अप्पेगइया गयगया अप्पेगइया रहगया अप्पेगइया सिवियागया अप्पेगइया संदमाणियागया अप्पेगइया पायविहारचारेणं पुरिसवग्गुरापारिखित्ता महया उक्किट्ट-सीहणाय-वोल-कलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं पिव करेमाणा सावत्थीए णयरीए मज्झमज्जेणं णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता जेणेव कोट्टए चेइए जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता केसि-कुमार-समणस्स अदूरसामंते जाणवाहणाइं ठवेति, ठवेत्ता जाणवाहणेहिंते पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता केसि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करंति, करेत्ता वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सुसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति° ॥

६८८. तए णं तस्स सारहिस्स तं महाजणसहं च जणकलकलं च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए° •चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—किं णं अज्जं सावत्थीए णयरीए इंदमहे इ वा खंदमहे इ वा रुद्दमहे इ वा मउंदमहे इ वा 'सिवमहे इ वा वेसमणमहे इ वा' नागमहे इ वा 'जक्खमहे इ वा भूयमहे इ वा' थूभमहे इ वा चेइयमहे इ वा रुक्खमहे इ वा गिरिमहे इ वा दरिमहे इ वा अगडमहे इ वा 'नईमहे इ वा' सरमहे इ वा सागरमहे इ वा ? जं णं इमे वहवे उग्गा उग्गपुत्ता° भोगा° राइण्णा इक्खागा णाया कोरव्वा° •खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई मल्लइपुत्ता लेच्छई लेच्छइपुत्ता° इब्भा इब्भ-पुत्ता, अण्णे थ वहवे राईसर-तलवर-माडविद्य-कोडुंविद्य-इब्भ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभित्तयो ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सिरसा कंठेमालकडा आविद्धमणिसुवण्णा कप्पियहार-अद्धहार-तिसर-पालंव-पलंवमाण-कडिसुत्तय-कयसोहाहरणा चंदणोलित्तगाय-सरीरा पुरिसवग्गुरापारिखित्ता महया उक्किट्ट-सीहणाय-वोल-कलकलरवेणं° •समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा अवरतलं पिव फोडेमाणा° एगदिसाए एगाभिमुहा अप्पेगतिया ह्यगया अप्पे-गतिया गयगया° •अप्पेगतिया रहगया अप्पेगतिया सिवियागया अप्पेगतिया संदमाणियागया अप्पेगतिया° पायविहारचारेणं महया-महया वंदावंदएहिं निग्गच्छंति । एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

२. अज्ज जाव (क, च) ।

३. × (क, ख, ग, घ, च) ।

४. भूयमहे इ वा जक्खमहे इ वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. × (च) ।

६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. भोगादिभिः सर्वैः सह पुत्ररूपस्य विकल्पा बोद्धव्याः ।

८. सं० पा०—कोरव्वा जाव इब्भा ।

९. सं० पा०—कलकलरवेणं...एगदिसाए जहा उववाइए जाव अप्पेगतिया । रायपसेणइय-वृत्ती समग्रः पाठो व्याख्यातोस्ति । तत्र औप-पातिकस्य समर्पणसूचना नास्ति । आदर्शेषु सा किमर्थं कृतेति न ज्ञायते । औपपातिकस्य वृत्त्य-नुसारिपाठे 'अंबरतलपिव' इत्यादि नास्ति, वाचनान्तरे तत् समुपलभ्यते । द्रष्टव्यं— औपपातिकस्य ५२ सूत्रस्य वाचनान्तरम् ।

१०. सं० पा०—अप्पेगतिया गयगया जाव पायवि-हारचारेणं ।

कंचुइ-पुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—“किं णं” देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नगरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा ? ‘जं णं’ इमे वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा [जाव ?] णिग्गच्छंति ॥

कंचुइपुरिसस्स निवेदण-पदं

६८६. तए णं से कंचुइ-पुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स आगमण-गहिय-विणिच्छए चित्तं सारहिं करयलपरिग्गहियं *दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ°, वद्धावेत्ता एवं वयासी—णो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नगरीए इंदमहे इ वा जाव सागरमहे इ वा । जं णं इमे वहवे उग्गा उग्गपुत्ता जाव वंदावंदएहिं निग्गच्छंति । एवं खलु भो ! देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जातिसंपण्णे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए° *इह संपत्ते इह समोसडे इहेव सावत्थीए नगरीए बहिया कोट्टुए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ, तेणं अज्ज सावत्थीए नगरीए वहवे उग्गा जाव इब्भा इब्भपुत्ता अप्पेगत्तिया वंदणवत्तियाए° *अप्पेगइया पूयणवत्तियाए अप्पेगइया सक्कारवत्तियाए अप्पेगइया सम्माणवत्तियाए अप्पेगइया इंसणवत्तियाए अप्पेगइया कोउहलवत्तियाए अप्पेगइया अस्सुयाइं सुणेस्सामो सुयाइं निस्संक्रियाइं करिस्सामो, अप्पेगइया मुंडे भविस्सा अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, अप्पेगइया गिहिधम्मं° पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जीयमेयंति कट्टु ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता सिरसा कंठेमालकडा आविद्ध-मणि-सुवण्णा कप्पियहारद्धहार-तिसरपवर-पालं व-पलं वमाण-कडिसुत्त-सुकय-सोहाभरणा पवरवत्थ-परिहिया चंदणोलित्तगायसरीरा अप्पेगइया हयगया अप्पेगइया गयगया अप्पेगइया रहगया अप्पेगइया सिवियागया अप्पेगइया संदमाणियागया अप्पेगइया पायविहारचारेणं° महया-महया वंदावंदएहिं णिग्गच्छंति ॥

चित्तस्स केसि-समीवे गमण-पदं

६९०. तए णं से चित्ते सारही कंचुइ-पुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टु°-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिस-वस-विसप्पमाणं-हियए कोडुंविय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! चाउघंटं° आसरहं जुत्तामेव उवट्टुवेह°, *उवट्टुवेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

६९१. तए णं ते कोडुंवियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं

१. किण्हं (क, घ, च, छ) ।

६. राय० सू० ६८६ ।

२. जाव (क, ख, ग, घ, च, छ); अत्र भोगा इत्य-स्थानन्तरं जाव शब्दे युज्यते, किन्तु लिपि-दोषात् ‘जं णं’ इत्यस्य स्थाने लिखितः प्रतीयते ।

७. सं० पा०—इहमागए जाव विहरइ ।

८. सं० पा०—वंदणवत्तियाए जाव महया ।

९. द्रष्टव्यं ६८७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

१०. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियए ।

३. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव वद्धा-वेत्ता ।

११. चाउघंटं (क, ख, ग, घ, च, छ) । द्रष्टव्यं

६८१ सूत्रम् ।

४,५. राय० सू० ६८८ ।

१२. सं० पा०—उवट्टुवेह जाव सच्छत्तं उवट्टुवेति ।

चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव° उवट्टुवेत्ति, उवट्टुवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

६९२. तए णं से चित्ते सारही ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहित्ते अप्पमहग्घाभरणालं कियसरीरे जेणेव चाउग्घंटं आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ^१, दुरुहित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं^२ छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगर^३-वंदपरिखित्ते सावत्थीणगरीए मज्झमज्जेणं निगगच्छइ, निगगच्छित्ता जेणेव कोट्टए चेइए जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसि-कुमार-समणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, ठवेत्ता र्हाओ पच्चोरुहत्ति, पच्चोरुहित्ता जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ ॥

धम्मवेसणा-पदं

६९३. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वैरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वैरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वैरमणं, सव्वाओ परिग्गहातो वैरमणं ॥

६९४. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिस्सि पाउब्भूया तामेव दिस्सि पडिगया ॥

चित्तस्स गिहिधम्म-पडिज्जण-पदं

६९५. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टु^४ तुट्टु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^५ हियए उट्टाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केसि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं^६ पावयणं । पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिट्ठमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! जं णं तुब्भे वदह^७ त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं^८, एवं—धणं धन्नं बलं वाहणं

१. रूहइ (क, ख, ग, घ, च) ।

२. कोरेंटं (क, ख, ग, घ, च, छ); द्रष्टव्यं
६८३ सूत्रस्य पाठः ।

३. चडगरेणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—हट्टु जाव हियए ।

५. निग्गंथाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) । अस्य
पाठस्य औपपातिकानुसारित्वमस्ति, तेन

‘निग्गंथं’ इति पाठः समायातः । भगवतः
पाश्वंस्य शासने ‘श्रमण’ पदस्य ‘अहंत्’ पदस्य
वा प्रयोगः समुपलभ्यते ।

६. एवमेयं भंते २ अवितहमेयं भंते सच्चेणं एस
अट्ठे जणं तुब्भे वयह (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. औपपातिके २३ सूत्रे अतोयै ‘चिच्चा सुवण्णं’
पाठो लभ्यते ।

कोसं कोट्टागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-
प्पवाल-संतसारसावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडा
भविता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयंति, णो खलु अहं तहा संचाएमि चिच्चा हिरण्णं,
•एवं—धणं धन्नं वलं वाहणं कोसं कोट्टागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-
मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-संतसारसावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं
परिभाइत्ता. मुंडे भविता णं अगाराओ अणगारियं० पव्वइत्ताए, अहं णं देवाणुप्पियाणं
अंतिए 'चाउज्जामियं गिहिधम्मं' पडिवज्जिस्सामिं ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध्यं करेहिं ॥

६६६. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए 'चाउज्जामियं गिहि-
धम्मं' उवसंपज्जित्ताणं विहरति ॥

६६७. तए णं से चित्ते सारही केसि कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेस्थ गमणाए, चाउग्घंटे आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता
जामेव दिंसि पाउब्भूए तामेव दिंसि पडिगए ॥

समणोवासय-वण्णग-पदं

६६८. तए णं से चित्ते सारही समणोवासए जाए—अहिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्ण-
पावे आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरणबंधप्पमोक्खकुसले असहिज्जे देवासुर-णाग-
सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किपुरिस-गहल-गंधव्व-महोरगाइएहि देवगणेहि निग्गंथाओ
पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिव्वित्तिगिच्छे'
लद्धट्ठे गहियट्ठे अभिगयट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ते
अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे
चियत्तंतेउरघरप्पवेसे चाउदसट्टमुट्ठिपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे'^{११},

१. दाइयं (क, ख, ग, घ, च) ।

२. सं० पा०—हिरण्णं तं चेव जाव पव्वइत्ताए ।

३. पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं (क, ख, ग, घ, च, छ); ६६३ सूत्रे केशिस्वामिना चित्तसारथये चातुर्यामिको धर्मः कथितः, तदानीं चित्तसारथिना द्वादश-विधो गृहिधर्मः कथं स्वीकृतः ? प्रस्तुतपाठः औपपातिकसूत्रेण पूरितः । तत्र 'पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं' इति पाठः आसीत्, स एवात्र अनुकृतः, किन्तु अर्थ-समीक्षयात्र 'चाउज्जामियं गिहिधम्मं' इति पाठो युज्यते ।

४. पडिवज्जित्ताए (क, ख, ग, घ, च, छ) । एतत् पाठस्य स्वीकारे 'अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए'

इति वाक्ये किमपि क्रियापदं न स्यात् तथा च 'उवासगदसाओ' (११२३) सूत्रे एतत्तुल्य-वाक्ये 'पडिवज्जिस्सामि' पाठो विद्यते । तेना-त्रापि स एव पाठो युज्यते ।

५. करेसी (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. द्रष्टव्यं पूर्वसूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

७. जाव (क, ख, ग, घ, च) । अशुद्धं प्रति-भाति ।

८. असहिज्ज (ख, ग, घ, च) ।

९. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. अयमट्ठे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११. चाउदसट्टमुट्ठिपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरघरप्पवेसे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुच्छणेणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणे-पडिलाभेमाणे, 'बहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि' अप्पाणं भावेमाणे जाइं तत्थ रायकज्जाणि य^१ •रायकिच्चाणि य रायणीईओ य^२ रायववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सिद्धि सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥

जियसत्तुणा पाहुडपेसण-पदं

६९६. तए णं से जियसत्तुराया अण्णया कयाइ महत्थं^३ •मह्ग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^४ पाहुडं सज्जेइ, सज्जेत्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! सेयवियं नगरिं^५, पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं^६ •मह्ग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^७ पाहुडं उवणेहि, मम पाउग्गं च णं जहाभणियं अविताहमसंदिद्धं वयणं विण्णवेहि त्ति कट्टु विसज्जिए ॥

चित्तस्स निवेयण-पदं

७००. तए णं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रण्णा विसज्जिए समाणे तं महत्थं^८ •मह्ग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^९ पाहुडं 'गिण्हइ, गिण्हित्ता'^{१०} जियसत्तुस्स रण्णो अंति-याओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सावत्थीणयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, तं महत्थं^{११} •मह्ग्घं महरिहं विउलं रायारिहं^{१२} पाहुडं ठवेइ, ण्हाए^{१३} •कयवलिकम्मे कयकोउयमंगल-पायच्छित्ते मुद्धप्पावेसाइं मंगल्लइं वत्थाइं पवर परिहिते अप्पमह्ग्घाभरणालं कियसरीरे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं^{१४} महया पायविहारचारेणं^{१५} महया पुरिसवग्गु-रापरिक्खित्ते रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ, सावत्थीणयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, जेणेव कोट्टुए चेइए जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छति, केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा^{१६} •निसम्म हट्टुत्तु-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमण-स्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए उट्टाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केसि कुमार-समणं तिवक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता^{१७} एवं वयासी एवं खलु

१. अहापरिग्गहेहि तवोकम्मैहि (वृ); बहूहि सीलव्वय-गुण - वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववा-सेहि (वृपा) ।

२. सं० पा०—रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि ।

३. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

४. नगरं (च, छ) ।

५. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

६. सं० पा० -- महत्थं जाव पाहुडं ।

७. गिण्हइ जाव (क, ख, ग, घ, च, छ); अत्र

'जाव' शब्दः अनावश्यकः प्रतिभाति । ६८१ सूत्रेण तुलनायां कृतयां 'जाव' शब्दस्य स्थाने 'गिण्हित्ता' पाठो युज्यते ।

८. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

९. सं० पा०—ण्हाए जाव सरीरे सकोरेंट महया ।

१०. पायचारविहारेणं (क, ख, ग, घ, छ); प्रस्तुतःगमस्य ६८८ सूत्रे तथा औपपातिकस्य ५२ सूत्रे तथा 'च' प्रती 'पायविहारचारेणं' पाठोस्ति, तेन स एव मूले स्वीकृतः ।

११. सं० पा०—सोच्चा जाव हट्टु उट्टाए जाव एवं ।

अहं भंते ! जियसत्तुणा रण्णा पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं^१ •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए । तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नगरि । पासादीया णं भंते ! सेयविया नगरी । दरिसणिज्जा^२ णं भंते ! सेयविया नगरी । अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी । पडिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी । समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नगरि ॥

७०१. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

७०२. तए णं चित्ते सारही केसि कुमार-समणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी— एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रण्णा पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं^३ •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए । तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नगरि । पासादीया णं भंते ! सेयविया नगरी । दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयविया नगरी । अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी । पडिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी । समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नगरि ॥

केसिस्स पडिवयण-पदं

७०३. तए णं केसी कुमार-समणे चित्तेणं सारहिणा दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—चित्ता ! से जहाणामए वणसंडे सिया—किण्हे किण्होभासे^४ •नीले नीलोभासे हरिए हरिओभासे सीए सीओभासे णिद्धे णिद्धोभासे तिब्बे तिब्बोभासे किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरियच्छाए सीए सीअच्छाए णिद्धे णिद्धच्छाए तिब्बे तिब्बच्छाए घणकडियकडच्छाए रम्मे महामेहनिकुरं वभूए^५ जाव^६ पडिरूवे । से णूणं चित्ता ! से वणसंडे बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खी-सिरीसिवाणं अभिगमणिज्जे ? हंता अभिगमणिज्जे ।

तंसि च णं चित्ता ! वणसंडंसि वहुवे भिलुंगा नाम पावसउणा^७ परिवसन्ति । जे णं तेसि वहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खी-सिरीसिवाणं ठियाणं चैव मंससोणियं आहारंति । से णूणं चित्ता ! से वणसंडे तेसि णं वहूणं दुपय-^८चउप्पय-मिय-पसु-पक्खी-सिरीसिवाणं अभिगमणिज्जे ? णो ति, कम्हा णं ? भंते ! सोवसग्गे, एवमेव चित्ता ! तुब्भं पि सेयवियाए णयरीए पएसि नामं राया परिवसइ—अहम्मिए जाव^९ णो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेइ । तं कहं णं अहं चित्ता ! सेयवियाए नगरीए समोसरिस्सामि ?

पुणो निवेयण-अब्भुवगमण-पदं

७०४. तए णं से चित्ते सारही केसि कुमार-समणं एवं वयासी—कि णं भंते ! तुब्भं पएसिणा रण्णा कायव्वं ? अत्थि णं भंते ! सेयवियाए नगरीए अण्णे वहुवे ईसर-तलवर^{१०}—

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।

३. एवं दरिसणिज्जा (क, ख, ग, घ, छ) ।

४. सं० पा०—महत्थं जाव विसज्जिए । चैव जाव समोसरह ।

५. सं० पा०—किण्होभासे जाव पडिरूवे ।

६. ओ० सू० ५-७ ।

७. पावसमणा (क); पासवणा (च, छ) ।

८. सं० पा०—दुपय जाव सिरीसिवाणं ।

९. राय० सू० ६७१ ।

१०. सं० पा०—ईसर-तलवर जाव सत्थवाह^{१०} ।

•माडंविद्य-कोडुंविद्य-इब्भ-सेट्टि-सेणावइ°-सत्थवाहपभित्तयो, जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति नमंसिस्संति° •सक्कारिस्संति सम्माणिस्संति कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासिस्संति, विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभिस्संति, पाडिहारिएण पीढ-फलग-सेज्जा-संथारेणं उवणिमंतिस्संति° ॥

७०५. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—अवि याइं चित्ता ! समोसरिस्सामो° ॥

उज्जाणपाल-निद्वेसण-पदं

७०६. तए णं से चित्ते सारही केसि कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, केसिस्स कुमार-समणस्स अंतियाओ कोट्टयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, जेणेव सावत्थी णगरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंविद्यपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्टुवेह । जहा सेयवियाए नगरीए निग्गच्छइ, तहेव जाव° अंतरा वासेहिं वसमाणे-वसमाणे कुणाला°-जणवयस्स मज्झंमज्जेणं जेणेव केकय°-अद्धे जणवए जेणेव सेयविया नगरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उज्जाणपालए सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—जया णं देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमार-समणे पुज्वाणुपुब्बि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा तथा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! केसि कुमार-समणं वंदिज्जाह नमंसिज्जाह, वंदित्ता नमंसित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं अणुजाणेज्जाह°, पाडिहारिएणं पीढ-फलग°-सेज्जा-संथारेणं° उवणिमंतिज्जाह, एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणे-ज्जाह ॥

७०७. तए णं ते उज्जाणपालगा चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्टुट्टु°-चित्तमाणं-दिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण° हियया करयलपरिग्गहियं° •दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता° एवं सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति ।

पाहुइ-उवणयण-पदं

७०८. तए णं चित्ते सारही जेणेव सेयविया णगरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेयवियं नगरि मज्झंमज्जेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहि जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं° •महत्थं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुइ° गेण्हइ, जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ, पएसि रायं करयल° •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु

१. सं० पा०—नमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति ।

२. निमेतेहिंति (वृ) ।

३. जाणिस्सामो (वृ); समोसरिस्सामो (वृषा) ।

४. राय० सू० ६८२, ६८३ ।

५. कुणाल (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. केसि (क, ख, ग, घ, च, छ) ॥

७. अणुजाणेत्ता (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—पीढफलग जाव उवणिमंतिज्जाह ।

९. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियया ।

१०. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव एवं ।

११. सं० पा०—महत्थं जाव गेण्हइ ।

१२. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

जएणं विजएणं वद्धावेइ°, वद्धावेत्ता तं महत्थं° •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं° उवणेइ° ॥

७०६. तए णं से पएसि राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं° •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं° पडिच्छइ, चित्तं सारहिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, पडिविसज्जेइ ॥

७१०. तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा विसज्जिए समाणे हट्ठं° •तुट्ठचित्त-माणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणं° हियए पएसिस्स रण्णो अंति-याओ पडिनिक्खमइ, जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घटं आसरहं दुरुहइ, सेयवियं नगरि मज्झंमज्जेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, ष्हाए° •कयवलिकम्मे° उप्पि पासायवरमए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं वत्तीसइवद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणी-संपउत्तेहिं 'उवणच्चिज्जमाणे उवगाइ-ज्जमाणे' उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्-फरिस°-•रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

केसिस्स सेयविया-आगमण-पदं

७११. तए णं से केसी कुमार-समणे अण्णया कयाइ पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणइ, सावत्थीओ नगरीओ कोट्टुगाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पंचहिं अणगारसएहिं° •सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं° विहरमाणे जेणेव केयइ-अद्वे जणवए जेणेव सेयविया नगरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥

७१२. तए णं सेयवियाए नगरीए सिधाडगं°-•तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महा-पहपहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा जणवोले इ वा जणकलकले इ वा जणउम्मी इ वा जणसण्णिवाए इ वा जाव°° परिसा णिग्गच्छइ ॥

उज्जाणपालगाणं चित्तस्स निवेदण-पदं

७१३. तए णं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्टा समाणा हट्टुट्टु°-•चित्तमाणं-दिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणं°हियया जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छंति, केसि कुमार-समणं वंदंति नमंसंति, अहापडिरूवं ओग्गहं अणुजाणंति, पाडिहारिएणं° •पीढ-फलग-सेज्जा° संथारएणं उवनिमंतंति, णामं गोयं पुच्छंति ओधारेंति°,

१. सं० पा०—महत्थं जाव उवणेइ ।

२. उवणमेइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. सं० पा०—महत्थं जाव पडिच्छइ ।

४. सं० पा०—हट्टु जाव हियए ।

५. सं० पा०—ष्हाए जाव उप्पि ।

६. उवणच्चिज्जमाणे २ उवगेयमाणे २ (क, ख, ग, घ, च) ।

७. सं० पा०—फरिस जाव विहरइ ।

८. सं० पा०—अणगारसएहिं जाव विहरमाणे ।

९. सं० पा०—सिधाडगं महया जणसद्देइ वा परिसा ।

१०. राय० सू० ६८७ ।

११. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियया ।

१२. सं० पा०—पाडिहारिएणं जाव संथारएणं ।

१३. आधारेंति (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

एगंतं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता अण्णमण्णं एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया ! चित्ते सारही दंसणं कंखइ दंसणं पत्थेइ' दंसणं पीहेइ दंसणं अभिलसइ, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्टुत्तु' •चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं हियए भवति, से णं एस केसी कुमार-समणे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसडे इहेव सेयवियाए णगरीए वहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं' •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं पियं निवेएमो पियं से भवउ, अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिभुणेंति जेणेव सेयविया णगरी जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे' जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति, चित्तं सारहि करयल' •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थाए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया ! दंसणं कंखंति' •दंसणं पत्थेति दंसणं पीहेति दंसणं अभिलसंति, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्टु' •तुट्टु-चित्तमाणंदिआ पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया भवह, से णं अयं पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे' •गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसडे इहेव सेयवियाए णगरीए वहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

चित्तस्स केसि-पज्जुवासणा-पदं

७१४. तए णं से चित्ते सारही तेसि उज्जाणपालमाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्टुत्तु' •चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए विगसिय-वरकमलणयणे पयलिय-वरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंतरइयवच्छे पालंब-पलंबमाण-घोलंत-भूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं सारही' आसणाओ अब्भुट्ठेति, पाय-पीढाओ पच्चोरुहइ, पाउयाओ ओमुयइ, एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, अंजलि-मउलियग्ग-हत्थे' केसि-कुमार-समणाभिमुहे सत्तट्टु पयाइ अणुगच्छइ, करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थाए अंजलि कट्टु एवं वयासी—'नमोत्थु णं अरहंताणं जाव' सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं', नमोत्थु णं केसिस्स कुमार-समणस्स मम धम्मयारियस्स धम्मोवदेसगस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासइ' मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, ते उज्जाणपालए विउलेणं वत्थगंधमत्तालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, विउलं

१. वेच्छइ (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. सं० पा०—हट्टुत्तु जाव हियए ।

३. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।

४. ता (क, घ, च, छ); तो (ख, ग) ।

५. गेहे (क, छ) ।

६. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेति ।

७. सं० पा०—कंखंति जाव अभिलसंति ।

८. सं० पा०—हट्टु जाव भवह ।

९. सं० पा०—चरमाणे समोसडे जाव विहरइ ।

१०. सं० पा०—हट्टुत्तु जाव आसणाओ ।

११. मउलियहत्थे (क, ख, ग, घ, च) ।

१२. राय० सू० ८ ।

१३. × (क) ।

१४. पासउ (क, ख, ग, घ, च, छ); अष्टमे सूत्रे वृत्तिमनुसृत्य 'पासइ' पाठः स्वीकृतः तथैव अत्रापि ।

जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्टवेहं, *उवट्टवेत्ता एयमाणत्तियं° पच्चप्पिणह ॥

७१५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा° *तहैव पडिसुणिता° खिप्पामेव सच्छत्तं सज्जयं जाव° उवट्टवेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

७१६. तए णं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु°-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए प्हाए कयवलिकम्मे° *कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुट्टप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंक्रियसरीरे जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता° सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगर-वंदपरिखित्ते सेयवियाणगरीए मज्झमज्जेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव मियवणे उज्जाणे जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसिकुमार-समणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, ठवेत्ता रद्दाओ पच्चोरुहत्ति, पच्चोरुहित्ता जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सुसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ ॥

चाउज्जाम-धम्मवेसणा-पदं

७१७. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं । तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिंसि पाउब्भूया तामेव दिंसि पडिगया° ॥

चित्तस्स निवेदण-पदं

७१८. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुत्तु°-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्टाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केसि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अम्हं पएसी राया अधम्मिए जाव° सयस्स वि जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्ति° पवत्तेइ, तं जइ णं

१. द्रष्टव्यं ६८१ सूत्रम् ।

२. सं० पा०—उवट्टवेहं जाव पच्चप्पिणह ।

३. सं० पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव ।

४. राय० सू० ६८२ ।

५. सं० पा०—हट्टुत्तु जाव हियए ।

६. सं० पा०—कयवलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव चाउग्घटे जाव दुरुहित्ता सकोरेंट महया भड-

चउयरेणं तं चेव जाव पज्जुवासइ । धम्मकहाए जाव तए णं ।

७. आरुहिता (क); रुहिता (ख, ग, घ, च)

८. सं० पा०—हट्टुत्तु तेहव एवं ।

९. राय० सू० ६७१ ।

१०. करभरपवृत्ति (क); °पवित्ति (ख, ग, घ, च, छ) ।

देवानुप्पिया ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा । बहुगुणतरं खलु होज्जा पएसिस्स रण्णो, तेसिं च बहूणं दुपय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खी-सिरीसवाणं, तेसिं च बहूणं समण-माहण-भिक्खुयाणं, तं जइ णं देवानुप्पिया ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं होज्जा सयस्स वि य णं जणवयस्स ॥

केसिस्स पडिययण-पदं

७१६. तए णं केसी कुमार-समणे चित्तं साररिह एव वयासी—एवं खलु चउरिह ठाणेहि चित्ता ! जीवे^१ केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए, तं जहा—

आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्टाईं हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे^१ केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

उवस्सयगयं समणं वा^२ *माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्टाईं हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं पुच्छइ^३ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

गोयरग्गयं^४ समणं वा माहणं वा^५ *णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं^६ पज्जुवासेइ णो विउलेणं असण-पाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेइ, नो अट्टाईं^७ *हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं^८ पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

जत्थे वि यं^९ णं समणेण वा माहणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ तत्थे 'वि यं' णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्टाईं^{१०} *हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं^{११} पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए ।

एएहिं च णं चित्ता ! चउरिह ठाणेहि जीवे केवलपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए, तं जहा—

आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा अभिगच्छइ वंदइ नमंसइ^{१२} *सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं^{१३} पज्जुवासेइ, अट्टाईं^{१४} *हेऊइं पसिणाईं कारणाईं

१. जीवा (क, छ) ।

२. जीवा (छ) ।

३. सं० पा०—समणं वा तं चेव जाव एएण ।

४. वृत्तिकृता 'प्रातिहारेण पीठफलकादिना नामनु-त्रयतीत्यादि तृतीयम्, गोचरगतं न अशनादिना प्रतिलाभयति—इत्यादि चतुर्थम्' कारणं स्वी-कृतं तथा 'यत्रापि श्रमणः-साधुः माहनः—परमगीतार्थः श्रावकोऽभ्यागच्छति तत्रापि हस्तेन वस्त्राञ्चनेन छत्रेण वाऽऽत्मानमावृत्य न

तिष्ठति इदं प्रथमं कारणम्', एवं मूलपाठलब्धं धर्माश्रवणस्य चतुर्थं कारणं धर्मश्रवणस्य प्रथमकारणत्वेन निर्दिष्टम् ।

५. सं० पा०—माहणं वा जाव पज्जुवासेइ ।

६, ६. सं० पा०—अट्टाईं जाव पुच्छइ ।

७. × (क, च, छ) ।

८. × (क, च, छ) ।

१०. सं० पा०—नमंसइ जाव पज्जुवासेइ ।

११. सं० पा०—अट्टाईं जाव पुच्छइ ।

वागरणाइं° पुच्छइ । एएण वि° ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं° लभइ सवणयाए ।

उवस्सयगयं° •समणं वा माहणं वा अभिगच्छइ वंदइ णमंसइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, अट्टाई हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए° ।

गोयरग्गयं समणं वा° •माहणं वा अभिगच्छइ वंदइ णमंसइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासेइ, विउलेणं° •असणपाणखाइमसाइमेणं° पडिलाभेइ, अट्टाईं° हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं° पुच्छइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए ।

जत्थ वि य णं समणेण वा माहणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ तत्थ वि य णं णो हत्थेण वा° •वत्थेण वा छत्तेण वा अप्पाणं° आवरेत्ताणं चिट्ठइ । एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपण्णत्तं धम्मं लभइ सवणयाए ।

तुज्झं च णं चित्ता ! पएसि राया—आरामगयं वा° •उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्टाईं हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं पुच्छइ । तं कहां णं चित्ता ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो ?

उवस्सयगयं समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, णो अट्टाईं हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं पुच्छइ । तं कहां णं चित्ता ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो ?

गोयरग्गयं समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सममाणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, णो विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेइ, णो अट्टाईं हेऊइं पसिणाईं कारणाईं वागरणाईं पुच्छइ । तं कहां णं चित्ता ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो ?

जत्थ वि य णं समणेण वा माहणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ तत्थ वि य णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा° अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ । तं कहां णं चित्ता ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खिस्सामो ? ॥

७२०. तए णं से चित्ते सारही केसि कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अण्णया कयाइ कंबोएहिं चत्तारि आसा उवायणं उवणीया, ते मए पएसिस्स रण्णो अण्णया चेव उवणेया° । तं एएणं खलु भंते ! कारणेणं अहं पएसि रायं देवाणुप्पियाणं

१. सं० पा०—एएण वि जाव लभइ ।

२. सं० पा०—उवस्सयगयं ।

३. सं० पा०—समणं वा जाव पज्जुवासेइ ।

४. सं० पा०— विउलेणं जाव पडिलाभेइ ।

५. सं० पा०—अट्टाईं जाव पुच्छइ ।

६. सं० पा०—हत्थेण वा जाव आवरेत्ताणं ।

७. सं० पा०—आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणि-यव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं ।

८. उवणयणं (क); उवयणं (ख, ग, घ, च, छ)

९. विणेया (क, ख, ग, घ, च)

अंतिए हृव्वमाणेस्सामि । तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह । अगिलाए णं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह । छंदेणं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह ॥

७२१. तए णं से केसी कुमार-समणे चित्तं सारहिं एव वयासी—अवि याइं चित्ता ! जाणिस्सामो ॥

७२२. तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटे आसरहं दुरुहइ, जामेव दिंसि पाउब्भूए तामेव दिंसि पडिगए ॥

चित्त-पएसि-पवं

७२३. तए णं से चित्ते सारही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-म्मिलियम्मि अहापंडुरे' पभाए कयनियमावस्सए सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव पएसी राया तेणेव उवाग-च्छइ, पएसि रायं करयल' •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थाए अंजलिं° कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंवाएहिं चत्तारि आसा उवायणं' उवणीया, ते य मए देवाणुप्पियाणं अण्णया चेव विणइया । तं एह णं सामी ! ते आसे चिट्ठं पासह ॥

७२४. तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एव वयासी—गच्छाहिं णं तुमं चित्ता ! तेहिं चेव चउहिं आसेहिं चाउग्घंटे आसरहं जुत्तामेव उवट्टवेहिं', •एयमाणत्तियं° पच्चप्पिणाहि ॥

७२५. तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्टुट्टु'-•चित्तमाणं-दिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण'हियए उवट्टवेइ, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥

७२६. तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्टुट्टु'-•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ण्हाए कय-वलिकम्मे कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिते° अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटे आसरहं दुरुहइ, सेयवियाए नगरीए मज्झंमज्जेणं णिग्गच्छइ ॥

७२७. तए णं से चित्ते सारही तं रहं णेगाइं जोयणाइं उब्भामेइ ॥

७२८. तए णं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रह्वाएण य° परिकिलंते समाणे चित्तं सारहिं एव वयासी—चित्ता ! परिकिलंते मे सरीरे, परावत्तेहिं रहं ॥

७२९. तए णं से चित्ते सारही रहं परावत्तेइ, जेणेव भियवणे उज्जाणे तेणेव उवाग-

१. 'पंडरे (क); 'पंडर (ख, ग, घ, च) ।

२. सं० पा०—करयल जाव कट्टु ।

३. उवणयं (क, ख, ग, घ, च) ।

४. सं० पा०—उवट्टवेहिं जाव पच्चप्पिणाहि ।

५. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियए ।

६. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव अप्पमहग्घाभरणा-लंकियसरीरे ।

७. × (क, छ) ।

च्छइ, पएसि रायं एवं वयासी—‘एस णं’ सामी ! मियवणे उज्जाणे, एत्थ णं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो’ ॥

७३०. तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी—एवं होउ चित्ता !

७३१. तए णं से चित्ते सारही जेणेव केसिस्स कुमार-समणस्स अदूरसामंते तेणेव उवामच्छइ, तुरए णिगिण्हेइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तुरए मोएति, पएसि रायं एवं वयासी—एह णं सामी ! आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो’ ॥

७३२. तए णं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ, चित्तेण सारहिणा सद्धि आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमाणे’ जत्थ [तत्थ’ ?] ‘केसि कुमार-समणं’ महइमहालियाए महच्चपरिसाए मज्जागए महया-महया सद्देणं धम्ममाइक्खमाणं पासइ, पासित्ता इमेयारुवे अज्झत्थिए’ *चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे’ समुप्पज्जित्था—जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति । मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति । मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति । अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति । निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति ।

से केस णं एस पुरिसे जड्डे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे, सिरीए हिरीए उवगए, उत्तप्पसरीरे ? एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? ‘कि परिणामेइ ?’ कि खाइ ? कि पियइ ? कि दलयइ ? कि पयच्छइ ? जेणं’ एमहालियाए मणुस्सपरिसाए महया-महया सद्देणं बूया’ । [साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए ?]’ एवं संपेहेइ, संपेहित्ता चित्तं सारहिं एवं वयासी—चित्ता ! जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति’ । *मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति । मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति । अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति । निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति । से केस णं एस पुरिसे जड्डे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे, सिरीए हिरीए उवगए, उत्तप्पसरीरे ? एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? कि परिणामेइ ? कि खाइ ? कि पियइ ? कि दलयइ ? कि पयच्छइ ? जेणं’ एमहालियाए मणुस्सपरिसाए महया-महया सद्देणं’ बूया । साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए ॥

७३३. तए णं से चित्ते सारही पएसि रायं एवं वयासी—एस णं सामी !

१. सरणं (क, च) ।

२-३. पवीणामो (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. पवीणेमाणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. अत्रादर्शेषु ‘जत्थ’ पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थ-विचारणया ‘तत्थ’ पाठो युज्यते ।

६. केसी कुमार-समणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

८. ववगए (क, ख, ग, घ, च) ।

९. × (क, ख, ग, घ, च) ।

१०. दलयइ (च) ।

११. जण्यं (क, ख, ग, घ, च, छ); मुद्रितवृत्तौ

‘जणं एस’ इति लभ्यते ।

१२. धूभियाए (क, च); बूयाइ (छ) ।

१३. ७२७ सुत्रे केशिस्वामिना प्रदेशिराजकृतः संकल्प एव स्मारितः । तत्र ‘साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए’ इति पाठो विद्यते, तदास्मिन् प्रदेशिराजकृतसंकल्पसूत्रे स पाठांशः कथं न स्यात् ? इति पौर्वापर्यार्थविचारणया ‘साए वि...इति’ पाठांशोत्र युज्यते ।

१४. सं० पा०—पज्जुवासंति जाव बूया ।

पासवच्चिज्जे केसी नामं कुमार-समणे जातिसंपण्णे जाव' चउणाणोवगए 'अहोऽवहिए अण्णजीविए'^१ ॥

७३४. तए णं से पएसी राया चित्तं सारहि एवं वयासी—'अहोऽवहियं णं'^२ वयासि चित्ता ! अण्णजीवियं णं वयासि चित्ता ! हुंता सामी ! अहोऽवहियं^३ णं वयामि, अण्ण-जीवियं णं वयामि ॥

७३५. अभिगमणिज्जे णं चित्ता ! एस पुरिसे ? हुंता सामी ! अभिगमणिज्जे । अभिगच्छामो णं चित्ता ! अम्हे एयं पुरिसं ? हुंता सामी ! अभिगच्छामो ॥

पएसि-केसि-पवं

७३६. तए णं से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धि जेणेव केसी कुमार-समणे तेणेव उवागच्छइ, केसिस्स कुमार-समणस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी— तुब्भे णं भंते ! अहोऽवहिया अण्णजीविया ?

७३७. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—पएसी ! से जहाणामए अंकवाणिया इ वा संखवाणिया इ वा सुंकं भंसेउकामा^४ णो सम्मं पथं पुच्छंति । एवामेव पएसी ! तुमं वि विणयं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि । से णूणं तव पएसी ! ममं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए^५ •चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे^६ समुप्पज्जित्था—जड्ढा खलु भो ! जड्ढं पज्जुवासंति^७ । •मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति । मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति । अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति । निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति । से केस णं एस पुरिसे जड्ढे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे, सिरीए हिरीए उवगए, उत्तप्पसरीरे ? एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? कि परिणा-मेइ ? कि खाइ ? कि पियइ ? कि दलयइ ? कि पयच्छइ ? जे णं एमहालियाए मणुस्स-परिसाए महया-महया सट्ठेणं बूया । साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं^८ पवियरित्तए । से णूणं पएसी ! अत्थे समत्थे ? हुंता ! अत्थि ॥

७३८. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—से केस णं भंते ! तुज्झं नाणे वा दंसणे वा, जेणं^९ तुब्भं मम एयारूवं अज्झत्थियं^{१०} •चित्तियं पत्थियं मणोगयं^{११} संकप्पं समुप्पणं जाणह पासह ?

७३९. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—एवं खलु पएसी ! अम्हं समणाणं निग्गंथाणं पंचविहे णाणे पणत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणे सुययाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे ॥

७४०. से कि तं आभिणिबोहियणाणे ? आभिणिबोहियणाणे चउव्विहे पणत्ते, तं जहा—उग्गहो ईहा अवाए धारणा ॥

१. राय० सू० ६८६ ।

२. अहोहिए अण्णं जीवे (क, ख, ग); अहोहिए अण्णजीवी

३. अहोहि अण्णं (क, ख, ग, घ) ।

४. अहोहियं (क, ख, ग, घ) ।

५. भंजेउं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

६. सं० पा०—अउभत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

७. सं० पा०—पज्जुवासंति जाव पवियरित्तए ।

८. जं णं (घ) ।

९. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव संकप्पं ।

७४१. से किं तं उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, जहा नंदीए जाव^१ से तं धारणा । से तं आभिणिवोहियणाणे ॥

७४२. से किं तं सुयणाणं ? सुयणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—अंगपविट्ठं च, अंगवाहिरगं च सव्वं भाणियव्वं जाव^२ दिट्ठिवाओ ॥

७४३. *से किं तं ओहिणाणं ? ओहिणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—भवपच्चइयं च, खओवसमियं च^३ जहा नंदीए^४ ॥

७४४. *से किं तं मणपज्जवणाणे ?^५ मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उज्जुमई य विउलमई य^६ ॥

७४५. *से किं तं केवलणाणं ? केवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—भवत्थकेवलणाणं च सिद्धकेवलणाणं च^७ ॥

७४६. तत्थ णं जेसे आभिणिवोहियणाणे, से णं ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे सुयणाणे, से वि य ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे ओहिणाणे, से वि य ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे मणपज्जवणाणे, से वि य ममं अत्थि । तत्थ णं जेसे केवलणाणे, से णं ममं नत्थि, से णं अरहंताणं भगवंताणं । इच्चेएणं पएसी ! अहं तव चउव्विहेणं छाउमत्थिएणं णाणेणं इभेयारूव्वं अज्जत्थियं^८ *चित्तियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं^९ समुप्पणं जाणामि पासामि ॥

७४७. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अहं णं भंते ! इहं उव्विसामि ? पएसी ! साए उज्जाणभूमीए तुमंसि चैव जाणए ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७४८. तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धि केसिस्स कुमार-समणस्स अदूरसामंते उव्विसइ, केसि कुमार-समणं एवं वयासी—तुव्वं णं भंते ! समणाणं णिग्गंथाणं एस^{१०} सण्णा एस पइण्णा^{११} एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उव्वएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे^{१२} एस समोसरणे, जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं ? ॥

७४९. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—पएसी ! अहं समणाणं णिग्गंथाणं एस सण्णा^{१३} *एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उव्वएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे^{१४} एस समोसरणे, जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो^{१५} तं सरीरं ॥

१. नंदी सू० ४०-४६ ।

२. नंदी सू० ७३-१२६ ।

३. सं० पा०—ओहिणाणं भवपच्चइयं खओवस-मियं ।

४. नंदी सू० ७-२२ ।

५. सं० पा०—मणपज्जवणाणे ।

६. नंदी सू० २३-२५ ।

७. सं० पा०—तद्देव केवलणाणं सव्वं भाणियव्वं ।

८. नंदी सू० २७-३३ ।

९. सं० पा०—अज्जत्थियं जाव समुप्पणं ।

१०. एसा (छ) ।

११. पण्णा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२. × (क, ख, ग, घ, च) ।

१३. सं० पा०—एस सण्णा जाव एस समोसरणे ।

१४. तज्जीवो (क, ख, ग, घ, च) ।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५०. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—जति णं भंते ! तुब्भं समणाणं णिग्गंधाणं एस सण्णा^१ *एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस^२ समोसरणे, जहा—अण्णे जीवो अण्णं सरीरं, णो 'तं जीवो' तं सरीरं—एवं खलु ममं अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए णगरीए अधम्मिए जाव^३ सयस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेति से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुवहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे । तस्स णं अज्जगस्स अहं णत्तुए होत्था—इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए वहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं जति णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा—एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेमि । तए णं अहं सुवहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता [कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु ?] नरएसु [णेरइयत्ताए ?] उववण्णे तं मा णं नत्तुया ! तुमं पि भवाहि अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेहि । मा णं तुमं पि एवं चेव सुवहुं पावकम्मं^४ *कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए^५ उववज्जिहिसि । तं जइ णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा तो णं अहं सहहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा^६ जहा अण्णे जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं ।

जम्हा णं से अज्जए ममं आगंतुं नो एवं वयासी, तम्हा सुपइट्ठिया मम पइण्णा^७ समणाउसो ! जहा तज्जीवो तं सरीरं ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५१. तए णं से केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—अत्थि णं पएसी ! तव सूरियकंता णामं देवी ? हुंता अत्थि । जइ णं तुमं पएसी तं सूरियकंतं देवि प्हायं कयबलि-कम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं^८ केणइ पुरिसेणं प्हाएणं^९ *कयबलि-कम्मेणं कयकोउयमंगलपायच्छित्तेणं^{१०} सव्वालंकारभूसिएणं सद्धि इट्ठे सह-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सते कामभोगे पच्चणुब्भवमार्णि पासिज्जासि, तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स कं डंडं निव्वत्तेज्जासि ? अहं णं भंते ! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णगं वा पायच्छिण्णगं वा सूलाइगं वा सूलभिण्णगं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवएज्जा ।

'अहं णं' पएसी से पुरिसे तुमं एवं वदेज्जा—मा ताव मे सामी ! मुहुत्तागं^{१०} हत्थच्छि-

१. सं० पा०—एस सण्णा जाव समोसरणे ।

६. पन्ना (क, ख, ग, घ, च) ।

२. तज्जीवो (क, ख, ग, घ, च) ।

७. विभूसियं (छ) ।

३. राय० सू० ६७१ ।

८. सं० पा०—प्हाएणं जाव सव्वालंकारभूसिएणं ।

४. सं० पा०—पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि ।

९. अहण्णं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. रोवएज्जा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. मुहुत्तागं (छ) ।

ण्णमं वा^१ •पायच्छिण्णमं वा सूलाइमं वा सूलभिण्णमं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं^२ जीवियाओ ववरोवेहि जाव ताव अहं भित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणं एवं वयामि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पावाइं कम्माइं समायरेत्ता इमेयारुवं आवइं पाविज्जामि, तं मा णं देवाणु-प्पिया ! तुब्भे वि केइ पावाइं कम्माइं समायरह^३, मा णं से वि एवं चेव आवइं पाविज्जि-हिह^४, जहा णं अहं । तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि ? णो तिणट्ठे समट्ठे । कम्हा णं ? जम्हा णं भंते ! अवराही णं से पुरिसे । एवमेव पएसी ! तव वि अज्जए होत्था इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव^५ णो सम्मं करभरविंत्त पवत्तेइ । से णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं^६ •पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए^७ उववण्णे । तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था—इट्ठे कंते^८ •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए वहुमाए अणुमाए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंवरघुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुणं पासणयाए ! से णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] । चउहि च णं ठाणेहि पएसी ! अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए से णं तत्थ मह्भूयं वेयणं वेदेमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए नरयपालेहि भुज्जो-भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए निरयाउयंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जि-ण्णंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] ।

इच्चेहि चउहि ठाणेहि पएसी अहुणोववण्णे नरएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ [हव्वमागच्छित्तए ?] । तं सद्दहाहि णं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं ॥

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५२. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस पण्णओ उवमा, इमेण पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—एवं खलु भंते ! मम अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नगरीए धम्मिया^९ •धम्मिद्दा धम्मकखाई धम्माणुया धम्मपलोई धम्मपलज्जणी धम्मसीलसमुयाचारा धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणी^{१०} समणोवासिया

१. सं० पा०—हृद्यच्छिण्णमं वा जाव जीवियाओ ।

२. समायरउ (क, ख, ग, घ) ।

३. पाविज्जिहिइ (घ, च) ।

४. राय० सू० ६७१ ।

५. सं० पा०—सुबहुं जाव उववण्णे ।

६. सं० पा०—कंते जाव पासणयाए ।

७. सं० पा०—धम्मिया जाव वित्ति ।

८. *माणा (घ) ।

अभिगयजीवा' *जीवा उवलद्धपुण्णपावा आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बंधप्पमोक्ख-कुसला असहिज्जा देवासुर - णाग - सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहि देवगणेहि निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे णिस्संक्रिया णिक्कंखिया णिव्वित्तिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा अभिगयट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ता अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे परमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउरघरप्पवेसा चाउइसट्ठमुद्धिपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणी, समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइम-साइमेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संधारेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणी-पडिलाभेमाणी, बहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खण-पोसहोववासेहि° अप्पाणं भावेमाणी विहरइ । सा णं तुज्जं वत्तव्वयाए सुवहं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा । तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था—इट्ठे कंते' *पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिज्जणणे उंवरपुप्फं पिव्व दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण° पासणयाए, तं जइ णं सा अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा—एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया' *धम्मिटा धम्मक्खाई धम्माणुया धम्मपलोई धम्मपलज्जणी धम्मसीलसमुयाचारा धम्मेण चैव° वित्ति कप्पेमाणी समणोवासिया जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरामि ।

तए णं अहं सुवहं° पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता' *कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु° देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा, तं तुमं पि णत्तुया ! भवाहि धम्मिए' *धम्मिट्ठे धम्मक्खाई धम्माणुए धम्मपलोई धम्मपलज्जणे धम्मसीलसमुयाचारे धम्मेण चैव वित्ति कप्पेमाणे समणोवासए जाव अप्पाणं भावेमाणे° विहराहि । तए णं तुमं पि एयं चैव सुवहं पुण्णोवचयं° *समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववज्जिहिसि । तं जइ णं अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा तो णं अहं सद्देज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तज्जीवो तं सरीरं ।

जम्हा सा अज्जिया मम आगंतुं णो एवं वयासी, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा' जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं ।

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५३. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—जति णं तुमं पएसी ! प्हायं कयवलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं उल्लापडगं भिगार-कडच्छुयहत्थगयं देवकुलमणुपविसमाणं केइ पुरिसे वच्चवरंसि ठिच्चा एवं वदेज्जा—एह ताव सामी ! इह

१. सं० पा०—अभिगयजीवा सव्वो वण्णओ जाव अप्पाणं ।
२. सं० पा०—कंते जाव पासणयाए ।
३. सं० पा०—धम्मिया जाव वित्ति ।
४. सुहं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
५. सं० पा०—समज्जिणित्ता जाव देवलोएसु ।
६. सं० पा०—धम्मिए जाव विहराहि ।
७. सं० पा०—पुण्णोवचयं जाव उववज्जिहिसि ।
८. पण्णा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

मुहुतागं^१ आसयह वा चिट्टह वा निसीयह वा तुयट्टह वा । तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणिज्जासि ? णो तिणट्ठे समट्ठे । कम्हा णं ? जम्हाणं भंते ! असुई असुइ-सामंतो । एवामेव पएसी ! तव वि अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए णयरीए धम्मिया जाव^२ अप्पाणं भावेमाणी विहरति । सा णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं^३ *पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा । तीसे णं अज्जियाए तुमं गत्तुए होत्था—इट्ठे^४ *कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए^५, किमंग पुण पासणयाए ? सा णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ।

चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्व-मागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए—

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गट्ठिए अज्झोववण्णे, से णं माणुसे भोगे नो आढाति नो परिजाणाति । से णं इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए ।

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए^६ *गिद्धे गट्ठिए^७ अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिण्णए भवति, दिव्वे पेम्मे संकंते भवति । से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ।

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए^८ *गिद्धे गट्ठिए^९ अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवइ—इयाणि गच्छं मुहुत्ते गच्छं जाव इह अप्पाउया णरा कालधम्मणा संजुत्ता भवंति, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्व-मागच्छित्तए ।

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं^{१०} *कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गट्ठिए^{११} अज्झोववण्णे, तस्स माणुस्सए उराले दुग्धे पडिकूले पडिलोमे भवइ, उड्ढं पिय णं चत्तारि पंचजोअणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छति^{१२} । से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ।

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए । तं सद्दाहिं णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं ।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५४. तए णं से पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस

१. मुहुतागं (क, छ) ।

२. राय० सू० ७५२ ।

३. सं० पा०—सुबहुं जाव उववण्णा ।

४. सं० पा०—इट्ठे किमंग ।

५. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे ।

६. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे ।

७. सं० पा०—दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे ।

८. हवइ (वु) ।

पण्णओ उवमा, इमेणं पुणं कारणेणं णो उवागच्छति—

एवं खलु भंते! अहं^१ अण्णया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेगगण्णायक-दंडणायम-
राईसर^२-तलवर- माडंबिय-कोडुविय- इब्भ-सेट्ठि- सेणावइ- सत्थवाह-मंति- महामंति-गणग-
दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धि संपरिवुडे विहरामि ।

तए णं मम णगरगुत्तिया ससक्खं 'सहोढं सलोद्दं'^३ सगेवेज्जं अवउडगबंधणबद्धं चोरं
उवणेति । तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतं चैव अओकुंभीए पक्खिवावेमि, अओमएणं पिहाण-
एणं पिहावेमि, अएण य तउएण य कायावेमि, आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि ।

तए णं अहं अण्णया कयाइ जेणामेव सा अओकुंभी तेणामेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता
तं अओकुंभी उग्गलच्छावेमि^४, उग्गलच्छावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि, णो चैव णं तीसे
अओकुंभीए^५ केइ छिड्डे इ वा विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जओ णं से जीवे अंतोहितो
वहिया णिग्गए । जइ णं भंते ! तीसे अओकुंभीए होज्ज केइ छिड्डे इ वा^६ •विवरे इ वा
अंतरे इ वा^७ राई वा, जओ णं से जीवे अंतोहितो वहिया णिग्गए, तो णं अहं सद्देज्जा
पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं ।

जम्हा णं भंते ! तीसे अओकुंभीए पत्थि केइ छिड्डे इ वा^८ •विवरे इ वा अंतरे इ वा,
राई वा, जओ णं से जीवे अंतोहितो वहिया^९ निग्गए, तम्हा सुपत्तिट्ठिया मे पइण्णा^{१०} जहा—
तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५५. तए णं केसी कुमार-समणे पएंसि रायं एवं वयासी पएसी ! से जहाणामए
कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा । अहं णं केइ
पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो-अंतो अणुप्पविसति, अणुप्पविसित्ता
तीसे कूडागारसालाए सब्वतो समंता घण-निचिय-निरंतर-णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं^{११} पिहेइ ।
तीसे कूडागारसालाए बहुमज्जदेसभाए ठिच्चा तं भेरिं दंडएणं महया-महया सद्देणं तालेज्जा ।
से णूणं पएसी ! से सद्दे णं अंतोहितो वहिया णिग्गच्छइ ? हुंता णिग्गच्छइ । अत्थि णं
पएसी ! तीसे कूडागारसालाए केइ छिड्डे इ वा^{१२} •विवरे इ वा अंतरे इ वा^{१३} राई वा,
जओ णं से सद्दे अंतोहितो वहिया णिग्गए ? नो 'तिणट्ठे समट्ठे'^{१४} । एवामेव पएसी !
जीवे वि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा पव्वयं भिच्चा अंतोहितो वहिया
णिग्गच्छइ, तं सद्देहाहिं णं तुमं पएसी ! अण्णो जीवो^{१५} •अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं
सरीरं^{१६} ॥

१. पुण मे (क, ख, ग, च, छ) ।

२. × (क, च) ।

३. ईसर (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सहोढं (क, ख, ग, घ, छ); सहोट (च) ।

५. उल्लंछावेमि (घ) ।

६. अओकुंभीए (क, ख, ग); अयकुंभीए (घ) ।

७. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव राई ।

८. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव निग्गए ।

९. पन्ना (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. दुवारणयणाइं (ख, ग) ।

११. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव राई ।

१२. इणमट्ठे (क) ।

१३. सं० पा०—जीवो तं चैव ।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५६. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं णो उवागच्छइ—एवं खलु भंते ! अहं अण्णया कयाइ बाहिरियाए उवट्टाणसालाए' •अणेगगण्णायक-दंडणायग-राईसर-तलवर-माडंविद्य-कोडुंविद्य-इभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड- पीढमद्-नगर-निगम दूय-संधिवाल्लेहिं सद्धि संपरिवुडे° विहरामि । तए णं ममं षगरगुतिया ससवखं' •सहोढं सलोइं सगेवेज्जं अवउडगबंधणवद्धं चोरं° उवणेति । तए णं अहं तं पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि, ववरोवेत्ता अओकुंभीए पविखवावेमि, अओमएणं पिहाणएणं पिहावेमि', •अएण य तउएण य कायावेमि, आय° पच्चइएहिं पुरिसेहिं रवखावेमि ।

तए णं अहं अण्णया कयाइ जेणेव सा कुंभी तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छिता तं अओकुंभि उगलच्छावेमि, तं अओकुंभि किमिकुंभि पिव पासामि, णो चेव णं तीसे अओकुंभीए केइ छिड्डे इ वा° •विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जतो णं ते जीवा वहियाह्हितो अणुपविट्टा । जति णं तीसे अओकुंभीए होज्ज केइ छिड्डे इ वा° •विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जतो णं ते जीवा वहियाह्हितो° अणुपविट्टा, तो णं अहं सदहेज्जा' •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं° ।

जम्हा णं तीसे अओकुंभीए नत्थि केइ छिड्डे इ वा° •विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा, जतो णं ते जीवा वहियाह्हितो° अणुपविट्टा, तम्हा सुपत्तिट्टिआ मे पइण्णा जहा—तज्जीवो, 'तं सरीरं', •नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं° ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५७. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—अत्थि णं तुमे पएसी ! कयाइ य अए धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा ? हंता अत्थि । से णूणं पएसी ! अए धंते समाणे सव्वे अगणिपरिणए भवति? 'हंता भवति', अत्थि णं पएसी ! तस्स अयस्स केइ छिड्डे इ वा° •विवरे इ वा अंतरे वा राई वा °जेणं से जोई वहियाह्हितो अंतो अणुपविट्ठे ? नो तिणट्ठे समट्ठे । एवामेव पएसी ! जीवो वि अण्णडिह्यगई पुढावि भिच्चा सिलं भिच्चा पव्वयं भिच्चा वहियाह्हितो अंतो अणुपविसइ । तं सदहाहि णं तुमं पएसी" ! •जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं° ॥

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७५८. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस

- | | |
|---|--|
| १. सं० पा०—उवट्टाणसालाए जाव विहरामि । | ७. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव अणुपविट्टा । |
| २. सं० पा०—ससवखं जाव उवणेति । | ८. तस्सरीरं (क, ग, घ, च, छ) । सं० पा०—सरीरं तं चेव । |
| ३. सं० पा०—पिहावेमि जाव पच्चइएहिं । | ९. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ४. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव राई । | १०. सं० पा०—छिड्डे इ वा जेणं । |
| ५. सं० पा०—छिड्डे इ वा जाव अणुपविट्टा । | ११. सं० पा०—पएसी ! तहेव । |
| ६. सं० पा०—सदहेज्जा जहा अण्णो जीवो तं | |

चेव ।

पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—भंते ! से जहाणामए—केइ पुरिसे तरुणे^१ •वलवं जुगवं जुवाणे अप्पायंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पिट्ठंतरोरुपरिणए घण-णिचिय-वट्ट-वलियखंधे चम्मेट्टग-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचियगत्ते उरस्सवलसमण्णागए तलजमलजुयलवाहू लंघण-पवण-जइण-पमट्टणसमत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेधावी णिउण^२ सिप्पोवगए पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ? हंता पभू । जति णं भंते ! सच्चेव^३ पुरिसे वाले^४ •अदक्खे अपत्तट्ठे अकुसले अमेहावी मंदविण्णाणे पभू होज्जा पंचकंडगं निसिरित्तए, तो णं अहं सदहेज्जा^५ •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं^६ । जम्हा णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जाव मंदविण्णाणे णो 'पभू पंचकंडयं'^७ निसिरित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा—तज्जीवो^८ •तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७५६. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—से जहाणामए—केइ पुरिसे तरुणे^१ •वलवं जुगवं जुवाणे अप्पायंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पिट्ठंतरोरुपरिणए घण-णिचिय-वट्ट-वलियखंधे चम्मेट्टग-दुघण-मुट्ठिय-समाहय-निचियगत्ते उरस्सवलसमण्णागए तल-जमल-जुयलवाहू लंघण-पवण-जइण-पमट्टणसमत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेधावी णिउण^२ सिप्पोवगए णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए^३ नवएणं उसुणा 'पभू पंचकंडगं'^४ निसिरित्तए ? हंता पभू । सो चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरिल्लएणं धणुणा कोरिल्लयाए जीवाए कोरिल्लएणं उसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ? णो तिणट्ठे समट्ठे । कम्हा णं भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति । एवामेव पएसी ! सो चेव पुरिसे वाले^५ •अदक्खे अपत्तट्ठे अकुसले अमेहावी^६ मंदविण्णाणे अपज्जत्तोवगरणे णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए, तं सदहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो^७ •अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं^८ ।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७६०. तए णं पएसी राया केसिं कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—भंते ! से जहाणामए—केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगते पभू एगं महं अयभारगं वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए ? हंता पभू । सो चेव णं भंते ! पुरिसे जुण्णे जराज्जरियदेहे सिढिलवलिया-वणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले

१. सं० पा०—तरुणे जाव सिप्पोवगए ।

२. से चेव (क) ।

३. सं० पा०—वाले जाव मंदविण्णाणे; अस्य पाठस्य पूर्तिः 'छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेधावी' अनेन पाठेन कृता ।

४. सं० पा०—सदहेज्जा जहा अण्णो जीवो तं चेव ।

५. पभू यं च कंडगं (क, च) ।

६. सं० पा०—तज्जीवो तं चेव ।

७. सं० पा०—तरुणे जाव सिप्पोवगए ।

८. पण्डिचियाए (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

९. पभू णं च कंडगं (क) ।

१०. सं० पा०—वाले जाव मंदविण्णाणे ।

११. सं० पा०—जीवो तं चेव ।

परिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा^१ •तउयभारगं वा सीसगभारगं^० वा परिवहित्तए । जति णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुण्णे जराजज्जरियदेहे^१ •सिद्धिलवलियावणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले^० परिकिलंते पभू एगं महं अयभारगं वा^१ •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा^० परिवहित्तए, तो णं अहं सदहेज्जा^१ •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तज्जीवो तं सरीरं^० । जम्हा णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुण्णे^१ •जराजज्जरियदेहे सिद्धिलवलियावणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले^० परिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा^१ •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा^० परिवहित्तए, तम्हा सुपतिट्ठिता मे पइण्णा^० •जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं^० ।।

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७६१. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—से जहाणामए—केइ^१ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए णवियाए विहंगियाए णवएहि सिक्कएहि णवएहि पच्छियापिडएहि^१ पभू एगं महं अयभारगं वा^{१०} •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा^० परिवहित्तए ? हंता पभू । पएसी ! से चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए जुण्णियाए दुब्बलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए^{११}, जुण्णएहि दुब्बलएहि घुणक्खइएहि सिद्धिल-तया-पिणद्धएहि सिक्कएहि, जुण्णएहि दुब्बलएहि घुणक्खइएहि पच्छियापिडएहि^{१२} पभू एगं महं अयभारगं वा^{१३} •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा^० परिवहित्तए ? णो तिणट्ठे समट्ठे । कम्हा णं ? भंते ! तस्स पुरिसस्स जुण्णाइं उवगरणाइं भवंति । एवामेव पएसी ! से चेव पुरिसे जुण्णे^{१४} •जराजज्जरियदेहे सिद्धिलवलियावणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरल-परिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले परि^{१५} किलंते जुण्णोवगरणे नो पभू एगं महं अयभारगं वा^{१६} •तउयभारगं वा सीसगभारगं वा^० परिवहित्तए, तं सदहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं ।।

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७६२. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते^{१६} ! •एस

- | | |
|---|---|
| १. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए । | एहि (छ) । |
| २. सं० पा०—जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते । | १०. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए । |
| ३. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए । | ११. वाहंगियाए (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ४. सं० पा०—सदहेज्जा तहेव । | १२. पच्छिपिडएहि (क, ख); पत्थियापिडएहि (ग, घ); पच्छिपिडएहि (च); पच्छिपिड-एहि (छ) । |
| ५. सं० पा०—जुण्णे जाव किलंते । | १३. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए । |
| ६. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए । | १४. सं० पा०—जुण्णे जाव किलंते । |
| ७. सं० पा०—पइण्णा तहेव । | १५. सं० पा०—अयभारगं वा जाव परिवहित्तए । |
| ८. के वि (घ, च) । | १६. सं० पा०—भंते जाव नो ! |
| ९. पच्छियापिडएहि (क); पत्थियापिडएहि (ख, ग, घ); पत्थियापिडएहि (च); पत्थियापिड- | |

पण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—एवं खलु भंते ! •अहं अण्णया कयाइ वाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेग-गण्णायक-दंडणायग-राईसर-तलवर-माडंविद्य-कोडुविद्य-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-महामति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमट्ट-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धि संपरिवुडे° विहरामि । तए णं मम णगरगुत्तिया चोरं उवणेंति ।

तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतगं° चेव तुलेमि, तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि, मयं तुलेमि णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स केइ अण्णत्ते° वा नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा लहुयत्ते वा ।

जति णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स केइ अण्णत्ते वा° नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा, तो णं अहं सद्देज्जा° •पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं° ।

जम्हा णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ अण्णत्ते वा° •नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा, तम्हा सुपत्तिट्ठिया मे पइण्णा जहा—तज्जीवो° •तं सरीरं णो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं° ॥

जीव-सरीर-अण्णत्त-पदं

७६३. तए णं केसी कुमार-समणे पएसी रायं एवं वयासी—अत्थि णं पएसी ! तुमे कयाइ वत्थी 'धंतपुच्चे वा धमावियपुच्चे' वा ? हंता अत्थि । अत्थि णं पएसी ! तस्स वत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स, अपुण्णस्स वा तुलियस्स केइ अण्णत्ते वा° •नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे ।

एवामेव पएसी ! जीवस्स अगरुलघुयत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स, मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ अण्णत्ते वा° •नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गरुयत्ते वा° लहुयत्ते वा, तं सद्देहाहि णं तुमं पएसी ! •जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं° ॥

तज्जीव-तच्छरीर-पदं

७६४. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एस^{१३} पुण्णओ उवमा, इमेणं पुण कारणेणं नो उवागच्छइ—एवं खलु भंते ! अहं अण्णया° •कयाइ वाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेग-गण्णायक-दंडणायग-राईसर-तलवर-माडंविद्य-

१. सं० पा०—भंते जाव विहरामि ।
२. जीवतगं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
३. आणत्ते (क, ख, ग, च, छ) ।
४. सं० पा०—अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ।
५. सं० पा०—सद्देज्जा तं चेव ।
६. सं० पा०—अण्णत्ते वा° लहुयत्ते ।
७. सं० पा०—तज्जीवो तं चेव ।

८. वातपुण्णे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
९. सं० पा०—अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ।
१०. सं० पा०—अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ।
११. सं० पा०—पएसी तं चेव ।
१२. सं० पा०—एस जाव नो ।
१३. सं० पा०—अण्णया जाव चोरं ।

कोडुंविद्य - इभ-सेट्टि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति - महामंति - गणग - दोवारिय- अमच्च-चेड-पीढमद्-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धि संपरिवुडे विहरामि । तए णं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं सहोढं सलोहं सगेवेज्जं अवउडगबंघणबद्धं चोरं उवणेंति । तए णं अहं तं पुरिसं सव्वतो समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि ।

तए णं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं करेमि, करेत्ता सव्वतो समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि । एवं तिहा चउहा संखेज्जहा फालियं करेमि^१, *करेत्ता सव्वतो समंता समभिलोएमि^२, णो चेव णं तत्थ जीवं पासामि ।

जइ णं भंते ! अहं तंसि पुरिसंसि^३, दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंमि जीवं पासंतो^४, तो णं अहं सद्देज्जा^५ *पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अण्णो जीवो अण्णं सरिरं, नो तज्जीवो तं सरिरं^६ ।

जम्हा णं भंते ! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंमि जीवं न पासामि, तम्हा सुपत्तिट्टिया मे पइण्णा जहा—तज्जीवो तं सरिरं^६, *नो अण्णो जीवो अण्णं सरिरं^६ ॥

मूढ-कट्टुहारय-पदं

७६५, तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—मूढतराए णं तुमं पएसी ! ताओ तुच्छतराओ । के णं भंते ! तुच्छतराए ? पएसी ! से जहाणामए—केइ पुरिसा वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइंभायणं च गहाय कट्टाणं अडवि अणुप-विट्ठा ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए^७ *छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए^८ कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं पुरिसं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्टाणं अडवि पविसामो, एत्तो णं तुमं जोइंभायणाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि । अहं तं जोइंभायणे जोइं विज्जवेज्जा, तो णं तुमं कट्टाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि त्ति कट्टु कट्टाणं अडवि अणुपविट्ठा ।

तए णं से पुरिसे ताओ मुहुत्तंतरस्स तेसि पुरिसाणं असणं साहेमि त्ति कट्टु जेणेव जोति-भायणे तेणेव उवागच्छइ, जोइंभायणे जोइं विज्जायमेव पासति ।

तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएति, नो चेव णं तत्थ जोइं पासति ।

तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ, फरसुं गेण्हइ, तं कट्ठं दुहा फालियं करेइ, सव्वतो समंता समभिलोएइ, णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ । एवं^९ *तिहा चउहा^{१०} संखेज्जहा वा

१. फालियं (च, छ) ।

२. सं० पा०—करेमि णो ।

३. तं पुरिसं (क, च, छ) ।

४. पासं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. सं० पा० सद्देज्जा तं चेव ।

६. सं० पा०—सरिरं तं चेव ।

७. अकामियाए (क, ख, ग, घ) ; अकामयाए (च, छ) ; सं० पा०—अगामियाए जाव किंचि ।

८. एत्तो (क) ; पुत्ता (च, छ) ।

९. सं० पा०—एवं जाव संखेज्जहा ।

फालियं करेइ, सव्वतो समंता समभिलोएइ, नो चैव णं तत्थ जोइं पासइ ।

तए णं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहाफालिए वा^१ •तिहाफालिए वा चउहाफालिए वा^२ संखेज्जहाफालिए वा जोइं अपासमाणे संते तंते परिस्सते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ, परियरं मुयइ, मुइत्ता एवं वयासी—अहो ! मए तेसि पुरिसाणं असणे नो साहिए त्ति कट्ठु ओह्यमणसंकप्पे चितासोगसागरसंपविट्ठे^३ करयलपल्लत्थमुहे^४ अट्टज्जाणोवगए भूमिगयदिट्टिए झियाइ ।

तए णं ते पुरिसा कट्टाईं छिदंति, जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति, तं पुरिसं ओह्यमणसंकप्पं^५ •चितासोगसागरसंपविट्ठं करयलपल्लत्थमुहं अट्टज्जाणोवगयं भूमिगय-दिट्टियं^६ झियायमाणं पासंति, पासित्ता एवं वयासी—कि णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओह्यमण-संकप्पे^७ •चितासोगसागरसंपविट्ठे करयलपल्लत्थमुहे अट्टज्जाणोवगए भूमिगयदिट्टिए^८ झियायसि ?

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! कट्टाणं अडवि अणुपविसमाणा^९ ममं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्टाणं अडवि^{१०} •पविसामो, एत्तो णं तुमं जोइभाय-णाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि । अहं तं जोइभायणे जोई विज्जवेज्जा, तो णं तुमं कट्टाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि त्ति कट्ठु कट्टाणं अडवि अणु-पविट्टा । तए णं अहं तओ मुहुत्तंतरस्स तुब्भं असणं साहेमि त्ति कट्ठु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छामि जाव झियासि ।

तए णं तेसि पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए दक्खे पत्तट्ठे^{११} •कुसले महामई विणीए विण्णाणपत्ते^{१२} उवएसलद्धे ते पुरिसे एवं वयासी—गच्छहं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! ण्हाया कयबलिकम्मा^{१३} •कयकोउयमंगलपायच्छित्ता^{१४} हव्वमागच्छेह जा णं अहं असणं साहेमित्ति कट्ठु परियरं बंधइ, परसुं गिण्हइ, सरं करेइ, सरेण अरणिं महेइ, जोइं पाडेइ, जोइं संधुक्खेइ, तेसि पुरिसाणं असणं साहेइ ।

तए णं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा^{१५} •कयकोउयमंगल-पायच्छित्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति ।

तए णं से पुरिसे तेसि पुरिसाणं सुहासणवरगयाणं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेइ ।

तए णं ते पुरिसा तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा वीसाएमाणा^{१६} •परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं च णं^{१७} विहरंति । जिमियभुत्तुरागया वि य णं

१. सं० पा०—दुहाफालिए वा णाव संखेज्जहा ।

२. •सागरं पविट्ठे (घ) ।

३. •पल्लत्थमुहे (क) ।

४. सं० पा०—मणसंकप्पं जाव झियायमाणं ।

५. सं० पा०—मणसंकप्पे जाव झियायसि ।

६. अणुपविट्टा समाणा (घ) ।

७. सं० पा०—अडवि जाव पविट्टा ।

८. सं० पा०—पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे ।

९. सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेह ।

१०. सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता ।

११. सं० पा०—वीसाएमाणा जाव विहरंति ।

समाणा आयंता चोक्खा परमसुईभूया तं पुरिसं एवं वयासी—अहो ! णं तुमं देवाणुप्पिया ! जड्ढे मूढे अपडिण्णि विव्विष्णाणे अणुवएसलद्धे जे णं तुमं इच्छसि कट्ठसि दुहा फालियंसि वा^१ *तिहा फालियंसि वा चउहा फालियंसि वा संखेज्जहा फालियंसि वा^२ जोतिं पासित्तए । से एएणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी ! ताओ तुच्छतराओ ॥

अक्कोसं पइ पएसिस्स वितक्कणा-पदं

७६६. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—जुत्तए णं भंते ! तुभं इय छेयाणं दक्खाणं पत्तट्ठाणं^३ कुसलाणं महामईणं विणीयाणं विष्णाणपत्ताणं उवएसलद्धाणं अहं इमीसे^४ महालियाए महूच्चपरिसाए मज्जे उच्चावएहि आओसेहि आओसित्तए, उच्चावयाहि उद्धंसणाहि उद्धंसित्तए, उच्चावयाहि निब्भंछणाहि निब्भंछित्तए, उच्चावयाहि निच्छोडणाहि निच्छोडित्तए ? ॥

केसिस्स समाधाण-पदं

७६७. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—जाणासि णं तुमं पएसी ! कति परिसाओ पणत्ताओ ? भंते ! जाणामि चत्तारि परिसाओ पणत्ताओ, तं जहा—खत्तियपरिसा, गाहावइपरिसा, माहणपरिसा, इसिपरिसा ।

जाणासि णं तुमं पएसी ! एयासि चउण्हं परिसाणं कस्स का दंड-णीई पणत्ता ? हंता ! जाणामि—जे णं खत्तियपरिसाए अवरज्जइ, से णं हत्थच्छिष्णाए वा पायच्छिष्णाए वा सीसच्छिष्णाए वा सूलाइए वा एगाहच्चे कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ । जे णं गाहावइपरिसाए अवरज्जइ, से णं तणेण वा वेढेण^५ वा पलालेण वा वेढित्ता अगणिकाएणं ज्ञामिज्जइ^६ । जे णं माहणपरिसाए अवरज्जइ, से णं अणिट्ठाहि अकंताहि^७ *अप्पियाहि अमणुष्णाहि^८ अमणामाहि वग्गूहि उवालभित्ता कुंडियालंछणए वा सूणगलंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ । जे णं इसिपरिसाए अवरज्जइ, से णं णाइअणिट्ठाहि^९ *णाइअकंताहि णाइअप्पियाहि णाइअमणुष्णाहि^{१०} णाइअमणामाहि वग्गूहि उवालभइ । एवं च ताव पएसी ! तुमं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वामं वामेणं दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टसि ॥

पएसिस्स पडिकूल-वट्टण-हेउ-पदं

७६८. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पि-एहि पडमिल्लुएणं चैव वागरणेणं संलद्धे^१, तए णं ममं इमेयारूवे अज्जत्थिए^२ *चित्थिए पत्थिए मणोगए^३ संकप्पे समुपज्जित्था—जहा-जहा णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेणं^४

१. सं० पा० दुहाफालियंसि वा जोतिं ।

२. पट्ठाणं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

३. इमाए (क); इमीसेए (ख, ग, घ, च, छ) ।

४. वेढेण (क); वेढेण (ख, ग); × (घ) ।

५. भाविज्जइ (घ) ।

६. सं० पा०—अकंताहि जाव अमणामाहि ।

७. सं० पा०—णाइअणिट्ठाहि जाव णाइअमणा-माहि ।

८. संलत्ते (ववचित्) ।

९. सं० पा०—अज्जत्थिए जाव संकप्पे ।

१०. सं० पा०—वामेणं जाव विवच्चासं ।

•दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं° विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिस्सामि, तथा-तथा णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च, दंसणं च दंसणोवलंभं च, जीवं च जीवोवलंभं च उवलभिस्सामि । तं एएणं कारणेणं अहं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं° •दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं° विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिए ॥

ववहारग-पदं

७६६. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ ववहारगा पणत्ता ? हंता जाणामि, चत्तारि ववहारगा पणत्ता—देइ नामेगे णो सण्णवेइ । सण्णवेइ नामेगे नो देइ । एगे देइ वि सण्णवेइ वि । एगे णो देइ णो सण्णवेइ । जाणासि णं तुमं पएसी ! एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी ? के अव्वहारी ? हंता जाणामि—तत्थ णं जेसे पुरिसे देइ णो सण्णवेइ, से णं पुरिसे ववहारी । तत्थ णं जेसे पुरिसे णो देइ सण्णवेइ, से णं पुरिसे ववहारी । तत्थ णं जेसे पुरिसे देइ वि सण्णवेइ वि, से पुरिसे ववहारी । तत्थ णं जेसे पुरिसे णो देइ णो सण्णवेइ, से णं अव्वहारी । 'एवामेव तुमं पि ववहारी, णो चेव णं तुमं पएसी ! अव्वहारी' ॥

जीवोवदंसणट्ठं-निवेदण-पदं

७७०. तए णं पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—तुभे णं भंते ! 'इय छेया' दक्खा° •पत्तट्ठा कुसला महामई विणीया विष्णाणपत्ता° उवएसलद्धा, समत्था णं भंते ! ममं करयलंसि वा° आमलयं जीवं सरीराओ अभिणिवट्टित्ताणं उवदंसित्तए ? ॥

केसिस्स समाधाण-पदं

७७१. तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संबुत्ते° । तणवणस्सइकाए एयइ वेयइ चलइ फंदइ घट्टइ° उदीरइ, तं तं भावं परिणमइ । तए णं केसी कुमार-समणे पएसिं रायं एवं वयासी—पाससि णं तुमं पएसी राया ! एवं तणवणस्सइकायं एयंतं° •वेयंतं चलंतं फंदंतं घट्टंतं उदीरंतं° तं तं भावं परिणमतं ? हंता पासामि । जाणासि णं तुमं पएसी ! एवं तणवणस्सइकायं किं देवो चालेइ ? असुरो वा चालेइ ? णागो वा चालेइ ? किण्णरो वा चालेइ ? किंपुरिसो वा चालेइ ? महोरगो वा चालेइ ? गंधव्वो वा चालेइ ? हंता जाणामि—णो देवो चालेइ, •णो असुरो चालेइ, णो णागो चालेइ, णो किण्णरो चालेइ, णो किंपुरिसो चालेइ, णो महोरगो चालेइ° णो गंधव्वो चालेइ, वाउयाए चालेइ ।

पाससि णं तुमं पएसी ! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं ? णो तिणट्ठे समट्ठे ।

- | | |
|---|-----------------------------------|
| १. सं० पा०— वामेणं जाव विवच्चासं । | ५. व्वा (क) । |
| २. एवामेव णो चेव णं तुमं पएसी अव्वहारी ववहारी (क, ख, ग, घ, च) । | ६. संजुत्ते (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ३. अइछेया (क) । | ७. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ४. सं० पा०—दक्खा जाव उवएसलद्धा । | ८. सं० पा०—एयंतं जाव तं तं । |
| | ९. सं० पा०—चालेइ जाव णो गंधव्वो । |

जइ णं तुमं पएसी ! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स^१ *सकम्मरस सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स^२ ससरीरस्स रूवं न पाससि, तं क्हं णं पएसी ! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं [सरीराओ अभिणिवट्टित्ताणं ?] उवदंसिस्सामि ?

एवं खलु पएसी ! दसट्टाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं जहा—
धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरवद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं, वायं, अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ, अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सइ वा नो वा करिस्सइ । एताणि चेव उप्पण्णणणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकायं^३, *अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरवद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं, वायं, अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ, अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सइ वा^४ णो वा करिस्सइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो^५ *अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं^६ ।

हत्थि-कुंथु-जीव समाणत्त-पदं

७७२. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—से णूणं भंते ! हत्थिस्स कुंथुस्स य समे चेव जीवे ? हंता पएसी ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे । से णूणं भंते ! हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव 'अप्पासवतराए चेव'^१ *अप्पाहारतराए चेव अप्पनीहारतराए चेव अप्पुस्सासतराए चेव अप्पनीसासतराए चेव अप्पिड्ढितराए चेव अप्पमहतराए चेव अप्पज्जुइतराए चेव^२ ? कुंथुओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरिय^३तराए चेव महासवतराए चेव महाहारतराए चेव महानीहारतराए चेव महाउस्सासतराए चेव महानीसासतराए चेव महिड्ढितराए चेव महामहतराए चेव महज्जुइतराए चेव ?^४ ।

हंता पएसी ! हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव कुंथुओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव^५, *हत्थीओ कुंथू अप्पकिरियतराए चेव कुंथुओ वा हत्थी महाकिरियतराए चेव, हत्थीओ कुंथू अप्पासवतराए चेव कुंथुओ वा हत्थी महासवतराए चेव, एवं आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइएहि हत्थीओ कुंथू अप्पतराए चेव कुंथुओ वा हत्थी महातराए चेव^६ । कम्हा णं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?

पएसी ! से जहाणामए कूडागारसाला सिया^७—*दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायं गंभीरा । अहं णं केइ पुरिसे जोइं व दीवं व गहाय तं कूडागारसालं अंतो-अंतो अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घण-निच्चिय-निरंतर-णिच्छिड्डाइं दुवार-वयणाइं पिहेति, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्जदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा । तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो-अंतो ओभासेइ उज्जोवेइ तावेति पभासेइ, णो चेव णं वाहि ।

१. सं० पा०—सरूविस्स जाव ससरीरस्स ।

इड्ढि महज्जुइ अप्पतराए चेव ।

२. सं० पा०—धम्मत्थिकायं जाव णो ।

६. सं० पा०—महाकिरिय जाव हंता ।

३. सं० पा०—जीवो तं चेव ।

७. सं० पा०—महाकम्मतराए चेव तं चेव ।

४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८. सं० पा०—सिया जाव गंभीरा ।

५. सं० पा०—एवं आहार नीहार उस्सास नीसास

अहं णं से पुरिसे तं पईवं इड्डरणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे तं इड्डरयं अंतो-अंतो ओभासेइ उज्जोवेइ तावेति पभासेइ, णो चैव णं इड्डरगस्स बाहिं, णो चैव णं कूडागारसालं, णो चैव णं कूडागारसालाए वाहिं । एवं--गोकिलिजेणं 'पच्छियापिडएणं गंडमाणियाए'^१ 'आढएणं अद्धाढएणं पत्थएणं अद्धपत्थएणं कुलवेणं अद्धकुलवेणं चाउम्भाइयाए अट्टुभाइयाए सोलसियाए बत्तीसियाए चउसट्टियाए'^२ अहं णं से पुरिसे तं पईवं दीवचंपएणं पिहेज्जा । तए णं से पदीवे दीवचंपगस्स अंतो-अंतो ओभासेति उज्जोवेइ तावेति पभासेइ, नो चैव णं दीवचंपगस्स वाहिं, नो चैव णं चउसट्टियाए वाहिं णो चैव णं कूडागारसालं, णो चैव णं कूडागारसालाए वाहिं । एवामेव पएसी ! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोदि णिव्वत्तेइ तं असंखेज्जेहिं जीवपदेसेहिं सच्चित्तीकरेइ—खुड्डियं वा महालियं वा । तं सइहाहिं णं तुमं पएसी ! जहा—अण्णो जीवो^३ *अण्णं सरीरं, नो तज्जीवो तं सरीरं^४ ॥

कुल-परंपरागयदिट्ठि-अच्छड्डण-पदं

७७३. तए णं पएसी राधा केसि कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एस सण्णा^५ *एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस^६ समोसरणे, जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं ।

तयाणंतरं च णं ममं पिउणो वि एस सण्णा^५ *एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस समोसरणे, जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं^६ ।

तयाणंतरं मम वि एस सण्णा^५ *एस पइण्णा एस दिट्ठी एस रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एस तुला एस माणे एस पमाणे एस समोसरणे, जहा—तज्जीवो तं सरीरं, नो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं^६ ।

तं नो खलु अहं बहुपुरिसपरंपरागयं कुलणिसिसयं दिट्ठि छड्डेस्सामि^७ ॥

अयहारग-दिट्ठंत-पदं

७७४. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिरायं एवं वयासी—मा णं तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भवेज्जासि, जहा व से पुरिसे अयहारए । के णं भंते ! से अयहारए ? पएसी ! से जहाणामए—केइ पुरिसा अत्थत्थी अत्थगवेसी अत्थलुद्धगा अत्थकखिया अत्थ-पिवासिया अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाण-पत्थयणं गहाय एणं महं अगामियं^८ छिण्णावायं^९ दीहमद्धं अडवीए अणुपविट्ठा । तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए^{१०} *छिण्णावायाए दीहमद्धाए^९ अडवीए कंचि देसं

१. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२. गंडमाणियाए पच्छिपिडएणं (क, च); गंडमाणियाए पडिपिडएणं (ख, ग); गंडमाणियाए पिच्छिपिडिणं (छ) ।

३. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. सं० पा०—जीवो तं चैव ।

५. सं० पा०—एस सण्णा जाव समोसरणे ।

६. सं० पा०—एस सण्णा ।

७. सं० पा०—एस सण्णा जाव समोसरणे ।

८. छंडिस्सामि (च) ।

९. अगामियं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. सं० पा०—अगामियाए जाव अडवीए ।

अणुप्पत्ता समाणा एगमहं अयागरं पासंति—अएणं सव्वतो समंता आइण्णं विच्छिण्णं^१ सच्छडं^२ उवच्छडं^३ फुडं अवगाढं गाढं पासंति, पासित्ता हट्टुत्तु^४ *चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण^५-हियया अण्णमण्णं सद्दावेत्ति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! अयभंडे इट्ठे कंते^६ *पिए मणुण्णे^७ मणामे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अमहं अयभारयं बंधित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, अयभारं बंधंति, बंधित्ता अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए^८ *छिण्णावायाए दीहमद्धाए^९ अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति—तउएणं आइण्णं^{१०} *विच्छिण्णं सच्छडं उवच्छडं फुडं अवगाढं गाढं पासंति, पासित्ता हट्टुत्तु-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमण-स्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया अण्णमण्णं सद्दावेत्ति^{११}, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! तउयभंडे^{१२} *इट्ठे कंते पिए मणुण्णे^{१३} मणामे । अप्पेणं चैव तउएणं सुवहं अए लब्भति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अयभारयं छड्ढेत्ता तउयभारयं बंधित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, अयभारं छड्ढेत्ति तउयभारं बंधंति ।

तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्ढेत्तए, तउयभारं बंधित्तए । तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! तउयभंडे^{१४} *इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे । अप्पेणं चैव तउएणं^{१५} सुवहं अए लब्भति । तं छड्ढेहि णं देवाणुप्पिया ! अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि ।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी— दूराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, चिराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, अइगाढबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, असिल्लिदुबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, धणियबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए— णो संचाएमि अयभारगं छड्ढेत्ता तउयभारगं बंधित्तए ।

तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचाएत्ति बहूहि आववणाहि य पण्णवणाहि य आघ-वित्तए वा पण्णवित्तए^{१६} वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।

“*तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं तंवागरं पासंति—.....तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं रूप्पागरं पासंति—.....तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता

१. विणिच्छिण्ण (क,च) ; विणिकिण्णं (घ) ;

द्विणिच्छिण्णं (छ) ।

२. सच्छडं (क,ख,ग) ; सधडं (घ) ; संत्थडं

(च) ; सच्छण्णं (छ) ।

३. उवत्थडं (च,छ) ।

४. सं० पा०—हट्टुत्तु जाव हियया ।

५. सं० पा०—कंते जाव मणामे ।

६. सं० पा०—अगामियाए जाव अडवीए ।

७. सं० पा०—आइण्णं तं चैव जाव सद्दावेत्ता ।

८. सं० पा०—तउयभंडे जाव मणामे ।

९. सं० पा०—तउयभंडे जाव सुवहं ।

१०. विण्णवित्तए (क,ख,ग,घ,छ) ।

११. सं० पा०—एवं तंवागरं रूप्पागरं सुवण्णागरं रयणागरं वइरागरं ।

समाणा एगं महं सुवण्णागरं पासंति ॥३॥ तथा अहाणुपुब्बीए संपत्थिया ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं रयणागरं पासंति ॥३॥ तथा अहाणुपुब्बीए संपत्थिया ।

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं वइरागरं पासंति—वइरेणं आइण्णं विच्छिण्णं सच्छडं उवच्छडं फुडं अवगाढं गाढं पासंति, पासित्ता हट्टुहु-चित्तमाणंदिवा पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाणहियया अण्णमण्णं सदावेत्ति, सदावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! वइरभंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे । अप्पेणं चेव वइरेणं सुवहुं रयणे लब्भति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! रयणभारयं छड्ढेत्ता वइरभारयं बंधित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिमुण्णेत्ति, रयणभारं छड्ढेत्ति वइरभारं बंधंति ।

तए णं से पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्ढेत्तए, वइरभारं बंधित्तए । तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! वइरभंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे । अप्पेणं चेव वइरेणं सुवहुं अए लब्भति । तं छड्ढेहि णं देवाणुप्पिया ! अयभारगं, वइर-भारगं बंधाहि ।

तए णं से पुरिसे एवं वयासी—दूराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, चिराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, अइगाढबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, असिलिट्ठबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, धणियबंधणवद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए—णो संचाएमि अयभारगं छड्ढेत्ता वइरभारयं बंधित्तए ।

तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचाएत्ति वहुंहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य आघ-वित्तए वा पण्णवित्तए वा तथा अहाणुपुब्बीए संपत्थिया० ।

तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं-साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति, वइर-वेयणं करेत्ति, सुवहुं दासी-दास-गो-महिस-गवेलगं गिण्हंति, अट्टतलमूसिय^१-पासायवडेंसगे करावेत्ति, ण्हाया कयवलिकभमा उप्पि पासायवरगया फुट्टमाणेहि मुइंगमत्थएहि वत्तीसइ-वद्धएहि नाडएहि वरतरुणीसंपउत्तेहि उवणच्चिज्जमाणा उवगिज्जमाणा उवलालिज्जमाणा इट्ठे सह-फरिस^२-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणा० विहरंति ।

तए णं से पुरिसे अयभारए^३ जेणेव सए नगरे तेणेव उवागच्छइ, अयभारगं गहाय वेयणं^४ करेत्ति । तंसि अयपुग्गलंसि निट्ठियंसि झीणपरिव्वए^५ ते पुरिसे उप्पि पासायवरगए^६ फुट्टमाणेहि मुइंगमत्थएहि वत्तीसइवद्धएहि नाडएहि वरतरुणीसंपउत्तेहि उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सह-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए

१. मूलिय (क, ख, ग, च, छ) ।

२. सं० पा०—फरिस जाव विहरंति ।

३. पूर्व 'अयहारए' इति पाठो दृश्यते ।

४. अयवेयणं (क, ख, ग, च, छ) ।

५. परिसाए (क) ।

६. सं० पा०—पासायवरगए जाव विहरमाणे;
अत्र 'पच्चणुभवमाणे पासति' इत्यनेनैवार्थं संगतिजयिते । 'पच्चणुभवमाणे विहरमाणे' द्विरुक्तमिवाभाति, किन्तु सर्वेषु आदर्शेषु इत्यमेव पाठो लभ्यते ।

पच्चणुभवमाणे° विहरमाणे पासति, पासित्ता एवं वयासी—अहो णं अहं अधण्णे अपुण्णे अकयत्थे अकयलक्खणे हिरिसिरिवज्जिए^१ हीणपुण्ण-चाउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे । जति णं अहं मित्ताण वा णाईण वा नियमाण वा सुणेलओ तो णं अहं पि एवं चेव उप्पि पासायवरगए^२ *फुट्टमाणेहि मुद्गमत्थएहि वत्तीसइवद्धएहि नाडएहि वरतरुणीसंपउत्तेहि उवणच्चिज्जमाणे उवगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-मंघे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे° विहरंतो ।

से तेणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ—मा णं तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भवेज्जासि, जहा व से पुरिसे अयभारए ॥

पएसिस्स गिह्धम्म-पडिवज्जण पदं

७७५. एत्थ णं से पएसी राया संबुद्धे केसि कुमार-समणं वंदइ^३ *नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—णो खलु भंते ! अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि, जहा व से पुरिसे अयभारए, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिवंधं करेहि । धम्मकहा जहा^४ चित्तस्स गिह्धम्मं पडिवज्जइ, जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

आयरिय-विणयपडिवत्ति-पदं

७७६. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ आयरिया पण्णत्ता ? हंता जाणामि, तओ आयरिआ पण्णत्ता, तंजहा—कलायरिए, सिप्पायरिए, धम्मायरिए ।

जाणासि णं तुमं पएसी ! तेसि तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा ? हंता जाणामि—कलायरिधस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं^५ संमज्जणं वा करेज्जा, पुप्फाणि वा आणवेज्जा, मज्जावेज्जा, मंडावेज्जा^६, भोयावेज्जा वा, विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएज्जा, पुत्ताणुपुत्तियं वित्ति कप्पेज्जा ।

जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा तत्थेव वंदेज्जा णमंसेज्जा सक्कारेज्जा सम्माणेज्जा, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा, फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं उवणिमंतेज्जा ।

एवं च ताव तुमं पएसी ! एवं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वामं वामेणं° *दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं° वट्टित्ता ममं एयमट्ठं अक्खामित्ता जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

पएसिस्स अत्त-निवेदण-पदं

७७७. तए णं से पएसी राया केसि कुमार-समणं एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मम एयारूवे अज्जत्थिए^७ *चित्तिए पत्थिए मणीगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं

१. °परिवज्जिए (क, ख, ग, च, छ) ।

२. सं० पा०—पासायवरगए जाव विहरंतो ।

३. सं० पा०—वंदइ जाव एवं ।

४. राय० सु० ६६३ ।

५. उलेवणं (क, च, छ) ।

६. मुंडावेज्जा (क, छ) ।

७. सं० पा०—वामेणं जाव वट्टित्ता ।

८. सं० पा०—अज्जत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं^१ •दंडं दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं^२ वट्टिए, तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगपगास-किसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-गलिणिसंडवोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अंतेउर-परियालसंदिहं संपरिवुडस्स^३ देवाणुप्पिए वंदित्ता नमंसित्ता एतमट्ठं भुज्जो-भुज्जो सम्मं विणएणं खामित्तए त्ति कट्ठु जामेव दिस्सि पाउब्भूए तामेव दिस्सि पडिगए ॥

पएसिस्स खामणा-पदं

७७८. तए णं से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए^४ •फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगपगास-किसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-गलिणिसंडवोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे^५ तेयसा जलंते हट्टुट्टु^६ •चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणं^७ हियए जहेव कूणिए तहेव^८ निग्गच्छइ—अंतेउर-परियालसंदिहं संपरिवुडे, पंचविहेणं अभिगमेणं^९ •अभिगच्छइ, [तज्जहा—सच्चित्तानं दव्वाणं विओसरणयाए, अचित्तानं दव्वाणं अविओसरणयाए, एगसाडियं उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्तीभावकरणेणं]^{१०} । केस्सि कुमार-समणं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्तां वंदइ नमंसइ, एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो सम्मं विणएणं खामेइ ॥

चाउज्जामधम्म-कहण-पदं

७७९. तए णं केसी कुमार-समणे पएसिस्स रण्णो सूरियकंतप्पमुहाणं देवीणं तीसे य महत्तिमहालियाए महच्चपरिसाए^१ •चाउज्जामं^२ धम्मं परिकहेइ^३ ॥

रमणिज्ज-अरमणिज्ज-पदं

७८०. तए^४ णं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म उट्ठाए उट्ठेति, केस्सि कुमार-

- | | |
|-----------------------------------|---|
| १. सं० पा०—वामेणं जाव वट्टित्ता । | ६. सं० पा०—अभिगमेणं जाव वंदइ । |
| २. परिवुडस्स (क, ख, ग, च) । | ७. कोष्ठकवत्तिपाठः व्याख्यांशः प्रतीयते । |
| ३. सं० पा०—रयणीए जाव तेयसा । | ८. सं० पा०—महच्चपरिसाए जाव धम्मं । |
| ४. सं० पा०—हट्टुट्टु जाव हियए । | ९. राय० सू० ६९३ । |
| ५. ओ० सू० ६३-७० । | |
१०. केस्सिस्वामिना प्रदेशिराजस्य चातुर्धामः धर्मः कथितः । (द्रष्टव्यं सू० ७७९) प्रदेशिराजेन च देश-रूपेण चातुर्धामः धर्मः स्वीकृतः । (द्रष्टव्यं सू० ७९६) किन्तु अत्र तत्स्वीकारस्य नास्ति कश्चि-दुल्लेखः । ७९६ सूत्रे 'पुट्ठि वि णं मए केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चवखाए' इत्यादि उल्लिखितमस्ति किन्तु इह नास्ति तस्योत्पत्तेः, तेनेति प्रतीयतेसौ पाठः संक्षिप्तपद्धत्या त्रुटितो जातः । प्रकरणासारेणात्र इत्थं पाठो युज्यते—तए णं सा महत्तिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिस्सि पाउब्भूया तामेव दिस्सि पडिगया । तए णं से पएसी राया केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टुट्टुचित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केस्सि कुमार-समणं

समणं वंदइ नमंसइ, जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

७८१. तए णं केसी कुमार-समणे पएसि रायं एवं वयासी—मा णं तुमं पएसि ! पुंवि रमणिज्जे भविता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा—से वणसंडेइ वा, णट्ट-सालाइ वा, इक्खुवाडेइ वा, खलवाडेइ वा ॥

७८२. कहं णं भंते ! *वणसंडे पुंवि रमणिज्जे भविता पच्छा अरमणिज्जे भवति ? पएसि ! — जया णं वणसंडे पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ, तथा णं वणसंडे रमणिज्जे भवति । जया णं वणसंडे नो पत्तिए नो पुप्फिए नो फलिए नो हरियगरेरिज्जमाणे णो सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ तथा णं जुण्णे झडे परिस्डिय-पंडुपत्ते सुक्करुवखे इव मिलायमाणे चिट्ठइ, तथा णं वणसंडे णो रमणिज्जे भवति ॥

७८३. [कहं णं भंते ! णट्टसाला पुंवि रमणिज्जा भविता पच्छा अरमणिज्जा भवति ? पएसि ! ?] जया णं णट्टसाला गिज्जइ वाइज्जइ नच्चिज्जइ अभिणिज्जइ हसिज्जइ रमिज्जइ, तथा णं णट्टसाला रमणिज्जा भवइ । जया णं णट्टसाला णो गिज्जइ *णो वाइज्जइ णो नच्चिज्जइ णो अभिणिज्जइ णो हसिज्जइ णो रमिज्जइ, तथा णं णट्टसाला अरमणिज्जा भवइ ॥

तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं भंते ! निग्गंथं पावयणं । तहमेयं भंते ! निग्गंथं पावयणं । अविहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! जं णं तुब्भे वदह ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बह्वे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा जाव—सू० ६८८ इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरणं, एवं—धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्टागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-संतसार-सावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडा भविता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयति, णो खलु अहं तहा संचाएमि चिच्चा हिरणं, एवं—धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्टागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि - मोत्तिय - संख-सिल-प्पवाल-संतसार-सावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडे भविता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए चाउज्जामियं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

तए णं से पएसि राया केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए चाउज्जामियं गिहिधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति ।

तए णं पएसि राया केसि कुमार-समणं वंदइ नमंसइ, जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

१. पच्छा मा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. ७८३, ७८४, ७८५ : कोष्ठकवृत्तिपाठः पूर्व-

२. सं० पा०—भंते ! वणसंडे ।

सूत्रक्रमेण पूरितोस्ति ।

३. जोडे (क, ख, ग, घ); झाडे (च, छ) ।

६. वइगिज्जइ (च, छ) ।

४. वणे (क, च, छ) ।

७. सं० पा०—गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ ।

७८४. [कहं णं भंते ! इक्खुवाडे पुंवि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवति ? पएसी ! ?] जया णं इक्खुवाडे छिज्जइ भिज्जइ लुज्जइ खज्जइ पिज्जइ दिज्जइ, तथा णं इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ । जया णं इक्खुवाडे णो छिज्जइ*० णो भिज्जइ णो लुज्जइ णो खज्जइ णो पिज्जइ णो दिज्जइ*, तथा णं इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ ॥

७८५. [कहं णं भंते ! खलवाडे पुंवि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवति ? पएसी ! ?] जया णं खलवाडे उच्छुभइ उडुइज्जइ* मलइज्जइ पुणिज्जइ खज्जइ पिज्जइ दिज्जइ, तथा णं खलवाडे रमणिज्जे भवति । जया णं खलवाडे णो उच्छुभइ*० णो उडुइज्जइ णो मलइज्जइ नो पुणिज्जइ नो खज्जइ णो पिज्जइ णो दिज्जइ, तथा णं खलवाडे* अरमणिज्जे भवति ॥

७८६. से तेणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ—मा णं तुमं पएसी ! पुंवि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा—से वणसंडेइ वा*० णट्टसालाइ वा, इक्खुवाडेइ वा*० खलवाडेइ वा ॥

७८७. तए णं पएसी केसि कुमार-समणं एवं वयासी—णो खलु भंते ! अहं पुंवि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविस्सामि, जहा—से वणसंडेइ वा*० णट्टसालाइ वा, इक्खुवाडेइ वा*० खलवाडेइ वा,—अहं णं सेयवियापामोक्खाइ*० सत्तगामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि—एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि, एगं भागं कोट्टागारे छुभिस्सामि, एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि, एगेणं भागेणं महतिमहालियं कूडागारसालं करिस्सामि । तत्थ णं बहूहि पुरिसेहि दिण्णभइ-भत्त-वेयणेहि विउलं असणं पाणं साइमं खाइमं उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-भिव्खुयाणं पंधिय*०-पहियाणं परिभाएमाणे, बहूहि सीलव्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि*० अप्पाणं भावेमाणे*० विहरिस्सामि त्ति कट्टु जामेव दिसि*० पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

पएसिणा रज्जस्स चउभाग-करण-पदं

७८८. तए णं से पएसी राया कल्लं*० पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोग-पमास-किसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-णलिणिसंडवोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिस्मि दिणयरे*० तेयसा जलंते सेयवियापामोक्खाइं सत्तगामसहस्साइं चत्तारिभाए करेइ—एगं भागं बलवाहणस्स दलयइ*०,

१. सं० पा०—छिज्जइ जाव तथा णं ।

२. उडं (क, घ, च) ।

३. सं० पा०—उच्छुभइ जाव अरमणिज्जे ।

४. सं० पा०—वणसंडे इ वा ।

५. सं० पा०—वणसंडे इ वा जाव खलवाडे ।

६. *समक्खाइं (च, छ) ।

७. पंधियाणं (क) ।

८. सं० पा०—पोसहोववासस्स जाव

विहरिस्सामि; औपपातिके (सू० १२०) अयं

पाठः इत्थं लभ्यते—पोसहोववासेहि अहापरि-
ग्गहिर्ह तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे
विहरइ । सूत्रकृताङ्गे (२।२।७२) पि इत्थ-
मेव—पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिर्ह
तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

९. दिसं (क) ।

१०. सं० पा०—कल्लं जाव तेयसा ।

११. सं० पा०—दलयइ जाव कूडागारसालं ।

•एगं भागं कोट्टागारे छुभइ, एगं भागं अंतेउरस्स दलयइ, एणेणं भागेणं महतिमहालयं० कूडागारसालं करेइ ।

तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं •दिण्णभइ-भत्त-वेयणेहिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं० उवक्खडावेत्ता बहूणं समणं •माहण-भिव्खुयाणं पंथिय-पहियाणं० परिभाएमाणे विहरइ ॥
पएसिस्स समणोवासयत्त-पदं

७८६. तए णं से पएसी राया समणोवासए अभिगयजीवाजीवे' •उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बंधपमोवख-कुसले असहिज्जे देवासुर-णाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिव्कंखिए णिव्वित्तिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे अभिगयट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिभिजपेमाणुरागरत्ते अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अट्ठे परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरघर-प्पवेसे चाउहसट्ठमुद्धिपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे, समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेण य पडिलाभेमाणे-पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे० विहरइ ॥

पएसिस्स रज्जोवरइ-पदं

७९०. जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्टागारं च पुरं च अंतेउरं च जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरति ॥

सूरियकंताए सूरियकंतेण मंतणा-पदं

७९१. तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए' •चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे० समुप्पज्जित्था—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं' •च वलं च वाहणं च कोट्टागारं च पुरं च० अंतेउरं च ममं जणवयं च अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे पएसि रायं केणवि सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा उद्वेत्ता' सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता सयमेव रज्जसिंरि 'कारेमाणीए पालेमाणीए'० विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सूरियकंतं कुमारं सदावेइ, सदावेत्ता एवं वयासी—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च' •रट्ठं च वलं च वाहणं च कोसं च कोट्टागारं च पुरं च० अंतेउरं च ममं जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु तव पुत्ता ! पएसि रायं केणइ सत्थप्पओगेण वा' •अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा विसप्पओगेण

१. सं० पा०—पुरिसेहिं जाव उवक्खडावेत्ता ।

६. उवद्वेत्ता (छ) ।

२. सं० पा०—समण जाव परिभाएमाणे ।

७. कारेमाणी पालेमाणी (छ) ।

३. सं० पा०—अभिगयजीवाजीवे.....विहरइ ।

८. सं० पा०—रज्जं च जाव अंतेउरं ।

४. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९. सं० पा०—सत्थप्पओगेण वा जाव उद्वेत्ता ।

५. रट्ठं जाव अंतेउरं ।

वा° उह्वेत्ता सयमेव रज्जसिंरिं 'कारेमाणस्स पालेमाणस्स' विहरित्तए ॥

७६२. तए णं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ णो परियाणाइ तुसिणीए संचिद्वइ ॥

सूरियकंताए विसप्पओग-पदं

७६३. तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए° •र्वित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—मा णं सूरियकंते कुमारे पएसिस्स रण्णो इमं रहस्सभेयं करिस्सइ त्ति कट्ठु पएसिस्स रण्णो छिद्दाणि य मम्माणि° य रहस्साणि य विवराणि° य अंतराणि य पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

७६४. तए णं सूरियकंता देवी अण्णया कयाइ पएसिस्स रण्णो अंतरं जाणइ, जाणित्ता असणं° •पाणं खाइमं° साइमं 'सव्व-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं'° विसप्पजोगं पउंजइ । पएसिस्स रण्णो ण्हायस्स° •कयवलिकम्मस्स कयकोउय-मंगल° पायच्छित्तस्स सुहासणवरगयस्स तं विससंजुत्तं असणं° •पाणं खाइमं साइमं सव्व-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं° निसिरेइ ॥

पएसिस्स समाहि-मरण-पदं

७६५. तए णं तस्स पएसिस्स रण्णो तं विससंजुत्तं असणं आहारेमाणस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला विपुला पगाढा कक्कसा कड्डुया 'फरुसा निट्ठुरा'° चंडा° तिच्चा दुक्खा दुग्गा दुरहियासा, पित्तजरपरिगयसरीरे 'दाहवक्कतिए यावि'° विहरइ ॥

७६६. तए णं से पएसी राया सूरियकंताए देवीए अ-प्पदुस्समाणे जेण्वे पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, पोसहसालं पविसइ°, उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, दब्भसंधारगं संधरेइ, दब्भसंधारगं दुरुहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियं कनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्ठु एवं वयासी--नमोत्थु णं अरहंताणं जाव° सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं केसिस्स कुमार-समणस्स मम 'धम्मोवदेसगस्स धम्मायरियस्स'° वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासइ मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्ठु वंदइ नमंसइ । पुर्व्व पि णं मए केसिस्स कुमार-समणस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए° पच्चक्खाए

१. कारेमाणे पालेमाणे (क, छ) ।

१२. पमज्जइ (च) ।

२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

१३. राय° सू० ८ ।

३. वम्माणि (च) ।

१४. धम्मोवएसट्टाणस्स (क, ख, ग, घ, छ); × (च) ।

४. विहराणि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. सं० पा०—असणं जाव साइमं ।

१५. सं० पा०—पच्चक्खाए जाव परिग्गहे; ७७९

६. वत्थं गंधं सव्वालंकारं (क); सव्वत्थ° (च, छ) ।

७. सं० पा०—ण्हायस्स जाव पायच्छित्तस्स ।

८. सं० पा०—असणं जाव अलंकारं ।

९. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१०. वंता (क, च, छ) ।

११. दाहवक्कतिया वि (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।

सूत्रानुसारेण केशिस्वामिना प्रदेशराजाय चातुर्यामिको धर्मः कथितः । ७८० सूत्रस्य पादटिप्पणगतपाठानुसारेण प्रदेशराजेन केशिस्वामिनोन्तिके चातुर्यामिको गृह्णधर्मः स्वीकृतः । प्रस्तुतसूत्रे पूर्वोक्तपाठानां संदर्भे एवासौ पाठः पूरितः तेनात्र चातुर्यामिक-गृह्णधर्मस्यैव पाठो युज्यते ।

●थूलए मुसावाए पच्चक्खाए, थूलए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए, थूलए °परिग्गहे पच्चक्खाए, तं इयाणि पि णं तस्सेव भगवतो अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि° सव्वं मुसावायं पच्चक्खामि सव्वं° अदिण्णादाणं पच्चक्खामि सव्वं° परिग्गहं पच्चक्खामि सव्वं—कोहं°, ●माणं, मायं, लोहं, पेज्जं, दोसं, कलहं, अब्भक्खाणं, पेसुण्णं, परपरिवायं, अरइरइं, मायामोसं°, मिच्छादंसणसत्तलं, अकरणिज्जं जोयं पच्चक्खामि । सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउज्विहं पि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि । जं पि य भे सरीरं इट्ठं° कंतं पियं मणुण्णं मणामं पेज्जं वेसासियं संमयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंङगसमाणं मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाइय-पित्ति-सिभिय-सण्णिवाइयं° विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा° फुसंतु त्ति एयं पि य णं चरिमेहिं उसासनिस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए° ●देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिते अंगुलस्स असंखेज्जतिभागमेत्तीए ओगाहणाए सूरियाभदेवत्ताए° उववण्णे ॥

सूरियाम-देव-पदं

७६७. तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववण्णे चैव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छति, [तंजहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आण-पाणपज्जत्तीए भास-मणपज्जत्तीए]° । तं एवं खलु गोयमा ! सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ॥

७६८. सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

दढपइण्णग-पदं

७६९. से णं सूरियाभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहित्ति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति—अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं वित्थिण्ण-विपुल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइं बहुधण-वहुजातरूव-रययाइं 'आओग-पओग-संपउत्ताइं'° विच्छड्ढियपउरभत्तपाणाइं बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं तत्थ अण्णयरेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चाइस्सइ ॥

८००. तए णं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चैव समाणंसि अम्मापिऊणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ ॥

८०१. तए णं तस्स दारयस्स नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्टुमाणं य राइंदियाणं

१. सं० पा०—पच्चक्खामि जाव परिग्गहं ।

२. सं० पा०—कोहं जाव मिच्छादंसणसत्तलं ।

३. सं० पा०—इट्ठं जाव फुसंतु ।

४. इह प्रथमा बहुवचनलोपो दृश्यते ।

५. सं० पा०—उववायसभाए जाव उववण्णे ।

६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।

७. × (क,ख,ग,घ,च,छ) ।

८. प्रस्तुतागमे औपपातिकसूत्रे च दृढप्रतिज्ञस्य प्रकरणं प्रायः समानमस्ति, केवलं पाठरचनायाः किञ्चित्-किञ्चिद् भेदो दृश्यते ।

वित्तिककंताणं^१ सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिदियसरीरं लवखण-वंजण-गुणोववेयं माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगं ससि-सोमाकारं^२ कतं पियदंसणं सुखं दारयं पयाहिइ ॥

८०२. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठितिवडियं करेस्संति ततिय दिवसे चंदसूरदंसणं करेस्संति छट्ठे दिवसे जागरियं^३ जागरिस्संति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते संपत्ते वारसमे^४ दिवसे णिव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे चोक्खे संमज्जिओ-वलित्ते विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेस्संति, मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणं आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा^५ *कयकोउयमंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिता अप्पमहग्घाभरणा^६ लंकिया भोयणमंडवंसि सुहासणवरगया तेणं मित्त-णाइ^७-*णियग-सयण-संबंधि^८-परिजणेण सद्धि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा वीसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं 'च णं'^९ विहरि-स्संति । जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्त-णाइ^{१०}-*णियग-सयण-संबंधि^{११}-परिजणं विउलेणं वत्थ-गंध-मत्लालंकारिणं सक्कारेस्संति मम्माणिस्संति, तस्सेव मित्त^{१२}-*णाइ-णियग-सयण-संबंधि^{१३}-परिजणस्स पुरतो एवं वइस्संति —जम्हा णं देवाणुप्पिया ! इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि चैव समाणंसि धम्मे दढा पइण्णा जाया, 'तं होउ णं अम्हं एयस्स दारयस्स दढपइण्णे णामे णं'^{१४} ॥

८०३. तए णं तस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठितिवडियं च चंदसूरदरिसणं च जागरियं च नामधिज्जकरणं च 'पजेमणं च'^{१५} पचंकमणं च कण्णवेहणं च संवच्छरपडिलेहणं च 'चूलोवणं च'^{१६} अण्णाणि य बहूणि गब्भाहाणजम्मणाइयाइं महया इइढी-सक्कार-समुदएणं करिस्संति ॥

८०४. तए णं दढपत्तिण्णे दारगे पंचधाईपरिखत्ते— [खीरधाईए 'मज्जणधाईए मंडणधाईए अंकधाईए कीलावणधाईए'^{१७}], अण्णाहि बहूहि खुज्जाहि चिलाइयाहि

१. अत्र 'सा' इति कर्तृपदं अध्याहार्यम् । द्रष्टव्यं ठाणं ६।६२ सूत्रम् ।
२. सोम्मा^० (क, ख, ग) ।
३. धम्मजागरियं (क) ।
४. वारसाहे (क, च) ।
५. सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव लंकिया ।
६. सं० पा०—णाइ जाव परिजणेण ।
७. चैव णं (क, ख, ग, च, छ) ।
८. सं० पा०—णाइ जाव परिजणं ।
९. सं० पा०—मित्त जाव परिजणस्स ।
१०. तं होउ णं अम्हं दारए दढपइण्णे णामेणं । तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेहिंति दढपइण्णति (ओ० सू० १४४) ।
११. पुरगामणं च पंथगामणं च पज्जेमामणं च पिडवद्धावणं च पज्जमाणं च (क); परं-गामणं च पंचगामणं च पजेगामणं च पिड-वद्धावणं च पज्जमाणं च (ख, ग, च); पगामणं च पचंकमणं च पजेपमाणं च पिड-वद्धावणं च पज्जमाणं च (छ) ।
१२. चोलावणं च उवणं च (क, ख, ग, घ); चोलविणं च (च) ।
१३. मंडणधाईए मज्जणधाईए कीलावणधाईए अंकधाईए (वृ) । कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याय; प्रतीयते ।

वामणियाहि वडभियाहि वब्बरियाहि वउसियाहि' जोणियाहि पल्हवियाहि' ईसिणियाहि
थारुणियाहि' लासियाहि लउसियाहि दमिलाहि सिंहलीहि' पुलिदीहि आरवीहि पक्कणीहि
वहलीहि मुरंडीहि' सबरीहि' पारसीहि पाणादेसीहि विदेस-परिमंडियाहि 'इंगिय-चिंतिय-
पत्थिय-वियाणयाहि सदेश-णेवत्थ-गहिय-वेसाहि'° निउणकुसलाहि विणीयाहि, चेडिया-
चक्कवाल-वरतरुणिवंद-परियाल-संपरिवुडे वरिसधर'-कंचुइमहयरवंदपरिक्खित्ते हत्थाओ
हत्थं साहरिज्जमाणे-साहरिज्जमाणे उवणचिज्जमाणे-उवणचिज्जमाणे 'अंकाओ अंकं'
परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे 'उवगाइज्जमाणे-उवगाइज्जमाणे'° उवलालिज्जमाणे-
उवलालिज्जमाणे 'उवगूहिज्जमाणे-उवगूहिज्जमाणे'° अवतासिज्जमाणे-अवतासिज्जमाणे
'परिवंदिज्जमाणे-परिवंदिज्जमाणे'° परिचुविज्जमाणे-परिचुविज्जमाणे रम्मेसु मणिकोट्टिस-
तलेसु परंगमाणे परंगमाणे'° गिरिकंदरमल्लीणे विव'° चंपगवरपायवे णिव्वाघायंसि सुहंसुहेणं
परिवड्ढिसइ ॥

८०५. तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो सातिरेगअट्टवासजायगं जाणित्ता
सोभणंसि तिहिकरण-णक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं कयवलिकम्मं कयकोउयमंगल-पायच्छित्तं
सब्बालंकारविभूसियं करेत्ता महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेहिंति ॥

८०६. तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउण-
रुयपज्जवसाणाओ बावत्तरि कलाओ सुत्तओ अत्थओ य गंथओ य 'करणओ य'°
'सिक्खावेहिइ सेहावेहिइ', तं जहा— १. लेहं २. गणियं ३. रुवं ४. नट्टं ५. गीयं ६. वाइयं
७. सरगयं ८. पुक्खरगयं ९. समतालं १०. जूयं ११. जणवायं'° १२. पासगं १३. अट्टावयं
१४. पोरेकव्वं १५. दगमट्टियं १६. अन्नविहिं १७. पाणविहिं १८. वत्थविहिं १९.
विलेवणविहिं २०. सयणविहिं २१. अज्ज'° २२. पहेलियं २३. मागहियं'° २४. गाहं
२५. गीइयं'° २६. सिलोगं २७. हिरण्णजुत्ति २८. सुवण्णजुत्ति २९. आभरणविहिं
३०. तरुणीपडिकम्मं ३१. इत्थिलक्खणं ३२. पुरिसलक्खणं ३३. हयलक्खणं ३४.

- | | |
|---|--|
| १. बक्क° (क); चउ° (ख, ग, च); पउसियाहि (ओ० सू० ७०) । | ११. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| २. पण्ण° (ख, ग, घ, च) । | १२. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । |
| ३. बारुणियाहि (क, च, छ); दारुणियाहि (ख, ग, घ) । | १३. औपपातिक १४४ सूत्रस्य वाचनान्तरे—
'परिगज्जमाणे' इति पाठो दृश्यते । |
| ४. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १४. इव (क) । |
| ५. मरंडीहिं (ओ० सू० ७०) । | १५. × (क, ख, ग, घ, च) । |
| ६. × (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १६. सिक्खावेहि य सेहावेहि य (क); सेहावेहि य
सिक्खावेहि य (वृ) । |
| ७. सदेशेनेवच्छगहियवेसाहिं इंगियचिंतियपत्थिय-
वियाणियाहि (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १७. जणवयं (घ, च, छ) । |
| ८. वरिसवर (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १८. अज्जे (क, ख, ग, च) । |
| ९. अंगेण अंगं (क, ख, ग, घ, च, छ) । | १९. मागहियं णिहाइयं (घ, च, छ) । |
| १०. परिगीयमानः (वृ) । | २०. गीयं (च, छ) । |

गयलकखणं ३५. गोणलकखणं ३६. कुक्कुडलकखणं ३७. छत्तलकखणं ३८. चक्कलकखणं ३९. दंडलकखणं ४०. असिलकखणं ४१. मणिलकखणं ४२. कागणिलकखणं ४३. वत्युविज्जं ४४. णगरमाणं ४५. खंधावारमाणं ४६. चारं ४७. पडिचारं ४८. वूहं ४९. पडिवूहं ५०. चक्कवूहं ५१. गरुलवूहं ५२. सगडवूहं ५३. जुद्धं ५४. निजुद्धं ५५. जुद्धजुद्धं ५६. अट्टिजुद्धं ५७. मुट्टिजुद्धं ५८. बाहुजुद्धं ५९. लयाजुद्धं ६०. ईसत्थं ६१. छरूपवायं ६२. धणुवेयं ६३. हिरण्णपागं ६४. सुवण्णपागं ६५. सुत्तखेड्डं ६६. वट्टखेड्डं ६७. णालियाखेड्डं ६८. पत्तच्छेज्जं ६९. कडगच्छेज्जं ७०. सज्जीवं ७१. निज्जीवं ७२. सउणरुयं इति ॥

८०७. तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ वावत्तरि कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंधओ य करणओ य सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिइ ॥

८०८. तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति सम्माणिस्संति, विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति, दलइत्ता पडिविसज्जेहिइति ॥

८०९. तए णं से दढपइण्णे दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणग-मणुपत्ते वावत्तरिकलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहिए अट्टारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए^१ गीयरई गंधव्वणट्टकुसले सिगारागारचारुक्खे^२ संगय-गय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलास-णिउण-जुत्तोवयारकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमदी अलंभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी यावि भविस्सइ ॥

८१०. तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो उम्मुक्कवालभावं^३ •विण्णय-परिणयमित्तं जोव्वणगमणुपत्तं वावत्तरिकलापंडियं णवंगसुत्तपडिबोहियं अट्टारसविहदे-सिप्पगारभासाविसारयं गीयरइं गंधव्वणट्टकुसलं सिगारागारचारुक्खं संगय-गय-हसिय-भणिय-चिट्ठिय-विलास-णिउण-जुत्तोवयारकुसलं हयजोहिं गयजोहिं रहजोहिं बाहुजोहिं वाहुप्पमदिं अलंभोगसमत्थं साहसियं^४ वियालचारिं च वियाणित्ता विउलेहिं अण्णभोगेहिं य पाणभोगेहिं य लेणभोगेहिं य वत्थभोगेहिं य सयणभोगेहिं य उवनिंतेहिंति ॥

८११. तए णं दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अण्णभोगेहिं^५ •पाणभोगेहिं लेणभोगेहिं वत्थभोगेहिं^६ सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति णो गिज्झिहिति णो मुज्झिहिति णो अज्झोववज्जिहिति । से जहाणामए पउमुप्पलेइ^७ वा पउमेइ वा^८ •कुमुएइ वा नलिणेइ वा सुभगेइ वा सुगधिणेइ वा पोंडरीएइ वा महापोंडरीएइ वा^९ सयपत्तेइ वा सहस्सपत्तेइ वा

१. × (क, ख, ग) ।

२. कागिणिं (क) ।

३. जुद्धाइजुद्धं (क, ख, ग) ।

४. *पागं मणिपागं धाउपागं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५. *खेड्डं (क, ख, ग, च, छ) ।

६. *विहदेसप्पं (क, घ) ।

७. भिगारां (क) ।

८. सं० पा०—उम्मुक्कवालभावं जाव वियाल-चारिं ।

९. सं० पा०—अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ।

१०. 'उप्पलेइ' ओ० सू० १५०; अत्रापि 'उप्पलेइ' इति पाठो युक्तोस्ति ।

११. सं० पा०—पउमेइ वा जाव सयसहस्सपत्तेइ वा ।

पंके जाते जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव दढपइण्णे वि दारए क्कामेहिं जाए भोगेहिं संवड्ढिण्णे णोवलिप्पिहिति* कामरएणं णोवलिप्पिहिति भोगरएणं णोवलिप्पिहिति° मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं ॥

८१२. से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं वोहिं बुज्झिहिति, मुंडे^३ भविता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सति ॥

८१३. से णं अणगारे भविस्सइ—इरियासमिए* •भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-णिकखेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारी अममे अकिचणे निरुवलेवे कंसपाईव मुक्कतोए, संखो इव निरंगणे, जीवो विव अप्पडिहयगइ, जच्चकणगं पिव जायरूवे, आदरिसफलगा इव पागडभावे, कुम्मो इव गुत्तिदिए, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे, गगणमिव निरालंबणे, अणिलो इव निरालए, चंदो इव सोमलेसे, सूरु इव दित्ततेए, सागरो इव गंभीरे, विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के, मंदरो इव अप्पकंपे, सारयसलिलं व सुद्धहियए, खग्गविसाणं व एगजाए, भाण्डपक्खी व अप्पमत्ते, कुंजरो इव सोडीरे, वसभो इव जायत्थामे, सीहो इव दुद्धरिसे, वसुंधरा इव सव्वफासविसहे°, सुह्यहुयासणे इव तेयसा जलंते ॥

८१४. तस्स णं भगवतो अणुत्तरेणं णाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं मह्वेणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तरेणं सव्वसंजम-सुच्चरियतवफल°-णिब्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे णिरावरणे णिब्वाघाए केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिति ॥

८१५. तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ, सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणिहिति, तं जहा—आगतिं गतिं ठिंति चवणं 'उववायं तक्कं'^५ कडं मणोमाणसियं खइयं भुत्तं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं, अरहा अरहस्सभागी तं कालं तं मणवय-कायजोगे वट्टमाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ ॥

८१६. तए णं दढपइण्णे केवली एयरूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं केवलि-परियायं पाउणिहिति, पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता, बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ, बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइस्सइ, जस्सट्टाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे केसलोए बंभचेरवासे अप्पहाणं अदंतमणं अच्छत्तं अणुवाहणं भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परधरपवेसो लद्धावलद्धाइं माणावमाणाइं परेसिं^६ हीलणाओ निदणाओ खिसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ उच्चावया विरूवरूवा दावीसं परीसहोवसग्गा गामकंटगा अहियासिज्जति, तमट्ठं आराहेहिइ, आराहित्ता चरिमेहिं उस्सास-निस्सासेहिं सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिब्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥

१. सं० पा०—णोवलिप्पिहिति मित्तणाइ ।

सच्चसंजमतवसुच्चरियसोवच्चियफल (प० ८१) ।

२. केवलं मुंडे (क, च, छ) ।

५. उववायं तत्थं (घ); उववातत्थं (च);

३. सं० पा०—इरियासमिए जाव सुह्यहुयासणे ।

उववायतत्थं (छ) ।

४. सुच्चरियतवसुच्चरियफल (क, ख, ग, घ, च, छ);

६. औपपातिके (सू० १५४) 'परेहिं' पाठो लभ्यते ।

८१७. सेवं भंते ! सेवं भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ,
 वंदित्ता नमंसित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ।
 णमो जिणाणं जियभयाणं । णमो सुयदेवयाए भगवतीए । णमो पण्णत्तीए भगवईए ।
 णमो भगवओ अरहओ पासस्स । पस्से सुपस्से पस्सवणी णमो ॥

ग्रन्थ-परिमाण

अक्षर-परिमाण : ६३६६४

अनुष्टुप्-श्लोक-परिमाण : २६३४, अक्षर ६

परिशिष्ट

परिशिष्ट-१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्व-स्थल और आधार-स्थल निर्देश
ओवाइयं

संक्षिप्त-पाठ	पूर्व-स्थल सूत्र	पूर्ति आधार-स्थल सूत्र
अगामियाए जाव अडवीए	११७	११६
अट्टारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता परलोगस्स		
आराहमा सेसं तं चेव	१५७	८६
अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे	१६५	१५३
अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं	१५०	१४६
अपज्जवसिया जाव चिट्ठंति	१८४	१८३
अपडिविरया एवं जाव परिम्महाओ	१६१	११७
अभिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे		
विहरइ, णवरं ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारै		
चियत्तंतेउरररदारपवेसी ^१ एयं ण वुच्चई	१२०	वृत्ति, पृष्ठ १८८
अयबंधणाणि वा जाव महद्धणमोत्लाइं	१०६	१०५
अवहमाणए जाव से	१३७	१११
असंजए जाव एगंतमुत्ते	८५, ८७	८४
आगमेसिभद्दा जाव पडिरूवा	७२	वृत्ति, पृष्ठ १५३
आभिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी	२४	तंदी सू० २
आयारधरा जाव त्रिवागसुयधरा	४५	तंदी सू० ७६
आवलियाए जाव अयणे	२८	वृत्ति, पृष्ठ ६८
इरियासमिए जाव गुत्तवंभयारी	१५२	२७
उदए जाव भीणे	११७	११६
एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई परलोगस्स		
अणाराहमा सेसं तं चेव	१६०	८६
एवं एएणं अभिलावेणं तिरिक्खजोणिएसु	७३	७३
एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं	४०	४०

१. क्वचित्—'चियत्तघरंतेउरपवेसी' ति (वृ) ।

एवं जाव सव्वं परिग्गहं	११७	११७
एवं माण माया लोहा	१६८	१६८
एवं सुपण्णत्ते सुभासिए सुविणीए सुभाविए	७६	७६
एवमाइक्खइ जाव एवं	११८	११८
एवमाइक्खामि जाव परूवेमि	११८	११८
कंदमंते जाव पविमोयणे	८	५,७
कंदमंतो एएसि वण्णओ भाणियब्बो जाव सिविय	१०	५,७
कंपिल्लपुरे जाव धरसए	११८	११८
करयल जाव एवं	६२	२०
करयल जाव कट्टु	२१,११७	२०
गामागर जाव सण्णिवेसेसु	६१ से ६३, ६५, ६६ १५५, १५८ से १६१, १६३, १६८	८६
घरसए जाव वसहि	११६	११८
°चंदण जाव गंधवट्ठिभूयं	५५	२
जावज्जीवाए जाव परिग्गहे णवरं सव्वे मेहुणे		
पच्चक्खाए जावज्जीवए	१२१	११७
णमंसित्तए वा जाव पज्जुवासित्तए	१३६	२
ण्हाए जाव अप्प०	५३	२०
ण्हायाब्बो जाव पायच्छित्ताओ	७०	२०
तं चेव पसत्थं णेयव्वं, एवं चेव वइविणओवि		
एएहि पएहि चेव णेयव्वो	४०	४०
तं चेव सव्वं णवरं चउरसीइ वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता	६३	६१
तं चेव सव्वं णवरं ठिई चउट्ठसवाससहस्साइं	६१	८६
तित्थगरस्स जाव संपाविउकामस्स	२१	१६
तिदंडए य जाव एगंते	११७	११७
तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई आराहगा चेव सेसं तं चेव	१६७	८६
तेरस सागरोवमाइं ठिई अणाराहगा सेसं तं चेव	१५५	८६
दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता परलोगस्स		
आराहगा सेसं तं चेव	११७	८६
दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता सेसं तं चेव	११४	८६
देवेसु.....	७३	७३
धम्मिया जाव कप्पेमाणा	१६३	१६१
नग्गभावे जाव तमट्टुमाराहिता	१६६	१५४
नग्गभावे जाव मंतं	१६५	१५४
नडपेच्छा इ वा जाव मागहपेच्छा	१०२	२

पंडियं जाव अलंभोगसमत्थं	१४६	१४८
पगइभट्टयाए जाव विणीययाए	११६	६१
पडिवि रया जाव सव्वाओ	१६३	११७
परिग्गह्वेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेमे	७१	ठाणं १।११४-१२५
परिव्वायए जाव वसहिं	११८,११९	११८
पलिओवमं वाससयसहस्समग्गहियं ठिई सेसं तं चेव	६४	८६
पावयणे जाव किमंग	८०,८१	७६
पीइमणे जाव हियए	६२	२०
बावीसं सागरोवमाइं ठिई अणाराहगा सेसं तं चेव	१५८	८६
बावीसं सागरोवमाइं ठिई आराहगा सेसं 'तं चेव' ^१	१६२	८६
बावीसं सागरोवमाइं ठिई परलोगस्स अणाराहगा सेसं तं चेव	१५६	८६
भासासमिया जाव इणमेव	१६४	भगवती २।१
मणुस्सेसु.....	७३	७३
महिड्ढिएसु जाव महासोक्खेसु	७२	४७
महिड्ढिया जाव चिरट्टिया	७२	७२
मूलभोयणे इ वा जाव बीयभोयणे	१३५	वृत्ति
लउया जाव गंदिरुक्खा	१०	६
लोभाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ	१६३	७१
लोभे अत्थि जाव मिच्छादंसणसल्ले	७१	ठाणं १।१००-१०७
वण्णं जाव जाणइ	१७०	१६६
वहमाणए जाव णो	११२,११३	१११
वहमाणए जाव णो	१३८	१३७
सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव णणत्थ		
एक्काए गंगामट्टियाए	१२३-१३३	१००-११०
सगडं वा जाव संदमाणियं	१००	वृत्ति, पृष्ठ १७६
सच्चेव हेट्टिल्ला वलव्वया जाव णिसीयइ	५३,५४	२०,२१
सिज्जइ जाव मंतं	१८१	१७७
सिज्जिहिति जाव मंतं	१६६	१५४
सुकुमालपाणिपाए जाव ससिसोमाकारे	१४३	१५
सेसं तं चेव जाव चउसट्टिवाससहस्साइं ठिई पणत्ता	६२	६१
सेसं तं चेव णवरं पलिओवमं वाससयसहस्समग्गहियं ठिई	६५	८६
हट्टुट्टु जाव हियए	२१,५३,५६,६३,८०	२०
हट्टुट्टु जाव हियया	२०,७८	२०

१. तहेव (क, ख) ।

हेट्टुट्टु जाव हिययाओ	८१	२०
हयगय जाव सण्णाहियं	६२	५७
हारद्विराइयवच्छा जाव पभासेमाणा	७२*	४७

रायपसेणइयं

अंकामया.....उवरिपुंछणीओ	१६०	१३०; जी० २६४
अकंताहि जाव अमणामाहि	७६७	७५०
अगामियाए जाव अडवीए	७७४	७७४
अगामियाए जाव किच्चि	७६५	७७४
अग्गमहिसीहि जाव सोलसहि	५८	७
अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ	२४०, २७६	वृत्ति, पृष्ठ २२५
अच्छं जाव पडिरुवं	३२, ३४, ३६	२१
अच्छाई जाव पडिरुवाइं	१५७	२१
अच्छाओ जाव पडिरुवाओ	१४५	२१
अच्छे जाव पडिरुवे	२३	२१
अज्झत्थिए जाव संकप्पे	७६८	६
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	६८८, ७३२, ७३७, ७७७, ७९१, ७९३	६
अज्झत्थियं जाव संकप्पं	७३८	६
अज्झत्थियं जाव समुप्पणं	२७६, ७४६	६
अट्टजोयणाइं.....	२६१	२४४
अट्टाई जाव पुच्छइ	७१६	७१६
अड्ढावि जाव पविट्टा	७६५	७६५
अड्ढे जाव बहुजणस्स	६७५	ओ० १४
अणमारसएहि जाव विहरमाणे	७११	६८६
अणियाहिक्खिणी जाव अण्णेवि	२८०	७
अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव जाणविमाणं	१८	१७
अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते	७६२, ७६३	७६२
अण्णत्ते वा.....लहुयत्ते	७६२	७६२
अण्णभोगेहि जाव सयणभोगेहि	८११	८१०
अण्णया जाव चोरे	७६४	७५४
अतुरिय जाव सन्वतो	१२	१२
अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं	६८८	ओ० ५२
अश्वसिद्धिए जाव चरिमे	६२	६२
अभिगमेणं जाव बंदइ	७७८	ओ० ६६

१. वृत्ती विशेषणानि किञ्चिदन्यूनानि दृश्यन्ते ।

अभिगयजीवाजीवे...विहरइ	७८६	६६८
अभिगयजीवा सव्वो वण्णओ जाव अप्पाणं	७५२	६६८
अयभारमं वा जाव परिवहित्तए	७६०,७६१	७६०
असणं जाव अलंकारं	७६४	७६४
असणं जाव साइमं	७६४	७८७
असोयवरपायवे पुढविसिलापट्टए वत्तव्वया		
उववाइयगमेणं नेया	३,४	ओ० ८,१३
अहापडिरूवं जाव विहरइ	७१३	७११
आइण्णं तं चेव जाव सहावेत्ता	७७४	७७४
आपूरेमाणाओ जाव चिट्ठंति	१३५	४०
आपूरेमाणा जाव चिट्ठंति	१३२	४०
आरामं वा जाव पवं	१२	१२
आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं		
आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं	७१६	७१६
आलिघरगेसु जाव आयंसघरगेसु	१८३	१८२
आसत्तोसत्त...कयग्गहृगहिय...धूवं	२६६	२६४
आसत्तोसत्त जाव धूवं	२६४	२६१
आसथंति जाव विहरंति	१८७	१८५
इट्ठं जाव फुसंतु	७६६	ओ० ११७
इट्ठतराए चेव जाव गंधेणं	३०	२५
इट्ठतराए चेव जाव फासेणं	३१	२५
इट्ठतराए चेव जाव वण्णे	४५	२५
इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं	२६ से २६	२५
इट्ठे... किमंग	७५३	७५०
इरियासमिए जाव सुहुयहुयासणे	८१३	ओ० २७
इहमागए जाव विहरइ	६८६	६८७
ईसर-त्तलवर जाव सत्थवाहं	७०४	६८८
उक्किट्टाए जाव जेणेव	२७६	१०
उक्किट्टाए जाव तिरियमसंखिज्जाणं	५६	१०
उक्किट्टाए जाव बीईवयमाणा	१२	१०
उच्चत्तेणं वण्णओ	२१०	२०६
उच्छुभइ जाव अरमणिज्जे	७८५	७८५
उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	२८८	१६७
उत्पायपव्वएसु...पक्खंदोलएसु	१८१	१८०
उम्मुक्कबालभावं जाव विद्यालचारि	८१०	८०६
उवट्टवेह जाव पच्चप्पिणह	६८१,७१४	६८२

उवट्टवेह जाव सच्छतं उवट्टवेति	६६०,६६१	६८१,६८२
उवट्टवेहि जाव पच्चप्पिणाहि	७२४	७२५
उवट्टाणसालाए जाव विहरामि	७५६	७५४
उववायसभाए जाव उववण्णे	७६६	जी० ३।३३६
उवस्सयगयं....	७१६	७१६
उवागच्छइ तं चेव	३१०	३०५
उवागच्छति तहेव जेणेव	२७६	२७६
उवागच्छिता....थूमं	३०५	२६४
एएण वि जाव लभइ	७१६	७१६
एयंतं जाव तं तं	७७१	७७१
एयमट्ठं जाव हियए	६८३	६६०
एवं अब्भुए सिगारे उराले मणुण्णे	७८	७८
एवं आहार-नीहार-उरसास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइ		
अप्पतराए ^१ चेव	७७२	७७२
एवं जाव संखेज्जहा	७६५	७६४
एवं तंवागरं रूप्पागरं सुवण्णागरं रयणागरं वइरागरं	७७४	७७४
एवं पंतीओ वीही मिहुणाई	१४२-१४४	१४१
एस जाव तो	७६४	७५४
एस सण्णा जाव एस समोसरणे	७४६	७४८
एस सण्णा जाव समोसरणे	७५०,७७३	७४८
एस सण्णा जाव समोसरणे....	७७३	७७३
एस सण्णा....तयाणंतरं	७७३	७७३
ओराले....चउदसपुव्वी	६८६	जी० ८२; भ० १।६
ओहिनाणं भवपच्चइयं खओवसमियं	७४३	नंदी ७
कंखति जाव अभिलसंति	७१३	७१३
कंते जाव पासणयाए	७५१,७५२	७५०
कंते जाव मणामे	७७४	७७०
कयग्गहगहिय जाव धूवं	२६५	२६४
कयग्गहगहिय जाव पुंजोवयारकलियं	२६३	१२
कयबलिकम्मा जाव पायच्छिता	७६५	६६२
कयबलिकम्मा जाव संकिया	८०२	६६२
कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेइ	७६५	६६२
कयबलिकम्मे जाव सरिरे जेणेव चाउग्घंटे जाव		
डुइहिता सकोरेंट....महया....भडवडगरेणं तं चेव		

१. अंतराए (क,ख,ग,घ,च,छ) ।

जाव पञ्जुवासइ । धम्मकहाए जाव तए णं	७१६,७१७	६६२-६६४
करयल जाव कट्टु	७२३	१०
करयल जाव वट्ठावेत्ति	७१३	१२
करयल जाव वट्ठावेत्ता	७०८	१२
करयलपरिग्गहियं जाव एवं	७०७	६८६
करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु	६८३	१०
करयलपरिग्गहियं जाव पच्चप्पिणति	४६	१२
करयलपरिग्गहियं जाव पडिसुणोइ	१८	१०
करयलपरिग्गहियं जाव वट्ठावेत्ता	७२,६८६	१२
करेमि.....णो	७६४	७६४
कलकलरवेणं.....एमदिसाए जहा उववाइए जाव अप्पेगतिया	६८८	वृत्ति, पृष्ठ २८६
कलसाणं जाव अट्टसहस्सेणं	२८०	२७६
कल्लं जाव तेयसा	७८८	७७७
कालागरुपवर जाव चिट्ठंति	२३६	१३२
किण्हचामरज्जए जाव सुक्किल्लचामरज्जए	२१	वृत्ति, पृष्ठ ८०
किण्होभासा.....	१७०	ओ० ४
किण्होभासे जाव पडिरूवे	७०३	ओ० ४
कुसुमियाओ सव्व रयणांमईओ	१४५	ओ० ५
कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव	७१५	६८२
कोरव्वा जाव इब्धा	६८८	वृत्ति, पृष्ठ २८५
कोहं जाव मिच्छादंसणसत्त्वं	७६६	ओ० ११७
खुड्डागमहिदज्जए तं चेव	३५४	३५२
गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ	७८३	७८३
गिण्हित्ता तहेव जेणेव	२७६	२७६
गोसीसच्चंदणेणं.....पुष्कारुहणं आसत्तोसत्तं.....धूवं	३१२	२६४
चरमाणे.....समांसठे जाव विहरइ	७१३	७१३
चवलाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं जाव वीतिवयमाणा	२७६	१०
चालेइ जाव णो गंधव्वो	७७१	७७१
चित्तमाणंदिए जाव परमसोमणस्सिए	६३	८
छिज्जइ जाव तया णं	७८४	७८४
छिड्ढेइ वा जाव अणुपविट्ठा	७५६	७५६
छिड्ढेइ वा जाव निग्गए	७५४	७५४
छिड्ढेइ वा जाव राई	७५४ से ७५६	७५४
छिड्ढेइ वा.....जेणं	७५७	७५४
जणसण्णियाए इ वा जाव परिखा पञ्जुवासइ	६८७	ओ० ५२

जराज्जजरियदेहे जाव परिकलंते	७६०	७६०
जहा मणोगुलिया जाव णागदंतया	२३६	२३५
जाइमंडवएसु जाव मालुयामंडवएसु	१८५	१८४
जाणविमाणं जाव दाहिणिल्लेणं	४८	४८
जाणह जाव उवदंसित्तए	६५	६३
जिणपडिमा तं चेव	३१७-३२०	३०६-३०९
जीवो तं चेव	७५५,७५६,७७१,७७२	७५३
जुण्णे जाव किलंते	७६०,७६१	७६०
जोयणाइं जाव अहावायरे	१८	१०
जोयणाइं जाव दोच्चं	२७६	१०
णाइअणिट्ठाहि जाव णाइअमणामाहि	७६७	७५०
णाइ जाव परिजणं	८०२	८०२
णाइ जाव परिजणेण	८०२	८०२
णिच्चं कुसुमियाओ•••	१४५	ओ० १२
णोवलिप्पिहिति•••मित्त	८११	ओ० १५०
ण्हाए जाव उप्पि	७१०	७७४
ण्हाए जाव सरीरे सकोरेंट•••महया	७००	६६२
ण्हाएणं जाव सव्वालंकारभूसिएणं	७५१	७५१
ण्हायस्स जाव पायच्छित्तस्स	७६४	६६२
तउयभंडे जाव मणामे	७७४	७७४
तउयभंडे जाव सुबहुं	७७४	७७४
तज्जीवो तं चेव	७५८,७६२	७५२
तत्थुप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	२७६	१६७
तरुणे जाव सिप्पोवगए	७५८,७५६	१२
तहेव केवलनाणं सव्वं भाणियव्वं	७४५	नंदी २६
तिक्खुत्तो जाव वंदित्ता	१२	१०
तिट्ठाणकरणमुद्धं•••पणीयाणं	१७३	७६
तेणेव तहेव जेणेव	२७६	२७६
तेत्तसमुग्गाणं जाव अंजणसमुग्गाणं	२५८,२७६	१६१
तारणाण भया छत्ताइछत्ता य णेयव्वा	१७६-१७६	२०-२३
दक्खा जाव उवएसलद्धा	७७०	७६६
दप्पणा जाव पडिरूवा	२१	वृत्ति, पृष्ठ १६
दलयइ जाव कूडागारसालं	७८८	७८७
दाहिणिल्ले दारे तहेव अभिसेयसभासरिसं जाव		
पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव		
उवागच्छइ २ त्ता तोरणे य तिसोवाणे य सालि-		

भंजियाओ बालरूवए य तहेव, जेणेव अभिसेयसभा
तेणेव उवागच्छइ २ ता तहेव सीहासणे च मणि-
पेढियं च सेसं तहेव आययणसरिसं जाव पुरत्थि-
मिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव अलंकारियसभा
तेणेव उवागच्छइ २ ता जहा अभिसेयसभा तहेव
सव्वं जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता
तहेव लोमहत्थयं परामुसइ पोत्थयरयणे लोमहत्थ-
एणं पमज्जइ २ ता दिव्वाए दगधाराए अग्गेहिं
वरेहि य गधेहिं मल्लेहिं य अच्चेइ २ ता मणि-
पेढियं सीहासणे च सेसं तं चेव, पुरत्थिमिल्ला
नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २
ता तोरणे य तिसोवाणं य सालिभंजियाओ य
बालरूवए य तहेव ।

२५७-६५३

२६४-३५०

दाहिणिल्ले दारे पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती
उत्तरिल्ले दारे तं चेव पुरत्थिमिल्ले दारे
तं चेव

३३४-३३७

२६६-२६६

दिव्वेहिं जाव अज्जभवण्णे

७५३

७५३

दुपय जाव सिरीसिवाणं

७०३

७०३

दुहाफालिए वा जाव संखेज्जहा

७६५

७६५

दुहाफालियंसि वा.....जोति

७६५

७६५

देवसयणिज्जे तं चेव

३५३

वृत्ति, पृष्ठ २३५

देवा जाव अब्भगुण्णायमेयं

११

११

देविड्ढि जाव दिव्वं

५६

५६

देविड्ढी जाव देवाणुभागे

६६७

६६७

देवे जाव पच्चप्पिणंति

६५५

१२

धम्मत्थिकायं जाव णो

७७१

७७१

धम्मिए जाव विहराहि

७५२

७५२

धम्मिया जाव वित्ति

७५२

६७१

नमंसइ जाव पज्जुवासेइ

७१६

७१६

नमंसामि जाव पज्जुवासामि

५८

६

नमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति

७०४

६

नागदंता तं चेव जाव गणदंतसमाणा

१३२

१३२

नानामणि जाव पीवरं

७०

६६

निसिरति अहावायरे अहासुहमे दोच्चंपि

६५

१०

वेउविद्वयसमुग्धाएणं जाव बहुसमं

६५

१०

पइण्णा तहेव

७६०

७५३

पउमलयाओ जाव सामलयाओ	१४५	ओ० ११
पउमलयापविभक्ति जाव समलयापविभक्ति	१०१	ओ० ११
पउमे इ वा जाव सयसहस्सपत्ते इ वा	८११	ओ० १५०
पएसी तं चेव	७६३	७५३
पएसी ! तहेव	७५७	७५३
पच्चक्खाए जाव परिग्गहे	७६६	६६३
पच्चक्खामि जाव परिग्गहं	७६६	६६३
पच्चत्थिमिल्ले दारे तं चेव, उत्तरिल्ले दारे तं चेव, पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव, दाहिणे दारे तं चेव	३०१ से ३०४	२६६
पज्जुवासंति जाव पबियरित्तए	७३७	७३२
पज्जुवासंति जाव ब्रूया	७३२	७३२
पडिरूवा जाव पंतीतो वीहीतो मिहुणाणि लयाओ	१६३-१६६	१४२-१४५
पणत्ताओ....	२३३	१७४
पतणतणायंति जाव ज्ञोयणपरिमंडलं	१२	१२
पत्तं वा तहेव	१२	६
पत्तद्वे जाव उवएसलद्धे	७६५	७६६
पाडिहारिएणं जाव संथारएणं	७१३	७११
पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि	७५०	७५०
पासाईयाओ....	१३६	२१
पासाईयाओ जाव चिट्ठंति	१३३	जी० ३।३०३
पासादीए जाव पडिरूवे	६६८, ६७०	२१
पासादीया जाव पडिरूवा	१६	२१
पासायवरगए जाव विहरंतो	७७४	७७४
पासायवरगए जाव विहरमाणे	७७४	७७४
पिहावेमि जाव पच्चइएहि	७५६	७५४
पीढफलम जाव उवनिमंतिज्जाह	७०६	७०४
पुण्णोवच्चयं जाव उववज्जिहिसि	७५२	७५२
पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं	२५८, २७६	१५६
पुप्फपडलगाइं जाव लोमहत्थपडलगाइं	१५७	१५६
पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडलगाणं	२५८, २७६	१५६
पुप्फारुहणं....आसत्तोसत्त जाव धूवं	३००, ३०५, ३५५	२६४
पुरिसेहि जाव उवक्खडवेत्ता	७८८	७८७
पेच्छाघरमंडवे एवं धूमे जिणपडिमाओ चेइयस्सुखा मंहिदज्जया नंदापुक्खरिणी		

तं चैव जाव धूवं दलइ २ ता	३३८-३५०	वृत्ति, पृष्ठ २६४; सू० ३००, २६६, २६७, २६६, २६६, ३०५, ३०६, ३०६, ३०६, ३०६, ३१०, ३११, ३१२
पोसहोववासस्स जाव विहरिस्सामि	७८७	७८६
फरिस जाव विहरइ	७१०	६८५
फरिस जाव विहरंति	७७४	६८५
बहूहि य जाव देवेहि	२६१	७
बाले जाव मंदविण्णाणे	७५८, ७५९	७५८
भंते जाव नो	७६२	७५४
भंते जाव विहरामि	७६२	७५४
भंते....वणसंडे	७८२	७८१
भूमिभागा उल्लोया	२१६	२१३
मंगलगा सज्जभया जाव छत्तातिछत्ता	१६६, १६७, १६८	२१, २२, २३
मणपज्जवणाणे	७४४	नंदी २३
मणसंकप्प जाव भियायमाणं	७६५	७६५
मणसंकप्पे जाव भियायसि	७६५	७६५
मणिपेदियं च....दिग्वाए	३०५	२६४
महच्चपरिसाए जाव घम्मं	७७६	६६३
महत्थं जाव उवणेइ	७०८	७००
महत्थं जाव गेण्हइ	७०८	६८१
महत्थं जाव पडिच्छइ	७०६	६८४
महत्थं जाव पाहुंडं	६८०, ६८१, ६८२, ६८४, ६६६, ७००	६८०
महत्थं जाव विसज्जिए । तं चैव		
जाव समोसरह	७०२	७००
महयाहिमवंत जाव विहरइ	६७१	ओ० १४
महाकम्मतराए चैव तं चैव	७७२	७७२
महाकिरिय जाव हंता	७७२	७७२
महावीरं जाव नमंसित्ता	७४	६
महिदज्जए....तं चैव	३११	३०५
महिद्धिया जाव पलिओवमट्ठितीया	१८६	ओ० ४७
महिड्डीए जाव महाणुभागे	६६६	६६६
माहणं वा जाव पज्जुवासेइ	७१६	७१६
मित्त जाव परिजणस्स	८०२	८०२
मुच्छिए जाव अज्जोववण्णे	७५३	७५३

रज्जं च जाव अंतेउरं	७६१	७६०
रट्ठं जाव अंतेउरं	७६१	७६०
रयणाणं जाव रिट्ठाणं	१२	१०
रयणीए जाव तेयसा	७७८	७७७
रयणेहि जाव रिट्ठेहि	१६५	१०
रायंगणं वा जाव सब्वतो	१२	१२
रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि	६६८	६८०
वइरामया सुवण्णरूपामया फलगा नाणामणिमया	१६०	जी० ३।२६४
वंदइ जाव एवं	७७५	६२
वंदणवत्तियाए जाव महया	६८६	ओ० ५२; राय० ६८८
वणसंडे इ वा....	७८६	७८१
वणसंडे इ वा जाव खलवाडे	७८७	७८१
वण्णओ सभाए सरिसो	२११-२१४	२०६, २१०, २३७, २५१
वरकमलपइट्ठाणा जाव महया	१४८	१३१
वरकमलपइट्ठाणा तहेव	१४७	१३१
वामेणं जाव वट्ठित्ता	७७६, ७७७	७६७
वामेणं जाव विवक्कासं	७६८	७६७
वावीणं जाव बिलपंतियाणं	१७५, १८०	१७४
वासधरपव्वया तहेव जेणेव	२७६	२७६
विउलेणं जाव पडिलाभेइ	७१६	७१६
विविहृतारारूवोवचिया जाव पडिरूवा	२०	१७
वीसाएमाणा जाव विहरंति	७६५	८०२
संखंके....सव्वरयणामया	२२२	१६०
संठिय जाव जोयणसहस्समूसिएणं	५६	५२
सच्छत्तं जाव चाउगघंटं	६८१	१७३
सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणेहि	६८३	६८३
सत्थप्पओमेण वा जाव उह्वेत्ता	७६१	७६१
सद् जाव विहरइ	६७२	ओ० १५
सद्देहज्जा....जहा अण्णो जीवो तं चेव	७५६, ७५८	७५४
सद्देहज्जा तं चेव	७६२, ७६४	७५४
सद्देहज्जा तहेव	७६०	७५४
समज्जिणित्ता जाव देवलोएसु	७५२	७५२
समणं वा जाव पज्जुवासेइ	७१६	७१६
समणं वा तं चेव जाव एएण	७१६	७१६
समण जाव परिभाएमाणे	७८८	७८७
समाणा जाव पडिसुणेत्ता	६५५	१०
समिद्धे....	६७६	६६८
समुदया जाव सिरीए	१३२	४०

सरीरं तं चैव	७५६,७६४	७५२
सरूबिस्स जाव ससरीरस्स	७७१	७७१
सव्वंतरणईवो जेणेव	२७६	२७६
सव्वतूयरे तहेव जेणेव	२७६	२७६
सव्वतूयरेहि जाव सव्वोसहिसिद्धत्थएहि	२८०	२७६
सव्विड्ढीए जाव (णा) नाइयरवेणं	१३,६५७	ओ० ६७
ससक्खं जाव उवणंति	७५६	७५४
सामाणियसाहस्सीहि जाव सोलसहि	५६	७
सिघाडग...महया जणसद्देइ वा...परिसा	७१२	६८७
सिया जाव मंभीरा	७७२	७५५
सिरिवच्छ जाव दप्पणा	४६	२१
सीहासणे जाव सणिसण्णे	२८६	२८३
सीहासणे तं चैव	३५२	वृत्ति, पृष्ठ २६६
सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे	६७३	८०१
सुकुमालपाणिपाया धारिणी वण्णओ	६७२	ओ० १५
सुबहुं जाव उववण्णा	७५३	७५२
सुबहुं जाव उववण्णे	७५१	७५०
सुसिलिद्ध जाव पडिरूवे	२४७	२३१
सूरियाभविमाणवासिणो जाव देवीओ	२८६	७
सोच्चा जाव हट्ठ...उट्टाए जाव एवं	७००	६६५
सोत्थियं जाव दप्पणं	२६१	२१
हंसासणाइं जाव दिसासोवत्थियासणाइं	१८३	१८१
हट्ठ जाव करयल जाव पडिसुणंति	७४	१०
हट्ठ जाव जेणेव	७२	७१३
हट्ठ जाव पडिसुणेत्ता	६८१	१०
हट्ठ जाव भवह	७१३	७१३
हट्ठ जाव समणं	६०	६२
हट्ठ जाव हियए	४७,६६५,७१०	८
हट्ठ जाव हियया	१२,२७६	८
हट्ठतुट्ठ जाव अप्पमहग्गाभरणालं कियसरीरे	७२६	७१६
हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ	७१४	८
हट्ठतुट्ठ जाव सूरियाभं	२६०	८
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१३,१४,१७,१८,६२,२७७, ६६०,७१३,७१६,७२५,७७८	८
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	१०,१६,२८१,७०७,७१३,७७४	८
हट्ठतुट्ठ तहेव एवं	७१८	६६५
हत्थच्छिण्णगं वा जाव जीवियाओ	७५१	७५१
हत्थेण वा जाव आवरेत्ताणं	७१६	७१६

हृयकंठाणं जाव उसभकंठाणं	२५८	१५५
हृयसंघाडा जाव उसभसंघाडा	१६२	१४१
हिरण्यं तं चेव जाव पञ्चइत्तए	६६५	६६५

जीवाजीवाभिगमे

अकंततरगा चेव जाव अमणामतरगा	३१८४	३१२७८
अणिट्टा जाव अमणामा	३१६२	म० ११२२४
अपढमसमयवेइंदिया जाव पढमसमयपंचिदिया	६११	४११,६११
अप्पा वा एवं जाव विसेसाहिया	५११६	४११६
आयामेणं जाव दो	३१३७६	६१३७२
आसयंति जाव विहरंति	३१२१७	३१२६७
आसादणिज्जे जाव इट्टतराए चेव आसादे	३१८६६	३१८६०
आसादणिज्जे जाव पल्हायणिज्जे	३१८७२	३१८६०
आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा	११२०	पण्ण० ८११
आहेवच्चं जाव दिव्वाइं	३१३५०	ओ०सू० ६८
आहेवच्चं जाव पालेमाणा	३१६३६	३१३५०
इंगाले जाव तत्थ नियमा	११७८	पण्ण० ११२६
ईहामियउसभ जाव पउमलयभत्तिचित्ता	३१३११	३१२८८
उक्किट्टाए जाव दिव्वाए	३१४४५	३१८६
उदाइत्ता सो चेव विही एवं धायइसंडेवि	३१७१८,७२०	३१५७५,५७६
उप्पलाइं तं चेव	३१४४५	३१४४५
उववेते जाव सन्विदियगातपल्हायणिज्जे	३१८७८	३१८६०
उवागच्छित्ता जाव कट्टु	३१५५५	३१४४५
एएणं अभिलावेणं जाव दसविहा	१११०	१११०
एवं चत्तारिवि गमा, पढमबिइयभंगेसु अपरियाइत्ता		
एगंतरियगा अच्छेत्ता अभेत्ता, सेसं तहेव (क,ख,		
ग,ट,त्रि); ते च्चेव आलावता ह्व जाव हुंता पभू		
(ता)	३१६६५-६६७	३१६६१-६६३
एवं जहा अच्छीणि णवरं एवतियाइं पंच ओवासंतराई	३११७८	३११७६
एवं जहा पण्णवणाए जाव सेत्तं	११५	पण्ण० ११३
एवं जहा पण्णवणापदे जाव पंचहिं	३१२२८	पण्ण० ११८७
कतरैहिंती जाव विसेसाहिया	२११३४-१३६	४११६
कयग्गाहग्गहिंत्त जाव पुंजोवयारकलितं	३१४५८	३१४५७
कयग्गाह जाव धूवं	३१४६०	३१४५८
कामावत्ताइं जाव कामुत्तरवडिसयाइं	३११७६	३११७५
कालं जाव असंखेज्जा	५१८	पण्ण० १८१२६
कालं जाव आदलियाए	५१६	पण्ण० १८१३
गेण्हित्ता तं चेव	३१४४५	३१४४५

गोसीसचंदणेणं जाव चच्चए दलयति आसतोसत्त		
कयग्गाह धूर्वं	३१४६१	३१४५६
चेव जाव फासेणं	३१२८४	३१२८३
चेव जाव मणामतराए	३१२८३	३१२७८
चेव जाव वण्णेणं	३१२७६-२८२	३१२७८
जहा अच्चीणि णवरं सत्त ओवसंतराईं विककमे सेसं तहेव	३११८०	३११७६
जहा अविमुद्धलेस्सेणं छ आलावगा एवं विसुद्धलेस्सेणवि		
छ आलावगा भाणितत्वा जाव विसुद्धलेस्से	३१२०५-२०८	३११६६-२०२
जहा णईओ	३१४४५	३१४४५
जातीकुलकोडीजोणीपमुह जाव पणत्ता	३११६६	३११६०
जातीकुल जाव समखया	३११६८	३११६७
जोयणकोडी जाव अन्भतरपुक्खरद्वस्स	३१८३५	३१८३२
जोयणसहस्साईं जाव परिकखेवेणं	३११०७४	३१८२
णं जाव केवचिरं	६१४१,४३	६१३६
तं चेव जाव महावेदणतरा	३११२६	३११२६
तं चेव णं जाव णो	३१११६	३१११८
तहेव जाव सायासोक्खबहुले	३१११६	३१११८
तिस्थसिद्धा जाव अणेगसिद्धा	१८	पण्णे ११२
तिस्थाईं तहेव जहेव	३१४४५	३१४४५
तुरियाए जाव दिव्वाए	३११७६	३१८६
पगतिभद्दसा जाव विणीता	३१८४१	३१७६५
पच्छवि जाव आणुगामियत्ताए	३१४४२	३१४४१
पणिहाय जाव सव्ववस्सुड्डिया	३११२४	३११२४
पणत्ता जाव तेसु	३१३६८	३१३६७
पत्तेयं जाव णिसीयंति	३१५६०	३१५५८
पयलाएज्ज वा जाव उसिणे	३१११६	३१११८
पुह्वी जाव सव्ववस्सुड्डिया	३११२५	३११२४
पुप्फारुहणं जाव धूर्वं	३१४६५	३१४५६
पोग्गला य जाव असासयावि	३१७२७	३१७२४
भविस्सइ जाव अवट्टिए	३१३५०	३१२७२
महज्जुतीए जाव महाणुभावे	३१३५०	३१८६
महताहतनट्टगीयवावित र्वेणं दिव्वाईं भोगभोगाईं भुंजमाणा	३१८४५	३१८४२
महिड्ढीए जाव महाणुभागे	३१८६	वृत्ति, पत्र १०६
मुत्ताजालंतरुसिया तहेव जाव समणउसो	३१३०२	३१३०२
लवणस्स णं पएसा घायइसंडं दीवं पुट्टा तहेव		
जहा जंबूदीवे घायइसंडेवि सो च्चेव गमो	३१७१५-७१८	३१५७१-५७४
वट्टे जाव च्चिट्ठति	३१८६२, ८६५, ८७१, ८७७, ६२५	३१७०४

वलयागार जाव चिट्ठति	३१८५६	३१७०४
वलयागारसंठाणसंठिते जाव चिट्ठति	३१८६८	३१७०४
वलयागारसंठाणसंठिते जाव संपरिविखत्ताणं	३१८४८	३१७०४
वलयागारे तहेव जाव जे	३१४७	३१४६
सव्वतुवरे थ तहेव	३१४४५	३१४४५
सव्वपाणा जाव देवत्ताए देविताए आःण जाव हंता	३१११३०	३१११२८
सव्वपुप्फे तं चेव	३१४४५	३१४४५
मामाणियसाहस्मीहि जाव अण्णेहि	३१५५७	३१४४६
पिज्झंति जाव अंतं	११३२	ओ० सू० ७२
मेरियागुम्मा जाव महाजाइगुम्मा	३१५८०	जंबु० २१०
सेसं तं चेव	३११७८, १८२	३११७६
ओह्मीसाण जाव अणुत्तरेसु	३११०३८	पण्ण० २१४६
हट्ठुट्ठ जाव हियए	३१४४३	वृत्ति, पत्र २४३
हट्ठुट्ठ जाव हियया	३१४४५	३१४४३
हट्ठुट्ठा करतल जाव कट्ठु एवं देवोत्ति जाव पडिसुणेतता	३१५५५	३१४४५
हट्ठुट्ठा जाव हरिसवसविसप्पमाणहियया	३१४४७	३१४४१
हयकंठगाणं जाव उसभकंठगाणं पुप्फचंगेरीणं जाव		
लोमहत्थचंगेरीणं पुप्फपडलगाणं अट्ठसयं		
तेल्लसमुग्गाणं जाव धूवकडुच्छुयाणं	३१४१६	३१३२८-३३५; वृत्ति, पत्र २३४
हिमे जाव जे	११६५	पण्ण० ११२३

परिशिष्ट-२ तुलनात्मक

राज-वर्णक

ओवाइय सूत्र १४

जंबुद्वीवपण्णत्ती ३।२,३

अत्र राजवर्णकस्य प्रकारान्तरं चापि लभ्यते ।

देवी-वर्णक

ओवाइय सूत्र १५

नायाधम्मकहाओ १।२।८

नमोत्थु-पूर्वाविस्था-वर्णक

ओवाइय सूत्र २१,५४

रायपसेणइयं सूत्र ८,७१४

नायाधम्मकहाओ २।१।११

नमोत्थु-सूत्र

ओवाइय सूत्र २१ :

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं
तित्थगराणं सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससी-
हाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं
अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं
जीवदयाणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवर-
चाउरंतचक्कवट्ठीणं अप्पडिह्यवरनाणदंसणधराणं
विद्यट्ठउमाणं जिणाणं जावयाणं तिष्णाणं तारयाणं
मुत्ताणं मोयगाणं बुद्धाणं बोहयाणं
सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्ख-
यमव्वावाहमपुणरावत्तणं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं
संपत्ताणं ।

रायपसेणइयं सूत्र ८ :

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आदियाराणं
तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं
पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोमुत्तमाणं
लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोय-
गराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं जीव-
दयाणं^१ सरणदयाणं बोहियदयाणं धम्मदयाणं धम्म-
देसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर-
चाउरंतचक्कवट्ठीणं अप्पडिह्यवरनाणदंसणधराणं
विद्यट्ठउमाणं जिणाणं जावयाणं तिष्णाणं तारयाणं
बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं सव्व-
दरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वावाहम-
पुणरावत्तयं^१ सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं ।

१. २६२ सूत्रे नास्ति ।

२. १६ सूत्रे 'जाणए' पाठो विद्यते ।

३. २६२ सूत्रे सिव अयलं अरुअं अणंतं अक्खयं

अव्वावाहं अपुणरावित्ति ।

समणे भगवं महावीरे आइगरे विभक्ति भेदेनेव पाठो निर्दिष्टसूत्राकेषु विद्यते सूत्र १६,२१,५४

समवाओ १।२ :

समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवर-पोंडरीएणं पुरिसवरगंधहृत्थिणा लोकोत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोय-गरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं जीवदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयव रणाणदंसणधरेणं वियट्टुछउमेणं जिणेणं जावएणं तिण्णेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वण्णुणा सव्वदरिसिणा सिवमयलमरुय-मणंतमक्खयमव्वावाहमपुणारावत्तयं सिद्धिगइनाम-धेयं ठाणं संपाविउकामेणं ।

भगवती १।७

समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे पुरिसोत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपोंडरीए पुरिसवर-गंधहृत्थी लोगुत्तमे लोगनाहे लोगपदीवे लोगपज्जो-यगरे अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए धम्म-देसए धम्मसारही धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे वियट्टुछउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहए मुत्ते मोयए सव्वण्णू सव्वदरिसी सिव-मयलमरुयमणंतमक्खयमव्वावाहं सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामे ।

—जंबुद्धीवपण्णत्ती ५।२१

—तायाधम्मकहाओ १।१।७

—अणुत्तरोववाइयदसाओ ३।७५

प्रभात-वर्णक

ओवाइय सूत्र २२ :

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल-कोमलुम्मिलियंमि अहंपंडुरे पहाए रत्तासोगप्पसास-किसुय-सुयमुह-मुंजद्धराग-सरिसे कमलागरसंडबोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ।

रायपसेणइयं सूत्र ७२३ :

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल-कोमलुम्मिलियंमि अहंपंडुरे पभाए कयनियमाव-स्सए सहस्सररिसिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ।

रायपसेणइयं सूत्र ७७७ :

कल्लं पाउप्पभाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-

म्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगपगास-
किसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-णलिणि-
संडबोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे
तेयसा जलंते ।

भगवती २।१।६६

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल
कोमलुम्मिलियम्मि अहपंडुरे पभाए रत्तासोयप्पकासे
किसुय - सुयमुह - गुंजद्धरागसरिसे कमलागरसंड-
बोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे
तेयसा जलंते ।

नायाधम्मकहाओ १।१।२४

(अतिरिक्त पाठ)

अणुओगदारं, लोइयं दव्वावस्सयं सू० १६

अनगार-प्रदग्घया

ओवाइय सूत्र २३ :

चइत्ता हिरण्णं चिच्चा सुवण्णं चिच्चा धणं एवं—
धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्टागारं रज्जं रट्ठं पुरं
अंतेउरं, चिच्चा विउलधण - कणग-रयण-मणि-
मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्त-रयणमाइयं संत-सार-
सावतेज्जं, विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता, दाणं च दाइ-
याणं परिभायइत्ता, मुंडा भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइया ।

आयार-चूला १५।२६ :

चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा
वाहणं चिच्चा धण-धण्ण-कणय-रयण-संत-सार-
सावदेज्जं, विच्छड्डइत्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता,
दायारेसु णं दायं पज्जभाएत्ता

रायपसेणइयं सूत्र ६६५ :

चिच्चा हिरण्णं, एवं—धणं धण्णं बलं वाहणं कोसं
कोट्टागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-
रयण-मणि - मोत्तिय - संख-सिल-प्पवाल-संतसार-
सावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं
परिभाइत्ता, मुंडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं
पव्वयति ।

निर्ग्रन्थ-तप-वर्णक

सूत्र २४,३२,३४,३५,३६

सूत्र २५,२६

सूत्र २७

सूत्र २७,२८,२९

पण्हावागरणाइं ६।६

रायपसेणइयं सूत्र ६८६

भगवती २।६५

नायाधम्मकहाओ १।१।४

भगवती २।५५

रायपसेणइयं सूत्र ८१३

निरयावलियाओ ३।४

पण्हावागरणाइं १०।११

५३८

जंबुदीवपण्णत्ती २।६८ से ७०
पज्जोसवणाकप्पो सूत्र ७८,७९,८०
द्रष्टव्यम्—अंगसुत्ताणि भाग-१

परिशिष्ट २ : आलोच्यपाठ तथा वाचनान्तर

सूत्र २७,२८,२९,३२,३४-३६
सूत्र ३०-४४

सूयगडो २।२।६४ से ६६
भगवती २५।५५७ से ६१८
उत्तरज्जम्भयणाणि ३०।७-३६

बाह्यतप

सूत्र ३१

ठाणं ६।६५

यावत्कथिक

सूत्र ३२

ठाणं २।२००,२०१

ऊनोदरिका

सूत्र ३३

भगवती ७।२४
ववहारो, ८।१७

कायकलेश

सूत्र ३६

ठाणं ७।४६

प्रतिसंलीनता

सूत्र ३७

ठाणं ४।१६०,१६२
ठाणं ५।१३५

आभ्यन्तरतप

सूत्र ३८

ठाणं ६।६६

प्रायश्चित्त

सूत्र ३९

ठाणं १०।३७

विनय

सूत्र ४०

ठाणं ७।१३०-१३७

वेद्यावृत्य

सूत्र ४१

ठाणं १०।१७

स्वाध्याय

सूत्र ४२

ठाणं ५।२२०

ध्यान

सूत्र ४३

ठाणं ४।६०-७२

देव-वर्णक

सूत्र ४७-५१

पण्णवणा २।४०-६३

परिषद्-गमन-वर्णक

सूत्र ५२ रायपसेणइयं सूत्र ६८८, ६८९

नगरी-सज्जा-वर्णक

सूत्र ५५ जंबुद्वीवपण्णत्ती ३।७

नित्यकर्म-वर्णक

सूत्र ६३ नायाधम्मकहाओ १।१।२४
जंबुद्वीवपण्णत्ती ३।६

निगमन-वर्णक

सूत्र ६४-६६ भगवती ६।२०४ से २०६
सूत्र ६६ जंबुद्वीवपण्णत्ती ३।१७७-१८६
पज्जोसवणाकप्पो सूत्र ७५

पर्युपासना-वर्णक

सूत्र २६, ७० भगवती ६।३३, १४५, १४६

दासीनाम

सूत्र ७० रायपसेणइयं सूत्र ८०४
जंबुद्वीवपण्णत्ती ३।११
नायाधम्मकहाओ १।१।८२

परिषद्-वर्णक

सूत्र ७१ : रायपसेणइयं सूत्र ६१ :
तीसे य महत्तिमहालियाए इसिपरिसाए मुणि- तीसे य महत्तिमहालियाए इसिपरिसाए मुणि-
परिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए परिसाए जतिपरिसाए विटुपरिसाए देवपरिसाए
अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए ओहवले.... । खत्तिप्रपरिसाए इक्खागपरिसाए कोरव्व-
परिसाए अणेगसयाए अणेगवंदाए अणेगसयवंद-
परिवाराए महत्तिमहालियाए ओहवले.... ।

देवलोक और देव-वर्णक

सूत्र ७२ सुयगडो २।२

आयुबंध

सूत्र ७३ ठाणं ४।६२५, ६२८
भगवती ८।४२५ से ४२८

धर्मश्रद्धा-प्रकटन

सूत्र ७६ रायपसेणइयं सूत्र ६६५
भगवती २।५२, ६।१६४
नायाधम्मकहाओ १।१।१०१
उवासगदसाओ १।५१

गौतम-वर्णक

सूत्र ८२

भगवती १।६

उवासगदसाओ १।६६

वाणमंतर-उपपात

सूत्र ८८,८९

भगवती १।४६

गंगाकूलवासी-वानप्रस्थक-तापस

सूत्र ९४

भगवती १।१५६

निरयावलियाओ ३।३

परिव्राजक-वर्णक

सूत्र ९७

भगवती २।२४।

अम्मड-परिव्राजक

सूत्र ११५-१५४

भगवती १।४।११० से ११२

दूढप्रतिज्ञ

सूत्र १४१-१५४

रायपसेणइयं सूत्र ७६६-८१६

७२ कलाएं

सूत्र १४६	रायपसेणइयं सूत्र ८०६	जंबुद्वीवपण्णत्ती वृत्ति पत्र १३६,१३७	समवाओ ७२।७	पायाधम्मकहाओ १।१।८५
१. लेहं	लेहं	लेहं	लेहं	लेहं
२. गणियं	गणियं	गणियं	गणियं	गणियं
३. रूवं	रूवं	रूवं	रूवं	रूवं
४. णट्टं	नट्टं	नट्टं	नट्टं	नट्टं
५. गीयं	गीयं	गीअं	गीयं	गीयं
६. वाइयं	वाइयं	वाइयं	वाइयं	वाइयं
७. सरगयं	सरगयं	सरगयं	सरगयं	सरगयं
८. पुक्खरगयं	पुक्खरगयं	पोक्खरगयं	पुक्खरगयं	पोक्खरगयं
९. समतालं	समतालं	समतालं ^१	समतालं	समतालं
१०. जूयं	जूयं	जूअं	जूयं	जूयं
११. जणवायं	जणवायं	जणवायं	जणवायं	जणवायं
१२. पासगं	पासगं	पासयं	पोरेकव्वं	पासयं
१३. अट्टावयं	अट्टावयं	अट्टावयं	अट्टावयं	अट्टावयं
१४. पोरेकव्वं	पोरेकव्वं	पोरेकव्वं	दगमट्टियं	पोरेकव्वं
१५. दगमट्टियं	दगमट्टियं	दगमट्टियं	अन्नविहि	दगमट्टियं

१. क्वचित् 'तालमान'मिति पाठः ।

१६. अण्णविहि	अन्नविहि	अन्नविहि	पाणविहि	अण्णविहि
१७. पाणविहि	पाणविहि	पाणविहि	लेणविहि	पाणविहि
१८. वत्थविहि	वत्थविहि	वत्थविहि	सयणविहि	वत्थविहि
१९. विलेवणविहि	विलेवणविहि	विलेवणविहि	अज्जं	विलेवणविहि
२०. सयणविहि	सयणविहि	सयणविहि	पहेलियं	सयणविहि
२१. अज्जं	अज्जं	अज्जं	मागहियं	अज्जं
२२. पहेलियं	पहेलियं	पहेलियं	गाहं	पहेलियं
२३. मागहियं	मागहियं	मागहियं	सिलोमं	मागहियं
२४. गाहं	गाहं	गाहं	गंधजुत्ति	गाहं
२५. गीइयं	गीइयं	गीइअं	मधूसित्थं	गीइयं
२६. सिलोयं	सिलोमं	सिलोमं	आभरणविहि	सिलोयं
२७. हिरणजुत्ति	हिरणजुत्ति	हिरणजुत्ति	तरुणीपडिकम्मं	हिरणजुत्ति
२८. सुवण्णजुत्ति	सुवण्णजुत्ति	सुवण्णजुत्ति	इत्थीलक्खणं	सुवण्णजुत्ति
२९. गंधजुत्ति	आभरणविहि	चुण्णजुत्ति	पुरिसलक्खणं	चुण्णजुत्ति
३०. चुण्णजुत्ति	तरुणीपडिकम्मं	आभरणविहि	हयलक्खणं	आभरणविहि
३१. आभरणविहि	इत्थिलक्खणं	तरुणीपरिकम्मं	गयलक्खणं	तरुणीपडिकम्मं
३२. तरुणीपडिकम्मं	पुरिसलक्खणं	इत्थिलक्खणं	गोणलक्खणं	इत्थीलक्खणं
३३. इत्थिलक्खणं	हयलक्खणं	पुरिसलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं	पुरिसलक्खणं
३४. पुरिसलक्खणं	गयलक्खणं	हयलक्खणं	मिढयलक्खणं	हयलक्खणं
३५. हयलक्खणं	गोणलक्खणं	गयलक्खणं	चक्कलक्खणं	गयलक्खणं
३६. गयलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं	गोणलक्खणं	छत्तलक्खणं	गोणलक्खणं
३७. गोणलक्खणं	छत्तलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं	दंडलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं
३८. कुक्कुडलक्खणं	चक्कलक्खणं	छत्तलक्खणं	असिलक्खणं	छत्तलक्खणं
३९. छत्तलक्खणं	दंडलक्खणं	दंडलक्खणं	मणिलक्खणं	दंडलक्खणं
४०. दंडलक्खणं	असिलक्खणं	असिलक्खणं	काकणिलक्खणं	असिलक्खणं
४१. असिलक्खणं	मणिलक्खणं	मणिलक्खणं	चम्मलक्खणं	मणिलक्खणं
४२. मणिलक्खणं	कागणिलक्खणं	कागणिलक्खणं	चंदचरियं	कागणिलक्खणं
४३. काकणिलक्खणं	वत्थुविज्जं	वत्थुविज्जं	सुरचरियं	वत्थुविज्जं
४४. वत्थुविज्जं	नगरमाणं	खंधावारमाणं	राहुचरियं	खंधावारमाणं
४५. खंधावारमाणं	खंधावारमाणं	नगरमाणं	गहचरियं	नगरमाणं
४६. नगरमाणं	चारं	चारं	सोभाकरं	वूहं
४७. वूहं	पडिचारं	पडिचारं	दोभाकरं	पडिवूहं
४८. पडिवूहं	वूहं	वूहं	विज्जगमयं	चारं
४९. चारं	पडिवूहं	पडिवूहं	मंतगयं	पडिचारं
५०. पडिचारं	चक्कवूहं	चक्कवूहं	रहसगयं	चक्कवूहं
५१. चक्कवूहं	गरुलवूहं	गरुडवूहं	सभासं	गरुलवूहं
५२. गरुलवूहं	सगडवूहं	सगडवूहं	चारं	सगडवूहं
५३. सगडवूहं	जुद्धं	जुद्धं	पडिचारं	जुद्धं

५४. जुद्धं	निजुद्धं	नियुद्धं	वृहं	निजुद्धं
५५. निजुद्धं	जुद्धजुद्धं	जुद्धातियुद्धं	पडिवृहं	जुद्धाड्जुद्धं
५६. जुद्धाड्जुद्धं	अद्विजुद्धं	द्विद्विजुद्धं	खंधावारमाणं	अद्विजुद्धं
५७. मुद्विजुद्धं	मुद्विजुद्धं	मुद्विजुद्धं	नगरमाणं	मुद्विजुद्धं
५८. बाहुजुद्धं	बाहुजुद्धं	बाहुजुद्धं	वत्थुमाणं	बाहुजुद्धं
५९. लयाजुद्धं	लयाजुद्धं	लयाजुद्धं	खंधावारनिवेशं	लयाजुद्धं
६०. ईसत्थं	ईसत्थं	इसत्थं	नगरनिवेशं	ईसत्थं
६१. छरुप्पवायं	छरुप्पवायं	छरुप्पवायं	वत्थुनिवेशं	छरुप्पवायं
६२. धणुवेयं	धणुवेयं	धणुवेयं	ईसत्थं	धणुवेयं
६३. हिरण्णपागं	हिरण्णपागं	हिरण्णपागं	छरुप्पगयं	हिरण्णपागं
६४. सुवण्णपागं	सुवण्णपागं	सुवण्णपागं	आससिक्खं	सुवण्णपागं
६५. वट्टखेड्डं	सुत्तखेड्डं	सुत्तखेड्डं	हत्थिसिक्खं	वट्टखेड्डं
६६. सुत्तखेड्डं	वट्टखेड्डं	वत्थखेड्डं	धणुवेयं	सुत्तखेड्डं
६७. णालियाखेड्डं	णालियाखेड्डं	नालियाखेड्डं	हिरण्णपागं	नालियाखेड्डं
			सुवण्णपागं	
			मणिपागं	
			धातुपागं	
६८. पत्तच्छेज्जं	पत्तच्छेज्जं	पत्तच्छेज्जं	बाहुजुद्धं दंडजुद्धं	पत्तच्छेज्जं
			मुद्विजुद्धं अद्विजुद्धं	
			निजुद्धं जुद्धाति-	
			जुद्धं	
६९. कडगच्छेज्जं	कडगच्छेज्जं	कडच्छेज्जं	नालियाखेड्डं	कडच्छेज्जं
			वट्टखेड्डं	
७०. सज्जीवं	सज्जीवं	सज्जीवं	पत्तच्छेज्जं	सज्जीवं
			कडगच्छेज्जं	
७१. निज्जीवं	निज्जीवं	निज्जीवं	सज्जीवं	निज्जीवं
			निज्जीवं	
७२. सउणरुयं	सउणरुयं	सउणरुयं	सउणरुयं	सउणरुयं

मुनिव आराहणा

सूत्र १५४

जस्सट्टाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए
अदंतवणए केमनोए बंभवेरवासे अच्छत्तगं
अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्टसंज्जा
परघरपवेसो लद्धावलद्धं परेहि हीलणाओ
निदणाओ खिसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ
तालणाओ परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया

राइपसेणइयं सूत्र ८१६

जस्सट्टाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे केसलोए बंभ-
वेरवासे अण्हाणगं अदंतवणगं अच्छत्तगं अणुवाहणगं
भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परघरपवेसो लद्धावल-
द्धाइ माणावमाणाइ परेहि हीलणाओ निदणाओ
खिसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ
उच्चावया विरुवरुवा बावीसं परीसहोवसग्गा

गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहिया-
सिज्जति तमट्टुमारहित्ता.... ।

गामकंटगा अहियासिज्जति, तमट्ठं आराहेहिइ,
आराहिता.... ।

सूयगडो २।२।६७

जस्सट्टाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे अण्हाणणे
अदंतवणणे अच्छत्तए अणोवाहणए भूमिसेज्जा
फलगसेज्जा कट्टुसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे
परधरपवेसे लद्धावलद्धं माणावमाणणाओ हीलणाओ
निदणाओ खिसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ ताल-
णाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा
अहियासिज्जति तमट्ठं आराहेति, तमट्ठं
आराहेत्ता.... ।

ठाणं ६।६२

से जहानामए बज्जो ! मए समणाणं णिग्गंथाणं
नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए अच्छत्तए
अणुवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्टुसेज्जा
केसलोए बंभचेरवासे परधरपवेसे लद्धावलद्धवित्तीओ
पण्णत्ताओ ।

भगवती १।४३३

जस्सट्टाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं
अदंतवणयं अच्छत्तयं अणोवाहणयं भूमिसेज्जा
फलहसेज्जा कट्टुसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो
परधरपवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटगा
बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जति तमट्ठं
आराहेइ, आराहिता.... ।

नायाधम्मकहाओ १।१६।३२४

निरयावलियाओ ५।१

देवकिल्लिषक-उपपात

सूत्र १५५

भगवती ६।२४०

सूत्र १६१, १६२

सूत्र १६२

आवक-वर्णक

सूयगडो २।२।७१, ७२

रायपसेणइयं सूत्र ६६८

भगवती २।६४

अनगार-वर्णक

सूत्र १६३-१६६

सूयगडो २।२।६३, ६४, ६७

५४४

केवली-समुद्घात

पणवणा ३६।७६-६४

सूत्र १६६-१८४

गंधसमुद्गक विकिरण

भगवती ६।१७३

सूत्र १७०

ईषत्प्राग्भारापृथ्वी

पणवणा २।६४-६६

सूत्र १६२-१६४

ठाणं ८।१०६,११०

सूत्र १६२,१६३

समवायो १२।११

सिद्ध-वर्णक

पणवणा २।६७

सूत्र १६५

परिशिष्ट-३ सहस्रचो

प्रमाणविधि

- [• अव्यय, सर्वनाम, क्त्वा, तुम्, यप्, प्रत्यय के रूप और धातुरूप के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार दिया गया है ।
- रूट (√) अंकित शब्द धातुएं हैं । उनके रूप डंस (—) के बाद दिए गए हैं ।
- शब्द के बाद साक्ष्य-स्थल का अंक सूत्र का है, तथा दो अंक प्रतिपत्ति व सूत्र का है, तीसरा अंक सूत्र के अन्तर्गत गाथा का है ।
- यहां एक या दो संग्रहणी गाथाएं हैं वहां उसके प्रमाण उसी सूत्रांक में दे दिए गए हैं ।]

अ

अ [च] रा० ६७५

अद् [अयि] रा० ११,५९,६२

अद् [अति] रा० ७६७

अद्कंत [अतिकान्त] जी० ३।५९७

अद्कंत [अतिक्रान्त] ओ० १६८,१९५

√अद्कम [अति-+कम्] — अद्कमंति ओ० ९२

अद्कमीलावास [अतिक्रीडावास] जी० ३।७५६,

७५७

अद्गाढ [अतिगाढ] रा० ७७४

अद्दूर [अतिदूर] ओ० ४७,५२,८३. रा० ६८७

अद्बल [अतिबल] ओ० ७१. रा० ६१

अद्मट्टिय [अतिमृत्तिक] रा० ९

अद्मुक्तकलया [अतिमुक्तकलता] जी० ३।५८४

अद्मुत्तयलया [अतिमुक्तकलता] ओ० ११.

रा० १४५

अद्मुत्तयलयापविभक्ति [अतिमुक्तकलतापविभक्ति]

रा० १०१

अद्दुग्गय [अचिरोद्गत] रा० ४५

अद्दरेग [अतिरेक] ओ० २३. जी० ३।५९०,७२९,

७३१,७३२

अद्दिकिद्दु [अतिविकृष्ट] रा० ६८३

अद्दसेस [अतिशेष] ओ० ५२,६९,७०.

जी० ३।५९८

अद्दिव [अतीव] रा० १३२. जी० ३।५८०

अद्दणतीस [एकोनत्रिंशत्] जी० ३।२२६।५

अद्दणपण्ण [एकोनपञ्चाशत्] जी० ३।२२६।३

अद्दणणउत्ति [एकोनवत्ति] जी० ३।८२३

अद्दणपण्ण [एकोनपञ्चाशत्] ओ० १९२

अद्दणसीत्ति [एकोनाशीत्ति] जी० ३।५७०

अद्दत [अयुत] जी० ३।८४१

अउल [अतुल] ओ० १६५।१६. जी० ३।११६

अओकुंभी [अयस्कुम्भी] रा० ७५४,७५६

अओज्ज [अयोध्य] ओ० ५७

अओमय [अयोमय] रा० ७५४,७५६.

जी० ३।११६

अंक [अङ्क] ओ० ४८,५१. रा० १०,१२,१८,

२६,३८,६५,१३०,१६०,१६५,१७३,२२२,

२५६,२७६,८०४. जी० ३।७,२८२,२८५,

३००,३१२,३३३,३८१,४१७,५६६,८६४

अंक (मय) [अङ्कमय] जी० ३।७४७

अंकघाई [अङ्कघात्री] रा० ८०४

अंकमय [अङ्कमय] रा० १३०,२७०.

जी० ३।३००,३२२,४३५

अंकवाणिय [अङ्कवाणिज्] रा० ७३७

अंकहर [अङ्कधर] जी० ३।५६६

अंकाभय [अङ्कमय] रा० १३०,१४६,१६०,२५४.

जी० ३।२६४,३००,४१५

अंक्रिय [अङ्कित] ओ० १६. जी० ३।५६६,५६७

अंकुर [अङ्कुर] ओ० ५,८,१८४. रा० २७,

२२८. जी० ३।२७४,२८०,३८७,६७२

अंकुस [अङ्कुश] रा० ३६,४०. जी० ३।३१३,

३३८,५६७,६३४,८६२

अंकुसय [अङ्कुशक] ओ० ११७

अंकोल्ल [अङ्कोल] जी० १।७४

अंग [अङ्ग] ओ० १५,६३,१४३. रा० ८०६,

८१०. जी० ३।५६६

अंगण [अङ्गण] ओ० २८

अंगपविट्ट [अङ्गप्रविष्ट] रा० ७४२

अंगबाहिरक [अङ्गबाह्यक] रा० ७४२

अंगसंग [अङ्गसङ्ग] ओ० १४. रा० ७०,६७१.

जी० ३।५६८

अंगय [अङ्गक] ओ० ६३

अंगय [अङ्गद] ओ० ४७,७२,१०८,१३१.

रा० २८५. ३।४५१

अंगारक [अङ्गारक] ओ० ५०

अंगुल [अङ्गुल] ओ० १६,१७०,१६२,१६५।७.

रा० ५६,१८८,७६६. जी० १।१६,७४,८६,६४,

१०१,१०३,१११,११२,११६,११६,१२१,

१२३ से १२५,१३०,१३५; ३।८२,६१,२६०,

४३६,५६६,५६७,७८८,८३८।१७,६६६,

१०७४,१०८७,१०८६,११११; ५।२३,२६;

६।४०,५१,६७,१७१

अंगुलक [अङ्गुलक] जी० ३।२६०

अंगुलम [अङ्गुलक] जी० ३।१०७४

अंगुलय [अङ्गुलक] जी० ३।८२

अंगुलि [अङ्गुलि] रा० २६२. जी० ३।४५७

अंगुलिज्जग [अङ्गुलीयक] ओ० ६३

अंगुलितल [अङ्गुलितल] ओ० २,५५. रा० ३२,

२८१,२६३,२६५. जी० ३।३७२,४४७,४५८,

४६०,५५४

अंगुलिय [अङ्गुलिक] ओ० १७०

अंगुली [अङ्गुली] ओ० १६

अंगुलीय [अङ्गुलीक] ओ० ६३. जी० ३।५६६,

५६७

अंगुलेज्जग [अङ्गुलीयक] जी० ३।५६३

अंगुल [कृष्]—अंचेइ ओ० २१. रा० ८.

जी० ३।४५७

अंचितरिभित [अञ्चितरिभित] जी० ३।४४७

अंचित्ता [कृष्त्वा] रा० २६२

अंचिय [अञ्चित] रा० १०५,११६,२८१.

जी० ३।४४७

अंचियरिभिय [अञ्चितरिभित] रा० १०७,२८१

अंचेत्ता [कृष्त्वा] ओ० २१. रा० ८. जी० ३।४५५

अंजण [अञ्जन] ओ० ४७. रा० १०,१२,१८,२५,

६५,१६१,१६५,२५८,२७६. जी० ३।७,२७८,

३३४,४१६,४४५

अंजणकेसिया [अञ्जनकेशिका] जी० ३।२७६

अंजणकेसिया (अञ्जनकेशिका) रा० २६

अंजणग [अञ्जनक] ओ० १३. जी० ३।८८२,

८८३,६१०,६१३ से ६१६

अंजणगिरि [अञ्जनगिरि] ओ० ६३

अंजणपुलय [अञ्जनपुलक] रा० १०, १२, १८, ६५,
१६५, २७६. जी० ३१७

अंजणमय [अञ्जनमय] जी० ३१८

अंजणा [अञ्जना] जी० ३१४, ६८७

अंजलि [अञ्जलि] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६,
६२, ६६, ११७. रा० ८, १०, १२, १४, १८, ४६,
७२, ७४, ११८, २७६, २७६, २८२, २८२, ६५५,
६८, १, ६८३, ६८६, ७०७, ७०८, ७१३, ७१४,
७२३, ७६६. जी० ३१४४२, ४४५, ४४८, ४५७,
५५५

अंजलिपद्मह [अञ्जलिप्रग्रह] ओ० ६६, ७०.

रा० ७७८

अंजलिपद्मह [अञ्जलिप्रग्रह] ओ० ४०

अंजू [अञ्जू] जी० ३१६२०

अंङग [अण्डक] ओ० ३३

अंङय [अण्डज] जी० ३११४७, १४८, १६१

अंङुबद्धग [अनुबद्धक] ओ० ६०

अंत [अन्त] ओ० ७२, ७४, १५४, १६५, १६६,
१७७, १८१. रा० ३७, ७७१, ८१६. जी०
११३३; ३१५२, १२४, १२४, ३११, ६४२, ६५३,
७२३, ७५४, ७६२, ७६८ से ७७६

अंतकम्म [अन्तकर्मन्] रा० २८५. जी० ३१४५१

अंतगद्धसाधर [अन्तकृतदशाधर] ओ० ४५

अंतर [अन्तर] रा० १३२, २८१, ७५४ से ७५७,
७६३, ७६४. जी० १११४१, १४२; २१६३, ६६,
८६, ८८, ६२, १२५, १२६, १३३, १५०, १५१;
३१६० से ६३, ६५, ६६, ६८ से ७२, ११८, ११६,
२८८, ३०२, ४४७, ५७०, ५६८, ७१४, ८०२, ८१५,
८२७, ८३८, ८४७, ८५२, ८५२, १०२२, ११३६,
११३७; ४१६, १७; ५१७, २३, २४, ३०;
६११०; ७११३; ८१४; ९१४, १२, १३, १६, २५,
२६, ३३, ३४, ३६, ४६ से ५४, ५६, ६०, ६५, ७१,
७२, ८३, ८४, ८६, ८२, ९३, ९६, १०५ से १०७,
१११, ११७, ११६, १२६ से १२८, १३६, १३७,
१३६, १४६, १५२, १५३, १६५, १७६, १७७,

१७६, १८०, १६३ से १६५, २०४ से २०७,
२१६ से २१६, २२८ से २३०, २४१ से २४४,
२४६, २४६, २६२ से २६५, २७७ से २८५

अंतरणई [अन्तर्नदी] रा० २७६

अंतरणदी [अन्तर्नदी] जी० ३१४५५, ६३७

अंतरदीव [अन्तर्द्वीप] जी० २१६१

अंतरदीवक [अन्तर्द्वीपज, °क] जी० २१८६

अंतरदीवग [अन्तर्द्वीपज, °क] जी० ११५५, १०१,
११६, १२६; २१३४, ७०, ७२, ७७, ८५, ६६,
१०६, ११६, १२४, १३३, १३७, १३८, १४७,
१४६; ३१५५, २१५, २१६, २२७, ८३६

अंतरदीवय [अन्तर्द्वीपज, °क] जी० १११०१

अंतरदीविया [अन्तर्द्वीपिका] जी० २१११, १३, ६६,
७०, ७२, १४७, १४६

अंतरा [अन्तरा] ओ० ५५. रा० २०, ६८३, ७०६.
जी० ३१७२६

अंतराय [अन्तराय] ओ० ४४

अंतरित [अन्तरित] जी० ३१४३६

अंतरिय [अन्तरित] रा० ७६६. जी० ३१८३८, २१६

अंताहार [अन्त्याहार] ओ० ३५

अंतिय [अन्तिक] ओ० २१, ४७ से ५१, ५४, ६३,
७८, ८०, ८१, ११७, १२०, १२१, १५१. रा० १२,
१३, १५ से १७, ४७, ६२, २७७, ६६७, ६८१,
६८३, ६८५, ६९०, ६९४ से ६९६, ७००, ७०६,
७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८, ७२०, ७२६,
७७४, ७७५, ७६६, ८१२. जी० ३१४४३

अंतेजर [अन्तःपुर] ओ० २३, ७०, १६२.

रा० ६७४, ६६५, ६६८, ७५२, ७५७, ७७८,
७८७ से ७६१

अंतेजरिया [अन्तःपुरिकी] ओ० ६२

अंतेपुर [अन्तःपुर] जी० ३१२८५

अंतेवासि [अन्तेवासिन्] ओ० २३ से २५, २७, ८२,
११५. रा० ६७६

अंतो [अन्तर] ओ० ७०, ६२ रा० २४, ३३, ६६,
१३०, १३७. १८७, २५४, ७५४, ७५५, ७५७,

७७२. जी० १।१२७; ३।७७, १११, ११८, २१४,
२७७, २९८, ३००, ३०७, ३०९, ३३६, ३५२,
३५९, ३६०, ३६४, ३६८, ३६९, ३६९, ४१५,
६४८, ६७३, ७५५, ७५७, ८३८। १५, ८३९, ८४०,
८४२, ९०५
- अंतीमुहुत्त** [अन्तर्मुहूर्त] जी० १।५२, ५९, ६५, ७४,
७९, ८२, ८७, ८८, १०१, १०३, १११, ११९, १२१,
१२३ से १२५, १२७, १२८, १३३, १३७ से
१४०, १४२; २।२० से २२, २४ से ३४, ४९,
५०, ५३ से ६१, ६३, ६५ से ६७, ७९, ८२ से
८४, ८७, ८८, ९०, ९१, १०७, १०९ से १११,
११३, ११४, ११६, ११९ से १३३; ३।१५६,
१६१, १६२, १६५, १६६ से १६९, २१४, ११३२,
११३४ से ११३७; ४।३ से ११, १६, १७; ५।५,
७, १० से १६, २१ से २४, २८ से ३०; ६।३,
८ से ११; ७।१३, १४; ९।२३ से २६, ३१, ३३,
३४, ३६, ४१, ४७, ५२, ५७ से ६०, ६८ से ७३,
७७, ७८, ८०, ८३, ८५, ८९, ९०, ९२, ९३, ९६, ९७,
१०२, १०३, १०५, ११४, ११५, ११७, ११८,
१२३, १२५, १२६, १२८, १३२, १३६, १४४,
१४९, १५०, १५२, १५३, १६०, १६४, १६५,
१७२, १७३, १७६ से १७८, १८६ से १९१,
१९३, १९४, १९८, २०२, २०४, २०७, २११,
२१६ से २१८, २२२, २२३, २२५, २२८, २२९,
२४१, २४२, २५७ से २६०, २६२, २६४, २७७,
२७८
- अंतीमुहुत्तिय** [अन्तर्मुहूर्तिय] ओ० १७३, १८२
- अंतीसल्लभयग** [अन्तर्शल्लयमृतक] ओ० ९०
- अंदोलग** [अन्दोलक] रा० १८०. जी० ३।२९२
- अंदोलय** [अन्दोलक] रा० १८१
- अंधकार** [अन्धकार] ओ० ४६
- अंधयार** [अन्धकार] ओ० ५, ८, ५७. जी० ३।२७४
- अंधिया** [अन्धिका] जी० १।८९
- अंब** [आम्न] जी० १।७१
- अंबड** [अम्बड] ओ० ९६
- अंबपल्लवपविभक्ति** [आम्नपल्लवप्रविभक्ति] रा० १००
- अंबरतल** [अम्बरतल] ओ० ५२. रा० ६८८
- अंबसातलवण** [आम्नशालवण] रा० २, ८ से १०,
१२, १३, १५, ५६
- अंबिल** [अम्बल] जी० १।५; ३।२२
- अंबिलोदय** [अम्बलोदक] जी० १।६५
- अंबुभक्ति** [अम्बुभक्ति] ओ० ९४
- अंबुय** [अंबुक] जी० ३।५९५
- अकंठय** [अकण्ठक] ओ० ६, १४. रा० ६७१.
जी० ३।२७५
- अकंडुयय** [अकण्डुयक] ओ० ३६
- अकंत** [अकान्त] रा० ७६७. जी० १।९५; ३।९२
- अकंततरक** [अकान्ततरक] जी० ३।८४
- अककस** [अकर्कस] ओ० ४०
- अकडुय** [अकडुक] ओ० ४०
- अकण** [अकर्ण] जी० ३।२१६
- अकम्मभूमक** [अकर्मभूमक] जी० २।१३३
- अकम्मभूमग** [अकर्मभूमक] जी० १।५१, ५५,
१०१, ११९, १२९; २।३०, ३२ से ३४, ७७, ८५,
९६, १०६, ११६, १२४, १३७, १४७, १४९;
३।१५५, २१५, २२८, ८३६
- अकम्मभूमि** [अकर्मभूमि] जी० २।१३७
- अकम्मभूमिक** [अकर्मभूमिज, °क] जी० २।५७, ५८,
८५
- अकम्मभूमिग** [अकर्मभूमिज, °क] जी० २।५९ से
६१, ६६, ७०, ७२, १३८, १४७, १४९
- अकम्मभूमिय** [अकर्मभूमिज] जी० १।१०१
- अकम्मभूमिया** [अकर्मभूमिजा] जी० २।११, १३,
७०, ७२, १४७, १४९
- अकयत्थ** [अकृतार्थ] रा० ७७४
- अकयलक्षण** [अकृतलक्षण] रा० ७७४
- अकरंडुय** [अकरण्डक] ओ० १९. जी० ३।५९६,
५९७
- अकरण** [अकरण] ओ० ७८ से ८१
- अकरणिज्ज** [अकरणीय] ओ० ११७. रा० ७९६
- अकसाइ** [अकपायिन्] जी० १।१३१; ९।२८,
१४८, १५१, १५४, १५५

अकाइय [अकायिक] जी० ६।१८ से २०, १८२,
१८४
अकामकुहा [अकामक्षुध्] ओ० ८६
अकामणिज्जरा [अकामनिर्जरा] ओ० ७३
अकामतण्हा [अकामतृष्णा] ओ० ८६
अकामबंभचेरवास [अकामब्रह्मचर्यवास] ओ० ८६
अकाल [अकाल] रा० १३, १५ से १७
अकिचण [अकिञ्चन] ओ० २७. रा० ८१३
अकित्तिकारण [अकीतिकारक] ओ० १५४
अकिया [अकृत्वा] ओ० १७२
अकिरिय [अक्रिय] ओ० ४०
अकुडिल [अकुटिल] ओ० ४६
अकुणत्तर [एकोनसप्तति] जी० ३।८२७
अकुव्माण [अकुवंत्] रा० ७६२
अकुसल [अकुशल] रा० ७५८, ७५६
अकुसलमण [अकुशलमनस्] ओ० ३७
अकुसलवय [अकुशलवचस्] ओ० ३७
अकोसायंत [अकोशायमान, विकसत्] ओ० १६
अक्किट्ट [अक्लिष्ट] जी० ३।६३०
अक्कोह [अक्रोध] ओ० १६८
अक्ख [अक्ष] ओ० १२२
अक्खय [अक्षय] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २००,
२६२. जी० ३।५६, २७२, ३५०, ४५७, ७६०
अक्खर [अक्षर] ओ० ७१, १८२. रा० ६१, २७०.
जी० ३।४३५
अक्खाइगपेच्छा [आख्यायकप्रेक्षा] जी० ३।६१६
अक्खाडण [अक्षवाटक] रा० ३५, ६६, २१८, ३००.
जी० ३।३७७, ४६५, ८६१
अक्खाडय [अक्षवाटक] रा० ३६, २१७, ३००,
३२१, ३३८. जी० ३।४६५, ४८६, ५०३, ८६०
अक्खात [आख्यात] जी० ३।२३२
अक्खामित्ता [अक्षमयित्वा] रा० ७७६
अक्खाय [आख्यात] रा० १२४, १२६, १६३, १६६.
जी० १।१; ३।७७, १६१, १७४, २५७, ३३५,
३५४, ३५५, ३५७, ६५८, ७२८, ७३३, १०३८

अक्खीण [अक्षीण] रा० ७५१
अक्खीणमहाणसिय [अक्षीणमहानसिक] ओ० २४
अक्खुभियजल [अक्षुभितजल] जी० ३।७८३, ७८४
अक्खेवणी [आक्षेपणी] ओ० ४५
अक्खंड [अखण्ड] ओ० १६. जी० ३।५६६
अक्खुभियजल [अक्षुभितजल] जी० ३।७८३
अगड [अवट] ओ० १, ६६
अगडमह [अवटमह] रा० ६६८
अगणि [अग्नि] रा० ७५७. जी० ३।७७
अगणिकाय [अग्निकाय] रा० ७६७.
जी० ३।८४१
अगत्थिगुम्म [अगस्तिगुल्म] जी० ३।५८०
अगरला [अगरला, अगरल्लि] ओ० ७१. रा० ६१
अगरुलघुयत्त [अगरुलघुकत्व] रा० ७६३
अगलुय [अगरुक] ओ० ११०, १३३
अगामिया [अग्रामिका] ओ० ११६, ११७.
रा० ७६५, ७७४
अगार [अगार] ओ० १५, २३, ५२, ७६, ७८, १२०,
१५१. रा० ७०, १३३, ६७२, ६८७, ६८६,
६६५, ८०६, ८१०, ८१२
अगारधम्म [अगारधर्म] ओ० ७५, ७७
अगारसामाइय [अगारसामायिक] ओ० ७७
अगिला [दे० अग्लानि] ओ० ७१. रा० ७२०
अगुरु [अगुरु] रा० ३०
अगेज्ज [अग्राह्य] ओ० ५ जी० ३।२७४
अग [अग्र] ओ० २३, ६६. रा० ६६, ७०, १३३,
२६१, ३५१, ५६४. जी० ३।३०३, ४५७, ५१६,
५४७, ५८०, ५६७, ६७४
अगमहिंसी [अग्रमहिषी] रा० ७, ४२, ४७, ५६, ५८,
२८०, ६५६. जी० ३।३४०, ३५०, ३५६,
४४६, ४४८, ५५७, ५५६, ५६३, ६१६ से ६२२,
१०२३, १०२६
अगमय [अग्रक] जी० ३।५६१
अगलपासाय [अर्गलाप्रासाद] रा० १३०.
जी० ३।३००

अगला [अर्गला] रा० १३०. जी० ३१३००
 अगसिहर [अग्रशिखर] ओ० ५, ८. रा० ३२.
 जी० ३१७४, ३७२
 अगसो [अग्रमास] जी० ११५८, ७३, ७८, ८१
 अगहृत्थ [अग्रहस्त] ओ० ४७. रा० १२, ७१४,
 ७५८ से ७६१. जी० ३११८
 अग्नि [अग्नि] ओ० ४८, १८४. रा० ७६१.
 जी० ३१६०१, ८६६
 अग्नेज्ज [अग्नेज्ज] ओ० ८
 अगोदय [अग्रोदक] जी० ३१७३३
 अचंड [अचण्ड] जी० ३१५६८
 अचक्षुर्दंसणि [अचक्षुर्दर्शनिन्] जी० ११२६, ८६,
 ९०; ६११३१, १३३, १३७, १४०
 अचरिम [अचरम] रा० ६२. जी० ६१६३, ६५, ६६
 अचवत्त [अचपल] रा० १२
 अचित्त [अचित्त] ओ० २८, ४६, ६६, ७०. रा० ७७८
 अचिर [अचिर] जी० ३१५६०
 अचोक्ख [दे० अचोक्ष] रा० ६, १२. जी० ३१६२२
 √अच्च [अच्]—अच्चेइ ओ० २. रा० २६१.
 जी० ३१५१६—अच्चेति जी० ३१४५७
 अच्चंत [अत्यन्त] ओ० १४. रा० ६७१
 अच्चनिज्ज [अर्चनीय] ओ० २. रा० २४०, २७६.
 जी० ३१४०२, ४४२, १०२५
 अच्चणिग्या [अर्चनिका] रा० ६५४, ६५५.
 जी० ३१४६३, ४६६, ५१७, ५५४, ५५५
 अच्चा [अर्चा] ओ० ७२
 अच्चासण्ण [अत्यासन्न] ओ० ४७, ५२, ८३.
 रा० ६०, ६८७, ६६२, ७१६
 अच्चि [अचिस्] ओ० ४७, ७२. रा० १७, १८, २०,
 ३२, १२६. जी० ११७८; ३१८५, १७५, २८८,
 ३००, ३७२
 अच्चिकंत [अचिःकान्त] जी० ३१७५
 अच्चिकूड [अचिःकूट] जी० ३१७५
 अच्चिज्जय [अचिध्वंज] जी० ३१७५
 अच्चिप्पभ [अचिःप्रभ] जी० ३१७५

अच्चिमालि [अचिर्मालिन्] रा० १२४
 अच्चिमाली [अचिर्मालिनी] जी० ३१६२०, १०२३,
 १०२६
 अच्चियावत्त [अचिरावत्तं] जी० ३१७५
 अच्चिलेस्स [अचिलेइय] जी० ३१७५
 अच्चिवण्ण [अचिर्वण] जी० ३१७५
 अच्चिसिग [अचिः शृङ्ग] जी० ३१७५
 अच्चिसिट्ठ [अचिः शिष्ट] जी० ३१७५
 अच्चुत्त [अच्युत] जी० ३११०३८, ११२२
 अच्चुत्तरवाडिसग [अचिरुत्तरावत्तंसक] जी० ३१७५
 अच्चुय [अच्युत] ओ० १५८, १५६, १६२, १६०,
 १६२. जी० २१६६; ३१०५४, १०५५, १०६२,
 १०६६, १०७४, १०८८, १०९१, ११११, १११२,
 १११५, १११६
 अच्चुयवइ [अच्युतपति] ओ० ५१
 अच्चेत्ता [अचित्ता] रा० २६१. जी० ३१४५७
 अच्चोवग [अत्युदक] रा० ६, १२. जी० ३१४४७
 अच्चोयग [अत्युदक] रा० २८१
 अच्छ [अच्छ] ओ० १२, १६४. रा० २१ से २३.
 ३२, ३४, ३६, ३८, १२४ से १२८, १३१, १३२,
 १३४, १३७, १४१, १४५ से १४८, १५० से
 १५३, १५५ से १५७, १६०, १६१, १७४, १८०
 से १८५, १८८, १६२, १६७, २०६, २११, २१८,
 २२१, २२२, २२४, २२६, २३०, २३३, २३८,
 २४२, २४४, २४६, २५३, २५६, २६१, २७३,
 २६१. जी० ३१११८, ११६, २६१ से २६३,
 २६६, २६८, २६९, २८६, २८६ से २६७, ३०१,
 ३०२, ३०४, ३०७, ३०८, ३१२, ३१८, ३१९,
 ३२३ से ३२६, ३२८ से ३३०, ३३२, ३३४,
 ३३७, ३४७, ३४८, ३५२, ३५३, ३५५, ३६१,
 ३६५, ३७२, ३७७, ३८०, ३८१, ३८३, ३८५,
 ३८२, ३८५, ३८६, ४००, ४०४, ४०६, ४०८,
 ४१०, ४१३, ४१४, ४१८, ४२२, ४२५, ४२७,
 ४३७, ४५७, ६३२, ६३६, ६४४, ६४६, ६४६,
 ६५५, ६६१, ६६८, ६७१, ६७५, ६८६, ७२४,
 ७२७, ७३६, ७५०, ७५८, ८३६, ८४२, ८५४,

८५७, ८६३, ८८१, ८८२, ८९१, ८९३ से ८९५,
 ८९७, ८९९, ९०१, ९०४, ९०६, ९०७, ९१०,
 ९११, ९१८, ९५७, १०३८, १०३९, १०८१
 √अच्छ [आस्]—अच्छेज्ज ओ० १९५।१८
 अच्छ [कृष्ण] जी० ३।६२०
 अच्छणाघरग [आसनगृहक] रा० १।८२, १।८३.
 जी० ३।२९४
 अच्छण्ण [आच्छन्न] जी० ३।५८१
 अच्छत्तग [अच्छक] ओ० १।५४, १।६५, १।६६.
 रा० ८।१६
 अच्छरस [अच्छरस] रा० १।९२. जी० ३।४५७
 अच्छरा [दे०] ओ० १।७०. जी० ३।८६
 अच्छरा [अप्सरस्] रा० ३।२, २०।९, २।११.
 जी० ३।३७२, ५।९७, ६।११, १।१२२
 अच्छि [अक्षि] ओ० १।९. रा० २।५४.
 जी० ३।१२।१।८, ३०।३, ४।१५, ५।९६
 अच्छिज्जांत [आच्छिद्यमान] रा० ७७
 अच्छिद्द [अच्छिद्र] ओ० ५, ८, १।९, २।६.
 जी० ३।२७४, ५।९६, ५।९७
 अच्छिपत्त [अक्षिपत्र] रा० २।५४. जी० ३।४।१५
 अच्छिवेदणा [अक्षिवेदना] जी० ३।६२८
 अच्छेत्ता [अच्छित्वा] जी० ३।९९०
 अच्छेयकर [अच्छेदकर] ओ० ४०
 अच्छेरग [आश्चर्य] जी० ३।५।९७
 अज [अज] जी० ३।६।१८
 अजरा [अजरा] ओ० १।९५।१८
 अजहण्ण [अजघन्य] जी० ३।५।९७
 अजहण्णमणुक्कोस [अजघन्योत्कर्ष] जी० ९।४८,
 ५०
 अजिण [अजिन] ओ० २।६
 अजित [अजित] जी० ३।४।४८
 अजिय [अजित] ओ० ६८. रा० २।८२.
 जी० ३।४।४८
 अजीरग [अजीरक] जी० ३।६२८
 अजीव [अजीव] ओ० ७।१, १।२०, १।३७, १।३८, १।६२.
 रा० ६।९८, ७।५२, ७।८९

अजीवाभिगम [अजीवाभिगम] जी० १।२ से ५
 अजीगत्त [अयोगत्व] ओ० १।८२
 अजीगि [अयोगिन्] जी० १।१।३३; ९।२।१, ४।६,
 ४।७, ५।३, १।१३, १।१६, १।२०
 अज्ज [अज] रा० ६।८८, ६।८९
 अज्ज [आर्य] ओ० १।४६
 अज्जग [आर्यक] रा० ७।५०, ७।५१, ७।७३
 अज्जय [आर्यक] रा० ७।५०, ७।५१
 अज्जव [आर्यव] ओ० २।५, ४।३. रा० ६।८६, ८।१४
 अज्जा [आर्या] रा० ८०।६
 अज्जिया [आर्यिका] ओ० १।९. रा० ७।५२, ७।५३
 अज्जुण [अर्जुन] ओ० ९, १०. जी० ३।५।८३
 अज्जुणसुवण्णगमसय [अर्जुनसुवर्णकमसय] ओ० १।९४
 अज्जात्थिय [आध्यात्मिक] रा० ९, २।७५, २।७६,
 ६।८८, ७।३२, ७।३७, ७।३८, ७।४६, ७।६८, ७।७७,
 ७।९१, ७।९३. जी० ३।४।४१, ४।४२
 अज्जसयण [अध्ययन] जी० १।१
 अज्जवसाण [अध्यवसान] ओ० १।१।९, १।५६.
 जी० ३।१।२।९।६
 अज्जोयरय [अध्यवतरक] ओ० १।३४
 √अज्जोववज्ज [अवि+उप+पद्]
 —अज्जोववज्जिहिति ओ० १।५०. रा० ८।११
 अज्जोववण्ण [अध्युपपन्न] रा० ७।५।३
 अट्ट [आर्त] ओ० ७।४
 अट्ट [ज्ञाण] [आर्तध्यान] ओ० ४।३
 अट्टज्जाण [आर्तध्यान] रा० ७।६५
 अट्टणसाला [अट्टनशाला] ओ० ६।३
 अट्टालग [अट्टालक] जी० ३।५।९४, ६०।४
 अट्टालय [अट्टालक] ओ० १. रा० ६।५४, ६।५५.
 जी० ३।५।५४
 अट्टियचित्त [आर्तितचित्त] ओ० ७।४।५
 अट्ट [अर्थ] ओ० २०, २।१, ५।२, ५।४, ५।७, ५।९, ६।१,
 ६।३, ८।९ से ९।५, १।११ से १।१४, १।१७ से १।२०,
 १।५४, १।५५, १।५७ से १।६०, १।६२, १।६५ से
 १।६७, १।६९, १।७०, १।७२, १।७७, १।८३, १।८४,
 १।८९ से १।९१. रा० १।३, १।६, २।५ से ३।१, ४।५,

४७, ६४, १२३, १७३, १९७, १९९, २७७, ६८३,
 ६८७, ६९०, ६९८, ७०१, ७१३, ७१४, ७१६,
 ७१९, ७२६, ७५१ से ७५३, ७५५, ७५७, ७५९,
 ७६१, ७६३, ७६५, ७७१, ७७४, ७७६ से ७७८,
 ७८६, ७८९, ७९२, ८१६. जी० ३।५८, ८४, ८५,
 १९८ से २०३, २३९, २४७, २५६, २६९, २७१,
 २७८ से २८५, ३५०, ४४३, ५७७, ५९९, ६०१,
 ६०२, ६०५ से ६०७, ६०९, ६१०, ६१२ से
 ६१७, ६२२ से ६२४, ६२६, ६२८, ६३७, ६५९,
 ६७४, ७००, ७०९, ७२१, ७३१, ७३८, ७४१,
 ७४३, ७४६, ७५०, ७६०, ७६३, ७६५, ७६८,
 ७७०, ७७६, ७८२, ७८६, ७८७, ८०८, ८१९,
 ८२९, ८३३, ८३६, ८४०, ८५४, ८५७, ८६०,
 ८६३, ८६६, ८६९, ८७२, ८७५, ८७९, ८८०, ८८२, ८८३,
 ८८५, ८८७, ८८९, १०२४, १०२५, १०४२,
 १०४४, १०४६, १०४९, १०५१ से १०५३
 अट्ट [अष्टन्] ओ० १२. रा० ८. जी १।३९
 अट्टअट्टमिया [अष्टाष्टकिका] ओ० २४
 अट्टतीस [अष्टात्रिंशत्] जी० ३।७०
 अट्टपिट्टिणिट्टिता [अष्टपिष्टनिष्ठिता] जी० ३।८६०
 अट्टभाइया [अष्टभायिका] रा० ७७२
 अट्टभाग [अष्टभाग] जी० २।३९, ४४
 अट्टम [अष्टम] ओ० १७४, १७६
 अट्टमभक्त [अष्टमभक्त] ओ० ३२. जी० ३।५९९
 अट्टमी [अष्टमी] ओ० १२०, १६२. रा० ६९८,
 ७५२, ७८९. जी० ३।७२३, ७२९
 अट्टया [अर्थ] ओ० २०, १३७, १३८
 अट्टविह [अष्टविध] जी० १।५, १०; २।१७;
 ३।९१७; ८।१, २३; ९।१९७, २०९, २२०
 अट्टशिर [अष्टशिरस्] ओ० १३
 अट्टार [अष्टादशन्] ओ० १९२
 अट्टारस [अष्टादशन्] ओ० १४८. जी० २।४८
 अट्टारसविह [अष्टादशविध] रा० ८०९, ८१०
 अट्टावण [अष्टपञ्चाशत्] जी० ३।६६१
 १. ईति रहित ।

अट्टावय [अष्टापद] ओ० १४६. रा० ८०६.
 जी० ३।५९७
 अट्टावीस [अष्टाविंशति] ओ० १७०. रा० १८८.
 जी० ३।५
 अट्टावीसद्विविह [अष्टाविंशतिविध] जी० २।१२
 अट्टावीसतिविध [अष्टाविंशतिविध] जी० २।२१६
 अट्टावीसतिविह [अष्टाविंशतिविध] ओ० ५०
 अट्टासीत [अष्टासीति] जी० ३।८३७
 अट्टि [अस्थि] ओ० १२०. रा० ६९८, ७५२,
 ७८९. जी० १।९५, १३५; ३।९२, १०९०
 अट्टिबुद्ध [अस्थियुद्ध] रा० ८०६
 अट्टिसुह [अस्थिसुख] ओ० ६३
 अट्ट [अटट] जी० ३।८४१
 अट्टतालीस [अष्टचत्वारिंशत्] जी० ३।८२७
 अट्टयाल [अष्टचत्वारिंशत्] रा० १२६.
 जी० ३।३५१
 अट्टयालीस [अष्टचत्वारिंशत्] रा० २३५.
 जी० ३।६८
 अट्टयालीसग्रंसिय [अष्टचत्वारिंशदस्रिक] रा० २३९
 अट्टयालीसद्विकोडीय [अष्टचत्वारिंशत्कोटीक]
 रा० २३९
 अट्टयालीसद्विभहिय [अष्टचत्वारिंशद्विग्रहिक]
 रा० २३९
 अट्टवी [अटवी] ओ० ११६, ११७. रा० ७४४, ७६५
 अट्टहत्तर [अष्टसप्तति] जी० ३।७७
 अट्ट [आढ्य] ओ० १४, १४१. रा० ६७१, ६७५,
 ७९९. जी० ३।५९४
 अट्ट [अर्घ] जी० ३।६६२
 अट्टुवावट्टि [अर्घद्विषटि] जी० ३।६६३
 अट्टाद्वज्ज [अर्धतृतीय] रा० १२९. जी० ३।९१,
 २३७, २३८, २४३, ३५५, ६३२, ६४७, ६४९,
 ६७३, ६७४, ९७३, १०५३, १०५५; ५।२९
 अणइककमणिज्ज [अनतिक्रमणीय] ओ० १२०,
 १६२. रा० ६९८, ७५२, ७८९
 अणइककमणिज्जवयण [अनतिक्रमणीयवचन]
 ओ० ९१
 अणईह [अनीति^१] ओ० ५, ८. जी० ३।२७४

अर्णत [अनन्त] ओ० १६, २१, ५४, १५३, १६५,
१६६, १७२, १८२, १९५। न. रा० ८, २६२, ८१४,
जी० १।६, ६७, ७३, ७४, १३६; २।६३, ६५, ८८,
१३२; ३।४५७; ५।६, २४, २६, ४१ से ५१, ५६
से ५८; ८।४; ९।२३, २६, ३३, ६६, ७१, ७३, ७८,
१६४, १६५, १७८, २०२, २०४, २५८

अर्णतक [अनन्तक] जी० ३।४५१

अर्णतखुत्तो [अनन्तकृत्वस्] जी० ३।१२७, ६७५,
११२८ से ११३०

अर्णतग [अनन्तक] ओ० १०८, १३१. रा० २८५

अर्णतगुण [अनन्तगुण] ओ० १६५।१४.

जी० १।३५, ३७, ४०, १४३; २।१३४, १३६,
१३८, १४१, १४२, १४५, १४६, १४६;
३।११३८; ४।१६ से २१, २५; ५।१८, २०, २५,
२७, ३१, ३३, ३६, ५२, ६०; ६।१२; ७।२१ से
२३; ८।५; ९।५ से ७, १४, १७, २०, २७ से
२६, ३५, ६१, ६२, ६६, ७४, ८७, ९४, १००, १०८,
११२, १२०, १३०, १४०, १४७, १५५, १५८,
१६६, १६६, १८१, १८४, १९६, २०८, २२०,
२३१, २५१, २५३, २५५, २६६, २८७, २८८,
२९२, २९३

अर्णतपण्डित्य [अनन्तप्रदेशिक] जी० १।३३

अर्णतर [अनन्तर] ओ० ६४, १४१, १८२, १९२.

रा० ५० से ५५, ७०, २६२, ७७३, ७९६.

जी० १।४३, ६१, ११६; ३।१२१, १५६, ६६८,
८३८।२५, ८८२, ११२७

अर्णतरसिद्ध [अनन्तरसिद्ध] जी० १।७, ८

अर्णतवर्ग [अनन्तवर्ग] ओ० १६५।१५

अर्णतवृत्तियानुपेहा [अनन्तवृत्तित्ता(का)नुपेक्षा]
ओ० ४३

अर्णतसंसारिय [अनन्तसंसारिक] रा० ६२

अर्णगार [अनगार] ओ० २७, ४५, ८२, १५२,

१६४, १६६. रा० ६८६, ७११, ८१३.

जी० ३।१६८ से २०६

अर्णगारधम्म [अनगारधर्म] ओ० ७५, ७६

अर्णगारसामाह्वय [अनगारसामायिक] ओ० ७६

अर्णगारिया [अनगारिता] ओ० २३, ५२, ७६, ७८,

१२०, १५१. रा० ६८७, ६८६, ६९५, ८१२

अर्णच्चासायणा [अनत्याशातना] ओ० ४०

अर्णच्चासायणाविणय [अनत्याशातनाविनय]
ओ० ४०

अर्णट्ट [अनर्थ] ओ० १२०, १६०. रा० ६६८,
७५२, ७८६

अर्णट्टादंड [अनर्थदण्ड] ओ० १३६

अर्णट्टयकर [अनास्नवकर] ओ० ४०

अर्णत्थदंड [अनर्थदण्ड] ओ० १०४, १२७

अर्णत्थदंडवेरमण [अनर्थदण्डविरमण] ओ० ७७

अर्णवकंक्षमाण [अनवकांक्षत्] ओ० ११७

अर्णवज्ज [अनवद्य] ओ० १३७, १३८

अर्णवट्टुप्पारिह [अनवस्थाप्यार्ह] ओ० ३६

अर्णवट्टित [अनवस्थित] जी० ३।८३।१०

अर्णवट्टिय [अनवस्थित] जी० ३।८३।३२, ८४१

अर्णवणिय [अनपन्निक] ओ० ४६

अर्णवयग [अनवदग्ग] ओ० ४६

अर्णवरय [अनवरत] ओ० ६८

अर्णसण [अनशन] ओ० ३१, ३२, ११७, १४०, १५४,
१५७, १६२, १६५, १६६. रा० ८१६

अर्णह [अनघ] ओ० ६८

अर्णाइ [अनादि] ओ० ४६

अर्णाइय [अनादिक] जी० ९।११, १३, १६, ६५,
६६, ८६, १६४, १७६

अर्णाउत्त [अनायुक्त] ओ० ४०

अर्णागय [अनागत] ओ० १८३, १८४, १९५

अर्णागार [अनाकार] ओ० १६५।११.

जी० १।३२, ८७; ३।१०६, १५४, १११०;
९।३६, ३७

अर्णाढायमाण [अनाद्रियमाण] रा० ७६०, ७६१

अर्णादित [अनादृत] जी० ३।७००

अर्णादिय [अनादृत] जी० ३।६८०, ७००, ७०१,
७६५

अर्णाडिया [अनादृता] जी० ३।७००, ७०१

अणानुपूर्वो [अनानुपूर्वी] जी० ११४८
 अणादिय [अनादिक] जी० ६१२५, १३३
 अणादीय [अनादिक] जी० ६१२३, ३१, ३४, ६४,
 ७२, ८१, ११०, १७४, २०२, २०६
 अणारंभ [अनारम्भ] ओ० १६३
 अणारिय [अनार्य] ओ० ७१. जी० ३१६२८
 अणालोड्य [अनालोचित] ओ० ६५, ११५, १५६
 अणाहारग [अनाहारक] जी० ६१३८, ५१ से ५५
 अणाहारय [अनाहारक] जी० ६१४२ से ४८
 अणिव [अनिन्द्र] जी० ३१११२०
 अणिविय [अनिन्द्रिय] जी० ६११५ से १७, १६७,
 १६६, २५६, २६१, २६५, २६६
 अणिविस्त [अनिक्षिप्त] ओ० ११६
 अणिगण [अनग्न] जी० ३१५६५
 अणिच्च [अनित्त्व] ओ० ७४
 अणिच्चाणुपेहा [अनित्यानुपेक्षा] ओ० ४३
 अणिज्जिण [अनिर्जीर्ण] रा० ७५१
 अणिट्ट [अनिष्ट] रा० ७६७. जी० ११६५;
 ३१६२, ६७, १२२, १२३, १२८, १२६
 अणिट्टतरक [अनिष्टतरक] जी० ३१८४, ८५
 अणिट्टतरय [अनिष्टतरक] जी० ३१११८, ११६
 अणिट्टुर [अनिष्टुर] ओ० ४०
 अणिट्टुह्य [अनिष्ठीवक] ओ० ३६
 अणित्थंत्थ [अनित्थंस्थ] ओ० १६५१८,
 जी० ११६७, ७४
 अणिय [अनीक] रा० ७, ४७, ५६, ५८, २८०.
 जी० ३१३५०, ४४६, ५५७, ५६३
 अणियट्टि [अनिवृत्ति] ओ० ४३
 अणियाण [अनिदान] ओ० २५, १६४
 अणियाहिवइ [अनीकाधिपति] रा० ७, ५६, ५८,
 २८०. जी० ३१३५०, ४४६, ५५७, ५६३
 अणियाहिवति [अनीकाधिपति] रा० ४३.
 जी० ३१३४४, ५६१
 अणिल [अनिल] ओ० २७. रा० ८१३
 अणिसिद्ध [अनिसृष्ट] ओ० १३४

अणिह्वित्तिय [अनिभूतेन्द्रिय] ओ० ४६
 अणीय [अनीक] रा० ५६
 अणीयाहिवइ [अनीकाधिपति] रा० ५३
 अणु [अणु] जी० ११४४; ३१६६८, ६६६
 अणुगंतव्व [अणुगंतव्य] जी० ३१५, १२, ३५५,
 ७७५
 √अणुगच्छ [अणु + गम्]—अणुगच्छइ ओ० २१,
 रा० ८—अणुगच्छति जी० ३१४५५
 अणुगच्छिता [अणुगम्य] ओ० २१. रा० ८
 अणुगघसित [अणुगघसित] रा० १४६
 √अणुचर [अणु + चर्]—अणुचरंति
 जी० ३१८३८, ११
 अणुचरंत [अणुचरत्] जी० ३१८३८, १०
 अणुचरिय [अणुचरित] ओ० १
 अणुच्चिण्ण [अणुचीर्ण] जी० १११
 √अणुजाण [अणु + ज्ञा]—अणुजाणउ रा० ६८.
 —अणुजाणंति रा० ७१३.—अणुजाणोज्जाह
 रा० ७०६
 अणुताव [अणुताप] जी० ३११२८
 अणुत्त [अणुत्व] जी० ३१६६६
 अणुत्तर [अणुत्तर] ओ० ७२, ७६ से ८१, १५३,
 १६५, १६६. रा० ८१४. जी० ३११२, ७७,
 ११७, १०३८, १०५६, १०८४, १०८६, १०८२,
 ११०४, ११०६ से ११११, १११३, १११८,
 ११२०, ११२३, ११२५
 अणुत्तरविमाण [अणुत्तरविमान] ओ० १६०.
 जी० ३११०६६, १०७०, १०७२, १०७४, १०७७
 से १०८२, १०८६, ११३०
 अणुत्तरोववाइय [अणुत्तरोपपातिक] जी० १११२३;
 ३११०६४, १०६७
 अणुत्तरोववाइयदसाधर [अणुत्तरोपपातिकदसाधर]
 ओ० ४५
 अणुत्तरोववात्तिय [अणुत्तरोपपातिक] जी० २१६३,
 ६६, १४८, १४६; ३११०७६, १०६०, १०६६,
 १०६८, १०६६, ११०६, ११०८, १११४, १११६,
 १११८, ११२५

अणुद्वयणकर [अनुद्वयणकर] ओ० ४०
 अणुपत्त [अनुप्राप्त] ओ० ११६, ११७. रा० ८०६,
 ८१०
 अणुपदाहिण [अनुप्रदक्षिण] जी० ३।४४३
 अणुपदाहिणीकरेमाण [अनुप्रदक्षिणीकुर्वन्]
 रा० ४७, ४८, २७७, २८३, २८६, ३१३, ३७६,
 ४३५, ४६६, ५५६, ६१६
 अणुपरियट्टिता [अनुपरिवर्त्य] ओ० १७०
 अणुपरियट्टिताणं [अनुपरिवर्त्य] जी० ३।८६
 √अणुपरियट्ट [अनु+परि+वृत्]—अणुपरिय-
 ङ्ङति जी० ३।८४२
 अणुपविट्ट [अनुप्रविष्ट] रा० ७५६, ७५७, ७६५,
 ७७४
 √अणुपविस [अनु+प्र+विश]—अणुपविसइ
 ओ० ५६. रा० २७७.—अणुपविसति
 रा० २८३. जी० ३।४४३
 अणुपविसमाण [अनुप्रविशत्] रा० ७५३, ७६५
 अणुपविसिता [अनुप्रविश्य] ओ० ५६.
 रा० २७७. जी० ३।४४३
 √अणुपाल [अनु+पाल]—अणुपालेति ३।२१८
 अणुपालेस्ता [अनुपाल्य] ओ० १६२. जी० ३।६३०
 अणुपालेमाण [अनुपालयत्] ओ० १२०.
 रा० ६६८, ७५२, ७८६
 अणुपुञ्ज [अनुपूर्व] ओ० ५, ८, १६, ११६, ११७,
 १६८. रा० ८०३. जी० ३।११८, ११९, २७४,
 ५६६, ५६७
 अणुप्पण [अनुत्पन्न] ओ० १६६
 अणुप्पत्त [अनुप्राप्त] रा० ७६५, ७७४
 अणुप्पदाहिणीकरेमाण [अनुप्रदक्षिणीकुर्वन्]
 जी० ३।४५२
 अणुप्पदाहिण [अनुप्रदक्षिण] जी० ३।४४५
 अणुप्पदाहिणीकरेमाण [अनुप्रदक्षिणीकुर्वन्]
 जी० ३।४४६, ४५४, ४५७, ४७८, ५२३, ५२६,
 ५३७, ५४४, ५५१, ५५६
 अणुप्पविट्ट [अनुप्रविष्ट] रा० १२२, १२३

√अणुप्पविस [अनु+प्र+विश]—अणुप्पविसति
 रा० ७५५. जी० ३।४४३
 अणुप्पविसमाण [अनुप्रविशत्] जी० ३।१११
 अणुप्पविसिता [अनुप्रविश्य] रा० ७५५.
 जी० ३।४४३
 अणुप्पविसिताणं [अनुप्रविश्य] रा० १२३
 √अणुप्पेह [अनु+प्र+ईक्ष]—अणुप्पेहंति
 ओ० ४५
 अणुप्पेहा [अनुप्रेक्षा] ओ० ४२, ४३
 अणुबद्ध [अनुबद्ध] जी० ३।११६, १२६
 अणुब्भड [अनुद्भट] जी० ३।५६७
 अणुभाव [अनुभाव] जी० ३।१२६।६; ८३८।१६
 अणुमय [अनुमत] ओ० ११७. रा० ७५० से
 ७५३, ७६६. जी० १।१; ३।५६७
 अणुयत्तेमाण [अनुवर्तमान] रा० १६
 अणुरक्त [अनुरक्त] ओ० १५. रा० ६७२
 अणुराग [अनुराग] ओ० ६६, १२०, १६२.
 रा० ६६८, ७५२, ७८६
 √अणुलिप [अनु+लिप्]—अणुलिपइ
 रा० २६१. जी० ३।४५७.—अणुलिपति
 रा० २८५. जी० ३।४५१
 अणुलिपइत्ता [अनुलिप्य] रा० २६१
 अणुलिपित्तए [अनुलेप्तुम्] ओ० ११०, १३३
 अणुलिपित्ता [अनुलिपत्] रा० २८५.
 जी० ३।४५१
 अणुलित्त [अनुलिप्य] ओ० ४७, ६३
 अणुलिहंत [अनुलिहत्] ओ० ६४. रा० ५०, ५२,
 ५६, १३७, २३१, २४७. जी० ३।३०७, ३६३
 अणुलेवण [अनुलेपन] ओ० ४७, ७२
 अणुवएस [अनुपदेश] रा० ७६५
 अणुवत्तेमाण [अनुवर्तमान] रा० १६
 अणुवाय [अनुवात] रा० ३०. जी० ३।२८३
 अणुवाहणग [अनुपानत्क] रा० ८१६
 अणुविद्ध [अनुविद्ध] रा० २६२. जी० ३।४५७
 अणुवीद [अनुवीचि] जी० १।१

अणुवैलंघर [अनुवैलंघर] जी० ३।७४७ से ७५०

अणुद्वय [अणुद्वय] ओ० ७७

√अणुसञ्ज [अनु+सञ्ज्]—अणुसञ्जति

अणोवमा [दे] खाद्यविशेष

अणुसञ्जणा [अनुसञ्जना] जी० ३।२१८, ६३१

अणुसार [अनुसार] जी० ३।७७

√अणुहो [अनु+भू]—अणुहोति ओ० १६५।२१

अणूण [अनूण] जी० ३।८३८, २७

अणोग [अनेक] ओ० १, ५ से ८, १०, १६, ४६, ६३,

७१, १६५. रा० ७, १७, १८, २४, ३२, ५२, ५६,

६१, ६६, १७४, २०६, २११, २३१, २४७, ७५४,

७५६, ७६२, ७६४. जी० ३।११८, ११६, २५६,

२७४ से २७७, २८६, ३७२, ३७४, ३६३, ५८१,

५८५ से ५६६, ६३६, ६४६, ६७३, ६७४, ७५६,

८८४, ८८८

अणोगजीव [अनेकजीव] जी० १।७१

अणोगवासपरिधाय [अनेकवर्षपरिधाय] ओ० २३

अणोगविध [अनेकविध] जी० २।१०३

अणोगविह [अनेकविध] ओ० ३२ से ३६.

जी० १।६, ६५, ७१ से ७३, ७८, ८१, ८४, ८८,

८९, १०७, १०८, ११२, ११४, ११५; २।६

अणोगसिद्ध [अनेकसिद्ध] जी० १।८

अणोगाढ [अनेकगाढ] जी० १।४२

अणोगघसिय [अनेकघसित] जी० ३।३२२

अणोवम [अनुवम] ओ० १६५।१७, २२.

अणोवमा [दे०] खाद्यविशेष जी० ३।६०१

अणोवाहणम [अनुपानत्क] ओ० १५४, १६५, १६६

अण्ण [अण्य] ओ० १७, २३, ५२, ७६ से ८१.

रा० ४०, ५६, ५८, १३२, १८५, २०५ से २०८,

२४०, २७६, २८०, २८२, २८६, २६१, ६५७,

६८७, ६८८, ७०४, ७४८ से ७६४, ७७१ से

७७३, ८०३, ८०४. जी० १।५०, ६५, ७१ से

७३, ७८, ८१, ८४, ८८, १००, १०३, १११, ११२,

११४ से ११६, ११८, १२१; ३।२६७, ३०२,

३१३, ३५०, ३५१, ३६८ से ३७१, ३८८, ३९०,

४०२, ४४२, ४४६, ४४८, ४५५, ४५७, ५५७,

५६३, ५६६, ६३७, ६३८, ६५२, ६५८ से ६६०,

६६५, ६६६, ६७६, ७१०, ७१३, ७२१, ७३६,

७४७, ७६०, ७६१, ७६३ से ७६६, ७६८, ७७०

से ७७४, ८००, ८१४, ८४३, ८४६, ६१७, १०२५

अण्ण [अण्ण] ओ० १४६, १५०. रा० ८१०, ८११

अण्णउत्थिय [अण्ययूथिक] ओ० १३६.

जी० ३।२१०, २११

अण्णगिलाधय [अण्णगिलाधय] ओ० ३४

अण्णजीविय [अण्यजीविक] रा० ७३३, ७३४, ७३६

अण्णत्त [अण्यत्व] रा० ७६२, ७६३

अण्णत्थ [अण्यथ] ओ० ८६. जी० ३।७२१

अण्णमण्ण [अण्योण्य] ओ० ५२, ११७, ११८.

रा० १६, ४०, १३२, १३३, ६८७, ७१३, ७७४.

जी० ३।२२, २७, ११०, १११, २६५, ३०३, ६२०,

६२५, ८४५

अण्णयर [अण्यतर] ओ० २८, ७२, ८६ से ९३,

१०५, १०६, १२८, १२९, १८६. रा० ७५० से

७५३, ७६६. जी० १।३३३, ३।२३६

अण्णया [अण्यदा] ओ० ११६. रा० ६८०

अण्णलिमसिद्ध [अण्यलिङ्गसिद्ध] जी० १।८

अण्णविहि [अण्यविधि] ओ० १४६

अण्णाण [अज्ञान] ओ० ४६. जी० १।१०१, १२८;

३ १५२

अण्णाणदोस [अज्ञानदोष] ओ० ४३

अण्णाणि [अज्ञानिन्] जी० १।३०, ८७, ६६, ११६,

१३३, १३६; ३।१०४, १५२, ११०७, ११०८;

६।३०, ३२, ३५, १४३, १५६, १६४ से १६६

अण्णाणिय [अज्ञानिक] जी० ६।३४

अण्णाणचरय [अज्ञातचरक] ओ० ३४

अण्णाण्ण [अण्योण्य] ओ० १६५।६

√अण्ह [आ+स्नु]—अण्हति ओ० ८४

अण्हयकर [आस्नवकर] ओ० ४०

अण्ह्याण [अस्नानक] ओ० ८६, ६२. रा० ८१६

अण्ह्याणय [अस्नानक] ओ० १५४, १६५, १६६

अति [अति] रा० १२१, ६६८

√अतिवकम [अति + कम्]—अतिवकमइ

जी० ३, ८३८, १६

अतित्यगरसिद्ध [अतीर्थकरसिद्ध] जी० ११८

अतित्यसिद्ध [अतीर्थसिद्ध] जी० १, ८

अतिदूर [अतिदूर] रा० ६०, ६६२, ७१६

अतिमृद्विय [अतिमृत्तिक] रा० १२, २८१.

जी० ३१४४७

अतिमुत्तग [लया] [अतिमुक्तकलता]

जी० ३, २६८

अतिमुत्तमंडवग [अतिमुक्तमण्डपक]

जी० ३, २६६

अतिमुत्तलयामंडवग [अतिमुक्तलतामण्डपक]

रा० १, ८

अतिमुत्तलयामंडवय [अतिमुक्तलतामण्डपक]

रा० १, ८

अतिरेस [अतिरेस] जी० ३, ५६२

अतिरेग [अतिरेक] रा० २, ८५. जी० ३, ४५१,

५६७, ७२३, ७३०, ७३२

√अतिवय [अति + वज्]—अतिवयति

जी० ३, १२६

अतिहिसंबिभाग [अतिधिसंबिभाग] ओ० ७७

अतीत [अतीत] ओ० १६८

अतीव [अतीव] रा० ४०, १३५, २३६.

जी० ३, २६५, ३०२, ३०३, ३०५, ३१३, ३६८,

५८१, ५६६

अतुरिय [अतुरित] रा० १२

अतुल [अतुल] ओ० १६५, २२२

अत्तगवेषणया [आर्तगवेषणता] ओ० ४०

अत्तय [आत्मज] रा० ६७३

अत्तुक्कोसिय [आत्मोत्कर्षिक] ओ० १५६

अत्थ [अर्थ] ओ० ३७. रा० १५, २६२, ७३७,

७७४. जी० ३, २५०, ४५७

अत्थ [अस्त] जी० ३, १७६, १७८, १८०, १८२

अत्थओ [अर्थतम्] ओ० ४६. रा० ८०६, ८०७

अत्थणिउर [अर्थनिकुर] जी० ६, ८४१

अत्थत्थिय [अर्थार्थिक] ओ० ६८

अत्थमणत्थमण्यविभक्ति [अस्तमनास्तमनप्रविभक्ति]

रा० ८६

अत्थरग [आस्तमक] रा० ३७. जी० ३, ३११

अत्थसत्थ [अर्थशास्त्र] रा० ६७५

अत्थि [अर्थिन्] रा० ७७४

अत्थि [अस्ति] ओ० ७१. जी० ३, २२

अत्थिभाव [अस्तिभाव] ओ० ७१

अत्थिय [अस्थिक] जी० १, ७२

अदंतमणग [दे० अदन्तधावनक] रा० ८१६

अदंतवणय [दे० अदन्तधावनक] ओ० १५४,

१६५, १६६

अदक्ख [अदक्ष] रा० ७५८, ७५९

अदत्तादाण [अदत्तादान] ओ० ७१, ७६, ७७

अदत्तादाणवेरमण [अदत्तादानविरमण] ओ० ७१

अविहुलाभिय [अदृष्टलाभिक] ओ० ३४

अविण्ण [अदत्त] ओ० १११ से ११३, ११७, १३७,

१३८

अविण्णादाण [अदत्तादान] ओ० ११७, १२१, १६१,

१६३. रा० ६६३, ७१७, ७६६

अदुत्तरं [दे०] जी० ३, २३६

अदुवा [दे०] जी० ३, १२७

अदुरसामंत [अदुरसामन्त] ओ० ५२, ६६, ७०, ८२.

रा० १२३, ६८७, ६९२, ७१६, ७३१, ७३६,

७४८, ७७१

अद् [आर्द्र] ओ० ४७

अद्धारिद्ध [आर्द्रारिद्ध] रा० २५. जी० ३, २७८

अद्ध [अर्ध] ओ० १७०. रा० ४०, १२८, १४६,

१८८, १८९, २०५ से २०८, २२७, २३१, २४७,

६६८, ६६९, ६८३, ७०६, ७११, ७७२.

जी० २, ३८, ३९, ४१, ४२; ३, ८२, १०७, २३८,

२४७, २५०, २५६, २६०, २६२, २६३, ३००,

३१०, ३१३, ३५२ से ३५४, ३५६, ३६१ से

३६४, ३६८ से ३७१, ३७७, ३८३, ३८६, ३९२,

३९३, ४०१, ४०४, ४०६, ४०८, ४२२, ४२७,

५६६, ५६८ से ५७०, ५६४, ५६६, ६३४, ६४२,

- ६४४, ६४६, ६४२, ६४३, ६४५, ६७२ से ६७४,
 ६७६, ६८३, ६८५, ७०६, ७०८, ७११, ७२७,
 ७३२, ७३७, ७५६, ७५८, ८००, ८१४, ८२५,
 ८५१, ८३६, ८४४, १०१२ से १०१४, १०२८,
 १०३०, १०३२, १०३३, १०७४, ११२४
- अद्धकविट्टु** [अर्धकपित्थ] जी० ३।१००८
- अद्धकविट्टुक** [अर्धकपित्थक] जी० ३।२५७
- अद्धकाय** [अर्धकाय] जी० ३।३२२
- अद्धचंद्र** [अर्धचन्द्र] रा० १२४, १३०, १३७.
 जी० ३।३००, ३०७, ५७७
- अद्धच्छि** [अर्धक्षि] रा० १२३. जी० ३।३०३
- अद्धच्छु** [अर्धषष्ठ] जी० ३।४३
- अद्धट्टम** [अर्धाष्टम] ओ० १४३. रा० ८०१.
 जी० ३।३६३, ४०१, ६३२
- अद्धट्टारस** [अर्धाष्टादशन्] जी० ३।१०५२
- अद्धणवम** [अर्धनवम] जी० ३।१०४६
- अद्धतेरस** [अर्धत्रयोदशन्] ओ० ५४. रा० १२६,
 १७०. जी० ३।१६६, ३५२, ३७२, ३७४, ३७६,
 ३६५, ४१२, ४२५, ६६८
- अद्धनवम** [अर्धनवम] जी० ३।१०४६
- अद्धनाराय** [अर्धनाराय] जी० १।११६
- अद्धपंचम** [अर्धपञ्चम] जी० २।३६; ३।४२, ४७,
 २४२, ४०२, १०४६, १०४७
- अद्धमागह** [अर्धमागध] जी० ३।५६४
- अद्धमागहा** [अर्धमागधी] ओ० ७१ रा० ६१
- अद्धमास** [अर्धमास] जी० ३।११८, १२६
- अद्धमासपरियाय** [अर्धमासपर्याय] ओ० २३
- अद्धमासिय** [अर्धमासिक] ओ० ३२
- अद्धसेलसुट्टिय** [अर्धशैलसुत्थित] जी० ३।५६४
- अद्धसोलस** [अर्धषोडशन्] जी० ३।३६८, ३६६,
 १०५१
- अद्धाहार** [अर्धहार] ओ० ५२, ६३, १०८, १३१
 रा० ४०, १३२, २८५, ६८७, से ६८६. जी०
 ३।२६५, ३०२, ४५१, ५६३
- अद्धा** [अद्धा, अद्धवन्] ओ० ११६, ११७, १८२ से
- १८४, १६५।१४, १५, २२. रा० ७६५, ७७४
- अद्धाउय** [अद्धाउयुष्क] जी० ३।२१४
- अद्धादय** [अर्धादिक] ओ० ११२, १३७
- अद्धाण** [अद्धवन्] ओ० ६६, १२२
- अद्धासमय** [अद्धवसमय] जी० १।४
- अद्धुट्टु** [दि०] जी० ३।१०७, २३७, २४२, २४३
- अद्धुव** [अद्धुव] ओ० २३
- अद्धेकूणणउति** [अर्धैकोननवति] जी० ३।७५४
- अद्धेकोणणउइ** [अर्धैकोननवति] जी० ३।७६२
- अद्धेकोणणवति** [अर्धैकोननवति] जी० ३।७६८
- अघण्ण** [अघन्य] रा० ७७४
- अघम्म** [अघर्म] रा० ६७१
- अघम्मकैउ** [अघर्मकैतु] रा० ६७१
- अघम्मकखाइ** [अघर्मखियाति] रा० ६७१
- अघम्मत्थिकाय** [अघर्मत्थिकाय] रा० ७७१.
 जी० १।४
- अघम्मपलज्जण** [अघर्मप्रलज्जन] रा० ६७१
- अघम्मपलीइ** [अघर्मप्रलोकिन्] रा० ६७१
- अघम्मसीलसमुयाचार** [अघर्मसीलसमुदाचार]
 रा० ६७१
- अघम्माणुय** [अघर्मानुग] रा० ६७१
- अघम्मिय** [अर्धमिक] रा० ६७१, ७१८, ७५०, ७५१
- अघम्मिट्टु** [अर्धमिष्ठ] रा ६७१
- अघर** [अघर] जी० ३।५६७
- अघिय** [अधिक] जी० ३।३८७, ८७८
- अघे** [अघस्] जी० ३।११११
- अघेसत्तमा** [अघःसत्तमी] जी० २।१००, १०८,
 १२७, १३८, १४६; ३।२१, ३८, ४४, ४७,
 ५० से ५२, ५४ से ५६, ५८, ५९, ८३ से ८६, ८८
 से ९०, ९२, ९६, १०२, १०४, १०७, १०८, ११६,
 १२०, १२३, १२६
- अघेसत्तमी** [अघःसत्तमी] जी० ३।१६६
- अन्न** [अन्न] रा० ७
- अन्नविहि** [अन्नविधि] रा० ८०६
- अपच्छिय** [अपच्छित] रा० ७३२, ७३७, ७६५
- अपच्छिम** [अपच्छिम] ओ० ७७

अपञ्जत्त [अपर्याप्त] रा० ७५६. जी० ११५१, ६३, ६५, १०१; ३१२६; ६, १३३, १३४; ४।२५; ५।१७, २४, २६ से ३०, ३३, ३५, ३६, ३६ ४०, ४२, ४५, ४८, ५०, ५२, ५४ से ६०

अपञ्जत्तग [अपर्याप्तक] ओ० १८२. जी० ११५, ५८, ६७, ७३, ७८, ८१, ८४, ८८, ८९, ९२, १००, १०३, १११, ११२, ११६, ११८, १२१, १२२, १३५; ३।१३६, १३६, १४०, १४६; ४।२, ५, १८, २०, २२, २३, २५; ५।३, ४, ७, ११, १८ से २२, २५ ते २७, ३१ से ३४, ३६; ६।६०, ६३, ६४

अपञ्जत्तय [अपर्याप्तक] जी० ११५५, १०१; ४।१०

अपञ्जत्ति [अपर्याप्ति] जी० १।२७, ८६, ९६, १०१, ११६, १२८, १३३, १३६

अपञ्जवसित [अपर्यवसित] जी० ६।२३, २४, ६६, ८१, ८२, ९२, १०४, १२५, १७५, १६२, २०१, २४०

अपञ्जवसिय [अपर्यवसित] ओ० १८३, १८४, १६५. जी० ६।१० से १३, १६, २५, २६, ३१, ३३, ३४, ४५, ५४, ५८, ६०, ६५, ६८, ७१, ७२, ८६, ९८, ११०, ११६, १३३, १३५, १४५, १६३, १६४, १७४, १७६, १८०, १९५, २०२, २०५, २०६, २१५, २१६, २२७, २३०, २४६, २६१, २६५, २७६, २८५

अपञ्जकूलमाण [अप्रतिकूलयत्] ओ० ६६

अपञ्जकंत [अप्रतिक्रान्त] ओ ६५, १५५, १५६

अपञ्जिबद्ध [अप्रतिबद्ध] ओ० ७४।४

अपञ्जिविरय [अप्रतिविरय] ओ० १६१

अपढम [अप्रथम] जी० १।६; ७।१, ३, ५, १०, १२, १४, १६, १८, २१ से २३; ६।१ से ७, २३२, २३४, २३६, २३८, २४२, २४४, २४६, २४८, २५१ से २५३, २५५, २६७, २६९, २७१, २७३, २७६, २७८, २८०, २८२, २८५, २८७ से २९३

अपतिट्टाण [अप्रतिट्टाण] जी० ३।१२

अपत्तट्टु [अप्राप्तार्थ] गी० ७५८, ७५९

अपद [अपद] जी० ३।१६६

अपराहित [अपराजित] जी० ३।६४१

अपराहित्य [अपराजित] जी० ३।५६६

अपराजित [अपराजित] जी० ३।१८१, २६६, ७०७, ७१३, ८२४

अपराजिय [अपराजित] ओ० १६२. जी० ३।७६६, ८१३

अपराजिया [अपराजिता] गी० ३. ६१६, १०२६

अपरिग्गह [अपरिग्रह] अं० १६३

अपरितावणकर [अपरितापनाकर] ओ० ४०

अपरित्त [अपरीत] जी० १।६७, ७४; ६।७५, ७६, ८७

अपरिपूय [अपरिपूत] ओ० १११ से ११३, १३७, १३८

अपरिमूय [अपरिमूत] ओ० १४१. रा० ६७५, ७६६

अपरिमिय [अपरिमित] ओ० ४६, ७१. रा० ६१

अपरियाइत्ता [अपर्यादाय] जी० ३।६६०

अपरियाधिय [अपरितामित] जी० ३।६३०

अपरिवार [अपरिवार] रा० २०७, २६५, २६७, २६९. जी० ३।४२८, ४३१, ४३४

अपरिसेसिय [अपरिशेषित] जी० ३।७५१

अपरिकक्षीण [अपरिक्षीण] ओ १७१

अपवरक [अपवरक] जी० ३।५६४

अपसत्थकायविणय [अप्रशस्तकायविनय] ओ० ४०

अपसत्थमणविणय [अप्रशस्तमनोविनय] ओ० ४०

अपसत्थवइविणय [अप्रशस्तवाक्विनय] ओ० ४०

अपस्समाण [अपश्यत्] ओ० ११७

अपात्तमाण [अपश्यत्] रा० ७६५

अपि [अपि] ओ० २३. रा० १६. जी० १।३४

अपुट्टु [अस्पृष्ट] जी० १।४१

अपुट्टुलाभिय [अस्पृष्टलाभिक] ओ० ३४

अपुणरावत्तग [अपुनरावर्तक] ओ० १६, २१, ५४

अपुणरावत्तय [अपुनरावर्तक] रा० ८

अपुणरावित्ति [अपुनरावृत्ति, अपुनरावर्तिन्] रा० २६२. जी० ३।४५७

अपुणरुत्त [अपुनरुत्त] रा० २६२, जी० ३।४५७

अपुण्ण [अपूर्ण] रा० ७६३

अपुण्ण [अपुण्य] रा० ७७४

अपुरोपुह्य [अपुरोहित] जी० ३११२०
 अपुव्य [अपूर्व] जी० ११५०
 अपूह^१ [अपोह] ओ० ११६, १५६
 अपेज्ज [अपेय] जी० ३१७२१
 अप्य [अल्प] ओ० २०, ५३, ६१ से ६३. रा० १२,
 ६८५, ६६२, ७००, ७१६, ७२६, ७५३, ७५८,
 ७५९, ७७२, ७७४, ८०२. जी० १११४३; २१६
 से ७२, ७५, ६६, १३४ से १३८, १४१ से १४६;
 ३११८, ६६५, १०३७, ११३८; ४: १६, २२,
 २५; ५: १६, २०, २६, २७, ३२ से ३६, ५२,
 ५६, ६०; ७: २०, २२, २३; ६: १७, ५५,
 २५० से २५३, २५५ २८६ से २९३
 अप्य [आत्मन्] ओ० २१ से २६, ४५, ५२, ७१, ८२,
 ८६, ६४, ६८, १२०, १४०, १५४, १५५, १५७,
 १६०. रा० ८, ९, २८५, ६८६, ६८७, ६८९, ६९८,
 ७११, ७१३, ७१६, ७५२, ७५३, ७८७, ७८९,
 ८१४, ८१६, ८१७. जी० ३१५६६, ६४४
 अप्यकंथ [अप्रकम्प] ओ० २७. रा० ८३३
 अप्यकन्मताराय [अल्पकन्मतारक] रा० ७७२
 अप्यकिरियतराय [अल्पकिरातरक] रा० ७७२
 अप्यकोह [अल्पक्रोध] ओ० ३३
 अप्यगति [अल्पगति] जी० ३११२०
 अप्यज्जुहतराय [अल्पज्जुहितारक] रा० ७७२
 अप्यज्ञज्ञ [अल्पज्ञज्ञ] ओ० ३३
 अप्यङ्किकम्म [अप्रतिकर्मन्] ओ० ३२
 अप्यङ्किकम्म [अप्रतिकम्म] ओ० २६
 अप्यङ्किलेस [अप्रतिषेय] ओ० २५
 अप्यङ्किलोमया [अप्रतिलोमता] ओ० ४०
 अप्यङ्किवाड [अप्रतिपातिन्] ओ० ४३
 अप्यङ्किय [अप्रतिहत] ओ० १६, २१, २७, ५४, ८४,
 ८५, ८७, ८८, १०, २, २६२, ७५५, ७५७, ८१३.
 जी० ३१४५७
 अप्यणया [आत्मन्] जी० १, ५०, ६६
 अप्यतर [अल्पतर] ओ० ८६

१. वृत्ती—वूह [व्यूह] इति व्याख्यातमस्ति ।

अप्यतराय [अल्पतरक] रा० ७७२
 अप्यतिट्ठाण [अप्रतिष्ठान] जी० ३१११७
 अप्यवुस्समाण [अप्रविषत्] रा० ७६६
 अप्यनीसासतराय [अल्पनिःश्वासतरक]
 रा० ७७२
 अप्यनीहारतराय [अल्पनीहारतरक] रा० ७७२
 अप्यपरिग्गह [अल्पपरिग्रह] ओ० ६१ से ६३,
 १६१, १६३
 अप्यबहु [अल्पबहु] जी० २११५१; ४: २५
 अप्यबहुय [अल्पबहुक] जी० ६१६
 अप्यमत्त [अप्रमत्त] ओ० २७ रा० ८१३
 अप्यमहतराय [अल्पमहत्तरक] रा० ७७२
 अप्यमाण [अल्पमान] ओ० ३३
 अप्यमाय [अल्पमाय] ओ० ३३
 अप्यलोह [अल्पलोभ] ओ० ३३
 अप्यसद्द [अल्पसद्द] ओ० ३३
 अप्याण [आत्मन्] जी० ३११६८ से २०६, ४५१
 अप्याबहु [अल्पबहु] जी० ४: २२; ७: २१; ६: ३७
 अप्याबहुग [अल्पबहुक] जी० ५: २५, ७: २०;
 ८: ५; ६: २७
 अप्याबहुय [अल्पबहुक] जी० २: ६४, ५: १८, ३१;
 ६: १२, ६: १७, २०, ३५, ६१, ६६, ७४, ८७, ६४,
 १००, १०८, ११२, १२०, १३०, १४०, १४७,
 १५५, १५८, १६६, १६६, १६९, १८४, १९६,
 २०८, २२०, २३१ २५४, २६६.
 अप्यारंभ [अल्पारम्भ] ओ० ६१ से ६३, १६१, १६३
 अप्यासबतराय [अल्पाश्रवतरक] रा० ७७२
 अप्याहार [अल्पाहार] ओ० ३३
 अप्याहारतराय [अल्पाहारतरक] रा० ७७२
 अप्यिच्छ [अल्पेच्छ] ओ० ६१ से ६३ जी० ३१५६८
 अप्यिद्धिताराय [अल्पिद्धितारक] रा० ७७२
 अप्यिद्धिय [अल्पिद्धिक] जी० ३१०२१
 अप्यिय [अप्रिय] रा० ७६७ जी० १: ६५; ३: ६२
 अप्यियतरक [अप्रियतरक] जी० ३: ८४
 अप्युस्सासतराय [अल्पोच्छ्वासतरक] रा. ७७२
 अप्युस्सुय [अल्पोत्सुक्य] ओ० १६४

अप्येस [अप्रेष्य] जी० ३।११२०

अप्योसुय [अल्पौत्सुक्य] ओ० २५

√अपफाल [आ+स्फाल्]—अपफालेइ ओ० ५६

अपफालिञ्जमाण [आस्फाल्यमान] रा० ७७

अपफालेत्ता [आस्फाल्य] ओ० ५६

अपफुडिय [अस्फुटित] ओ० १६ जी० ३।५६६

√अपफोड [आ+स्फोट्]—अपफोडेति रा०
२८१ जी० ३।४४७

अपफोतान्डवग [दे० अपफोयामण्डपक] जी०
३।२६६

अपफोयाम्ण्डवग [दे० अपफोयामण्डपक] जी० १८४

अपफोयाम्ण्डवय [दे० अपफोयामण्डपक] रा० १८५

अपफयस [अपफय] ओ० ४०

अफुसमाणगह [अस्पृशद्गति] ओ० १८२

अबद्धिय [अबद्धिक] ओ० १६०

अबहिल्लेस [अबहिल्लेश्य] ओ० २५, १६४

अबहुप्सण [अबहुप्सन्] ओ० १११ से ११३,
१३७, १३८

अबाधा [अबाधा] जी० २।१३६; ३।३३ से ३६,
६० से ६३, ६५, ६६, ६८, से ७२, ३००,
५६६, ५७०, ६६२, ६६१, ७१४, ८२७, १०२२

अबाहा [अबाधा] ओ० १६२. रा० १७०.

जी० २।७३, ६७; ३।६६, ३५८, ५६६,
६३६, ७१४, ८०२, ८१५, ८२७, ८५२,
१००१ से १००६, १०२२

अबाहूगिया [अबाधोनिका] जी० २।७३, ६७,
१३६

अबभ [अभ्र] ओ० १६. जी० ३।५६७, ६२६

अबभंतर [अभ्यन्तर] ओ० १७०. जी० ३।८३८।१२

अबभंतरय [अभ्यन्तरक] जी० ३।८६, २६०. ६८१

अबभक्खाण [अभ्याख्यान] ओ० ७१, ११७, १६१,
१६३. रा० ७६६

अबभक्खाणविवेग [अभ्याख्यानविवेक] ओ० ७१

अबभणुणाय [अभ्यनुज्ञात] रा० ११, ५६

अबभरुक्ख [अभ्ररुक्ख] जी० ३ ६२६

अबभवहल्लय [अभ्रवादल्लक] रा० १२, १२३

अबभहिय [अभ्यधिक] ओ० ६५, ६४, ६५.

जी० २।३६, ४१, ४८, ४९, ५३ से ५५, ५७ से
६१, ६६, ८३, ८४, १२६; ३।१०२७ से १०३०,
११३५; ४।१६; ५।१०, २६; ६।६; ७।१२,
१३; ८।४, १७२, १७६, १८६ से १६१, १६३,
२०३, २१२, २२५, २२८, २३८, २४१, २७३, २७७

अबभासवतिय [अभ्यासवर्तित] ओ० ४०

अबिभंग [अभ्यङ्ग] ओ० ६३

अबिभगण [अभ्यङ्गन] ओ० ६३

अबिभमिय [अभ्यञ्जित] ओ० ६३

अबिभंतर [आभ्यन्तर] ओ० ६, ३०, ५५, ६० से ६२.
रा० ४३. जी० ३।२३६, २५५, २७५, ४४७,
६४३, ६५८, ७६६, ७६७, ७७५, ८३१ से ८३४,
१०५५

अबिभंतरय [आभ्यन्तरक] ओ० ३०, ३८, ४४.

जी० ३।६५८

अबिभंतरिय [आभ्यन्तरिक] रा० ६६०, ६८३.

जी० ३।२३५ से २३६, २४१ से २४३, २४६,
२४७, २४९, २५०, २५४ से २५६, २५८, ३४१,
५६०, ७३३, १०४० से १०४२, १०४४, १०४६,
१०४७, १०४९, १०५३, १०५५

अबिभंतरिल्ल [आभ्यन्तरिक] जी० ३।१००७

√अबभुक्ख [अभि+उक्]—अबभुक्खइ

जी० ३।४७०—अबभुक्खति जी० ३।४५८—
अबभुक्खेइ रा० २६३—अबभुक्खेति
जी० ३।४६०

अबभुक्खित्ता [अभ्युक्ष्य] जी० ३।४५८

अबभुक्खेत्ता [अभ्युक्ष्य] रा० २६३. जी० ३।४६०

अबभुगत [अभ्युद्गत] जी० ३।३०२, ३५६, ३६८,
३७०, ६३४, १००८

अबभुगय [अभ्युद्गत] ओ० ६७. रा० ३२, १३२,
१३७, १८६, २०४ से २०६, २०८. जी० ३।३०७
३५५, ३६४, ३६६, ३७१, ३७२, ५६७, ६७३

√अबभुद्ध [अभि+उत्+ष्ठा]—अबभुद्धेइ

ओ० २१. रा० न. जी० ३।४४३—अब्भुट्ठेति
 रा० २७७ जी० ३।४५४ अब्भुट्ठेभि. रा० ६६५

अब्भुट्टाण [अभ्युत्थान] ओ० ४०

अब्भुट्ठिय [अभ्युत्थित] ओ० २६

अब्भुट्ठेत्ता [अभ्युत्थाय] ओ० २१. रा० न.
 जी० ३।४४३ ।

अब्भुण्णय [अभ्युन्नत] रा० १३३. जी० ३।३०३,
 ५६७

अब्भुय [अद्भुत] रा० ७८

अभयदय [अभयदय] ओ० १६, २१, ५४.
 रा० ८, २६२. जी० ३।४५७

अभवसिद्धिय [अभवसिद्धिक] रा० ६२.
 जी० ६।१०६ से ११२

अभासग [अभावक] जी० ६।५६, ६०, ६१

अभासय [अभावक] जी० ६।५८

अभिह [अभिजित्] जी० ३।८३८।३२, १००७

अभिक्खणं [अभीक्षणम्] रा० १७३. जी० ३।२८५

अभिक्खलाभिय [अभिक्षालाभिक] ओ० ३४

√अभिगच्छ [अभि + गम्]—अभिगच्छइ
 ओ० ६६. रा० ७।१६—अभिगच्छंति
 ओ० ७०.—अभिगच्छामो रा० ७३५

अभिगच्छणया [अभिगमन] ओ० ४०

अभिगम [अभिगम] ओ० ६६, ७०. रा० ७७८

अभिगमण [अभिगमन] ओ० ५२. रा० ६, १२,
 ४७, ६८७. जी० ३।८४१

अभिगमणिज्ज [अभिगमनीय] रा० ७०३, ७३५

अभिगय [अभिगत] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,
 ७५२, ७८६

अभिगिज्ज [अभिगृह्य] जी० ३।५६२

अभिघट्टिज्जमाण [अभिघट्टयमान] रा० १७३.
 जी० ३।२८५

अभिणंदंत [अभिनन्दत्] ओ० ६८

अभिणंदिज्जमाण [अभिनन्दयमान] ओ० ६६

अभिणय [अभिनय] रा० ११७, २८१. जी०
 ३।४४७

अभिणिवट्टित्तणं [अभिनियंत्य] रा० ७७०

अभिणिसिट्ट [अभिनिसृष्ट] रा० १३२ जी०
 ३।३०२

√अभिणिस्सव [अभि + निर + स्रु]
 —अभिणिस्सवति, रा० १७३. जी० ३।२८३

√अभिणी [अभि + नी]—अभिणयति रा० २८१.
 जी० ३।४४७—अभिणिज्जइ रा० ७८३—
 अभिणोति रा० ११७

अभित्युणंत [अभिष्टुवत्] ओ० ६८

अभियुव्वमाण [अभिष्टूयमान] ओ० ६६

अभिद्दुय [अभिद्दुत] जी० ३।१२६.७

√अभिनिस्सव [अभि + निर + स्रु]—अभिनिस्स-
 वति रा० ३०

अभिमुह [अभिमुख] ओ० ४७, ५२, ६६, ७०, ८३.
 रा० ६०, ६८७, ६६२, ७१४, ७१६

अभिराम [अभिराम] ओ० २, ५५, ५७, ६३. रा०
 ६, १२, १७, १८, २०, ३२, ३७, ५२, ५६, १२६,
 १३२, २३१, २३६, २४७, २८६. जी० ३।२८८,
 ३००, ३०२, ३११, ३७२, ३६३, ३६८, ४४७,
 ५८६

अभिरुव [अभिरूप] ओ० १, ७, ८, १० से १३, १५,
 ७२, १६४. रा० १, १६ से २३, ३२, ३४, ३६ से
 ३८, १२४, १३०, १३३, १३६, १३७, १४५, १५७,
 १७४, १७५, २२८, २३१, २३३, २४५, २४७, २४६,
 ६६८, ६७०, ६७२, ६७६, ७००, ७०२. जी०
 ३।२३२, २६१, २६६, २६६, २७६, २८६ से
 २८८, २९०, ३३०, ३०३, ३०६, ३०७, ३११,
 ३८७, ३६३, ४०७, ४१०, ५८१, ५८४, ५८५,
 ५६६, ५६७, ६३६, ६७२, ८५७, ८६३, ११२१,
 ११२२

√अभिलस [अभि + लष्]—अभिलसइ रा० ७।१३
 —अभिलसति ओ० २०. रा० ७।१३

अभिलाव [अभिलाप] जी० ३।४, ५, १२, ४१, ४३,
 ४४, ७७. ८८, १२५, २२६, ४५१

अभिवंदए [अभिवन्दितुम्] ओ० ५५. रा० १३

अभिवंदया [अभिवन्दितुम्] ओ० ६२

अभिसमण्णागय [अभिसमन्त्रागत] रा० ६३, ६५,
६६७, ७६७

√अभिसमागच्छ [अभि+सं+आ+गम्]

—अभिसमागच्छइ रा० ७१६.

—अभिसमागच्छति रा० ७५३

√अभिसिच [अभि+सिच्]—अभिसिचति रा०
२८०. जी० ३।४४६

अभिसिचिता [अभिषिच्य] रा० २८२. जी०
३।४४८

अभिसिक्त [अभिषिक्त] रा० २८३. जी० ३।४४९

अभितेक [अभिषेक] जी० ३४३६

अभितेकसभा [अभिषेकसभा] रा० २६५, २६७

अभितेय [अभिषेक] ओ० ६८. रा० २६६, ४७५.
जी० ३।४४७, ५३४, ५६७

अभितेयसभा [अभिषेकसभा] रा० २७७, २७९,
२८३, ४७४, ४७६, ४७७, ४६६, ५१४, ५१५.

जी० ३।४२६, ४३०, ४३१, ४३४, ४४३, ४४५,
४४६, ५५३, ५३५ से ५३६

अभिहृत [अभिहृत] ओ० १३४

अभिहणमाण [अभिघ्नत्] जी० ३।११०

अभिहय [अभिहृत] जी० ३।११८, ११९

अभूओवघाइय [अभूतोपघातिक] ओ० ४०

अभेत्ता [अभित्वा] जी० ३।६६०

अभेयकर [अभेदकर] ओ० ४०

अमच्च [अमात्य] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६,
७६२, ७६४

अमच्छरियया [अमत्तरिकता] ओ० ७३

अमणाम [दे० अमन 'आप'] रा० ७६७. जी०
१।६५; ३।६२, १२२, १२३, १२८

अमणामतरक [दे० अमन 'आप' तरक] जी०
३।८४, ८५

अमणुण [अमनोज्ञ] ओ० ४३. रा० ७६७.

जी० १।६५; ३।६२

अमणुणतरक [अमनोज्ञतरक] जी० ३।८४

अमत्त [अमृत] जी० ३. ३१२, ४१७

अमत्त [अमम] ओ० २७. रा० ८१३. जी० ३।६३१

अमम्मज [अमन्मत्त] ओ० ७१. रा० ६१

अमय [अमृत] रा० ३८, १६०, २२२, २५६. जी०
३।३३३, ३८१, ३८७, ८६४

अमयरत्त [अमृतरत्त] रा० २२८. जी० ३।२८६

अमर [अमर] ओ० ४६, १६५।२०. रा० ५१

अमरवह [अमरपति] ओ० ६४

अमलगंधिय [अमलगन्धिक] ओ० १२. रा० २२

अमलगंधीय [अमलगन्धिक] जी० ३।२६०

अमला [अमला] जी० ३।६२१

अमाण [अमान] ओ० १६८

अमाय [अमाय] ओ० १६८

अमिय [अमृत] ओ० १६५।१८

अमेहावि [अमेधाविन्] रा० ७५८, ७५९

अमोह [अमोघ] जी० ३।६२६, ८४१

अमोहा [अमोघा] जी० ३।६६६, ६१०

अम्मड [अम्बड] ओ० ११५, ११७ से १४१

अम्मापिड [अम्बापितृ] ओ० १४२, १४६

अम्मापिड [अम्बापितृ] ओ० १४७, १४९. रा०
८००, ८०७

अम्मापिडमुस्सुसग [अम्बापितृशुश्रूषक] ओ० ६१

अम्मापियर [अम्बापितृ] ओ० १४४, १४५. रा०
८०२, ८०३, ८०५, ८०८, ८१०

अम्ह [अस्मत्] रा० ८. जी० ३।४४१

अय [अयस्] रा० ७५४, ७५६, ७५७, ७७४

अयकोट्ट [अयःकोष्ठ] जी० ३।७८

अयगर [अजगर] जी० १।१०५, १०६; ३।६२५

अयगरी [अजगरी] जी० २।८

अयण [अयन] ओ० २८. जी० ३।८४१

अयपाय [अयस्पात्र] ओ० १०५, १२८

अयपिड [अयस्पिण्ड] जी० ३।११८, ११९

अयपुगल [अयस्पुद्गल] रा० ७७४

अयबंधण [अयोबन्धन] ओ० १०६, १२६

अयभंड [अयोभाण्ड] रा० ७७४

अयभार [अयोभार] रा० ७७४

अयभारग [अयोभारक] रा० ७६०, ७६१, ७७४

अथभारय [अयोभारक] रा० ७७४
 अथभारय [अयोहारक, अयोभारक] रा० ७७४, ७७५
 अथल [अचल] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २६२.
 जी० ३१४५७
 अथसकारण [अयज्ञकारक] ओ० १५५
 अथसि [अतसी] ओ० १३, ४७. रा० २६. जी०
 ३१२७६
 अथहारय [अयोहारक, अयोभारक] रा० ७७४, ७७५
 अथा [अजा] जी० ३१६१६
 अथागर [अयआकर] रा० ७७४. जी० ३११८
 अथोगि [अयोगिन्] जी० ६१११६
 अथोमय [अयोमय] जी० ३१११६
 अथोमुह [अत्रमुख] जी० ३१२१६
 अरह [अरति] ओ० ४६. जी० ३१२८११०
 अरहरह [अरतिरति] ओ० ७१, ११७, १६१, १६३
 रा० ७६६
 अरकमंडल [अरकमण्डल] रा० १७३, ६८१. जी०
 ३१२८५
 अरणि [अरणि] रा० ७६५
 अरति [अरति] जी० ३१२८
 अरतिरतिविवेक [अरतिरतिविवेक] ओ० ७१
 अरमणिज्ज [अरमणीय] रा० ७८१ से ७८७
 अरसाहार [अरसाहार] ओ० ३५
 अरह [अहं] रा० ७७१, ८१५, ८१७
 अरहंत [अहंत] ओ० २१, ४०, ५२, ५४, ७१, ११७,
 १३६. रा० ८, ११, ५६, २६२, ७१४, ७४६,
 ७६६. जी० ३१४५७, ७६५, ८४१
 अरि [अरि] जी० ३१६१२, ६३१
 अरिस [अशांस] जी० ३१६२८
 अरिह [अहं] ओ० ७१, १४७. रा० ६१, ७१४,
 ७७६, ८०८
 अरुण [अरुण] जी० ३१६२७, ६२८, ६५०
 अरुणप्यभ [अरुणप्रभ] जी० ३, ७४८, ७४६, ७५३
 अरुणमहावर [अरुणमहावर] जी० ३१६३०
 अरुणवर [अरुणवर] जी० ३१७७५, ६२६, ६३०

अरुणवरभद्र [अरुणवरभद्र] जी० ३१६२६
 अरुणवरमहाभद्र [अरुणवरमहाभद्र] जी० ३१६२६
 अरुणवरोद [अरुणवरोद] जी० ३१६३०, ६३१
 अरुणवरोभास [अरुणवरावभास] जी० ३१६३१,
 ६३२
 अरुणवरोभासभद्र [अरुणवरावभासभद्र] जी०
 ३१६३१
 अरुणवरोभासमहाभद्र [अरुणवरावभासमहाभद्र]
 जी० ३१६३१
 अरुणवरोभासमहावर [अरुणवरावभासमहावर]
 जी० ३१६३२
 अरुणवरोभासवर [अरुणवरावभासवर] जी० ३१६३२
 अरुणोद [अरुणोद] जी० ३१६२८, ६२६
 अरुण्य [अरुज] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २६२.
 जी० ३१४५७
 अरुचि [अरुचिन्] जी० ११३, ४
 अरुं [अलम्] ओ० १४८ रा० ८०६
 अरुंकार [अलङ्कार] ओ० ६७, ७०, ६२, १४७,
 १६१, १६३. रा० १३, ५३, १७३, २८६, ६५७,
 ७१४, ७५१, ७६४, ८०२, ८०५, ८०८. जी०
 ३१२८५, ४४६, ४५५
 अरुंकारिय [अलङ्कारिक] रा० २६८, २८४, ५३५.
 जी० ३१४३२, ५४१
 अरुंकारियसभा [अलङ्कारिकसभा] रा० २६७,
 २६६, २८३, २८६, ५३४, ५३६, ५३७, ५५६,
 ५७४, ५७५. जी० ३१४३१, ४३३, ४३४, ४४६
 ४५२, ५४०, ५४२ से ५४६
 अरुंकित [अलंकृत] जी० ४१४५२
 अरुंक्रिय [अलङ्कृत] ओ० २०, ५३, ६३ रा०
 १३०, २८५, २८६, ६८५, ६८६, ६६२, ७००,
 ७१६, ७२६, ८०२. जी० ३१३००, ४५१
 अरुंभमाण [अलभमाण] ओ० ११७
 अरुंउपाय [अलाबुपात्र] ओ० १०५, १२८
 अरुंय [अलात] जी० ११७८; ३१८५
 अरुंयवयण [अलीकववन] ओ० ७३
 असेस [अलेश्य] जी० ११३३३; ६१२६, १६५

अलेस्स [अलेश्य] जी० ६।१८५, १६२, १६६
 अलोग [अलोक] ओ० १६५।२
 अलोय [अलोक] ओ० ७१
 अलोह [अलोभ] ओ० १६८
 अल्लई [आर्द्रकी] जी० ३।२८१
 अल्लकी [आर्द्रकी] रा० २८
 अल्लीण [आलीन] ओ० १६, ६१ रा० ८०४.
 जी० ३।५६६ से ५६८, ७५५, ८४१
 अल्लीणया [आलीनता] ओ० ११६
 अवउडग [दे० अवकोटक] रा० ७५४, ७५६, ७६४
 अवंक [अवक्र] रा० ७६, १७३. जी० ३।२८५
 अवंग [अपाङ्ग] रा० १३३. जी० ३।३०३
 अवंगुयडुवार [दे० अपावृतद्वार] ओ० १६२.
 रा० ६६८, ७५२, ७८६
 अवक्कम [अप+कम्]—अवक्कमति रा० १०.
 जी० ३।८७—अवक्कमति रा० १८
 अवक्कमिन्ता [अपक्कम्य] रा०. १० जी० ३।४४५
 अवक्खेवण [अवक्षेपण] ओ० १८०
 अवगय [अपगत] ओ० ६३
 अवगाढ [अवगाढ] रा० ७७४
 अवज्झाणावरिय [अपज्झानाचरित] ओ० १३६
 अवट्ठित [अवस्थित] जी० ३।५६, ५६६
 अवट्ठिय [अवस्थित] ओ० १६. रा० २०० जी०
 ३।२७३, ३५०, ७६०, ८३८।११
 अवडु [अपार्ध] जी० २।६५, ८८, १३२;
 ३।८३६; ६।२३, २६, ३३, ६६, ७१, ७३, ७८,
 १४६, १६४, १६५, १७८, २०२, २०४
 अवडुमोदरिय [अपार्धादिमोदरिक, उपाध्वां०]
 ओ० ३३
 अवणद्ध [अवणद्ध] रा० ७६०, ७६१
 √अवणी [अप+नी]—अवणेमो रा० ७२६
 अवणीत्त [अपनीत्त] जी० ३।८७८
 अवणीयउवणीयचरय [अपनीत्तउपनीत्तचरक]
 ओ० ३४
 अवणीयचरय [अपनीत्तचरक] ओ० ३४

अवणेमाण [अपनयत्] रा० ७३२
 अवण्णकारम [अवर्णकारक] ओ० १५४
 अवत्तासिज्जमाण [अपत्रास्यमान] रा० ८०४
 √अवबाला [अव+दलय]—अवबालेइ ओ० १७०
 अवदालिय [अवदालित] ओ० १६
 अवदालेत्ता [अवदलय] ओ० १७०
 अवधिणाणि [अवधिज्ञानिन्] जी० ३।१०४, ११०७
 अवमाण [अपमान] रा० ८१६
 अवमाणण [अपमानन] ओ० ४६
 अवयंसग [अवतंसक] रा० १७३, ६८१
 अव्वर [अपर] रा० ४०, १३२, १६३, १६६
 जी० ३।२६५, २८५, ३५८, ५६५
 √अव्वरज्ज [अप्+गञ्]—अव्वरज्जइ रा० ७६७
 अव्वरण्ह [अपराह्ल] रा० ६८५
 अव्वरत्त [अपरात्र] रा० १७३
 अव्वरविदेह [अपरविदेह] जी० २।२६, ५६, ७०,
 ७२, ८५, ६६, ११५, १२३, १३७, १३८, १४७,
 १४९; ३।४४५, ७६५
 अव्वरविदेहक [अपरविदेहक] जी० २।१३२
 अव्वरविदेहि्या [अपरविदेहिका] जी० २।६५
 अव्वराहि [अपराधिन्] रा० ७५१
 अव्वरुत्तर [अपरोत्तर] रा० ४१, ६५८.
 जी० ३।३३६, ५५८, ६३५, ६५७, ६८०
 अव्वलंबण [अवलम्बन] रा० १६, १७५.
 जी० ३।२८७, ८६०
 अव्वलंबणवाहा [अवलम्बनवाहु] रा० १६, १७५.
 जी० ३।२८७
 अव्वलद्ध [अपलद्ध] ओ० १५४, १६५, १६६.
 रा० ८१६
 अव्वलि [अवलि] रा० २६ जी० ३।२८२
 अव्वलिया [अवलिका] रा० २५ जी० ३।२७८
 अव्वव [अवव] जी० ३।८४१
 अव्वसाण [अवसान] ओ० ६३
 अव्वसेस [अवशेष] ओ० ७२, ७६, १६७ रा०
 ४८, ५७, १६४ जी० १।५६, ६७; ३।२५०,
 ३४५, ३५६, ६३०, ६६४, ६६५, १०२६

अववहारि [अववहारिन्] रा० ७६६
 अववहट्ट [अववहृत्य] ओ० ६६
 अववहमाणय [अववहमानक] ओ० १११से ११३,
 १३७, १३८
 अववहार [अववहार] जी० ३१२७
 अववहित [अववहृत] जी० ३१६०
 अववहिय [अववहृत] जी० ३११०८५, १०८६
 √अववहीर [अप+हृ]—अववहीरति जी० ३१६०
 अववहीरमाण [अपहृयमाण] जी० ३१६०, १०८६
 अववार्हण [अवातीन, अवाचीन] ओ० ५, ८ जी०
 ३१७४
 अववउड्डय [अप्रावृतक] ओ. ३६
 अववाय [अवाय] रा० ७४०
 अववयविजय [अपायविचय] ओ० ४३
 अववयाणुप्पेहा [अपायानुप्रेक्षा] ओ० ४३
 अवववि [अपि] रा० १२ जी० ११६६
 अववविओसरणय [अववुत्सर्जन] ओ० ६६, ७०
 रा० ७७८
 अववग्गह [अववग्रह] ओ० १८२
 अववघ [अववघ्न] ओ० ६८
 अववतह [अववितथ] ओ० २६, ६६, ७२.
 रा० ६६६
 अववद्धत्थ [अववध्वस्त] जी० ३१११८
 अववप्पयोग [अववप्रयोग] ओ० ४३
 अववयारि [अववचारिन्] ओ० ४३
 अवविरत्त [अवविरक्त] ओ० १५ रा ६७२
 अवविरय [अवविरत] ओ० ८४, ८५, ८७, ८८
 अवविरला [अवविरल] ओ० ५, ८, १६ जी०
 ३१७४, ५६६, ५६७
 अवविरहिय [अवविरहित] जी० ३१८३८ १७
 अवविराय [दे० अप्रस्फुटित] जी० ३१११८
 अवविरुद्ध [अवविरुद्ध] ओ० ६३
 अवविलीण [अवविलीन] जी० ३१११८
 अवविसंधि [अवविसन्धि] ओ० ७२
 अवविसय [अवविसय] जी० ११७७

अवविसुद्धसेस्स [अवविसुद्धलेश्य] जी० ३११६६ से
 २०४, २०६, २०८
 अवविस्ताम [अवविस्राम] ओ० ५०
 अववेहय [अवेदित] रा० ७५१
 अववेग [अवेदक] जी० ६१२२, २६, २७, १२६,
 १३०
 अववेहय [अवेदक] जी० ६१२४, २८
 अववेय [अवेद] जी० ११३३३
 अववेग [अवेदक] जी० ६१२१
 अववेयय [अवेदक] ६१२५
 अववत्तिय [अवव्यक्तिक] ओ० १६०
 अववय [अववय] रा० २०० जी० ३१५६, २७२,
 ३५०, ७६०
 अवववहारि [अवववहारिन्] रा ७६६
 अवववह [अवववथ] ओ० ४३
 अवववहित [अवववधित] जी० ३१६३०
 अवववावाह [अवववाबाध] ओ० १६, २१, ५४,
 १६५।१३ रा० ८, २६२ जी० ३१४५७
 अवववाहित [अवववाहृत] जी० ३१२३६
 √अवव [अस्]—अवव, ओ० २८ रा० २००
 जी० ११८२—अववु ओ० २१ रा० ८ जी०
 ३१४५७—अवविस रा० ७४७—अवविसि रा०
 २०० जी० ३१२६—अवविसी ओ० १६५।३
 रा० ६६७—अवविसि रा० १६८—अवविसिया ओ०
 ३३ रा० १२
 अवववह [अवववकृत] जी० ३१६७५
 अवववकिलिद्ध [अवववकिलिद्ध] ओ० ४७
 अवववकिलिद्धपरिणाम [अवववकिलिद्धपरिणाम]
 ओ० ६०
 अवववख [अवववख्य] जी० १११२८
 अवववखिज्ज [अवववख्येय] रा० ५६ जी० ११८०,
 १२१; ३१८६
 अवववखेज्ज [अवववख्येय] ओ० १७३, १८२. रा० १०
 १२, १२४, १२६, २७६, ७७२. जी० ११३३, ५१
 ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६४, ६५, ७३, ७७ से ७६
 ८१, ८२, ८७, ८८, ९०, ९६, १०१, १०३, ११२;

११६, ११६, १२३, १२८, १३३, १३६, १३६,
१४०; २।१२०, १३१; ३।१६, २१, २६, २७,
५१, ६४, ६५, ८१, ८२, ९०, ११०, १५५, १६५,
२५७, २५९, ३५१, ४४५, ६३८, ७०१, ७१०, ७३६,
७४७, ७६१, ७६४, ७६८, ७७६ से ७७६,
८१४, ८३८।१, ९४०, ९४४, ९५२, ९५३, १००६,
१०७३, १०७४, १०८३, १०८५, १०८६, ११११।
१११५; ५।८, ६, २२, २३, २६, ४१ से ५०
५६, ५८; ८।४; ९।४०, ५१, ६७, १७१, २५७

असंखेज्जभाग [असंख्येयतमभाग] रा० ७६६.

जी० १।१६, ७४, ८६, ९४, १०१, १०३, १११,
११२, ११६, ११६, १२१, १२३, १२५, १३०,
१३५, १३६; २।२५, ३० से ३४, ५३, ५७ से
६१, ७३; ६।६७, १८६

असंखेज्जगुण [असंख्येयगुण] ओ० १८२, १६५।१०.

जी० २।६८, ७१, ७२, ९५, ९६, १३४ से १३६,
१३८, १४३ से १४६; ३।१६५, ११३८;
४।२३, २५; ५।१८ से २०, २५, २७, ३१ से
३६, ५२, ५६, ६०; ६।१२; ७।२०, २२, २३;
८।५; ९।६, ७, ५५, १००, १२०, १४०, १४७,
१५८, १६६, १८१, १८४, २०८, २२०, २३१,
२५० से २५२, २५५, २६६, २८६ से २८८,
२९०, २९१, २९३

असंखेज्जजीविय [असंख्येयजीविक] जी० १।७१, ७२

असंखेज्जतिभाग [असंख्येयतमभाग] जी० २।१३६;

३।६१, १५६, २१८, ४३६, ६२६, ६६६, १०८६,
१०८७, १०८९, ११११; ५।६, २३, २४, २६;
६।४०, ५१, १७१, १८७, १८८

असंखेज्जभाग [असंख्येयभाग] ओ० १६२.

जी० ३।६१

असंग [असङ्ग] ओ० २०

असंघयण [असंहनन] जी० ३।१२६।४

असंघयाणि [असंहनिन्] जी० १।६५, १३५;

३।६२, १०६०

असंजय [असंयत] ओ० ८४, ८५, ८७, ८८.

जी० ६।१४१, १४३, १४६, १४७

असंत [असत्] ओ० १६५।१६

असंबिद्ध [असन्दिग्ध] ओ० ६६, रा० ६६६

असंनिहि [असन्निधि] जी० ३।५६८

असंपत्त [असम्प्राप्त] ओ० ४७, ८४, ८५, ८७. रा०

४०, ५६, १३२. जी १।५८, ७३, ७८, ८१;

३।२६५

असंबद्ध [असम्बद्ध] जी० ३।११०, १११५

असंभंत [असम्भ्रान्त] रा० १२

असंबुद्ध [असंवृत] ओ० ८४, ८५, ८७

असंसद्गुचरय [असंसृष्टचरक] ओ० २४

असंसारसभावण [असंसारसमापन्न] जी १।६ से ६

असच्चामोसन्नजोग [असत्यमृषामनोयोग]

ओ० १७८

असच्चामोसवइजोग [असत्यमृषावाग्योग] ओ०

१७६

असण [अशन] ओ० ११७, १२०, १४७, १६२.

रा० ६६८, ७०४, ७१६, ७५२, ७६५, ७७६, ७८७

से ७८६, ७९४ से ७९६, ८०२, ८०८

असणग [अशनक] ओ० १३

असणि [अशनि] जी० २।७८

असणिण [असंजिन्] जी० १।२४, ८६, ९६, १०१,

११६, १२८, १३६; ३।८८; ६।१०१, १०३,

१०६, १०८

असति [अकृत्] जी० ३।१२७.

असत्भावपट्टवणा [असत्भावप्रस्थापना]

जी० ३।१०६, ११८, ११९

असत्भाववृत्तभावणा [असत्भावोद्भावना]

ओ० १५५, १६०

असमोहत्त [असमवहत्त] जी० १।१२८; ३।१५८,

१६८, १६९, २०४, २०५

असमोह्य [असमवह्य] जी० १।५३, ६०, ८७

असम्मोह [असम्मोह] ओ० ४३

असरणानुप्येहा [अशरणानुप्रेक्षा] ओ० ४३

असरिस [असदृश] जी० ३।११०, १११५

असरीर [अशरीर] ओ० १८३, १८४, १९५, १११.
रा० ७७१

असरीरि [अशरीरिन्] जी० ६१६२, १७०, १७५,
१८०, १८१

असहिज्ज [असाहाय्य] रा० ६६८, ७५२, ७८६

असहेज्ज [असाहाय्य] ओ० १२०, १६२

असान्ज्ज [असावद्य] ओ० ४०

असासत्त [असाश्वत्त] जी० ३५७, ५६

असासय [असाश्वत्त] रा० १६८, १६९. जी० ३८७,
२७०, २७१, ७२४, ७२७, १०८१

असि [असि] ओ० ६४. जी० ३११०, ६०७, ६३१

असिद्द [अशीति] जी० ३५

असिद्ध [असिद्ध] जी० ६१६, १११, १३३, १४४, १६६, २६६,
६२

असिपत्त [असिपत्त] जी० ३८५

असिय [असित] रा० १३३. जी० ३३०३

असिलक्खण [असिलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

असिल्लिट्ठ [असिल्लिट्ठ] रा० ७७४

असीत्त [अशीति] जी० ३३५५

असीत्ति [अशीति] जी० ३१७

असीय [अशीति] रा० १६३. जी० ३३३५

असुद्ध [अशुचि] ओ० ६८, १४४. रा० ६, १२, ७५३,
८०२ जी० ३८४, ६२२

असुभ [अशुभ] रा० ७५३. जी० १६५; ३१७७,
११६, १२६१४

असुभाणुप्पेहा [अशुभानुप्पेहा] ओ० ४३

असुय [अश्रुत] रा० १६

असुर [असुर] ओ० ६८, १२०, १६२. रा० २८२,
६६८, ७५२, ७७१, ७८६, ८१५. जी० ३१२३२,
४४८, ८८५

असुरकुमार [असुरकुमार] ओ० ४७. जी० २१६,
३७; ३१२३३, २३४, २४०

असुरकुमारराय [असुरकुमारराज] जी० ३१२३४
से २३६, २४३

असुरकुमारिद [असुरकुमारिन्द] जी० ३१२३४

असुरद्वार [असुरद्वार] जी० ३८८५

असुरिद [असुरेन्द्र] ओ० ४८. जी० ३१२३५ से
२३६, २४३

असुह [अशुभ] जी० ३६२, १२६१०

असोग [अशोक] ओ० ८, ६, १२, १३. रा० ३, ४,
१३३. जी० ११७१; ३१३०३, ६२७

असोगलया [अशोकलता] ओ० ११. रा० १४५.
जी० ३२६८, ५८४

असोगलयापविभत्ति [अशोकलतापविभक्ति]
रा० १०१

असोगवड्डेसय [अशोकवत्तंसक] रा० १२५

असोगवण [अशोकवन] रा० १७०. जी० ३३५८

असोय [अशोक] रा० १८६. जी० ३३५६, ५६०

असोयपल्लवपविभत्ति [अशोकपल्लवप्रविभक्ति]
रा० १००

अस्स [अश्व] जी० ३१७६३

अस्सकण्णि [अश्वकर्णा] जी० ११७३

अस्साद [आस्वाद] जी० ३६५८

अस्साय [असात्त] जी० ३१२६१५, १०

अस्सुय [अश्रुत] ओ० ५२

अह [अथ] ओ० २२

अहक्खायचरित्तविणय [यथाख्यातचरित्रविणय]
ओ० ४०

अहत [अहत] जी० ३४५१

अहम्मिद [अहमिन्द्र] जी० ३१०५६, ११२०

अहय [अहत] ओ० ६३. रा० ७, २६१. जी० ३४५७

अहर [अघर] ओ० १६, ४७. जी० ३५६६

अहव [अथवा] जी० ३५६४

अहवा [अथवा] जी० ११३३

अहव्वणवेव [अथर्वणवेव] ओ० ६७

अहाणुपुद्धो [यथानुपूर्वो] ओ० ६४. रा० ४६ से
५४, ७७४

अहा [अथ] रा० ७२३

अहापडिरुव [यथाप्रतिरूप] ओ० २१, २२, ५२.
रा० ८, ६, ६८६, ६८७, ६८८, ७०६, ७११, ७१३

अहापरिग्गहिय [यथापरिग्गहीत] ओ० १२०
 अहाबायर [यथाबादर] रा० १०,१२,१८,६५,
 २७६. जी० ३।४४५
 अहासुह [यथासुख] रा० ६६५,७७५
 अहासुहुम [यथासूक्ष्म] रा० १०,१२,१८,६५,
 २७६. जी० ३।४४५
 अहि [अहि] जी० १।१०५,१०६,१०८;
 ३।८४,६५,६२५,६३१
 अहियय [अधिगत] रा० ६८८
 अहियरण [अधिकरण] ओ० १२०,१६२.
 रा० ६६८,७५२,७८६
 अहिय [अधिक] ओ० ५७,६३ रा० ७०, १३३,
 २३८. जी० २।१५१; ३।२२६।२,५,३०३,
 ६७२,११२२; ७।१६,१८; ९।४,२४४,२४६,
 २८०,२८२,११२२
 अहिययर [अधिकतर] रा० १३३. जी० ३।३०३,
 ११२२
 √अहियास [अधि + आस्, सह]—अहियासिज्जति
 ओ० १५४. रा० ८१६
 अहिलाण [अमिलान] ओ० ६४
 अही [अही] जी० २।८
 अहीण [अहीन] ओ० १५,१४३. रा० ६७२,६७३
 ८०१
 अहुणा [अधुना] जी० ३।४४८
 अहुणोववण्ण [अधुनोपपन्न] रा० ७५१,७५३
 अहुणोववण्णमित्तय [अधुनोपपन्नमात्रक]
 रा० २७४
 अहुणोववण्णय [अधुनोपपन्नक] रा० ७५१,७५३,
 ७६७
 अहे [अधस्] ओ० १८६ रा० १३२ जी० १।४५
 अहेसत्तमा [अधःसप्तमी] जी० १।६२,११६,
 १२२; २।१३५,१४८,१४९; ३।११ से १३,
 २७,३२,४३,४७,४९,५३,७६,७७,७९,८०,८२,
 ८७, ९३ से ९५,९७,१०३,१०४,१०६,१०८,
 ११५,११७,१२१ से १२३,१२५,१२७,१२८

अही [अही] रा० ६६६
 अहीनिस [अहीनिस] जी० ३।१२६।८
 अहीरत्त [अहीरात्र] ओ० २८ जी० ३।८४१
 अहीवहिय [आधोवधिक] रा० ७३३,७३४,७३६
 अहीवाय [अधोवात] जी० १।८१
 अहीसिर [अधःशिरस्] ओ० ४५,८२

आ

आइ [आदि] ओ० २३,६३,६६. जी० १।१३३;
 ३।१०२७
 आइं [दे०] रा० ७०५
 √आइक्ख [आ + क्ख, ख्या]—आइक्खइ ओ० ५२.
 रा० ६८७—आइक्खंति जी० ३।२१०—
 आइक्खह ओ० ७६—आइक्खामि
 जी० ३।२११—आइक्खिस्सामो रा० ७१६
 —आइक्खेज्जा रा० ७१८—आइक्खेज्जाह
 रा० ७२०
 आइक्खग [आख्यायक] ओ० १,२
 आइक्खगपेच्छा [आख्यायकप्रेक्षा] ओ० १०२,
 १२५
 आइक्खमाण [आनख्यान, आख्यात्] ओ० ७६
 से ८१ रा० ७२०,७३२
 आइक्खित्तए [आचक्षितुम्, आख्यातुम्] ओ० ७६
 आइगर [आदिकर] ओ० १६,२१,५२,५४
 रा० ८
 आइच्च [आदित्य] जी० ३।८३८।४
 आइज्ज [आदेय] ओ० १६
 आइण [आजिन] रा० ३१
 आइणग [आजिनक] जी० ३।४०७,५६५
 आइण्ण [आकीर्ण] ओ० १,१४,१६,६४.
 रा० १७३,६७१,६७५,६८१,७७४.
 जी० ३।२८५,६६५
 आइण्ण [आकीर्ण] रा० ११,५६
 आइण्ण [दे०] जात्यस्य जी० ३।५६६
 आइय [आदिक] ओ० २३,१२०,१४६,१६२
 जी० ३।२५६

आईण [आजिन] जी० ३१२८४, १०७६
 आईणग [आजिनक] ओ० १३ रा० ३७, १८५,
 २४५. जी० ३१२६७, ३११
 आड [आमुष्] जी० ११२८
 आड [दे० अप्] जी० २११३०, १३६; ३१२२३,
 ६७४; ५८, १२, २०, २७, २६, ३३, ३६;
 ६१२५७
 आडकाइय [अप्कायिक] जी० १११२; ३१२८२,
 १८४, २५६, २६२, २६६; ५१६, १८; ८५
 आडकाय [अप्काय] जी० ३११३५, ७२५, ७२८
 आडक्काइय [अप्कायिक] जी० ११६३, ६५;
 २११०२, १३८, १४६, १४६; ३११३५; ५११,
 १६, २०; ८१
 आडक्खय [आयुःक्षय] ओ० १४१. रा० ७६६
 आडज्ज [आतोच्च] रा० ७०, ७१, ७५
 आडधागार [आयुधागार] ओ० १४. रा० ६७१
 आडय [आयुष्क] ओ० ४४, ६१ से ६३, १५७,
 १७१, १८८. रा० ७५३. जी० ११५१, ५५, ६१,
 ८७, १०१, ११६, १२७, १३३; ३११५५, ६३०
 आडर [आतुर] रा० ७६०, ७६१. जी० ३१११८,
 ११६
 आडल [आकुल] ओ० ६३. जी० ३१८४
 आडस [आयुष्मत्] ओ० ७६, १२०, १७०. रा०
 १३१, १३२, १४७ से १५१, १८५, १६७, ६६८,
 ७५०, ७५२, ७८६. जी० १. ५६, ६२, ६५, ८२, ६६,
 १२८, १४०; ३११७६, १७८, १८०, १८२, २५६,
 २६६, २६७, ३०१, ३०२, ३२१ से ३२४, ५८२,
 ५८६ से ५६५, ५६८, ६००, ६०३ से ६०७, ६०६
 से ६१७, ६२०, ६२२ से ६२५, ६२७, ६२८, ६३०,
 ६६५, १०५६, ११२०
 आडसेस [आयुःशेष] रा० ८१६
 आडह [आयुध] रा० ६६४, ६८३. जी० ३१५६२
 आएज्ज [आदेव] जी० ३१५६७
 आएस [आदेश] जी० २११५०, ६१२२२
 आओग [आयोग] ओ० १४, १४१ रा० ६७१, ७६६
 आओस [आक्रोश] रा० ७६६

आओसित्तए [आक्रोष्टुम्] रा० ७६६
 आकति [आकृति] रा० १४८
 आकारभाव [आकारभाव] जी० ३१२५६
 आकासतल [आकाशतल] जी० ३१५६४
 आकिति [आकृति] जी० ३१४५४
 आकोसायंत [आकोशायमान, विकसत्] जी०
 ३१५६६, ५६७
 आगइ [आगति] जी० १११४
 आगइय [आगतिक] जी० ११७४, ७७, ८७, ८८, ६६,
 १०१
 आगंतुं [आगन्तुम्] रा० ७५०
 √आगच्छ [आ+गम्]—आगच्छइ ओ० १७७
 —आगच्छंति जी० ३१२३६—आगच्छिज्जा
 रा० ७०६ —आगच्छेज्ज ओ० १८०.—
 आगच्छेज्जा ओ० २१. जी० ३१८६—
 आगच्छेइ रा० ७६५
 आगच्छित्तए [आगन्तुम्] रा० ७५१
 आगत [आगत] रा० १७३. जी० ३१२६५, २८५
 आगति [आगति] रा० ८१५
 आगतिय [आगतिक] जी० ११५६, ६२, ६४, ६५,
 ६७, ७६, ८०, ८२, १०३, १११, ११२, ११६, ११६,
 १२१, १२३, १२८, १३४, १३६
 आगमण [आगमन] ओ० ५१. रा० ६८६
 आगमणागमणप्रविभक्ति [आगमनागमनप्रविभक्ति]
 रा० ८७
 आगमेसिभइ [आगमिष्यद्भद्र] ओ० ७२
 आगम्म [आगम्य] ओ० २
 आगय [आगत] ओ० ५२. रा० ४०, ७०, १३२,
 ६८५, ६८७, ६८६, ७१३, ७६५, ८०२.
 जी० ११६६
 आगर [आकर] ओ० ६८, ८६ से ६३, ६५, ६६,
 १५५, १५८ से १६१, १६३, १६८. रा० ६६७.
 जी० ३१८४१
 आगार [आकार] ओ० १६. जी० ३१४८ से ५०,
 ३०३, ३४६, ३५७, ६३७, ६५६, ७३८, ७४३,
 ७६३, ११२२

आगारभाव [आकारभाव] जी० ३१२१८, ५७८,
५६६, ५६७

आगास [आकाश] ओ० १३, १६

आगासस्थिकाय [आकाशस्थिकाय] रा० ७७१.
जी० ११४

आगासधिगल [आकाश 'धिगल'] रा० २५
जी० ३१२७८

आगासफलिह [आकाशस्फटिक] जी० ३१४५१
आवासफालिह [आकाशस्फटिक] । रा० २८५

आगासाइवाइ [आकाशातिपातिन्] ओ० २४

आगासिय [आकाशिक] ओ० १६

आगिति [आकृति] रा० २८८. जी० ३१३२१

√आघव [आ+घ्वा]—आघविज्जति जी०
३१८१

आघवण [आख्याण] रा० ७७४

आघवित्तए [आख्यातुम्] रा० ७७४

आघवेमाण [आख्यात्] ओ० ६८

आजीवविट्ठंत [आजीवदृष्टान्त] जी० ३११७४

आजीविय [आजीवक] ओ० १५८

√आडह [आ+धा]—आडहइ, ओ० ५६

आडहिता [आघाय] ओ० ५६

आडय [आडक] ओ० ११३, १३८. रा० ७७२

√आढा [आ+दृ]—आढाइ रा० ६४.—आढाति
रा० ७५३

आणंदा [आनन्दा] जी० ३१६१४

आणंदिद्य [आनन्दित] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६,
६२, ६३, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४,
१६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७,
२७९, २८१, २९०, ६५५, ६८१, ६८३, ६९०, ६९५.
७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८, ७२५,
७२६, ७७४, ७७८. जी० ३१४४३, ४४५, ४४७,
५५५

आणण [आनन] ओ० ५१, ६३, ६५

आणत [आनत] जी० २१६२, ६६, १४८, १४९;
३११०८४, १०८६, १०८८

आणत्तिया [आज्जत्तिका] ओ० ५५ से ६१. रा०
६, १२, १७, ४६, ७३, ११८, ६५४, ६५५, ६८१,
६८२, ६९०, ६९१, ६९६, ७१४, ७१५, ७२४,
७२५. जी० ५५४, ५५५

आणपाणपज्जत्ति [आनप्राणपर्याप्ति, आनापान-
पर्याप्ति] रा० २७४, ७६७

आणपाणुपज्जत्ति [आनप्राणपर्याप्ति, आनापान-
पर्याप्ति] जी० ११२६

आणय [आनत] ओ० ५१, १६२. जी० ३११०३८,
१०५३, १०६२, १०६६, १०६८, १०७६, ११११

√आणव [आ+जापय]—आणविज्जइ रा० ७६७.
—आणवेइ रा० १३.—आणवेज्जा रा० ७७६

आणा [आजा] ओ० ५६, ५७, ५९, ६१, ६८, ७६,
७७. रा० १०, १४, १८, ७४, २७६, २८२, ६५५,
६८१, ७०७. जी० ३१३५०, ४४५, ४४८, ५५५,
५६३, ६३७

आणापाणु [आनापान, आनप्राण] ओ० २८. जी०
३१८४१

आणापाणुअपज्जत्ति [आनापानपर्याप्ति, आनाप्राणा-
पर्याप्ति] जी० ११२७

आणापाणुपज्जत्ति [आनापानपर्याप्ति, आनप्राण-
पर्याप्ति] जी० ३१४४०

आणामित [आनामित] जी० ३१५६७

आणामिय [आनामित] ओ० १६ जी० ३१५६६

आणारुह [आजाहचि] ओ० ४३

आणाविजय [आजाविचय] ओ० ४३

√आणी [आ+नी]—आणेस्सामि रा० ७२०

आणुगामियत्त [आनुगामिकत्व] ओ० ५२. रा०
२७५, २७६, ६८७. जी० ३१४४१, ४४२

आणुपुब्ब [आनुपूर्व] रा० १७४. जी० ३१२८६

आणुपुब्बी [आनुपूर्वी] जी० ११४८

आतंक्क [आतङ्क] जी० ३१६२८

आतंभ [आताम्र] जी० ३१५६६

आतपत्त [आतपत्र] जी० ३१४१६

आताडिज्जंत [आताड्यमान] रा० ७७

आतिय [आदिक] रा० ६३, ६५
 आतोच्च [आतोच] जी० ३।५८८
 आवंसग [आदर्शक] जी० ३।३५५
 आवंसमुह [आदर्शमुख] जी० ३।२२६
 आदर [आदर] ओ० ६७. रा० १३, ६५७
 आदर्शफलग [आदर्शफलक] ओ० २७. रा०
 ८१३
 आदि [आदि] ५२, ७०. जी० १।४६; २।१३१;
 ३।२२६, २५०, ८६६, ८७२, ८७५, ८७६, ८७६,
 ८८१, ६२६, ६२७, ६३७, ६४१, ६४८, ६४६,
 ६५२, १०८४, १०८६; ६।१४६
 आदिगर [आदिकर] ओ० ५४. रा० ८, २६२.
 जी० ३।४५७
 आदिय [आदिक] रा० ७४, ८२, ११८. जी०
 ३. ६१७
 आदीय [आदिक] जी० ३।२५६, ६५०
 आवेच्च [आदेय] जी० ३।५६६, ५६७
 आवेस [आवेश] जी० १।५८, ७३, ७८, ८१; २।२०,
 ४८
 आघार [आहार] जी० १।१२८
 √आघाव [आ + घाव] —आघावन्ति जी० ३. ४४७
 आपडिपुच्छमाण [आप्रतिपृच्छत्] ओ० ६६
 आपुच्छणिच्च [आपृच्छनीय] रा० ६७५
 आपूरैत [आपूर्यमाण] जी० ३।७३१
 आपूरैमाण [आपूर्यमाण] रा० ४०, १३२,
 १३५, २३६. जी० ३।२६५, ३०२, ३०५, ३६८.
 आबाह [आबाध] ओ० १६६
 आबाहा [आबाधा] जी० ३. ६२०, ६२५
 आभरण [आभरण] ओ० २०, ५२, ५३, ६३.
 रा० ६६, ७०, १५६, १५७, २५८, २७६, २८१,
 २८६, २६१, २६४, २६६, ३००, ३०५, ३१२,
 ३५५, ६८५, ६८७, ६८६, ६६२, ७००, ७१६,
 ७२६, ८०२. जी० ३।३२६, ४१६, ४४७, ४५२,

१—आपूरयन्ति शत्रुन्तस्य शाब्दि रूपम् । जी०
 वृत्ति ।

४५७, ४५६, ४६१, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७,
 ५१६, ५२०, ५४७, ७७५, ६३६, ११२१ से ११२३
 आभरणचित्त [आभरणचित्र] जी० ३. ५६५
 आभरणविहि [आभरणविधि] ओ० १४६ रा०
 ८०६
 आभा [आभा] ओ० ५१
 आभासित [आभाषिक] जी० ३।२१६
 आभासिय [आभाषिक] जी० ३।२१६
 आभासियदीच [आभाषिकद्वीप] जी० ३।२१६,
 २२३
 आभासिया [आभाषिका] जी० २।१२
 आभियोग्य [आभियोगिक] ओ० १५६. रा०
 ६, १०, १२, १३, १७ से १६, २४, ३२, ४१, ४६,
 ५४, २७८, २७९, २६०, ६५४, ६५५. जी०
 ३।४४४, ४४५, ४५०, ४५३, ४५६, ५५४, ५५५,
 ६१०
 आभिनिबोधियणाणि [आभिनिबोधिकज्ञानिन्]
 जी० ३।१०४, ११०७
 आभिनिबोहियणाण [आभिनिबोधिकज्ञान]
 ओ० ४० रा० ७३६ से ७४१, ७४६
 आभिनिबोहियणाणविणय [आभिनिबोधिकज्ञान-
 विनय] ओ० ४०
 आभिनिबोहियणाणि [आभिनिबोधिकज्ञानिन्]
 ओ० २४. जी० १।८७, ६६, ११६, १३३;
 ६।१५६, १६०, १६५, १६६, १६८, २०४, २०८
 आभिनिबोहियणाणि [आभिनिबोधिकज्ञानिन्]
 जी० ६।१६७
 आभियोग [आभियोग्य] रा० ४७
 आभियोगा [आभियोग्य] रा १०
 आभिलेक्क [आभिलेक्य] ओ० ५५ से ५७, ६२
 से ६४, ६६
 आभोएत्ता [आभोग्य] रा० ८१६
 आभोएमाण [आभासयत्] रा० ७
 √आमंत [आ + मन्त्रय] —आमंतेइ ओ० ५५
 आमंतेत्ता [आमन्त्र्य] ओ० ५५. रा० ६६८

आभरणतदोस [आभरणान्तदोष] ओ० ४३
 आमलकप्वा [आमलकल्पा] रा० १,२,८ से १०,
 १३,१५,५६
 आमलग [आमलक] रा० ७७१ जी १।७२
 आमलय [आमलक] रा० ७७०
 आमेल [आपीड] ओ० ४६ रा० ६६,७०
 आमेलग [आपीडक] रा० १३३ जी० ३।३०३,
 ५६७
 आमेलय [आपीडक] ओ० ५७
 आमोट [आमोट] रा० ७७
 आमोडिज्जंत [आमोद्यमान] रा० ७७
 आमोसहिपत्त [आमर्षीषधिप्राप्त] ओ० २४
 आय [आत्मन्] जी० १।५०
 आयंक [आतङ्क] ओ० ४३, ११७. रा० १२, ७५८,
 ७५९, ७६६. जी० ३।११८
 आयंत [आचान्त] ओ० २१, ५४. रा० २७७,
 २८८, ७६५, ८०२ जी० ३।४४३
 आयंत्र [आताम्र] ओ० १६
 आयंत्रबिलय [आचाम्लक] ओ० ३५
 आयंत्रबिलवद्धमाण [आचाम्लवर्धमान] ओ० २४, ३५
 आयंस [आदर्श] रा० १४६, २५८, २७६, जी०
 ३।५६७
 आयंसग [आदर्शक] जी० ३ ३२२, ४१६, ४४५
 आयंसघरग [आदर्शगृहक] रा० १८२, १८३.
 जी० ३।२६४
 आयंसघरय [आदर्शगृहक] जी० ३।२६५
 आयंसमंडल [आदर्शमण्डल] रा० २४ जी०
 ३।२७७
 आयंसमुह [आदर्शमुख] जी० ३।२१६, २२६।४
 आयंसय [आदर्शक] ओ० १३
 आयत [आयत] ओ० १६, ४७. रा० १२४. जी०
 १।५; ३।५७७, ५६६, ६३६, १०३६
 आयपञ्चदय [आत्मप्रत्ययिक, प्रात्ययिक] रा०
 ७५४, ७५६
 आयय [आयत] जी० ३.२२, ५६७
 आयर [आदर] जी० ३।४४६

आयरकल [आत्मरक्ष] रा० ७, ४४, ५६, ५८, २८०,
 २८२, २८६, २९१, ६५७, ६६४. जी० ३।३४५,
 ३५०, ३५६, ४४६, ४४८, ५५७, ५६२, ५६३,
 ६३७, ६५६, ६८०, ७००, १०२५, १०३८
 आयरिय [आचार्य] ओ० ४०, ४१, १५५.
 रा० ७७६
 आयव [आतप] ओ० ८६
 आयवत्त [आतपत्र] ओ० ६४. रा० ५०, ५१, २५५
 आयवाभा [आतपाम] जी० ३।१०२६
 आयाए [आदाय] रा० ७७४
 आयाण [आदान] ओ० १६. जी० ३।५६६
 आयाणभंडमत्तनिकलेवणासमिय [आदानभाण्डामत्र-
 निकेपणासमित] ओ० २७, १६४
 आयाणभंडमत्तनिकलेवणासमिय [आदानभाण्डामत्र-
 निकेपणासमित] ओ० १५२. रा० ८१३
 आयास [आयाम] ओ० १३, १७०, १६२. रा०
 ३६, १२४, १२६, १२८, १३७, १७०, १८८, २०६,
 २११, २१८, २२१, २२२, २२४, २२६, २२७,
 २३०, २३३, २३८, २४२, २४४, २४६, २५१ से
 २५३, २६१, २६२, २७२. जी० ३।५१ ८१, ८२,
 ८६, २१७, २२२, २२६, २६०, ३०७, ३१०, ३५१,
 ३५३, ३५५, ३५८, ३५९, ३६१, ३६४, ३६५,
 ३६८ से ३७२, ३७४, ३७६, ३७७, ३८०, ३८१,
 ३८३, ३८५, ३८६, ३९२, ३९६, ४००, ४०४,
 ४०६, ४०८, ४१२ से ४१४, ४२२, ४२५, ४२७,
 ४३७, ५७७, ५६७, ६३२, ६३४, ६३६, ६४२,
 ६४४, ६४६, ६४६, ६४८, ६४८, ६५५, ६६८, ६७१, ६७३
 से ६७५, ६७६, ६८३, ७३६ ७३७, ७५४, ७५८,
 ७६२, ७६५, ७६८, ८३५, ८८२, ८८४, ८८७,
 ८९१, ८९३ से ८९५, ८९७, ८९९, ९०१, ९०६,
 ९०७, ९१०, ९०१ से १०१४, १०७३, १०७४
 आयाससित्यभोइ [आयामशिक्षभोजिन्] ओ० ३५
 आयासधर [आचारधर] ओ० ४५
 आयासवंत [आकारवत्] ओ० १
 आयावणभूमि [आतापनभूमि] ओ० ११६

आयावणा [आतापना] ओ० ६४

आयावय [आतापक] ओ० ३६

आयावाय [आत्मवाद] ओ० २६

आयावेमाण [आतापयत्] ओ० ११६

आयाह्णिण [आवक्षिण] ओ० ४७, ५२, ६६, ७०, ७८,
८०, ८१. रा० ६, १०, १२, ५६, ५८, ६५, ७३, ७४,
११८, १२०, ६८७, ६६२, ६६५, ७००, ७१६,
७१८, ७३८

आयिण [आजिन] जी० ३१६३७

आरंभ [आरम्भ] ओ० ६१ से ६३, १६१, १६३

आरंभसमारंभ [आरम्भसपारम्भ] ओ० ६१ से ६३

आरण [आरण] ओ० ५१, १६२. जी० ३१०३८,
१०५४, १०६६, १०६८, १०७६, १०८८, ११११

आरबी [आरबी] ओ० ७०. रा० ८०४

आरभड [आरभट] रा० १०८, ११६, २८१. जी०
३१४४७

आरभडभसोल [आरभटभसोल] रा० ११०, २८१.
जी० ३१४४७

आराम [आराम] ओ० १, ३७. रा० १२, ६५४,
६५५, ७१६. जी० ३१५५४

√आराह [आ+राध्]—आराहेहिइ रा० ८१६

आराहण [आराधक] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७,
१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७

आराहणा [आराधना] ओ० ७७

आराहय [आराधक] ओ० ७६, ७७. रा० ६२

आराहिता [आराधय] ओ० १५४. रा० ८१६

आरिय [आर्य] ओ० ५२, ७१. रा० ६६७, ६८७.
जी० ३१२२६

आरुहण [आरोहण] रा० २६१, २६४, २६६, ३००,
३०५, ३१२, ३५५. जी० ३१४५७, ४५६, ४६१,
४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५४७, ५६४

आरोहण [आरोहक] ओ० ६४

आलंकारिय [आलङ्कारिक] जी० ३१४५०

आलंबण [आलम्बन] ओ० ४३. रा० ६७५

आलंबणभूय [आलम्बनभूत] रा० ६७५

आलय [आलय] रा० ८१४

आलवंत [आलपत्] रा० ७७

आलावण [आलापक] जी० ३१६२; ५१५१, ५८

आलिग [आलिङ्ग] रा० २४, ६५, ६७, १७१. जी०
३१२१८, २७७, ३०६, ५७८, ५८८, ६७०, ७५५,
८८३

आलिगक [आलिङ्गक] जी० ३१७८

आलिगणवट्टिय [आलिङ्गवर्तिक] रा० २४५.
जी० ३१४०७

आलिघरग [आलिगृहक] रा० १८२, १८३. जी०
३१२६४, ८५७

आलिघरय [आलिगृहक] जी० ३१२६५, ८५७

√आलिह [आ+लिह्]—आलिहइ रा० २६१.

—आलिखति जी० ३१४५७

आलिहिता [आलिख्य] रा० २६५. जी० ३१४५७

आलुय [आलुक] जी० ११७३

आलोइय [आलोचित] ओ० ११७, १४०, १५७,
१६२, १६४, १६५. रा० ७६६

आलोय [आलोक] ओ० ६३, ६४. रा० ५०, ६८,
२६१, ३०६. जी० ३१४५७, ४७१, ५१६

आलोयणरिह [आलोचनाह] ओ० ३६

आवइ [आपत्] रा० ७५१

आवइकाल [आपत्काल] ओ० ११७

आवकहिय [यावत्कथिक] ओ० ३२

आवज्जीकरण [आवर्जीकरण] ओ० १७३

आवड [आवृत्त] रा० २४. जी० ३१२७७

आवडपञ्चावडसेद्विपसेद्विसोत्थियसोवत्थियपुसमाणव-

वहमाणगमच्छंडमगरंडाजारामारारुल्लावलि-

पडमपत्तसागरतरंगवसंतलतापउमलयभक्तिचित्त

[आवृत्तप्रत्यावृत्तश्रेणिप्रश्रेणिवस्तिकसौवस्तिक

पुण्यमाणववर्धमाणकमत्स्याण्डमकराण्डकजारकमार-

कफुल्लावलिपद्मपत्रसागरतरङ्गवास्तीलताप-

दलताभक्तिचित्र] रा० ८१

आवडिय [आपत्तित] रा० १४

आवण [आपन] ओ० १, ५५. रा० २८१. जी०

३१४४७, ५६४

आवत्त [आवर्त्त] रा० ६६. जी० ३।८३।१०
 आवत्तणपेठिया [आवर्त्तणपीठिका] रा० १३०.
 जी० ३।३००
 आवत्तहुल [आपत्तहुल] जी० ३।६, १०, १७, २५,
 ३०, ६३
 आवरण [आवरण] ओ० ५७, ६४. रा० १७३,
 ६८१. जी० ३।२८५
 आवरणआवरणपविभक्ति [आवरणावरणप्रविभक्ति]
 रा० ८८
 आवरित्ता [आवृत्य] रा० ७१६
 √आवरित्त [आ+वृष्]—आवरित्सेज्जा रा० १२
 आवरेत्ता [आवृत्य] रा० ७१६
 आवरेत्ताणं [आवृत्य] रा० ७१६
 आवल्लिपविभक्ति [आवल्लिपविभक्ति] रा० ८५
 आवल्लियपविट्ट [आवल्लिकाप्रविट्ट] जी० ३।७८
 आवल्लियबाहिर [आवल्लिकाबाह्य] जी० ३।७८
 आवल्लिया [आवल्लिका] ओ० २८ जी० १।१३६,
 ३.८४१
 आवल्लियापविट्ट [आवल्लिकाप्रविट्ट] जी०
 ३।१०७१
 आवल्लियाबाहिर [आवल्लिकाबाह्य] जी०
 ३।१०७१
 आवस्त्य [आवश्यक] रा० ७२३
 आवास [आवास] ओ० १, १६२. रा० ६८४,
 ६८५, ७००, ७०६. जी० ३।२५७ ७३५ से
 ७४३, ७४५ से ७४७, ७४६ से ७५१, ७७५,
 ६३७
 आवाह [आवाह] जी० ३।६१४
 आविद [आदिविद] ओ० ५२, ६३. रा० ६६,
 ७०, १३१, १४७, १४८, २८०, ६६४,
 ६८७ से ६८९, जी० ३।३०१, ४४६
 आविल [आविल] जी० ३।७२१
 आवीकम्म [आविक्कम्मन्] रा० ८१५
 आस [अश्व] ओ० ६६, १०१, १२४. रा०

७२०, ७२३, ७२४, ७२६, ७३१, ७३२.
 जी० २।८४; ३।६१८, ६३१, १०१५
 आसकण्ण [अश्वकर्ण] जी० ३।२१६, २२६
 आसग [आस्यक] जी० ३।१०६
 आसण [आसन] ओ० १४, १४१. रा० १८५,
 ६७१, ६७५ ७१४, ७६६. जी० ३।२६७
 ५७६, ६८३, ११२८, ११३०
 आसणव्याण [आसनप्रदान] ओ० ४०
 आसणाभिग्गह [आसनाभिग्गह] ओ० ४०
 आसत्त [आसत्त] ओ० २. ५५. रा० ३२, २८१
 २६१, २६४, २६६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५.
 जी० ३।३७२, ४४७, ४५६, ४६१, ४६२,
 ४७०, ४७७, ५१६, ५२०
 आसधर [अश्वधर] ओ० ६६
 आसम [आश्रम] ओ० ६८, ८६ से ९३, ९५
 ९६, १५५, १५८ से १६१, १६३, १६८.
 रा० ६६७
 आसमुह [अश्वमुख] जी० ३।२१६, २२६
 √आसय [आस]—आसयन्ति रा० १८५ जी०
 ३।२१७—आसयह रा० ७५३
 आसरह [अश्वरथ] रा० ६८१ से ६८३, ६८५।६९०
 से ६९२, ६९७, ७०६, ७१०, ७१४, ७१६,
 ७२२, ७२४, ७२६
 आसल [आसल] जी० ३।८१६, ८६०, ९५६
 आसव [आश्रव] ओ० ७१, १२०, १६२. रा०
 ६६८, ७५२ ७८६
 आसव [आसव] जी० ३।५८६
 आसवोद [आसवोद] जी० ३।२८६
 आसवोयग [आश्रवोदक] रा० १७४
 आसा [आशा] ओ० २५, ४६, रा० ६८६
 आसाएमाण [आस्वाद्यत्] रा० ७६५, ८०२
 आसाद [आस्वाद] जी० ३.८६०, ८६६, ८७२
 ८७८, ९५५, ९६०
 आसादणिज्ज [आस्वादनीय] जी० ३।६०२, ८६०
 ८६६, ८७२, ८७८, ९५५, ९६०
 आसाय [आस्वाद] जी० ३।६०१ ६०२, ९६१

आसालिय [आशालिक] जी० १।१०५, ११०,
१३३; २।१०५
आसित्त [आसित्त] ओ० ५५, ६० से ६२
आसिय [आसित्त] रा० २८१. जी० ३।४४७
आसीत [अशीति] जी० ३।५
आसीविस [आसीविस] जी० १।१०७
✓आह [ब्रू]—आहंसु जी० १।१०—
आहिज्जति जी० १।१०
आहत [आहत] जी० ३।८४५
आहम्मंत [आहन्यमान] रा० ७७
आहय [आहत] ओ० ६८
✓आहर [आ+हृ]—आहरेइ ओ० ११८
आहरण [आभरण] ओ० ४६. रा० ६८८
आहाकम्मिय [आघाकम्मिक] ओ० १३४
आहार [आहार] ओ० ३३, ७३, ६२, ११७ से ११६.
रा० ७३२, ७३७, ७७२, ७६६. जी० १।१४, ३३,
५०, ५६, ६५, ८२, ८७, ९६, १०१, ११६, १३३,
१३६; ३।६७, १२७, १२६, ५६६, ६००, ६०३,
६३१; ६।६६
आहार [आधार] रा० ६७५
✓आहार [आ+हारय्]—आहारेइ रा० ७३२—
आहारेति रा० ७०३. जी० १।३३
आहारपज्जति [आहारपर्याप्ति] जी० १।२७
आहारम [आहारक] जी० ६।३८ से ४०, ४६,
५०, ५५
आहारगमीसासरीर [आहारकमिश्रकशरीर] ओ०
१७६
आहारगसरीर [आहारकशरीर] ओ० १७६ जी०
६।१७८
आहारगसरीरि [आहारकशरीरिन्] जी० ६।१७०,
१७३, १८१
आहारत्त [आहारत्त] जी० ३।११००
आहारपज्जति [आहारपर्याप्ति] रा० २७४, ७६७
जी० १।२६; ३।४४०
आहारभूय [आहारभूत] रा० ६७५
आहारय [आहारक] जी० ६।३६, ४१

आहारसण्णा [आहारसंज्ञा] जी० १।२०, १३२;
३।१२८
आहारित्ता [आहार्य] जी० ३।६०३
आहारेत्तए [आहर्तुम्] ओ० ६३
आहारेमाण [आहरत्] ओ० ३३. रा० ७६५
✓आहाव [आ+धाव्]—आहावति रा० २८१
आहिय [आह्यात] जी० ३।८३८, ३
आह्व [आहोत्] ओ० २
आह्वणज्ज [आहवनीय] ओ० २
आह्वणिय [आहृत्य] रा० ६
आह्वेत्त [आधिवत्त] ओ० ६८. रा० २८२.
जी० ३।३५०, ३५६, ४४८, ५६३, ६३७, ६५६,
७६०, ७६३

[इ]

इ [चित्] ओ० ७४।४
इ [इति] जी० ३।६५
✓इ [इ]—एति जी० ३।१७६—एह रा० ७२३
इइ [इति] रा० २४
इओ [इत्तस्] ओ० ८८
इंगाल [अङ्गार] रा० ४५. जी० १।७८; ३।८५,
११८
इंगालसोलिय [अङ्गारपक्व] ओ० ६४
इंगिय [इङ्गित] ओ० ७०. रा० ८०४
इंद [इन्द्र] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४८,
७५५, ८४३, ८४६, ८४७, ९३७, १०४८
इंदकील [इन्द्रकील] ओ० १. रा० १३०
इंदकील [इन्द्रकील] जी० ३।३००
इंदगोव [इन्द्रगोव] रा० २७
इंदगोवय [इन्द्रगोपक] जी० ३।२८०
इंदगह [इन्द्रगह] जी० ३।६२८
इंदगुण [इन्द्रस्थान] जी० ३।८४८, ८४७
इंदधणु [इन्द्रधनुष्] जी० ३।६२६, ८४१
इंदभूइ [इन्द्रभूति] ओ० ८२
इंदमह [इन्द्रमह] रा० ६८८, ६८६ जी० ३।६१५
इंदाभिसेग [इन्द्राभिषेक] रा० २८२, २८३.
जी० ३।४४६, ४४७

इंदाभिसेय [इन्द्राभिषेक] रा० २७८ से २८१
 जी० ३।४४४, ४४८, ४४९
 इंद्रिय [इन्द्रिय] ओ० ६३. जी० १।१४, २२, ८६,
 ८८, ९०, ९६, १०१, ११६, १२८, १३६; ३।५६२,
 ६०२, ६७६
 इंद्रियपञ्जसि [इन्द्रियपर्याप्ति] रा० २७४, ७६७.
 जी० १।२६; ३।४४०
 इंद्रियपञ्चसंलीणया [इन्द्रियप्रतिसंलीनता] ओ०
 ३७
 इंद्रु [इन्द्रु] रा० २५५. जी० ३।४१६
 इक्कमिक्क [एकैक] जी० ३।१२७
 इक्कलाग [इक्ष्वाकु] रा० ६८८
 इक्कलागपरिसा [इक्ष्वाकुरिपद्] रा० ६१
 इक्कलुवाड [इक्षुवाट] रा० ७८१, ७८४, ७८६,
 ७८७
 इगयालीस [एकचत्वारिंशत्] जी० २।७६८
 √ इच्छ [इष्]—इच्छइ रा० ७५१—इच्छसि
 रा० ७६५—इच्छसी जी० ३।८३८।२६
 —इच्छामि रा० ६३—इच्छेज्ज रा० ७५१
 —इच्छेज्जा रा० ७५१
 इच्छा [इच्छा] ओ० ४६
 इच्छापरिमाण [इच्छापरिमाण] ओ० ७७
 इच्छिय [इष्ट] ओ० २३, ६६. रा० ६६५
 इच्छियपडिच्छिय [इष्टप्रतीष्ट] ओ० ६६.
 रा० ६६५
 इट्टावाय [इष्टकापाक] जी० ३।११८
 इट्ट [इष्ट] ओ० १५, ६८, ११७. रा० ६७२, ६८५,
 ७१०, ७५० से ७५३, ७७४, ७६६.
 जी० १।१३५; ३।१०६०, १०६६, ११२४
 इट्टतर [इष्टतर] जी० ३।१०७८, १०७९
 इट्टतराय [इष्टतरक] रा० २५ से ३१, ४५.
 जी० ३।२७८ से २८४, ६०१, ६०२, ८६०, ८६६,
 ८७२, ८७८, ९५६, ९६१
 इड्डरा [दे०] रा० ७७२
 इड्डरय [दे०] रा० ७७२

इड्डि [ऋडि] ओ० ४७, ६५, ६७, ७२, ८६ से ९५,
 ११४, ११७, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७.
 रा० १३, १५ से १७, ५५, ५६, ५८, २८०, २९१,
 ६५७, ७७२, ८०३, ८०५. जी० ३।४४६, ४४८,
 ४५७, ५५७, ६०६
 इण [एतत्] जी० ३।५
 इणं [इदम्] ओ० ७२
 इति [इति] रा० ८. जी० ३।११८
 इतिहास [इतिहास] ओ० ९७
 इत्तरिय [इत्वरिक] ओ० ३२
 इत्ति [इति] जी० १।१३६
 इत्तो [इतस्] ओ० १६५।१७. रा० २५.
 जी० ३।२७८
 इत्थ [अत्र] जी० ३।२४४
 इत्थंठिय [इत्थंस्थित] ओ० ७२
 इत्थिय [स्त्री] जी० २।१०५
 इत्थिकहा [स्त्रीकथा] ओ० १०४, १२७
 इत्थिया [स्त्री] ओ० ६२. जी० २।११, १५ से १६,
 ३७, ६७ से ७२, ७४, १४४, १४६ से १४८, १५१;
 ३।८८
 इत्थियलक्षण [स्त्रीलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६
 इत्थियेव [स्त्रीवेद] जी० १।१३६; २।७३, ७४;
 ६।१२६
 इत्थियेवग [स्त्रीवेदक] जी० ६।१३०
 इत्थियेय [स्त्रीवेद] जी० १।२५, १३३
 इत्थियेयग [स्त्रीवेदक] जी० ६।१२१
 इत्थियेयय [स्त्रीवेदक] जी० ६।१२२
 इत्थी [स्त्री] ओ० ३७. जी० २।१ से ३, ६, १०,
 १४, २० से ३०, ३२ से ३६, ३६ से ४६, ५४,
 ५६ से ६६, ७०, ७६, ७८, ८०, ८३, ८५, ८६, ९४,
 १०५, १४१ से १५१; ३।१४८, १४९, १६४
 इत्थीलिगसिद्ध [स्त्रीलिङ्गसिद्ध] जी० १।८
 इवार्णि [इदानीम्] जी० ३।८४३
 इम्भ [इभ्य] ओ० २३, ५२, ६३. रा० ६८७ से
 ६८९, ६९५, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४.
 जी० ३।६०६

इन्भपुत्त [इन्भपुत्र] रा० ६८८, ६८९, ६९५
 इम [इदम्] ओ० ७. जी० ११०
 इयार्णि [इदानीम्] ओ० ११७. रा० ७५३
 इरियासमिय [ईर्यासमित] ओ० २७, १५२, १६४
 इव [इव] ओ० २३. रा० ७०. जी० ३४४८
 इसिपरिसा [ऋषिपरिषद्] ओ० ७१. रा० ६१,
 ७६७
 इसिवादिय [ऋषिवादिक] ओ० ४९
 इह [इह] ओ० २१. रा० ६८७. जी० १११
 इहं [इह] ओ० २१. रा० ६८७.
 जी० ३११९

इहगत [इहगत] रा० ८
 इहगय [इहगत] ओ० २१. रा० ७१४
 इहभव [इहभव] ओ० ५२. रा० ६८७
 इहलोग [इहलोक] ओ० २९

ई

ईयाल [एकचत्वारिंशत्] जी० ३१७३६
 ईरियासमिय [ईर्यासमित] रा० ८१३
 ईसत्य [इष्वसत्र] ओ० १४६. रा० ८०६
 ईसर [ईषवर] ओ० १८, २२, ६३, ६८. रा० २८२,
 ६८७, ६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४.
 जी० ३३३०, ४४८, ५६३, ६०९, ६३७, ७२३
 ईसा [ईषा] जी० ३२५४
 ईसाण [ईशान] ओ० ५१, १९०, १९२.
 जी० १५९; २१९, ४७, ९६, १४८, १४९;
 ३१९, ९२१, १०३८, १०४३, १०४४, १०५७,
 १०६५, १०६७, १०७१, १०७३, १०७५, १०७७
 से १०८३, १०८५, १०८७, १०९०, १०९१,
 १०९३, १०९७ से १०९९, ११०१, ११०५,
 ११०७, ११०९ से १११२, १११४, १११५,
 १११७, १११९, ११२१, ११२२, ११२४, ११२८
 ईसाणग [ईशानग] जी० ३१०४३
 ईसि [ईषत्] ओ १३. रा० ४. जी० ३२६५
 ईसिणिया [ईशानिका] ओ० ७०. रा० ८०४
 ईसी [ईषत्] ओ० ४७
 ईसीपन्भारा [ईषत्प्राभारा] ओ० १९१ से १९५

ईहा [ईहा] ओ० ११९, १५६. रा० ७४०
 ईहामइ [ईहामति] रा० ६७५
 ईहामिअउसभतुरगनरमगरविहगवालागकिन्नररुह-
 सरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभक्तिचिसा
 [ईहामृगवृषभतु] गनरमकरविहग-यालक-
 किन्नररुहसरभचमरकुञ्जरवनलतापद्यालता
 भक्तिचित्र] रा० ८३
 ईहामिय [ईहामृग] ओ० १३. रा० १७, १८, २०,
 ३२, ३७, १२९. जी० ३१२८८, ३००, ३११, ३७२

उ

उ [तु] जी० २१५१
 उंबर [उदुम्बर] जी० ११७२
 उंबरपुष्प [उदुम्बरपुष्प] रा० ७५० से ७५३
 उक्कंचण [दे०] रा० ६७१
 उक्कंचणया [दे०] ओ० ७३
 उक्कलियावाय [उत्कलिकावात] जी० ११८१
 उक्कस [उत्कर्ष] जी० ५२८
 उक्का [उत्का] रा० ७०, १३३. जी० ११७८;
 ३११९, ३०३, ५९०, ११२३
 उक्कापात [उत्कापात] जी० ३३२६
 उक्कामुह [उत्कामुख] जी० ३२१६, २२६
 उक्किट्टु [उत्कुष्ट] ओ० ५२. रा० १०, १२, ५६,
 २७९, ६८७, ६८८. जी० ३१८६, १७६, १७८,
 १८०, १८७, ४४५, ८४२, ८४५
 उक्किट्टि [उत्कृष्टि] जी० ६४४७
 उक्किट्टिया [उत्कृष्टिका] रा० २८१
 उक्किरिज्जसाण [उत्कीर्यमाण] रा० ३०.
 जी० ३२८३
 उक्कुडुयासणिय [उत्कुट्टुकासनिक] ओ ३६
 उक्कोडिय [औत्कोटिक] ओ० १
 उक्कोस [उत्कर्ष] ओ० ९४, ९५, ११४, १५५, १५७,
 १५९, १६०, १६२, १६७, १८७, १८८, १९५५.
 जी० १११६, ५२, ५९, ६५, ७४, ७९, ८२, ८६ से
 ८८, ९०, ९४, ९६, १०१, १०३, १११, ११२, ११६,
 ११९, १२१, १२३ से १२५, १३०, १३३, १३५

से १४०, १४२; २२० से २२, २४ से ५०,
 ५३, से ६१, ६३, ६५ से ६७, ७३, ७६, ८२ से
 ८४, ८६ से ८८, ९० से ९३, ९७ १०० से १११,
 ११३, ११४, ११६ से १३३, १३६; ३५६, ८६,
 ६१, १०७, ११८ से १२०, १२६, १३६, १६१,
 १६२, १६५, १७६, १७८, १८०, १८२, १८६ से
 १६२, २१८, ६२६, ८४४, ८४७, ८६०, ८६६,
 १०२२, १०२७ से १०३६, १०८३, १०८४,
 १०८७, १०८६, ११११, ११३१, ११३२, ११३४
 से ११३७; ४३ से ११, १६, १७; ५१५, ७, ८,
 १० से १६, २१ से २४, २८ से ३०; ६१२, ३,
 ६, ८ से ११; ७३, ५, ६, १०, १२ से १८;
 ६१२ से ४, २३ से २६, ३१, ३३, ३४, ३६, ४०, ४१,
 ४३, ४७, ४६, ५१, ५२, ५७ से ६०, ६८ से ७३,
 ७७, ७८, ८०, ८३, ८५, ८६, ९०, ९२, ९३, ९६, ९७,
 १०२, १०३, १०५, १०६, ११४, ११५, ११७, ११८,
 १२३ से १२८, १३२, १३४, १३६, १३८, १४२,
 १४४, १४६, १४६, १५०, १५२, १५३, १६० से
 १६२, १६४, १६५, १७१ से १७३, १७६ से १७८,
 १८६ से १६१, १६३, १६४, १६८ से २००,
 २०२ से २०४, २०६, २०७, २१० से २१४,
 २१६ से २१८, २२२ से २२५, २२८, २२९,
 २३४, २३६, २३८, २४१ से २४४, २४६, २५७
 से २६०, २६२, २६४, २६६, २७१, २७३, २७७
 से २८२

उक्कोसपद [उत्कर्षपद] जी० ३११६५ से १६७
 उक्कोसपय [उत्कर्षपद] जी० ३११६५
 उक्किलत [उत्क्षिप्त] रा० ११५, जी० ३१४४७
 उक्किलताचरय [उत्क्षिप्तचरक] ओ० ३४
 उक्किलताणिकिलतधरय [उत्क्षिप्तनिकिप्तचरक]
 ओ० ३४
 उक्किलताय [उत्क्षिप्तक] रा० १७३, २८१-
 जी० ३१२८५
 उक्कु [उक्षु] जी० ३१६२१
 उक्खेवण [उत्क्षेपन] ओ० १८०
 उग्ग [उग्र] ओ २३, ५२. रा० ६८७ से ६८९, ६९५

उग्गत [उद्गत] जी० ३१३००, ५६५
 उग्गतव [उग्रतपस्] ओ० ८२
 उग्गपुत्त [उग्रपुत्र] ओ० ५२. रा० ६८७ से ६८९,
 ६९५
 उग्गमणुग्गमणपविभत्ति [उद्गमनोद्गमनप्रविभक्ति]
 रा० ८६
 उग्गय [उद्गत] रा० १७, १८, २०, ३२, १२६.
 जी० ३१२८८, ३७२, ५६०
 √उग्गलच्छाव [दे०] — उग्गलच्छावेमि रा० ७५४
 उग्गलच्छावित्ता [दे०] रा० ७५४
 उग्गह [अवग्रह] रा० ७४०, ७४१
 उग्घोसेमाण [उद्घोषयन्] रा० १३, १५
 उक्च [उच्च] जी० ३१३१३
 उक्चंतम [उच्चन्तक] रा० २६. जी० ३१२७६
 उक्चत्त [उच्चत्व] ओ० १८७. रा० ४०, १२७ से
 १२६, १३७, १८६, १८६, २०४ से २१२, २२२,
 २२७, २३१, २३६, २४७, २५१, २५३.
 जी० ३१२७७, २६१ से २६३, ३००, ३०७,
 ३५२ से ३५५, ३५६, ३६४, ३६८ से ३७४,
 ३७६, ३८१, ३८६, ३९३, ४०१, ४१२, ४१४,
 ५६६, ५६७, ६३२, ६३४, ६४६, ६४७, ६५२, ६६१,
 ६६३, ६७२ से ६७५, ६७६, ६८६, ७०६, ७१३,
 ७३६, ७३७, ७५६, ७६५, ८३६, ८८२, ८८४,
 ८८५, ८८७, ८८८, ८९४, ८९८, ९००, ९०७,
 ९११, ९१८, ९०६७, ९०६६, ९०७०
 उक्चार [उच्चार] रा० ७६६
 उक्चारण [उच्चारण] ओ० १८२
 उक्चारपासवणखेलसिघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिय
 [उक्चारप्रसवणखेलेसिघाणजल्लपारिष्ठापनि-
 कीसमित] ओ० २७, १५२, १६४. रा० ८१३
 उक्चावय [उच्चावच] ओ० १४०, १५४, १६५,
 १६६. रा० ७६६, ८१६. जी० ३१२३६, ६८२
 उक्छंण [उत्सङ्ग] ओ० ६४
 √उक्छल [उत् + शल्] — उक्छलेति रा० २८१.
 जी० ३१४४७
 उक्छलंत [उक्छलत्] ओ० ४६

उच्छायणया [उच्छादना] रा० ६७१
 उच्छु [इक्षु] ओ० १. जी० ३।८७८, ९६१
 √उच्छुभ [उत् + क्षिप् — उच्छुभइ. रा० ७८५
 उच्छुद्ध [उत्क्षिप्त] ओ० १९. जी० ३।५९६
 उच्छुद्धसरीर [उत्क्षिप्तशरीर] ओ० ८२. रा० ६८६
 उच्चम [उचम] ओ० ४६
 उच्चल [उच्चल] ओ० ५, ८, १९, ५७. रा० ३२,
 ६९, ७०, २४९, ७९५. जी० ३।११०, १११,
 ११७, २७४, ३७२, ४१०, ५८९ से ५९१, ५९६
 उज्जाण [उद्यान] ओ० १, ३७. रा० १२, ६५४,
 ६५५, ६७०, ७०६, ७११, ७१३, ७१६, ७१९,
 ७२९. जी० ३।५५४
 उज्जाणपालक [उद्यानपालक] रा० ७०७, ७१३, ७१४
 उज्जाणपालय [उद्यानपालक] रा० ७०६
 उज्जाणभूमि [उद्यानभूमि] रा० ७३२, ७३७, ७४७
 उज्जालिय [उज्जालित] जी० ३।५८९
 उज्जु [ऋजु] ओ० १९, ४७. जी० ३।५९६, ५९७
 उज्जुमइ [ऋजुमति] ओ० २४. रा० ७४४
 उज्जुय [ऋजुक] ओ० १९. जी० ३।५९६, ५९७
 उज्जुसेढी [ऋजुश्रेणी] ओ० १८२
 उज्जोइय [उद्द्योतित] जी० ३।५९८
 उज्जोएमाण [उद्द्योतयत्] जी० ३।३०३
 उज्जोय [उद्द्योत] ओ० १२. रा० २१, २३, २४,
 ३२, ३४, ३६, १२४, १४५, १५७, २२८, २५७.
 जी० ३।२६१, २६६, २६९, २७७, ३८७, ५८९,
 ५९०, ६७२
 √उज्जोव [उद् + व्युत] — उज्जोवेइ. रा० ७७२,
 जी० ३।३२७ — उज्जोवेति. रा० १५४. जी०
 ३।३२७ — उज्जोवेति. रा० १५४ जी० ३।७४१
 उज्जोविय [उद्द्योतित] ओ० ५१, ६३, ६५
 उज्जोवेमाण [उद्द्योतयत्] ओ० ४७, ७२. रा० ७०,
 १३३. जी० ३।११२१, ११२२
 उट्ट [उट्ट] ओ० १०१, १२४. जी० ३।६१८
 उट्टियासमण [उट्टिकाश्रमण] ओ० १५८
 उट्टी [उट्टी] जी० ३।६१९

√उट्टा [उत् + ष्ठा] — उट्टेइ. ओ० ७८. रा० ६९५
 — उट्टेति. ओ० ८१. — उट्टेति. रा० ६०
 उट्टा [उत्था] ओ० ७८. ८०. ८१, ८३. रा० ६०, ६२,
 ६१५, ७००, ७१८, ७८०
 उट्टिय [उत्थित] ओ० २२. रा० ७७७, ७७८,
 ७८८
 उट्टेसा [उत्थाय] ओ० ७८. रा० ६०
 उट्टज [उटज] तागसगृह जी० ३।७८
 √उट्ट [दे०] — उट्टइज्जइ. रा० ७८५
 उट्टुवइ [उट्टुपति] ओ० १९
 उट्टुवति [उट्टुपति] जी० ३।५९६
 उट्ट [उट्ट] ओ० ११९. १८२, १९२. रा० १२४,
 १२७ से १२९, १३७, १८६, १८९, २०४ से २१२,
 २२२, २२७, २३१, २३९, २४७, २५१, २५३,
 ७५३. जी० १।४५; ३. २५७, २६१ से २६३,
 ३००, ३०७, ३५२ से ३५५, ३५९, ३६४, ३६८
 से ३७४, ३७६, ३८१, ३८६, ३९३, ४०१, ४१२,
 ४१४, ५६६, ६३२, ६३४, ६४६, ६४७, ६६१,
 ६६३, ६७२ से ६७५, ६७९, ६८९, ७०६, ७१३,
 ७३६, ७३७, ७५६, ८३८, ८३९, ८४२, ८४५,
 ८८२, ८८४, ८८५, ८८७, ८८८, ८९४, ८९८,
 ९००, ९०७, ९११, ९१८, ९०३, ९०६, ९०६, ९०६,
 १०७०, ११११
 उट्टंजाणु [उट्टंजानु] ओ० ४५. ८२
 उट्टंवाय [उट्टंवात] जी० १।८१
 उट्टीमुख [उट्टीमुख] जी० ३।८४२
 उष्णइय [उन्नतिक] ओ० ६ जी० ३।२७५, २८६,
 ६३९, ८५७, ८६३
 उष्णत [उन्नत] रा० २४५
 √उष्णस [उत् + नम्] — उष्णसंति. रा० ७५
 उष्णमिता [उन्नम्य] रा० ७५
 उष्णय [उन्नत] ओ० १, १९. जी० ३।४०७, ५९६,
 ५९७
 उष्णयासण [उन्नतासन] रा० १८१, १८३,
 जी० ३।२९३

√उष्णाम [उद्+नामय्]—उष्णामिउजइ.

जी० ३।७२६

उष्ण [उष्ण] ओ० ११७. रा० ७२८,७६६.

जी० ३।११८,११९

उत्ताप्य [उत्तप्त] रा० ७३२,७३७

उत्तम [उत्तम] ओ० २३,५१. रा० २६२.

जी० ३।४५७,५६२,५६६ से ५६८

उत्तमंग [उत्तमाङ्ग] जी० ३।५६६

उत्तर [उत्तर] ओ० २१. रा० १९,४०,४१,४४.

१३२,१७०,१७३,२१०,२१२,२३५,२३६,

६५८,६६४,६८५,७६५,८०२. जी० २।४८;

३।५,२२,२७,६३,६६ से ७२,७७,२२६,२२७,

२३२,२५७,२६५,२८५,३३९,३४५,३५८,

३७३,३९७,३९८,५५८,५६२,५६६,५६९,

५७७,५९५,५९७,६०१,६६५,६३८,६३९,

६४७,६५७,६६०,६६१,६६५,६६६,६७३,

६८०, ६८२,६८९,६९२,६९५,६९६,७०१,

७११, ७१३,७२२,७३६,७४५,७४७,८१२,

८३९,८८२,८८५,९०२,१००४,१००६,१०१५

उत्तरंग [उत्तरङ्ग] रा० १३०. जी० ३।३००

उत्तरकुरा [उत्तरकुरु] जी० २।१३; ३।५७८, से

५९७,६०५ से ६२८,६३१,६३२,६३९,६६६,

६६८,७०२

उत्तरकुरा [उत्तरकुरा] जी० ३।६१९,६३७

उत्तरकुरु [उत्तरकुरु] जी० २ ३३,६०,७०,७२,

६६,१३७,१३८,१४७,१४९; ३।२१८,२२८,

७६५

उत्तरकुड्द्रह [उत्तरकुड्द्रह] जी० ३।६६६

उत्तरकूलग [उत्तरकूलक] ओ० ६४

उत्तरतर [उत्तरतर] ओ० ७६ से ८१

उत्तरपञ्चस्थिम [उत्तरपाञ्चात्य] जी० ३।२२५,

६८८,७५३

उत्तरपञ्चस्थिमिल्ल [उत्तरपाञ्चात्य] जी० ३।२२१,

६६६,६६७,६१८,६२२

उत्तरपासग [उत्तरपाश्वर्क] रा० १३०

उत्तरपासय [उत्तरपाश्वर्क] जी० ३।३००

उत्तरपुरस्थिम [उत्तरपीरस्थ] ओ० २. रा० २,

१०,१२,१८,४१,५६,६५,२०९,२४६,२५१,

२६०,२६२,२६५,२६७,२६९,२७२,२७३,

२७९,६५८,६७०,६७८. जी० ३।३३९,३७२,

४०८,४१२,४२१,४२५,४२६,४३१,४३४,

४३७,४३८,४४५,५५८,६३५,६५७,६६८,

६८०,६८३,७५०

उत्तरपुरस्थिमिल्ल [उत्तरपीरस्थ] जी० ३।२१७,

२२२,५५६,६८९,६९८,६९९,६९९,६९९.

उत्तरमंदा [उत्तरमन्दा. उत्तरमन्दा] रा० १७३.

जी० ३।२८५

उत्तरवेउविद्य [उत्तरवैक्रिय] रा० १०,४७.

जी० १।९४,९६,१३५,१३६; ३।९१,९३,४४६,

१०८७,१०८८,१०९१,११२१,११२२

उत्तरागार [उत्तराकार] रा० १६५

उत्तरासंग [उत्तरासङ्ग] ओ० २१,५४. रा० ८,

७१४

उत्तरासंगकरण [उत्तरासङ्गकरण] ओ० ६६.

रा० ७७८

उत्तरिज्ज [उत्तरीय] ओ० ६३

उत्तरित्तए [उत्तरीतुम्] ओ० १२२

उत्तरिल्ल [औदीच्य,औत्तराह] रा० ४८,५६,

५७,२६७,३०२,३०७,३१३ से ३१६,३१८,

३२१ से ३३१,३३६,३४१ ३४६,३७६,३९४,

४३५, ४५३,४६६,५१४,५५६,५७४,६१६,

६३४. जी० ३।३३,३६,३८,२२७,२४०,२४८,

२५०,२५६,४६२,४६७,४७२ ४७८ से ४८१,

४८३,४८६ से ४९६,५०१,५०६,५११,५२३,

५२४,५२९,५३०,५३७,५३८,५४४,५४५,

५५१,५५२,६७३,६९७,६९८,६९८,६९६

उत्ताणग [उत्तानक] ओ० १

उत्ताणयछ्त्ता [उत्तानकछ्त्त्र] ओ० १६४

उत्तालिज्जंत [उत्ताड्यमान] रा० ७७

उत्तासणय [उत्तासनक] जी० ३।८३

उत्तामंग [उत्तमाङ्ग] ओ० १६. जी० ३।५६७

उद [उद] जी० ३।२८६

उदक [उदक] जी० ३१५८७
 उदक [उदक] रा० २६. जी० ३१८१६
 उदकजोणिय [उदकयोनि] जी० ३१७८७
 उदक [उदक] ओ० ६३, ११७. रा० १५१, २७६,
 २८१. जी० ३१४४५, ४४७, ७२१, ७२६, ८५४,
 ८५७, ९४६
 उदकत्त [उदकत्त] जी० ३१७८७
 उदकमच्छ [उदकमत्स्य] जी० ३१६२६, ८४१
 उदकमाल [उदकमाल] जी० ३१७६२
 उदकरस [उदकरस] रा० २३३. जी० ३१२८६,
 ८१६, ८५४, ९५६, ९५७, ९६४
 उदकवारण [उदकवारक] जी० ३१११८
 उदक [उदक] जी० ३१८३६
 उदधि [उदधि] जी० ३१०६, ५६७
 उदय [उदय] ओ० ३७, ११६, ११७
 उदय [उदक] ओ० ६, १११ से ११३, ११७, १३७,
 १३८. रा० ६, २८०, २८२, २९१, ३५१.
 जी० ३१३२४, ४४६, ४४८, ७२६, ८६०, ८६६,
 ८७२, ८७८, ९४६, ९५५, ९५७, ९६१
 उदयपत्त [उदयप्राप्त] ओ० ३७
 उदर [उदर] जी० ३१५६६
 उदहि [उदधि] ओ० ४८
 √उदि [उद् + इ]—उदेति. जी० ३११७६
 उदीण [उदीचन] रा० १२४. जी० ३१५७७,
 १०३६
 उदीणवाय [उदीचीनवात] जी० ११८१
 √उदीर [उद् + ईरय्]—उदीरह. रा० ७७१.
 —उदीरेति, जी ३१११०
 उदीरत [उदीरयत्] रा० ७७१
 उदीरण [उदीरण] ओ० ३७
 उदीरिय [उदीरित] रा० १७३, ७७१.
 जी० ३१२८५
 उदु [ऋतु] जी० ३१६४१
 उदुङ्ग [उदुङ्क] ओ० ६४
 उदुवणकर [उदुवणकर] ओ० ४०
 उदुवेत्ता [उदुवृत्य] रा० ७६१

उद्वा(ण) [दे०] जी० ३१८७२
 उद्वाइत्ता [अवद्राय, अवद्रुत्य] जी० ३१५७५
 उद्वाल [अवदाल] रा० २४५. जी० ३१४०७
 उद्वाल [उद्वाल] जी० ३१६३१
 उद्वालक [उद्वालक] जी० ३१५८२
 उद्दिष्ट [उद्दिष्ट] जी० ३१८३८, २५
 उद्दिष्टा [दे० उद्दिष्टा] ओ० १२०, १६२.
 रा० ६६८, ७५२, ७८६. जी० ३१७२३, ७२६
 उद्दिसिय [औद्देशिक] ओ० १३४
 उद्दसणा [उद्दसणा] रा० ७६६
 उद्दसित्तए [उद्दसित्तुम्] रा० ७६६
 उद्दमत [उद्दमत] जी० ३१७३१
 उद्दम्ममाण [उद्दह्यमान] ओ० ४६
 उद्दायमाण [उद्दायत्] ओ० ४६
 उद्दार [उद्दार] जी० ३१६७३
 उद्दारसमय [उद्दारसमय] जी० ३१६७३
 उद्दारसागरोवम [उद्दारसागरोपम] जी० ३१६७३
 उद्दिय [उद्दित] ओ० १४. रा० ६७१
 उद्दुष्य [उद्दुत] ओ० २, ५५, ६४. रा० ६, १२३२,
 ५०, ५२, ५६, १३२, १३७, २३१, २३६, २४७,
 २८१. जी० ३१८६, १७६, १७६, १८०, १८२,
 ३०२, ३०७, ३७२, ३६३, ३६८, ४४५, ४४७,
 ४५१
 उद्दुमंत [उद्दुमायमान] रा० ७७
 उद्दुव्यमाण [उद्दुयमान] ओ० ६५
 उद्दुष्य [उद्दुष्य] रा० १०, १२, ५६, २७६
 उन्नइय [उन्नतिक] जी० ३१११८, ११६
 उन्नय [उन्नत] ओ० १६ जी० ३१५६७, ५६८
 उपपुय [उपप्लुत] जी० ३१११६
 उपपइत्ता [उत्पत्य] ओ० १६२. जी० ३११०३८
 उपपण [उत्पन्न] ओ० १६६. रा० ७७१
 उपपणकोऊहल्ल [उत्पन्नकौतूहल्ल] ओ० ८३
 उपपणसंसय [उत्पन्नसंशय] ओ० ८३
 उपपणसड्ड [उत्पन्नश्रद्ध] ओ० ८३
 उपपत्तित्ता [उत्पत्य] जी० ३१२५७

उत्पत्ति [उत्पत्ति] ओ० १८४

उत्पत्तिया [औत्पत्तिकी] रा० ६७५

√उत्पद्य [उत्+पत्]—उत्पद्यति. रा० २८१.

जी० ३।४४७

उत्पल [उत्पल] ओ० १२, २२, १५०. रा० २३,
१३१, १४७, १४८, १७४, १६७, २७६ से २८१,
२८८, २८६, ७२३, ७७७, ७७८, ७८८.

जी० ३।११८, ११६, २५६, २६६, २८६, २६१,
३०१, ४४५, ४४७, ४५४, ४५५, ५६८, ६३७,
६५६, ६६४, ७३८, ७४३, ७५०, ७६३, ७६५,
७७५, ८४१, ६३७

उत्पलगुम्भ [उत्पलगुल्भ] जी० ३।६८६

उत्पलबोद्धिय [उत्पलवृन्तिक] ओ० १५८

उत्पला [उत्पला] जी० ३।६८६

उत्पलुज्जला [उत्पलोज्जला] जी० ३।६८६

उत्पाइत्ता [उत्पाद्य] जी० १।५०

उत्पाइयपव्वय [औत्पातिकपर्वत] ओ० ५७

√उत्पाड [उत्+पाद्य]—उत्पाडति ओ० १६६

उत्पाटवय [उत्पाटना] ओ० १०३, १२६

उत्पातपव्वतग [उत्पातपर्वतक] जी० ३।६४८

उत्पातपव्वय [उत्पातपर्वत] जी० ३।८५७

उत्पाव [उत्पाव] जी० ३।६१७

उत्पाय [उत्पाद] जी० ३।१२६।१०

उत्पायनिवायपसत्त [उत्पावनिपातप्रसक्त]

रा० १११, २८१. जी० ३।४४७

उत्पायपव्वत [उत्पातपर्वत] जी० ३।२६३

उत्पायपव्वय [उत्पातपर्वत] रा० १८१. जी०

३।२६२, ८५७

उत्पायपव्वयग [उत्पातपर्वतक] रा० १८०

उत्पिय [उत्परि] ओ० १६८. रा० २१. जी० ३।८०

उत्पिज्जलभूत [उत्पिज्जलभूत] रा० ७८

√उत्पील [उत्+पीड्]—उत्पीलेति. जी०

३।७६५

उत्पीलिय [उत्पीडित] ओ० ५७. रा० ६६, ६६४,

६८३. जी० ३।५६२

उत्फेस [दे०] ओ० ६६

√उत्भाम [उद्+भ्रामय्]—उत्भामेद्.

रा० ७२७

उत्भिज्जमान [उद्भिज्जमान] जी० ३।२८३

उत्भओ [उत्भतस्] ओ० ६६, ११५. रा० १३१ से
१३८, २४५, २५६, २७६. जी० ३।३०१ से
३०७, ३१५, ३५५, ४०७, ४१७, ६३२, ६३६,
७८८ से ७६०, ८३६

उत्भय [उत्भय] जी० ३।४४५

उत्भयओ [उत्भयतस्] जी० ३।८८६

उत्भज्जग [उत्भज्जक] ओ० ६४

उत्भान [उत्भान] ओ० १५, १४३. रा० ६७२,
६७३, ८०१

उत्भि [ऊत्भि] रा० ६८७

उत्भिसित [उत्भिलित] जी० ३।३०७

उत्भिलिय [उत्भिलित] ओ० २२. रा० १३७,
७२३, ७७७, ७७८, ७८८

उत्भिसिय [उत्भिसित] जी० ३।११८, ११६

उत्भुवक [उत्भुक्त] ओ० १६५।२० रा० ८०६,
८१०

उत्भरस [उत्भकरस] रा० १७४

उत्भर [उत्भर] ओ० १६

उत्भ [उत्भस्] ओ० ७१. रा० ६१, ७६

उत्भग [उत्भग] जी० ३।८८

उत्भगपरिसप्य [उत्भगपरिसर्पे] जी० २।११३

उत्भत्थ [उत्भत्थ] जी० ३।५६३

उत्भरिसप्य [उत्भरिसर्पे] जी० १।१०४, १०५,
१११, १२२ से १२४; २।२४, १२२; ३।१४३,
१४४, १६२

उत्भरिसप्यी [उत्भरिसर्पिणी] जी० २।७, ८, ५२

उत्भभ [उत्भभ] रा० २४, २७. जी० २।२७७, २८०

उत्भस्स [उत्भस्स] रा० १२, ७५८, ७५६.

जी० ३।११८

उत्भाल [दे० उदार] रा० ४०, ७८, १३२, १७३,

७५३

उल्ल [आर्द्र] रा० ७५३

√उल्लंघ [उत् + लङ्]—उल्लंघेज. ओ० १८०

उल्लंघण [उल्लङ्घन] ओ० ४०

√उल्लाल [उत् + लाल्य्]—उल्लालेति. रा० १४

उल्लालिय [उल्लालित] रा० १४

उल्लालेमाण [उल्लालयत्] रा० १३

उल्लिहिय [उल्लिखित] ओ० १५ रा० ६७२

उल्लोड्य [दे०] ओ० २, ५५. रा० ३२, २८१.

जी० ३१३७२, ४७७

उल्लोग [उल्लोक] जी० ३१३५५, ८८८

उल्लोय [उल्लोक] रा० ३४, ६६, १३०, १६४,

१८६, २०४ से २०७, २१३, २१६, २६७, २५१,

२६०. जी० ३१३००, ३०८, ३३७, ३५६, ३५६,

३६४, ३६८ से ३७१, ३७४, ३६६, ४१२, ४२१,

४२६, ६३४, ६४८, ६७३, ६०४

उवइय [उपचित] ओ० १६. जी० ३१५६६

उवउत्ता [उपयुक्त] ओ० १८२ से १८४, १६५, १११.

रा० १५. जी० ११३२, ८७, १३२, १३३;

३१०६, १५४, १११०; ६१३६, ३७

उवएस [उपदेश] ओ० ५७. रा० ७४८ से ७५०,

७६५, ७६६, ७७०, ७७३

उवएसरुड [उपदेशरुचि] ओ० ४३

उवयोग [उपयोग] ओ० ४६. जी० ११४, ६६,

१०१, ११६, १२८, १३३, १३६; ३१२७, ४,

१६०; ६१६६

उवकरण [उपकरण] ओ० ३३

उवकरणत्त [उपकरणत्व] जी० ३११२८, ११३०

उवकारियलयण [उपकारिकालयन] रा० १८६

√उवकखड [उप-+कृ]—उवकखडावेसंति.

रा० ८०२

उवकखड [उपस्कृत] जी० ३१५६२

उवकखडावेत्ता [उपस्कृत्य] रा० ७८७

उवग [उपग] जी० ३१३८, २१

उवगत [उपगत] रा० ७६०. जी० ३१११६, ३०३

उवगय [उपगत] ओ० ६३, ७४, ५, १६५, १३.

रा० १२, १३३, ६८६, ७३२, ७३३, ७३७, ७५८,

७५६, ७६१, ७६५. जी० ३१११८

उवगरण [उपकरण] ओ० ३३. रा० ७५६, ७६१

उवगाइज्जमाण [उपगीयमान] रा० ६८५, ७१०,

८०४

उवगारियालयण [उपकारिकालयन] रा० १८८.

जी० ३१३६१ से ३६४

उवगिज्जमाण [उपगीयमान] रा० ७७४

उवगूढ [उपगूढ] रा० ७६, १७३. जी० ३१२८५

उवगूह्णमाण [उपगूह्यमान] रा० ८०४

उवचय [उपचय] रा० ७५२, ७५३

उवचित [उपचित] जी० ३१२५६

उवचिय [उपचित] ओ० २, १६, ५५. रा० २०,

३२, ३७, १३०, १७४, २८१. जी० ३१११८

११६, २८६, २८८, ३००, ३११, ३७२, ४४७, ५६६

उवच्छड [उपस्तृत] रा० ७७४

उवजुंजिऊण [उपयुज्य] जी० ३१७७

उवज्जाय [उपाध्याय] ओ० ४०, १५५

उवज्जायवेयावच्च [उपाध्यायवेयावृत्त्य] ओ० ४१

√उवट्टव [उप+स्थाप्य्]—उवट्टवेइ. रा० ७२५

—उवट्टवेति. रा० २७६. जी० ३१४४५

उवट्टवेत्ता [उपस्थाप्य] ओ० ५८. रा० ६८१

उवट्टाणसाला [उपस्थानशाला] ओ० १८, २०, ५३,

५५, ५८, ६२, ६३. रा० ६८३, ६८५, ७०८,

७५४, ७५६, ७६२, ७६४

उवट्टाविय [उपस्थापित] ओ० ६२

उवट्टिय [उपस्थित] ओ० ७६, ७७

उवणगरग्गाम [उपनगर्य म] ओ० १६, २०

उवणच्छिज्जमाण [उपनृच्यमान] रा० ७१०, ७७४,

८०४

उवणिमाय [उपनिर्गत] ओ० ५, ८

√उवणिमंत [उप+नि+मन्त्र्य्]—उवणिमंति-

ज्जाह. रा० ७०६ - उवणिमंतिस्संति. रा०

७०४—उवणिमंतेज्जा. रा० ७७६.

—उवणिमंतेज्जि ओ० १४६. रा० ८१०

उवणिविट्ट [उपनिविष्ट] रा० १३८. जी० ३१२८८

√उवणी [उप+नी]—उवणेइ. रा० ६८३
 —उवणेति. रा० २८७. जी० ३४५०
 —उवणेहि. रा० ६८०—उवणेहिइ. रा० ८०७
 —उवणेहिति ओ० १४५. रा० ८०५—
 उवणेहिति ओ० १४६

उवणीत [उपनीत] जी० ३१८६
 उवणीय [उपनीत] रा० ७२०,७२३. जी०
 ३१५६२,६०१

उवणीयअवणीयचरय [उपनीतअपनीतरचरक]
 ओ० ३४

उवणीयचरय [उपनीतचरक] ओ० ३४

उवणेय [उपनेय] रा० ७२०

√उववंस [उप+दर्शय्]—उवदंसिस्सामि. रा०
 ७७१—उवदंसंति. रा० ७६. जी० ३१४४७
 —उवदंसेह. रा० ७३

उवदंसितए [उपदर्शयितुम्] रा० ६३

उवदंसिता [उपदर्शय] रा० ७३

उवदंसेमाण [उपदर्शयत्] रा० ५६

उवद्विट्ट [उपद्विट्ट] ओ० ४६

उवद्वव [उपद्वव] जी० ३१६२४

उवनच्चिज्जमाण [उपनृत्यमाण] रा० ६८५

√उवनिमंत [उप+नि+मन्त्रय्]—उवनिमंतंति.
 रा० ७१३

उवनिविट्ट [उपनिविट्ट] रा० २०

उवपयाण [उपप्रदान] रा० ६७५

उवभोगपरिभोगपरिमाण [उपभोगपरिभोग-
 परिमाण] ओ० ७७

उवमा [उपमा] ओ० १३,२३,१६५,१६. रा०
 १५६,७५२,७५४,७५६,७५८,७६०,७६२,
 ७६४. जी० ३११२७,२३२

उवमा [दे०] खाल-विशेष जी० ३१६०१

उवयार [उपचार] ओ० २,१५,५५. रा० १२,३२,
 ७०,२८१,२८१,२८३ से २६६,३००,३०५,
 ३१२,३५४,६७२,८०६,८१०. जी० ३७२,
 ४४७,४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,
 ५२०,५५४,५८०,५६१,५६७

उवयारियालयण [उपकारिकालयन] रा० २०३

उवयारियालेण [उपकारिकालयन] रा० २०१,
 २०२

उवरि [उपरि] रा० १३०. जी० ३२६४

उवरि [उगरि] ओ० १२. रा० ३७. जी० ३१७७

उवरिचर [उपरिचर] जी० ३११७

उवरिम [उपरितन] ओ० १६०. जी० ३१७१,७२,
 ३१७, ३४६, ३५७

उवरिमोवेज्ज [उपरितनअवेय] जी० २१६६

उवरिमोवेज्ज [उपरितनअवेय] जी० २१४८,१४६

उवरिमोवेज्जग [उपरितनअवेयक] जी० ३१०५६

उवरिल्ल [उपरितन] ओ० १६२,१६५. जी०

३१६० से ७०,७२,६७४,७२५,७२८,१००३ से
 १००७,११११

√उवलभ [उप+लभ्]—उवलभज्जा. जी०
 ३१११८—उवलभिस्साम. रा० ७६८

उवल्ल [उपलब्ध] ओ० १२०,१६२. रा० ६६८,
 ७५२,७८६

उवलालिज्जमाण [उपलालयमाण] रा० ६८५,
 ७१०,७७४,८०४

√उवलिप [उप+लिप्]—उवलिपइ. ओ० १५०.
 रा० ८११—उवलिप्पिहिति. ओ० १५०. ८११

उवलित्त [उपनिपत्त] ओ० ५५,६० से ६२. रा०
 २८१,८०२. जी० ३१४४७

उवलेवण [उपलेपन] रा० ७७३

√उववज्ज [उप+वज्]—उववज्जइ. ओ० ८७
 —उववज्जंति. ओ० ७३. जी० १५१

—उववज्जिहिति ओ० १४०—उववज्जिहिसि
 रा० ७५०

उववण [उपवण] ओ० ११७. रा० २७६,७५०
 से ७५३,७६६. जी० ३१५३,११७,१२६,५,
 ४३६,४४०,४४५,८३८,२१,८४३,८४६

उववणग [उपवणक] रा० २७६ से २७८,२८४,
 २८७,६६६. जी० ३१४४३ से ४४५,८४२,
 ८४५

उववणपुव्व [उपवणपूर्व] जी० ३१५३,६७५,

११२८, ११३०
 उववत्तु [उपपत्तु] ओ० ७२, ८६ से ६५, ११४,
 १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७
 उववन्नपुव्व [उपपन्नपूर्व] जी० ३१२७
 उववात [उपपात] जी० ११२८; ३१८८, ८४४,
 ८४७, ८५६, ८८०, ६४६, १०८२
 उववातसभा [उपपातसभा] रा० २७४. जी०
 ३४३६
 उववाय [उपपात] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७,
 १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७. रा० ८१५.
 जी० ११४, ५१, ५६, ६५, ७६, ८२, ८७, ६६,
 १०१, ११६, १३३, १३६; ३१२७, ३, १२६, ६,
 १६०
 उववायसभा [उपपातसभा] रा० २६०, २६२,
 २६६, २७७, ४१४ से ४१६, ४३५, ४५३, ४५४,
 ७६६. जी० ३४२१, ४२४, ४२५, ४४३, ५२६
 से ५३१
 उवविणिगय [उपविनिर्गत] जी० ३१२७
 √उवविस [उप+विश्]—उवविसइ. रा० ७४८
 —उवविसामि. रा० ७४७
 उववेत [उपपेत] जी० ३१६०१, ६०२, ८६०, ८६६,
 ८७२, ८७८
 उववेय [उपपेत] ओ० १, १५, १४३. रा० ६६, ७०,
 १७३, ६७२, ६७३, ६७५, ८०१. जी० ३१२५,
 ५८६ से ५९६
 उवसंत [उपशान्त] ओ० ६१. रा० ६, १२, २८१.
 जी० ३४४७, ७६५, ८४१
 उवसंतया [उपशान्तता] ओ० ११६
 उवसंपज्जित्तारणं [उवसंपद्य] ओ० ३७. रा०
 ६६६. जी० ३१८४३
 उवसग्ग [उपसर्ग] ओ० ११७, १५४, १६५, १६६.
 रा० ७०३, ७६६, ८१६
 उवसम्म [उपशम] ओ० ७६ से ८१
 √उवसम्म [उप+शम्]—उवसम्मति रा० १२
 —उवसम्मति रा० १२

उवसम्मिणा [उपशम्य] रा० १२
 उवसम्मिणा [उपशाम्य] रा० १२
 उवसोभित [उपशोभित] जी० ३१२६५, ३०२,
 ३४६
 उवसोभिय [उपशोभित] ओ० ६४. रा० २४, ४०,
 ५१, १२८, १३२, १६५, १७१, २३७. जी०
 ३१३०६, ३५३, ३५७, ३६०
 उवसोभेमाण [उपशोभमान] रा० ४०, १३२,
 १३५, १६१, २३६, ७८२. जी० ३१२६५, ३०२,
 ३०५, ३१३, ३६८, ५८०, ५८१
 उवसोहिय [उपशोभित] जी० ३१२७७
 उवस्तय [उपाख्य] रा० ७१६
 उवहण [उपधान] ओ० ३०
 उवहिविउत्सग्ग [उपधिभ्युत्सर्ग] ओ० ४४
 √उवागच्छ [उप+आ+गम्]—उवागच्छइ.
 ओ० २०. रा० ४७. जी० ३४५७
 —उवागच्छति. ओ० ५२. रा० १०.
 जी० ३४४२—उवागच्छति रा० १४.
 जी० ३४४३—उवागच्छामि. रा० ७५४
 उवागच्छित्ता [उपागम्य] ओ० २०. रा० १०.
 जी० ३४४२
 उवागय [उपागत] ओ० १६, २०
 उवाय [उपाय] ओ० १८२
 उवायण [उपायन] रा० ७२०, ७२३
 √उवालंभ [उप+आ+लम्]—उवालंभइ.
 रा० ७६७
 उवालभित्ता [उपालभ्य] रा० ७६७
 उवासग्गदसाधर [उपासकवशाधर] ओ० ४५
 √उवे [उप+इ]—उवेइ ओ० ११८.—उवेति.
 ओ० ७४. जी० ३१६०३
 उव्वट्टणा [उद्वर्तना] जी० ११६६; ३१२१, १२७।
 ५, १५६; ६३१।३
 उव्वट्टित्ता [उद्वर्त्य] जी० ११५४
 उव्वट्टिय [उद्वृत्त] जी० ३११८, ११६, १२१
 उव्वत्तण [उद्वलन] ओ० ६३
 उव्विग [उद्विग्न] ओ० ४६. जी० ३१२६६

उच्चिद्ध [उच्चिद्ध] ओ० १
 उच्चवेग [उच्चवेग] जी० ३१६२८
 उच्चवेध [उच्चवेध] जी० ३१७३६, ७६४, ६००, ६०१,
 ६१०, ६११
 उच्चवेह [उच्चवेह] रा० २२७, २३१, २३३, २३६, २४७,
 २६२. जी० ३१, ३८६, ३९३, ३९५, ४०१, ४२५,
 ६३२, ६३६, ६४२, ६५३, ६६१, ६७२, ६७६,
 ६८३, ६८६, ७२३, ७२६, ७८८, ७६४, ७६५,
 ८३६, ८८२, ९१८
 उच्चह [उच्चह] रा० १८०
 उच्चह्य [उच्चह्य] रा० १८१
 उच्चस [उच्चस] ओ० २, ५५. रा० ३२, २८१, २९१,
 २९४, २९६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५. जी०
 ३१, ३७२, ४४७, ४५६, ४६१, ४६२, ४६५, ४७०,
 ४७७, ५१६, ५२०
 उच्चस [ऋषभ, वृषभ] ओ० १३, १६, ५१. रा० १७,
 १८, २०, ३२, ३७, १२६, १४१, १६२. जी०
 ३१, २७७, २८८, ३००, ३११, ३१८, ३७२, ५६३,
 ५६५ से ५६७
 उच्चसकंठ [ऋषभकण्ठ] रा० १५५, २५८. जी०
 ३१, ३२८
 उच्चसकंठग [ऋषभकण्ठक] जी० ३१, ४१६
 उच्चसभज्जय [ऋषभज्जय] रा० १६२. जी० ३१, ३३५
 उच्चसभनाराय [ऋषभनाराय] जी० ११, ११६
 उच्चसभर्मंडलप्रविभक्ति [ऋषभर्मंडलप्रविभक्ति] रा०
 ६१
 उच्चसमा [ऋषभा] रा० २२५. जी० ३१, ३८४, ८६६
 उच्चसिण [उच्चसिण] जी० ११५; ३१, २२, ११२ से ११५,
 ११६
 उच्चसिणभूत [उच्चसिणभूत] जी० ३१, ११६
 उच्चसिणभूय [उच्चसिणभूत] जी० ३१, ११६
 उच्चसिणवेदना [उच्चसिणवेदना] जी० ३१, ११२, ११४,
 ११८
 उच्चसिणवेदनिज्ज [उच्चसिणवेदनीय] जी ३१, ११८
 उच्चसिणोदय [उच्चसिणोदक] जी० ११, ६५

उच्चसिय [उच्चसूत] रा० १३२. जी० ३१, २०२
 उच्चसीर [उच्चसीर] रा० ३०. जी० ३१, २८३
 उच्चसु [उच्चसु] रा० ७५६. जी० ३१, ६३१
 उच्चसुण्णा [उच्चसुण्णा] बाहुल्यतः ओ० ८७. जी० ३१, ६६४
 उच्चसुण्णिणी [उच्चसुण्णिणी] जी० १, १३६, १४०;
 २, ८८, १२०; ३, १६०, १६५, ८४१, १०८५; ५, ८,
 ६, २३, २६; ६, १२३, ४०, ६७, २५७
 उच्चसुण्णिय [उच्चसुण्णिय] जी० ३१, ५८६
 उच्चसुविय [उच्चसुविय] रा० ७५० से ७५३
 उच्चसास [उच्चसास] ओ० १५४, १६५, १६६. रा०
 ७७२, ८१६. जी० ३१, २८८
 उच्चसासत्त [उच्चसासत्त] जी० ३१, ०६६
 उच्चसिय [उच्चसि] जी० ३१, ६६६
 उच्चसुय [उच्चसुय] ओ० ५१
 उच्चसेध [उच्चसेध] जी० ३१, ६७६, ७८६, ७६५, ८६६
 उच्चसेह [उच्चसेह] ओ० १३, ८२. रा० ६, १२, १३०,
 २२५, २५४, २७६. जी० ३१, ३००, ३८४, ४१५,
 ४४२, ७८६, ७६४

ऊ

ऊण [ऊण] रा० १८८. जी० २१, ५७, ६१, ७३; ३१, ५,
 ३४, ३६, ४१, ४३, ४४, ५६, ७; ४, ६; ५, ७, २८;
 ७, ३, ५, ६, १०, १२, १५, १७; ६, १२ से ४, ४०, ५१,
 १७१, २३४, २३६, २३८, २४३, २६६, २७१,
 २७३, २७६, २८१
 ऊणय [ऊणय] जी० २१, ३०, ३१, ५८ से ६०, १३६;
 ३१, २१८, ६२६
 ऊणय [ऊणय] ओ० ३३. जी० २१, ३२ से ३४
 ऊणिया [ऊणिया] ओ० १६, ५१६
 ऊण [ऊण] ओ० १६. रा० १२, २५४, ७५८, ७५६.
 जी० ३१, ११८, ४१५, ५६६ से ५६८
 ऊणजाल [ऊणजाल] जी० ३१, ५६३
 ऊणड [ऊणड] जी० ३१, २६२
 ऊणविय [ऊणविय] ओ० ६७
 ऊणसास [ऊणसास] ओ० ११७. रा० ७६६.
 ३१, २७, ३

ऊसासता [उच्छ्वासता] जी० ३।६७
 ऊसित [उच्छ्रित] जी० ३।२१८, ३०७, ३५५, ६३४,
 ६४२, ७५४, ७६२, ७६८, ७७०, ७७२, १००८
 ऊसितोदग [उच्छ्रितोदक] जी० ३. ७८३, ७८४
 ऊसिय [उच्छ्रित] ओ० ४६, ५५, ६४, १६२.
 रा० ५०, ५२, ५६, १३७, १८६, २०४ से २०६,
 २०८, २८१, ७७४, ७८६. जी० ३ ३५६, ३६४,
 ३६८ से ३७१, ४४७, ५६७, ५६८, ६५३, ६७३,
 ७५४, ७६२, ७६६
 ऋच्छज्जय [ऋक्षध्वज] रा० १६२. जी० ३३५

(ए)

एइय [एजित] रा० १७३. जी० ३।२८५
 एऊणपण्ण [एकोनपञ्चाशत्] जी० ३।८३२
 एक [एक] जी० १।७२
 एकत्त [एकत्व] जी० ३।११०
 एकत्तीस [एकत्रिंशत्] जी० ३. ६३४
 एकाणउत्ति [एकनवात्] जी० ३. ८१२
 एकावलि [एकावलि] जी० ३।४५१
 एकासीइ [एकाशीति] जी० ३।७०६
 एकासीति [एकाशीति] जी० ३ ७६४
 एकाह [एकाह] जी० ३ १७६, १७८, १८०, १८२
 एकूणवोसति [एकोनविंशति] जी० ३।५७७
 एकोदग [एकोदक] जी० ३।७६५
 एक्क [एक] ओ० ३. रा० ४. जी० २।४८
 एक्कतीस [एकत्रिंशत्] ओ० ३३. रा० २०७.
 जी० ३।६१
 एक्कवोस [एकविंशति] जी० ३।७३६
 एक्कार [एकादशन्] जी० ३ १००२
 एक्कारस [एकादशन्] रा० १७३. जी० ३।२८५
 एक्कारसम [एकादश] ओ० १४४. रा० ८०२
 एक्कारसमासपरियाय [एकदशमासपरियाय]
 ओ० २३
 एक्कासीत्त [एकाशीति] जी० ३।६३२
 एक्कासीय [एकाशीति] जी० ३. २२६।४
 एक्कक्किय [एकैकक] रा० ८२

एक्कैक्क [एकैक] जी० ३।६६७
 एक्कैक्किय [एकैकक] जी० ३।८३८।४
 एक्कोणवोसति [एकोनविंशति] जी० ३. ५७७
 एक्कोदक [एकोदक] जी० ३. ७६५
 एक्कोदग [एकोदक] जी० ३।७६५
 एग [एक] जी० १६. रा० ३. जी० १।१०
 एगइय [एकक] ओ० २३, ४५, ५२, ७८, ८८, १४०,
 १५६, १६५, १६६, रा० १६, १७४, २८१, ६८७,
 ६८६. जी० १।६६, ११६; ३।८६, १०४, ४४७,
 ४५५
 एगओ [एकतस्] रा० ८४, १७३
 एगओखह [एकतःखह] रा० ८४
 एगओचक्कवाल [एकतश्चक्कवाल] रा० ८४
 एगओवंक [एकतोवक्क] रा० ८४
 एगंत [एकान्त] ओ० ११७. रा० ६, १२, १५,
 ७१३, ७६५
 एगंतवंड [एकान्तरण्ड] ओ० ८४, ८५, ८७
 एगंतवाल [एकान्तवाल] ओ० ८४, ८५, ८७
 एगंतसुत्त [एकान्तसुत्त] ओ० ८४, ८५, ८७
 एगखुर [एकबुर] जी० १।१०३, १२१; २।६
 एगणुण [एकगुण] जी० १।३५, ३७, ४०
 एगण [एकाग्र] रा० १५
 एगच्च [एकाच] ओ० ७२, १६७
 एगच्चाओ [एकस्मात्] ओ० १६१
 एगजाय [एकजात] ओ० २७. रा ८१३
 एगजीव [एकजीव] जी० १।७२
 एगजीविय [एकजीविक] जी० १।७२
 एगहु [एकाष्टि] जी० ३।७६८
 एगट्टिय [एकास्थिक] जी० १।७०, ७१
 एगतिय [एकक] रा० १७४, १८५, २८१, २८६,
 २६०, ६८८, ६८६. जी० १।१३३; ३।८६,
 १०८, १७६, १७८, १८०, १८२, २८६, २६७,
 ४४७, ५७५, ५७६, ७१६, ७२०, ८०६, ८०७,
 ८५७, १०८०
 एगतो [एकतस्] रा० २७६. जी० ३।२८५, ४४५
 एगता [एकत्व] जी० ३।११०, ११५, ११६

एगत्तवियक्क [एकत्ववितर्क] ओ० ४३
 एगत्ताणुप्पेहा [एकत्वानुप्रेक्षा] ओ० ४३
 एगत्तिभावकरण [एकत्वीभावकरण] ओ० ६६, ७०
 एगत्तीभावकरण [एकत्वीभावकरण] रा० ७७८
 एगदंत [एगदन्त] जी० ३१५६६
 एगदिसा [एगदिसा] रा० ६८८
 एगपवेसिय [एकप्रादेशिक] जी० ३१७२३, ७२६
 एगभूय [एकभूत्] रा० ११६
 एगमेग [एकेक] रा० १२६, १६२ से १६४, १६१.
 जी० ३१०६, २६५, ३५४, ३५५, ६३२, ६६१,
 ७२३, ७२६, ६०१, १०००, १०२२
 एगराहया [एकरात्रिकी] ओ० २४
 एगसट्टि [एकपट्टि] जी० ३११०
 एकसाडिय [एकसाटिक] ओ० २१, ५४, ६६.
 रा० ८, ७१४, ७७८
 एगसालग [एकशालक] जी० ३१५६४
 एगसिद्ध [एकसिद्ध] जी० ११८
 एगागार [एकाकार] जी० ११०६, ११६; ३१८ से
 ११, २१३, ६५४
 एगाभिमुह [एकाभिमुख] रा० ६८८
 एगावलि [एकावलि] ओ० २४, १०८, १३१.
 रा० ६६, २८५. जी० ३१५६३
 एगावलिपविभत्ति [एकानलिप्रविभक्ति] रा० ८५
 एगासीइ [एकाशीति] जी० ३७०६
 एगाह [एगाह] जी० ३१८६, ११८, ११६
 एगाहच्च [एकाहत्थ] रा० ७५१, ७६७
 एगाहिय [एकाहिक] जी० ३१६२८
 एगिदिय [एकेन्द्रिय] जी० ११५५; २१०१, १०२,
 ११०, १११, १२०, १२६, १३६, १३८, १४६, १४६;
 ३१३० से ३१५, १११५; ४११ से ३, ५ से
 ७, १०, ११, १६, १६ से २२, २५; ६१२ से ७,
 १६७, १६६, २२१, २२२, २२८, २३१
 एगुणयाल [एकोनचत्वारिंशत्] जी० ३१७६४
 एगुणपण्ण [एकोनचत्वारिंशत्] रा० ७१.
 जी० ११८८
 एगुणवोस [एकोनविंशति] जी० ३११०५३
 एगुणासीति [एकोनाशीति] जी० ३१२१८

एगूरुहया [एकोरुकिका] जी० २११२
 एगूरुय [एकोरुक] जी० ३१२१६ से २२२, २२७
 एगूरुयदीव [एकोरुकद्वीप] जी० ३१२२२, २२७
 एगोणचत्तालीस [एकोनचत्वारिंशत्] जी० ३१७६६
 एगोणवोस [एकोनविंशति] जी० ३११०५३
 एगोदग [एकोदक] जी० ३१७६५
 एगोरुय [एकोरुक] जी० ३१२१६, २१७, २२६
 एगोरुयदीव [एकोरुकद्वीप] जी० ३१२१७, २१८
 एज्जमाण [एजमाण] रा० ४०, १२३, १३२.
 जी० ३१२६५
 एड [इल्, एड्] — एडेइ. रा० ७६५ — एडेंति.
 रा० १२ — एडेइ. रा० ६
 एडित्ता [एलित्वा, एडित्वा] ओ० ११७. रा० १२
 एडेत्ता [एलित्वा, एडित्वा] रा० ६
 एणी [एणी] ओ० १६. जी० ३१५६६
 एतारुव [एतद्रूप] जी० ३१२७८ से २८२, २८४,
 २८५, ३८७, ४४२, ८६०, ८६६, ८७२, ८७८
 एत्तो [इतस्] ओ० ३३. रा० २६. जी० ३१८४
 एत्थ [अत्थ] ओ० १३. रा० ३. जी० ३१७७
 एमहज्जुईय [इयन्महद्दुत्तिक] रा० ६६६
 एमहज्जुत्तीय [इयन्महद्दुत्तिक] जी० ३१५६५
 एमहब्बल [इयन्महाबल] रा० ६६६.
 जी० ३१५६५
 एमहाणुभाग [इयन्महानुभाग] रा० ६६६.
 जी० ३१५६५, ६४०
 एमहायस [इयन्महायसस्] रा० ६६६.
 जी० ३१५६५
 एमहालत्त [इयन्महत्] जी० ३१८६, १७६, १७८
 एमहालय [इयन्महत्] रा० ७३२, ७३७.
 जी० ३११८२, १०८०
 एमहासोक्ख [इयन्महासोक्ख] रा० ६६६.
 जी० ३१५६५
 एमहिड्डिय [इयन्महद्धिक] जी० ३१६३८
 एमहिड्डिय [इयन्महद्धिक] रा० ६६६. जी० ३१५६५,
 ५६८, ७०१, ७६४
 एमेव [एवमेव] जी० ३१२२६

एम्माहिङ्गीय [इयन्मर्हाधिक] जी० ३।६६४
एय [एतत्] ओ० २१. रा० ६३. जी० १।११
√एय [एज्]—एयइ. रा० ७७१—एयति.
 जी० ३।७२६
एयंत [एजमान] रा० ७७१
एयरुव [एतद्रूप] रा० ६३, ६५
एवारुव [एतद्रूप] ओ० ३०, ६२, १४४, १५८,
 १५९. रा० ६, १६, २०, २५ से ३१, ३७, ४५,
 १३५, १४६, १७३, १७५, १६०, २२८, २४५,
 २५४, २७०, २७५, २७६, ६८८, ७३२, ७३७,
 ७३८, ७४६, ७५१, ७६८, ७७७, ७६१, ७६३,
 ८१६. जी० ३।८४, ८५, ११८, २६४, २७८ से
 २८३, २८५, २८७, ३०५, ३११, ३२२, ४०७,
 ४१५, ४३५, ४४१, ५६७, ६०१, ६०२, ६४३, ६५४
एरणवत [ऐरण्यवत] जी० २।१४५
एरणवय [ऐरण्यवत] रा० २७६. जी० २।१३,
 ३१, ५८, ७०, ७२
एरवत [ऐरवत] जी० २।६६, १३६, १४७, १४९
एरवय [ऐरवत] रा० २७६. जी० २।१४, २८,
 ५५, ७०, ७२, ११५, १२३; ३।२२६, ४४५, ७६५
एरावणद्रह [ऐरावणद्रह] जी० ३।६६७
एरिस [ईदृषा] ओ० ७६ से ८१
एरिसग [ईदृषाक] जी० ३।१०६
एल [एड] जी० ३।६१८
एला [एला] रा० ३०, १६१, २५८, २७६.
 जी० ३।२८३, ३३४, ४१६
एलिगा [एडिका] जी० ३।६१६
एलुय [एलुक] रा० १३०. जी० ३।३००
एव [एव] रा० १०
एवइय [एतावत्] जी० ३।१८२, ८३८।२, ३
एवं [एवम्] ओ० २०. रा० ८. जी० १।१०
एवंभूत [एवंभूत] जी० ३।२८५
एवतिय [एतावत्] जी० ३।१७६, १७८, १८०,
 ६७२, ६७३
एवमेव [एवमेव] रा० ७०३. जी० ३।१७४

एवामेव [एवमेव] ओ० १५०. रा० १२.
 जी० ३.११८
एसणासमिच [एषणासमित] ओ० २७, १५२, १६४.
 रा० ८१३
एसणिज्ज [एषणीय] ओ० ३७, १२०, १६२.
 रा० ६६८, ७५२, ७७६, ७८६
एसुहुम [इयत्सूक्ष्म] जी० ३।६६३, ६६७
ओ
ओइण्व [अवतीर्ण] ओ० ५१
ओगाढ [अवगाढ] रा० ६८४, ६८५, ७००, ७०६.
 जी० १।३३, ४२, ४३, ५०; ३।२२
√ओगाह [अव + गाह्]—ओगाहइ.
 जी० ३।११८—ओगाहति. जी० ३।११६
 —ओगाहति. ओ० ११७
ओगाहणा [अवगाहना] ओ० १६५।४ से ८.
 रा० ७६६. जी० १।१४, १६, ७४, ८६, ८८,
 ९०, ९४, १०३, १११, ११२, ११६, ११६, १२१.
 १२३ से १२५, १३०, १३५; ३।६१, २३६,
 ४३६, ६६६, १०८७, १०८९
ओगाहितए [अवगाहितुम्] ओ० ६६
ओगाहिता [अवगाह्य] ओ० ११७. जी० ३।७७
ओगाहेत्ता [अवगाह्य] ओ० ११७. रा० २४०
ओगिण्हत्ता [अवगृह्य] ओ० २१. रा० ८
ओगगह [अवग्रह] ओ० २१, २२, ५२. रा० ८, ६,
 ६८६, ६८७, ६८९, ७०६, ७११, ७१३
ओगिण्ह [अव + ग्रह्]—ओगिण्हइ. रा० ६८६
ओघ [ओघ] रा० १३, १४
ओचूल [अवचूल] ओ० ५७
ओच्छण [अवच्छन्त] ओ० ६
ओच्छन्न [अवच्छन्त] ओ० ६. जी० ३।२७५
ओट्ट [ओठ] ओ० १६, ४७. रा० २५४.
 जी० ३।४१५, ५६६, ५६७, ८६०
ओट्टच्छिण्ण [ओठच्छिन्नक] ओ० ६०
√ओणम [अव + नम्]—ओणमति. रा० ७५
ओणमित्ता [अवनम्य] रा० ७५

ओणय [अवनत] ओ० ७०
ओत्थय [अवस्तृक] ओ० ६३, ६५
ओवण [ओदत] जी० ३।५६२
√ओधार [अव+धारय्]—ओधारैति. रा० ७१३
√ओभास [अव+भास्]—ओभासइ.
 जी० ३।३२७—ओभासेइ. रा० ७७२
 —ओभासेति. रा० १५४. जी० ३।३२७
 —ओभासेति. रा० १५४. जी० ३।७४१
ओभासमाण [अवभासमाण] जी० ३।२५६
ओभिज्जमाण [उद्भिद्यमान] रा० ३०
ओमत्त [अवमत्त्व] रा० ७६२, ७६३
√ओमुष्य [अव+मुच्]—ओमुष्यइ. ओ० २१.
 रा० ७१४
ओमुहत्ता [अवमुच्य] ओ० २१
ओमोदरिया [अवमोदरिका] ओ० ३३
ओमोयरिया [अवमोदरिका] ओ० ३१
ओयंति [ओञ्स्विन्] ओ० २५. रा० ६८६
ओयविय [दे०] ओ० १६, ४७. रा० ३७, २४५.
 जी० ३।३११, ४०७, ५६६
ओराल [दे० उदार] ओ० ८२. रा० ३०, १३२,
 १३५, १७३, २३६, ६८६. जी० १।७५, ८३,
 १३६; ३।२६५, २८३, २८५, ३०२, ३०५,
 ७२६, ७८५, ७८६, ८४१
ओरालिय [औदारिक] ओ० १८२. जी० १।१५,
 ५६, ६४, ७४, ७६, ८२, ८५, १०१, ११६, १२८,
 १३०
ओरालियमोसासरीर [औदारिकमिश्रकशरीर]
 ओ० १७६
ओरालियसरीर [औदारिकशरीर] ओ० १७६
ओरालियसरीरि [औदारिकशरीरिन्]
 जी० ६।१७०, १७१, १७६, १८१
ओरोह [अवरोध] ओ० १
ओर्लंबियग [अवलम्बितक] ओ० ६०
ओमित्त [दे० उपलिप्त] ओ० ५२. रा० ६८७ से
 ६८६

ओवइय [दे०] जी० १।८८
ओवणिहिय [ओपनिधिक, ओपनिहितिक]
 ओ० ३४
ओवम्म [ओपम्य] ओ० १६५।१७. जी० ३।१७७।५
√ओवय [अव+पत्]—ओवयंति. रा० २८१.
 जी० ३।४४७
ओवयमाण [अवपत्त] रा० ५६
ओवहिय [ओपधिक] ओ० १६१, १६३
ओवासंतर [अवकाशान्तर] जी० ३।१३, १६, २१,
 २६, २७, ३०, ३२, ६५, ६७, १७६, १७८, १८०,
 १८२, १०६२ से १०६४
ओविय [दे०] परिकर्मित ओ० ६३. रा० १७,
 १८, ६६, ७०. जी० ३।५६३
√ओवील [अव+पीड्]—ओवीलेति.
 जी० ३।७६५
ओस [दे० अवव्याय] जी० १।६५
ओसणकारण [अवसन्नकारण] जी० १।५०, ६५,
 १३६
ओसणग [अवसन्नक] ओ० ६०
ओसणदोस [उत्सन्नदोष] ओ० ४३
ओसण्पिणी [अवसण्पिणी] जी० १।१३६, १४०;
 २।१२०; ३।६०, १६५, ८४१, १०८५; ५।८,
 ६, २३, २६; ६।२३, ४०, ६७, २५७
√ओसर [अप+सृ]—ओसरति. रा० २६२.
 जी० ३।४५७
ओसरित्ता [अपसृत्य] रा० २६२. जी० ३।४५७
ओसह [ओषध] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,
 ७५२, ७८६
ओसहि [ओषधि] रा० १५२, २७६, २८०.
 जी० १।६६; ३।३२५, ४४५, ४४६, ४४८
ओसारिय [अवसारित] ओ० ५७
ओहबल [ओषबल] ओ० ७१. रा० ६१
ओह्य [उपहत, अवहत] ओ० १४. रा० ६७१,
 ७६५
ओहस्सर [ओवस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५,
 ५६८

ओहाडणी [दे० अवघाटनी] रा० १३०, १६०.

जी० ३१२६४, ३००

ओहि [अवधि] जी० ३१०७, ११११

ओहि—ओह [ओष] रा० ६, १२

ओहिणाण [अवधिज्ञान] ओ० ४०. रा० ७३६,

७४३, ७४६

ओहिणाणलद्धि [अवधिज्ञानलद्धि] ओ० ११६

ओहिणाणविनय [अवधिज्ञानविनय] ओ० ४०

ओहिणाणि [अवधिज्ञानिन्] ओ० २४.

जी० १११६, १३३; ६१६१, १६५, १६६,

१६७, १६६, २०४, २०८

ओहिवंसणि [अवधिदर्शनिन्] जी० १२६, ८६;

६१३१, १३४, १३८, १४०

ओहिनाणि [अवधिज्ञानिन्] जी० १६६; ६१५६

ओहिय [औषिक] जी० २५१; ५२४, २६. ३०

ओहीनाण [अवधिज्ञान] जी० ३११११

क

क [क] रा० ६५

कह [कति] ओ० १७३. रा० ७६६, ७७६.

जी० ११५५, २१ से २३, २६, २७, ६४; ३७६,

१६६ से १७१, ७४८, ८०६

कइसमइय [कतिसामयिक] ओ० १७४

कओ [कुतस्] जी० १५१; ३१५५, १०८२

कंक [कङ्क] जी० ३५६८

कंकड [कङ्कट] ओ० ६४. रा० १७३, ६८१.

जी० ३१२८५

√कंख [काङ्ख]—कंखइ. रा० ७१३—कंखति.

ओ० २०. रा० ७१३

कंखिय [काङ्खित] रा० ७७४

कंचण [काञ्चन] ओ० २६, ६४. रा० ३२, १५६,

२६२. जी० ३३३२, ३७२, ४५७, ४८७, ५८६,

५६३, ५६७

कंचणकोशी [काञ्चनकोशी] ओ० ६४

कंचणय [काञ्चनक] जी० ३१६६१, ६६२, ६६४,

६६६

कंचणमय [काञ्चनमय] जी० ३१६६१

कंचणिया [काञ्चनिका] ओ० ११७

कंचि [किञ्चित्] ओ० ११६, ११७. रा० ७६५

कंची [काञ्ची] जी० ३५६३

कंचुइ [कञ्चुकिन्] रा० ६८८ से ६९०, ८०४

कंचुइज [कञ्चुकीय] ओ० ७०

कंचुय [कञ्चुक] रा० ६६, ७०

कंटक [कण्टक] जी० ३१६६२

कंटय [कण्टक] ओ० १४. रा० ६७१. जी०

३१८५, ६२२

कठ [कण्ठ] ओ० ७१. रा० ६१, ६६, ७६

कठमुरवि [दे० कण्ठमुरवी] ओ० १०८, १३१.

रा० २८५

कठमुत्त [कण्ठमुत्त] जी० ३५६३

कठमुण [कण्ठमुण] रा० १३१, १४७, १४८, २८०.

जी० ३१३०१, ४४६

कठमालकड [कृतकण्ठमाल] ओ० ५२. रा० ६८७

से ६८६

कंड [काण्ड] रा० ६६४. जी० ३१६, ७, ६, १०, १६,

१७, २४, २५, ६० से ६३, ५६२

कंडय [काण्डक] रा० ७५८, ७५६

कंड्य [काण्डक] रा० ७५८, ७५६

कंडु [कण्डु] ओ० ६६

कंडु [कन्दु] जी० ३१७८

कंत [कान्त] ओ० १५, ४६, ६८, ११७ १४३.

रा० १७, १८, ६७२, ६७३, ७५० से ७५३,

७७४, ७६६, ८०१. जी० ११३३५; ३१५६७,

८७२, १०६०, १०६६

कंततराय [कान्ततरक] रा० २५ से ३१, ४५.

जी० ३१२७८ से २८४, ६०१

कंतारभक्त [कान्तारभक्त] ओ० १३४

कंतारभयग [कान्तारभूतक] ओ० ६०

कंति [कान्ति] ओ० २३, ६६, ७१. रा० ६१

कंद [कन्द] ओ० ६४, १३५. रा० २२८.

जी० ११७१; ३१३०७, ६४३, ६७२

कंबणया [कन्दन] ओ० ४३

कंदप्प [कन्दर्प] ओ० ४६
 कंदप्यि [कान्दपिक] ओ० ६४, ६५
 कंदमंत [कन्दवत्] ओ० ५, ८, १०. जी० ३१२७४,
 ३८६, ५८१
 कंदरा [कन्दरा] रा० ८०४
 कंदाहार [कन्दाहार] ओ० ६४
 कंवि [कन्दित] ओ० ४६, ४६
 कंबुसोल्लिय [कम्बुपक्व] ओ० ६४
 कंवि [कम्पित] रा० १७३. जी० ३१२८५
 कंपिल्लपुर [कम्पिल्लपुर] ओ० ११५, ११८
 कपेमाण [कम्पमान] ओ० ५२
 कंबल [कम्बल] ओ० १२०, १६२. रा० २७,
 ६६८, ७५२, ७५२, ७८६. जी० ३१२८०, ५६५
 कंबिया [कम्बिका] रा० २७०. जी० ३१४३५
 कंबु [कम्बु] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६७
 कंबोय [कम्बोज] रा० ७२०, ७२३
 कंस [कांस्य] जी० ३१६०८
 कंसताल [कांस्यताल] रा० ७७. जी० ३१५८८
 कंसपाई [कांस्यपात्री] ओ० २७ रा० ८१३
 कंसलोह [पाय] [कांस्यलोहपात्र] ओ० १०५,
 १२८
 कंसलोह [बंधण] [कांस्यलोहबन्धन] ओ० १०६,
 १२६
 ककारसकारगकारघकारङकारपविभक्ति [ककारख-
 कारगकारघकारङकारप्रविभक्ति] रा० ६५
 ककारपविभक्ति [ककारप्रविभक्ति] रा० ६५
 कककरो [ककरी] जी० ३१५८७
 कककस [ककंश] रा० ७६५. जी० ३१११०
 कककोड [ककोट] जी० ३१७५०
 कककोडग [ककोटक] ३१७५०
 कककोडय [ककोटक] जी० ३१७४८ से ७५०
 ककल [कक्ष] ओ० ६२ जी० ३१५६७
 ककलड [ककखट] जी० ११५, ३६, ४०, ५०; ३१२२
 ककळ [कक्ष] ओ० ५७. जी० ३१६३७
 ककळभ [ककळप] रा० १७४. जी० ११६६, ११८;

३११८, ११६, २८६, ६६५
 ककळभी [ककळपी] रा० ७७. जी० ३१५८८
 ककळु [ककळू] जी० ३१६२८
 √कज्ज [कृ]—कज्जति. ओ० १६१
 कज्ज [कार्य] रा० ६७५. जी० ३१२३६, १११५
 कज्जल [कज्जल] ओ० १६. रा० २५.
 जी० ३१२७८, ५६५, ५६६
 कज्जलंगी [कज्जलान्गी] ओ० १३
 कज्जलप्यभा [कज्जलप्रभा] जी० ३१६८७
 कज्जहेउ [कार्यहेतु] ओ० ४०
 कट्टु [कृत्वा] ओ० २०. रा० ८. जी० ३१८६
 कट्टु [काष्ठ] रा० ६, १२, ७६५
 कट्टुसेज्जा [काष्ठशय्या] ओ० १५४, १६५, १६६
 कट्टुसोल्लिय [काष्ठपक्व] ओ० ६४
 कड [कृत] ओ० ७४, ६ रा० १८५, १८७, ८१५
 जी० ३१२१७, २६७, २६८, ३५८
 कडंब [कडम्ब] रा० ७७
 कडक्क [कटाक्ष] रा० १३३. जी० ३१३०३
 कडग [कटक] ओ० २१, ४७, ५४, ६३, ७२. रा० ८,
 ६६, ७०, २८५, ७१४. जी० ३१४५१, ५६३
 कडगच्छेज्ज [कटकच्छेद्य] ओ० १४६. रा० ८०६
 कडच्छाय [कटच्छाय] ओ० ४. रा० १७०, ७०३.
 जी० ३१२७३
 कडच्छुय [दे०] रा० ७५३
 कडय [कटक] ओ० १०८, १३१. रा० ८.
 जी० ३१४५७
 कडाह [कटाह] जी० ३१७८
 कडि [कटि] ओ० १६, ६४. जी० ३१५६६
 कडिय [कटित] ओ० ४. रा० १७०, ७०३.
 जी० ३१२७३
 कडिसुत्ता [कटिसूत्र] ओ० ५२, ६३ १०८, १३१.
 रा० ६८७, ६८६
 कडिसुत्ताग [कटिसूत्रक] रा० २८५
 कडिसुत्ताय [कटिसूत्रक] रा० ६८८
 कडुच्छुग [दे०] जी० ३१६०८
 कडुच्छुय [दे०] रा० २५८, २७६, २८१, २६०,

२६२. जी० ३।४।१६,४४५,४४७,४५६,४५७,
६७६
कडुय [कटुक] ओ० ४०. रा० ७६५. जी० १।५;
३।२२,१।१०,७२१,८६०,६५५
कड्डिज्जमाण [कृध्यमाण] रा० ५६
कटिण [कठिन] ओ० ४६,६४
कटिय [क्वथित] जी० ३।५६२,६०१
कणहर [कणवीर] जी० ३।५६७
कणहरगुम्म [कणवीरगुल्ल] जी० ३।५८०
कणग [कनक] ओ० १६,२३,५०,६३,६४,८२.
रा० २८,३२,६६,७०,१२६,१३०,१३७,१७३,
२१०,२१२,२८५,६८१,६६५. जी० ३।२८१,
२८५,३००,३०७,३५४,३७२,३७३,४५१,
५८६,५६३,५६६,५६७,६४७,७४७,८६६,
८८५,९३६
कणगजाल [कनकजाल] रा० १६१. जी० ३।२६५
कणगजालग [कनकजालक] जी० ३।५६३
कणगत्तायरत्ताभ [कनकत्वग्रक्ताभ]
जी० ३।१०६३
कणगत्थभ [कनकप्रभ] जी० ३।८६६
कणगमय [कनकमय] जी० ३।४।१५,६४३,६४४,
८६६
कणगामय [कनकमय] रा० २५४. जी० ३।३५२,
४१५,६३२,६४३,६५४,६५५,७३६
कणगावलि [कनकावलि] ओ० २४,१०८,१३१.
जी० ३।४५१
कणगावलिपविभक्ति [कनकावलिप्रविभक्ति] रा० ८५
कणिया [क्वणिता] जी० ३।५८८
कण्ण [कर्ण] रा० १५,४०,१३२,१३५,१७३.
जी० ३।२६५,२८५,३०५
कण्णछिण्णग [कर्णछिन्नक] ओ० ६०
कण्णपाउरण [कर्णप्रावरण] जी० ३।२१६
कण्णपीठ [कर्णपीठ] ओ० ४७,७२
कण्णपूर [कर्णपूर] ओ० ५७,१०६,१३२
कण्णवाली [कर्णवाली] जी० ३।५६३
कण्णवेयणा [कर्णवेदना] जी० ३।६२८

कण्णवेहण [कर्णवेधन] रा० ८०३
कण्णिका [कर्णिका] जी० ३।३३२
कण्णिया [कर्णिका] ओ० १७०. रा० १५६.
जी० ३।६४३ से ६४५,६५४ से ६५६
कण्णियार [कर्णिकार] जी० ३।८७२
कण्ह [कृष्ण] ओ० ६६. जी० ३।२७८,३४८
कण्हकंव [कृष्णकन्द] जी० १।७३
कण्हकेसर [कृष्णकेसर] जी० ३।२७८
कण्हपरिष्वाया [कृष्णपरित्राजक] ओ० ६६
कण्हबंधुजीव [कृष्णबन्धुजीव] जी० ३।२७८
कण्हमत्तिया [कृष्णमृत्तिका] जी० १।५८
कण्हराई [कृष्णराजी, कृष्णराजी] जी० ३।६१६
कण्हलेस [कृष्णलेश्य] जी० ६।१८६,१६३
कण्हलेसा [कृष्णलेश्या] जी० १।१३३; ३।१५०
कण्हलेस्स [कृष्णलेश्य] जी० ६।१८५,१६६
कण्हलेहसा [कृष्णलेश्या] जी० १।२१
कण्हसप्प [कृष्णसर्प] जी० ३।२७८
कण्हासीय [कृष्णाशोक] जी० ३।२७८
कत [कृत] जी० ३।५६१
कसमाल [कृतमाल] जी० ३।५८२
कतर [कतर] जी० २।६८ से ७२,६५,६६,१३४
से १३८,१४१ से १४६; ३।११३८; ५।५२,
५६; ७।२०; ६।२५३,२८६ से २६१,२६३
कति [कति] रा० ७६७. जी० १।१६,२०,५६,
५६,६२,७४,७६,८२,८५, ९०,९३,१०१,११६,
१२८,१३०,१३४; ३।७७,६८,१०८,१५०,
१५७,१६०,१६५,१६७,१७२ से १७४,२३५
से २३७,२४१,२४२,२४५,२४६,२४६,२५४,
२५५,२५८,२६६,७०३,७०७,७२२,७३३ से
७३५,७४६,७६६,८०६,८१३,८२०,८२४,
८३७,८५१,८५५,८६३ से ८६६,१०१५,
१०१७,१०२३,१०२६,१०४०,१०४१,१०४४,
१०७५,११०१,१११२
कतिवसुत्तो [कतिकृत्वस्] जी० ३।७३०
कतिविध [कतिविध] जी० ३।६ से ११,३७,३८,
१४७,१६१,१८५,६३१; ५।३७

कतिविह [कतिविघ] जी० ३।१८३, ६७६, ६७७;
 ५।३८, ३६, ५३ से ५५
 कतो [कुतस्] जी० ३।८८
 कत्तिया [कत्तिका] जी० ३।६३७
 कत्थ [कुत्र] ओ० १६५।१
 कत्थ [कथ्य] रा० १७३. जी० ३।२८५
 कत्थइ [कुत्रचित्] ओ० २८
 कत्थुलुगुम्म [कस्तुलगुल्लम] जी० ३।५८०
 कवंब [कदम्ब] जी० ३।५८३
 कद्दम [कर्दम] जी० ३।७५१
 कद्दमय [कर्दमक] जी० ३।७४८
 कद्दमोदय [कर्दमोदक] ओ० १११ से ११३, १३७,
 १३८
 कपिहसिय [कपिहसित] जी० ३।८४१
 कप्प [कल्प] ओ० २६, ६५, ६५, ६७, ११४, ११७,
 १४०, १५५, १५७ से १५९, १६२, १६०.
 रा० ७, १२, ५६, १२४, २७६, ७६६.
 जी० २।१६, ४६, ६६, १४८, १४९; ३।७७५,
 ८४२, ८४५, ९३७, १०३६, १०५७ से १०५९,
 १०६२, १०६५, १०६७, १०७१, १०७३, १०७७
 से १०८३, १०८५ से १०८७, १०९०, १०९१,
 १०९३, १०९७ से १०९९, ११०१, ११०५,
 ११०७, ११०९ से १११२, १११४, १११५,
 १११७, १११९, ११२१, ११२२, ११२४, ११२८
 √कप्प [कृप्] — कप्पइ. ओ० ६६. — कप्पति. ओ०
 ६३. — कप्पेज्जा. रा० ७७६
 कप्पणा [कल्पना] ओ० ५७
 कप्पयकल [कल्परूक्ष] ओ० ६३
 कप्पयकल्लग [कल्परूक्षक] रा० २८५
 कप्पयकल्लय [कल्परूक्षक] रा० ३।४५१
 कप्पिय [कल्पित] ओ० ५२, ६२, ६३. रा० ६८७
 से ६८९
 कप्पूर [कर्पूर] रा० ३०. जी० ३।२८३
 कप्पेमाण [कल्पमान] ओ० ६१ से ६३, १६१, १६३.
 रा० ६७१, ७५२

कप्पोवण [कल्पोपण] ओ० ७२
 कक्कड [कवंट] ओ० ६८, ८६ से ९३, ९५, ९६,
 १५५, १५८ से १६१, १६३, १६८. रा० ६६७
 कम [क्रम] जी० ३।७७८, ८३८: १४
 कमंडलु [कमण्डलु] जी० ३।५६७
 कमल [कमल] ओ० २१, २२, ५४. रा० ८, १३१,
 १४७, १४८, १७४, २८०, ७१४, ७२३, ७७७, ७७८,
 ७८८. जी० ३।११८, ११९, २८६, ३२१, ४४६,
 ४४८, ५६७
 कमलागिर [कमलाकर] ओ० २२. रा० ७७७,
 ७७८, ७८८
 कम्म [कर्मन्] ओ० २६, ४६, ७१ से ७४।५, ७६ से
 ८१, ८६, ११६, १५६, १६७, १७१, १८२, १८४,
 १६५।२०. रा० १८५, १८८, ७५०, ७५१, ७७१,
 ७७२. जी० २. ७३, ६७, १३६; ३।१२६।६,
 २१७, २६७, २६८
 कम्मंत [दे० कर्मान्त] ओ० १६१, १६३
 कम्मंस [कर्मांश] ओ० १७१, १८२
 कम्मकर [कर्मकर] ओ० ६४
 कम्मग [कर्मक] जी० ६।१७६
 कम्मगसरीर [कर्मकशरीर] ओ० १७६
 कम्मगसरीरि [कर्मकशरीरिन्] जी० ६।१७०, १७४
 कम्मठिति [कर्मस्थिति] जी० २।७३, ६७, १३६
 कम्मणिसेण [कर्मनिषेक] जी० २।१३६
 कम्मणिसेय [कर्मनिषेक] जी० २।७३, ६७
 कम्मपयडि [कर्मप्रकृति] ओ० १६८
 कम्मभूमक [कर्मभूमक] जी० २।८६, १३२
 कम्मभूमग [कर्मभूमक] जी० १।१५६; २।१४, २८,
 २९, ७७, ८५, ९६, १०६, ११५, १२३, १३८, १४७,
 १४९; ३. २१२, २२६, ८३६
 कम्मभूमय [कर्मभूमज] जी० २।२७
 कम्मभूमि [कर्मभूमि] जी० २।१३७
 कम्मभूमिग [कर्मभूमिज] जी० २।७०, ७२, १३८,
 १४७, १४९
 कम्मभूमिय [कर्मभूमिज] जी० १।१०१
 कम्मभूमिया [कर्मभूमिजा] जी० २।११, १४, ५५,

७०,७२,१४७,१४९
 कम्मय [कर्मक] जी० ११५,५९,६४,७४,७९,८२,
 ५,६३,१०१,११९,१२८,१३०,१३५
 कम्मया [कर्मजा] रा० ६७५
 कम्मविउस्सग्ग [कर्मवृत्त्यर्ग] ओ० ४४
 कम्मसरीर [कर्मशरीर] ओ० १७६, जी०
 ३१२९१९
 कम्मसरीरि [कर्मशरीरिन्] जी० ९११८१
 कम्मर [दे०] जी० ३११८,११९
 कम्मरय [दे०] जी० ३६१०
 कम्हा [कस्मात्] ओ० १७१, रा० ७०३, जी०
 ३१७२३
 कय [कृत] ओ० २,२०,५२,५३,५७,६२,६३,७०,
 ९२, रा० १५,१३१,१४७,१४८,२८०,६८३,
 ६८५,६८७ से ६८९,६९८,७००,७१०,७१६,
 ७२३,७२६,७५१,७५३,७६५,७७४,७९४,
 ८०२,८०५, जी० ३१३०१,४४६
 कय [कच] ओ० ६३, रा० १२,२९१,२९३ से
 २९६,३००,३०५,३१२,३५५, जी० ३१४५७ से
 ४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,५२०,५५४
 कयंब [कदम्ब] जी० ३१३८
 कयपडिकिरिया [कृतप्रतिक्रिया] ओ० ४०
 कयर [कतर] ओ० १८५ से १८८, रा० ६६७,
 जी० ११४३; ३११०७,१०२०,१०२१,
 १०३७; ४११९,२२,२५; ५११९,२०,२६,२७,
 ३२ से ३६,६०; ७१२२,२३; ९१७,१४,५५,
 २५० से २५२,२५५,२९२
 कयलिघरग [कदलीगृहक] रा० १८२,१८३,
 जी० ३१२९४
 कयली [कदली] जी० ३१५९७
 कयवर [कचवर] जी० ३१६२२
 कया [कवा] जी० ३२७२
 कयाइ [कदाचित्] ओ० ११९, रा० ६८०,
 जी० ३१५९
 कयाइं [कदाचित्] रा० ७५४

कयाति [कदाचित्] रा० २००
 कयाधि [कदापि, कदाचित्] जी० ३१७०२
 कर [कर] ओ० १५, जी० ३१५८९,५९७
 ककर [कृ]—करावेति रा० ७७४.—करिस्सइ
 रा० ७७१—करिस्सति रा० ८०३
 —करिस्सामि रा० ७८७.—करिस्सामो, ओ०
 ५२, रा० ६८७.—करेइ, ओ० २१, रा० ५६,
 जी० ३१४६१.—करेति, ओ० ४७, रा० १०,
 जी० ११२७.—करेज्ज, जी० ३१९६७,
 —करेज्जा, ओ० १८०, रा० १२.—करेति,
 रा० ८, जी० ३१४४३.—करेमि, रा० ७६४,
 करेस्सति, रा० ८०२.—करेह, रा० ९.—करेहि,
 ओ० ५५, रा० ६९५.—करेहिंति, ओ० १४४,
 —करेहिंति ओ० १५४, रा० ८१६,
 —कारवेति, रा० १२, कारवेह, रा० ९,
 कारवेहि, ओ० ५५.—कारहिंति, ओ० १४४,
 —कीरइ, ओ० १५४, रा० ७६७
 करंडग [करण्डक] ओ० ११७, रा० ७९६
 करकण्ट [करकण्ट] ओ० ९६
 करग [करक] जी० ३१५८७
 करड [करट] रा० ७७
 करडी [करटी] जी० ३१५८८
 करण [करण] ओ० १९,२५,४६,६३,१४४,१४५,
 १६१,१६३, रा० ७६,१७३,६८६,८०२,८०३,
 ८०५, जी० ३१२८५,५९६,८५४
 करणओ [करणतस्] ओ० १४५, रा० ८०६,८०७
 करणथा [करणता] ओ० १७१
 करणिज्ज [करणीय] रा० ११,५९,२७५,२७६,
 जी० ३१४४१,४४२
 करतल [करतल] रा० २४, जी० ३१२७७,४४५,
 ४४६,४४८,४५८ से ४६२,४६५,४७०,४७७,
 ५१६,५२०,५५४,५५५
 करभरवित्ति [करभरवृत्ति] रा० ६७१,७०३,७१८,
 ७५०,७५१
 करय [करक] जी० ११६५
 करयल [करतल] ओ० १५,२०,२१,५३,५४,५६,

६२, ११७. रा० ८, १०, १२, १४, १८, ४६, ७२
७४, ११८, २७६, २७६, २८०, २८२, २६१ से
२६६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५, ६५५, ६७२,
६८१, ६८३, ६८६, ७०७, ७०८, ७१३, ७१४,
७२३, ७६५, ७७०, ७७१, ७६६. जी० ३।४४२
४५७

करवत [करपत्र] जी० ३।११०

करित्तए [कर्त्तुम्] ओ० १०३

करिय [कृत्वा] रा० २६२. जी० ३।४५७

करेत्ता [कृत्वा] ओ० २१. रा० ६. जी० ३।४४३

करेमाण [कुर्वाण] ओ० ५२, ६४, ६४, ११६, १५६.

रा० ६८७, ६८८. जी० ३।४४३, ४४५, ८४२,
८४५, ६१७.

करोडिआ [करोटिका] ओ० ११७

करोडो [करोटी] जी० ३।५८७

कलंक [कलङ्क] जी० ३।५६८

कलंकलीभाव [कलङ्कलीभाव] ओ० १६५

कलंब [कदम्ब] ओ० ६, १०

कलंबचीरियापत्त [कदम्बचीरिकापत्र] जी० ३।८५

कलंबुय [कदम्बक] जी० ३।८३८, १५, ८४२

कलकल [कलकल] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८.

जी० ३।८४२, ८४५

कलकलैत [कलकलायमान] ओ० ४६

कलण [कलन] ओ० ४६

कलमसालि [कलमशालि] जी० ३।५६२

कलस [कलश] ओ० २, १२, ६४. रा० २१, ४६,
२७६, २८०, २६१. जी० ३।२८६, ४४५, ४४६,
४४८, ५८७, ५६७

कलसिया [कलशिका] रा० ७७

कलह [कलह] ओ० ४६, ७१, ११७, १६१, १६३

रा० ७६६. जी० ३।६२७

कलहंस [कलहंस] ओ० ६. जी० ३।२७५

कलहविवेग [कलहविवेक] ओ० ७१.

कला [कला] ओ० १४६, १४८, १४६. रा० ८०६,
८०७, ८०६, ८१०

कलायरिय [कलाचार्य] ओ० १४५ से १४७. रा०
७७६, ८०५ से ८०८

कलाव [कलाप] ओ० २, ५५. रा० ३२, १३२,
२३५, २८१, २६१, २६४, २६६, ३००, ३०५, ३१२,
३५५, ६६४. जी० ३।३०२, १७२, ३६७, ४४७,
४५६, ४६१, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०,
५६३, ५६३

कलिय [कलिङ्ग] जी० ३।५६५

कलिकलुस [कलिकलुष] रा० ७५०, ७५१

कलित [कलित] जी० ३।२७२, ४४७, ४५७, ४५६,
४६०, ५६४, ५६५

कलित्त [कटिभ्र] ओ० १३

कलिय [कलित] ओ० १, २, १५, ४६, ५५ से ५७,
६२, ६५. रा० १२, १७, १८, २०, ३२, ५२, ५६,
१२६, १३७, २३१, २४७, २८१, २६१, २६३ से
२६६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५. जी० ३।२८८,
३००, ३०७, ३७२, ३६३, ४५८, ४६०, ४६२,
४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५५०, ५५४, ५८०,
५६१, ५६७

कलुस [कलुष] ओ० ४६

कलेवर [कलेवर] रा० १६०. जी० ३।२६४

कल्ल [कल्य] ओ० २२. रा० ७२३, ७७७, ७७८,
७८८

कल्लाण [कल्याण] ओ० २, ५२, ७१, १३६. रा० ६,
१०, ५८, १८५, १८७, २४०, २७६, ६८७, ७०४,
७१६, ७७६. जी० ३।२१७, २६७, २६८, ३५८,
४०२, ४४२, ५७६, ६०२

कल्लाणग [कल्याणक] ओ० ४७, ६३, ७२. जी०
३।५६५

कल्लोल [कल्लोल] ओ० ४६

कवइय [कवचिक] ओ० ५७

कवड [कपट] रा० ६७१

कवय [कवच] ओ० १६५।२०. रा० ६६४, ६८३.
जी० ३।५६२

कवल [कवल] ओ० ३३

कषाड [कषाट] ओ० १,१७४. रा० १३०. जी०
३३००

कषिट्ट [कषित्थ] जी० ११७२

कषियच्छ [कषिकच्छ] जी० ३१८५

कषिल [कषिल] ओ० ६. जी० ३१२७५

कषिसीसग [कषिसीषक] ओ० १. रा० १२८.
जी० ३३५३

कषिसीसय [कषिसीषक] रा० १२८. जी० ३३५३

कषिहसिय [कषिहसित] जी० ३१६२६

कवेल्लुयाघाय [कवेल्लुकापाक] जी० ३११२८

कवोत [कपोत] जी० ३१५६८

कवोल [कवाल] ओ० १६. रा० २५४.
जी० ३४१५, ५६६, ५६७

कसाय [कषाय] ओ० ४४, ४६. जी० ११५, १४,
१६, ८६, ९६, १०१, ११६, १२८, १३६; ३१२२;
६१६६

कसायपञ्चिसंलीनाया [कषायप्रतिसंलीनता]
ओ० ३६

कसायविउस्सग [कषायव्युत्सग] ओ० ४४

कसायसमुग्घाय [कषायसमुद्घात] जी० ११२३,
८५; ३१०८, १११२, १११३

कसिण [कृष्ण] ओ० १६, ४७. जी० ३१५६६, ५६७

कसिण [कृत्सन] ओ० १५३, १६५, १६६.
रा० ८१४

√कह [कथय्]—कहति. ओ० ४५—कहेइ.
रा० ६६३

कहं [कथम्] ओ० ११८. रा० ७०३.
जी० ३१२११

कहकहभूत [कहकहभूत] रा० ७८

कहग [कथक] ओ० १, २

कहगपेच्छा [कथकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.
जी० ३१६१६

कहा [कथा] ओ० २०, ४५, ५३. रा० ७१३

कहि [वव] जी० ११२७

कहि [वव, कुत्र] ओ० १४०. रा० १२२.
जी० ११५४

कहइय [कायिक] ओ० ६६

काडं [कृत्वा] ओ० १३७

काडंबरीय [काकोदुम्बरिका] जी० ११७२

काडलेस [कापोतलेश्य] जी० ६११६३

काडलेसा [कापोतलेश्या] जी० ६१६८, ६६

काडलेस्स [कापोतलेश्य] जी० ६११८५, १८८, १६६

काडलेस्सा [कापोतलेश्या] जी० ११२१

काऊ [कापोती] जी० ३१७७

काकणिलक्खण [काकिणीलक्षण] ओ० १४६

कागणिलक्खण [काकिणीलक्षण] रा० ८०६

काण्णिमंसक्खविियग [काकिणीमांसखादितक]
ओ० ६०

काणण [कानन] रा० ६५४, ६५५. जी० ३१५५४

कापिसायण [कापिषायन] जी० ३१८०

काम [काम] ओ० १५, ४३, १४६, १५०, १६८.
रा० ६७२, ६८५, ७१०, ७५१, ७५३, ७७४, ७६१,
८११. जी० ३११७६, ११२४

कामकंत [कामकान्त] जी० ३११७६

कामकूड [कामकूट] जी० ३११७६

कामकम [कामकम] ओ० ४६, ५१

कामगामि [कामकामिन्] जी० ३१५६८, ६०६

कामज्जय [कामज्वज] जी० ३११७६

कामत्तियथ [कामाधिक] ओ० ६८

कामप्पभ [कामप्रभ] जी० ३११७६

कामरय [कामरजस्] ओ० १५०. रा० ८११

कामरूवघारि [कामरूपघारिन्] ओ० ४६

कामलेस्स [कामलेश्य] जी० ३११७६

कामवण्ण [कामवर्ण] जी० ३११७६

कामसिग [कामशृङ्ग] जी० ३११७६

कामसिट्ठ [कामशिष्ट] जी० ३११७६

कामावत्त [कामावर्त] जी० ३११७६

कामुत्तरवडिसय [कामावर्तसक] जी० ३११७६

काय [काय] ओ० २४. रा० १४६, ८१५.
जी० ३११०, ११११, १७४; ६१६६

√काय [काचय्]—कायावेमि रा० ७५४

काय [पाय] [काचपात्र] ओ० १०५, १२८

काय [बंधण] [काचबन्धन] ओ० १०६, १२६
 कायअपरित्त [कायापरीत] जी० ६।७६, ८०
 कायकिलेस [कायकलेश] ओ० ३१, ३६
 कायगुत्त [कायगुत्त] ओ० २७, १५२, १६४.
 रा० ८१३
 कायजोग [काययोग] ओ० ३७, १७५ से १७७,
 १८०, १८२
 कायजोगि [काययोगिन्] जी० १।३१, ८७, १३३;
 ३।१०५, १५२, ११०६; ६।११३, ११५, ११८,
 १२०
 कायद्विति [कायस्थिति] जी० ३।११३३; ६।१२२
 कायपरित्त [कायपरीत] जी० ६।७६, ७७, ८३
 कायबलिय [कायबलिक] ओ० २४
 कायव्व [कर्त्तव्य] रा० ७२, ७०४. जी० ३।१२७;
 ४।६
 कायविषय [कायविनय] ओ० ४०
 कायसम्मिय [कायसमित] ओ० १६४
 कायापरित्त [कायापरीत] जी० ६।८५
 कारंडक [कारण्डक] ओ० ६. जी० ३।२७५
 कारण [कारण] रा० १६, ६७५, ७१६, ७२०, ७५२,
 ७५४, ७५६, ७५८, ७६०, ७६२, ७६४, ७६८
 कारवाहिय [कारवाहिक, कारवाधित] ओ० ६८
 कारवेत्ता [कारयित्वा] ओ० ५५. रा० ६
 कारावण [कारण] ओ० १६१, १६३
 कारैमाण [कारयत्] ओ० ६८. रा० २८२, ७६१.
 जी० ३।३५०, ४४८, ५६३, ६३७
 कारोद्धिय [कारोटिक] ओ० ६८
 काल [काल] ओ० १, १८, २३ से २५, २७, २८, ४५,
 ४७ से ५१, ८२, ८७, ८९ से ९५, ११४, ११७,
 १४०, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७.
 रा० १, ७, ६३, ६५, १७३, २०४, ६६५, ६६६,
 ६६८, ६७६, ६८५, ६८६, ७५०, ७५१ से ७५३,
 ७७१, ७६६, ७६८, ८१५. जी० १।५, ३४, ३५,
 ५०, ५२, ६६, १२७, १३७ से १४२; २।२० से
 २४, २६ से ३०, ३२ से ३६, ३६, ४६, ६३, ६५,

६६, ७३, ७६, ८६, ८८, ९२, ९७, १०७ से १०९,
 १११, ११३, ११४, ११६, १२०, १२१, १२५,
 १२६, १३१ से १३३, १३६, १५०; ३।१२, २२, ४५,
 ८३, ९०, ९४, ११७ से १२०, १५६, १८६, १६२,
 १६५ से १६७, २१४, २३८, २४३, २४७, २५०,
 २५२ से २५६, २५८, ४३६, ५६४, ५६५ ५८६,
 ५९६, ६२६, ६३०, ७२४, ८१६, ८३८। १६, १८,
 २०, ८४४, ८४७, १०२७, १०४२, १०८५, १०८६,
 ११३१, ११३६, ११३७; ४।३, ५, ८, १६, १७;
 ५।५, ८, ९, २१ से २४, २८ से ३०; ७।२;
 ८।३।४; ९।२, ३, १२, २३, २५, २६, ३३, ४०,
 ४६, ५१, ५२, ५६, ६६, ७१, ७३, ७८, ९७, १६४,
 १७१, १७८, २०२, २०४, २५७ से २५९
 कालओ [कालतस्] ओ० २८. रा० २००.
 जी० १।३३, १३६, १४०; २।४८, ४९, ५४, ५७
 से ६२, ८२, ८३; ३।२७२; ४।७ से ११; ५।८,
 ९, १२ से १६, २३, २६; ६।८; ७।६; ८।१०, ११,
 २३, २४, ३१, ३६ से ४८, ५७ ५८, ६८, ७८, ७९,
 ८६, ९०, ९६, ९७, १०२, १०३, ११४, ११५, १२२,
 १३२, १४२, १६० से १६३, १७१, १८६ से
 १९१, १९३, १९५, १९८ से २०७, २१० से
 २१२, २१४, २१६, २२२ से २२५, २२७ से
 २३०, २३३ से २३८, २४० से २४४, २४६,
 २४९, २५७ से २६३, २६५, २६८ से २७३,
 २७५ से २८२, २८४, २८५
 कालतो [कालतस्] जी० २।८४, ११७ से १२०,
 १२२ से १२४; ३।५६, १६३, १६४, ११३३ से
 ११३५; ५।८, १०, २२; ६।१६, २३, ६४, ७६, ७७
 कालधम्म [कालधर्म] रा० ७५३
 कालपोर [दे० कालपर्वन्] जी० ३।८७
 कालमास [कालमास] ओ० ८७, ८९ से ९५, ११४,
 ११७, १४०, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७.
 रा० ७५० से ७५३, ७६६. जी० ३।११७,
 ६३०
 कालमिगपट्ट [कालमृगपट्ट] जी० ३।५६५
 कालमेह [कालमेघ] ओ० ५७

कालय [कालक] जी० ३।८१६
 कालसंधि [कालसन्धित] जी० ३।५८६
 कालागह [कालागुरु] रा० १६, १२, ३२, १३२,
 २३६, २८१, २६२. जी० ३।३०२, ३७२, ३६८,
 ४४७, ४५७
 कालागुरु [कालागुरु] ओ० २, ५५
 कालाभिगहचरय [कालाभिग्रहचरक] ओ० ३४
 कालायस [कालायस] ओ० ६५. रा० १७३,
 ६८१. जी० ३।२८५
 कालोद [कालोद] जी० ३।७७५, ८१० से ८१२,
 ८१४, ८१६, ८१८
 कालोभास [कालावभास] जी० ३।८३, ६४
 कालोय [कालोद] जी० ३।७७० से ७७३, ८००,
 ८०३ से ८०७, ८१३, ८१५, ८१६ से ८२१,
 ६५६, ६६४, ६६५, ६६७, ६७०
 कालोयय [कालोदक] जी० ३।७७२
 कावपेच्छा [कावप्रेक्षा] जी० ३।६१६
 काविल [कापिल] ओ० ६६
 काविसायण [कापिषायन] जी० ३।५८६
 कास [काश] जी० ३।६२८
 कासिस्ता [काशित्वा] जी० ३।६३०
 किङ्कम [किर्तिकर्मन्] ओ० ४०
 कि [किम्] रा० ६२. जी० १।२
 किङ्कर [किङ्कर] ओ० ६४. रा० ५१
 किङ्करभूत [किङ्करभूत] जी० ३।५६२
 किङ्करभूय [किङ्करभूत] रा० ६६४
 किचि [किञ्चित्] ओ० १६६. रा० ६. जी० ३।८२
 किचूणोमोदरिय [किञ्चिदूनावमोदरिक] ओ० ३३
 किपागफल [किम्पाकफल] ओ० २३
 किपुरिस [किम्पुरुष] ओ० ४६, १२०, १६२.
 रा० १४१, १७३, १६२, ६६८, ७५२, ७७१,
 ७८६. जी० ३।२६६, २८५, ३१८
 किपुरिसकण्ठ [किम्पुरुषकण्ठ] रा० ११५, २५८.
 जी० ३।३२८
 किपुरिसकण्ठम् [किम्पुरुषकण्ठक] जी० ३।४१६
 किमय [किम्मय] जी० ३।८७, १०८१

किमुय [किमुक] ओ० २२. रा० २७, ७७७, ७७८,
 ७८८. जी० ३।११८, २८०, ५६०
 किञ्च [कृत्य] रा० ११, ५६
 किञ्चा [कृत्वा] ओ० ८७. रा० ६६७,
 जी० ३।११७
 किट्टिया [कृष्टिका] जी० १।७३
 किङ्कर [कीडाकर] ओ० ६४
 किणिय [किणित] रा० ७७
 किण्णर [किन्नर] ओ० १३, ४६. रा० ६६८,
 ७५२, ७७१, ७८६. जी० ३।२६६, २८५,
 २८८, ३००, ३१८, ३७२
 किण्णरकण्ठ [किन्नरकण्ठ] जी० ३।३२६
 किण्णरकण्ठग [किन्नरकण्ठक] जी० ३।४१६
 किण्ण [किणम्] रा० ६६७
 किण्ह [कृष्ण] ओ० ४, १२, १३, १६. रा० २२,
 २४, २५, १२८, १३२, १५३, १६७, १७०,
 १७८, २३५, ७०३. जी० ३।७८३, २७३,
 २७७, २७८, २६०, २६८, ३०२, ३२६,
 ३५३, ३५८, ३८२, ३६७, ५८५, ५६७,
 ८३८।१७, १०७५
 किण्हकण्णवीर [कृष्णकण्णवीर] रा० २५.
 जी० ३।२७८
 किण्हकेसर [कृष्णकेसर] रा० २५
 किण्हच्छाय [कृष्णच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
 ७०३. जी० ३।२७३
 किण्हबंधुजीव [कृष्णबन्धुजीव] रा० २५
 किण्हलेस [कृष्णलेश्य] जी० ३।१०१
 किण्हलेहसा [कृष्णलेहसा] जी० ३।१०१, १०२
 किण्हसप्य [कृष्णसर्प] रा० २५
 किण्हसाय [कृष्णाशोक] रा० २५
 किण्होभास [कृष्णावभास] ओ० ४. रा० १७०,
 ७०३. जी० ३।२७३, २६८, ३५८, ५८५
 √कित्त [कीर्त्त] — कित्तति. रा० १८५
 कित्तिय [कीर्त्ति] ओ० २.

१. अंगह, भल्लातक, अर्जुन (आण्टे)

किन्नर [किन्नर] ओ० १२०, १६२. रा० १७,
१८, २०, ३२, ३७, १२६, १४१, १७३, १६२.
जी० ३३११

किन्नरकण्ठ [किन्नरकण्ठ] रा० १५५, २५८

किमंग [किमङ्ग] ओ० ५२. रा० ६८७

किमि [कृमि] जी० ३१८४

किमिकुम्भी [कृमिकुम्भी] रा० ७५६

किमिय [कृमिक] जी० ३११११

किमिराग [कृमिराग] रा० २७. जी० ३१२८०

किर [किल] जी० ३१२६११

किरण [किरण] ओ० १६. जी० ३१५६०, ५६६,
५६७

किरिया [क्रिया] ओ० ४०, १२०, १६२. रा० ६६८,
७५२, ७८६. जी० ३१२१०, २११

किलंत [क्लान्त] जी० ३१११८, ११६

किलाम [क्लम] रा० ७२६, ७३१, ७३२

किलेस [क्लेश] ओ० ४६

किव्विसिय [कित्विषिक] ओ० ६८

किसलय [किसलय] ओ० ५, ८. रा० १३६.
जी० ३१२७४, ३०६

किसि [कृषि] जी० ३१६०७

किसिय [कृषित] रा० ७६०, ७६१

√कीड [कीड]—कीडति जी० ३१२६८

कीयगड [कीतकृत] ओ० १३४

√कील [कीड]—कीलति रा० १८५. जी० ३१२१७

कीलग [कीलक] रा० २४. जी० ३१२७७

कीलण [कीडन] ओ० ४६

कीलिया [कीलिका] जी० ११११६

कुकुम [कुडकुम] ओ० ११०, १३३. रा० ३०.
जी० ३१२८३

कुंचस्सर [क्रोञ्चस्वर] रा० १३५

कुंचिय [कुञ्चित] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६६

कुञ्जर [कुञ्जर] ओ० १, १३, २७. रा० १७, १८,
२०, ३२, ३७, १२६, ८१३. जी० ३१११८,
११६, २८८, ३००, ३११, ३७२

कुंडधारपडिमा [कुण्डधारप्रतिमा] रा० २५७
जी० ३१४१८

कुंडल [कुण्डल] ओ० १५, २१, ४७, ४६, ५१,
५४, ६३, ६५, ७२, १०८, १३१. रा० ८,
२८५, ६७२, ७१४. जी० ३१४५१, ५६३,
७७५, ६३३

कुंडलभद्र [कुण्डलभद्र] जी० ३१६३३

कुंडलमहाभद्र [कुण्डलमहाभद्र] जी० ३१६३३

कुंडलमहावर [कुण्डलमहावर] जी० ३१६३३

कुंडलवर [कुण्डलवर] जी० ३१६३३

कुंडलवरभद्र [कुण्डलवरभद्र] जी० ३१६३३

कुंडलवरमहाभद्र [कुण्डलवरमहाभद्र] जी० ३१६३३

कुंडलवरोभास [कुण्डलवरोभास] जी० ३१६३३

कुंडलवरोभासमहावर [कुण्डलवरोभासमहावर]
जी० ३१६३३

कुंडलवरोभासवर [कुण्डलवरोभासवर]
जी० ३१६३३

कुंडिया [कुण्डिका] ओ० ११७

कुंडियालंछणम् [कुण्डिकालाञ्छणम्] रा० ७६७

कुंत [कुन्त] ओ० ६४. जी० ३१११०

कुंतग [कुन्ताग्र] जी० ३१५५

कुंतगाह [कुन्तगाह] ओ० ६४

कुन्धु [कुन्धु] रा० ७७२. जी० ३११११

कुन्द [कुन्द] ओ० १६. रा० २६, ३८, १६०, २२२,
२५५, २५६. जी० ३१२८२, ३१२, ३३३,
३८१, ४१६, ४१७, ५६६, ५६७, ८६४

कुन्दगुम्भ [कुन्दगुम्भ] जी० ३१५८०

कुन्दलया [कुन्दलता] ओ० ११. रा० १४५, ३१२६८,
५८४

कुन्दलयापविभक्ति [कुन्दलयाप्रविभक्ति] रा० १०१

कुन्दुरुक [कुन्दुरुक] ओ० २, ५५. रा० ६, १२,
३२, १३२, २३६, २८१, २६२. जी० ३१३०२,
३७२, ३६८, ४४७, ४५७

कुम्भ [कुम्भ] जी० ३१५६७

कुम्भारावाय [कुम्भकारापाक] जी० ३१११८

कुम्भिक [कौम्भिक, कुम्भाग्र] रा० ४०. जी० ३१३१३

- कुंभी [कुम्भी] रा० ७५६
 कुक्कुडय [कौकुचिक] ओ० ६५
 कुक्कुड [कुक्कुट] ओ० १, ३३
 कुक्कुडलक्षण [कुक्कुटलक्षण] ओ० १४६.
 रा० ८०६
 कुच्छि [कुक्षि] ओ० १६. जी० ३१६६ से ५६८,
 ७८८
 कुच्छिसूल [कुक्षिसूल] जी० ३१६२८
 कुञ्जायगुम्भ [कुञ्जरगुल्म] जी० ३१५८०
 कुट्टिज्जंत [कुट्टिचमान] रा० ७७
 कुट्टिमतल [कुट्टिमतल] ओ० ६३
 कुट्ट [कुठ] जी० ३१६२८
 कुडभी [कुडभी] रा० ५२, ५६, २३१, २४७.
 जी० ३१३६३
 कुडय [कुटज] ओ० ६, १०. जी० ३१३८८, ५८३
 कुटिल [कुटिल] ओ० १, ४६. जी० ३१५६७
 कुटुंब [कुटुम्ब] रा० ६७५
 कुट्टु [कुट्ट] जी० ३१७२४, ७२७
 कुणाला [कुणाला] रा० ६७६, ६७७, ६८३, ७०६
 कुणिम [दे० कुणप] ओ० ७३. जी० ३१८४
 कुतुंब [कुस्तुम्ब] रा० ७७
 कुतुंबर [कुस्तुम्बर] रा० ७७
 कुत्तियावण [कुत्तिकावण] ओ० २६
 कुस्तुंबक [कुस्तुम्बक] जी० ३१७८
 कुमार [कुमार] रा० ६७३, ६७४, ७६१ से ७६३
 कुमारगह [कुमारगह] जी० ३१६२८
 कुमारसमण [कुमारश्रमण] रा० ६८६, ६८७,
 ६८६, ६८२ से ६६७, ७०० से ७०६, ७११,
 ७१३, ७१४, ७१६ से ७२२, ७३१ से ७३३,
 ७३६ से ७३६ ७४७ से ७८१, ७८७, ७६६
 कुमुद [कुमुद] रा० २६, ३१. जी० ३१११८,
 ११६, २५६, २८२, २८४, ५६७
 कुमुदपभा [कुमुदप्रभा] जी० ३१६८३
 कुमुदा [कुमुदा] जी० ३१६८३, ६१५
 कुमुय [कुमुद] [कुमुद] ओ० १२, १५०.
 रा० १७४, १६७, २७६, २८१, २८८, ८११.
 जी० ३१२८२, २८६
 कुम्म [कुर्म] ओ० १६, २७, ३७. रा० ८११.
 जी० ३१५६६, ५६७
 कुरा [कुरु, कुर] जी० ३१५७८ से ५६६, ६०५ से
 ६२८, ६३१, ६३२, ६३६, ६६६, ६६८, ७०२,
 कुब [कुरु] जी० ३१७७५३
 कुरुविन्द [कुरुविन्द] ओ० १६. जी० ३१५६६
 कुल [कुल] ओ० १४, २३, ४०, १४१, १५५.
 रा० ७६६. जी० ३११६०
 कुलकोडि [कुलकोटि] जी० ३११६० से १६२,
 १६५ से १६६, १७१, १७४, ६६६, ६६८
 कुलक्षय [कुलक्षय] जी० ३१६२६, ६२८
 कुलधररक्षिता [कुलगृहरक्षिता] ओ० ६२
 कुलनिश्चित [कुलनिश्चित] रा० ७७३
 कुलरोग [कुलरोग] जी० ३१६२८
 कुलव [कुडव] रा० ७७२
 कुलवेयावृत्त [कुलवेयावृत्त] ओ० ४१
 कुलसंपण [कुलसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६
 कुलिञ्जय [कुलीञ्जत] ओ० ६६
 कुवलय [कुवलय] ओ० १३. जी० ३१५६७
 कुस [कुश] ओ० ८, १०. रा० ३७. जी० ३१३११,
 ३८६, ५८१ से ५८३, ५८६, से ५६५
 कुसगा [कुशाग्र] ओ० २३
 कुसल [कुशल] ओ० १५, ३७, ६३, ६४, १२० १४८,
 १४६, १६२. रा० १२, ७०, १७३, ६७२, ६८१,
 ६६८, ७५२, ७५८, ७५९, ७६५, ७६६, ७७०,
 ७८६, ८०४, ८०६, ८१०. जी० ३१११८, २८५,
 ५८८, ५६७
 कुसुम [कुसुम] ओ० १३, ४७, ४६. रा० ६, १२, २६
 से २८, ३१, २२८, २६१, २६३ से २६६, ३००,
 ३०५, ३१२, ३५५. जी० ३१२७६ से २८१,
 २८४, ३८७, ४५७ से ४६२, ४६५, ४७०, ४७७,
 ५१६, ५२०, ५५४, ५८०, ५६०, ६७२
 √कुसुम [कुसुम]—कुसुमति. जी० ३१५८०

कुसुमधरग [कुसुमगृहक] रा० १८२, १८३.

जी० ३२६४, ८५७

कुसुमधरय [कुसुमगृहक] जी० ३१८७

कुसुमदाम [कुसुमदामन्] जी० ३५६१

कुसुमासव [कुसुमासव] ओ० ६. जी० ३२७४

कुसुमित [कुसुमित] जी० ३५८६

कुसुमिय [कुसुमित] ओ० ५, ८, १०, ११.

रा० १४५. जी० ३२६८, २७४, ३६०, ५८४,

७०२, ८०८, ८२६

कुहंड [कूष्माण्ड] ओ० ४६

कुहंडिया [कूष्माण्डी] रा० २८. जी० ३२८१

कुहणा [कुहणा] जी० १६६, ७२

कुहर [कुहर] रा० ७६, १७३. जी० ३२८५

कुहिय [कुधित] जी० ३१८४

कूड [कूट] ओ० ६३. रा० १३०, १७१.

जी० ३११६, ३००, ६८६, ६६०, ६६२ से ६६८,

७७५, ८४५, ६३७

कूडागार [कूटाकार] ओ० १६. जी० ३५६४,

५६६, ६०४

कूडागारसाला [कूटाकारशाला] रा० १२३, ७५५,

७७२, ७८७, ७८८

कूडाहृच्च [कूटाहृत्य] रा० ७५१, ७६७

कूणिय [कूणिक] ओ० १४, २०, २१, ५३ से ५६,

६२ से ७१, ८०. रा० ७७८

कूल [कूल] ओ० ११५. रा० १७४, २७६.

जी० ३१२८, ४४५, ६३२, ६३६, ६६८

कूलधम्मग [कूलध्मायक] ओ० ६४

कूवगाह [कूपगाह] ओ० ६४

कूवमह [कूपमह] जी० ३१६५

कूवय [कूपक] ओ० ४६

केउ [केतु] ओ० ६ से ८, १०, ५०. रा० १६२,

१६३. जी० ३२७५, २७६, ३३५, ३५५

केउकर [केतुकर] ओ० १४. रा० ६७१

केऊर [केयूर] ओ० २१, ५४, १०८, १३१.

रा० ८, ७१४

केकय [केकय] रा० ७०६

केतकी [केतकी] जी० ३२८३

केतगी [केतकी] रा० ३०

केयइ [केकय] रा० ६६८, ६६६, ६८३, ७११

केमहालत [कियन्महत्] जी० ३१७६, १७८, १८२

केमहालय [कियन्महत्] जी० ११६; ३१८६ ६१,

६४, १८०, २५६, ७६० से ७६२, ६६६, १०८०,

१०८७, १०८८

केयुय [केतुक] जी० ३१७२३

केयूर [केयूर] रा० २८५. जी० ३४५१, ५६३

केरिसग [कीदृशक] जी० ३६४, १११६

केरिसय [कीदृशक] रा० १७३. जी० ३१८३ से

८५, ६५ से ६७, १०६, ११६, ११८, ११९, १२२,

१२३, १२८, २१८, २८३, से २८५, ५७६, ५६६,

५६७, ६०१, ६०२, ६५५, ६५८, ६६१, १०७७ से

१०७६, १०६३, १०६७ से १०६६, १११४,

१११७, ११२१ से ११२४

केरिसिय (कीदृशक) जी० ३११२२

केलास [कैलाश] जी० ३१७८८, ७४६, ७५२, ६२३

केलासा [कैलाशा] जी० ३१७५२

केली [केली] ओ० ४६

केवइ [कियत्] जी० १४१, १४२

केवइय [कियत्] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७,

१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७. रा० ६५५,

६६६. जी० १५२; ३१७७, ८१, २५६, ७६८,

८०२, ८३०, १००४, १०४२, १०६२, १०६७,

१०६६; ४३

केवचिरं [कियच्चिरम्] रा० २०० जी० ४१७

केवच्चिरं [कियच्चिरम्] जी० ११३६

केवति [कियत्] जी० ३१६०, १६२, १६५ से १६७,

५६६, ६२६, ११३१, ११३६, ११३७; ६१२,

५६

केवतिय [कियत्] रा० ७६८ जी० ११३७, १३८;

२१२० से २४, २६ से ३०, ३२ से ३६, ३६, ४६,

६३, ६६, ७३, ७६, ८६, ८८, ९२, ९७, १०७ से

१०६, १११, ११३, ११४, ११६, १२५, १२६,
 १३३, १३६, १५०; ३१५, १२, १४ से २१, ३३,
 ३४, ३६, ४०, ४२, ४४, ५१, ६० से ६३, ६६, ७७,
 ८०, ८१, ८६, १०७, १२०, १५६, १८६, १९२,
 २३८, २४३, २४७, २५०, २५६, ५६४, ५६५,
 ५७०, ७०६, ७१४, ७३२, ७८८, ७८६, ७९४,
 ८१२, ८१५, ८२३, ८२७, ८३२, ८३४, ८३५,
 ८३६, ८४४, ८४७, ८५०, ८५३, ८५४, ८७२,
 ८७३, १००० से १००६, १०१०, १०२२, १०२७,
 १०७३, १०८३, १०८५, ११११; ४१५, १६, १७;
 ५१५, २१, २३, २४, २६, ३०; ७१२; ६१२, ४,
 २५, २६, ३३, ४६, ५२

केवल [केवल] ओ० १५१, १५३, १६०, १६५,
 १६६. रा० ८१२, ८१४. जी० ३११०२५

केवलकल्प [केवलकल्प] ओ० १६६. रा० ७.
 जी० ३१८६

केवलज्ञान [केवलज्ञान] ओ० ४०, १६५, ११३. रा०
 ७३६, ७४५, ७४६

केवलज्ञानविनय [केवलज्ञानविनय] ओ० ४०

केवलज्ञानिन् [केवलज्ञानिन्] ओ० २४. जी० ६११६३,
 १६५, १६६, १६७, २०१, २०५, २०८

केवलदर्शनिन् [केवलदर्शनिन्] जी० ११२६, ८६;
 ६१३१, १३५, १३६, १४०

केवलदृष्टि [केवलदृष्टि] ओ० १६५, ११३

केवलज्ञानिन् [केवलज्ञानिन्] जी० ११३३
 ६१५६, १६३

केवलपरियाग [केवलपरियाग] ओ० १६५

केवलि [केवलिन्] ओ० ७२, १५४, १७१, १७२.
 रा० ७१६, ७७१, ७७५, ८१५, ८१६.
 जी० ११२६; ६३६, ४१, ४२, ४४ से ४८, ५०,
 ५२ से ५४

केवलिपरियाग [केवलिपरियाग] ओ० १५४.
 रा० ८१६

केवलिमुग्धाय [केवलिमुग्धात] ओ० १६६,
 १७४. जी० ११३३

केस [केस] ओ० १३, ४७, ६२. रा० २८६.

जी० ३१४५२

केसंतकेसभूमि [केशान्तकेसभूमि] ओ० १६.
 रा० २५४. जी० ३१४१५, ५६६

केसर [केसर] रा० २५, ३७, १७४. जी० ३१११८,
 ११६, २५६ २७८, २८६, ३११, ६४३

केसरिद्रह [केसरिद्रह] जी० ३१४४५

केसरिद्रह [केसरिद्रह] रा० २७६

केसरिया [केसरिका] ओ० ११७

केसलोय [केसलोच] ओ० १५४, १६५, १६६.
 रा० ८१६

केसव [केसव] जी० ३१२२६

केसि [केसि] रा० ६८६, ६८७, ६८६, ६९२ से
 ६९७, ७०० से ७०६, ७११, ७१३, ७१४, ७१६
 से ७२२, ७३१ से ७३३, ७३६ से ७३६, ७४७
 से ७८१, ७८७, ७९६

केसि [केसिन्] रा० १३३. जी० ३१३०३

केसुध [केसुध] रा० ४५

कोइल [कोकिल] ओ० ६. जी० ३१२७५, ५६७

कोडय [कोतुक] ओ० २०, ५२, ५३, ६३, ७०.
 रा० ६८३, ६८५, ६८७ से ६८६, ६९२, ७००,
 ७१६, ७२६, ७५१, ७५३, ७६५, ८७४, ८०२,
 ८०५

कोडयकारग [कोतुककारक] ओ० १५६

कोउहल [कोतुहल] जी० ३१६१६

कोऊहल [कोतुहल] ओ० ५२. रा० १५, १६, ६८७,
 ६८६

कोंच [कोञ्च] रा० २६. जी० ३१२८२

कोंचणिग्घोस [कोञ्चनिर्घोष] ओ० ७१. रा० ६१

कोंचस्तर [कोञ्चस्तर] जी० ३१६०५, ५६८

कोंचासण [कोञ्चासन] रा० १८१, १८३.
 जी० ३१२६३

कोडलग [कोण्डलक] ओ० ६. जी० ३१२७५

कोकान्तिय [कोकान्तिक] जी० ३१६२०

कोकासित [दे०] जी० ३१५६६

कोवकुइय [कोकुचिक] ओ० ६४

कौटुण [कुट्टन] ओ० १६१, १६३
 कौटुज्जमाण [कुट्ट्यमाण] रा० ३०
 कौटुमत्तल [कुट्टिमत्तल] रा० १३०, १७३, ८०४.
 जी० ३१२८५, ३००
 कौटुय [कुट्टयित्वा] जी० ३११८, ११६
 कौटुदेज्जमाण [कुट्ट्यमाण] जी० ३१२८३
 कौटु [कोष्ठ] रा० ३०, १६१, २५८, २७६.
 जी० ३१२३४, २८३, ४१६, ६३७, १०७८
 कौटुग [कोष्ठक] रा० ७११, जी० ३१५६४
 कौटुबुद्धि [कोष्ठबुद्धि] ओ० २४
 कौटुय [कोष्ठक] रा० ६७८, ६८६, ६८७, ६८६,
 ६६२, ७००, ७०६
 कौटुगार [कोष्ठागार] ओ० १४, २३.
 रा० ६७१, ६६५, ७८७, ७८८, ७६०, ७६१
 कौटुगार [कोष्ठागार] रा० ६७४
 कौडकौडी [कोटिकोटी] जी० ३१७०३, ७२२, ८०६,
 ८२०, ८३०, ८३४, ८३७, ८३८, ८३९, ८५५,
 १०००
 कौडाकोडि [कोटाकोटि] ओ० १६२, रा० १२४
 कौडाकोडी [कोटाकोटी] जी० २१७३, ६७, १३६;
 ३१७०३, ८०६, १०३८; ५१२६
 कौडि [कोटि] ओ० १, १६२, रा० १२४
 कौडिकौडी [कोटिकोटी] जी० ३११०००
 कौडी [कोटी] रा० ६६४, जी० ३१२३२, ५६२,
 ५७७, ६५८, ८२३, ८३२, ८३५, ८३६, १०३८
 कौडीय [कोटीक] रा० २३६, जी० ३१४०१
 कौडुंब [कौटुम्ब] जी० ३१२३६
 कौडुंबि [कौटुम्बिन्] जी० ३११२६
 कौडुंबिय [कौटुम्बिक] ओ० १, १८, ५२, ६३.
 रा० ६८१ से ६८३, ६८७, ६८८, ६९०, ६९१,
 ७०४, ७०६, ७१४ से ७१६, ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४, जी० ३१६०६
 कोण [दे०कोण] रा० १७३, जी० ३१२८५
 कोणिय [कोणिक] ओ० १५, १६, १८, २०, ६२
 कोत्तिय [कोत्तिक] ओ० ६४
 कोद्दालक [कुद्दालक] जी० ३१५८२

कौमल [कोमल] ओ० ५, ८, १६, २२, ६३
 रा० ७२३, ७७७, ७७८, ७८८, जी० ३१२७४,
 ५६६, ५६७
 कौमुई [कौमुदी] ओ० १५, रा० ६७२.
 जी० ३१५६७
 कोयासिय [विकसित^१] ओ० १६
 कोरंट [कोरण्ट] ओ० ६३, ६४, रा० ५१, २५५
 कोरंटक [कोरण्टक] रा० २८, जी० ३१२८१
 कोरंटयगुम्म [कोरण्टकगुम्म] जी० ३१५८०
 कोरक [कोरक] जी० ३१२७५
 कोरव्व [कोरव्व] ओ० २३, रा० ६८८.
 जी० ३१११७
 कोरव्वपरिसा [कोरव्वपरिषद्] रा० ६१
 कोरिल्लय [दे०] रा० ७५६
 कोरेंट [कोरण्ट] ओ० ६५, रा० ६८३, ६६२,
 ७००, ७१६, जी० ३१४१६
 कोलसुणम [कोलसुनक] जी० ३१६२०
 कोलाहल [कोलाहल] ओ० ४६
 कोव [कोप] जी० ३११२८
 कोस [कोश] १४, २३, १७०, रा० १८८, २०७,
 २०८, २३१, २४७, ६७१, ६७४, ६६५, ७६०,
 ७६१, जी० ३१४३, ४४, ८२, २६०, ३५२ से
 ३५५, ३५६, ३६१, ३६४, ३६८, ३७२, ३७४,
 ३६३, ३६५, ४०१, ४०२, ४१२, ४२५, ६३४,
 ६४२, ६४४, ६४६, ६५३, ६५५, ६६३, ६६८,
 ६७३, ६७४, ६७६, ६८३, ६८५, ६६१, ७१४,
 ७३६, ७५४, ७५६, ७६२, ७६८ से ७७०, ७७२,
 ८०२, ८१५, ८३६, १०१२ से १०१४
 कोसंब [कोशाम्ब] जी० ११७१
 कोसंबपल्लवपविभक्ति [कोशाम्बपल्लवप्रविभक्ति]
 रा० १००
 कोसेज्ज [कोशिय] ओ० १३, जी० ३१५६५
 कोह [कोध] ओ० २८, ३७, ४४, ७१, ६१, ११७,
 ११६, १६१, १६३, १६८, रा० ७६६.
 जी० ३११२८, ५६८, ७६५, ८४१

१. हे० ४१६५

कोहंगक [कोभङ्गक] ओ० ६
 कोहकसाह [कोधकषायिन्] जी० १।१३१;
 १।१४८, १४९, १५२, १५५
 कोहकसाय [कोधकषाय] जी० १।१९
 कोहविद्वेग [कोधविवेक] ओ० ७१

ख

ख [ख] रा० ६५
 खइय [क्षायिक] रा० ७६१, ८१५
 खइय [खचित] जी० ३।३७२
 खओवसम [क्षयोपशम] ओ० ११९, १५६
 खञ्जण [खञ्जन] ओ० १३. रा० २५.
 जी० ३।२७८
 खंड [खण्ड] जी० ३।५६२, ६०१, ८६६
 खंडरक्ख [खण्डरक्ष] ओ० १
 खंडिय [खण्डिक] ओ० ६८
 खंति [क्षान्ति] ओ० २५, ४३. रा० ६८६, ८१४
 खंतिखम [क्षान्तिकाम] ओ० १६४
 खंवग्गह [स्कन्दग्रह] जी० ३ ६२८
 खंदमह [स्कन्दमह] रा० ६८८. जी० ३।६१५
 खंथ [स्कन्ध] ओ० ५, ८, १३, १९. रा० ४, १२,
 २२७, २२८, ७५८, ७५९. जी० १।५, ७१, ७२;
 ३।२७४, ३८६, ३८७, ५६६, ६७२, ६७६, ७६३
 खंथमंत [स्कन्धवत्] ओ० ५, ८. जी० ३।२७४
 खंधावारमाण [स्कन्धावारमान] ओ० १४६.
 रा० ८०६
 खंधि [स्कन्धिन्] जी० ३।२७४
 खंभ [स्तम्भ] रा० १७ से २०, ३२, ६६, १२९,
 १३०, १३८, १७५, १९०, १९७, २०९, २११,
 २७६, २९७, ३०२, ३२५, ३३०, ३३५, ३४०.
 जी० ३।२६४, २६९, २८७, २८८, ३००, ३७२,
 ३७४, ४६२, ४६७, ४९०, ४९५, ५००, ५०५,
 ५९७, ६४६, ६७३, ६७४, ७५६, ८८४, ८८७,
 ११२८, ११३०
 खंभपुढन्तर [स्तम्भपुढान्तर] रा० १९७.
 जी० ३।२६९

खंभवाहा [स्तम्भवाहु] रा० १९७.
 जी० ३।२६९
 खंभसीस [स्तम्भशीर्ष] रा० १९७. जी० ३।२६९
 खकारपविभत्ति [खकारप्रविभक्ति] रा० ६५
 खन्ग [खड्ग] ओ० २७, ५१, ६९. रा० २४९, ६६४,
 ८१३. जी० ३।५६२
 खग्गपाणि [खड्गपाणि] रा० ६६४. जी० ३।५६२
 खचित [खचित] जी० ३।४१०
 खचिय [खचित] रा० ३२, १६०, २५६, २८५.
 जी० ३।३३३, ४५१
 खज्जूर [सार] [खज्जूरसार] जी० ३।५८६
 खज्जूरसार [खज्जूरसार] जी० ३।५८०
 खज्जूरिवण [खज्जुरीवन] जी० ३।५८१
 खट्टोदय [खट्टोदक] जी० १।६५
 खड्डहड्ग [दे०] जी० ३।२९२
 खण [क्षण] रा० ११९, ७५१, ७५३
 खत्तिय [क्षत्रिय] ओ० १४, २३, ५२.
 रा० ६७१, ६८७
 खत्तियपरिव्वाय [क्षत्रियपरिव्राजक] ओ० ६६
 खत्तियपरिसा [क्षत्रियपरिवत्] रा० ६१, ७६७
 खन्न [दे०] जी० ३।७८१, ७८२
 खम [क्षम] ओ० ५२. रा० २७५, २७६, ६८७.
 जी० ३।४४१, ४४२
 खय [क्षय] रा० ७६९
 खयर [खदिर] रा० ४५
 खर [खर] ओ० १०१, १२४. जी० १।५७, ५८;
 ३।९६, ६१८
 खरकंड [खरकाण्ड] जी० ३. ६, ७, १४, २३, २९
 खरपुढवी [खरपृथ्वी] जी० ३।१८५, १९१
 खरमुहिवाय [खरमुखीवादक] रा० ७१
 खरमुही [खरमुखी] ओ० ६७. रा० १३, ७१, ७७,
 ६५७. जी० ३।४४६, ५८८
 खल [खल] ओ० २८
 खलवाड [खलवाट] रा० ७८१, ७८५ से ७८७
 खलु [खलु] ओ० ५२. रा० ९. जी० १।१

√खव [क्षपय्]—खवेइ ओ० १८२.

जी० ३१८३११

खवयंत [क्षपयत्] ओ० १८२

खवेत्ता [क्षपयित्वा] ओ० १८८

खसर [खसर] जी० ३१६२८

खह्यर [खेचर] ओ० १५६. जी० ११६८, ११३,

११६, ११७, १२५; २२५, ६६, ७२, ७६, ८३,

८७, ९६, १०४, ११३, १३१, १३६, १३८, १४६,

१४९; ३. १३७, १४५ से १४७, १६१

खह्यरो [खेचरो] जी० २३, १०, ५३, ६६, ७२,

१४४, १४९

√खा [खाद्]—खज्जइ. रा० ७८४—खाइ.

रा० ७३२

खाइ [दे०] ओ० १९२

खाइम [खाद्य] ओ० ११७, १२०, १४७, १६२.

रा० ६६८, ७०४, ७१९, ७५२, ७६५, ७७६,

७८७ से ७८९, ७९४, ७९६, ८०२, ८०८

खाओवसमिय [क्षायोपशमिक] रा० ७४३

खाणु [स्थानु] जी० ३१६२५, ६३१

√खाम [क्षमय्]—खामेइ. रा० ७७७

खामित्तए [क्षमयित्तुम्] रा० ७७७

खाय [खात] ओ० १

खायमाण [खादत्] जी० ३११११

खार [क्षार] जी० ३१६२७, ६५५

खारय [क्षारक] जी० ३१७३१

खारवत्तिय [क्षारवत्तित] ओ० ६०

खारा [खारा] जी० २१९

खारोवय [क्षारोदक] जी० ११६५

खिखिणिजाल [किङ्किणीजाल] रा० १९१. जी०

३१२६५, ३०२

खिसिणी [किङ्किणी] ओ० ६४. रा० १३२, १७३,

६८१. जी० ३१२८५, ५६३

खिसण [खिसन] ओ० ४६

खिसणा [खिसना] ओ० १५४, १६५, १६६. रा०

८१६

खिज्जमाण [खिद्यमाण] ओ० १३३. जी० ३१३०३

खित्त [क्षिप्त] जी० ३१६८६

खिप्पामेव [क्षिप्रमेव] ओ० ५५. रा० ९. जी०

३१४४४

खिबित्ता [क्षिप्त्वा] जी० ३१६८८

खीण [क्षीण] ओ० १६८

खीर [क्षीर] ओ० ६२, ६३. रा० २६. जी०

३१२८२, ७७५

खीरघाई [क्षीरघात्री] रा० ८०४

खीरपूर [क्षीरपूर] रा० २६. जी० ३१२८२

खीरवर [क्षीरवर] जी० ३१६२२, ८६३, ८६५

खीरासव [क्षीराश्रव] ओ० २४

खीरोद [क्षीरोद] जी० ३१२८६, ४४५, ८६५, ८६६

८६८, ९५९, ९६३

खीरोदण [क्षीरोदक] जी० ३१४४५, ९६३

खीरोवय [क्षीरोदक] जी० ११६५

खीरोयण [क्षीरोदक] रा० १७४, २७९

खु [क्षुष्] जी० ३१२७, ५६२

खुज्ज [कुब्ज] जी० १११९६

खुज्जा [कुब्जा] ओ० ७०. रा० ८०४

खुड्ड [क्षुद्र] रा० १७४, १७५, १८०. जी० ३१२६६,

२८७, २९२, ४१०, ५७९, ६३७, ७३८, ७४३,

७६३, ८५७, ८६३, ८६९, ८७५, ८८१

खुड्डुखुड्डुग [क्षुद्रक्षुद्रक] रा० १८०

खुड्डुखुड्डुय [क्षुद्रक्षुद्रक] रा० १८१

खुड्डुय [क्षुद्रक] रा० २४७. जी० ३१४०९

खुड्डा [क्षुद्रक] रा० २४८, २४९. जी० ७११७

खुड्डाग [क्षुद्रक] ओ० २४. रा० ३५४. जी०

३५१९; ७५, ६, १०, १२, १५, १६, १८; ६१२ से

४, ४०, ५१, १७१, २३६, २३८, २४३, २४४, २४६,

२७१, २७३, २७९ से २८२

खुड्डापाताल [क्षुद्रकपाताल] जी० ३१७२६, ७२८,

७२९

खुड्डापायाल [क्षुद्रकपाताल] जी० ३१७२६, ७२७,

७२९

खुड्डाय [क्षुद्रक] ओ० १७०. जी० ३१८६, २६०

खुड्डालिजर् [दे० क्षुद्रकालिञ्जर] जी० ३।७२६
खुड्डिय [क्षुद्रिक] जी० ३।५६३
खुड्डिया [क्षुद्रिका] ओ० २४. रा० १७४, १७५,
 १८०, ७७२. जी० ३।१२४, १२५, २८६, २८७,
 २६२, ५७६, ६३७, ७३८, ७४३, ७६३, ८५७, ८६३,
 ८६६, ८७५, ८८१
खुत्तग [दे०] ओ० ६०
खुद् [क्षुद्] रा० ६७१
खुम्भ [क्षुम्] -- खुम्भांति जी० ३।७२६
खुभियजल [क्षुभितजल] जी० ३।७८३, ७८४
खुरपत्त [क्षुरपत्र] जी० ३।८५
खुहा [क्षुधा] ओ० ११७. रा० ७६६. जी०
 ३।१०६, ११८, ११९, १२८, १११४
खेड [खेट] ओ० ६८, ८६ से ६३, ६५, ६६, १५५,
 १५८ से १६१, १६३, १६८. रा० ६६७
खेत्त [क्षेत्र] ओ० २८, १६२. जी० १।५०; २।२६
 से २६, ५४ से ५६, ६५, ८४, ८८, ११४, १२३,
 १३२; ३।१०७, ७४१, ७६१, ८३८, २५,
 ११११
खेत्तओ [क्षेत्रत्स] ओ० २८. जी० १।३३, १३६,
 १४०; २।१२०; ५।८, ६, २३. २६; ६।२३,
 ४०, ६७, २५७
खेत्तच्छेद [क्षेत्रच्छेद] जी० ३।४६, ४७
खेत्तच्छेय [क्षेत्रच्छेय] जी० ३।२१ से २७, ४५
खेत्ताभिगहचरय [क्षेत्राभिग्रहचरक] ओ० ३४
खेम [क्षेम] ओ० १, १४. रा० ६७१
खेमंकर [क्षेमङ्कर] ओ० १४. रा० ६७१
खेमंघर [क्षेमघर] ओ० १४. रा० ६७१
खेय [खेय] ओ० ६३
खेलूड [दे०] जी० १।७३
खेलीसहित्त [खेलीषयिप्राप्त] ओ० २४
खोलुन्भमाण [चोक्षुन्भमाण] ओ० ४६
खोत [क्षोद] जी० ३।६६२
खोतरस [क्षोतरस] जी० ३।६६४
खोतोद [क्षोतोद] जी० ३।६६१
खोतोदग [क्षोतोदक] जी० ३।६४८

खोतोदय [क्षोतोदक] जी० १।६५
खोद [क्षोद] जी ३।६३१, ६४६
खोदरस [क्षोदरस] जी० ३।८७८
खोदवर [क्षोदवर] जी० ३।८७४, ८७५, ८७७, ६२७
खोदोद [क्षोदोद] जी० ३।८७७, ८७८ ८८०, ६२५,
 ६२८, ६३२
खोदोदग [क्षोदोदक] जी० ३।८७५, ८८१, ६१०
खोदोय [क्षोदोय] जी० ३।२८६
खोदोयग [क्षोदोदक] रा० १७४
खोमिद [क्षोमित] रा० १७३. जी० ३।२८५
खोम [क्षोम] रा० ३७, २४५ जी० ३।३११
 ४०७, ५६५
खोय [क्षोद] जी० ३।७७५
खोयरस [क्षोदरस] जी० ३।५८६

ग

ग [ग] रा० ६५
गड [गति] ओ० १६, २१, २७, ४६, ५०, ५४, ८६ से
 ६५, ११४, ११७, १५५, १५७ से १६०,
 १६२, १६७, १७२. रा० ७५५, ७५७, ८१३
 जी० १।१४; ३।८३८, २२
गडय [गतिक] जी० १।६४, ७४, ७७, ८७, ८८,
 ६६, १०१
गडरडय [गतिरतिक] ओ० ५०
गंगा [गङ्गा] ओ० ११५, ११७. रा० २४५, २७६.
 जी० ३।४०७, ४४५, ६३७
गंगाकूला [गङ्गाकूलक] ओ० ६४
गंगामट्टिया [गङ्गामृत्तिका] ओ० ११०, १३३
गंगावत्तय [गङ्गावर्तक] ओ० १६
गंगावत्तय [गङ्गावर्तक] जी० ३।५६६, ५६७
गंठि [ग्रन्थि] ओ० १. रा० २७०. जी० ३।४३५,
 ८७८, ६६३, ६६७
गंड [गण्ड] ओ० ४७, ६४, ७२
गंडमाणिया [गण्डमानिका] रा० ७७२
गंडलेहा [गण्डलेखा] ओ० १५. रा० ६७२. जी०
 ३।५६७

गंडीपय [गण्डीपद] जी० १११०३
 गंडोवहाणय [गण्डोपधानक] रा० २४५
 गंडोवहाणिया [गण्डोपधानिका] जी० ३१४०७
 गंता [गत्वा] ओ० १८२ जी० ३१७८८
 गतूण [गत्वा] ओ० १६५
 गंथ [ग्रन्थ] रा० २६२. जी० ३१४५७
 गन्धिस [ग्रन्धिस] ओ० १०६, १३२. रा० २८५.
 जी० ३१४५१, ५६१
 गंध [गन्ध] ओ० २, १५, ४७, ५१, ५५, ६३, ६७, ७२.
 ६२, १४७, १६१, १६३, १६६, १७०. रा० ६.
 १२, १३, ३०, ३२, ४५, १३२, १५६, १५७, १७२,
 १६६, २३६, २५८, २७६ से २८१, २६१, २६२,
 ३५१, ५६४, ६५७, ६७२, ६८५, ७१०, ७१४,
 ७५१, ७५३, ७७१, ७७४, ७६४, ८०२, ८०८.
 जी० ११५, ३६, ५०, ५८, ७३, ७८, ८१; ३१२२,
 ५८, ८४, ८७, ६५, १२७, २७१, २८३, ३०२, ३०६,
 ३२६, ३७२, ३६८, ४१६, ४४५ से ४४७, ४५१,
 ४५७, ५१६, ५४७, ५७८, ५८६, ५६२, ५६८, ६०१,
 ६०२, ६४५, ६४८, ६५६, ७७५, ८६०, ८६६,
 ८७२, ८७८, ८३७, ८७२, ८८२, १०७८, १०८१;
 १०६७, १११७, १११८, ११२४
 गंधओ [गन्धतस्] जी० ११३७, ५०
 गंधकासाह [गन्धकाषायिन्] ओ० ६३. रा० २८५.
 जी० ३१४५१
 गंधंग [गन्धाङ्ग] जी० ३११७०
 गंधजुक्ति [गन्धयुक्ति] ओ० १४६
 गंधतो [गन्धतस्] जी० ३१२२
 गंधह्राणि [गन्धघ्राणि] ओ० ७, ८, १०. जी०
 ३१२७६
 गंधमंत [गन्धवत्] जी० ११३३, ३६; ३१५६२
 गंधमादण [गन्धमादन] जी० ३१६६८
 गंधमायण [गन्धमादत] जी० ३१५७७
 गंधवट्टि [गन्धवर्ति] ओ० २, ५५, ६२. रा० ६,
 १२, ३२, १३२, २३६, २८१ जी० ३१३०२,
 ३७२, ४४७
 गंधव [गन्धर्व] ओ० ४६, १२०, १४८, १४६.

१६२. रा० १४१, १७३, १६२, ६८५, ६६८,
 ७५२, ७७१, ७८६. जी० २११७; ३१२६६,
 २८५, ३१८, ५८८
 गंधव्वकंठ [गन्धर्वकण्ठ] रा० १५५, २५८ जी०
 ३१३२८
 गंधव्वकंठग [गन्धर्वकण्ठक] जी० ३१४१६
 गंधव्वघरण [गन्धर्वगृहक] रा० १८२, १८३ जी०
 ३१२६४
 गंधव्वणट्ट [गन्धर्वनृत्य] रा० ८०६, ८१०
 गंधव्वनगर [गन्धर्वनगर] जी० ३१६२८
 गंधव्वानिय [गन्धर्वानीक] रा० ४७, ५६
 गंधहृत्थि [गन्धहृत्थिन्] ओ० १४, १६, २१, ५४
 रा० ८, २६२, ६७१. जी० ३१४५७
 गंधावति [गन्धापातिन्] जी० ३१७६५
 गंधावाति [गन्धापातिन्] रा० २७६. जी० ३१४४५
 गंधिय [गन्धिक] ओ० २, ५५. रा० ६, १२, २२, ३२,
 १३२, २३६, २८१, २८५. जी० ३१३०२, ३७२,
 ४४७, ४५१
 गंधीय [गन्धिक] जी० ३१२६०
 गंधीर [गम्भीर] ओ० १, ५, ८, १६, २७, ४६, ४६,
 ७१. रा० १३, १४, ६१, १७४, २४५, ८१३.
 जी० ३१८३, ११६, ११६, २७४, २८६, ४०७,
 ५६६, ५६७
 गकारपविभक्ति [गकारप्रविभक्ति] रा० ६५
 गगण [गगन] ओ० २७, ६४. रा० ५०, ५२, ५६,
 १३७, २३१, २४७, ८१३. जी० ३१३०७, ३६३
 √गच्छ [गम्]—गच्छ. रा० ६८०.—गच्छइ.
 रा० १५—गच्छति. ओ० १७१. जी० १५४.
 —गच्छति. रा० १३. जी० ३१४४०—गच्छह
 रा० ६.—गच्छामि. रा० १६.—गच्छामो.
 ओ० ५२. रा० ६८७.—गच्छाहि. रा० ६६६.
 —गच्छिहिति. ओ० १४०
 गच्छंत [गच्छत्] ओ० ४०
 गच्छित्तए [गन्तुम्] ओ० १००
 गज्ज [गद्य] रा० १७३. जी० ३१२८५
 √गज्ज [गर्ज]—गज्जति. रा० २८१.

जी० ३,४४७
 गज्जित [गजित] जी० ३।६२६
 गङ्गु [गतं] जी० ३।६२३, ६३१, ३
 √गङ्गु [गथ्] -- गङ्गेज्जा. जी० ३।६६३
 गङ्गित्तए [ग्रथयितुम्] जी० ३।६६०
 गङ्गिय [ग्रथित] रा० ७५३
 गण [गण] ओ० ६, १६, ४०, ४१, ४६, ५०, ६३, ६८,
 १५५, १६२, १६२. रा० ३२, २०६, २११.
 जी० ३ ११८, ११६, २७५, ३७२, ५८२, ५८६ से
 ५६६, ६००, ६०३ से ६१७, ६२०, ६२५, ६२७,
 ६२८, ६३०, ६३६, ७४६, ११२०
 गणग [गणक] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४
 गणनायक [गणनायक] ओ० १८
 गणनायक [गणनायक] ओ० ६३. रा० ७५४, ७५६,
 ७६२, ७६४
 गणविउस्सग्ग [गणव्युत्सर्ग] ओ० ४४
 गणिय [गणित] ओ० १४६. रा० ८०६, ८०७
 गणवेधावच्च [गणवेधावृत्त्य] ओ० ४१
 गणत्तिया [दे०] ओ० ११७
 गत [गत] रा० १२२, २८३, २८६. जी० ३।४४३,
 ४४७, ४४६, ४५६, ५५७, ७४६
 गता [गदा] जी० ३।११०
 गति [गति] रा० ८१५. जी० ३।५६७, ८४२, ८४५
 गतिकल्लाण [गतिकल्याण] ओ० ७२
 गतिय [गतिक] जी० १।५६, ६२, ६५, ६७, ७६, ८०,
 ८२, १०३, १११, ११२, ११६, ११६, १२३, १२८,
 १३४, १३६
 गत्त [गात्र] ओ० ४७, ६३. रा० १२, ३७, ७५८ से
 ७६१ जी० ३।११८, ३११, ४०७
 गत्तग [गात्रक] रा० २४५
 गम्भ [गर्भ] रा० ८००, ८०२. जी० ३.५६२
 गम्भघर [गर्भगृह] जी० ३।५६४
 गम्भघरग [गर्भगृहक] रा० १८२, १८३.
 जी० ३।२६४

गम्भत्थ [गर्भस्थ] ओ० १४२, १४४
 गम्भवक्कंतिथ [गर्भावक्रान्तिक] जी० १।६७, ११७,
 १२५, १२६, १२६; ३।१३८, १४०, १४२, १४५,
 १४६, २१२, २१५, २२६
 गम्भवास [गर्भवास] ओ० १६५
 गम्भाहाण [गर्भाधान] रा० ८०३
 √गम् [गम्] -- गमिस्सामो. ओ ६८. -- गमिहिति.
 रा० ७६६. -- गम्मंती. ओ० ७४
 गम् [गम्] जी० ३।२१८, ६६६, ७१३, ७४२, ७४४,
 ७४५, ६२८, ६२८, १०४५, १०४८
 गम्मण [गमन] ओ० ४०, ४६, ६५, ६६, १२२,
 रा० १७, १८, २८, ६५६, ६६७, ७७५, ७७६,
 ७८०. जी० ३।४५४, ५५६
 गम्मय [गमक] रा० २५१, २६५. जी० ३।७५१
 गमित्तए [गम्तुम्] ओ० १००
 गय [गज] ओ० १६, ४८, ५२, ५५ से ५७, ६२, ६४,
 ६५. रा० २५, १४१, १४८, १६२, ६८७ से ६८६.
 जी० ३।२६६, २७८, ३१८, ३२१, ३५५, ४५४,
 ५८६, ५६६, ५६७, १०१५
 गय [गत] ओ० १५, १६, २१, ४६ से ४६, ६५, १७२,
 १७५, १७७, १६५।२२. रा० ८, ४७, ६८, १२२,
 १२३, १७३, २७५, २७७, २८१, २८६, २६०,
 ६५७, ६७२, ६८७ से ६८६, ७१०, ७१६, ७५३,
 ७६५, ७७४, ७६४, ८००, ८०२, ८०६, ८१०.
 जी० ३।२८५, ४४१, ४५५, ५६६, ५६७
 गयकंठ [गजकण्ठ] रा० १५५, २५८. जी० ३।३२८
 गयकंठग [गजकण्ठक] जी० ३।४१६
 गयकण्ण [गजरुर्ण] जी० ३।२१६, २२३
 गयकण्णदीव [गजकर्णदीव] जी० ३ २२३
 गयकलभ [गजकलभ] रा० २५. जी० ३.२७८
 गयजोहि [गजयोधिन्] ओ० १४८, १४६.
 रा० ८१०, ८११
 गयदंत [गजदन्त] रा० २६, १३२. जी० ३।२८२,
 ३०२
 गयवहया [गतपत्तिका] ओ० ६२
 गयलक्षण [गतलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

गयवह [गजपति] ओ० ५१,६३
 गयविलंबिय [गजविडम्बित] रा० ६१
 गयविलसिय [गजविलसित] रा० ६१
 गया [गदा] ओ० १. रा० २४६
 गरहणा [गर्हणा] ओ० १५४,१६५,१६६.
 रा० ८१६
 गरुडज्जाय [गरुडज्जाय] रा० १६२. जी० ३१३३५
 गरुय [गरुक] जी० ११५; ३१२२
 गरुयत्त [गरुकत्व] रा० ७६२,७६३
 गरुल [गरुड] ओ० १६,४७,४८,१२०,१६२.
 रा० ६६८,७५२,७८६. जी० ३१५६६
 गरुलवूह [गरुडवूह] ओ० १४६. रा० ८०६
 गरुलासण [गरुडासन] रा० १८१,१८३.
 जी० ३१२६३
 गल [गल] ओ० ५७. जी० ३१५६७
 गवक्ष [गवाक्ष] जी० ३१६०४
 गवक्षजाल [गवाक्षजाल] रा० १३२,१६१.
 जी० ३१२६५,३०२
 गवच्छिय [दे० आच्छादनम्] रा० १५३.
 जी० ३१३२६
 गवल [गवल] ओ० ४७. रा० २५. जी० ३१२७८
 गवेलग [गवेलक] ओ० १,१४,१४१.
 रा० ६७१,७४४,७६६
 गवेसण [गवेषण] ओ० ११७,११६,१५६
 गवेसणया [गवेषणा] रा० ७६५,७७४
 गवेसि [गवेषित्] रा० ७७४
 गह [ग्रह] ओ० ५०,६३,१६२. रा० १२,७६,१७३,
 २६१,२६३ से २६६,३००,३०५,३१२,३५५.
 जी० २११८; ३१८५,६३१,७०३,८०६,
 ८३८,३,६,६,२२,२६,३०,८४५,१०२०,१०२१,
 १०२६,१०३७,१०३८
 गहअवसव्य [ग्रहापसव्य] जी० ३१६२६
 गहगज्जित [ग्रहगज्जित] जी० ३१६२६
 गहगण [ग्रहगण] रा० १२४. जी० ३१५८६,
 ८३८,१०,२१,८४१,८४२,१०२०
 गहजुड [ग्रहयुड] जी० ३१६२६

गहणया [ग्रहणता] ओ० ५२. रा० ६८७
 गहणी [ग्रहणी] जी० ३१५६८
 गहदंड [ग्रहदण्ड] जी० ३१६२६
 गहमुसल [ग्रहमुसल] जी० ३१६२६
 गहविमाण [ग्रहविमान] जी० २१४२; ३११००६,
 १०१२,१०१७,१०३१
 गहसंधाडग [ग्रहशृङ्गाटक] जी० ३१६२६
 गहाय [गृहीत्वा] रा० १२. जी० ३१११८
 गहित [गृहीत] जी० ३१३०३,४५७,४५६,४६१
 ४६५
 गहिय [गृहीत] ओ० ४६,४६,७०,११६,१२०,१६२.
 रा० १२,६६,७०,१३३,२६१,२६३ से २६६,
 ३००,३०५,३१२,३५५,६६४,६८३,६८६,६६८,
 ७५२,७८६,८०४. जी० ३१४५८,४६०,४६२,
 ५२०,५५४,५६२
 गमा [गं]—गायंति. रा० ११५. जी० ३१४४७.
 —गिज्जह. रा० ७८३
 गाडय [गव्यूत, गव्यूति] ओ० १६५.
 जी० ११८८,६०,१०३,१२१,१२४,१३०;
 ३११०७,७८८,६१६,१०२२
 गाड [गाड] रा० ७७४
 गात [गात्र] जी० ३१४५१,४५७,६०२,८६०,८६६,
 ८७२,८७८
 गातलट्टि [गात्रयष्टि] जी० ३१५६७
 गाथा [गाथा] जी० ३१८८
 गाथा [गाथा] जी० ३१६३१
 गाम [ग्राम] ओ० १,२८,२६,४६,६८,८६ से ६३,
 ६५,६६,१५५,१५८ से १६१,१६३,१६८.
 रा० ६६७,७८७,७८८. जी० ३१६०६,६३१,
 ८४१
 गामकण्डग [ग्रामकण्डक] ओ० १५४,१६५,१६६.
 रा० ८१६
 गामदाह [ग्रामदाह] जी० ३१६२६
 गाममारी [ग्राममारी] जी० ३१६२८
 गामरोग [ग्रामरोग] जी० ३१६२८

गामाणुगाम [गामाणुगाम] ओ० १६, २०, ५२, ५३.

रा० ६८६, ६८७, ६८९, ७०६, ७११, ७१३

गाय [गात्र] ओ० १, ३६, ३७, ५२, ६३, ७०, ९४,

११०, १३३. रा० २८५, २९१, ६८७ से ६८९.

जी० ३११२८

गाय [गो] जी० ३१६३१

गायंत [गायत्] ओ० ६४

गायलट्टि [गात्रयष्टि] ओ० ७०. रा० २५४.

जी० ३१४१५

गावी [गो] जी० ३१६१६

गाह [ग्राह] जी० ११६६, ११८; ३१४५७ से ४६२,

४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५५४

√गाह [ग्राह्य] —गाहेह. ओ० ५६

गाहा [गाय] ओ० १४६. रा० ८०६. जी० ३१५,

१२, १२७, ३५५

गाहावहपरिसा [गृहपतिपरिषद्] रा० ७६७

गाहेत्ता [ग्राहयित्वा] ओ० ५६

√गिज्ज [गृष्]—गिज्जिहिति ओ० १५०.

रा० ८११

√गिण्ह [ग्रह]—गिण्हइ. ओ० १७०.—गिण्हति.

रा० २८१. जी० ३१४४५.—गिण्हति.

रा० २८८—गिण्हामो. ओ० ११७

गिण्हित्तए [ग्रहीतुम्] ओ० ११७. जी० ३१६८८

गिण्हित्ता [गृहीत्वा] ओ० १७०. रा० २८१.

जी० ३१४४५

गिद्ध [गृद्ध] रा० ७५३

गिम्ह [ग्रीष्म] ओ० २६

गिम्हकाल [ग्रीष्मकाल] ओ० ११५

गिरा [गिर्] जी० ३१५६७

गिरि [गिरि] रा० ८०५. जी० ३१५६७, ८३६

गिरिपक्कंदोलसा [गिरिपक्षान्दोलक] ओ० ६०

गिरिपडियग [गिरिपतितक] ओ० ६०

गिरिमह [गिरिमह] रा० ६८८

गिलाणभत्त [ग्लानभक्त] ओ० १३४

गिलाणवेयावच्च [ग्लानवेयावृत्त्य] ओ० ४१

√गिलाय [ग्लै]—गिलायज्जाह. रा० ७२०

गिल्लि [दे०] ओ० १००, १२३. जी० ३१५८१,

५८५, ६१०

गिह [गृह] ओ० २०, ५३. रा० ६८१, ६८३, ७०८,

७१०, ७१३, ७२३, ७२६

गिहियम्म [गृहियर्म] ओ० ५२, ७८, ९३. रा० ६८७,

६८९, ६९५, ६९६, ७७५

गिहिल्लिगसिद्ध [गृहिल्लिङ्गसिद्ध] जी० १८

गीइया [गीतिका] ओ० १४६. रा० ८०६

गीत [गीत] जी० ३१८४२, ८४५

गीय [गीत] ओ० ४६, ६८, १४६. रा० ७, ७८,

८०६. जी० ३३५०, ५६३, १०२३

गीयजस [गीतयणम्] जी० ३१२५६

गीयरइ [गीतरति] ओ० १५८, १४९. रा० १७३,

८०९, ८१०

गीयरइणिय [गीतरतिप्रिय] ओ० ६५

गीयरति [गीतरति] जी० ३१२८५

गीवा [ग्रीवा] ओ० १६. रा० २६. जी० ३१२७६,

४१५, ५६६, ५६७

गुंजंत [गुञ्जत्] ओ० ६. रा० ७६, १७३.

जी० ३१२७५, २८५

गुंजद्धराग [गुञ्जार्धराग] ओ० २२. रा० २७, ७७५

७७८, ७८८. जी० ३१२८०

गुंजा [गुञ्जा] रा० ७६, १७३. जी० ३१२८५

गुंजालिया [गुञ्जालिका] ओ० ६६. रा० १७४,

१७५, १८०. जी० ३१२८६

गुंजावाय [गुञ्जावात] जी० १८१

गुञ्ज [गुञ्छ] ओ० ६ से ८, १०. जी० ११६६;

३१२७५

गुञ्ज [गुह] रा० ६७५

गुञ्जदेस [गुह्यदेश] जी० ३१५६६

गुड [गुड] जी० ३१५६२

गुण [गुण] ओ० १, १४, १५, २३, २५, ६३, ६६, १२०

१४०, १४३, १५७. रा० ६६, ७०, १०३, ६७१

६७३, ६८६, ६९८, ७२२, ७८६, ८०१.

जी० ११५०; ३१२८५, ५६६, ५६७
 गुणनिष्कण [गुणनिष्कण] ओ० १४४
 गुणतर [गुणतर] रा० ७१८
 गुणभाव [गुणभाव] ओ० १६५।१२
 गुणयातीस [एकोनचत्वारिंशत्] रा० १२६
 गुणव्यय [गुणव्यय] ओ० ७७. रा० ७८७
 गुणसेडिया [गुणश्रेणिका] ओ० १८२
 गुणिय [गुणित] जी० ३।८३८।२६
 गुत्त [गुत्त] ओ० २७, १५२, १६४. रा० १२३,
 ६६४, ७७५, ७७२, ८१३. जी० ३।५६२
 गुत्तकुवार [गुत्तद्वार] रा० १२३, ७५५, ७७२
 गुत्तपालित [गुत्तपालिक] जी० ३।५६२
 गुत्तपालिय [गुत्तपालिक] रा० ६६४
 गुत्तबंभयारि [गुत्तब्रह्मचारिन्] ओ० २७, १५२,
 १६४. रा० ८१३
 गुत्ति [गुत्ति] रा० ६८६, ८१४
 गुत्तिविद्य [गुत्तेन्द्रिय] ओ० २७, ३७, १५२, १६४.
 रा० ८१३
 गुप्पमाण [गुप्पयत्] ओ० ४६
 गुप्फ [गुल्फ] ओ० १६. जी० ३।५६६
 गुमगुमंत [गुमगुमायमान] ओ० ६. जी० ३।२७५
 गुम्म [गुल्म] ओ० ६ से ८, १०. जी० १।६६;
 ३।२७५, ५८०, ६३१
 गुरु [गुरु] रा० ६७१
 गुल [गुड] ओ० ६२. जी० ३।६०१, ८६६
 गुलइय [दे०] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.
 जी० ३।२६८, २७४
 गुलगुलंत [गुलगुलायमान] ओ० ५७
 गुलिका [गुलिका] ओ० ४७. रा० २५, २६, २८.
 जी० ३।२७८, २७६, २८१
 गुहा [गुहा] रा० १७३. जी० ३।२८५
 गूढ [गूढ] ओ० १६. जी० ३।५६६
 गूढवंत [गूढदन्त] जी० ३।२१६
 गेज्ज [ग्राह्य] रा० १३३. जी० ३।३०३

√गेण्ह [ग्रह.]—गेण्ह. रा० ७०८.
 जी० ३।४५६—गेण्हति. रा० ७५.
 जी० ३।४४५
 गेण्हित्तए [ग्रहीतुम्] जी० ३।६८६
 गेण्हित्ता [ग्रहीत्वा] रा० ७५. जी० ३।४४५
 गेद्धपट्टम [गृध्रपृष्ठक] ओ० ६०
 गेय [गेय] रा० ७६, ११५, १७३, २८१.
 जी० ३।२८५, ४४७
 गेविज्ज [ग्रैवेय] रा० ६६४, ६८३
 गेविज्जविमाण [ग्रैवेयविमान] ओ० १६२
 गेवेज्ज [ग्रैवेय] ओ० ५७, १६०. रा० ६६, ७०.
 जी० २।६२; ३।५६२, ५६३, १०३८, ११०३,
 ११०५, ११०७, १११६, १११७, ११२०, ११२३,
 ११२४, ११२६
 गेवेज्जक [ग्रैवेयक] जी० २।१४८, १४६
 गेवेज्जक [ग्रैवेयक] ओ० ६३
 गेवेज्जविमाण [ग्रैवेयविमान] ओ० १६०.
 जी० ३।१०६३, १०६६, १०६६, १०७१, १०७३,
 १०७६
 गेवेज्जा [ग्रैवेयक] जी० ३।१०८४, १०८६,
 १०८२, १०८५, ११०३, ११०५, ११०७,
 १११६, १११७, ११२०, ११२३, ११२४,
 ११२६
 गेह [गेह] जी० ३।६०५, ६३१, ८४१
 गेहाणार [गेहाकार] जी० ३।५६४
 गेहाययण [गेहायतन] जी० ३।६०५
 गेहाव [य?] ण [गेहायतन] जी० ३।८४१
 गी [गी] ओ० १, १४, १४१. रा० ६७१, ७७४,
 ७६६. जी० ३।८४
 गोकण [गोकर्ण] जी० ३।२१६, २२४
 गोकणवीथ [गोकर्णद्वीप] जी० ३।२२४
 गोकर्लिज्जम [गोकर्लिज्जक] रा० १५१.
 जी० ३।३२४
 गोकर्लिज [गोकर्लिज्ज] रा० ७७२
 गोक्षीर [गोक्षीर] ओ० १६, १६४ जी० ३।६०१,

८६६, ६५६
गोखीर [गोखीर] ओ० ४७ रा० १३०.
 जी० ३:३००, ५६६
गोघयवर [गोघृतवर] जी० ३:८७२, ६६०
गोच्छिद्य [गुच्छित] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.
 जी० ३:१२६८, २७७
गोण [गो] ओ० १०१, १२४, १४४.
 जी० ३:६१८
गोणलक्षण [गोलक्षण] ओ० १४६ रा० ८०६
गोणस [गोणस] जी० १:१०८
गोतमदीव [गौतमद्वीप] जी० ३:१७६२
गोतित्य [गोतीर्थ] जी० ३ ७६०, ७६१, ७६३
गोधूम [गोस्तूप] जी० ३:७३४ से ७४०, ७४२,
 ७४५, ७५०
गोधूभा [गोस्तुपा] जी० ३:७३८, ६१०, ६२१
गोधूम [गोधूम] जी० ३:६२१
गोपुच्छ [गोपुच्छ] रा० १२७. जी० ३:१६१,
 ३५२, ५६७, ६३२, ६६१, ६८६, ७३६, ८८२
गोपुर [गोपुर] ओ० १. रा० ६५४, ६५५.
 जी० ३:५५४, ५६४, ६०४
गोल्फ [गुल्फ] जी० ३:४१५
गोमयकीड [गोमयकीट] जी० १:८६; ३:१११
गोमाणसिया [गोपानसिका] रा० १३०, २३६,
 २५१, २६५. जी० ३:३००, ४१२, ६०३
गोमाणसी [गोपानसी] जी० ३:३६८, ४१२, ४२१,
 ४२६
गोमुह [गोमुख] जी० ३:१२६
गोमुही [गोमुखी] रा० ७७
गोमेज्जमय [गोमेदमय] रा० १३०.
 जी० ३:३००
गोय [गोत्र] ओ० २०, ४४, ५२, ५३. रा० ६, ११,
 ६८७, ७१३. जी० ३:१२८
गोयम [गौतम] ओ० ८३, ८६, ८८ से ६५, ११४,
 ११७ से १२०, १४०, १४१, १५५, १५७ से
 १६०, १६२, १६७, १७०, १७१, १७३ से १७६,

१७८, १७९, १८४ से १८८, १६२. रा० ६३,
 ६५, ७३, ७४, ११८, १२१, १२३, १२४, १७३,
 १६७ से २००, ६६५, ६६६, ६६८, ७६७ से
 ७६९, ८१७. जी० १:१५ से ३७, ३६ से ४६, ५१
 से ५६, ५६ से ६२, ६४, ७४, ७६, ८२, ८५ से ८७,
 ९०, ९३ से ९६, १०१, ११६, १२७, १२८, १३०
 से १३४, १३७ से १४३; २:२० से २४, २६
 से ३०, ३२ से ३६, ३६, ४८, ४८, ५४, ५७ से
 ६३, ६६, ६८ से ७४, ७६, ८२ से ८४, ८६, ८८,
 ९२, ९५ से ९८, १०७ से १०९, ११३, ११४,
 ११६ से ११९, १२२ से १२६, १३३ से १४०;
 ३:३ से १२, १४ से २१, २८ से ३५, ३७ से
 ४४, ४८ से ६३, ६६, ७३, ७६ से ९८, १०१ से
 १०४, १०६ से ११०, ११२ से ११६, ११८ से
 १२०, १२२ से १२८, १४७, १५० से १६१,
 १६३, १६७ से १७४, १७६, १७८, १८०, १८२,
 १८३, १८५ से २०३, २११, २१४, २१७ से २२३,
 २२७, २३२, २३५ से २३९, २४१ से २४३,
 २४५ से २४७, २४९, २५०, २५५ से २५९,
 २६६ से २७२, २७८, २८५, २९६, ३००, ३५०,
 ३५१, ५६४ से ५६६, ५६८ से ५७०, ५७२,
 ५७४ से ५८८, ५९७, ५९९ से ६०४,
 ६२६ से ६३२, ६३७ से ६३९, ६५६, ६६०,
 ६६४, ६६६, ६६८, ७०० से ७०३, ७०५ से
 ७०८, ७१०, ७११, ७१४ से ७१६, ७१८ से ७२३,
 ७२६, ७३० से ७३६, ७३८ से ७४३, ७४५,
 ७४६, ७४८ से ७५०, ७५४, ७६० से ७६६,
 ७६८ से ७७०, ७७२, ७७६ से ७७८, ७८३,
 ७८४, ७८७ से ७९५, ७९७ से ८००, ८०२,
 ८०४, ८०६, ८०८, ८०९, ८११ से ८१५, ८१६,
 ८२०, ८२२ से ८२५, ८२७, ८२९, ८३०, ८३२
 से ८३६, ८३९, ८४०, ८४२ से ८४७, ८४९ से
 ८५१, ८५४, ८५७, ८६०, ८६३, ८६६, ८६९,
 ८७२, ८७५, ८७८, ८८१, ८८२, ८९८, ९३६,
 ९४०, ९४४, ९५३ से ९६१, ९६३ से ९६६,

६६६, ६७२ से ६७६, ६८२ से ६८७, ६८६,
 ६६६ से १००८, १०१०, १०११, १०१५,
 १०१७, १०२० से १०२३, १०२५ से १०२७,
 १०३७ से १०४२, १०४४, १०५७, १०५८,
 १०६३, १०६५, १०६७, १०६६, १०७१,
 १०७३ से १०७५, १०७७ से १०८१, १०८३,
 १०८५ से १०८७, १०८६ से १०८३,
 १०८५, १०८८, १०८६, ११०१, ११०५, ११०६ से
 ११२४, ११२८ से ११३१, ११३४ से ११३८;
 ४३, ५ से ११, १६, १७, १६, २२, २३, २५;
 ५१, ५, १०, १२ से १७, १६ से २४, २८ से
 ३०, ३४, ३५, ३७ से ३६, ४१ से ५०, ५२ से
 ५६, ५८ से ६०; ६१, ६; ७२, ६, २०; ६१, ४,
 १० से १४, १६, २३ से २६, ३१, ३३, ३६, ४१
 से ४७, ४६, ५२, ५५, ५७, ५८, ६४, ६८, ७७, ७८,
 ८६, ६०, ६६, ६७, १०२, १०३, ११४, ११५,
 १२२, १३२, १४२, १६० से १६३, १७१, १८६
 से १६१, १६३, १६५, १६८ से २०७, २१० से
 २१२, २१४ से २१६, २२२ से २२५, २२७ से
 २३०, २३३ से २३८, २४० से २४४, २४६,
 २४६ से २५३, २५५, २५७ से २६३, २६५,
 २६८ से २७३, २७५ से २८२, २८४ से
 २८३

गोयमदोव [गौतमद्वीप] जी० ३।७५४, ७५५, ७६०,
 ७६१

गोयरग्न [गोचरग्न] रा० ७१६

गोर [गौर] ओ० ८२

गोलवट्ट [गोलवृत्त] रा० २४०, २७६, ३५१. जी०
 ३।४०२, ४४२, ५१६, १०२५

गोलियालिच्छ [गोलिकालिच्छ] जी० ३।११८

गोव्वइय [गोव्वतिक] ओ० ६३

गोसीस [गोशीर्ष] ओ० २, ५५, ६३. रा० ३२,
 २७६, २८१, २८५, २९१, २९३ से २६६, ३००,
 ३०५, ३१२, ३५१, ३५५, ५६४. जी० ३: ३७२,
 ४४५, ४४७, ४५१, ४५७, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७,

५१६, ५२०, ५४७, ५५४

गोहा [गोधा] जी० १।११२

गोही [गोधी] जी० २।६

[घ]

घ [घ] रा० ६५

घओद [घृतोद] जी० ३।२८६

घओवय [घृतोदक] जी० १।६५

घओयग [घृतोदक] रा० १७४

घंटय [घण्टाक] जी० ३।२८५

घंटा [घण्टा] ओ० २, १२, ५७, ६४. रा० १३.१५,
 २३, ३२, १३५, १७३, २५८, ६८१. जी०
 ३, २६१, ३०५, ३७२, ४१६

घंटाजाल [घण्टाजाल] रा० १३२, १६१. जी०
 ३।२६५, ३०२

घंटापास [घण्टापाश्वर्य] रा० १३५. जी० ३।३०५

घंटाबलि [घण्टाबलि] रा० १७, १८, २०

घंटिया [घण्टिका] रा० १७, १८. जी० ३।५६३

घंस्त [घर्ष] जी० ३।६२३

घंसियग [घण्टिक] ओ० ६०

घकारपविभक्ति [घकारप्रविभक्ति] रा० ६५

√घट्ट [घट्ट] घट्टइ. रा० ७७१—घट्टंति
 जी० ३।७२६

घट्टंत [घट्टयत्] रा० ७७१

घट्टणया [घट्टण] ओ० १०३, १२६

घट्टिज्जंत [घट्टिज्जमान] रा० ७७

घट्टिय [घट्टित] रा० १७३. जी० ३।२८५

घट्ट [घट्ट] ओ० १२, १६४. रा० २१, २३, ३२,
 ३४, ३६, १२४, १४५, १५७. जी० ३।२६१,
 २६६, २६६

घडग [घटक] जी० ३।५८७

घडस्त [घटत्व] जी० ३।२२, २७, ७८४, ७८७

घण [घन] ओ० १, ४, ५, ८, १३, १६, ४७, ६८. रा०
 ७, १२, ११४, १३३, १७०, २८१, ७०३, ७५५,
 ७५८, ७५९, ७७२. जी० ३।६७, ८०, ११८,
 २७३, २७४, ३००, ३०३, ३५०, ४४७, ५६३,

५८६, ५९६, ८४२, ८४५, १०२५, ११२२
 घणदंत [घनदन्त] जी० ३।२।६, २२६
 घणदंतद्वीप [घनदन्तद्वीप] जी० ३।२।६।६
 घणवात [घनवात] जी० ३।१३, १६, २१, २६, २७,
 ३७, ४७, ४९, ५०, ६४
 घणवाय [घनवात] जी० १।८१; ३।३०, ३८, ४२,
 १०५८, १०५९
 घणोदधि [घनोदधि] जी० ३।१३, २६, ३०, ३२,
 ३७ से ४०, ४५, ४६, ४८, ४९, ६० से ७२
 घणोदहि [घनोदधि] जी० ३।१८, २०, २७, ६३,
 १०५७
 घम्मा [घर्मा] जी० ३।३
 घय [घृत] जी० ३।५।६२, ७७५
 घयवर [घृतवर] जी० ३।८६८, ८६९, ८७१
 घयोद [घृतोद] जी० ३।८७१, ८७२, ८७४, ९६०,
 ९६३
 घयोदन [घृतोदक] जी० ३।८६९
 घर [गृह] ओ० २८, ११८, ११९, १५४, १६२,
 १६५, १६६. रा० ६९८, ७५२, ७८६. जी०
 ३।५।६४
 घरग [गृहक] जी० ३।५।७९
 घरय [गृहक] ओ० ७, ८, १०. रा० १८३. जी०
 ३।५।७९, ८६३
 घरसमुदाणिय [गृहसामुदानिक] ओ० १५८
 घरह [गृहक] जी० ३।८६३
 घरोलिया [गृहकोकिला] जी० २।९
 घाइ [घातिन्] ओ० ८७
 घाण [घ्राण] ओ० १७०. रा० ३०, १३२, २३६.
 जी० ३।२८३, ३०२, ३९८
 घाणिदिय [घ्राणेन्द्रिय] ओ० ३७. जी० ३।९७९
 घातक [घातक] जी० ३।६१२
 घाय [घात] रा० ६७१
 घास [घ्रास] ओ० ३३

घुण [घुण] रा० ७६१
 घुम्मंत [घूर्णमान] ओ० ४६
 घोड [घोट] जी० ३।६।१८
 घोर [घोर] ओ० ४६, ८२ रा० ६८६
 घोरगुण [घोरगुण] ओ० ८२. रा० ६८६
 घोरतवस्सि [घोरतपस्विन्] ओ० ८२. रा० ६८६
 घोरवंभचेरवासि [घोरव्रह्मचर्यवासिन्] ओ० ८२.
 रा० ६८६
 घोलंत [घोलयत्] ओ० २१, ५४. रा० ८, ७१४
 घोलयग [घोलितक] ओ० ९०
 घोस [घोष] ओ० ६९
 घोसण [घोषण] रा० १५
 घोसाडिया [कोशातकी] रा० २८. जी० ३।२८१
 घोसेयव्व [घं. षयितव्य] जी० ३।८८
 (ङ)

ङ [ङ] रा० ९५
 ङकारपविभत्ति [ङकारप्रविभक्ति] रा० ९५

(च)

च [च] ओ० ७. रा० ७. जी० १।१
 चइत्ता [त्यक्त्वा, चित्वा] ओ० २३. रा० ७९९
 चइत्ताणं [त्यक्त्वा] ओ० १९५।१
 चउ [चतुर्] ओ० १९. रा० ७. जी० १।१९
 चउक्क [चतुक्क] ओ० १, ५२, ५५. रा० ६५४, ६८७,
 ७१२. जी० ३।२२६, ५५४
 चउक्कत [चतुक्कक] जी० ३।१४२, १४४
 चउक्कय [चतुक्कक] रा० ६५५
 चउणउय [चतुर्नवति] जी० ३।८२३
 चउत्थ [चतुर्थ] ओ० १७४, १७६. जी० १।१२१
 चउत्थग [चतुर्थक] जी० ९।१४६
 चउत्थभत्त [चतुर्थगत] ओ० ३२
 चउत्था [चतुर्थी] जी० ३।२
 चउत्थी [चतुर्थी] जी० २।१४८, १४९; ३।४,
 ६९, ८८, ९१, १६५, ११११
 चउदसगुव्वि [चतुर्दशपूर्विक] रा० ६८६
 चउदस [चतुर्दशन्] ओ० १९. जी० २।४८

चउद्दसी [चतुर्दशी] ओ० १२०
 चउद्दसभक्त [चतुर्दशभक्त] ओ० ३२
 चउद्दपई [चतुष्पदी] जी० २।५,६
 चउद्दपद [चतुष्पद] जी० २।११३,१२२; ३।१४२
 चउद्दप्य [चतुष्पद] रा० ६७१,७०३,७१८.
 जी० १।१०१ से १०३,१२०,१२१; २।१,२३,
 ५१; ३।८८,१४१,१४२,१६३,७२१
 चउद्दपाइया [चतुष्पादिका] जी० २।६
 चउद्दभाम [चतुर्भाम] जी० ३।२४७,२५०,२५६,
 १०२७ से १०३५
 चउद्दभाग [चतुर्भाग] जी० २।४० से ४३; ३।२४७
 चउद्दभासिय [चातुर्भासिक] ओ० ३२
 चउद्दम्मुह [चतुर्मुख] ओ० ५२,५५. रा० ६५४,
 ६५५,६८७,७१२. जी० ३।५५४
 चउद्दरंगुल [चतुरङ्गुल] रा० ५६. जी० ३।५६६,
 ८३८।१७
 चउद्दरंत [चतुरंत] ओ० ४६
 चउद्दरंस [चतुरंस] जी० १।५; ३।२२,७७,७८,
 ३५२,५६४,५६७,१०७१
 चउद्दरकण्य [चतुष्कल्प] जी० ३।५६२
 चउद्दरासीह [चतुरशीति] ओ० ६३. जी० १।१०३
 चउद्दरासीति [चतुरशीति] जी० ३।१६
 चउद्दरिदिय [चतुरिन्द्रिय] जी० १।८३,६०;
 २।१०१,१०३,११२,१२१,१३६,१४६,१४६;
 ३।१३०,१३६,१६७; ४।१,४,८,१४,१८ से
 २०,२४,२५; ८।१,३,५; ९।१,३,५,७,१६७,
 १६६,२२१,२२३,२२६,२३१,२५६,२५६,
 २६४,२६६
 चउद्दविषाण [चतुर्विषाण] रा० १६२.
 जी० ३।३३५
 चउद्दवीस [चतुर्विंशति] ओ० ३३. जी० ३।२३६
 चउद्दविवध [चतुर्विध] जी० ३।१,४४७
 चउद्दविवह [चतुर्विध] ओ० २८,३७,४५,६३,११७.
 रा० ११४ से ११७, २८१,२८५,२८६,६७५,
 ७४०,७४६,७६६. जी० १।५,१०,८३,६१,

१०३,१०५,११३,१२१,१२५,१३५; २।६,
 १०,१५,७८; ३।२३०,४५१,४५२,५८८,
 ११३८; ६।११३,१२१,१३१,१४१,१४७
 चउद्दसट्टि [चतुष्पष्टि] ओ० ६२. जी० ३।६११
 चउद्दसट्टिया [चतुष्पष्टिका] रा० ७७२
 चउद्दसालत [चतुःशालक] जी० ३।५६४
 चउद्दहा [चतुर्धा] रा० ७६४,७६५
 चउद्दमंत [चक्रमण] ओ० ५७
 चउद्दगेरी [चङ्गेरी] रा० १५६,२५८.२७६.
 जी० ३।३२६,३५५,४१६,४४५
 चउद्दचल [चञ्चल] ओ० २३,४६,४६
 चउद्दड [चण्ड] ओ० ४६. रा० १०,१२,५६,२७६,
 ६७१,७६५. जी० ३।८६,११०,१७६,१७८,
 १८०,१८२,४४५
 चउद्दडा [चण्डा] जी० ३।२३५,२३६,२४१,१०४०,
 १०४४
 चउद्दव [चन्द्र] ओ० १६,२७,५०,६४ ६८,१७०.
 रा० २६,७०,१३३,२८२,८०२,८०३,८१३.
 जी० १।१८; ३।२५८,२८२,३०३,४४८,५६६,
 ५६७,७०३,७२२,७६२ से ७६४,७६६,७६८,
 ७७०,७७२,७७४ से ७७६,७७८,८०६,८२०,
 ८३०,८३४,८३७,८३८,७,१० १५ से २३,
 २५ से २७,२६,३२,८४५,८७३,८७६,८७६,
 ६२६,६३७.६५३,१०१७,१०२०,१०२१,
 १०२३ से १०२६,११२२
 चउद्दण [चन्दन] ओ० ६,१०,२६,४७,५२,६३,
 ११०,१३३. रा० ३०,१३१,१४७,१४८,
 १७३,२५८,२७६,२८०,२८५,२६१,२६३ से
 २६८,३००,३०५,३१२,३५१,३५५,५६४,
 ६८७ से ६८९. जी० ३।२८३,२८५,३०१,
 ४४५,४५१,४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७,
 ५१६,५२०,५४७,५५४,५८३,८३८।२६
 चउद्दल्यमणवविभक्ति [चन्द्रास्तमनप्रतिभक्ति]
 रा० ८६
 चउद्ददीव [चन्द्रद्वीप] जी० ३।७६२,७६३,७६६,

७६८, ७७०, ७७२, ७७४, ७७६, ७७८
 चंद्रह [चन्द्रग्रह] जी० ३१६६७
 चंद्रद्वीप [चन्द्रद्वीप] जी० ३१७६३
 चंद्रद्व [चन्द्रार्ध] ओ० १६. रा० ७०, १३३.
 जी० ३१३०३, ५६६, ११२२
 चंद्रपडिमा [चन्द्रप्रतिमा] ओ० २४
 चंद्रपरिऐस [चन्द्रपरिवेश] जी० ३१८४१
 चंद्रपरिवेश [चन्द्रपरिवेश] जी० ३१६२६
 चंद्रप्यभ [चन्द्रप्रभ] रा० १६०, २६२.
 जी० ३१३३३, ४५७
 चंद्रप्यभा [चन्द्रप्रभा] जी० ३१५८६, ७६३, ८६०,
 ९५८, १०२३
 चंद्रप्यह [चन्द्रप्रभ] रा० २५६
 जी० ३१४१७
 चंद्रमंडल [चन्द्रमण्डल] रा० २४, ५१, १४६.
 जी० ३१२७७, ३२२
 चंद्रमंडलप्रविभक्ति [चन्द्रमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६०
 चंद्रवडैसय [चन्द्रावर्तंसक] जी० ३११०२४,
 १०२५
 चंद्रवण [चन्द्रवर्ण] जी० ३१७६३
 चंद्रवणभा [चन्द्रवर्णभा] जी० ३१७६३, १००८,
 १०१०, १०१५
 चंद्रविमाण [चन्द्रविमान] जी० २११८, ४०;
 ३११००३ से १००६, १०२७
 चंद्रविलासिणी [चन्द्रविलासिनी] रा० १३३.
 जी० ३१३०३, ११२२
 चंद्रसालिया [चन्द्रशालिका] जी० ३१५६४
 चंद्रसूरदंसणग [चन्द्रसूरदर्शनक] रा० ८०२
 चंद्रसूरदंसिणया [चन्द्रसूरदर्शनिका] ओ० १४४
 चंद्रा [चन्द्रा] जी० ३१७६४, ७७६, ७७८
 चंद्रागमणप्रविभक्ति [चन्द्रागमनप्रविभक्ति]
 रा० ८७
 चंद्रागार [चन्द्राकार] रा० १५६. जी० ३१३३२,
 ७६३
 चंद्राणया [चन्द्रानया] रा० ७०, १३३, २२५.

जी० ३१३०३, ३८४, ८६६, ११२२
 चंद्रावरणप्रविभक्ति [चन्द्रावरणप्रविभक्ति]
 रा० ८८
 चंद्रावलि [चन्द्रावलि] रा० २६
 चंद्रावलिप्रविभक्ति [चन्द्रावलिप्रविभक्ति] रा० ८५
 चंद्रिम [चन्द्रनम्] ओ० १६२. रा० १२४.
 जी० ३१२५७, ८४१, ८४२, ८४५, ६६८ से
 १०००, १०२०, १०२१, १०३८
 चन्द्रुगमणप्रविभक्ति [चन्द्रोद्गमनप्रविभक्ति]
 रा० ८६
 चंपक [चम्पक] जी० ३१२८१
 चंपग [चम्पक] रा० २८, ८०४. जी० ३१२८१
 चंपग [लया] [चम्पकलता] जी० ३१२६८
 चंपगलया [चम्पकलता] ओ० ११. रा० १४५.
 जी० ३१५६४
 चंपगलयाप्रविभक्ति [चम्पकलताप्रविभक्ति]
 रा० १०१
 चंपगवडैसय [चम्पकावर्तंसक] रा० १२५
 चंपगवण [चम्पकवन] रा० १७०. जी० ३१३५८.
 चंपय [चम्पक] रा० २८, १८६. जी० ३१२८१,
 ३५६
 चंपा [चम्पक] रा० २८, ३०. जी० ३१२८१, २८३
 चंपा [चम्पा] ओ० १, २, १४, १६ से २२, ५२, ५३
 ५५, ६० से ६२, ६७, ६८, ७०
 चंपापविभक्ति [चम्पकप्रविभक्ति] रा० ६३
 चकारवग [चकारवर्ग] रा० ६६
 चक्क [चक्र] ओ० १६, १६. रा० १५०, १५१
 जी० ३१११०, ३२३, ३२४, ५६६, ५६७
 चक्कग [चक्रक] जी० ३१५६३
 चक्कज्जाय [चक्रज्जाय] रा० १६२. जी० ३१३३५
 चक्कद्वचक्कवाल [चक्रार्थचक्रवाल] रा० ८४
 चक्कपाणिलेहा [चक्रपाणिरेखा] जी० ३१५६६
 चक्कल [द्वे०] रा० ३७. जी० ३१३११
 चक्कलवक्षण [चक्रलक्षण] रा० ८०६
 चक्कवट्टि [चक्रवर्तिन्] ओ० १६, २१, ५४, ७१.

रा० ८, १५४, २७६, २६२. जी० ३।३२७, ४४५,
 ४५७, ५६२, ६०२, ७६५, ८४१, ८६६, ९५६
चक्रवाक [चक्रवाक] ओ० ६. जी० ३।२७५
चक्रवाल [चक्रवाल] ओ० ७०, १७०. रा० २०१,
 ८०४. जी० ३।८६, २६०, २७३, ३६२, ५८६,
 ७०५, ७०६, ७३२, ७६४, ७६५, ७६७, ७६८,
 ८११, ८१२, ८२२, ८२३, ८३२, ८४६, ८५०,
 ८८२, ९१८
चक्रवृह [चक्रवृह] ओ० १४६. रा० ८०६
चक्रिकय [चक्रिक] ओ० ६८
चक्रिखदिय [चक्षुरिन्द्रिय] ओ० ३७. जी० ३।६७८
चक्रवृ [चक्षुष्] रा० ६७५. जी० ३।६३३
चक्रवृक्षसि [चक्षुर्वृक्षसिन्] जी० १।२६, ८६, ९०;
 ९।१३१, १३२, १३६, १४०
चक्रवृक्षय [चक्षुर्वृक्षय] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८,
 २६२. जी० ३।४५७
चक्रवृष्कास [चक्षुस्पर्श] ओ० ६६, ७०. रा० ७७८
चक्रवृभूय [चक्षुर्भूत] रा० ६७५
चक्रवृल्लोयणलेस [चक्षुर्लोकनलेश] रा० १७, १८,
 २०, ३२, १२६, १३३. जी० ३।२८८, ३००, ३०३,
 ३७२
चक्रवृहृर [चक्षुर्हृर] रा० २८५. जी० ३।४५१
चक्रचय [चक्रच] रा० २६४, २६६, ३००, ३०५,
 ३१२, ३५१, ३५५, ५६४. जी० ३।४५६, ४६१,
 ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५४७
चक्रचर [चक्रचर] ओ० १, ५२, ५५. रा० ६५४,
 ६५५, ६८७, ७१२. जी० ३।५५४
चक्रवाग [दे० चर्वाक] रा० १३१, १४७, १४८.
 जी० ३।३०१
चक्रवाय [दे० चर्वाक] रा० २८०. जी० ३।४४६
चक्रगर [दे०] रा० ५३, ६८३, ६९२, ७१६
चक्रालीस [चक्रालीस] जी० ३।६६
चक्रुरासीति [चक्रुरासीति] जी० ३।८८२
चक्रुरिदिय [चक्रुरिन्द्रिय] जी० २।१३८, १४६;
 ४।२१
चक्रर [चक्रर] ओ० १३, ६८. रा० १७, १८, २०,

३२, ३७, १२६, २८२. जी० ३.२३४ से २३६,
 २४३, २४५, २४७, २५०, २५६, २५८, २८८,
 ३००, ३११, ३७२, ४४८
चक्रस [चक्रस] ओ० १११ ने ११३, १३७, १३८
चक्रम [चक्रम] रा० २४, ६६४. जी० ३।२७७, ५६२,
चक्रम [पाय] [चक्रमपात्र] ओ० १०५, १२८
चक्रम [बंधण] [चक्रमबंधण] ओ० १०६, १२६
चक्रमपक्षि [चक्रमपक्षिन्] जी० १।११३, ११४, १२५
चक्रमपक्षी [चक्रमपक्षी] जी० २।१०
चक्रमपाणि [चक्रमपाणि] रा० ६६४. जी० ३।५६२
चक्रमेदुग [चक्रमेदुग] रा० १२, ७५८, ७५६.
 जी० ३।११८
चय [चय, चयव] ओ० १४१. रा० ७६६.
 जी० ३।११२७
चय [चय]—चयइ. ओ० १६५।१६
चय [चय]—चयति. जी० ३।८७
चय [चय]—चयइ. जी० ३।१२६।५
चयंत [चयजन्] ओ० १६५।३
चयण [चयण] जी० ३।१६०
चर [चर]—चरइ. जी० ३।८३८।२—चरति.
 ओ० ४६. जी० ३।७०३—चरति
 जी० ३।१००।१—चरिसु. जी० ३।७०३
 —चरिस्संति जी० ३।७०३
चरण [चरण] ओ० १५, २५. रा० ६८६.
 जी० ३।५६७
चरमअभितेयनिबद्ध [चरमअभितेयनिबद्ध]
 रा० ११३
चरमंत [चरमान्त] जी० ३।६६८
चरमकामभोगनिबद्ध [चरमकामभोगनिबद्ध]
 रा० ११३
चरमचवणनिबद्ध [चरमचवणनिबद्ध] रा० ११३
चरमजम्मणनिबद्ध [चरमजम्मणनिबद्ध] रा० ११३
चरमजोव्वणनिबद्ध [चरमजोव्वणनिबद्ध] रा० ११३
चरमणाणुपायनिबद्ध [चरमणाणुपायनिबद्ध]
 रा० ११३

चरमतथचरणनिबद्ध [चरमतथचरणनिबद्ध]

रा० ११३

चरमतिथ्यपवतणनिबद्ध [चरमतीर्थप्रवर्तननिबद्ध]

रा० ११३

चरमनिष्क्रमणनिबद्ध [चरमनिष्क्रमणनिबद्ध]

रा० ११३

चरमनिदायकाल [चरमनिदायकाल]

जी० ३११८, ११९

चरमनिबद्ध [चरमनिबद्ध] रा० ११३

चरमपरिनिष्वाणनिबद्ध [चरमपरिनिष्वाणनिबद्ध]

रा० ११३

चरमपुष्पभवनिबद्ध [चरमपूर्वभवनिबद्ध] रा० ११३

चरमबालभावनिबद्ध [चरमबालभावनिबद्ध]

रा० ११३

चरमसाहरणनिबद्ध [चरमसाहरणनिबद्ध] रा० ११३

चरमाण [चरत्] ओ० १९, २०, ५२, ५३.

रा० ६८६, ६८७, ७०६, ७११, ७१३

चरित [चरित्र] रा० ६८६, ८१४

चरित्तविषय [चरित्रविषय] ओ० ४०

चरित्तसंपण [चरित्रसंपण] ओ० २५. रा० ६८६

चरिम [चरम] ओ० ११७, १५४, १९२, १९५।३.

रा० ६२, ७९६, ८१६. जी० ९।६३, ६४, ६६

चरिमंत [चरमान्त] जी० ३।३३, ३४, ३७, ३८,

६० से ६८, २१७, २१९ से २२५, २२७, ६३२,

६३९. ६६६, ११११

चरिमभव [चरमभव] ओ० १९५।४

चरिममोहणिज्ज [चरममोहणीय] ओ० ८६

चरिथ [चरित] ओ० ४६

चरिया [चरिका] ओ० १, १६०. रा० ६५४,

६५५. जी० ३।५५४, ५९४

चरियालिगसामण [चरियालिगसामण] ओ० १६०

चर [चरु] ओ० १११ से ११३, १३७, १३८

√चल [चल्] — चलइ. रा० ७७१ — चलति.

जी० ३।७२९ — चालेइ. रा० ७७१

चलंत [चलत्] ओ० ५, ८, ४६. रा० ७७१

जी० ३।२७४

चलण [चरण] ओ० १९. जी० ३।५९६, ५९७

चलणमालिया [चरणमालिका] जी० ३।५९३

चलणी [चलनी] जी० ३।६२३

चलिय [चलित] रा० १७, १८, २०

√चव [च्यु] — चवति जी० ३।८४३

चवण [चवण] रा० ८१५. जी० १।१४

चवल [चपल] ओ० २१, ४६, ४९, ५४. रा० ८,

१०, १२ १५, ३२, ५६, १७९, ७१४.

जी० ३।८६, १७६, १७८, १८०, १८२, ४४५

चवलायंत [चालायमान] जी० ३।५९७

चवलिय [चपलित] जी० ३।५८७

चसण [चपक] जी० ३।५८७

चाइ [त्यागिन्] ओ० १६४

चाउबकोण [चनुकोण] रा० १७४. जी० ३।११८,

११९, २८६

चाउघंट [चतुर्घण्ट] रा० ६८१ से ६८३, ६८५,

६९० से ६९२, ६९७, ७०६, ७१०, ७१४,

७१६, ७२२, ७२४, ७२६

चाउज्जातण [चतुर्जातक] जी० ३।८८८

चाउयाम [चतुर्याम] रा० ६९३, ७१७, ७७९

चाउज्जामिय [चतुर्यामिक] रा० ६९५, ६९६

चाउत्थगाहिय [चतुर्थगाहिक] जी० ३।६२८

चाउइस [चतुर्दश] रा० ७७४

चाउइसी [चतुर्दशी] ओ० १६२. रा० ६९८,

७५२, ७८९

चाउभाइया [चतुर्भागिका] रा० ७७२

चाउमासिय [चतुर्मासिक] जी० ३।९१७

चाउरंगणी [चतुर्रङ्गणी] ओ० ५५ से ५७, ६२,

६५

चाउरंत [चतुरन्त] ओ० १९, २१, ५४. रा० ८,

१५४, २९२. जी० ३।३२७, ४५७, ६०२, ८६६,

९५९

चाउरक [चतुरक] जी० ३।६०१, ८६६

चाडुकर [चाटुकर] ओ० ६४

चामर [चामर] ओ० १२, १९, ६३ से ६५.

रा० २२, २३, ५०, १६०, १६७, १७८, २५६,
 २७६. जी० ३१२६०, २६१, ३३३, ३४८, ३५५,
 ३८२, ४१७, ४१६, ४४५, ५६७
चामरग्गाह [चामरग्गाह] ओ० ६४
चामरधारपडिमा [चामरधारप्रतिभा] रा० २५६.
 जी० ३१४१७
चार [चार] ओ० ५०, १४६. रा० ८०६.
 जी० ३१७०३, ७२२, ८०६, ८२०, ८३०, ८३४,
 ८३७, ८३८, १३, २०, २२, ८४२, ८४५, १००१,
 १००३ से १००७
चारणवद्धक [चारकवद्धक] ओ० ६०
चारण [चारण] ओ० २४. जी० ३१७६५, ८४०,
 ८४१
चारि [चारिन्] ओ० ५०. जी० ३१५६७
चारु [चारु] ओ० १५, १६, २५, ४६. रा० ७०, ७६,
 १३३, १७३, ६६४, ६७२, ८०६, ८१०.
 जी० ३१२८५, ३०३, ५६२, ५८७, ५६६, ५६७,
 ११२२
चारुपाणि [चारुपाणि] रा० ६६४. जी० ३१५६२
चालिय [चालित] रा० १७३. जी० ३१२८५
चालेमाण [चालयत्] जी० ३११११
चाव [चाव] ओ० १६, ६४. रा० १७३, ६६४,
 ६८१. जी० ३१२८५, ५६२, ५६६, ५६७
चावग्गाह [चावग्गाह] ओ० ६४
चावपाणि [चावपाणि] रा० ६६४. जी० ३१५६२
चास [चाव] रा० २६. जी० ३१२७६
चासपिच्छ [चावपिच्छ] रा० २६. जी० ३१२७६
चिउर [चिकुर] रा० २८. जी० ३१२८१
चिउरंगराग [चिकुराङ्गराग] जी० ३१२८१
चिउरंगरात [चिकुराङ्गरात] रा० २८
चिता [चिन्ता] ओ० ४६. जी० ३१६४८, ६४६
चितिय [चिन्तित] ओ० ७०. रा० ६, २७५, २७६,
 ६८८, ७३२, ७३७, ७३८, ७४६, ७६८, ७७७,
 ७६१, ७६३, ८०४. जी० ३१४४१, ४४२
चिध [चिह्न] ओ० ४७ से ५१. रा० ६६४, ६८३.
 जी० ३१५६२

चिक्खल [दे०] ओ० ४६
चिक्खा [त्यक्त्वा] ओ० २३. रा० ६६५
चिद्ध [ष्ठा]—चिद्ध. ओ० ३७. रा० १२३.
 जी० ३१४८.—चिट्ठति ओ० १८३. रा० ४०.
 जी० ३१२२.—चिट्ठति. रा० २७६. जी० ३१४८.
 —चिट्ठह. रा० ७५३.—चिट्ठेज्ज. ओ० १८०
चिट्ठं [दे०] रा० ७२३
चिट्ठित [चेष्टित] रा० १३३
चिट्ठिय [चेष्टित] रा० ७०, ८०६, ८१०
चित्त [चित्त] ओ० २०, २१, ४६, ५३, ५४, ५६, ६२,
 ६३, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १८, २०,
 २४, ३२, ३४, ३७, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४,
 १२६, २७७, २७६, २८१, २८०, ६५५, ६८१,
 ६८३, ६६०, ६६५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३.
 ७१४, ७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७७४, ७७८
चित्त [चित्र, चित्त] रा० ६७५, ६८०, ६८१, ६८३
 से ६८५, ६८६, ६६०, ६६२, ६६३, ६६५ से
 ७१०, ७१३, ७१४, ७१६ से ७३६, ७४८
चित्त [चित्र] ओ० १६, ४६, ५७, ६४. रा० ६६,
 १३०, १३७, १५४, १६०, १७३, २५६, २५८,
 २७६, २८५, ६८१. जी० ३१२८५, ३००, ३०७,
 ३२७, ३३३, ३५५, ४१६, ४४३, ४४५, ४४७,
 ४५१, ५५५, ५६६
चित्तंग [चित्राङ्ग] जी० ३१५६१
चित्तंगय [चित्राङ्गक] जी० ३१५६१
चित्तंतरलेस [चित्रान्तरलेस्य] जी० ३१८४५
चित्तंतरलेसाग [चित्रान्तरलेसयाक] जी० ३१८३८
चित्तघरग [चित्रगृहक] रा० १८२, १८३.
 जी० ३१२६४
चित्तपट्ट [चित्रपट्ट] रा० ६६
चित्तरस [चित्ररस] जी० ३१५६२
चित्तल [चित्रल] जी० ३१६२०
चित्तवीणा [चित्रवीणा] रा० ७७
चित्तसाल [चित्रसाल] जी० ३१५६४
चियत्त [दे० प्रीत, सम्मत] ओ० ३३, १६२.
 रा० ६६८, ७५२, ७६६

- चिरट्टिइय [चिरस्त्रितिक] ओ० ७२
 चिराईय [चिरादिक, चिरातीत] ओ० २. रा० २
 चिराहड [चिराहृत] रा० ७७४
 चिलाइया [किरातिका] रा० ८०४
 चिलाई [किराती] ओ० ७०
 चिल्लय [दे०] ओ० ४६. जी० ३१५८६
 चिल्ललग [दे०] रा० ६६. जी० ३१६८२
 चीणंसुय [चीणासुक] जी० ३१५६५
 चीणपिट्ट [चीनपृष्ट] रा० २७. जी० ३१२८०
 चुण्ण [चूर्ण] रा० १५६, १५७, २५८, २७६,
 २८१, २६१. जी० ३१३२६, ४१६, ४४७, ४५७
 चुण्णजुत्ति [चूर्णयुक्ति] ओ० १४६
 चुय [च्युत] ओ० ८८
 चुलणिमुत्त [चुलनीमुत्त] जी० ३१११७
 चुलसीत्त [चतुरसीत्त] जी० ३१७२८
 चुल्लहिमवन्त [क्षुल्लहिमवन्] रा० २७६.
 जी० ३१२१७, २१६ से २२१, ४४५, ७६५,
 ६३७
 चुचुय [चूचुक] रा० २५४. जी० ३१४१५, ५६७
 चुडामणि [चूडामणि] रा० २८५. जी० ३१४५१
 चुत्त [चूत्त] जी० ३१३५६
 चुत्तवण [चूत्तवन] जी० ३१३५८
 चुय [चूत्त] रा० १८६
 चुय (लया) [चूत्तलता] जी० ३१२६८
 चुयलया [चूत्तलता] ओ० ११. रा० १४५.
 जी० ३१५८४
 चुयलयायविभत्ति [चूत्तलतायप्रविभत्ति] रा० १०१
 चुयवड्डेसय [चूत्तवड्डेसक] रा० १२५
 चुयवण [चूत्तवन] रा० १७०. जी० ३१३५८
 चुलामणि [चूडामणि] ओ० ४७, १०८.
 जी० ३१५६३
 चुलिया [चूलिका] जी० ३१८४१
 चुलोवणय [चूडोवणय] रा० ८०३
 चुलोवणयण [चूडोवणयण] जी० ३१६१४
 चेइय [चैय] ओ० १ से ३, १६ से २२, ५२, ५३,
 ६५, ६६, ७०, १३६. रा० २, ८ से १०, १२,
 १३, १५, ५६, ५८, २४०, २७६, ६७८, ६८६,
 ६८७, ६८६, ६६२, ७००, ७०४, ७०६, ७११,
 ७१६, ७७६
 चेइयखंभ [चैत्यस्तम्भ] रा० २३६ से २४२, २४४,
 ३५१. जी० ३१४०१
 चेइययूभ [चैत्यस्तूप] रा० २२२ से २२४, २२६,
 ३०५, ३१६, ३४३. जी० ३१३८१, ३८२, ३८५,
 ४७०, ४८१, ५०८
 चेइयमह [चैत्यमह] रा० ६८८. जी० ३१६१५
 चेइयरुक्ख [चैत्यरुक्ख] रा० २२७ से २३०, ३१०,
 ३१५, ३४८. जी० ३१३८६ से ३८८, ३६१,
 ३६२, ४१२, ४७५. ४८०, ५१३
 चेट्टिय [चेष्टित] जी० ३१३०३, ५६७
 चेड [चेट] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४
 चेडिया [चेटिका] ओ० ७०. रा० ८०४
 चेतिय [चैत्य] जी० ३१४०२, ४४२
 चेतियखंभ [चैत्यस्तम्भ] जी० ३१४०२ से ४०४,
 ४०६, ४४२, ५१६, १०२५
 चेतिययूभ [चैत्यस्तूप] जी० ३१३८३, ४८१, ८६५,
 ८६५, ८६७
 चेतियरुक्ख [चैत्यरुक्ख] जी० ३१८६८, ८६६
 चेल (पाय) [चेलयात्र] ओ० १०५, १२८
 चेल (बंधण) [चेलबन्धन] ओ० १०६, १२६
 चेलुक्खेय [चेलोत्क्षेप] रा० २८१. जी० ३१४४७
 चोउट्टि [चतुष्पष्टि] जी० ३१२१८
 चोक्ख [चोक्ख] ओ० २१, ५४, ६८. रा० २७७,
 २८८, ७६५, ८०२. जी० ३१४४३
 चोक्खायार [चोक्खाचार] ओ० ६८
 चोलीस [चतुन्निशत्त] जी० ३१६६६
 चोद्वस [चतुर्दशन्] जी० ३१३६
 चोण्णाल [चोण्णाल] रा० २४६ जी० ३१४१०,
 ५२०, ६०४
 चोण्णालय [चोण्णालक] रा० ३५५
 चोय [दे०] रा० ३०. जी० ३१२८३, ३३४, ४१६, ५८६
 चोयग [दे०] रा० १६१, २५८, २७६

चौयाल [चतुश्चत्वारिंशत्] जी० ३.८३०
 चौयासव [दे० चौयामव] जी० ३:८६०
 चोर [चोर] ओ० ११७ ग० ७५४, ७५६, ७६२
 ७६४, ७६६
 चोरकहा [चोरकथा] ओ० १०४, १२७
 चौबत्तरि [चतु.सप्तति] जी० ३:७३३

(छ)

छ [षष्] रा० १७३ जी० १:४६
 छउमत्थ [छमस्य] ओ० १६६, १७०. रा० ७७१.
 जी० १:१२६; ३:६६३, ३:६६७; ६:३६, ४२ से
 ४४, ४६, ५१
 छउमत्थपरियाग [छमस्यपर्याय] ओ० १६६
 छंद [छन्द] ओ० ६७ रा० ७२०
 छकोडीय [षट्कोटीक] जी० ३:४०१
 छगल [छगल] ओ० ५१ जी० ३:१०३८
 छज्जीवणिया [षट्जीवतिका] ओ० ७४:३
 छट्ट [षठ] ओ० ६७, १४४, १७४, १७६, रा०
 ८०२
 छट्ठंछट्ट [षठंषठ] ओ० ११६
 छट्टभक्त [षठभक्त] ओ० ३२
 छट्टा [षठी] जी० २:१३५, १३८; ३:२, ६१
 १११
 छट्टिया [षठिका] जी० ३:१२५
 छट्टी [षठी] जी० २:१४, १४६; ३:४, ३६, ७१
 ७४, ७५, ७७, ८८, ११११
 छडिय [छटित] रा० १५० जी० ३:३२३
 √छड्ड [छर्दय, मुच्]—छड्डेति. रा० ७७४—
 छड्डेस्मामि. रा० ७७३—छड्डेहि रा०
 ७७४
 छड्डियल्लिया [छर्दिता] ओ० ६२
 छड्डेतए [छर्दयितुम्] रा० ७७४
 छड्डेत्ता [छर्दिथा] ग० ७७४
 छण्ण [छन्न] जी० ३:२७५
 छण्णउय [षण्णवति] जी० ३:८२०
 छण्णालय [दे० षण्णालक] ओ० ११७

छत्त [छत्र] ओ० २, १६, ५२, ५७, ६३ से ६५,
 ६७, ६९, ७०. रा० १५६, १७३, २७६, ६८१
 से ६८३, ६९१, ६९२, ७००, ७१५, ७१६, ७१६.
 जी० ३:२६६, २८५, ३३२, ३५५, ४१६, ४४५.
 ५६६, ५६७, ६०४
 छत्तज्जाय [छत्रध्वज] रा० १६२. जी० ३:३३५
 छत्तधारपडिमा [छत्रधारप्रतिमा] जी० ३:४१६
 छत्तधारयपडिमा [छत्रधारकप्रतिमा] रा० २५५
 छत्तय [छत्रक] ओ० ११७
 छत्तलक्खण [छत्रलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६
 छत्ताइच्छत्त [छत्रातिछत्र] रा० २०२, २०४,
 २०५
 छत्ताइछत्त [छत्रातिछत्र] ओ० १२. रा० १३७,
 २२६. जी० ३:२६१, ३:१४, ३:५७, ३:७१, ३:७५,
 ४३३
 छत्रातिच्छत्त [छत्रातिछत्र] रा० ५२, ५६, २०६,
 २३१, २४७, २४८, २५०, २५६
 छत्तातिछत्त [छत्रातिछत्र] रा० २३, १६८, १७६,
 २०७, २०८, २२०, २२३, २३२, २३४, २६१,
 जी० ३:३०७, ३:४६, ३:५६, ३:६७ से ३७०,
 ३७६, ३८२, ३६१, ३:६३, ३:६४, ३:६६, ४०३,
 ४११, ४२०, ४२४, ४३०, ४३६, ६६६
 छत्तीस [षट्तिंशत्] ओ० १६. रा० २४०. जी०
 ३:७१०
 छत्तीव [छत्रोष] ओ० ६, १०. जी० ३:५८३
 छत्तीवग [छत्रोषक] जी० ३:३८८
 छप्पण [षट्पञ्चाशत्] जी० ३:३००
 छप्पन्न [षट्पञ्चाशत्] रा० १३० जी० ३:५६८
 छप्पय [षट्पद] ओ० ६. रा० १३६, १७४. जी०
 ३:११८, ११६, २७५, २८६, ३०६
 छभाम [षड्भाम] ओ० १६५
 छभामरी [षड्भामरी] रा० ७७
 छम्मसिय [षण्मासिक] ओ० ३२
 छयाल [षट्चत्वारिंशत्] जी० ३:८१५
 छर [त्सर] ओ० १६. जी० ३:५६६

छरूपवाद [त्सरूपवाद] ओ० १४६
 छरूपवाय [त्सरूपवाद] रा० ८०६
 छरूह [त्सरूह] जी० ३३२२
 छलंस [पडंस] जी० ३४०१
 छलसीत [पडशीति] जी० ३७३६
 छल्ली [दे०] रा० २८. जी० ३१२८१
 छवि [छवि] जी० ३१६६, ५६८
 छविग्गहित [पडविग्गहित] जी० ३४०१
 छविच्छेद [छविच्छेद] जी० ३१६२०
 छविच्छेय [छविच्छेद] रा० ७६२. जी० ३१६२५
 छव्विह [पडव्विघ] ओ० ३०. ३१, ३८. जी० १११०,
 ११६; ३१८३, १८५, ६३१; ५११, ६०; ६१५६,
 १६७, १७०, १८१
 छव्वीस [षड्विशति] जी० ३११०६६
 छाउमत्थिय [छाउमत्थिक] रा० ७४६
 छादन [छादन] रा० २७०. जी० ६१२६४, ३००,
 ४३५
 छायाण [छादन] रा० १३०, १६०
 छाया [छाया] ओ० १२, ४७, ७२, १६४. रा० २१,
 २३, २४, ३२, ३४, ३६, १२४, १४६, १५६, १७०,
 २२८, ६७०, ७०३. जी० ३१२६१, २६६, २६६,
 २७७, ३२२, ३३२, ३८७, ५६८, ६०४, ६७२
 छावट्ट [षट्षण्टि] जी० ३११०२२
 छावट्टि [षट्षण्टि] जी० ३१८३८४
 छावत्तर [षट्षणत्तति] जी० ३१७०३
 √छिद [छिद्] — छिद. रा० ६७१. — छिदति. रा०
 २८१. जी० ३१४४७
 √छिज्ज [छिद्] — छिज्जइ. रा० ७८४
 छिज्जमाण [छिज्जमाण] जी० ३१२२ से २५, २७,
 ४५ से ४७
 छिड्डु [छिद्] रा० ७५४ से ७५७
 छिण्णावाय [छिण्णापात] ओ० ११६, ११७.
 रा० ७६५, ७७४
 छित्त [क्षेत्र] ओ० १
 छिद् [छिद्] रा० ७६३

छिप्पंत [स्पृश्यमान] रा० ७७
 छिरा [शिरा] जी० ११६५, १३५; ३१६२, १०६०
 छिरिया [दे०] जी० १७३
 छिवाडी [दे०] रा० २६. जी० ३१२८२
 छोइत्ता [क्षुत्वा] जी० ३१६३०
 छोरविरालिया [क्षीरविडालिका] जी० २१६
 छोरविरलिया [क्षीरविडालिका] जी० ११७३
 छुभ [क्षिप्] — छुभइ रा० ७८८. — छुभिस्सामि
 रा० ७८७
 छुहा [क्षुप्] ओ० १६५१८
 छुहिय [क्षुधित] जी० ३१११६
 छेत्ता [छित्त्वा] जी० ३१६६१
 √छेद [छिद्] — छेदति ओ० ११७
 छेदारिह [छेदारिह] ओ० ३६
 छेदित्ता [छित्त्वा] ओ० ११७
 छेदेत्ता [छित्त्वा] ओ० १६२
 छेदोवट्टावणियचरित्तविणय [छेदोपस्थापनीय
 चरित्रविणय] ओ० ४०
 √छेय [छेदय्] — छेदस्सइ. रा० ८१६
 छेय [छेक] ओ० ६३, ६४. रा० १२, १७३, ६८१,
 ७५८, ७५६, ७६५, ७६६, ७७०. जी० ३१८६,
 ११८, १७६, १७८, १८०, १८२, २८५, ४४५,
 ५६१

छेयकर [छेदकर] ओ० ४०
 छेयारिय [छेकाचार्य] ओ० १, ५७
 छेवट्ट [सेवार्त्त] जी० ११७, ८६, १०१, ११६
 छोडिय [छोटित] जी० ३१५६६

ज

ज [यत्] ओ० ३७. रा० ६. जी० १५
 जइ [यदि] ओ० ५७. रा० ७१८. जी० १५५५
 जइण [जविन्] ओ० ५७. रा० १२, ७५८, ७५६.
 जी० ३ ८६, १७६. १७८, १८०, १८२, ४४५
 जइपरित्ता [यतिपरिषद्] ओ० ७१
 जओ [यतस्] रा० ७५४, ७५५. जी० ११६६
 जंघा [जङ्घा] ओ० १६. रा० २५४. जी० ३४१५,

५६६,५६७
 जंत [यन्त्र] ओ० १४ रा० १७,१८, २०,३२,
 १२६,६७१. जी० ३१२८८,३००,३७२
 जंतकम्म [यन्त्रकर्मन्] ओ० ६४. रा० १७३,६८१.
 जी० ३१२८५
 जंतवाहचुल्ली [यन्त्रपाटचुल्ली] जी० ३११८
 जंबुद्वीव [जम्बूद्वीप] ओ० १७०. रा० ७ से १०,
 १३,१५,५६,१२४,६६८. जी० ३१८६,२१७,
 २१६ से २२१,२२७,२५६,२६०,२६६,
 ३००,३५१,४४५,५६६,५६८ से ५७७,६३८,
 ६६०,६६५,६६६,६६८,७०१ से ७०४,७०८,
 ७२३,७३६,७४०,७४२,७४५,७५०,७५४,
 ७६२,७६४ से ७६६,७७५,७६५,६१६ से ६२२,
 ६५३,१०३६,१०७४,१०८०
 जंबुद्वीवग [जम्बूद्वीपक] जी० ३१७०६,७१०,
 ७६२,७६४ से ७६६,८१४
 जंबुद्वीवाहिवति [जम्बूद्वीपाधिपति] जी० ३१७६५
 जंबूपेठ [जम्बूपीठ] जी० ३१६६८,६६६
 जंबू [जम्बू] जी० ११७१; ३१६६८,६७२,६७३,
 ६७८ से ६८३,६८८,६८९,६९२ से ७००,
 ७६५
 जंबूणदमय [जाम्बूनदमय] जी० ३१३२३
 जंबूणय [जाम्बूनद] रा० १५६,२२८.
 जी० ३१३३२,३८७,६७२
 जंबूणयमय [जाम्बूनदमय] रा० ३७,१५०.
 जी० ३१३११,४०७,६४३
 जंबूणयामय [जाम्बूनदमय] रा० १३५,१८८,
 २४५. जी० ३१३०५,३६१,६६६,६८६,
 ८३६
 जंबूदीव [जम्बूद्वीप] जी० ३१७००,७५४,१००१,
 १००७,१०२२
 जंबूदीवाहिवति [जम्बूद्वीपाधिपति] जी० ३१७००
 जंबूपल्लवपविभक्ति [जम्बूपल्लवप्रविभक्ति]
 रा० १००
 जंबूपेठ [जम्बूपीठ] जी० ३१६६८,६७०

जंबूफल [जम्बूफल] ओ० १३. रा० २५.
 जी० ३१२७८
 जंबूफलकालिया [जम्बूफलकालिया] जी० ३१८६०
 जंबूवृक्ष [जम्बूवृक्ष] जी० ३१७०२
 जंबूवृष [जम्बूवृष] जी० ३१७०२
 जंबूसंड [जम्बूवृषण्ड] जी० ३१७०२
 जंभाइत्ता [जम्भयित्वा] जी० ३१६३०
 जवक्ष [यक्ष] ओ० ४६,१२०,१६२. रा० ६६८,
 ७५२,७८६. जी० ३१७८०,६४७,६५०
 जवक्षग्रह [यक्षग्रह] जी० ३१६२८
 जवक्षप्रतिमा [यक्षप्रतिमा] रा० २५७. जी० ३१४१८
 जवक्षमंडलपविभक्ति [यक्षमण्डलप्रविभक्ति]
 रा० ६०
 जवक्षमह [यक्षमह] रा० ६८८. जी० ३१६१५
 जवक्षालित [यक्षादीप्त] जी० ३१६२६
 जगईपम्बय [जगतीपर्वत] रा० १८१
 जगईपम्बयग [जगतीपर्वतक] रा० १८०
 जगती [जगती] जी० ३१२६० से २६३,२७३,
 २६८
 जगतीपम्बयग [जगतीपर्वतक] जी० ३१२६२
 जघण [जघन] ओ० १५
 जघण [जात्य] ओ० १६,६४. जी० ३१५६६,५६७,
 ८५४,८७८
 जघकणग [जात्यकनक] ओ० २७. रा० ८१३
 जघर्वाहिंगुलुय [जात्यहिंगुलुक] जी० ३१५६०
 जजजरिय [जर्जरित] रा० ७६०,७६१
 जडि [जटिन्] ओ० ६४
 जडु [जाड्य] रा० ७३२,७३५,७६५
 जण [जन] ओ० १,६,६८,११६. रा० १२३,
 ७६६
 जणइत्ता [जनयित्वा] ओ० ६६
 जणउम्मि [जर्नामि] रा० ६८७,७१२
 जणकलकल [जनकलकल] ओ० ५२. रा० ६८७,
 ६८८,७१२
 जणक्षय [जनक्षय] जी० ३१६२८
 जणबोल [जनबोल] ओ० ५२. रा० ६८७,७१२

जणवय [जनपद] ओ० १४६. रा० ६६८, ६६९,
६७१, ६७६, ६८३, ७०६, ७११, ७१८, ७५०,
७७४, ७९०, ७९१
जणवयकहा [जनपदकथा] ओ० १०४, १२७
जणवयपाल [जनपदपाल] ओ० १४. रा० ६७१
जणवयपिय [जनपदप्रिय] ओ० १४. रा० ६७१
जणवयपुरोहित [जनपदपुरोहित] ओ० १४
रा० ६७१
जणवाय [जनवाद] ओ० १४६. रा० ८०६
जणवूह [जनव्यूह] ओ० ५२. रा० ६८७, ७१२
जणसण्णवाय [जनसन्निपात] ओ० ५२.
रा० ६८७, ७१२
जणसह [जनशब्द] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८,
७१२
जणिय [जनित] ओ० ५१
जणुक्कलिया [जनोत्कलिका] ओ० ५२
जणुम्मि [जनोम्मि] ओ० ५२
जण्णइ [याज्ञिक] ओ० ९४
जण्णु [जानु] रा० १२
जति [यदि] रा० ७५०
जतिपरिसा [यतिपरिषद्] रा० ६१
जतो [यतस्] रा० ७५६
जत्ताभिमुह [यात्राभिमुख] ओ० ५५, ५८, ६२, ७०
जत्तिय [यावत्] जी० ३१७७, १२७
जत्थ [यत्र] रा० ७१९. जी० ११५८
जथा [यथा] जी० ३१६८
जन्म [यज्ञ] जी० ३१६१४
जन्नु [जानु] रा० ९
जप्पभिइ [यत्प्रभृति] रा० ७९०, ७९१
जमइत्ता [दे०?] ओ० २६
जमय [यमक] जी० ३१६३२, ६३३, ६३५, ६३७ से
६३९
जमगण्णमा [यमकप्रभा] जी० ३१६३७

जमगवण [यमकवर्ण] जी० ३१६३७
जमगवण्णाम [यमकवर्णाम] जी० ३१६३७
जमगसमग [दे०] ओ० ६७. रा० १३, ६५७
जी० ३१४४६
जमगा [यमका] जी० ३१६३७ से ६३९
जमगागार [यमकाकार] जी० ३१६३७
जमबग्गिगपुत्त [जमदग्निपुत्र] जी० ३१११७
जमल [यमल] ओ० १, ५७. रा० १२, १७, १८, २०,
३२, १२९, १३३, ७५८, ७५९.
जी० ३१११८, २२८, ३००, ३०३, ३७२, ५९७
जमलिय [यमलित] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.
जी० ३१२६८, २७४
जम्म [जन्मन्] ओ० १८४
जम्मण [जन्मन्] ओ० ४६. रा० ८०३.
जी० २१३० से ३४, ५७ से ६१, ६६, ११६,
१२४, १३३; ३१९१७
जम्हा [यस्मात्] रा० ७५०
जय [जय] ओ० २०, ५३, ६२ से ६४, ६८.
रा० १२, ४६, ७२, ११८, २७६, २८२, २८२,
६५५, ६८३, ६८९, ७०७, ७०८, ७१३, ७२३.
जी० ३१४४२, ४४५, ४४८
जयंत [जयन्त] ओ० १९२. जी० ३११८१, २९९,
५६८, ७०७, ७१२, ७९९, ८१३, ८१४, ९४१
जयंती [जयन्ती] जी० ३१९१६, १०२६
जयणा [यतना] ओ० ४६
जया [यदा] ओ० २१. रा० ७०६. ३१७२९
जर [जरा] ओ० ४६, १७२
जर [ज्वर] जी० ३१११८, ११९, ६२८
जरठ [जरठ] ओ० ५, ८. जी० ३२७४
जरा [जरा] ओ० ७४, १९५, १९५१८, २१.
रा० ७६०, ७६१
जल [जल] ओ० १, २३, ४६, ९८, १११ से ११३,
१२२, १३७, १३८, १५०. रा० १७४, ८११.
जी० ३१११८, ११९, २८६, ६४२, ६५३, ७५४,
७६२, ७६८, ७७०, ७७२
√जल [ज्वल्]—जलन्ति. रा० २८१, जी० ३१४४७

१. पुनरावर्तनेनातिपरिचितं कृत्वा (वृ०) ।

जलंत [ज्वलत्] ओ० २२, २७. रा० ७२३, ७७७,
७७८, ७८८, ८१३

जलकिड्डा [जलकीडा] रा० २७७. जी० ३।४४३

जलचर [जलचर] जी० ३।१२६।१, १६६

जलज [जलज] जी० ३।१७१

जलणपवेसि [ज्वलनप्रवेशिन्] ओ० ६०

जलपवेसि [जलप्रवेशिन्] ओ० ६०

जलमज्जण [जलमज्जन] रा० २७७.

जी० ३।४४३

जलय [जलज] ओ० १२. रा० ६, १२, २२.

जी० ३।२६०

जलयर [जलचर] ओ० १५६. जी० १।६८, ६६,
१०१, १०३, ११२, ११३, ११६ से ११९, १२१,
१२३, १२५; २।२२, ६९, ७२, ७६, ९६, १०४,
१०५, ११३, १२२, १३६, १३८, १४६, १४९;
३।१३७ से १४०, १४२, १४४

जलयरी [जलचरी] जी० २।३, ४, ५०, ५३, ६६,
७२, १४६, १४९

जलरथ [जलरजस्] ओ० १५०. रा० ८११

जलरह [जलरह] जी० १।६६

जलवासिन् [जलवासिन्] ओ० ६४

जलसमूह [जलसमूह] ओ० ४६

जलाभिसेय [जलामिषेक] ओ० ६४. रा० २७७

जलावगाह [जलावगाह] रा० २७७

जलिय [ज्वलित] जी० ३।५६०

जल्ल [दे०] ओ० १, २, ८६, ९२. जी० ३।५६८

जल्लपेच्छा [‘जल्ल’ प्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.

जी० ३।६१६

जल्लोसहिपत्त [जल्लोषधिप्राप्त] ओ० २४

जव [यव] ओ० १. जी० ३।५६७, ६२१, ७८८,
८३६

जवण [जवन] रा० १०, १२, ५६, २७६.

जी० ३।११८

जवमज्जा [यवमज्ज] जी० ३।७८८

जवमज्जा [यवमज्जा] ओ० २४

जवलिय [यवलित] जी० ३।२६८

जवाकुसुत्त [जपाकुसुम्] रा० ४५

जस [यजस्] ओ० ८६ से ९५, ११४, ११७,
१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७

जसंसि [यजसिन्] ओ० २५. रा० ६८६

जसोधरा [यशोधरा] जी० ३, ६६६

जह [यथा] ओ० ७४. जी० १।७२

जहयकम [यथाक्रम] रा० १७२

जहण [जघन] जी० ३।५६७

जहण [जघन्य] ओ० १८७, १८८, १९५.

जी० १।१६, ५२, ५६, ६५, ७४, ७६, ८२,
८६ से ८८, ९४, ९६, १०१, १०३, १११,
११२, ११६, ११९, १२१, १२३ से १२५,
१३०, १३३, १३५ से १४०, १४२; २।२० से
२२, २४ से ५०, ५३ से ६१, ६३, ६५ से
६७, ७३, ७६, ८२ से ८४, ८६ से ८८, ९०;
से ९३, ९७, १०७ से १११, ११३, ११४,
११६ से १३३, १३६; ३।८६, ८९, ९१,
१०७, १२०, १५६, १६१, १६२, १६५,
१७६, १७८, १८०, १८२, १८६ से १९०,
२१८, ६२६, ८४४, ८४७, ९६६, १०२१,
१०२७ से १०३६, १०८३, १०८४, १०८७,
१०८९, ११११, ११३१, ११३२, ११३८ से
११३७; ४।३, ४, ६ से ११, १६, १७; ५।५,
७, ८, १० से १६, २१ से २४, २८ से ३०;
६।२, ३, ६, ८ से ११; ७।३, ५, ६, १०,
१२ से १८; ८।२ से ४, २३ से २६, ३१, ३३,
३४, ३६, ४०, ४१, ४३, ४७, ४९, ५१, ५२,
५७ से ६०, ६८ से ७३, ७७, ७८, ८०, ८३,
८५, ८६, ९०, ९२, ९३, ९६, ९७, १०२, १०३,
१०५, १०६, ११४, ११५, ११७, ११८, १२३
से १२८, १३२, १३४, १३६, १३८, १४२,
१४४, १४६, १४९, १५०, १५२, १५३, १६०
से १६२, १६४, १६५, १७१ से १७३, १७६
से १७८, १८६ से १९१, १९३, १९४, १९८
से २००, २०२ से २०४, २०६, २०७, २१०

से २१२, २१४, २१६ से २१८, २२२, २२५,
 २२८, २२९, २३४, २३६, २३८, २४१ से
 २४४, २४६, २५७ से २६०, २६२, २६४,
 २६६, २७१, २७३, २७७ से २८२
जहृष्णजोगि [जघन्ययोगिन्] ओ० १८२
जहृष्णपद [जघन्यपद] जी० ३११६५ से १६७
जहा [यथा] ओ० ६६. रा० १०. जी० ११४
जहाणामत [यथानामक] जी० ३१६६०
जहाणामय [यथानामक] ओ० १५०, १६४, १८४.
 रा० १२, २४, २५, २७, २८, ३०, १५४,
 १७३, ३०३, ७३७, ७५५, ७५८ से ७६१,
 ७६५, ७७२, ७७४, ८११. जी० ३१८४, ११८,
 ११९, २१८, २८०, २८१, २८३ से २८५, ३०६,
 ३२७, ५७८, ६०१, ६७०, ८८३
जहानामय [यथानामक] रा० २६, २६, ३१, ४५,
 ६५, १२३, १७१, १७३. जी० ३१८५, ६५,
 २७७ से २७९, २८२, ६०२, ७५५, ८६०,
 ८६६, ८७२, ८७८, ९५८, ९५९, ९६१,
 १०७८, १०७९
जहाभणिय [यथाभणित] रा० ६६६
जहासंभव [यथासम्भव] जी० १११३६
जहि [यत्र] जी० ३११२७
जहिच्छित्त [यथेप्सित] जी० ३१११५
जहिच्छिय [यथेप्सित] जी० ३१५६८, ६०६
√जा [या] - जति. जी० ३१८३८१
जाह [जाति] ओ० २३, १६५, १६५।२१
जाइमंडवग [जातिमण्डपक] रा० १८४
जाइमंडवय [जातिमण्डपक] रा० १८५
जाइसंपण [जातिसम्पन्न] ओ० २५
जाइसरण [जातिसरण] ओ० १५६, १५७
जाइहिगुलय [जातिहिङ्गुलक] रा० २७
जाईमंडवग [जातिमण्डपक] जी० ३१२६६
जाईमंडवय [जातिमण्डपक] जी० ३१२६७
जाग [याग] ओ० २
√ जागर [जागृ] - जागरिस्संति. रा० ८०२
जागरिया [जागरिका] ओ० १४४. रा० ८०२,

८०३
जाण [यान] ओ० १, ७, ८, १०, १४, ५२, ५५, ५८,
 ५९, ६२, ७०, १००, १२३, १४१. रा० ६७१,
 ६७५, ६८७, ७६६. जी० ३१२७६, ५८१, ५८५,
 ६१७
√जाण [जा]—जाणइ. ओ० १६६. रा० ७७१.
 जी० ३११६८—जाणंति. रा० ६३. जी०
 ३११०७ जाणंती. - ओ० १६५।१२—जाणति,
 जी० ३१२००—जाणह. रा० ६३—जाणामि.
 रा० ७४६—जाणासि. रा० ७६७—जाणि-
 स्सामो. रा० ७२१—जाणिहिति. रा० ८१५
जाणमाण [जानान, जानत्] रा० ८१५
जाणय [ज्ञ] ओ० १६, २१, ५४. रा० ७४७
जाणविमाण [यानविमान] रा० १३, १७ से १९,
 २४, ३२, ४५ से ४६, ५६, ५७, १२०
जाणसाला [यानशाला] ओ० ५६
जाणसालिय [यानशालिक] ओ० ५८, ५९
जाणिसा [जात्वा] ओ० १४५. रा० ७६४
जाणु [जानु] ओ० १६, २१, ५४. रा० २५४, २६२.
 जी० ३१४१५, ४५७, ५६६, ५६७
जात [जात] रा० ११६, ८११
जातक्य [जातरूप] रा० ७६६. जी० ३१७, ३८७
जातक्यमय [जातरूपमय] जी० ३१२६४
जाता [जाता] जी० ३११०४०, १०४४
जाति [जाति] रा० ३०. जी० ३११६० से १६२,
 १६६ से १६९, १७१, १७४, २८३, २९७, ६६६
 ६६८
जातिगुम्म [जातिगुल्म] जी० ३१५८०
जातिपसन्ना [जातिप्रसन्ता] जी० ३१८६०
जातिमंडवग [जातिमण्डपक] जी० ३१८५७
जातिमंडवय [जातिमण्डपक] जी० ३१८५७
जातिसंपण [जातिसम्पन्न] रा० ६८६, ६८७,
 ६८९, ७३३
जातिहिगुलय [जातिहिङ्गुलक] जी० ३१२८०
जाय [जात] ओ० २७, १५०. रा० १४, ६६८,
 ७६०, ७६१, ८०२, ८११

जायकम्म [जातकर्मन्] ओ० १४४
जायकोउहल्ल [जातकौतूहल्ल] ओ० ८३
जायम [जातक] ओ० १४५. रा० ८०५
जायत्थाम [जातस्थामन्] रा० ८१३
जायरूप [जातरूप] ओ० १४, २७, १४१. रा० १०,
१२, १८, ६५, १३०, १६५, २२८, २७९, ६७१,
८१३. जी० ३१३००, ६७२
जायरूप [पाय] [जातरूपपात्र] ओ० १०५,
१२८
जायरूप [बंधण] [जातरूपबन्धन] ओ० १०६,
१२९
जायरूपमय [जातरूपमय] रा० १३०, १९०. जी०
३१३००
जायसंसय [जातसंशय] ओ० ८३
जायसङ्ग [जातश्रद्ध] ओ० ८३
जाया [जाता] जी० ३:२३५, २३९, २४१
जार [जार] रा० २४. जी० ३:२७७
जारापविभक्ति [जारकप्रविभक्ति] रा० ९४
जारिसय [यादृशक] रा० ७७२
जाल [जाल] ओ० १९, ६३, ६४. रा० १७, १८.
जी० ३:८४, ५९६
जालंतर [जालान्तर] रा० १३७. जी० ३:३०७
जालकडग [जालकटक] रा० १३४. जी० ३:३०४
जालकडय [जालकटक] जी० ३:२६२
जालघरग [जालगृहक] रा० १८२, १८३. जी०
३:२७५, २९४
जालपंजर [जालपञ्जर] रा० १३०. जी० ३:३००
जालवंद [जालवृन्द] जी० ३:५९४
जालहरथ [जालगृहक] ओ० ६
जाला [ज्वाला] जी० १:७८; २:९८; ३:८५,
११८, ११९, ५८९
जाव [यावत्] ओ० ६०. रा० १ जी० १:३४
जावइय [यावत्] जी० ३:१७६, १७८, १८०, १८२
जावं [यावत्] जी० ३:८४१
जावज्जीव [यावज्जीव] ओ० ११७, १२१, १३६,
१६१, १६३

जावतिय [यावत्] जी० ३:९७२, ९७३
जावथ [जापक] ओ० २१, ५४. रा० ८, २९२.
जी० ३:४५७
जासुअण [जपासुमनम्] रा० २७
जासुयण [जपासुमनस्] जी० ३:२८०, ५९०
जाहिया [जाहिका] जी० २:९
जाहे [यदा] रा० ७७४. जी० ३:८४३
जिइंविद्य [जितेन्द्रिय] ओ० २५, ४६, १६४
जिण [जित] ओ० १९, २१, २६, ५१, ५२, ५४, १७२.
रा० ८, १६, २२५, २५४, २९२, ७७१, ८१५,
८१७. जी० १:११; ३:३८४, ४१५, ४४२, ४५७,
८३८, १, ८९६, ९१७
√जिण [जि]—जिणाहि. ओ० ६८. रा० २८२.
जी० ३:४४८
जिणपडिमा [जिनप्रतिमा] रा० २२५, २५४ से
२५८, २७३, २९१, ३०६ से ३०९, ३१७ से
३२०, ३४४ से ३४७. जी० ३:३८४, ४१५ से
४१९, ४४२. ४५७, ४७१ से ४७४, ४८२ से
४८५, ५०९ से ५१२, ६७६, ८९६, ९०८
जिणमय [जिनमत] जी० १:११
जिणवर [जिनवर] ओ० ४६. रा० २९२. जी०
३:४५७
जिणसकहा [दे० जिण 'सकहा'] रा० २४०, २७६,
३५१. जी० ३:४०२, ४४२, ५१६, १०२५
जिणिव [जिनेन्द्र] रा० ४७
जित [जित] जी० ३:४४८
जितिविद्य [जितेन्द्रिय] रा० ६८६
जिठभच्छिणम [जिह्वाच्छिन्तक] ओ० ९०
जिठिभंविद्य [जिह्वेन्द्रिय] ओ० ३७
जिमिय [त्रिमित] रा० ६८५, ७६५, ८०२
जिय [जित] ओ० ६८. रा० २८२, ६८६. जी०
३:४४८
जियकोह [जितक्रोध] ओ० २५. रा० ६८६
जियणिह [जितनिद्र] ओ० २५. रा० ६८६
जियपरीसह [जितपरीषह] ओ० २५. रा०
६८६

जियमय [जितमय] रा० ८१७
 जियमाण [जितमान] ओ० २५. रा० ६८६
 जियमाय [जितमाय] ओ० २५. रा० ६८६
 जियलोभ [जितलोभ] ओ० २५
 जियलोह [जितलोह] रा० ६८६
 जियसत्तु [जितसत्तु] रा० ६७६, ६८०, ६८३ से
 ६८५, ६८८ से ७००, ७०२
 जीमूत [जीमूत] जी० ३१२७८
 जीमूतय [जीमूतक] रा० २५
 जीय [जीत] ओ० ५२. रा० ११, १६, ५६, ६८, ७,
 ६८६
 जीव [जीव] ओ० २७, ७१ से ७३, ७४, ५, ८४
 से ८६, १२०, १३७, १३८, १६२, १८५ से १८८.
 रा० ६६८, ७१६, ७४८ से ७६४, ७६८, ७७०
 से ७७३, ७८६, ८१३, ८१५. जी० ११०, ११,
 १५ से ३३, ५१ से ५४, ५६, ५६ से ६२, ६४,
 ७४, ७६, ८२, ८५ से ८७, ९०, ९३ से ९६, १०१,
 ११६, १२८, १३० से १३४, १४३, २११, १५१;
 ३११, ५३, ५४, ८७, ११८, १२६, १२७, १२७, १२,
 ५, १२६, ५, ६, १५० से १६०, १८३, १६२, २१०,
 २११, ५७५, ५७६, ७१६, ७२०, ७२४, ७२७,
 ७८७, ८०६, ८१८, ८२८, ८५३, ८५६, ८८०,
 ९४६, ९७४, ९७५, १०८१, ११२८, ११३०,
 ११३८; ४११, २५; ५११, ६०; ६११, १२; ७११,
 २३; ८११, ५; ९११, ७ से ९, १५, १८, २१, २२,
 २८ से ३०, ३६, ३८, ५६, ६२, ६३, ६६, ६७,
 ७५, ८८, ९५, १०१, १०६, ११२, ११३, १२१,
 १३१, १४१, १४७, १४८, १५६, १५८, १५६,
 १६७, १७०, १८१, १८२, १८५, १९६, १९७,
 २०८, २०९, २२०, २२१, २३२, २५५, २५६,
 २६७, २६३
 जीवजीवग [जीवजीवक] ओ० ६. जी० ३१२७५
 जीवत [जीवत्] रा० ७५४, ७६२, ७६३
 जीवतग [जीवत्क] रा० ७६२
 जीवघण [जीवघन] ओ० १८३, १८४, १९५, १११
 जीवदय [जीवदय] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८

जीवपरसिय [जीवप्रदेशिक] ओ० १६०
 जीवा [जीवा] रा० ७५६. जी० ३, ५७७, ६३१
 जीवाजीवाभिगम [जीवाजीवाभिगम] जी १: १, २
 जीवाभिगम [जीवाभिगम] जी० ११२, ६ से १०;
 ६१७, ८, २६३
 जीविय [जीवित] ओ० २३, २५. रा० ६८६, ७५०
 से ७५३, ७५६, ७६२, ७६७
 जीविया [जीविका] ओ० १४७. रा० ७१४, ७७६,
 ८०६
 जीवोवलंभ [जीवोपलम्भ] रा० ७६८
 जीहा [जिह्वा] ओ० १६, ४७. रा० २५४. जी०
 ३, ४१५, ५६६, ५६७
 जुह [द्युति] ओ० ४७, ७२, ८६ से ९५, ११४,
 ११७, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७.
 रा० १३, ६५७
 ५/जुंज [युज्]—जुंजइ. ओ० १७५
 जुंजमाण [युज्जान] ओ० १७६, १७८ से १८०
 जुग [युग] ओ० १६. जी० ३, ५६६, ८४१
 जुगल [युगल] रा० २३. जी० ३, ५६७
 जुगव [युगवत्] ओ० १८२
 जुगव [युगवत्] रा० १२, ७५८, ७५६.
 जी० ३, ११८, ११६
 जुगय [युगय] ओ० १, ७, ८, १०, १००, १२३.
 जी० ३, २७६, ५८१, ५८५, ६१७
 जुज्जसज्ज [युज्जसज्ज] रा० १७३, ६८१
 जुण्ण [जीण] रा० ७६०, ७६१, ७८२
 जुण्णय [जीणक] रा० ७६१
 जुत्ति [द्युति] रा० १३, १२१, ६५७. जी० ३, ४४६,
 ४५७
 जुत्त [युक्त] ओ० १५, १६, २३, ५५, ५७, ५८, ६२,
 ७०, ७१. रा० १७, १८, २०, ३२, ६१, ७०,
 १२६, २८५, २८२, ६६४, ६७२, ६८१, ६८२,
 ६९०, ६९१, ७०६, ७१४, ७२४, ८०६, ८१०.
 जी० ३, २८८, ३००, ३७२, ४५१, ४५७, ५६२,
 ५८६, ५९२, ५९६, ५९७, ८३८, ८३९
 जुत्तपालित [युक्तपालिक] जी० ३, ५६२

जुत्तपालिय [युक्तपालिक] रा० ६६४
 जुत्तय [युक्तक] रा० ७७६
 जुत्तामेव [युक्तमेव] रा० ७०६
 जुत्ति [युक्ति] ओ० ६७
 जुद्ध [युद्ध] ओ० १४६. रा० ८०६.
 जी० ३१६३१
 जुद्धजुद्ध [युद्धयुद्ध] रा० ८०६
 जुद्धसज्ज [युद्धसज्ज] ओ० ५७,६४. रा० ६८२,
 ६६१. जी० ३१२८५
 जुद्धाइनजुद्ध [युद्धातिपुद्ध] ओ० १४६
 जुम्ह [जुम्हत्] रा० ६
 जुगल [युगल] ओ० १२,५७. रा० १२,१७,१८,
 २०,३२,१२६,१३३,२८५,२६१,७५८,७५६.
 जी० ३१११८,२८८,२६१,३००,३०३,३७२,
 ४५१,४५३,५६७
 जुयलग [युगलक] जी० ३१६३०
 जुवइ [युवति] ओ० १
 जुवराय [युवराज] रा० ६७४. जी० ३१६०६
 जुधलिय [युधलित] ओ० ५,८,१०. रा० १४५.
 जी० ३१२६८,२७४
 जुवाण [युवन्] रा० १२,७५८,७५६. जी० ३१११८
 जुय [युत] ओ० १४६. रा० ८०६
 जुयय [यूपक] जी० ३१७२३
 जुया [यूका] जी० ३१७८६
 जुय [यूप] जी० ३१५६७
 जुयय [यूपक] जी० ३१६२६
 जुवा [यूका] जी० ३१६२४
 जुहिया [यूथिका] रा० ३०. जी० ३१२८३
 जुहियागुम्म [यूथिकामुम्म] जी० ३१५८०
 जुहियामंडवग [यूथिकामण्डवक] रा० १८४.
 जी० ३२६६
 जुहियामंडवय [यूथिकामण्डवक] रा० १८५
 जेट्टु [ज्येष्ठ] ओ० ८२. रा० ६७३,६७५
 जेट्टामूल [जंठामूल] ओ० ११५
 जेणामेव [यत्रैव] रा० ७५४. जी० ३१४४३
 जोइ [ज्योतिस्] रा० ७५७,७६५,७७२

जोइभायण [ज्योतिर्भाजन] रा० ७६५
 जोइस [ज्योतिस्, ज्योतिष] ओ० ५०. रा० ५६.
 जी० ३१८३८२
 जोइसामयण [ज्योतिषायण] ओ० ६७
 जोइसिणी [ज्योतिषी] जी० २१७१,७२,१४८
 जोइसिय [ज्योतिष्क, ज्योतिषिक] ओ० ५०,६४.
 रा० ११. जी० ११३५; २११५,१८,३६ से
 ४४,७१ ७२,६६; ३१२३०,८३८२१,६१७
 जोईरस [ज्योतीरस] रा० १०,१२,१८,६५,१६५,
 २७६
 जोईरसमय [ज्योतीरसमय] रा० १३०,१६०
 जोएत्ता [योजयित्वा] ओ० ५६
 जोग [योग] ओ० ११७. रा० ८१५. जी० ११३४,
 ६६,१०१,११६,१२८,१३६; ३११२७,१६०,
 ७०३,७२२,८०६,८२०,८३०,८३४,८३७,
 ८३८ १०,३२
 जोगनिरौह [योगनिरौध] ओ० १८२
 जोगपडिसंलीणया [योगप्रतिसंलीणता] ओ० ३६
 जोगि [योगिन्] ओ० ६६
 जोग्ग [योग्य] ओ० ६३. रा० ६,१२,४७
 जोणि [योनि] ओ० १६५
 जोणिप्पमुह [योनिप्रमुख] जी० ११५८,७३,७८,
 ८१
 जोणिया [योनिका] ओ० ७०. रा० ८०४
 जोणिसंगह [योनिसंग्रह] जी० ३११४७
 जोणिसूल [योनिमूल] जी० ३१६२८
 जोणीपमुह [योनिप्रमुख] जी० ३११६० से १६२,
 १६६ से १६६, १७१, १७४, ६६६, ६६८
 जोणीसंगह [योनिसङ्ग्रह] जी० ३११६०, १६१,
 १६३
 जोण्ह [ज्योत्स्न] जी० ३१८३८१६, २०
 जोति [ज्योतिस्] रा० ७६५
 जोतिभायण [ज्योतिर्भाजन] रा० ७६५
 जोतिरस [ज्योतीरस] जी० ३१७
 जोतिरसमय [ज्योतीरसमय] जी० ३१२६४, ३००
 जोतिस [ज्योतिस्, ज्योतिष] जी० ३१८५८,८६१,

८६४, ८६७, ८७०, ८७४, ८७२, ८५२,
१००१, १००२, १००६

जोतिसराय [ज्योतीराज] जी० ३।२५७, २५८,
१०२३ से १०२६

जोतिसविषय [ज्योतिविषय] जी० ३।१००६

जोतिसिद्ध [ज्योतिरिन्द्र, ज्योतिषेन्द्र] जी० ३।२५७,
२५८, १०२३ से १०२६

जोतिसिणी [ज्योतिषी] जी० २।१४६

जोतिसिध [ज्योतिष्क, ज्योतिषिक] जी० २।१४५,
१६, १४८, १४९; ३।२५७, ५६०, ७६३,
१०२५

जोय [योग] ओ० ६४. रा० ५१, ७६६.

जी० ३।७०३; ६।६६

√**जोय** [योग्य]—जोइंसु. जी० ३।७०३—

जोइंसति. जी० ३।७०३—जोएइ. ओ० ५६—

जोएंसति. जी० ३।७०३—जोयंति. ३।७०३

जोयण [योजन] ओ० ७१, १७०, १६२, १६५.

रा० ६, १०, १२, १४, १७, १८, ३६, ५२,
५६, ६१, ६५, १२४, १२६ से १२९, १३७,

१७०, १८६, १८८, १८९, २०१, २०४ से
२१२, २१८, २२१, २२२, २२४, २२६,

२२७, २३०, २३१, २३३, २३८ से २४०,
२४२, २४४, २४६, २४७, २५१ से २५३,

२६१, २६२, २६७, २७२, २७६, ७२७, ७५३.
जी० १।७४, ८६. १०१, १११, ११६, १२३,

१३५; ३।५, १४ से २१, २५ से २७, ३३ से
३६, ३६ से ४३, ४७, ६० से ७२, ७७, ८०

से ८२, ८६, १२६।७, २१७, २१९ से २२७,
२३२, २५७, २६० से २६३, २७३, २६८,

३००, ३०७, ३१०, ३५१, ३५२, ३५४,
३५५, ३५८, ३५९, ३६१, ३६२, ३६४,

३६५, ३६८ से ३७४, ३७६, ३७७, ३८०,
३८१, ३८३, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८,

३८९, ४०० से ४०२, ४०४, ४०६, ४०८,
४१२ से ४१४, ४२२, ४२५, ४२७, ४३७,

४४५, ५६६, ५६८ से ५७०, ५७७, ६३२,

६३४, ६३८, ६३९, ६४२, ६४४, ६५३, ६५६,
६६०, ६६१, ६६३, ६६६, ६६८, ६७१, ६७८,

६७९, ६८२, ६८३, ६८६ से ६८९, ७०६,
७१०, ७१४, ७२३ से ७२८, ७३२, ७३६,

७३७, ७३९ से ७४२, ७४५, ७५०, ७५४,
७५६, ७५८, ७६१, ७६२, ७६४ से ७७६,

७८८ से ७९२, ७९४, ७९५, ७९८, ८०२,
८१२, ८१४, ८१५, ८२३, ८२७, ८३२,

८३५, ८३८।७, ८३९, ८४२, ८४५,
८५०, ८५२, ८८२, ८८४, ८८५, ८८७,

८८८, ८९१, ८९३ से ८९५, ८९७ से ९०१,
९०६, ९०७, ९१०, ९११, ९१८, ९४०, ९४४,

९६६ से ९७१, १००१ से १००६, १०१० से
१०१२, १०३८, १०६५ से १०७०, १०७३,

१०७४, १०८७, १०८८

जोयणय [योजनक] जी० ३।२२६, ६६३

जोयणिय [योजनिक] ओ० १६२

जोवण [यौवन] ओ० ४७. रा० ६६, ७०.

जा० ३।५६७

जोवणय [यौवनक] रा० ८०६, ८१०

जोह [योध] ओ० २३, ५२, ५५ से ५७, ६२, ६५.

रा० १७३, ६८१, ६८७, ६८८. जी० ३।२८५

ज्ञ

ज्ञा [ज्ञज्ञा] रा० ७७

ज्ञावाय [ज्ञज्ञावात] जी० १।८१

ज्ञा [दे०] रा० ७८२

ज्ञय [ध्वज] ओ० २, १२, ५५, ५७, ६५. रा० २२,

१६७, १७३, १७८, २०२, २०४ से २०८,
२१४, २२०, २२३, २२६, २३२, २३४,

२४१, २४८, २५०, २५८, २५९, २६१, २७६,
२८१, ६८१, ७१५. जी० ३।२८५, २९०,

३४८, ३५६, ३६७ से ३७१, ३७५, ३७६,
३८२, ३९१, ३९४, ४०३, ४१२, ४१६, ४२०,

४२४, ४३०, ४३३, ४३६, ४४५, ४४७, ५८६,
५९७, ६०४

ज्ञल्लरी [ज्ञल्लरी] ओ० ६७. रा० १३,७७,६५७.

जी० ३२८ से ३२, ७८, ४४६, ६१८

ज्ञस [ज्ञष] ओ० १६. जी० ३५६६

ज्ञाण [ध्यान] ओ० ३८, ४३, ४६

ज्ञानकोट्टोवगय [छ्यानकोट्टोवगत] ओ० ४५, ८२

ज्ञाम [दग्ध] जी० ३१६६

√ज्ञाम [दह्] ज्ञामिज्जइ रा० ७६७

√ज्ञिया [ध्ये]—ज्ञियाइ रा० ७६५—ज्ञियामि

रा० ७६५—भियायलि रा० ७६५

ज्ञियायमाण [ध्यायत्] रा० ७६५

ज्ञीण [क्षीण] ओ० ११६, ११७. रा० ७७४

ज्ञीणोदग [क्षीणोदक] आ० ११७

ज्ञूसिय [शुषित] जी० ३११८, ११६

ज्ञूसिर [शुषिर] जी० ३१८०, ६६, ४४७, ५८८

ज्ञूसणा [जूषणा] ओ० ७७

ज्ञूसित्ता [जुषत्ता] आ० १४०

ज्ञूसिय [जुष्ट, शुषित] ओ० ११७

ट

टकारवग [टकारवर्ग] रा० ६७

(ठ)

√ठव [स्थापय्]—ठवेइ रा० ६८१—ठवेई

रा० ५६—ठवेति ओ० ५२. रा० ६८७

—ठवेति ओ० ६६. रा० ६८३

ठवित्ता [स्थापयित्त्वा] रा० ७६१

ठविय [स्थापित] ओ० १३४

ठवेत्ता [स्थापयित्त्वा] ओ० ५२. रा० ५६

ठाण [स्थान] ओ० १६, २१, ४०, ५४, ७३, ६५,

११७, १५५, १५६. रा० ८, ७६, १७३, २६२,

६७५, ७१४, ७१६, ७५१, ७५३, ७७१, ७६६.

जी० ११२४; ३२८५, ४५७, ८४३, ८४५,

८४६

ठाणट्टिय [स्थानस्थितिक] ओ० ३६

ठाणधर [स्थानधर] ओ० ४५

ठाणपद [स्थानपद] जी० ३२३३, २३४, २४८,

२५० से २५२, २५७, १०४५

ठाणपथ [स्थानपद] जी० ३१०४८, १०५६

ठाणप्य [स्थानपद] जी० ३१७७

ठाणमगण [स्थानमार्गण] जी० ११३४, ३६, ३६

ठिइ [स्थिति] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७, १४०,

१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७, १७१. रा०

६६५, ६६६. जी० १११४, ५२, ५६, ६०; २११५१;

३१२७५, १२६५, १६०, ६३१, १०४२

ठिइवस्य [स्थितिक्षय] ओ० १४१ रा० ७६६

ठिइय [स्थितिक] ओ० ७०. जी० ११३३

ठिइवडिया [स्थितिपतिता] ओ० १४४

ठिईय [स्थितिक] जी० ३१७२१

ठिच्चा [स्थित्वा] रा० ७३६

ठित [स्थित] जी० ३३०३, ८४५

ठिति [स्थिति] रा० ७६८, ८१५. जी० ११६५,

७४, ८२, ८७, ८८, ६६, १०३, १११, ११२, ११६,

११६, १२०, १२३ से १२५, १२८, १३३, १३६

से १३८; २१२० से २४, २६ से ३०, ३२ से

३६, ३६, ४६, ७६ से ८१, ८५, १०७ से १०६,

१११ से ११४, ११६, ११८, १५०; ३१२२०,

१५६, १६२, १६५, १८६, १६२, २१८, २३८,

२४३, २४७, २५०, २५६, २५८, ५६४, ५६५,

६२६, १०२७, १०४२, १०४४, १०४६, १०४७,

१०४६, १०५०, १०५२, १०५३, १०५५, ११२६,

११३१; ४१३, ५, ६; ५१५, ७, २१, २८; ६१२, ५,

७; ७१२, ८; ८१२; ६१२

ठितिपद [स्थितिपद] जी० ३११६२

ठितिडिया [स्थितिपतिता] रा० ८०२, ८०३

ठितीय [स्थितिक] रा० १८६. जी० ३१३५०,

३५६, ६३७, ६५६, ७००, ७२४, ७२७, ७३८,

७६०, ७६३, ७६५, ८०८, ८१६, ८२६, ८४२,

८४५, ८५४, ८५७, ८६३, ८६६, ८६६, ८७२,

८७५, ८७८, ८८५, ६२३, ६२५

ठिय [स्थित] ओ० ४०. रा० १७, १८, १३०, १३३,

७०३. जी० ३१३००

ठियलेस [स्थितलक्ष्य] ओ० ५०

(ड)

डंड [दण्ड] रा० ७५१

डण्डांत [दण्डमान] जी० ३१४४७

डमर [डमर] ओ० १४. रा० ६७१.

जी० ३१६२७

डमरकर [डमरकर] ओ० ६४

डिडिम [डिण्डिम] रा० ७७. जी० ३१५८८

डिडि [डिडि] ओ० १४. रा० ६७१. जी० ३१६२७

(ढ)

ढंक [दे० ढङ्क] जी० १११५

ढिकुण [दे०] जी० ३१६२४

(ण)

ण [न] ओ० ४७. रा० ९. जी० ११८२

णउत [नयुत] जी० ३१८४१

णउत [नवति] जी० ३११००३

णउति [नवति] जी० ३११००४

णउय [नवति] जी० ३१२५७

णउल [नकुल] जी० ११११२

णउली [नकुली] जी० २१६

णं [दे०] ओ० १. रा० २. जी० १११०

णंगुलिय [लाङ्गूलिक] जी० ३१२१६

णंगुलियदीव [लाङ्गूलिकद्वीप] जी० ३१२२४

णंगोलिय [लाङ्गूलिक] जी० ३१२२०

णंगोलियदीव [लाङ्गूलिकद्वीप] जी० ३१२२०

णंदणवण [नन्दनवन] रा० २७६. जी० ३१४४५

णंदा [नन्दक] ओ० ६८

णंदा [नन्दा] रा० २३४, २८८, ३१३, ३७६, ४३५,

४६६, ५५६, ६१६. जी० ३१३६५. ३६६, ४१२,

४२५, ४३८, ४५४, ४७७, ४७८, ५१५, ५२३,

५२६, ५३७, ५४४, ५५१, ५५६, ६८३, ६८५,

६८६, ६८८, ६०१, ६१०, ६१४ से ६१६, ६१६

णंदिघोष [नन्दिघोष] ओ० ६४. रा० १३५.

जी० ३१२८५, ३०५

णंदिजणण [नन्दिजनन] रा० ७५०

णंदियावत्त [नन्द्यावर्त] ओ० ५१, ६४. रा० २१,

४६. जी० ३१२८६, ५६४

णंदिवरुक्ख [नन्दिरुक्ख] ओ० ९, १०. जी० ३१५८३

णंदिवद्धणा [नन्दिवद्धना] जी० ३१६१४

णंदिसेणा [नन्दिसेणा] जी० ३१६१०

णंदिस्सर [नन्दिस्वर] रा० १३५. जी० ३१३०५

णंदिस्सर [नन्दीश्वर] जी० ३१६४८, ६४६

णंदिस्सरवर [नन्दीश्वरवर] जी० ३१८८० से

८८२, ६१८, ६२५

णंदिस्सरोद [नन्दीश्वरोद] जी० ३१६२५, ६२७

णंदी [नन्दी] जी० ३१७७५

णंदीमुह [नन्दीमुख] ओ० ६

णंदुत्तरा [नन्दोत्तरा] जी० ३१६१४, ६१६

णक्ख [नख] ओ० १६. जी० ४१५, ५६६

णक्खत्त [नक्षत्र] ओ० ५०, १४५, १६२.

रा० ८०५. जी० ३१७७५, ८०६, ८२०, ८३०,

८३४, ८३७, ८४१, ८४२, ८४५, ८३७, १०००,

१००७, १०२०, १०२१, १०३७, १०३८

णक्खत्तविमाण [नक्षत्रविमान] जी० २१४३,

३११०१३, १०१८, १०३३

णख [नख] जी० ३१५१७

णगर [नगर] ओ० ४६. जी० ३१६०६

णगरमुत्तिथ [नगरमुत्तिक] रा० ७५४, ७५६,

७६२, ७६४

णगरमाण [नगरमान] रा० ८०६

णगररोग [नगररोग] जी० ३१६२८

णगरी [नगरी] ओ० २०, ५३. रा० ६७१, ६८६,

६६२, ७००, ७०२, ७०६, ७०८, ७१३, ७१६,

७५०

णगगभाव [नगनभाव] रा० ८१६

णग्गोह [न्यग्रोह] जी० ११७२

णग्गोहपरिमंडल [न्यग्रोहपरिमण्डल]

जी० १११६

१. नन्दति—समूहो भवतीति नन्दसुस्थामन्व-
णमिदम्, इह च दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् (वृ) ।

णञ्चत [नृत्यत्] ओ० ६४
 णञ्चण [नर्तन] ओ० ४६
 णट्ट [नाट्य] ओ० १४६, १४८, १४९.
 जी० ३१६३१, १०२५
 णट्टय [नाट्यक] ओ० १, २
 णट्टयेच्छा [नाट्यकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५
 णट्टयेच्छा [नाट्यप्रेक्षा] जी० ३१६१६
 णट्टमाल [नृत्यमाल] जी० ३१५८२
 णट्टविधि [नाट्यविधि] जी० ३१४४७
 णट्टविहि [नाट्यविधि] रा० ७३, ८१ से ९५, १००
 से १११, ११३, ११६, २८१. जी० ३१४४७
 णट्टसज्ज [नाट्यसज्ज] रा० ७६, १७३
 णट्टसाला [नाट्यशाला] रा० ७८१, ७८३, ७८६,
 ७८७
 णट्टाणिय [नाट्यानीक] रा० ४७, ५६
 णट्ट [नष्ट] रा० ९, १२. जी० ३१४४७
 णट्टयेच्छा [नष्टप्रेक्षा] जी० ३१६१६
 णत्तुय [नप्तृक] रा० ७५० से ७५३
 णत्थिभाव [नास्तिभाव] ओ० ७१
 णदिमह [नदीमह] जी० ३१६१५
 णपुंसग [नपुंसक] जी० ११२८, २११; ३११८, १४९, १६४
 णपुंसगवेय [नपुंसकवेद] जी० ११२५, १०१
 णपुंसगवेयग [नपुंसकवेदक] जी० ११८६
 णम [नम्]—णमेइ. जी० ३१४५७
 णमंस [नमस्य]—णमंसइ. ओ० २१—णमंसति.
 ओ० ४७. रा० ६८७. जी० ३१४५७
 —णमंसति. रा० ८—णमंसह. रा० ९
 —णमंसामो. ओ० ५२. रा० १०
 —णमंसेज्जा. रा० ७७६
 णमंसण [नमस्यन] ओ० ५२
 णमंसमाण [नमस्यत्] ओ० ४७, ५२, ६९, ८३.
 रा० ६०, ६८७, ६९२, ७१६
 णमंसित्तए [नमस्मित्तुम्] ओ० १३९
 णमंसित्ता [नमस्मित्त्वा] ओ० २१. रा० ८
 जी० ३१४५७

णमिय [नमित] जी० ३१३८७, ५९७
 णमेत्ता [नमयित्त्वा] जी० ३१४५७
 णमो [नमस्] ओ० २१. रा० ८१७.
 जी० ३१४५७
 णय [नत] रा० २४५, ६६४. जी० ३१४०७, ५६२
 णयण [नयन] ओ० १९, २१, ४७, ५४. रा० ८.
 ७१४. जी० ३१३८७, ५९७
 णयणकीयरासि [नयनकीकाराशि] ओ० १३
 णयणुप्पाडियग [उत्पाटितकनयन] ओ० ९०
 णयर [नगर] ओ० २८, २९, ६८, ८९ से ९३, ९५,
 ९६, ११५, ११८, ११९, १५५, १५८ से १६१,
 १६३, १६८
 णयरगुत्तिय [नगरगुप्तिक] ओ० ६०, ६१
 णयरी [नगरी] ओ० २, १४, २० से २२, ५२, ५५,
 ६० से ६२, ६७, ६८, ७०. रा० १०, १३, ६८७
 से ६८९, ७००, ७०३, ७५०, ७५३
 णर [नर] ओ० १३, ४६. रा० १२९, १७३, ६८१,
 ७५३. जी० ३१२८५, २८८, ३११, ३१८, ३७२
 णरक [नरक] जी० ३१७८ से ८१, ८४
 णरकठक [नरकठक] जी० ३१३५५, ३
 णरय [नरक] ओ० ७४१, ३. जी० ३११२, ७७,
 ८५ से ८७, १२७
 णरपवर [नरप्रवर] ओ० १४
 णरय [नरक] ओ० ७४. जी० ३१७७, ८५, ११७
 से ११९
 णरवइ [नरपति] ओ० १, २३, ६३, ६५
 णरवसभ [नरवृषभ] ओ० ६५
 णरसीह [नरसिंह] ओ० ६५
 णरिंद [नरेन्द्र] ओ० ६५
 णलागणि [नलाग्नि] जी० ३१११८
 णलिण [नलिन] रा० २३, १९७, २७९, २८८.
 जी० ३१११८, ११९, २५९, २८६, २९१, ८४१
 णलिणी [नलिनी] ओ० १. रा० ७७७, ७७८,
 ७८८
 णव [नवन्] ओ० १४३. रा० ८०१.
 जी० १११०

णव [नव] ओ० १,५,८,७१. रा० ६१.
 जी० ३,२७४,५६७
 णवंग [नवाङ्ग] रा० ८०६,८१०
 णवणवमिया [नवनवकिका] ओ० २४
 णवणीइयागुम्म [नवनीतिकागुम्म] जी० ३५८०
 णवणीत [नवनीत] जी० २८४,२६७
 णवणीय [नवनीत] ओ० १३,६२,६३. रा० ३१,
 ३७,१८५,२४५. जी० ३,४०७
 णवणीय [नवनीत] जी० ३३११
 णवतय [नवत्वक्] रा० ३७
 णवमिया [नवमिका] जी० ३१६२१
 णवय [नवक] रा० ७५६,७६१
 णवरं [दे०] जी० १५६
 णवरि [दे०] जी० १६६
 णवविष [नवविष] जी० ८११,५; ६१२२१,२३२
 णह [नख] ओ० ६२. रा० ८,१०,१२,१४,१८,
 ४६,७२,७४,११८,१५०,२७६,६५५,६८१,
 ६८३,६८६,७०७,७०८,७१३,७१४,७२३.
 जी० ३५६७
 णह [ज्ञाति] ओ० १५०. रा० ७५१,७७४,८०२,
 ८११
 णइय [नादित] ओ० ६,६७. रा० १३,५६,५८.
 जी० ३१२७५,२८६,४५७,५५७
 णऊण [ज्ञात्वा] ओ० २३
 णग [नाग] ओ० ६६,१२०,१६२. रा० ६६८,
 ७५२,७७१,७८६. जी० ३३३५,५६६,७३३,
 ८८५,६४४,६४५,६४७
 णगमह [नागमह] जी० ३३२८
 णगदंत [नागदन्त] रा० १३२,२४०.
 जी० ३३०२,३१७,४०२
 णगदंतग [नागदन्तक] जी० ३३०२,३१७,३२६,
 ३६७
 णगदंतय [नागदन्तक] रा० १३२,१५३,२३५,
 २३६. जी० ३३०२,३२६,३५५
 णगदीव [नागद्वीप] जी० ३६४४,६४५

णगहार [नागद्वार] जी० ३३८५
 णगघर [नागघर] ओ० ६६
 णगपइ [नागपति] ओ० ४८
 णगफड [नागफटा] ओ० ४८
 णगमह [नागमह] जी० ३३६५
 णगराय [नागराज] जी० ३३७३४ से ७३६,
 ७४०,७४२,७४५,७४८ से ७५०,७८१,७८२
 णगरुक्ख [नागरुक्ख] जी० १३७१
 णगलया [नागलता] ओ० ११. जी० ३३८४
 णगलयामंडवण [नागलतामण्डपक] रा० १८४.
 जी० ३३२६६
 णगलयामंडवय [नागलतामण्डपक] रा० १८५
 णाडग [नाटक] रा० ६८५
 णाण [ज्ञान] ओ० ४६,५४,१५३,१६५,१६६,
 १८३,१८८,१९५,१९९. रा० २६२,६८६,७३३,
 ७३६,७४६,७७१,८१४. जी० ३३१५२,४५७,
 ६१७
 णाणत्त [नाणात्त] जी० १११६; ३३६१,१६५,
 २१८
 णाणविणय [ज्ञानविणय] ओ० ४०
 णाणसंपण [ज्ञानसम्पन्न] ओ० २५
 णाणा [नाणा] ओ० ५०,६३,७०. रा० १६,२०,
 ३२,३७,४०,१३०,१३३,१३५,१३६,१३८,
 १७५,१६०,२४५,८०४. जी० ३३७८,२६४,
 २६५.२८६ से २८८,३००,३०२,३०५,
 ३०६,३११,३२२,३७२,४३५,६५४,१०७१,
 १०६१
 णाणावरणिज्ज [ज्ञानावरणीय] ओ० ४४
 णाणाविह [नाणाविध] ओ० ६ से ८,१०,४६,५५,
 १०७,१३०. रा० २४,३२,१२८,१३३,१५१,
 १५२,१७१,२८१. जी० ३३२७५,२७७,३०३,
 ३२४,३२५,३५३,४४७
 णाणि [जानित्] जी० ११८७,६६,११६,१३३,
 १३६; ३१०४,१५२,११०७,११०८; ६३०,
 ३१,३३,३५
 णातिय [नादित] रा० २६१

णाभि [नाभि] ओ० १६. जी० ३।४१५, ५६६, ५६७
 णाम [नामन्] ओ० १४, १५, २०, ४४, ५२, ५३, ८२, १४४, १७१, १६२, १६५।१६. रा० ११, १७, १८, ७६, ८१, ८३ से ६५, १०० से १११, ११३, २८१, ६६६ से ६७२, ६७५, ६८७, ७१३, ७५१, ८०२. जी० १।१; ३।३, ४, १२८, २१७, २१६ से २३३, २२५, २२७, २६०, ३००, ३५०, ३५१, ४०१, ५६६, ५६८, ५६९, ५७७, ५८२, ५८६ से ५६२, ५६५, ६३२ ६३८, ६३९, ७००, ७०१, ७०४, ७०८, ७१०, ७११, ७३६, ७४०, ७४२, ७४५, ७५०, ७५४, ७६१, ७६२, ७६५, ७६६, ७६८ से ७७०, ७७२, ७७५ से ७७८, ७६५, ७६६, ८००, ८१०, ८१४, ८२१, ८२५, ८२६, ८४८, ८५६, ८५६, ८६२, ८६५, ८६८, ८७१, ८७४, ८७७, ८८०, ८२५, ८२७ से ८३२ ८३८ से ८४१, ८४३, ८४४, ८७२, १०३६, ११२०
 णाम्क [नामाङ्क] ओ० ५०
 णामधेय [नामधेय] ओ० १६, २१, ५१, ५४, १४४, १६३. जी० ३।३५०, ६६६, ७०२, ७६०, ८३६
 णामधेय [नामधेय] ओ० ११७. रा० २६२. जी० ३।४५७
 णाम्य [नामक] रा० ६६७. जी० ३।७७५
 णाय [ज्ञात] ओ० २. रा० ६८८
 णाय [ज्ञात, नाम] ओ० २३
 णायव्य [ज्ञातव्य] रा० १७२
 णाराय [नाराच] जी० ३।११०
 णारी [नारी] जी० ३।२८५
 णालबद्ध [नालबद्ध] जी० ३।१७४
 णालिपरिवण [नालिकेरीवन] जी० ३।५८१
 णालियाखेडु [नालिकाखेल] ओ० १४६. रा० ८०६
 णासा [नासा] ओ० १६, ४७. जी० ३।५६६, ५६७
 णासिया [नासिका] जी० ३।४१५

णिउण [निपुण] ओ० १५, ४६, ६३. रा० १२, १७, १८, ७५८, ७५९, ८०६, ८१०. जी० ३।११६, ५८८, ५६२, ५६७
 णिओग [निगोद] जी० ५।३३
 णिओत [निगोद] जी० ५।१६
 णिओब [निगोद] जी० ५।२८ से ३०, ३७, ३८, ४१ से ४३, ५०, ५२, ५६
 णिओदजीव [निगोदजीव] जी० ५।३७, ५३, ५८ से ६०
 णिकरिय [निकरित] ओ० १६
 णिकाय [निकाय] ओ० ४६
 णिकुरम्ब [निकुरम्ब] ओ० ४. रा० १७०. जी० ३।५६६
 णिककङ्कड [निष्कङ्कट] जी० ३।२६१, २३६
 णिककलिय [निष्काङ्कित] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८, ७५२, ७८६
 णिक्खित्तउक्खित्तचरय [निक्षिप्तउत्क्षिप्तचरक] ओ० ३४
 णिक्खित्तचरय [निक्षिप्तचरक] ओ० ३४
 णिक्खुड [निष्कुट] रा० १४
 णिगर [निकर] रा० १३०. जी० ३।३००, ५६०, ५६७
 णिगरण [निगरण] जी० ३।५८६
 णिगरित [निकरित] जी० ३।५६७
 णिगलमालिया [निगडमालिका] जी० ३।५६३
 √णिगिण्ह [नि-+ग्रह्] --णिगिण्ह् रा० ६६३
 णिगोदजीव [निगोदजीव] जी० ५।५६
 णिगन्थ [निग्रन्थ] ओ० २५, ३३, ७२, ७६. रा० ६६८, ७४८ से ७५०, ७५२, ७८६
 णिगन्थी [निग्रन्थी] ओ० ७६
 णिग्गच्छ [निर्-+गम्] --णिग्गच्छइ. रा० ६६. जी० ३।४४३--णिग्गच्छन्ति. ओ० ५२. रा० ६८७. जी० ३।४४५
 णिग्गच्छित्ता [निर्गत्य] ओ० ५२. रा० ६८७. जी० ३।४४३
 णिग्गय [निर्गत] ओ० ६३. रा० ७५४, ७५५

णिग्नाह [निग्रह] ओ० २५
 णिग्नात [निघात] जी० ३।६२६
 णिग्नाय [निघात] जी० १।७८
 णिग्नायण [निघातन] ओ० २६
 णिग्नास [निघोष] ओ० ६७. रा० १३.
 जी० ३।४४६, ४५७
 णिघस [निकष] ओ० ८२
 णिचय [निचय] ओ० २३. जी० ३।२८४
 णिचिय [निचित] रा० १२, ७५८, ७५९.
 जी० ३।५९६
 णिच्य [नित्य] ओ० ५, ८, १०, ११. रा० १४५,
 २००. जी० ३।५९, ११६, २६८, २७२, २७४,
 ३५०, ६३७, ५०२, ७२१, ७३८, ७६०, ७६३,
 ८०८, ८१६, ८२६, ८३३, ८३६, ८३८। १७, ८४०,
 ८५४, ९२३
 णिच्यमंडिया [नित्यमण्डिता] जी० ३।६९६
 णिच्यालोक [नित्यालोक] जी० ३।१०७७
 णिच्युज्जोय [नित्योद्घात] जी० ३।१०७७
 णिच्छिद्ध [निश्छिद्र] रा० ७५५, ७७२
 णिच्छिण्ण [निच्छिन्न] ओ० १६५।२१
 णिज्जरण [निर्जरण] ओ० ४६
 णिज्जरा [निर्जरा] ओ० ७१, १६६, १७०
 √णिज्जा [निर्+या]—णिज्जंतु. ओ० ६२.
 णिज्जाहिस्सामि. ओ० ५५
 णिज्जाणमग [निर्याणमार्ग] ओ० ७२. रा० ५६
 णिज्जाणमय [निर्याणक] ओ० ४६
 णिज्जास [निर्यास] जी० ३।५८६
 णिज्जुत्त [निर्युक्त] ओ० ४८, ४९, ६४. रा० १७३,
 ६८१
 णिज्जुह [निर्यूह] जी० ३।५९४
 णिज्जोय [निर्याग] रा० ५४, ६९, ७०
 णिट्ठुर [निठ्ठुर] ओ० ४०
 णिडाल [ललाट] ओ० १६. रा० १३३.
 जी० ३।५९०, ११२२
 णिडालपट्टिया [ललाटपट्टिका] रा० २५४.
 जी० ३।४१५

णिग्नाह [निग्रह] ओ० १६०
 √णिग्ना [नि+द्रा]—णिग्नाएज्ज. जी० ३।११८
 णिद्ध [स्निग्ध] ओ० ४, १३, १६, ४७. रा० १७०,
 ७०३. जी० ३।२२, २७३, ५८६, ५९६, ५९७,
 १०६८
 णिद्धंत [निष्मन्ति] ओ० १६. ४७
 णिद्धच्छाय [स्निग्धच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
 ७०३. जी० ३।२७३
 णिद्धोभास [स्निग्धावभास] ओ० ४. रा० १७०,
 ७०३. जी० ३।२७३
 णिधि [निधि] जी० ३।६३७
 णिष्पंक [निष्पङ्क] ओ० १६४. जी० ३।२६१, २६६
 णिष्मय [निष्मय] ओ० ४३
 णिष्मिज्जमाण [निष्मिज्जमाण] जी० ३।२८३
 णिष्म [निष्म] ओ० ६४. जी० ३।५९६
 णिष्मण [निष्मण] ओ० १६. जी० ३।५९६
 णिष्मित्तिय [निष्मित्तिय] जी० ३।११८
 णिष्मच्छ [निष्मित्तस्य] जी० ३।६६५
 णिष्मल [निष्मल] ओ० १६, ४७, १८३, १८४, १९४.
 जी० ३।२६१, २६६, २६९, ३००
 णिष्मा [निष्मा] रा० १६, १३०
 णिष्माय [निष्माय] ओ० ६३
 णियद्वपस्वय [नियतिपर्वत] जी० ३।२६२
 √णियंस [नि+वस्]—णियंसेइ. जी० ३।४५१
 णियंसण [नियंसण] ओ० ४६
 णियंसेत्ता [नियंस] जी० ३।४५१
 णियण [निजक] ओ० ७०, १५०. रा० १३, ७५१,
 ८०२, ८११
 णियत्थ [दे०] रा० ६९, ७०
 णियम [नियम] ओ० ३२. जी० १।५८, ५९, ७८,
 ६१, ६६, १३३, १३६; ३।१०४, ११०७
 णियमसा [नियमसात्] ओ० १६५:१०
 णियय [नियत] रा० २००. जी० ३।५९, ३५०
 णियया [नियता] जी० ३।६९६
 णियलबद्धग [निगडबद्धग] ओ० ६०
 णियाणमयग [निदानमृतक] ओ० ६०

गिरंतर [निरन्तर] ओ० १४. रा० ६७१

जी० ३२५६, ५६७

गिरंतरित [निरन्तरित] जी० ३३००

गिरय [निरय] ओ० ४६. जी० ३११६

गिरयावास [निरयावान] जी० ३११२

गिरयुद्देश [निरयोद्देश] जी० ३११००

गिरवयव [निरवयव] जी० ३२५०

गिरवकांक्ष [निरवकांक्ष] आ० ४६

गिरातंक [निरातङ्क] जी० ३१५६८

गिरावरण [निरावरण] रा० ८१४

गिरुवद्वय [निरुपद्वय] ओ० १

गिरुवलेव [निरुपलेव] ओ० १६. जी० ३१५६६

गिरुवहत [निरुपहत] जी० ३१५६२

गिरुवहय [निरुपहय] जी० ३१५६७

गिरुह [निगुह] ओ० ३७

गिरुलेव [निरुलेव] जी० ३१६५५

√गिवाड [नि+पात्]—गिवाडेह. जी० ३१४५७

गिवाय [निपात्] ओ० १७०

गिवाय [निवात्] रा० १२३, ७५५, ७७२

गिवायगंभीर [निवातगंभीर] रा० १२३, ७५५, ७७२

गिबुद्धि [निबुद्धि] जी० ३१८४१

√गिवेद [नि+वेद्य]—गिवेदेह. ओ० १६

गिवेदेति. ओ० १७—गिवेदेमि. ओ० २०

गिब्वण [निब्वण] ओ० १६. जी० ३१५६७

गिब्वत्त [निब्वत्त] ओ० १४४. रा० ८०२

√गिब्वत्त [निर्+वर्तय]—गिब्वत्तेह. रा० ७७२

गिब्वत्तिय [निर्वीत्तित] जी० ३१५६२

गिब्व्याघातिम [निर्व्याघातिन्. निर्व्याघातिम]

जी० ३११०२२

गिब्व्याघाय [निर्व्याघात्] ओ० १५३, १६५, १६६.

रा० ८०४, ८१४. जी० ११८२

गिब्व्याणमग [निर्व्याणमार्ग] ओ० ७२. रा० ८१४

गिब्व्यादित [निर्व्यादित] जी० ३१८७८

गिब्वित्तिगिच्छ [निब्वित्तिगच्छ] रा० ६६८,

७५२, ७८६

गिठवुडकर [निवृत्तिकर] रा० २८८. जी० ३१३०२, ३६८

गिठवुत्तिकर [निवृत्तिकर] रा० ४०, १३२.

जी० ३१२८३, २८५, ३८७

गिठ्वय [निवृत्त] ओ० १

गिठ्वेयणी [निवृदनी] ओ० ४५

गिस्तंत [निशान्त] रा० १५

गिस्तगरुह [निशगरुह] ओ० ४३

गिस्तह [निषध] रा० २७६. जी० ३१७६५

गिस्तण [निषण] ओ० ६३. जी० ३१३८४

गिस्तम् [निशम्य] ओ० २१. रा० १६.

जी० ३१४४३

गिस्तह [निषध] जी० ३१४४५

√गिसिर [नि+सृज्]—गिसिरति. जी० ३१४४५

गिसीइत्त [निषद्य] ओ० ५४

√गिसीव [नि+षद्]—गिसंदति. जी० ३१३५८

गिसीविया [निषीधिका, नैषेधिकी] जी० ३१३०३.

३०५, ३०६, ८८६

√गिसीय [नि+षद्]—गिसीएज्. ओ० १८०

—गिसीयइ. ओ० ५४—गिसीयति.

रा० ४८. जी० ३१२१७

गिसीहिया [निषीधिका, नैषेधिकी] रा० १३२

से १३४, १३६, १३७. जी० ३१३०१, ३०२,

३०४, ३०७, ३१५, ३५५

गिस्तंफिय [निःशङ्कित] ओ० १२०, १६२.

रा० ६६८, ७५२, ७८६

गिस्ता [निश्चा] जी० ११५८, ७३, ७८, ८१

गिस्तास [निःशवाण] ओ० १५४, १६५, १६६

गिस्तिसय [निःशृत] जी० ११७८

गिस्तैयस [निःश्रेयस्] रा० २७५. जी० ३१४४१,

४४२

गिहत [निहत] जी० ३१४४७

गिहय [निहत] रा० ६, १२

गिहि [निधि] जी० ३१७७५, ८४१

- गिह्य [निभृत] ओ० ४६
 √गोण [गी] — गोणेश. ओ० ५६
 गोणोत्ता [नीत्वा] ओ० ५६
 गोरय [नीरजस्] ओ० १६४. रा० २१, २३, ३२,
 ३४, ३६, १२४, १४५, १५७. जी० ३१२६१, २६६,
 २६६
 गोल [नील] ओ० ४७. रा० २४, २६, १३२, १५३,
 ६६४. जी० ३१३२६, ५६२, ५६५, ५६६
 गोलकणवीर [नीलकणवीर] रा० २६. जी०
 ३१२७६
 गोलग [नीलक] जी० ३१२७६
 गोलपाणि [नीलपाणि] रा० ६६४. जी० ३१५६२
 गोलबन्धुजीव [नीलबन्धुजीव] रा० २६. जी०
 ३१२७६
 गोललेस्स [नीललेश्य] जी० ६१६७
 गोललेस्सा [नीललेश्या] जी० ३१६६
 गोलवन्त [नीलवत्] रा० २७६. जी० ३५७७,
 ६६०
 गोलवन्तद्ग्रह [नीलवद्ग्रह] जी० ३१६५६, ६६६
 गोलाशोक [नीलाशोक] रा० २६
 गोलाशोय [नीलाशोक] जी० ३१२७६
 गोली [नीली] रा० २६. जी० ३१२७६
 गोलीगुलिया [नीलीगुलिका] रा० २६. जी०
 ३१२७६
 गोलीभेद [नीलीभेद] रा० २६. जी० ३१२७६
 गोलुप्ल [नीलोत्पल] ओ० १३. रा० २६. जी०
 ३१२७६
 गोव [नीप] ओ० ६, १०. जी० ३५८३
 गोसास [निःश्वाम] ओ० ११७. जी० ३१४५१
 गोहारि [निर्हारिन्] ओ० ७१. रा० ६१
 गोहारिम [निर्हारिन्] ओ० ७, ८, १०. जी०
 ३१२७६
 गोहृ [स्निहृ] जी० ११७३
 गूमं [नून्म्] ओ० १६६. रा० ७०३. जी०
 ३१६८३
- गण्डर [नूपुर] जी० ३१५६३
 गणग [नैक] रा० ७२७
 गणमि [नेमि] ओ० ६४. रा० १७३, ६८१. जी०
 ३१२८५
 गणतव्य [नेतव्य] जी० ३१२१८, ६६६, ८८६, १०४८
 गणयव्य [नेतव्य] जी० ११४०; ३१२६८, ६६७, ७६१
 गणयाजय [नैर्यात्रिक] ओ० ७२
 गणरइय [नैरयिक] ओ० ४४, ७१, ७३, ८७. जी०
 ११६०, १२८; २११६८, १२६६, १३४, १३५, १३८,
 १४४, १४५, १४८; ३१८६ से ६२, ६४, ६७,
 १०४, ११६, ११८ से १२१, ११३१ से ११३३,
 ११३६, ११३८; ६१२, ५, १०; ७१७, ८, १३, १४,
 २० से २३; ६११५६, १५८, २०६, २१०,
 २१६, २२१, २२४, २२६, २२६, २३१ से २३४,
 २३६, २४१, २४२, २४७, २५० से २५२,
 २५४, २५५, २६७ से २६६, २७४, २७७, २७८,
 २८३, २८६ से २८८, २९३
 गणरइयत्त [नैरयिकत्व] ओ० ७३. रा० ७५०,
 ७५१. जी० ३११७, ११३३
 गणचछ [नेपथ्य] ओ० ४६
 गणवत्थ [नेपथ्य] ओ० ७०. रा० ५३, ५४, ८०४
 गणवत्थि [नेपथ्य] ओ० ५७
 गणवृत्तिकर [निवृत्तिकर] जी० ३१२६५
 गणह [स्नेह] जी० ३१५८६
 गो [नो] ओ० ३३. रा० २५. जी० ११२५
 गोअपञ्जात्तग [नोअपर्याप्तक] जी० ६१६३
 गोअपञ्जात्तय [नोअपर्याप्तक] जी० ६१६१
 गोअपरित्त [नोअपरीत] जी० ६१८२
 गोअभवसिद्धिय [गोअभवसिद्धिक] जी० ६१११० से
 ११२
 गोअसंजत [नोअसंयत] जी० ६११४५
 गोअसंजय [नोअसंयत] जी० ६११४१, १४७
 गोअसंणि [नोअसंज्ञन्] जी० ६११०७
 गोअपञ्जात्तग [नोअपर्याप्तक] जी० ६१६३
 गोअपरित्त [नोअपरीत] जी० ६१८२, ८६, ८७
 गोअभवसिद्धिय [नोअभवसिद्धिक] जी० ६१११० से

११२

णोमालिया [नवमालिका] रा० ३०. जी० ३१२८३

णोमालियागुम्भ [नवमालिकागुम्भ] जी० ३१५८०

णोमालियामंडवग [नवमालिकामण्डपक] रा०
१८४. जी० ३२६६

णोमालियामंडवय [नवमालिकामण्डपक] रा०
१८५

णोसंजत [नोसंयत] जी० ६११४५

णोसंजतासंजत [नोसंयतासंयत] जी० ६११४५

णोसंजय [नोसंयत] जी० ६११४१, १४७

णोसंजयासंजय [नोसंयतासंयत] जी० ६११४१,
१४७

णोसण्णि [नोसंजिन्] जी० ६११०७

ण्हाइत्ता [स्नयित्वा] रा० २६१

ण्हाण [स्नान] ओ० १६१, १६३

ण्हाणपीठ [स्नानपीठ] ओ० ६३

ण्हाणमंडव [स्नानमण्डप] ओ० ६३

ण्हाणमल्लिया [स्नानमल्लिका] रा० ३०.
जी० ३१२८३

ण्हाय [स्नात] ओ० २०, ५२, ५३, ७०. रा० ६८३,
६८५, ६८७ से ६८९, ६९२, ७००, ७१०,
७१६, ७२६, ७५१, ७५३, ७६५, ७७४, ७९४,
८०२, ८०५

√ण्हाय [स्नपय्]—ण्हाएइ. रा० २६१

ण्हाह [स्नायु] जी० ११६५, १०५; ३१६२,
१०६०

√ण्हाव [स्नपय्]—ण्हावेति. जी० ३१४५७
ण्हावेत्ता [स्नपयित्वा] जी० ३१४५७

त

त [तत्] ओ० १. रा० १. जी० १११

तइय [तृतीय] ओ० १४४, १७४, १७६, १८२

तउआगर [त्रपुकाकर] रा० ७७४

तउय [त्रपुक] रा० ७५४, ७५६, ७७४

तउयपाय [त्रपुकात्र] ओ० १०५, १२८

तउयबंधण [त्रपुकबंधन] ओ० १०६, १२६

तउयभंड [त्रपुकभाण्ड] रा० ७७४

तउयभारय [त्रपुकभारक] रा० ७६०, ७६१,
७७४

तउयभारय [त्रपुकभारक] रा० ७७४

तउयागर [त्रपुकाकर] जी० ३११८

तए [ततग्] ओ० ५२. रा० ९. जी० ३१४४०

तओ [ततम्] रा० ११, ५९, ७०, ८०२.
जी० ३१६८६

√तंडव [ताण्डवय्]—तंडवेति. रा० २८१.
जी० ३१४७७

तंत [तान्त] रा० ७६५

तंती [तन्त्री] ओ० ६८. रा० ७, ७६, १७३.
जी० ३१२८५, ३५०, ५६३, ८४२, ८४५,
१०२५

तंतुमय [तन्तुमय] जी० ३१५६५

तंतुल [तण्डुल] रा० १५०, २६१. जी० ३१३२३,
४५७, ५६२

तंतुलछिण्णय [तण्डुलछिन्नक] ओ० ६०

तंब [ताम्र] ओ० १९, ४७. जी० ३१५६६,
५६७

तंबच्छि [ताम्राक्षि] जी० ३१८६०

तंबपाय [ताम्रपात्र] ओ० १०५, १२८

तंबबंधण [ताम्रबंधन] ओ० १०६, १२६

तंबागर [ताम्राकर] रा० ७७४. जी० ३१११८

तंबिय [ताम्रिक] ओ० १०८, १३१

तंबोलिमंडवग [ताम्बूलीमण्डपक] रा० १८४

तंबोलिमंडवय [ताम्बूलीमण्डपक] रा० १८५

तंबोलीमंडवग [ताम्बूलीमण्डपक] जी० ३१२६६

तंस [त्रयस] जी० ११५; ३१२२, ७८, ७९, ५६४,
१०७१, १०७५

तकारवग [तकारवर्ग] रा० ६८

तक्क [तर्क] रा० ८१५

तक्कर [तस्कर] ओ० १

तगर [तगर] रा० ३०, १६१, २५८, २७६.
जी० ३१२८३, ३३४, ४१६

तच्छ [तृतीय] रा० १२, ६५, ७०२, ७०३

तच्चसत्तराईदिया [तृतीयसप्तरात्रिदिव्या]

ओ० २४

तच्छा [तृतीया] जी० १।१२५; २।१४८, १४९;

३।२, ४, ६८, ७४, ९१, १२५, ११११

तज्जण [तर्जन] ओ० १६१, १६३

तज्जणा [तर्जना] ओ० १५४, १६५, १६६.

रा० ८१६

तज्जायसंसदुचरय [तज्जातसंसृष्टचरक] ओ० ३४

तज्जोगिय [तद्योगिक] जी० ३।७२१, ९१५

तड [तट] जी० ३।४४५

तडवडा [दे०] रा० २८. जी० ३।२८३

तण [तृण] रा० ९, १२, १७१, १७३, ७६७.

जी० १।६९; ३।२७७ से २८५, २९८, ३६०,

५७८, ६२२, ६९०

तणवणस्सइकोइय [तृणवनस्पतिकायिक]

रा० ७७१

तणु [तनु] ओ० १९. जी० ३।५९६ से ५९८

तणुय [तनुक] रा० १२७. जी० ३।२६१, ३५२,

५९५, ५९७, ६३२, ६६१, ६८९, ७३६, ८३९,

८५४, ८८२

तणुयतर [तनुकतर] ओ० १९२

तणुयरी [तनुतरी] ओ० १९३

तणुवात [तनुवात] जी० ३।१३, १९, २१, २६,

३७, ५०, ६५, ६७

तणुवाय [तनुवात] जी० १।८१; ३।३०, ३८, ४४, ४७

तणू [तनू] ओ० १९३

तण्हा [तृष्णा] ओ० ११७, १९५।१८. रा० ७२८,

जी० ३।११८, ११९

तत [तत] रा० ११४, २८१. जी० ३।४४७, ५८८

ततिय [तृतीय] रा० ८०२

ततिया [तृतीया] जी० ३।८८

तते [ततस्] जी० ३।५५५

ततो [ततस्] ओ० १४१. जी० ३.१०२३

तत्त [तप्त] ओ० १९, ४७, ५०. जी० ३।११८,

५९०, ५९६

तत्तव [तप्ततपस्] ओ० ८२

तत्तिय [तावत्] रा० १३०. जी० ३।३००

तत्तो [ततस्] जी० ३।१२७

तत्थ [तत्र] ओ० १४. रा० ८. जी० १।११

तत्थ [त्रस्त] जी० ३।११६

तत्थगत [तत्रगत] रा० ८

तत्थगय [तत्रगत] ओ० २१, ५४. रा० ७।१४, ७९६

तदावरणिज्ज [तदावरणीय] ओ० ११९, १५६

तदुभय [तदुभय] ओ० १५५, १६०.

जी० ३।१०६०, १०६१

तदुभयारिह [तदुभयाहं] ओ० ३९

तद्वेवसिय [तद्वैवसिक] ओ० १६, १७

तप्पढमया [तत्प्रथमता] ओ० ६४. रा० ६९,

२८५. जी० ३।४५०

तप्पभिइ [तत्प्रभृति] रा० ७९०, ७९१

तमतमप्पभा [तमस्तमःप्रभा] जी० ३।४१

तमतमा [तमस्तमा] जी० ३।४

तमप्पभा [तमःप्रभा] जी० ३।४१, ४३, ४४

तमा [तमा] जी० ३।७८, ८१, १०२, ११५

तमाल [तमाल] ओ० ९, १०. जी० ३।३८८, ५८३

तम्हा [तस्मात्] रा० ७५०

तय [त्वच्] जी० ३।३११

तया [तदा] ओ० २१. रा० २९२

तया [त्वच्] ओ० ९४. रा० ७६१. जी० १।७१

तयामंत [त्वंगवत्] ओ० ५, ८. जी० ३।२७४

तयामुह [त्वक्मुख] ओ० ६३

तयाहार [त्वगाहार] ओ० ९४

तर [तृ]—तरंति. ओ० ४६

तरंम [तरङ्ग] ओ० १९, ४६. रा० २४, ८१.

जी० ३.२७७, ५९६, ५९७

तरमिल्लहायण [तरीमल्लिहायण] ओ० ६४

तरुण [तरुण] ओ० ५, ८, १९, ६४. रा० १२, ७५८

से ७६१. जी० ३.११८, ११९, २७४, ५९६, ५९७

तरुणी [तरुणी] रा० ७१०, ७७४, ८०४

तरुणीपडिकम्म [तरुणीप्रतिकर्मन्] ओ० १४६.

रा० ८०६

तरुपखंदोलग [तरुपक्षान्दोलक] ओ० ६०

तरुपडियग [तरुपतिनक] ओ० ६०

तल [तल] ओ० १३, १६, ६३, ६४, ६८, १६४.

रा० ७, १२, ५०, ५२, ५६, ७६, ७७, १३७, १७३,
१७४, २३१, २४८, ७५८, ७५९, ७७४.

जी० ३१२८५, २८६, ३०७, ३५०, ३६३, ५६३,
५८८, ५९६, ६०४, ८४२, ८४५, १०२५

तलभंगय [तलभङ्गक] ओ० ४७. रा० ३१५६३

तलवर [दे०] ओ० १८, ५२, ६३. रा० ६८७,

६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४.

जी० ३१६०६

तलाग [तडाग] ओ० १

तलागमह [तडागमह] जी० ३१६१५

तलाय [तडाग] ओ० ६६

तलिन [तलिन] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६७

तव [तपस्] ओ० २१ से २४, २६, ३०, ३८, ४५,

४६, ५२, ८२, ११७. रा० ८, ६, ६८६, ६८७,

६८९, ७११, ७१३, ८१४, ८१७. जी० ३१६६६

√तव [तप्]—तवैति. रा० २८१. जी० ३१४४७

—तविसु. जी० ३१७०३—तविरसति.

जी० ३१७०३—तवैति. जी० ३१८४५

तवणिज्ज [तपनीय] ओ० १६, ४७, ५०. रा० ४०,

१३०, १३२, १३७, १७४, १६१, २८८.

जी० ३१२६५, २८६, ३००, ३०२, ३०७, ३१३,
३८७, ३९७, ५६०, ५६६, ६७२

तवणिज्जमय [तपनीयमय] रा० १३०, १४६,

२४५, २५४, २७०. जी० ३१३००, ३०५, ३०८,

३११, ३२२, ३३७, ३६६, ४०७, ४१५, ४३५,
६४३, ६०४

तवणिज्जामय [तपनीयमय] रा० ३७

तवस्सि [तपस्विन्] ओ० २५

तवस्सिवेयावच्च [तपस्सिवैथावृत्थ] ओ० ४१

तवारिह [तपोर्ह] ओ० ३६

तवोकम्म [तपःकर्मन्] ओ० २४, ११६, १२०

तस [तस] ओ० ८७. जी० ११११, ७५, ८३, १३६,

१३८, १४० से १४३; ५११७

तसकाइय [तसकायिक] जी० ३११८३, १६४,

१६७; ५११, ४, ६, १०, १६, १८ से २०; ६११८२,
१८४

तसकाय [तसकाय] जी० ३:१७४

तसिय [वासित] जी० ३१११६

तह [तथा] ओ० ६६. रा० १०. जी० १११४

तहप्पमार [तथाप्रकार] ओ० ४०, १०५, १०६,

१२८, १२९, १४१, १६१, १६३. जी० १:६५,

७१ से ७३, ७८, ८१, ८४, ८८, ८९, १००, १०३,

१११, ११२, ११४ से ११६, ११८, १२१

तहा [तथा] ओ० १७७. रा० १०. जी० १११४

तहाख्व [तथारूप] ओ० ५२, १५१. रा० ६६७,

६८७, ८१२

तहि [तत्र] ओ० ८६. रा० १७४. जी० ३१२६६

ताडना [ताडना] रा० ८१६

ताडिज्जंत [ताड्यमान] रा० ७७

ताण [त्राण] ओ० १६, २१, ५४

तार [तार] रा० ७६

तारग [तारक] जी० ३१८३८, १११

तारग [तारग] जी० ३१८३८, २, २६

तारय [तारक] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २६२,

जी० ३१४५७

तारयग [तारकाय] जी० ३१८३८, २६

तारा [तारा] ओ० ५०, ६३, ६८, १६२.

रा० २५४, २८२. जी० ३१४१५, ४४८,

८३८, १, २१, ३०, १०२०, १०३७

तारागण [तारागण] जी० ३१७०३, ७२२, ८०६,

८२०, ८३०, ८३४, ८३७, ८३८, ८५५,

१०००

तारापिड [तारापिण्ड] जी० ३१८३८, १

ताराख्व [तथारूप] रा० २०, १२४.

जी० ३, २८८, ८४१, ८४२, ८४५, ६६८, १००३

से १००६, १०२० से १०२२, १०३७, १०३८

तारावलिपविभक्ति [तारावलिप्रविभक्ति] रा० ८५
 ताराविमाण [ताराविमान] जी० २, १८, ४४;
 ३१००६, १०१४, १०१६, १०३५
 ताल [ताल] ओ० ६, १०, ६८. रा० ७, ७६, ७७,
 १७३. जी० १।७२; ३।२८५, ३५०, ३८८,
 ५६३, ५८८, ८४२, ८४५, १०२५
 ✓ताल [ताड्य] —तालेज्जा. रा० ७५५
 तालण [ताडन] ओ० १६१, १६३
 तालणा [ताडनः] ओ० १५४, १६५, १६६
 तालायर [तालाचर] ओ० १
 तालिज्जंत [ताडयमान] रा० ७७
 तालियंत [तालवृन्त] ओ० ६७
 तालु [तालु] ओ० १६, ४७. जी० ३।५६६, ५६७
 तालुय [तालुक] रा० २५४ जी० ३।४१५
 ताव [तावत्] ओ० ७६. रा० ७५१. जी० २।८१
 ताव [ताप्य]—तावेइ. जी० ३।३२७—तावेति. रा०
 १५४ जी० ३।३२७—तावेति. रा०
 १५४ जी० ३।७४१
 तावइय [तावत्] रा० १२६. जी० ३।३७३
 तावं [तावत्] जी० ३।८४१
 तावक्खेत्त [तापक्षेत्र] जी० ३।८३८।१४, १५, ८४२,
 ८४५
 तावतिय [तावत्] रा० २१०, २१२ जी ३।३००,
 ३५४, ६४७, ८८५
 तावस [तापस] ओ० ६४
 ताविय [तापयित्वा] जी० ३. ११८
 ताहे [तदा] जी० ३. ८४३
 ति [त्रि] ओ० ७७. रा० ७. जी० १।१७
 ति [इति] रा० ७०३
 तिक्खुत्ते [त्रिम्] ओ० २१, ४७, ५२, ५४, ६६, ७०, ७८,
 ८०, ८१, ८३. रा० ८ से १०, १२, से १४, ५६, ५८,
 ६५, ७३, ७४, ११८, १२०, २६२, ६८७, ६६२,
 ६६५, ७००, ७१६, ७१८, ७७८. जी० ३।४५७
 तिण [त्रिक] ओ० १, ५२
 तिगिच्छि [तिगिच्छि] रा० २७६

तिगिच्छिदह [तिगिच्छिदह] जी० ३।४४५
 तिगुण [त्रिगुण] जी० २।१५१; ३।१०१० से
 १०१४
 तिगुणिय [त्रिगुणित] जी० ३।८३८।२४
 तिघरंतरिय [त्रिगूहान्तरिक] ओ० १५८
 तिण [इदम्] रा० ७५१. जी० ३।२७८
 तिणिस [तिनिश] ओ० ६४. रा० १७३, ६८१
 तिण्ण [तीर्ण] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २६२.
 जी० ३।४५७
 तिप्त [तृप्त] ओ० १६५।१८, १६. जी० ३।१०६
 तिप्त [तिक्त] जी० १।५, ५०; ३।२२
 तिथ [तीर्थ] रा० १७४, २७६. जी० ३।२८६,
 ४४५
 तिथगर [तीर्थकर] ओ० १६, २१, ५२, ५४. रा० ८,
 २६२. जी० ३।४५७
 तिथगरसिद्ध [तीर्थकरसिद्ध] जी० १।८
 तिथगराभिमुह [तीर्थकराभिमुख] ओ० २१, ५४
 तिथयर [तीर्थकर] ओ० ६६, ७०. रा० ८
 तिथयराभिमुह [तीर्थकराभिमुख] रा० ८, ६८
 तिथसिद्ध [तीर्थसिद्ध] जी० १।८
 तिथाभिसेय [तीर्थाभिषेक] ओ० ६८
 तिथोदय [तीर्थोदक] रा० २७६. जी० ३।४४५
 तिबंधय [त्रिदण्डक] ओ० ११७
 तिपडोगार [त्रिप्रत्यावतार, त्रिपदावतार] जी०
 ३।६४७
 तिपडोया [त्रिप्रत्यावतार, त्रिपदावतार] जी०
 ३।६३६ ६३८, ६५०
 तिप्पणयार [तेपन, तेवन] ओ० ४३
 तिभाग [त्रिभाग] ओ० १६५।४ से ६, ८ जी०
 ३।३४ से ३६, ४०, ४१, ४४, ४६, ७२५, ७२८,
 ७२६, ८७८
 तिमासपरियाय [त्रिमासपर्याय] ओ० २३
 तिमिर [तिमिर] जी० ३।५८६
 तिय [त्रिक] ओ० ५५. रा० ६५४, ६५५, ६८७,
 ७१२. जी० ३।५५४

तियाह [त्र्यह] जी ३।८६, ११८, ११९

तिरिक्ख [तिर्यक्] जी० १।५१, १२३; २।२५, ६४, १२२; ६।१

तिरिक्खजोणि [तिर्यग्योनि] ओ० ७४, १, ३ जी० २।२, ३, ६, १०, २१ से २४, ४९, ६८, ६९, ७२, १४२, १४५, १४६, १४९, १५१

तिरिक्खजोणिणी [तिर्यग्योनिक्की] ओ० ७१. जी० ६।१, ४, ९, १२; ९।२०, ९, २१२, २१८, २२२

तिरिक्खजोणिय [तिर्यग्योनिक्क] ओ० ७१, ७३, १५६. जी० १।५१, ५४, ५५, ५६, ६१, ६९, ६७, ६८, १०१ से १०३, ११६, ११७, ११९, १२५; २।७५, ७६, ८२, ८३, ८८, ९६, १०१ से १०५, १०७ से १११, ११३, ११६, १२२, १२८, १२९, १३८, १३६, १३८, १४२, १४५, १४६, १४९, १५१; ३।१, १२१, १३० से १४७, १५५, १५९, १६१ से १६३, १६६, ११३२, ११३४, ११३७, ११३८; ६।३, ८, १० से १२; ७।१, ५, ९, १०, १५, १६, २० से २३; ९।१५६, २०९, २११, २१७, २२०, २२१, २२५, २२९, २३१, २३२, २३५, २३६, २४३, से २४५, २५०, २५१, २५३, २५५, २६७, २७०, २७१, २७६, २८०, २८६, २८७, २८९, २९३

तिरिक्खजोणियत्त [तिर्यग्योनिक्कत्व] ओ० ७३. जी० ३।११३४

तिरिय [त्र्यक्] ओ० ४४, ४६. रा० १०, १२, ५६, १२६, १३२, २७९. जी० १।४५, ७९, ८७, ९६, १०१, १३६; ३।१२९।२, २५७, ३०२, ३५१, ४४५, ६३८, ७०१, ७१०, ७३९, ७४७, ७६१, ७६४, ७६८, ७६९, ८१४, ८३८।२, ९४०, ९४४, १००६, ११११; ९।१५८

तिरियक्खेवण [तिर्यक्खेपण] ओ० १८०

तिरियलोक [तिर्यग्लोक] जी० ३।२५९

तिरियवाय [तिर्यग्वाय] जी० १।८१

तिरीड [किरोट] ओ० ५१

तिरूव [त्रिरूप] जी० २।१५१

तिल [तिल] जी० १।७२; ३।६२१

तिलकरयण [तिलकरत्त] जी० ३।३०७

तिलग [तिलक] जी० ३।५९३, ६३१

तिलगरयण [तिलकरत्त] रा० १३०, १३७. जी० ३।३००

तिलपप्पड्डिया [तिलपर्पटिका] जी० १।७२।३

तिलय [तिलक] ओ० ९ से ११. रा० ६९, ७०. जी० १।७२; ३।३८८ से ३९०, ५८३, ७७५।२

तिलागणि [तिलागि] जी० ३।११८

तिवड [त्रिपदी] रा० २८१

तिवत्ति [त्रिपदी] जी० ३।४४७

तिवलि [त्रिवलि] ओ० १५. रा० ६७२. जी० ३।५९७

तिवास्परियाय [त्रिवर्षपर्याय] ओ० २३

तिविध [त्रिविध] जी० २।१०४, १०६, १५१; ३।३८, १४८, १४९, १५३, १६४, २१५, ८३६; ५।५७; ९।११२

तिविह [त्रिविध] ओ० ३३, ३७, ६९, ७०, ७८.

रा० ७६. जी० १।१०, १२, ७५, ९६, ११७, ११९, १२९, १३३, १३६; २।१ से ३, ८, ११, ७५ से ७७, ९९, १५१; ३।३७, ७८, १३७, १६१, १०७१; ९।२३, ३२, ६७, ६९, ७५, ८८, ९५, १०१, १०९, १६४, २०२

तिव्व [तीव्र] ओ० ४, ४६, ६९. रा० १७०, ७०३, ७९५. जी० ३।११०, २७३, ६०८, ६११

तिव्वच्छाय [तीव्रच्छाय] ओ० ४. रा० १७०, ७०३ जी० ३।२७३

तिव्वोभास [तीव्रोभास] ओ० ४. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२७३

तिसत्तक्खुसो [त्रिसप्तकृत्वस्] ओ० १७०. जी० ३।८६

तिसर [त्रिसर] ओ० ५२, ६३. रा० ६८७ से ६८९

तिसरय [त्रिसरक] ओ० १०८, १३१

तिसालग त्रिशालक] जी० ३।५९४

तिहा [त्रिधा] रा० ७६४, ७६५
 तिहि [तिथि] ओ० १४५. रा० ८०५
 तीर [तीर] रा० १७४. जी० ३११८, ११९, २८६,
 ६१०
 तीस [त्रिंशत्] ओ० १६२. जी० ३१२
 तीसतिविह [त्रिंशद्विध] जी० २१३
 तीसविध [त्रिंशद्विध] जी० ३१२८
 तु [तु] जी० ३१८८
 तुंग [तुङ्ग] ओ० १६, ४६, ४७, ६४. रा० ५२, ५६,
 १३७, २३१, २४७. जी० ३१३०७, ३६३, ५६६,
 ५६७
 तुंड [तुण्ड] जी० ३१११
 तुंबवीणपेच्छा [तुम्बवीणाप्रेक्षा] जी० ३१६१६
 तुंबवीणा [तुम्बवीणा] रा० ७७
 तुंबवीणिय [तुम्बवीणिक] ओ० १, २
 तुंबवीणियपेच्छा [तुम्बवीणिकप्रेक्षा] ओ० १०२,
 १२५
 तुंबा [तुम्बा] जी० ३१२५
 तुच्छतराय [तुच्छतरक] रा० ७६५
 तुच्छत्त [तुच्छत्व] रा० ७६२, ७६३
 तुष्ट [तुष्ट] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२, ६३,
 ६८, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४, १६
 से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७, २७९,
 २८१, २९०, ६५५, ६८१, ६८३, ६९०, ६९५, ७००,
 ७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८, ७२५, ७२६,
 ७७४, ७७८. जी० ३१४४३, ४४५, ४४७, ५५५
 तुडिय [तुडित] ओ० २१, ४७, ५४, ६३, ७२, १०८,
 १३१. रा० ८, ६६, ७०, २८५, ७१४. जी०
 ३१४५१, ४५७, ५६३
 तुडिय [तूर्य] ओ० ६७, ६८. रा० ७, १३, ३२, २०६,
 २११, ६५७. जी० ३१३५०, ३७२, ४४६, ५६३,
 ६४६, ८४२, ८४५
 तुडिय [दे०] जी० ३१८४१
 तुडिय [तुडिक] जी० ३१०२३ से १०२५

१. आः चूर्णिकृत्—'तुडिकमन्तपुरमुपदिश्यते'
 [वृत्ति पत्र ३८४] ।

तुडियंग [दे०] जी० ३१५८८, ८४१
 तुडिया [तुडिता] जी० ३१२५४, २५८
 ✓ तुयट्ट [त्वग्+वृत्]—तुयट्टंति. रा० १८५.
 जी० ३१२१७—तुयट्टह. रा० ७५३.
 — तुयट्टेज्ज. ओ० १८०
 तुयट्टण [त्वग्वर्तन] ओ० ४०
 तुयवक [तुयवक] ओ० २, ५५
 तुयग [तुयग] ओ० १, १३, १६, ६४. रा० १७, १८,
 २०, ३२, ३७, १२६, १७३, ६८१. जी० ३१२८५,
 २८८, ३००, ३११, ३७२, ५६६
 तुयथ [तुयग] रा० ६८३, ६८५, ६९२, ७०८, ७१०,
 ७१६, ७३१
 तुरित [त्वरित] जी० ३१८६
 तुरिय [तूर्य] जी० ३१४४६
 तुरिय [त्वरित] ओ० २१, ४६, ५४. रा० ८, १०,
 १२, १५, ५६, २७६, ७१४. जी० ३११७६, १७८,
 १८०, १८२, ४४५, ६८६
 तुरियगति [त्वरितगति] जी० ३१६८६
 तुरवक [तुयवक] रा० ६, १२, ३२, १३२, २३६, २८१,
 २६२. जी० ३१३०२, ३७२, ३६८, ४४७, ४५७
 ✓ तुल [तोलय]—तुलेमि. रा० ७६२
 तुला [तुला] रा० ७४८ से ७५०, ७७३
 तुलिय [तुलित] रा० ७६२, ७६३
 तुलेत्ता [तोलयित्वा] रा० ७६२
 तुल्ल [तुल्य] ओ० १६. जी० १११४३; २१६८ से
 ७२, ६५, ६६, १३४ से १३८, १४१ से १४६;
 ३१७३ से ७५, ५६६, ६६८, ६६९, १०३७, ११३८
 ४१६ से २३, २५; ५१६, २०, २६, २७, ३२ से
 ३६, ५२, ५६, ६८; ७१०, २२, २३; ६१७, १४,
 ५५, १६६, १८१, २०८, २५० से २५३, २५५,
 २८६ से २८३
 तुल्लत्त [तुल्यत्व] जी० ३१६६६
 तुवर [तुवर] जी० ३१४४५, ४४६, ४४८
 तुसागि [तुपाग्नि] जी० ३११८
 तुसार [तुपाार] ओ० १६४. जी० ३११६

तुसारकूड [तुषारकूट] जी० ३।११६

तुसारपडल [तुषारपटल] जी० ३।११६

तुसारपुंज [तुषारपुञ्ज] जी० ३।११६

तुसिणीय [तुष्णीक] रा० ६४,७०१,७६२

तूण [तूण] रा० ७७

तूणइल्ल [तूणावत्] ओ० १,२

तूणइल्लपेच्छा [तूणावत्प्रक्षा] ओ० १०२,१२५.

जी० ३।६१६

तूयर [तूवर] रा० २७६,२८०

तूल [तूल] ओ० १३. रा० ३७,१८५,२४५.

जी० ३।२६७,३११,४०७

तूली [तूली] रा० २४५. जी० ३।४०७

तेइंदिय [त्रीन्द्रिय] जी० १।८३,८८,९०; २।१०१,

१०३,११२,१२१,१३६,१३६,१४६,१४६;

३।१३०,१६८; ४।१,४,१३,१८ से २१,२४,

२५; ८।१,३,५; ९।१,३,५,६,१६६,२२३,२३१,

२५६,२६४,२६६

तेउ [तेजस्] जी० १।१२८,१३३; २।१३०;

५।८; ६।१६४,२५७

तेउकाइय [तेजस्कायिक] जी० ५।६,२६;

६।१८२,१८४,२५६,२६२,२६६

तेउक्काइय [तेजस्कायिक] जी० १।७५,७६,७९,

८०; २।१००,१३६,१३८,१४६,१४६; ५।१,१३,

१८,२०; ८।१,५

तेउलेस्स [तेजोलेश्य] जी० ६।१८५,१८६,१८६

तेउलेस्सा [तेजोलेश्या] जी० ३।११०१

तेँदिय [त्रीन्द्रिय] जी० ६।१६७,२२१,२२६,२५६

तेँदुय [तिन्दुक] जी० १।७२

तेजससमुग्घाय [तेजससमुद्घात] जी० ३।१११२,

१११३

तेणाणुबंधि [स्तेनानुबन्धिन] ओ० ४३

तेणामेव [तत्रैव] रा० ७५४ जी० ३।५४३

तेणिस [तेनिस] जी० ३।२८५

तेतलि [तेजस्तलिन, तेतलिन्] जी ३।६३१

तेत्तीस [त्रयस्त्रिंशत्] ओ० १६७. जी० १।६६

तेत्तीसम [त्रयस्त्रिंश] रा० १६४

तेमासिय [त्रैमासिक] ओ० ३२

तेमासिया [त्रैमासिकी] ओ० २४

तेय [तेजस्] ओ० २२,४७,५७,६५,७१,७२,१८२.

रा० ६१,१३३,७२३,७७७,७७८,७८८,८१३.

जी० ३।३०३,५८६,११२२

तेयसि [तेजस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६

तेयम [तेजस] जी० ६।१७६

तेयगसरीरि [तेजसशरीरिन्] जी० ६।१७०,१७४

तेयय [तेजस] जी० १।१५,५६,६४,७४,७६,८२,

८५,९३,१०१,११६,१२८,१३५

तेया [तेजस] जी० ३।१२६।६; ६।१८१

तेयासमुग्घात [तेजससमुद्घात] जी० ३।१११३

तेयासमुग्घाय [तेजससमुद्घात] जी० ३।१५७

तेयाहिय [व्याहिक] जी० ३।६२८

तेर [त्रयोदशन्] जी० ३।२६६।४

तेरस [त्रयोदशन्] ओ० १५५. रा० १८८.

जी० ३।३४

तेरासिय [त्रैराशिक] ओ० १६०

तेरल [तेल] ओ० ६३,६२,६३. रा० १६१,२५८,

२७६. जी० ३।३३४,४१६,४४५

तेरलग [तेलक] जी० ३।५८६

तेरलापूय [तेलापूप] ओ० १७०. जी० २।२६०

तेरलापूव [तेलापूप] जी० ३।८६

तेखण [त्रिपञ्चाशत्] जी० १।१११

तेवीस [त्रयोविंशति] जी० ३।७३६

तोण [तूण] ओ० ६४. रा० १७३,६८१.

जी० ३.२८५

तोमर [तोमर] ओ० ६४. जी० ३।११०

तोमरग [तोमराग] जी० ३।८५

तोय [तोय] ओ० २७

तोयपट्ट [तोयपृष्ठ] ओ० ४६

तोरण [तोरण] ओ० १,२,५५,६४. रा० २० से

२३,३२,१३८ से १६१,१७३,१७६,२०२,२३४,

२७७,२८१,२८८,३१२,४७३,६४५,६५५,६८१

जी० ३२८५, २८८ से २६१, ३१५ से ३३४,
३५५, ३६३, ३७२, ३६६, ४२५, ५४३, ४४७,
४५४, ४७०, ५३२, ५५४, ५५६, ५७६, ५६७,
६०४, ६४१, ६६६, ६८४, ८५७, ६०१

त्ति [इति] रा० ६

(थ)

थंभ [स्तम्भ] रा० २०

थंभणया [स्तम्भन] ओ० १०३, १२६

थंभिय [स्तम्भित] ओ० २१, ४७, ५४, ६३, ७२.
रा० ८. जी० ३१४५७

थक्कार [दे०]—थक्कारेति. रा० २८१.

जी० ३१४४७

थण [स्तन] ओ० १५. जी० ३१५६७

थणिय [स्तनित] ओ० ४८, ७१. रा० ६१

थणियकुमार [स्तनितकुमार] जी० २१६

थणियकुमारी [स्तनितकुमारी] जी० २३७

थणियसद् [स्तनितशब्द] जी० ३१८१

थलचर [स्थलचर] जी० २१२२

थलज [स्थलज] जी० ३१७१

थलय [स्थलज] रा० ६, १२

थलयर [स्थलचर] ओ० १५६. जी० ११६७, १०२

से १०४, ११२, ११७, १२०, १२४; २१६, २३,
२४, ६६, ७२, ७६, ६६, १०४, ११३, १३६, १३८,
१४६, १४६; ३१३७, १४१ से १४४, १६१ से
१६३

थलचरी [स्थलचरी] जी० २१३, ५, ५१, ६६, ७२,
१४६, १४६

थवह्य [स्तवकित] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.

जी० ३१२६८, २७४

थाम [स्यामन्] ओ० २७

थारुइणिया [थारुकिनिका] ओ० ७०. रा० ८०४

थाल [स्थाल] रा० १५०, २५८, २७६.

जी० ३१३२३, ३५५, ४१६, ४४५, ५८७, ५६७

थालइ [स्थालकिन्] ओ० ६४

थालिपाक [स्थालीपाक] जी० ३१६१४

थालिपाग [स्थालीपाक] जी० ३१६१४

थाली [स्थाली] जी० ३१७८

थावर [स्थावर] जी० ११११, १२, ७४, १३७, १३६,
१४१, १४३

थावरकाय [स्थावरकाय] जी० ३१७४

थासग [स्थासक] ओ० ६४

थिवुग [स्तिवुक] जी० ११६४, ६५

थिभुग [स्तिवुक] जी० ३१६५६

थिभुय [स्थिवुक] जी० ३६४३

थिमिओवय [दे० स्तिमितोदक] ओ० १११ से
११३, १३७, १३८

थिमिय [दे० स्तिमित] ओ० १. रा० १, ७५,
६६८, ६६६, ६७६, ६७७

थिर [स्थिर] ओ० १६. रा० १२, ७५८, ७५६.
जी० ३११८, ५६६, १०६८

थिल्लि [दे०] ओ० १००, १२३. जी० ३१५८१,
५८५, ६१७

थीह [दे०] जी० ११७३

थुक्कार [थुक्कार्य]—थुक्कारेति. रा० २८१.
जी० ३१४४७

थूम [स्तूप] जी० ३१४१२, ५६७, ६०४

थूममह [स्तूपमह] रा० ६६८. जी० ३१६१५

थूभाभिमुह [स्तूपाभिमुख] रा० २२५.

जी० ३१३८४, ८६६

थूभियग्ग [स्तूपिकाय] ओ० १६२

थूभियाग [स्तूपिकाक] रा० ३२, १२६, १३०,
१३७, २१०, २१२. जी० ३१३००, ३०७, ३५४,
३७२, ३७३, ६४७, ८८५

थूभियाय [स्तूपिकाक] जी० ३१३००

थूल [स्थूल] ओ० ७७

थूलय [स्थूलक] ओ० ११७, १२१. रा० ७६६

थेज्ज [स्थैर्य] रा० ७५० से ७५३

थेर [स्थविर] ओ० २५, ४०, १५१. रा० ६८७,
८१२. जी० १११; ३११

थेरवेयावच्च [स्थविरवेयावृत्त्य] ओ० ४१

थोव [स्तक] ओ० २८, १७१. जी० १।१४३;
 रा६८ से ७३, ६५, ६६, १३४ से १३८, १४१
 से १४६; ३।५६७. ८४१, १०३७, ११३८;
 ४. १६ से २३, २५; ५।१८ से २०, २५ से २७,
 ३१ से ३६, ५२, ५६, ६०; ६।१२; ७।२०, २२,
 २३; ८।५; ९।५ से ७, १४, १७, २०, २७ से २९,
 ३५, ३७, ५५, ६१, ६२, ६६, ७४, ८७, ९४, १००,
 १०८, ११२, १२०, १३०, १४०, १४७, १५५,
 १५८, १६६, १६९, १७१, १८४, १९६, २०८,
 २२०, २३१, २५० से २५३, २५५, २६६, २८६
 से २९३

थोवतरक [स्तोकरक] जी० ३।१०१, ११४

थोवतरग [स्तोकरक] जी० ३।६६, ११३

द

दओभास [दकावभास] जी० ३।७३५, ७४०, ७४१,

दंड [दण्ड] ओ० १२, ६४, १७४. रा० १०, १२, १८,

२२, ५१, ६५, १५६, १६०, २५६, २७६, २९२,

६६४, ६७५, ७५५, ७६०, ७६१, ७६७, ७६८,

७७६, ७७७. जी० ३।११७, २६०, ३३२, ३३३,

४१७, ४४५, ४५७, ५६२, ५८६

दंडणायक [दण्डनायक] ओ० १८

दंडणायग [दण्डनायक] रा० ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४

दंडणीइ [दण्डनांति] रा० ७६७

दंडनायग [दण्डनायक] ओ० ६३

दंडपाणि [दण्डपाणि] रा० ६६४

दंडय [दण्डक] रा० ७५५

दंडलक्षण [दण्डलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

दंडसंपुच्छणी [दि० दण्डसंपुच्छणी, दण्डसंपुच्छनी]
 रा० १२

दंडि [दण्डिन्] ओ० ६४

दंत [दन्त] ओ० १६, २५, ४७, ६४. रा० २५४,

७६०, ७६१. जी० ३।४१५, ५६६

दंत [दान्त] ओ० १६४

दंत [पात्र] [दन्तपात्र] ओ० १०५, १२८

दंत [बंधण] [दन्तबन्धन] ओ० १०६, १२६

दंतमाल [दन्तमाल] जी० ३।५८२

दंतवेदणा [दन्तवेदना] जी० ३।६२८

दंतुक्खलिय [दन्तोलूखलिक] ओ० ६४

दंस [दंश] ओ० ८६, ११७. रा० ७६६. जी०
 ३।६२४, ६३१।३

दंसण [दर्शन] ओ० १५, १६ से २१, ४६, ५१ से
 ५४, ६४, १४३, १५३, १६५, १६६, १८३, १८४.

रा० ८, ५०, ७०, १३३, २६२, ६८६, ६८७, ६८९,

७१३, ७३८, ७६८, ७७१, ८१४. जी० १।१४,

६६, १०१, ११६, १२८, १३३, १३६; ३।३०३,

४५७, ११२२

दंसणविणय [दर्शनविनय] ओ० ४०

दंसणसंपण [दर्शनसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६

दंसणोवलंभ [दर्शनोपलम्भ] रा० ७६८

दक्ष [दक्ष] ओ० ६३. रा० १२, ७५८, ७५९,

७६५, ७६६, ७७०. जी० ३।११८

दक्षिण [दक्षिण] जी० ३।५६०, ५६६, ६३६, ६७३,
 ७४०, ७४१

दक्षिणकूलग [दक्षिणकूलग] ओ० ६४

दक्षिणपच्चत्थियम [दक्षिणपञ्चात्य] जी० ३।६८७

दक्षिणपुरत्थियम [दक्षिणपूर्वस्त्य] जी० ३।६८६

दक्षिणिल्ल [दक्षिणात्य] जी० ३।४८६

दक [दक] रा० १२. जी० ३।७४१

दकएककारसम [दकैकादश] ओ० ६३

दककलसग [दककलशक] रा० १२

दककुंभग [दककुम्भक] रा० १२

दकतइय [दकतृतीय] ओ० ६३

दकथालग [दकस्थालक] रा० १२

दकधारा [दकधारा] रा० २६३ से २६६, ३००,
 ३०५, ३१२, ३५१, ३५५, ५६४. जी० ३।४५७

से ४६२, ४६५, ४७०, ४७३, ५१७, ५२०, ५४७,
 ५५४

दकपासायग [दकप्रासादक] रा० १८०. जी०
 ३।२६२

दकपासायय [दकप्रासादक] रा० १८१

दगबिद्य [दकद्वितीय] ओ० ६३
 दगमंचाय [दकमञ्चक] रा० १८०. जी० ३१२६२
 दगमंचाय [दकमञ्चक] रा० १८१
 दगमंडय [दकमण्डप] रा० १८१
 दगमंडव [दकमण्डप] रा० १८०
 दगमंडवग [दकमण्डपक] जी० ३१२६२
 दगमट्टिया [दकमृत्तिका] ओ० १४६. रा० ८०६
 दगमालग [दकमालक] रा० १८०. जी० ३१२६२
 दगमालय [दकमालक] रा० १८१
 दगरय [दकरजस्] ओ० १६, ४६, ४७, १६४. रा०
 ३८, १६०, २२२, २५६. जी० ३१२८२, ३१२,
 ३३३, ३८१, ४१७, ५७६, ५६७, ८६४
 दगवार [दकवार] जी० ३११६
 दगवारक [दकवारक] जी० ३१५८७
 दगवारग [दकवारक] रा० १२
 दगसत्तम [दकसप्तम] ओ० ६३
 दगसीम [दकसीम] जी० ३१७३५, ७४५ से ७४७
 दग्धा [दत्वा] रा० ६६७
 दद्गु [दग्ध] ओ० १८४
 दढ [दृढ] ओ० १, १४२, १४४. रा० १२, ७५८,
 ७५६, ८००, ८०२. जी० ३११८
 दढपइण्ण [दृढप्रतिज्ञ] ओ० १४४ से १५०, १५४.
 रा० ८०२, ८०५ से ८११, ८१६
 दढपतिण्ण [दृढप्रतिज्ञ] रा० ८०४
 दढरहा [दृढरथा] जी० ३१२५४
 दढाउ [दृढावुष्] जी० ३११७
 दहर [दे० दर्दर] ओ० २, ५२, ५५. रा० ३२, १५६,
 २७६, २८१, २८५. जी० ३१३२, ३७२, ४४५,
 ४४७, ४५१, ५६४
 दहरग [दे० दर्दरक] रा० ७७. जी० ३१५८७
 दहरय [दे० दर्दरक] रा० २८१. जी० ३१७८,
 ४४७
 दहरिया [दे० दर्दरिका] रा० ७७
 दवुदुर [दर्वुर] ओ० ५१. जी० ३११०३८
 दधि [दधि] जी० ३१५६७

दधिघण [दधिघन] रा० १३०. जी० ३१३००
 दधिमुह [दधिमुख] जी० ३१६११, ६१२
 दधिवासुयमंडवग [दधिवासुयमण्डपक] जी०
 ३१२६६
 दप्पण [दर्पण] ओ० १२, १६. रा० २१, ४६, २६१.
 जी० ३१२८६, ३४७, ५६६
 दप्पणय [दर्पणक] ओ० ६४
 दप्पणिज्ज [दर्पणीय] ओ० ६३. जी० ३१६०२,
 ८६०, ८६६, ८७२, ८७८
 दढभसंधारग [दर्भसंधारक] रा० ७६६
 दमणा [दमनक] रा० ३०. जी० ३१२८२
 दमिला [द्रविडा, द्रमिला] रा० ८०४
 दमिली [द्रविडा, द्रमिला] ओ० ७०
 दयपत्त [दयाप्राप्त] ओ० १४.^१ रा० ६७१
 दयरय [दकरजस्] रा० २६
 दरिमह [दरीमह] रा० ६८८
 दरिय [दृप्त] ओ० ६. जी० ३१२७५
 दरिसण [दर्शन] रा० ८०३
 दरिसणावरणिज्ज [दर्शनावरणीय] ओ० ४४
 दरिसणिज्ज [दर्शनीय] ओ० १, ५, ७, ८, १० से १३
 १५, ४६, ६४, ७२, १६४. रा० १७ से २३, ३२, ३४
 ३६ से ३८, ५०, १२४, १३०, १३१, १३६, १३७,
 १४५, १५७, १७४, १७५, २२८, २३१, २३३,
 २४५, २४७, २४६, ६६८, ६७०, ६७२, ६७६,
 ७००, ७०२. जी० ३१८४, २३२, २६१, २६६,
 २६६, २७८, २७६, २८६ से २८८, २९०, ३००,
 ३०३, ३०६, ३०७, ३११, ३८७, ३६३, ४०७, ४१०,
 ५८१, ५८४, ५८५, ५६६, ५६७, ६३६, ६७२,
 ८३६ ८५७, ८६३, ११२१, ११२२
 दरिसणीय [दर्शनीय] रा० १
 दरी [दरी] जी० ३१६२३
 दस [दल] जी० ३१२८२, ५६७
 दलइत्ता [दत्वा] ओ० २१. रा० २६३.
 जी० ३१४५८

१. प्रान्तकरुणामुणः [वृ] । दयाप्राप्तः स्वभावतः शुद्धजीवद्रव्यत्वात् ।

दलय [दलक] रा० २६
 √दलय [दा]—दलइस्संति. ओ० १४७. रा०
 ८०८—दलइस्सामि. रा० ७८७—दलएज्जा.
 रा० ७७६—दलयइ. ओ० २१. रा० २६३
 जी० ३१५१५—दलयति. रा० २८१. जी०
 ३१४४७—दलयति. जी० ३१४५८
 दलयिता [दत्वा] रा० २६३
 दधकर [द्रवकर] ओ० ६४
 दधग्नि [दवाग्नि] जी० २१६८; ३:११८,११६
 दधग्निद्वद्धम [दवाग्निदग्धक] ओ० ६०
 दधपिय [द्रवपिय] ओ० ४६
 दध्व [द्रव्य] ओ० २८,४६,६६,७०. रा० ७७८.
 जी० १३३; ३१२२,२३,२७,४५,५०६,५६२;
 ५१५१
 दध्वओ [द्रव्यतस्] ओ० २८. जी० १३३
 दध्वहु [द्रव्यार्थ] जी० ५१५२,५६,६०
 दध्वद्वया [द्रव्यार्थ] रा० १६६. जी० ३१५८,८७,
 २७१,७२४,७२७,१०८१
 दध्वविउसग्य [द्रव्यव्युत्सर्ग] ओ० ४४
 दध्वभिग्गहचरय [द्रव्याभिग्रहचरक] ओ० ३४
 दध्वीकर [दर्वीकर] जी० १११०६,१०७
 दध्वोमोदरिया [द्रव्यावमोदरिका] ओ० ३३
 दस [दशन] ओ० ४७. रा० ८. जी० ११७४
 दसण [दशन] जी० ३५६७
 दसणुप्पडियग [उत्पाटितकदशन] ओ० ६०
 दसदसमिका [दशदशकिका] ओ० २४
 दसद्ध [दशार्थ] रा० ६. जी० ३१४५७
 दसमभक्त [दशमभक्त] ओ० ३२
 दसविष [दशविष] जी० ६११,२५६
 दसविह [दशविष] ओ० ३६,४१. जी० ११४,१०;
 २१६; ३१२१; ६१८,२६७,२६३
 दह [द्रह] रा० २७६. जी० ३१४४५,६३६,६४०,
 ६६६,७७५,६३७
 दहमह [द्रहमह] जी० ३१६१५
 दहि [दधि] ओ० ६२,६३
 दहिघण [दधिघन] रा० २६. जी० ३१२८२

दहिता [दग्धवा] जी० ३१५१६
 दहिवण [दधिघण] ओ० ६,१०. जी० ३१३८८
 दहिवासुयमंडवग [दधिवासुकामंडपक] रा० १८४
 दहिवासुयमंडवय [दधिवासुकामण्डवक] रा० १८५
 √दा [दा]—दिज्जइ रा० ७८४—देइ रा० ७६६
 दाइय [दायिक] ओ० २३. रा० ६६५
 दाऊण [दत्वा] रा० २६२. जी० ३१४५७
 दाडिम [दाडिम] ओ० ६,१०. जी० ११७२;
 ३१५६६,५६७
 दाण [दान] ओ० २३. रा० ६६५
 दाणधम्म [दानधर्म] ओ० ६८
 दातु [दातृ] ओ० ११७
 दाम [दामन्] रा० २८,३२,४०,५१,६७,१३०,
 १३२,१३७,१४०,१५८, २३५,२५५,२६५,
 २८१,२६१,२६४,२६६,३००,३०५,३१२,
 ३५५,६८३,६६२,७००,७१६. जी० ३१२८१,
 ३००,३०२,३१३,३३१,३३८,३५५,३५६,
 ३६७,४१२,६३४,८६२
 दामिणि [दामिनी] जी० ३१५६७
 दामिल [द्राविड] जी० ३१५६५
 दार [द्वार] ओ० १,१६२. रा० १२६ से १३८,
 १६२ से १६६,२१० से २१२,२१५,२७७,
 २८३,२८६,२८८,२६१,२६४ से २६६,३०१ से
 ३०४,३२२ से ३२४,३२७ से ३२६,३३१ से
 ३३४,३३६,३३७,३३६,३४१,३४२,३५१,३५७,
 ३६४,३६५,४१४,४१६,४५३,४५४,४७४,
 ४७७,५१४,५१५,५३४,५३७,५७४,५७५,
 ५६४,५६७,६३४,६३५,६५४,६५५,६५७. जी०
 ३१२६६ से ३०७,३१५,३३५,३३६,३४६ से
 ३५१,३५४ से ३५७,३७३,३७७,४१२,४२१,
 ४४३,४४४,४४६,४५२,४५४,४५७,४५६ से
 ४६१,४६३,४६४,४६६,४६८,४६६,४७५,
 ४७६,४८७ से ४८६,४६१ से ४६४,४६६ से
 ४६६,५०१,५०२,५०४,५०६,५०७,५१६,
 ५१७,५२२,५२४ से ५२६,५२८,५३०,५३१,
 ५३३,५३६,५३८ से ५४०,५४३,५४५ से

५४७, ५५०, ५५२ से ५५४, ५५७, ५६३, ५६६,
 ५६८ से ५७०, ५६४, ६४७, ६७३, ६७४, ७०७
 से ७११, ७१३, ७१४, ७६६ से ८०२, ८१३ से
 ८१५, ८२४ से ८२७, ८५१, ८५२, ८८५ से
 ८८८, ९३६, ९४०, ९४४, ९५५
दारग [दारक] ओ० १४२, १४४ से १४७, रा०
 ८००, ८०२, ८०४ से ८१०
दारचेडा [द्वारचेटा] रा० १३०, २६४, २६६, २६८
 २६९ जी० ३३००
दारचेडी [द्वारचेटी] जी० ३४५६, ४६१
दारय [दारक] ओ० १४३, १४४, १४८, से १५०
 रा० १२, ८०१, ८०२, ८०६, ८११
 जी० ३११८, ११६
दारुइज्जपव्वय [दारुकीयपर्वत] रा० १८१
दारुइज्जपव्वयय [दारुकीयपर्वतक] रा० १८०
दारुपव्वयय [दारुपर्वतक] जी० ३१२६२
दारुपाय [दारुपात्र] ओ० १०५, १२८
दारुय [दारुक] ओ० ६४
दारुयाग [दारुकक] जी० ३१२-५
दारुयाय [दारुकक] रा० १७३, ६०१
दालिम [दाडिम] ओ० १६
दास [दास] ओ० १४, १४१. रा० ६७१, ७७४,
 ७६६. जी० ३१६१०, ६३११२
दासी [दामी] ओ० १४, १४१. रा० ६७१, ७७४,
 ७६६
दाह [दाह] रा० ७६५. जी० ३१४०, ३१११८,
 ११६, ६२८
दाह्णि [दक्षिण] ओ० २१, ५४. रा० ८, १६, ४०,
 ४३, ४४, ६६, १२४, १३२, १७०, १७३, २१०,
 २१२, २३५, २३६, २६२, ६६१, ६६४. जी०
 ३१२७०, २१६ से २२१, २६५, २८५, ३४२,
 ३४५, ३५८, ३७३, ३६७, ३६८, ४५७, ५६२, ५६६,
 ५६७, ५६९, ५७७, ६४७, ६६८, ६८२, ६८६
 ६९२, ६९५, ६९६, ७११, ८८२, ८८५, ९०२,
 १०१५, १०३६

दाह्णिपक्कत्थिम [दक्षिणागच्छात्थ] रा० ४३,
 ६६२. जी० ३१२२४, ३४३, ५६०, ७५२
दाह्णिपक्कत्थिमिल्ल [दक्षिणागच्छात्थ] जी०
 ३१२२०, ६६४, ६६५, ६१८, ६२१
दाह्णिपुरत्थिम [दक्षिणपौरत्थय] रा० ४३, ६६०.
 जी० ३१३४१, ५६०, ७५१
दाह्णिपुरत्थिमिल्ल [दक्षिणपौरत्थय] रा० ५६
 जी० ३१३१६, २२३, ६६२, ६६३, ६१८, ६२०
दाह्णिवाय [दक्षिणवात] जी० १:८१
दाह्णिहत्थ [दक्षिणहस्त] ओ० ६६
दाह्णिहत्तल [दक्षिणात्थ] रा० ४८, ५७, २६४ से
 ३०५, ३०६ से ३१२, ३२०, ३२१, ३२५, ३३४,
 ३३६, ३४४, ३५७, ४१६, ४७७, ५३७, ५६७.
 जी० ३१३३, ३८, २१७, २१६ से २२३, २२५,
 २३४, २४४, २५०, २५३, ४५६ से ४७०, ४७४
 से ४७७, ४८५, ४९०, ४९५, ४९६, ५०४, ५०६,
 ५२२, ५२८, ५३६, ५४३, ५५०, ६३२, ६३६,
 ६६६, ६७३, ६६३, ६६४, ६१४
दिट्ठत्थिय [दाण्डान्तिक] रा० ११७, २८१.
 जी० ३१४४७
दिट्ठुलाभिय [द्वृट्ठलाभिक] ओ० ३४
दिट्ठि [दृष्टि] रा० ७४८ से ७५०, ७७३.
 जी० ११४, ६६, १०१, ११६, १२८, १३३, १३६;
 ३१२३, १६०
दिट्ठिय [दृष्टिक] रा० ७६५
दिट्ठियाय [दृष्टिगार] रा० ७४२
दिणयर [दिनकर] जी० २२. रा० ७२३, ७७७,
 ७७८, ७८८. जी० ३१८३८१२, १३, २६
दिण [दत्त] ओ० २, १७, ५५, १११ से ११३,
 १३७, १३८. रा० १५, ३२, २८८, ७८७, ७८८.
 जी० ३४४७
दित्त [दृप्त, दीप्त] ओ० १४, १४१. रा० ६७१,
 ६७५, ७६६
दित्त [दीप्त] ओ० ६३, ६५ जी० ३१८३८२६
दित्ततव [दीप्ततपम्] ओ० ८२
दित्ततेय [दीप्ततेजस्] ओ० २७. रा० ८१३

दिन्न [दत्त] जी० ३।३७२

दिप्यंत [दीप्यमान] ओ० ६३. रा० १३३.

जी० ३।३०३, ५८६, ५६०, ११२२

दिप्यमाण [दीप्यमान] ओ० ६५. जी० ३।५६१

विचङ्गु [द्व्यर्ध, द्व्यपार्ध] जी० २।७३; ३।२३८,
२४३

दिवस [दिवस] ओ० १४४. रा० ८०२.

जी० ३।८३८।१८, ८४१

दिव्य [दिव्य] ओ० २, ४७, ६४, ७२. रा० ७, ६,

१०, १२, १७ से १६, २५, ३२, ४५ से ५०, ५६, ५७,

६३, ६५, ७३, ७६, ७८ से ६५, १०० से ११३.

११८ से १२०, १२२, १७३, २०६, २११, २७६,

२८१, २८५, २८३ से २६६, ३००, ३०५, ३१२,

३५१, ३५५, ५६४, ६६७, ७५३, ७६७.

जी० ३।८६, १७६. १७८, १८०, १८२, २८५,

३५०, ३७२, ४४५, ४४६, ४५१, ४५७ से ४६२,

४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५४७, ५५४,

५६३, ६४६, ८४२, ८४५, १०२४, १०२५,

दिव्या [दिव्याक] जी० १।१०८

दिसा [दिशा] ओ० ४७, ७२, ७६ से ८१.

रा० २६४, ६८८. जी० ३।३६, ७५२, ७५३,

१०१८, १०१६, १०२१

दिसाकुमार [दिशाकुमार] ओ० ४८

दिसादाह [दिशादाह] जी० ३।६२६

दिसापोकिल [दिशाप्रोक्ति] ओ० ६४

दिसासोत्थिय [दिशास्वस्तिक] ओ० १६

दिसासोवत्थिय [दिशासौवस्तिक] रा० १४६.

जी० ३।३१६, ५६६

दिसासोवत्थियासन [दिशासौवस्तिकसन]

रा० १८१, १८३, १८५. जी० ३।२६३, २६५,

२६७, ८५७

दिसि [दिग्] रा० १६, ४४, ६१, १२०, १७०, १७५,

२०२, २१०, २१२, २२४, २३४, ६६४, ६६४,

६६७, ७१७, ७७७, ७८७. जी० १।४६, ५६,

८२, ८७, ६६, १०१; ३।३४, ३५, २८७, ३५८,

३६३, ३७३, ३८३, ३९६, ६४७, ६६६, ६७३,

६७४, ६८४, ७२३, ८८२, ८८५, ८८८ ८६५,

६१०, ६१४ से ६१६, ६१६ से ६२२

दिसिद्वय [दिग्द्वय] ओ० ७७

दिसीभाग [दिग्भाग] रा० १०, १२, १८, ५६, ६५,

२७६, ६७०. जी० ३।४४५

दिसीभाय [दिग्भाग] ओ० २. रा० २, ६७८

दीणारमालिधा [दीणारमालिका] जी० ३।५६३

दीव [द्वीप] ओ० १६, २१, ४८, ५४, १७०. रा० ७,

१०, १२, १३, १५, ५६, १२४, २७६, ६६८.

जी० ३।८६, २१७, २१६ से २२३, २२५ से

२२७, २५७, २५६, २६०, २६६, ३००, ३५१,

४४५, ५६६, ५६८ से ५७७, ६३८, ६६०, ६६८,

७०१ से ७०४, ७०८, ७११, ७१५ से ७१६,

७२३, ७३६, ७३६, ७४०, ७४२, ७४५, ७५०,

७५४, ७५५, ७६०, ७६२, ७६४ से ७६६, ७६८

से ७८०, ७६५ से ८००, ८०२ से ८०४, ८०६,

८०८ से ८१०, ८१४, ८१६, ८१७, ८२१ से

८२५, ८२७, ८२६ से ८३१, ८३८, ८३९, ८४३,

८४८, ८५१, ८५६, ८५७, ८५६, ८६२, ८६३,

८६५, ८६८, ८६६, ८७१, ८७४, ८७५, ८७७,

८८० से ८८२, ८९८, ८९५, ८९७ से ९३५,

९३७ से ९४०, ९४३, ९४५, ९५० से ९५४,

९७२ से ९७५, १००१, १००७, १०२२, १०३६,

१०८०, ११११

दीव [दीप] रा० ७७२

दीवग [द्वीपक] जी० ३।७७०

दीवचंपग [दीपचम्पक] रा० ७७२

दीवचंपय [दीपचम्पक] रा० ७७२

दीवणिञ्ज [दीपनीय] जी० ३।६०२, ८६०, ८६६,

८७२, ८७८

दीवशिहा [दीपशिखा] जी० ३।५८६

दीवायण [दीमायन] ओ० ६६

दीविच्चग [द्वीपग] जी० ३।७८०

दीविम [द्वीपिक] जी० ३।६२०

दीविय [दीपिक] रा० २४. जी० ३।८४, २७७

दीविया [दीपिता] जी० ३.५८६

दीविल्लय [दीपण] जी० ३।७७५

दीह [दीर्घ] ओ० १४, १६, २८, ११६, ११७,
१६५।४. रा० १६०, २५६, ६७१, ७६५, ७७४.
जी० ३।३३३, ४१७, ५६६, ५६७

दीहासन [दीर्घासन] रा० १८१, १८३.

जी० ३।२६३

दीहिया [दीर्घिका] ओ० १, ६, ६६. रा० १७४,
१७५, १८०. जी० ३।२७५, २८६

√दीहीकर [दीर्घी + कृ]—दीहीकरेज्जा.

जी० ३।६६७

दीहीकरितए [दीर्घीकृतम्] जी० ३।६६४ से ६६७

दु [द्वि] रा० ४७. जी० १।६

दुंदुभिस्सर [दुन्दुभिस्वर] ओ० ७१. रा० ६१

दुंदुहिनिग्घोस [दुन्दुभिनिर्घोष] ओ० ६७.

रा० १३, १३५. जी० ३।४४६, ५५७

दुदुहिनिग्घोस [दुन्दुभिनिर्घोष] रा० ६५७.

जी० ३।५५७

दुंदुहिस्सर [दुन्दुभिस्वर] रा० १३५.

जी० ३।३०५

दुंदुही [दुन्दुभी] रा० ७७

दुक्ख [दुख] ओ० २६, ४६, ७२, ७४।१, ४, ५,

१५४, १६५, १६६, १७७, १८१, १६५।२१.

रा० ७७१, ७६५, ८१६. जी० १।१३३;

३।११०; १२६।७, ८; ८३८।१३

दुक्खुत्तो [द्विम्] जी० ३।७३०, ७३१

दुखुर [द्विधुर] जी० १।१०३

दुगुण [द्विगुण] जी० ३।२५६

दुगुणित [द्विगुणित] जी० ३।५६७

दुगुणिय [द्विगुणित] जी० ३।८३४।२४

दुगुल्ल [दुकूल] रा० ३७, २४५. जी० ३।३११,

४०७, ५६५

दुग्ग [दुर्ग] रा० ७६५. जी० ३।११०

दुग्गंघ [दुर्गन्ध] रा० ७५३

दुघण [दुवण] रा० १२, ७५८, ७५९.

जी० ३।११८

दुघरंतरिय [द्विगृहान्तरिक] ओ० १५८

दुच्चिण्ण [दुष्चीर्ण] ओ० ७१

दुट्ठ [दुष्ट] ओ० ४६

दुत [दुत] जी० ३।४४७

दुतविलंबित [दुतविलम्बित] जी० ३।४४७

दुद्ध [दुग्ध] जी० ३।५६२

दुद्धजाति [दुग्धजाति] जी० ३।५८६

दुद्धरिस [दुर्धर्ष] ओ० २७. रा० ८१३

दुपडोयार [द्विप्रत्यावतार, द्विपदावतार] ओ० ५२.
रा० ६८७

दुपय [द्विपद] रा० ७०३, ७१८

दुपाय [द्विपक] जी० ३।११८, ११९

दुप्पय [द्विपद] रा० ६७१

दुप्पवेस [दुष्प्रवेश] जी० १

दुफास [दुःसर्श] जी० ३।६८१

दुफासत्त [दुःस्पर्शत्व] जी० ३।६८७

दुब्बल [दुर्बल] ओ० १४. रा० ६७१, ७६०, ७६१.
जी० ३।११८, ११९

दुब्बलय [दुर्बलक] रा० ७६१

दुब्बिक्ख [दुर्भिक्ष] ओ० १४. रा० ६७१

दुब्बिक्खभत्त [दुर्भिक्षभक्त] ओ० १३४

दुब्बिक्खमयग [दुर्भिक्षमृतक] ओ० ६०

दुब्बिगंघ [दुर्गन्ध] रा० ६, १२. जी० १।५, ३६,
३७, ५०; ३।२२, ६२२, ६७६, ६८५

दुब्बिगंघत्त [दुर्गन्धत्व] जी० ३।६८५

दुब्बिसह [दुःशब्द] जी० ३।६७७, ६८३

दुब्बिसहत्त [दुःशब्दत्व] जी० ३।६६३

दुब्भूय [दुर्भूत] जी० ३।६२८

दुभागपत्तोमोवरिय [द्विभागपत्तावमोवरिक]
ओ० ३३

दुम [दुम] रा० १३६. जी० ३।३०६, ५८२, ५८६
से ५६५, ६०४

दुमासपरियाय [द्विमासपर्याय] ओ० २३

दुय [दुत] रा० १०२, ६८१

दुयविलंबिय [द्रुतविलम्बित] रा० ६१, १०४,
२८१

दुयाह [द्वयह] जी० ३।८६, ११८, ११६, १७६,
१७८, १८०, १८२

दुरन्त [दुरन्त] रा० ७७४

दुरभि [दुरभि] जी० ३।८४

दुरस [दूरस] जी० ३।६८०

दुरहियास [दुरध्यास, दुरधिसह] रा० ७६५.
जी० ३।११०, १११, ११७

√दुरुह [आ + रुह]—दुरुहइ. रा० ६८५—
दुरुहंति. रा० ४८. —दुरुहति. रा० ४७—
दुरुहेति. रा० ६८३

दुरहिता [आरुह्य] रा० ४७

दुरुहेता [आरुह्य] रा० ६८३

दुरुढ [आरुढ] ओ० ६३, ६४. रा० १३, ४६

दुरुव [दूरुव] जी० ३।६७८, ६८४

√दुरुह [आ + रुह]—दुरुहति. ओ० ७०

दुरुहिता [आरुह्य] ओ० ७०

दुरुहितार्ण [आरुह्य] ओ० १०१

दुर्लभ [दुर्लभ] रा० ७५० से ७५३

दुर्लभबोहिय [दुर्लभबोधिक] रा० ६२

दुव [द्वि] जी० ३।२५१

दुवारवयण [द्वारवदन] रा० ७५५, ७७२

दुवालस [द्वारदशन] ओ० ३३. जी० ३।३३

दुवालसंगि [द्वारदशाङ्गिन्] ओ० २६

दुवालसविह [द्वारदशविध] रा० ५२ ७७, ७८.
जी० १।६६

दुवासपरियाय [द्विवर्षपर्याय] ओ० २३

दुविष [द्विविध] जी० ३।१३६, १४०, १४१, १६३,
११२२; ६।१३७

दुविह [द्विविध] ओ० ३२, ४०, ७४. रा० ७४१ से
७४५. जी० १।२, ३, ५ से ७, १०, ११, १३, १४,
५७, ५८, ६३, ६५ से ६८, ७०, ७६, ८०, ८१, ८४,
८८, ८९, ९२, ९४, ९६, ९७, १०० से १०४,
१०६, १११, ११२, ११६, ११८ से १२२, १२६,

१२६, १३३, १३५, १३६, १४३; २ ५, ७, १६;
३।७८, ७९, ८१, ८२, ८१, ८३, १२७।५, १३२ से
१३५, १३८, १३९, १४२ से १४६, २१२, २२६,
६७७ से ६८१, १०२२, १०७१ से १०७४,
१०८७, १०६१, १११०, ११२१; ४।२; ५।२ से
४, ३७ से ४०, ५३ से ५५; ६।८, ६, ११,
१५, १६, १८, २१, २२, २४, २८ से ३१, ३६,
३८, ३९, ४२, ४४, ४६, ५६, ५८, ६२, ६३, ६५,
६६, ६८, ७६, ७९, ८१, १२५, १३३, १५१,
१७४

दुखण [दुर्वर्ण] जी० ३।५६७

दुहओ [द्वितस्, द्वय] रा० ६६, ७०, १३१ से १३८,
२४५, ७५५, ७७२. जी० ३।३०१ से ३०३,
३०५ से ३०७, ३१५, ३५५, ४०७, ५७७

दुहओखहा [द्वितःखहा] रा० ८४

दुहओचक्कवाल [द्वितश्चक्कवाल] रा० ८४

दुहलो [द्वितस्, द्वय] रा० १२३. जी० ३।३०४

दुहा [द्विधा] रा० ७६४, ७६५. जी० ३।८३१

दुइज्जंत [द्वयमाण] ओ० ४६

दुइज्जमाण [द्वयमाण] ओ० १६, २०, ५२, ५३.

रा० ६८६, ६८७, ६८९, ७०६, ७११, ७१३

दुय [द्वित] ओ० १८, ६३. रा० ७५४, ७५६, ७६२,
७६४

दूर [दूर] ओ० १६२. रा० १२४.

जी० ३।१०३८

दूरंगइय [दूरंगतिक] ओ० ७२

दूरसत्त [दूरसत्त्व] जी० ३।६८६

दूराहड [दूराहत] रा० ७७४

दूरुवत्त [दूरुवत्त्व] जी० ३।६८४

दूस [दूष्य] ओ० ५६. जी० ३।६०८

दूसरयण [दूष्यरत्न] ओ० ६३

देव [देव] ओ० ४४, ४७ से ५१, ६८, ७१, ७३, ७४,
८८ से ९५, ११४, ११७, १२०, १४०, १४१,
१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७, १७०,
१६५।१३, १४, रा० ७, ९ से १६, २४, ३२, ४१

से ४४,४६ से ४६,५४ से ६५,६८,६९,७१
 से ७४, ११८ से १२०,१२२,१२४,१२६,
 १८५ से १८७,२४०,२४६,२६६,२६८,२७०,
 २७४ से २६१,६५४ से ६६७,६६८,७५२,७५३,
 ७७१,७८६,७९७ से ७९६,८१५. जी० १।५१,
 ५४,५६,६१,६५,८२,८७,९१,१०१,११६,
 १२३,१२८,१३५,१३६; २।२,१५ से १६,
 ३५ से ३७,३९ से ४७,६२,६७,६८,७१,७२,
 ७५,७८,८१,९० से ९३,९५,९६,१४४,१४५,
 १४८,१४९,१५१; ३।१,८६,१२७,१२६।२,
 १७६, १७८,१८०,१८२,१८४,१८६,१८८ से
 २०६,२१७,२३० से २३४,२३६,२३८,२३९,
 २४२ से २४४,२४६,२४७,२४९ से २५२,
 २५५ से २५७,२६७,२६८,३३६ से ३४५,
 ३५०,३५१,३५८ से ३६०,३७२,४०२,४१०,
 ४२६,४२८,४३५,४३६ से ४५७,५५४ से ५६५,
 ५६७,५६८,६३५,६३७,६३८,६५६,६६४,
 ६६६,६८०,७००,७०१,७१०,७२१,७२४,
 ७३८,७४१,७४३,७४६,७६०,७६३,७६५,
 ७७८,७९५,८०८,८१६,८२६,८४०,८४२,
 ८४३,८४५,८४६,८५४,८५७,८६०,८६३,
 ८६६,८७२,८७५,८८५,९१७,९२३,९२५,
 ९२७ से ९३५, ९३८ से ९४०,९४२ से ९४५,
 ९४७,९५०,९५१,९५४,९८८ से ९९७,९९९,
 १०१५,१०१७,१०२५,१०२७,१०२९,१०३१,
 १०३३,१०३५,१०३८,१०३९,१०४१ से
 १०४४,१०४६,१०४७,१०४९ से १०५६,
 १०८२,१०८३,१०८५ से १०८७,१०८९ से
 १०९३,१०९७ से १०९६,११०१,११०५,
 ११०७,११०९ से १११२,१११४ से १११७,
 १११९ से ११२४,११३२,११३३,११३७,
 ११३८; ६।१,५,७,८,१२; ७.१,७,८,१६ से
 २१,२३; ८।१५६,१५८,२०६,२१३,२१८,२२०,
 २२१,२२६,२२९,२३१,२३२,२४८,२५४,२६७,
 २७४,२८३,२८६,२९१,२९३

देवउक्कलिया [देवोत्कलिका] जी० ३।४४७
 देवउल [देवकुल] रा० १२
 देवकज्ज [देवकार्य] जी० ३।६१७
 देवकम्म [देवकर्मन्] जी० ३।१२६।६,८४०
 देवकहकह [देवकहकह] जी० ३।४४७
 देवकहकहण [देवकहकहण] रा० २८१
 देवकिम्बिसिय [देवकिल्बिसिक] ओ० १५५
 देवकिम्बिसियत्त [देवकिल्बिसिकत्त] ओ० १५५
 देवकुमार [देवकुमार] रा० ६६,७१ से ७५,७६
 से ८१,८३,११२ से ११८
 देवकुमारिया [देवकुमारिका] रा० ८३,११५ से
 ११८
 देवकुमारी [देवकुमारी] रा० ७० से ७५,७६ से
 ८१,११२ से ११४
 देवकुरा [देवकुरु] जी० २।१३; ३।६१६,६३७
 देवकुरु [देवकुरु] जी० २।३३,६०,७०,७२,६६,
 १३७,१३८,१४७,१४९; ३।२२८,७६५
 देवकुल [देवकुल] ओ० ३७. रा० ७५३
 देवगाह [देवगति] रा० १०,१२,५६,२७६
 देवगण [देवगण] रा० ६६८,७५२,७८६.
 जी० ३।११२०
 देवगति [देवगति] जी० ३।८६,१७६,१७८,१८०,
 १८२,४४५
 देवगुत्त [देवगुप्त] ओ० ६६
 देवच्छन्दग [देवच्छन्दक] जी० ३।६०७
 देवच्छन्दय [देवच्छन्दक] रा० २५३,२५८,२६१.
 जी० ३।४१०,४१५,४१६,४५७,६७५,६७६,
 ६०७,६०८
 देवजुइ [देवद्युति] रा० ६३,६५,११६
 देवजुति [देवद्युति] रा० ५६,७३,११८,७६७
 देवज्जुइ [देवद्युति] रा० ६६७
 देवज्जुति [देवद्युति] रा० १२२
 देवता [देवता] जी० ३।७३७
 देवत्त [देवत्त] ओ० ७२,७३,८६ से ९५,११४,
 ११७,१४०,१५७ से १६०,१६२,१६७.
 रा० ७५२,७५३. जी० ३।११२८,११३०

देवदीव [देवद्वीप] जी० ३।७७६, ७७७
देवदीवग [देवद्वीपक] जी० ३।७७६, ७७७
देवदुहदुहग [देवदुहदुहक] रा० २८१. जी० ३।४४७
देवदूस [देवदूष्य] रा० २७४, २८५, २९१, ७५६.
 जी० ३।४३६, ४४३, ४५१, ४५७
देवद्वार [देवद्वार] जी० ३।८८५
देवद्वीचग [देवद्वीपक] जी० ३।७७६, ७७७
देवपरिस्ता [देवपरिषद्] ओ० ७१. रा० ६१
देवभद्र [देवभद्र] जी० ३।९४२, ९५१
देवमहाभद्र [देवमहाभद्र] जी० ३।९४२, ९५१
देवमहावर [देवमहावर] जी० ३।९५१
देवय [देवत] ओ० २, ५२, १३६. रा० ६, १०, ५८,
 २४०, २७६, ६८७, ७०४, ७१६, ७७६. जी०
 ३।४०२, ४४२
देवया [देवता] ओ० १३६
देवरमण [देवरमण] रा० ७८, ८०, ८२, ११२
देवराय [देवराज] जी० ३।९१६ से ९२२, १०३६
 से १०४४
देवलोग [देवलोक] ओ० ७४।२, १४१. रा० ७६६.
 जी० ३।६३०
देवलोय [देवलोक] ओ० ७१, ७२, ७४।२, ८६ से
 ९३. रा० ७५२, ७५३. जी० ३।६३०
देववर [देववर] जी० ३।९५१
देवविमाण [देवविमान] रा० १८७
देवसण्णिवाय [देवसन्निपात] रा० २८१
देवसन्निवाय [देवसन्निपात] जी० ३।४४७
देवसमवाय [देवसमवाय] जी० ३।९१७
देवसमिति [देवसमिति] जी० ३।९१७
देवसमुदय [देवसमुदय] जी० ३।९१७
देवसमुद्ग [देवसमुद्रक] जी० ३।७७८
देवसयणिज्ज [देवशयनीय] रा० २४५, २४६, २६१,
 ३५३, ४१४, ७६६. जी० ३।४०७, ४०८, ४२३,
 ४३६, ४४३, ५१६, ५२६, ६५०, ६७३, ७५६
देवसोख [देवगौरव्य] ओ० ७४।२
देवानुप्पिय [देवानुप्रिय] २०, २१, ५२, ५३, ५५,

५६, ५८, ६०, ६२, ११७, ११८, १२०. रा० ६, १०,
 १३, १४, १७, ५८, ६३, ६५, ७२, ७३, २७६, २७८,
 ६५४, ६८१, ६८७ से ६९०, ६९५, ७०४, ७०६,
 ७१३, ७१४, ७१८, ७२०, ७२३, ७५१, ७६५,
 ७६८, ७७४, ७७५, ७७७, ८०२. जी० ३।४४२,
 ४४४, ५५४
देवानुभाग [देवानुभाग] रा० ६६७
देवानुभाव [देवानुभाव] रा० ५६, ६३, ६५, ७३,
 ११८, ११९, १२२, ७६७
देविंद [देवेन्द्र] जी० ३।९१६ से ९२२, १०३६ से
 १०४४, १०५५
देविङ्गि [देविङ्गि] ओ० ७४।२. रा० ५६, ६३, ६५,
 ७३, ११८, ११९, १२२, ६६७, ७६७
देवित्त [देवीत्व] जी० ३।११२८ से ११३०
देवी [देवी] ओ० १५, ५५, ५८, ६२, ७०, ७१, ८१.
 रा० ५, ७, १५ से १७, ४८, ५४ से ५८, १८५,
 १८७, २४०, २७६, २८०, २८२, २८६ से २९१.
 ६५७, ६७२, ६७३, ७५१, ७७६, ७६१ से ७६४,
 ७६६. जी० ३।११८ से २०६, २१७, २३७,
 २३८, २४३, २४६, २४७, २४९, २५०, २५६, २६७,
 २६८, ३५०, ३५८, ३६०, ४०२, ४४२, ४४६, ४४८,
 ४५५ से ४५७, ५५७, ५६३, ६३७, ६५६, ७६०,
 ७६३, १०२३, १०२५, १०२८, १०३०, १०३२,
 १०३४, १०३६, १०४१, १०४२, १०४४, ११२२,
 ११२६; ६।१, ६, ७, १२; ६।२०६, २१४, २१८,
 २२०
देवुकलिया [देवोत्कलिका] रा० २८१
देवुज्जोय [देवोद्धोत] रा० २८१. जी० ३।४४७
देवोद [देवोद] जी० ३।७७६, ७७७, ९४३, ९४४
देवोदग [देवोदक] जी० ३।७७८, ७७९
देस [देश] ओ० १६, १६५।१०. रा० १७४, १८०,
 १८२, १८४, १८८, १९२ से १९७, ७६५, ७७४,
 ८०४. जी० १।४, ५; ३।२६६ से २६६, २८६,
 २९२, २९४, २९६, ५७६ से ५९६, ६४०, ६५६,
 ६६४, ७०२, ७२६, ८०८, ८२९, ८५७, ८६३,
 ८६६, ८७५, ८८१

देसंतर [देशान्तर] ओ० ११६, ११७
 देसकहा [देशकथा] ओ० १०४, १२७
 देसकालणया [देशकालज्ञता] ओ० ४०
 देसभाग [देशभाग] रा० ३२, ३६, ३६, ६६, १६४,
 २१८, २६१, २८१, ३००, ३२१, ३३३. जी०
 ३।२७५, ३६५, ३७२, ४४७, ४६०, ४६५, ५५४,
 ५६६, ७५६, ७६२, ७८२, ८८२, ९१३
 देसभाय [देशभाग] ओ० २, ६, ८, १६, ५५, १६२.
 रा० ३, ३५, १२५, १८६, २०४, २१७, २२७, २३८,
 २५२, २६३, २६५, ३२६, ३३८, ३५६, ४१५,
 ४७६, ५३६, ५६६, ७५५, ७७२. जी० ३।२६३,
 ३१०, ३१३, ३३८, ३५६, ३५६, ३६१, ३६४,
 ३६८, ३६६, ३७७, ३८६, ४००, ४१३, ४२२,
 ४२७, ४५८, ४६०, ४८६, ४६१, ४६८, ५०३,
 ५२१, ५२७, ५३५, ५४२, ५४६, ६३४, ६३६,
 ६४२, ६४६, ६४६, ६६३, ६६८, ६७१ से ६७३,
 ६७६, ६८५, ६६१, ७३७, ७५६, ८३१, ८८४,
 ८६०, ८६१, ९०६, ९११, ९१८, १०२३, १०३६

देसावयासिय [देशावकाशिक] ओ० ७७
 देसिय [देशित] जी० १।१
 देसी [देशी] ओ० ४६, ७०. रा० ८०६, ८१०
 देसीभासा [देशीभाषा] ओ० १४८, १४६
 देसूण [देशान] रा० १२८, २०१. जी० २।२६ से
 ३४, ३७, ५४ से ६१, ६५, ८४, ८८, ११४, ११६,
 १२३, १२४, १३२; ३।२४७, २५०, २५६, २७३,
 २६८, ३६२, ३६६ से ३७१, ५७०, ६२६, ६४६,
 ६७३, ६७४, ७०६, ७३२, ८८२; ६।२३, २६, ३३,
 ४१, ६६, ७३, ७८, १४२, १४४, १४६, १६२, १६४,
 १६५, १७८, २००, २०२ से २०४
 देसोण [देशान] जी० ३।३५३
 देह [देह] रा० ७६०, ७६१. जी० ३।५६६
 देहधारि [देहधारिन्] ओ० १६
 दो [द्वि] ओ० १७०
 दोकिरिय [द्विक्रिय] ओ० १६०
 दोच्च [द्वितीय] ओ० ११७. रा० १०, १२, १८,

६५, २७६, ७०२, ७०३. जी० ३।१२४, ४४५
 दोच्चा [द्वितीया] जी० १।१२४, २।१३५, १३८,
 १४८, १४६; ३।२, ४, ६६, ६७, ७३, ७४, ८८, ९१,
 १२५, १६१, ११११
 दोणमुह [द्वोगमुख] ओ० ६८, ८६ से ९३, ९५,
 ९६, १५५ १५८ से १६१, १६३, १६८.
 रा० ६६७
 दोभाग [द्वौभाग्य] जी० ३।५६७
 दोमासिय [द्वैमासिक] ओ० ३२
 दोमासिया [द्वैमासिकी] ओ० २४
 दोर [द्वरक] रा० २७०. जी० ३।४३५
 दोवारिय [द्वौवारिक] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६,
 ७६२, ७६४
 दोस [दोष] ओ० ३७, ७१, ११७, १६१, १६३.
 रा० १७३, ७६६. जी० ३.२८५, ५६८
 दोसिणाभा [द्वे ज्योत्स्नाभा] जी० ३।१०२३

ध

धंत [धमात] रा० २६, ७५७. जी० ३।२८२
 धंतपुध्व [धमातपूर्व] रा० ७५७, ७६३
 धण [धन] ओ० ५, १४, २३, १४१. रा० ६७१,
 ६६५, ७६६
 धणक्खय [धनक्षय] जी० ३।६२८
 धणिय [द्वे] ओ० ४६. रा० ७७४.
 जी० ३।५८६
 धणु [धनुष्] ओ० १, ६४, १७०, १८७, १६५।५.
 रा० १८८, १८९, २४६, ६६४, ७५६.
 जी० १।६४, ११२, ११६, १२५; ३।८२, ६२,
 २१८, २६०, २६३, ३५३, ५६२, ५६८, ६४७,
 ६४६, ६७३ से ६७५, ६८३, ७०६, ७८८,
 १०१४, १०२२
 धणुग्गह [धनुर्ग्रह] जी० ३।६२८
 धणुपट्ट [धनुष्पृष्ठ] जी० ३।५५७, ६३१
 धणुवेद [धनुर्वेद] ओ० १४६
 धणुवैय [धनुर्वेद] रा० ८०६

घण्ण [घान्य] ओ० २३
घन्न [घन्य] ओ० १६४. रा० ६६५
घमावियपुव्व [घमापितपुव्वे] रा० ७५७,७६३
घम्म [धर्म] ओ० १६, २१, ४०, ४६, ५४, ६६, ७१,
 ७२ ७४ से ७७, ७९ से ८१, १४२, १४४, १६१,
 १६३. रा० ८, १६, ६१, ६२, २६२, ६६३ से
 ६६५, ७००, ७१७ से ७२०, ७३२, ७५२, ७७५,
 ७७६, ७८०, ८००, ८०२. जी० ३, ४५०
घम्मकहा [धर्मकथा] ओ० ४२, ४३. रा० ७७५
घम्म [ज्ञान] [धर्म्यध्यान] ओ० ४३
घम्मक्खाइ [धर्महियायिन्] ओ० १६१, १६३.
 रा० ७५२
घम्मचरण [धर्मचरण] जी० २, २६ से २६, ५४
 से ५७, ६५, ८४, ८८, ८९, ११४, १२३, १३२
घम्मचित्तग [धर्मचित्तक] ओ० ६३
घम्मज्झय [धर्मज्झज] ओ० १६
घम्मणायग [धर्मनायक] रा० २६२. जी० ३१४५७
घम्मस्थिकाय [धर्मास्तिकाय] रा० ७७१. जी०
 ११४
घम्मदय [धर्मदय] रा० ८, २६२. जी० ३१४५७
घम्मदेशय [धर्मदेशक] रा० ८, २६२. जी० ३१४५७
घम्मनायग [धर्मनायक] रा० ८
घम्मपलउजण [धर्मप्ररञ्जन] ओ० १६१, १६३.
 रा० ७५२
घम्मपलोइ [धर्मप्रलोकिन्] रा० ७५२
घम्मपलोइ [धर्मप्रलोकिन्] ओ० १६१, १६३
घम्मसमुदायार [धर्मसमुदाचार] ओ० १६१, १६३
घम्मसारहि [धर्मसारयिन्] रा० ८, २६२. जी०
 ३१४५७
घम्मशीलसमुयाचार [धर्मशीलसमुदाचार] रा०
 ७५२
घम्माणुय [धर्मानुग] ओ० १६१, १६३. रा० ७५२
घम्मारिय [धर्माचार्य] ओ० २१, ५४, ११७. रा०
 ७१४, ७७६, ७९६
घम्मिठु [धर्मिठ] ओ० १६१, १६३. रा० ७५२

घम्मिय [धार्मिक] ओ० ५२, ५७, १६१, १६३. रा०
 २७०, २८८, ६६७, ६८७, ७५२, ७५३. जी०
 ३१४३५, ४५४
घम्मोवदेशग [धर्मोपदेशक] ओ० २१, ५४, ११७.
 रा० ७१४, ७९६
घर [घर] ओ० ५, ८, १६, २१, ४७, ४९, ५४, ७२.
 रा० ८, २२, १४५, २६२, ६६४, ७७१. जी०
 ३१२६८, २७४, ३८७, ४५७, ५६२, ५८४, ६७२
 ७०२, ८०८, ८२६
घरण [घरण] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३:२४४
 से २४७, २५०, ४४८
घरणितल [घरणितल] ओ० २१, ५४. रा० ८,
 ५६, २६२. जी० ३१४५७
घरणियल [घरणितल] जी० ३१४५७, ८८२
घरिज्जमाण [धियमाण] ओ० ६३, ६५. रा०
 ६६२, ७००, ७१६
घरिसणा [धरिणा] ओ० ४६
घरेज्जमाण [धियमाण] रा० ६८३
घव [घव] ओ० ६, १०. जी० ११७२; ३१३८८
 ५८३
घवल [घवल] ओ० १६, ४६, ४७, ६३, ६४. रा०
 २५५, २५६, २८५. जी० ३१३७२, ४१६, ४१७,
 ४५१, ५६६, ५६७
घवलहर [घवलगृह] जी० ३१५६४
घाई [घात्री] रा० ८०४
घाउरत्त [घातुरत्त] ओ० १०७, ११७, १३०
घातइसंड [घातकीपण्ड] जी० ३१७११
घायइहक्ख [घातकीहक्ख] जी० ३१८०८
घायइवण [घातकीवण] जी० ३१८०८
घायइसंड [घातकीपण्ड] जी० ३१७०८, ७१५
 से ७२०, ७६८, ७७०, ७७१, ७९६ से ८००,
 ८०२ से ८०४, ८०६, ८०८, ८०९, ८३८, ८३९, ८४५
घायई [घातकी] जी० ३१७७५, ८०८
घायईसंड [घातकीपण्ड] जी० ३१८०६, ८३८, ८४४
घायतिसंड [घातकीपण्ड] जी० ३१७६६

धारग [धारक] ओ० ६७

धारणा [धारणा] रा० ७४०, ७४१

धारि [धारिन्] ओ० ४७, ५१, ७२. जी० ३१५६७,
१०१५

धारिणी [धारिणी] ओ० १५. रा० ५

धारित्तए [धारयितुम्] ओ० १०५

धारिमाण [धारयत्] रा० २५५. जी० ३१४१६

धिइ [धृति] ओ० ४६ जी० ३१११८

धिति [धृति] जी० ३१११८, ११६

धीर [धीर] ओ० ४६

धुरा [धूर्] ओ० ६४

धुराग [धूर्क] रा० १७३, ६८१. जी० ३१२८५

ध्रुव [ध्रुव] रा० २००. जी० ३१५६, २७२, ३५०,
७६०

धूमकेतु [धूमकेतु] ओ० ५०

धूमप्रभा [धूमप्रभा] जी० ३१४१, ४३, ४४, १०१,
११०, ११४

धूमवट्टि [धूपवर्ति] जी० ३१४५७

धूमिया [धूमिका] जी० ३१६२६

धूया [दुहितृ] जी० ३१६११

धूलि [धूलि] जी० ३१६२३

ध्रुव [ध्रुव] ओ० २, ५५. रा० ६, १२, ३२, १३२,
२३६, २५८, २७६, २८१, २६०, २६२ से २६७,
३००, ३०५, ३१२, ३५१, ३५५, ३५६. जी०
३१३०२, ३७२, ३६८, ४१६, ४४५, ४४८, ४५६
से ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५५४,
६७६, ६०८

ध्रुवघडिया [ध्रुवघटिका] रा० २३६. जी० ३१३६८,
४१२, ६०३

ध्रुवघडी [ध्रुवघटी] रा० १३२. ३१३०२

ध्रुवघट्टी [ध्रुववर्ति] रा० २६२

धौत [धौत] जी० ३, ५६६

धोय [धौत] ओ० १६, ४७. रा० २६. जी०
३१२८२, ५६०

न

न [न] ओ० ४७. रा० २००. जी० ३१२७२

नई [नदी] ओ० ६६. जी० ३१७७५

नईमह [नदीमह] रा० ६८८

नउल [नकुल] रा० ७७

नंगलिय [लाङ्गलिक] ओ० ६८

नंदणवण [नन्दनवन] रा० १७३, ६७०. जी०
३१२८५, ५६७

नंदा [नन्दक] रा० २८२. जी० ३१४४८

नंदा [नन्दा] रा० २३३, २७३, २८८, ३१२, ३५०,
६५६. जी० ३१५५६

नंदाचंपापविभक्ति [नन्दाचम्पाप्रविभक्ति] रा० ६३

नंदापविभक्ति [नन्दाप्रविभक्ति] रा० ६३

नंदिघोस [नन्दिघोष] रा० ७७, १७३, ६८१. जी०
३१५६८

नंदिमुयंग [नन्दिमृदङ्ग] जी० ३१७८

नंदिवावत्त [नन्द्यावर्त] ओ० १२. रा० २६१

नंदिखल [नन्दिखल] जी० ३१३८८ से ३६०

नंदिस्तर [नन्दिस्वर] जी० ३१५६८

नंवी [नन्दी] रा० ७४१, ७४३

नंवीमुहंग [नन्दीमृदङ्ग] रा० ७७

नंवीमुह [नन्दीमुख] जी० ३१२७५

नंवीस्तरवर [नन्दीश्वरवर] रा० ५६

नक्कळिणग [नक्कळिणक] ओ० ६०

नक्ख [नख] २५४

नक्खत्त [नक्ख] रा० १२४. जी० २११८; ३१७०३,
७२२, ८३०, ८३८, ५, ८, ११, १३, २२, ३०,
१००७

नक्खत्तविमाण [नक्खविमाण] जी० २१४३;
३११०६

नखवेदणा [नखवेदना] जी० ३१६२८

नग [नग] जी० ३१५६६

नगर [नगर] ओ० १८. रा० ६६७, ७५४, ७५६

७६२, ७६४, ७७४. जी० ३१५६६

नगरगुण [नगरगुण] ओ० १६५१६

नगरदाह [नगरदाह] जी० ३।६२६
 नगरमाण [नगरमान] ओ० १४६
 नगरी [नगरी] ओ० १६. रा० ६६६, ६७०, ६८०,
 ६८१, ६८३, ६८५, ६८७, ६८८, ६८९, ७००,
 ७०२ से ७०४, ७०६, ७०८, ७१० से ७१२,
 ७२६, ७५२, ७७५, ७७६, ७८०
 नग्नह [नग्नजित्] ओ० ६६
 नग्नभाव [नग्नभाव] ओ० १५४, १६५, १६६
 √नच्च [नृत्]—नच्चिज्जइ. रा० ७८३
 नच्चंत [नृत्यत्] ओ० ४६
 नच्चणशील [नृत्यनशील] ओ० ६५
 नट्ट [नाट्य] ओ० ६८. रा० ७, ७८, ८०६. जी०
 ३।२८५, ३५०
 नट्टविधि [नाट्यविधि] रा० ७६
 नट्टविहि [नाट्यविधि] रा० ६३, ६५, ११८, २८१
 नट्टसज्ज [नाट्यसज्ज] रा० ६६, ७०
 नट्ट [नष्ट] रा० २८१
 नट्ट [नट] ओ० १, २
 नट्टपेच्छा [नटप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५
 नत्तुय [नप्तु] रा० ७५०, ७५२
 √नद [नद्]—नदंति. जी० ३।४४७
 नदी [नदी] जी० ३।८४१
 नपुंसक [नपुंसक] जी० २।६६ से ११६, १२०,
 १२१, १२३, १२५ से १२६, १३२ से १३८,
 १४० से १५०
 नपुंसकालिगसिद्ध [नपुंसकलिङ्गसिद्ध] जी० १।८
 नपुंसकवेद [नपुंसकवेद] जी० २।१३६, १४०;
 ६।१२४, १२८
 नपुंसकवेदक [नपुंसकवेदक] जी० ६।१३०
 नपुंसकवेद्य [नपुंसकवेद] जी० १।६६, १३६
 नपुंसकवेद्यक [नपुंसकवेदक] जी० ६।१२१
 नपुंसक [नपुंसक] जी० २।११७ से ११६, १२२
 से १२४
 √नमंस [नमस्य]—नमंसइ. रा० ७१४—
 नमंसंति. रा० १०—नमंसंति. रा० १२०

—नमंसह. रा० ७३—नमंसिज्जाह.
 रा० ७०६—नमंसिस्संति. रा० ७०४
 नमंसण [नमस्यण] रा० ६८७
 नमंसणिज्ज [नमस्यणीय] ओ० २
 नमंसिस्तए [नमस्यितुम्] रा० ६
 नमंसित्ता [नमस्यित्वा] ओ० ६६. रा० १०.
 जी० ३।४७१
 नमिध [नमित] रा० २२८. जी० ३।६७२
 नमो [नमस्] रा० ८
 नय [नय] ओ० २५. रा० ६८६
 √नय [नद्]—नयंति. रा० २८१
 नयण [नयण] ओ० १, १५, ६६. रा० २२८.
 जी० ३।५६६
 नयरी [नगरी] ओ० १, १६, ६६. रा० १, २, ८,
 ९, १५, ५६, ६७७ से ६७९, ६८३, ६८६ से
 ६८९, ७५०, ७५२
 नर [नर] ओ० ५, ८, ६४, ६६. रा० १७, १८, २०,
 ३२, ३७, १४१, १७३, १६२. जी० ३।२६६,
 २७४, ३००, ५६७
 नर (कंता) [नरकान्ता] रा० २७६
 नरक [नरक] जी० ३।८६
 नरकंठ [नरकंठ] रा० १५५, २५८. जी० ३।३२८
 नरकंठक [नरकंठक] जी० ३।४१६
 नरकंता [नरकान्ता] जी० ३।४४५
 नरक [नरक] ओ० ७१. जी० ३।८६, १२७
 नरकवर [नरकवर] रा० ६७१
 नरक [नरक] रा० ७५०, ७५१. जी० ३।८३,
 ८७, ११६, १२६।२
 नरकपाल [नरकपाल] रा० ७५१
 नरकावास [नरकावास] जी० ३।७७, १२७
 नरवइ [नरपति] ओ० १
 नरवसभ [नरवृषभ] जी० ३।१२६।१
 नरिद [नरेन्द्र] ओ० २१, ५४
 नलवण [नलवन] ओ० २६
 नलिण [नलिन] ओ० १२, १५०. रा० १७४,
 ८११. जी० ३।५६५

नलिना [नलिना] जी० ३।६८६
 नख [नखन्] ओ० ६३. रा० ८०१. जी० २।२०
 नव [नव] जी० ३।३११
 नवंग [नवाङ्ग] ओ० १४८, १४९
 नवनिधिपति [नवनिधिपति] जी० ३।५८६
 नवम [नवम] जी० ३।३५६
 नवय [नवक] रा० ७५६
 नवरं [दे०] जी० १।७७
 नवविह [नवविध] जी० १।१०; ६।२५५
 नह [नख] जी० ३।३२३
 नाइय [नादित] रा० ५५, २८०, ६५७.
 जी० ३।११८, ११९, ४४८, ८५७, ८६३
 नाउं [ज्ञातुम्] जी० ३।८३८, २६
 नाग [नाग] ओ० १९, ६८. रा० १६२, २८२.
 जी० ३।२३२, ४४८, ७३३, ७८०, ६५०
 नागकुमार [नागकुमार] जी० २।३७; ३।२४४,
 २४८
 नागकुमारराय [नागकुमारराज] जी० ३।२४४
 से २४७, २४९, २५०, ६५७, ६५९, ६६०
 नागकुमारिन्द्र [नागकुमारिन्द्र] जी० ३।२४४ से
 २४७, २४९, २५०, ६५७, ६५९, ६६०
 नागदन्त [नागदन्त] रा० १३२, २४०
 नागदन्तक [नागदन्तक] रा० १४०.
 जी० ३।३६८
 नागदन्तय [नागदन्तक] रा० १५३, २३६.
 जी० ३।३६७, ३६८, ४०३
 नागप्रतिमा [नागप्रतिमा] रा० २५७.
 जी० ३।४१८
 नागमंडलप्रविभक्ति [नागमण्डलप्रविभक्ति]
 रा० ६०
 नागमह [नागमह] रा० ६८८
 नागरप्रविभक्ति [नागरप्रविभक्ति] रा० ६२
 नागराय [नागराज] जी० ३।७४८, ७५०
 नागलया [नागलता] रा० १४५. जी० ३।२६८
 नागलयाप्रविभक्ति [नागलताप्रविभक्ति] रा० १०१
 नाटय [नाटक] रा० ७१०, ७७४

नाण [ज्ञान] ओ० १९, २६. रा० ८, ६८६, ७३८,
 ७६८. जी० १।१४, १०१; ३।१२७, १६०;
 ६।६६
 नाणस [नानात्व] रा० ७६२, ७६३
 नाणसंपण [ज्ञानसम्पन्न] रा० ६८६
 नाणा [नाना] रा० ६६, ७०, १३०, १३२, १६०,
 १६०, २२८, २५६, २७०, ७६८. जी० १।१३६;
 ३।२६४, २८८, ३११, ३८७, ४०७, ४१७, ६४३,
 ६७२
 नाणाविह [नानाविध] जी० १।७२; ३।२७७,
 ३७२
 नाणि [ज्ञानिन्] जी० २।३०; ३।१०४
 नाणोवलम्भ [ज्ञानोपलम्भ] रा० ७६८
 नातव्य [ज्ञातव्य] रा० ३।६८८
 नादित [नादित] जी० ३।४४६
 नाणा [नाना] जी० ३।३३३
 नाभि [नाभि] रा० २५४
 नाम [नामन्] ओ० १, २. रा० १, २, ६, ५६, १२४,
 २४९, २८१, ६६८, ६७२, ६७३, ६७६ से ६७९,
 ६८६, ६८७, ६८९, ७०३, ७०६, ७१३, ७३२,
 ७६९. जी० ३।३, ४, १२८, ३००, ४१०, ४४७,
 ५६३, ५६४, ६३२, ६३८, ६३९, ६६०, ६६६,
 ६६८, ७११, ७५६, ७६४, ८१४, ८३१, ८३८, ३,
 ८५१, ९३३, १०५६
 नामय [नामक] जी० ३।२४
 नामाधिज [नामधेय] रा० ८०३
 नामधेज [नामधेय] जी० ३।६६६, ६७२
 नामधेय [नामधेय] रा० ८, ७१४, ७६६
 नायव्य [ज्ञातव्य] जी० ३।१२६।३
 नायाधम्मकहाधर [जाताधर्मकथाधर] ओ० ४५
 नारय [नारद] ओ० ६६
 नाराय [नाराय] जी० १।११६
 नारायग [नाराचाय] जी० ३।८५
 नारि [नारी] ओ० ६६
 नारिकंता [नारीकान्ता] रा० २७६.
 जी० ३।४४५

नारी [नारी] रा० १७३
 नाल [नाल] जी० ३१६४३
 नालिएर [नालिकेर] जी० १।७२
 नाली [नाडी] जी० ३।७८
 नावा [नौ] जी० ३।७९३
 नासा [नासा] रा० २८५. जी० ३।४५१
 नासिगा [नासिका] रा० २५४
 निउण [निपुण] ओ० ६३. रा० ६९,७०,६७२,
 ७५९ से ७६१, ८०४. जी० ३।११८
 निदणा [निन्दना] ओ० १५४,१६५,१६६.
 रा० ८१६
 निब [निम्न] जी० १।७१
 निकर [निकर] ओ० १३
 निकुरंब [निकुरम्ब] रा० ७०३. जी० ३।२७३
 निकुरंब [निकुरम्ब] ओ० १९
 निककांकड [निककङ्कट] ओ० १२,१९४. रा० २१,
 २३,३२,३४,३६,१२४,१४५,१५७.
 जी० ३।२६९
 निककोह [निककोह] ओ० १६८
 निक्खमंत [निक्रामत्] जी० ३।८३८।१४
 निक्खमण [निक्रमण] जी० ३।५९४,६१७
 निगम [निगम] ओ० १८,६८,८९ से ९३,९५,
 ९६,१५५,१५८ से १६१,१६३,१६८.
 रा० ६६७,७५४,७५६,७६२,७६४
 √निगिण्ह [नि-ग्रह]—निगिण्हइ. रा० ६८३
 निगांय [निगन्ध] ओ० २४,७९ से ८१,१२०,
 १६२,१६४. रा० ६३,६५,७३,७४,११८,
 ६९५,६९८,७३८,७५२,७८९
 √निगच्छ [निर्+गम्]—निगच्छइ. ओ० ६७.
 रा० २७७—निगच्छति. ओ० ७०. रा० ७४
 —निगच्छति. रा० २८३
 निगच्छमाण [निगच्छत्] ओ० ६८
 निगच्छिता [निगत्थ] ओ० ६९. रा० २८३
 निगमण [निगमन] जी० ३।८४१
 निगय [निगत] रा० ६,७५४

निग्गह [नियह] ओ० ३७. रा० ६८६
 निग्गुण [निर्गुण] रा० ६७१
 निग्घोस [निर्घोष] जी० ३।४४८,५५७
 निघंटु [निघण्टु] ओ० ९७
 निघस [निकष] रा० २८. जी० ३।२८१
 निचय [निचय] रा० ३१
 निचिय [निचित] ओ० १९. रा० १२,७५५,७५८,
 ७५९,७७२. जी० ३।११८,५९६
 निच्च [नित्य] ओ० ४६. रा० १५. जी० ३।३९०,
 ५८४,८३८।१७
 निच्छय [निश्चय] ओ० २५. रा० ६७५,६८६
 निच्छोडणा [निश्छोटना] रा० ७७६
 निच्छोडित्तए [निश्छोटयितुम्] रा० ७७६
 निजुद्ध [नियुद्ध] ओ० १४६. जी० ८०६
 निज्जरा [निर्जरा] ओ० १२०,१६२,१६९.
 रा० ६९८,७५२,७८९
 निज्जिय [निर्जित] ओ० १४. रा० ६७१
 निज्जीव [निर्जीव] ओ० १४६. रा० ८०६
 निज्जुत्त [नियुक्त] जी० ३।२८५
 निट्ठिय [निष्ठित] ओ० १८३,१८४. रा० ७७४
 निट्ठुर [निष्ठुर] रा० ७६५. जी० ३।११०
 निडाल [ललाट] जी० ३।३०३,५९६
 √निहा [नि+द्रा]—निहाएज्ज. जी० ३।११९
 निद्ध [स्निग्ध] जी० १।५,५०; ३।२७५,५९६
 निद्धंत [निध्मात] जी० ३।५९०,५९६
 निद्धूम [निर्धूम] जी० ३।५९०
 निद्धूय [निद्धृत] ओ० ५,८. जी० ३।२७४
 निप्पंक [निष्पङ्क] ओ० १२. रा० २१,२३,३२,
 ३४,३६,१२४,१४५,१५७. जी० ३।२६९
 निप्पकंप [निष्प्रकम्प] ओ० ४६
 निप्पचक्खाण [निष्प्रत्वाढयान] रा० ६७१
 निप्फन्न [निष्फन्न] जी० ३।६०२
 निवद्ध [निवद्ध] रा० ७७२
 निव्वंछणा [विभ्रंशना] रा० ७७६
 निव्वंछित्तए [निभ्रंशितुम्] रा० ७७६
 निम्न [निम्न] रा० ५१

निमज्जग [निमज्जक] ओ० १४
 निमित्त [निमित्त] जी० ३१२६।६
 निमित्तिय [निमित्तिय] जी० ३११६
 निमीलिय [निमीलित] जी० ३१२६।८
 निम्मल [निर्मल] ओ० १२, १६, ४७. रा० २१,
 २३, ३२, ३४, ३६, १२४, १३०, १४५, १४६, १५७.
 जी० ३१३२२, ५६६, ५६७
 निम्माण [निर्माण] ओ० १६८
 निम्माय [निर्माय] ओ० १६८
 निम्मिय [निर्मित] रा० १७३. जी० ३१२८५
 निम्मेर [निर्मेर] रा० ६७१
 नियइपव्वय [नियतिपव्वत] रा० १८१
 नियइपव्वयग [नियतिपव्वतक] रा० १८०
 √नियंस [नि + वस्] —नियंसेइ. रा० २६१
 —नियंसेति. रा० २८५
 नियंसण [निवसन] रा० ६६
 नियंसेत्ता [निवस्य] रा० २८५
 नियग [निजक] रा० १२०. ७७४
 नियडि [निकृति] रा० ६७१
 नियम [नियम] ओ० २५. रा० ६८६, ७२३.
 जी० १-३०, ६५, ८७, ६६, ११६, १३३, १३६;
 ३१०४; १२६।३; ८३८।१४, ६६६, ११०८
 नियय [नियत] जी० ३१७२, ७६०
 निरंगण [निरङ्गण] ओ० २७. रा० ८१३
 निरंतर [निरन्तर] रा० १२, ७५५, ७७२
 निरंतरिय [निरन्तरित] रा० १३०
 निरय [निरय] जी० ३११२६, १२७।२
 निरयभव [निरयभव] जी० ३१११६, १२६।५
 निरयवेयणिज्ज [निरयवेदनीय] रा० ७५१
 निरयाउय [निरयायुष्क] रा० ७५१
 निरयावास [निरयावास] जी० ३११२, ७७, १२७
 निरवसेस [निरवशेष] जी० ३११८४, ४१२, ४२६,
 ७५०
 निरालंबण [निरालम्बन] ओ० २७. रा० ८१३
 निरालय [निरालय] ओ० २७. रा० ८१३
 निरावरण [निरावरण] ओ० १५३, १६५, १६६

√निहंम [नि + रुध] —निहंमइ ओ० १८२
 निहंभित्ता [निहंभ्य] ओ० १८२
 निरुत्त [निरुत्त] ओ० ६७
 निरुवलेव [निरुपलेप] ओ० २७. रा० ८१३.
 जी० ३१५६८
 निरुवसगम [निरुपसर्ग] जी० ३१४८८
 निरुवह्य [निरुपहृत] ओ० १६. जी० ३१५६६
 निरैयत्त [निरैजत्त] ओ० १८३, १८४
 निरोदर [निरोदर] जी० ३१५६७
 निरोय [निरोग] जी० ३१२७५
 निरोयय [निरोगक] ओ० ६
 निरोह [निरोध] ओ० ३७
 निलाड [ललाट] रा० ७०
 निल्लेव [निर्लेप] जी० ३११६६, १६७
 निल्लेवण [निर्लेपन] जी० ३११६६
 निल्लोह [निर्लोभ] ओ० १६८
 √निवाड [नि + पातय्] —निवाडेइ रा० २६२
 निवाडित्ता [निपात्य] रा० २६२
 निवाय [निपात] जी० ३१८६
 √निवेव [नि + वेदय्] —निवेदिज्जासि. ओ० २१
 √निवेय [नि + वेदय्] —निवेण्मो. रा० ७१३
 √निवेस [नि + वेशय्] —निवेसेइ. ओ० २१.
 रा० ८
 निवेसेत्ता [निवेशय] —ओ० २१. रा० ८
 निव्वण [निर्व्रण] जी० ३१५६६
 √निव्वत्त [निर्व + वर्तय्] —निव्वत्तेज्जासि
 रा० ७५१
 निव्वय [निर्व्रत] रा० ६७१
 निव्वयाघाइम [निव्वयाघातिन्, निव्वयाघातिम]
 ओ० ३२. जी० ३११०२२
 निव्वण [निर्वण] ओ० १६५।१६
 निव्विइय [निव्विकृति] ओ० ३५
 निव्विण्ण [निव्विण्ण] रा० ७६५
 निव्विण्णाय [निव्विज्ञान] रा० ७३२, ७३७, ७६५
 निव्वित्तिगिच्छ [निव्विचिकित्स] ओ० १२०, १६२
 निव्विसय [निव्विसय] रा० ७६७

निव्वुइकर [निर्वृत्तिकर] रा० १७३.
 जी० ३:३०५, ६७२
 निव्वुत्तिकर [निर्वृत्तिकर] रा ३०, १३५
 निस्सण्ण [निषण्ण] ओ० ११७. रा० ७६६.
 जी० ३१८६६
 निस्सन्ण [निषण्ण] रा० २२५
 निस्सम्म [निष्कम्म] रा० १३
 निस्सामित्तए [निष्कमित्तुम्] रा० ७७५
 निस्सिय [निष्कित] रा० २४६
 √निस्सिर [नि + सृज्]—निस्सिरन्ति. रा० १०—
 निस्सिरति. रा० ६५—निस्सिरेइ. रा० ७६४
 निस्सिरित्तए [निस्सिर्त्तुम्] रा० ७५८
 निस्सीइत्ता [निषद्य] ओ० २१
 निस्सीदण [निषीदन] ओ० ४०
 √निस्सीय [नि + षद्]—निस्सीयइ. ओ० २१—
 निस्सीयति. रा० ४८—निस्सीयइ. रा० ७५३
 निस्सीहिया [निषीधिका, नैषेधिकी] रा० १३१,
 १३५
 निस्ससंक्किय [निःशङ्कित] ओ० ५२. रा० ६८७,
 ६८६
 निस्सास [निःशवास] रा० ७६६, ८१६
 निस्सील [निःशील] रा० ६७१
 निस्सेयस [निःश्रेयस] ओ० ५२. रा० २७६, ६८७
 निहट्टु [निहृद्य] रा० =
 निहय [निहृत्] ओ० १४. रा० ६७१
 नीरय [नीरजम्] ओ० १२, १८३, १८४
 नील [नील] ओ० ४, १२. रा० २२, १२८, १७०,
 ६६४, ७०३. जी० १५, ५०; ३१२, ४५,
 २७३, २६०, १०७५, १०७६
 नीलच्छाय [नीलच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
 १७३. जी० ३१२७३
 नीललेस [नीललेश्य] जी० ६१६३
 नीललेसा [नीललेश्या] जी० ३१६६, १००
 नीललेस्स [नीललेश्य] जी० ६१८५, १६६
 नीललेस्सा [नीललेश्या] जी० ११२१

नीलवन्त [नीलवत्] जी० ३१४४५, ६३२, ६५७, ६५६
 ६६८, ७६५
 नीलवन्तइह [नीलवद्इह] जी० ३१६३६, ६४०, ६४८
 ६५६ से ६६१, ६६६
 नीलवन्ता [नीलवती] जी० ३१६५६
 नीलुप्पस [नीलोत्पल] ओ० १३. रा० २६
 नीलोभास [नीलावभास] ओ० ४. रा० १७०,
 ७०३. जी० ३१२७३
 नीव [नीप] जी० ३१३८८
 नीसास [निःश्वाम] रा० २८५, ७७२.
 जी० ३५६८
 नीहार [नीहार] रा० ७७२
 नूणं [नूतम्] जी० ३१६८२
 नेम [नेम] रा० १७५, १६०. जी० ३१२६४, २८७,
 ३००
 नेयव्व [नेतव्य] जी० २१५०; ३१३०६
 नेरइय [नेरथिक] रा० ७५१. जी० १५१, ५४,
 ६१, ८२, ८७, ६६, १०१, ११६, १२१, १२३,
 १२८, १३६; २१६६, १००, १०८, १२७, १३४,
 १३५, १३६, १४८, १४६; ३११, २, ७७, ८८, ६३,
 ६५, ६६, ६८, १०३, १०६ से ११२, ११८, ११६,
 १२१ से १२३, १२८, १२६, १४, ६, ७, ८, १५५, १५६,
 १६२; ६११, ७, १२; ७११ से ३, १६, २२;
 ६१२१०, २१३, २२०
 नेरइयत्त [नेरथिकत्व] जी० ३१२७
 नेल [नेल] ओ० १६
 नेसज्जिय [नेषथिक] ओ० ३६
 नेहाणुराय [स्नेहानुराय] जी० ३१६१३
 नो [नो] रा० ६२. जी० ११२४
 नोअपज्जत्तम [नोअपर्याप्तक] जी० ६१८८, ६४
 नोअपरित्त [नोअपरीत] जी० ६१७५, ८६, ८७
 नोअभवसिद्धिय [नोअभवसिद्धिक] जी० ६११०६
 नोअसण्णि [नोअसंज्ञिन्] जी० ११३३; ६११०१,
 १०४, १०८
 नोइंदिद्य [नोइन्द्रिय] जी० ११३३
 नोपज्जत्त [नोपर्याप्त] जी ६१६१

नीपञ्जत्तग [नीपर्याप्तक] जी० ६।८८, ६४
 नीपरित्त [नीपरीत] जी० ६।७५
 नीबायर [नीबादर] जी० ६।६५, ६८ से १००
 नीभवसिद्धिय [नीभवसिद्धिक] जी० ६।१०६
 नीसण्णा [नीसंज्ञा] जी० १।६३३
 नीसण्णि [नीसंज्ञिन्] जी० १।८६, १३३; ६।१०१,
 १०४, १०८
 नीसुद्धम [नीसुद्धम] जी० ६।६५, ६८ से १००

(प)

पद्दहा [प्रतिष्ठा] ओ० १६, २१, ५४
 पद्दहाण [प्रतिष्ठान] ओ० १६८. रा० १३०,
 १३१, १४७, १४८, १६०, २८०. जी० ३ २६४,
 ३०१, ३२१
 पद्दट्टिय [प्रतिष्ठित] ओ० १६५।१, २.
 जी० ३।१०५७ से १०६४
 पद्दण्णा [प्रतिज्ञा] ओ० १४२, १४४. रा० ७४८ से
 ७५०, ७५२, ७५४, ७५६, ७५८, ७६०, ७६२,
 ७६४, ७७३, ८००, ८०२
 पद्दभव [प्रतिभय] ओ० ४६
 पद्दरक्खिया [पतिरक्षिता] ओ० ६२
 पद्दरिक्क [दे०] जी० ३।५६४
 पद्दसेज्जा [पतिषय्या] ओ० ६२
 पद्दईव [प्रदीप] रा० ७७२
 √ पउंज [प्र+युञ्]—पउंजइ. रा० ६७१.
 —पउंजंति ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४८
 पउंजमाण [प्रयुञ्जान] ओ० ६४
 पउंजियव्व [प्रयोक्तव्य] रा० ७७६
 पउट्ट [प्रकोष्ठ] ओ० १६. जी० ३।५६६
 पउत्त [प्रयुत] जी० ३।८४१
 पउम [पद्य] ओ० १२, १६, १५०. रा० २३, १३१,
 १३८, १४७, १४८, १६७, २७६, २८०, २८८,
 २९१. जी० ३।२५६, २६६, २६९, ३०१, ४४६,
 ४५४, ५६७, ५६८, ६४२, ६४३, ६५२ से ६५४,
 ६५७, ६५८, ८२६, ८४१, ८३७
 पउमगंध [पद्यगन्ध] जी० ३।६३१

पउमजाल [पद्यजाल] रा० १६१. जी० ३।२६५
 पउमइह [पद्यद्रह] जी० ३।४४५
 पउमपत्त [पद्यपत्र] रा० २४. जी० ३।२७७
 पउमपक्कहोरो [पद्यपक्षमघोर] ओ० ५१. जी०
 ३।१०६४
 पउमप्यभा [पद्यप्रभा] जी० ३।६८३
 पउमरक्ख [पद्यरुक्ख] जी० ३।८२६
 पउमलया [पद्यलता] ओ० ११, १३. रा० १७, १८,
 २०, ३२, ३४, ३७, १२६, १४५, १८६. जी०
 ३।२६८, २७७, २८८, ३००, ३०८, ३११, ३१८,
 ३३७, ३५६, ३७२, ३६०, ३६६, ५८४, ६०४
 पउमलयापविभत्ति [पद्यलताप्रविभक्ति] रा० १०१
 पउमवण [पद्यवन] जी० ३।८२६
 पउमवरवेइया [पद्यवरवेदिका] रा० १७४, १८६
 से १६८, २००, २०१, २३३, २६३. जी०
 ३।२१७, २५६, २६४ से २७०, २७२, २७३,
 ३६२, ३६५, ६३२, ६३६, ६६१, ६६८, ६७८,
 ६८३, ६८६, ७०६, ७३६, ७५४, ७६२, ७६६,
 ८५७
 पउमवरवेदिया [पद्यवरवेदिका] जी० ३।२१७,
 २६३, २६६, २८६, २९८, ७६८, ८१२, ८२३,
 ८३६, ८५०, ८८२, ८९१
 पउमसंड [पद्यपण्ड] जी० ३।८२६
 पउमा [पद्या] जी० ३।६८३, ६२०
 पउमासण [पद्यासन] रा० १८१, १८३. जी०
 ३।२६३, ३६६, ३७१
 पउमुत्तर [पद्योत्तर] जी० ३।६०१
 पउमुपपल [पद्यमौत्पल] रा० ८११
 पउर [प्रचुर] ओ० १, १४, ४६, ७४, १४१. रा०
 ६७१, ७६६
 पउसिया [त्रकुप्तिका] ओ० ७०
 पएस [प्रदेश] ओ० १६५।१०. रा० ४०, १३२,
 १५४. जी० १।५, ३३; ३।३०२, ३६८, ५७१,
 ७१५, ८०८, ८१६
 पएसघण [प्रदेशघन] ओ० १६५।३
 १. वउसियाहि [राय० सू० ८०४]

पद्मसि [प्रदेशिन्] रा० ६७१ से ६७५, ६७६ से ६८१, ७००, ७०२ से ७०४, ७०८ से ७१०, ७१८ से ७२०, ७२३ से ७२६, ७२८ से ७३४, ७३६ से ७३९, ७४६ से ७५२, ७५६ से ७६१, ७६३ से ७६६
 पद्मयोग [प्रयोग] ओ० १४, १४१. रा० ६७१, ७६१, ७६६
 पद्मोद्यधर [प्रतोदधर] ओ० ५६
 पद्मोद्यलङ्घि [प्रतोदयाष्ट] ओ० ५६
 पद्मोहर [पयोधर] रा० १३३. जी० ३३०३
 पद्म [पङ्क] ओ० ८६, ६२, १५०. रा० ८११. जी० ३, ६२३
 पद्मपद्मा [पङ्कप्रभा] जी० ३३६, ४१, ४३, ४४, १००, ११३
 पद्मबहुल [पङ्कबहुल] जी० ३६, ६, १६, २५, ३०, ६३
 पद्मकरय [पङ्करजस्] ओ० १५०. रा० ८११
 पद्मोत्सर्णग [पङ्कावसन्नक] ओ० ६०
 पद्म [पङ्कन्] ओ० ५०. रा० २४. जी० १३४
 पद्मस्मिताव [पङ्कामिताव] ओ० ६४
 पद्मम [पङ्कम] ओ० ६७, १७४, १७६. जी० ३३३८
 पद्ममा [पङ्कमी] जी० ११२३; २१४८, १४६; ३१२, ३६
 पद्ममासिय [पङ्कमासिक] ओ० ३२
 पद्ममी [पङ्कमी] जी० ३४, ७४, ८८, ६१, १६२, १११११२
 पद्मविध [पङ्कविध] जी० २१०१, १०२; ३१३०; ४२५; ६१४८
 पद्मविह [पङ्कविह] ओ० १५, ३७, ४०, ४२, ६६, ७०. रा० २७४, २७५, ६७२, ६८५, ७१०, ७३६, ७५१, ७७४, ७७८, ७६७. जी० १५, ६६, ११८; २४, १८; ३१३१, ४१०, ४४१, ८३३२१, ६७६; ४११; ६, १५६, १५८
 पद्मसयर [पङ्कसप्तति] जी० ३३३३३३३

पद्मणउड [पङ्कनवति] जी० ३३७१४
 पद्मणउति [पङ्कनवति] जी० ३३७६८
 पद्मनउति [पङ्कनवति] जी० ३३७६६
 पद्मणउत [पङ्कनवति] जी० ३३३६१
 पद्मणउति [पङ्कनवति] जी० ३३७२३
 पद्मणुष्वइय [पङ्कानुव्रतिक] ओ० ५२, ७८
 पद्मिदिय [पङ्केन्द्रिय] ओ० १५, ७३, १४३, १८२. रा० ६७२, ६७३, ८०१. जी० १५५; २१०१, ११३, १२२, १३८, १४६; ३१३०; ४११, ४, ६, ६, १०, १५, १६, २४, २५; ८५; ६१ से ३, ७
 पद्मिदिय [पङ्केन्द्रिय] जी० १८३, ६१, ६७, ६८, १०१ से १०३, ११६, ११७, १२५, १३६; २१०४, १०५, १३६, १३८, १४६, १४६; ३१३७ से १४७, १६१ से १६३, १६६, १११५; ४६, १८, २०, २१; ६५, ७, १६७, १६६, २२१, २२५, २२६, २३१, २५६, २५६, २६०, २६४, २६६
 पद्मर [पङ्कर] रा० १३७. जी० ३०७
 पद्मलिउड [प्राञ्जलिपुट] ओ० ४७, ५२. रा० ६०, ६८७, ६६२, ७१६
 पद्मलिकड [कृतप्राञ्जलि] ओ० ७०
 पद्मग [पण्डक] ओ० ३७
 पद्मगवण [पण्डकवन] रा० १७३, २७६. जी० ३१२८५, ४४५
 पद्मरग [पण्डरक] जी० ३३६३
 पद्मिदिय [पण्डित] ओ० १४८, १४६. रा० ८०६, ८१०
 पद्म [पाण्डु] ओ० ५, ८. रा० ७८२. जी० ३२७४
 पद्मुर [पाण्डुर] ओ० १, १६, २२, ४७. रा० ७२३, ७७७, ७७८, ७८८. जी० ३५६६
 पद्मुरतल [हम्मिय] [पाण्डुरतलहर्म्य] जी० ३५६४
 पद्मुरोग [पाण्डुरोग] जी० ३३६८
 पद्म [प्रान्त्य] रा० ७७४
 पद्माहार [प्रान्थाहार] ओ० ३५
 पद्मि [पङ्क्ति] ओ० ६६. रा० ७५, २६७, ३०२, ३२५, ३३०, ३३५, ३४०. जी० ३३२६७, ३१८, ३५५, ४६२, ४६७, ४६०, ४६५, ५००, ५०५, ५६४,

८३८१७ से ६
 पंथ [पन्थ, पयिन्] रा० ७३७
 पंथिय [पान्थिक] रा० ७८७, ७८८
 पंथुविट्टि [पंथुवृष्टि] जी० ३६२६
 पकडिज्जमाण [प्रकृष्यमाण] ओ० १६
 √पकर [प्र+कृ]—पकरेति. ओ० ७३.
 जी० ३१२४.—पकरेति. जी० ३१२१०
 पकरेत्ता [प्रकृत्य] ओ० ७३
 पकरणता [प्रकरण] जी० ३१२१०
 पकरणथा [प्रकरण] जी० ३१२११
 पकाम [प्रकाम] रा० ७३२, ७३७
 पकामरसभोइ [प्रकामरसभोजिन्] ओ० ३३
 पकार [प्रकार] जी० २१६८; ३५६५
 पकारवर्ग [पकारवर्ग] रा० ६६
 पकणी [पकणी] ओ० ७०. रा० ८०४
 पकिण्टक [पक्वेण्टक] जी० ३१८५
 पक्कीलित [प्रकीडित] जी० ३१६७
 पक्कीलिय [प्रकीडित] रा० १७३. जी० ३१२८५
 पक्क [पक्ष] ओ० २८. रा० १३०, १६०, १६७.
 जी० ३१२६४, २६६, ३००, ८४१
 पक्खंदोलक [पक्ष्यन्दोलक, पक्षान्दोलक] रा० १८०.
 जी० ३१२६२, ८५७
 पक्खंदोलक [पक्ष्यन्दोलक, पक्षान्दोलक] रा० १८१.
 जी० ३१२६३, ८५७
 पक्खपुडंतर [पक्षपुटान्तर] रा० १६७
 पक्खपेरंत [पक्षपर्यन्त] रा० १६७. जी० ३१२६६
 पक्खवाहा [पक्षवाह] रा० १३०, १६०, १६७.
 जी० ३१२६४, २६६, ३००
 √पक्खाल [प्र+क्षालय्]—पक्खालेइ. रा० ३५१.
 —पक्खालेति रा० २८८. जी० ३१४५४

१. यत्र तु पक्षिण आगत्यात्मानमन्दोलयन्ति ते पक्ष्यन्दोलकाः [राय० वृ०] ।

२. 'गिरिपक्खंदोलया' गिरिपक्षे—पर्वतपार्श्वे छिन्न-टङ्कगिरी वात्मानमन्दोलयन्ति ये ते तथा [ओ० वृ०] ।

पक्खालण [प्रक्षालन] ओ० १११ से ११३, १३७,
 १३८
 पक्खालिय [प्रक्षालित] ओ० ६८
 पक्खालेत्ता [प्रक्षाल्य] रा० २८८. जी० ३१४५४
 पक्खासण [पक्ष्यासन, पक्षासन] रा० १८१, १८३.
 जी० ३१२६३
 पक्खि [पक्षिन्] रा ६७१, ७०३, ७१८.
 जी० १११०१; ३१८८, १६५, ७२१
 √पक्खिव [प्र+क्षिप्]—पक्खिवइ. जी० ३१५१६.
 —पक्खिवेज्जा. जी० ३११०६
 पक्खिव [प्र+क्षेपय्]—पक्खिवावेमि. रा० ७५४
 पक्खिवित्ता [प्रक्षिप्य] जी० ३१५१६
 पक्खुभित [प्रक्षुभित] जी० ३१८४२, ८४५
 पक्खुभिय [प्रक्षुभित] ओ० ४६, ५२. रा० ६८७
 पगइ [प्रकृति] ओ० ७३६, ६११, ११६. रा० १७४,
 २३३. जी० ३१६२५
 पगठग [प्रकण्ठक] रा० १३७, १४६. जी० ३१३०७,
 ३५५
 पगति [प्रकृति] जी० ३१२८६ ५६८, ६२०, ७६५,
 ८१६, ८४१, ८५४, ६५६, ६५७, ६६४
 पगतिथ [प्रकृतिस्थ] जी० ३११२२१ से ११२३
 पगब्भ [प्रगल्भ] जी० ३१५६१
 पगाढ [प्रगाढ] रा० ७६५. जी० ३१११०
 √पगाय [प्र+गै]—पगाइंसु. रा० ७५
 पगार [प्रकार] रा० ८०६, ८१०. जी० २१७४,
 १४०, १५१
 पगास [प्रकाश] ओ० १३, १६, २२, ४७. रा० १३०,
 २५५, ६७०, ७७७, ७७८, ७८८. जी० ३१३००,
 ४१६, ५८६, ५९६, ५९७
 पगिज्ज [प्रगृह्य] रा० ६६४
 पगिज्जिय [प्रगृह्य] ओ० ११६
 पगीय [प्रगीत] रा० ७६, १७३. जी० ३१२८५
 √पगेणह [प्र+ग्रह्]—पगेण्हति रा० २८८
 पगेण्हित्ता [प्रगृह्य] रा० २८८
 पग्गहिन्तु [प्रगृह्य] जी० ३१४५७
 पग्गहिय [प्रगृह्य] ओ० ६७. रा० २६२

पञ्चकमणग [पञ्चकमणक] रा० ८०३

√पञ्चकख, ंकखा [प्रति + आ + खया]—पञ्चकखति

ओ० १५७—पञ्चकखामि, रा० ७६६

—पञ्चकखामो, ओ० ११७—पञ्चकखाइस्सइ.

रा० ८१६

पञ्चकखाण [प्रत्याख्याण] ओ० १२०, १४०, १५७.

रा० ६६८, ७५२, ७८७, ७८६

पञ्चकखाय [प्रत्याख्याय] ओ० ८४, ८५, ८७, ८८,

११७, १२१, १३६ रा० ७६६

पञ्चकखित्ता [प्रत्याख्याय] ओ० १५७

पञ्चकणुभवमाण [प्रत्यनुभवत्] रा० १८५, १८७,

७५१. जी० ३१०६, ११८, ११६, १२२, १२३,

२१७, २६७, २६८, ५७६

पञ्चकणुभवमाण [प्रत्यनुभवत्] ओ० १५.

रा० ६७२, ६८५, ७१०, ७७४. जी० ३११६,

११८, ११६, १२८, ३५८, १११४, १११७, १११८,

११२४

पञ्चकत्थिम [पाश्चात्य] रा० ४३, ४४, १७०, २३५,

२३६, २४४, २४६, ६६३, ६६४. जी० ३१३००,

३४४, ३४५, ३६७, ३६८, ४०६, ४१०, ५६१,

५६२, ५६८, ५७७, ६३२, ६६१, ६६६, ६६८,

६७३, ६८२, ६६३, ६६४, ६६७, ६६८, ७०८,

७१२, ७४२, ७४४, ७५४, ७६१, ७६५, ७६८,

७६६, ७७१ से ७७३, ७७६, ७७८, ८००, ८१४,

८२५, ८५१, ८८२, ८८५, ९०१, ९३६, ९४०,

९४४, १०१५

पञ्चकत्थिमिल्ल [पाश्चात्य] रा० २६६, २६७, ३०१,

३०६, ३१७, ३२२, ३२७, ३३५, ३४०, ३४५.

जी० ३१३३, २२०, २२१, २२४, २२५, ४६१,

४६६, ४७१, ४८२, ४८७, ४९२, ५००, ५०५,

५१०, ५७७, ६७३, ६६५ से ६६७, ७६६, ७७१,

७७३, ७७५, ७७७, ९१५

पञ्चकथुय [प्रत्यवस्तुत्] रा० ३७

√पञ्चकप्पिण [प्रति + अर्पय]—पञ्चकप्पिणइ.

ओ० ५७—पञ्चकप्पिणति. रा० १२.

जी० ३१५५—पञ्चकप्पिणति. रा० ४६

—पञ्चकप्पिणह. रा० ६. जी० ३१५५४

—पञ्चकप्पिणहि. ओ० ५५. रा० १७

—पञ्चकप्पिणोज्जा. ओ० १८०

—पञ्चकप्पिणोज्जाह. रा० ७०६

पञ्चकमाण [पच्यमान] जी० ३१२६१८

पञ्चकामित्त [प्रत्यमित्र] ओ० १४. रा० ६७१.

जी० ३१६१२

√पञ्चाया [प्रति + आ + जत्]—पञ्चाइस्सइ.

रा० ७६७—पञ्चायति. ओ० ७१.

जी० ३१५७२—पञ्चायाहिति. ओ० १४१.

पञ्चावड [प्रत्यावर्त] रा० २४. जी० ३१२७७

√पञ्चुण्णम [प्रति + उत् + नम्]—पञ्चुण्णमइ

ओ० २१. रा० २६२—पञ्चुण्णमति.

जी० ३१४५७

पञ्चुण्णमिता [प्रत्युन्नम्य] ओ० २१. रा० २६२.

जी० ३१४५७

√पञ्चुत्तर [प्रति + उत् + त्]—पञ्चुत्तरति.

जी० ३१४४३—पञ्चुत्तरेइ. रा० ६५६.

जी० ३१४५४

पञ्चुत्तरित्ता [प्रत्युत्तीर्य] जी० ३१४४३

पञ्चुत्तरेत्ता [प्रत्युत्तीर्य] रा० ६५६. जी० ३१४५४

पञ्चुत्थत्त [प्रत्यवस्तुत्] जी० ३१३११

√पञ्चुद्धर [प्रति + उद् + धृ]—पञ्चुद्धरिस्सामि

जी० ३१११८

पञ्चुद्धरित्तए [प्रत्युद्धर्तुम्] जी० ३१११८

√पञ्चुन्नम [प्रति + उत् + नम्]—पञ्चुन्नमइ.

रा० ८

पञ्चुन्नमिता [प्रत्युन्नम्य] रा० ८

पञ्चुत्तकाल [प्रत्युत्तकाल] जी० ३१२८५

√पञ्चुवेक्ख [प्रति + उप + ईक्ष]—पञ्चुवेक्खेइ.

ओ० ५६

पञ्चुवेक्खमाण [प्रत्युत्तमाण] रा० ६७४, ६८०,

६६८

पञ्चुवेक्खेत्ता [प्रत्युत्तय] ओ० ५६

पञ्चोणिवयंत [प्रत्यवनिपत्त] ओ० ४६

√पञ्चोत्तर [प्रति + उत् + त्]—पञ्चोत्तरति.

रा० २७७—पञ्चोत्तरति. रा० २८८

पञ्चोत्तरिता [प्रत्युत्तीर्य] रा० २७७
 पञ्चोयव [दे०] रा० १५४, १७४. जी० ३१२६,
 ३२७
 √पञ्चोरुभ [प्रति + अव + रुह्] — पञ्चोरुभति.
 जी० ३१५५६
 पञ्चोरुभित्ता [प्रत्यवरुह्य] जी० ३१५५६
 √पञ्चोरुह [प्रति + अव + रुह्] — पञ्चोरुहह.
 ओ० २१. रा० २७७. जी० ३१४४३
 — पञ्चोरुहति ओ० ५२. रा० ५७
 — पञ्चोरुहति रा० ८. जी० ३१४४३
 पञ्चोरुहिता [प्रत्यवरुह्य] ओ० २१. रा० ८.
 जी० ३१४४३
 पञ्चय [प्रच्छद] ओ० ५७
 पञ्छा [पश्चात्] ओ० १६५, १६६, १७७.
 रा० ५६, ६३, ६५, २७५, २७६, ७८१ से ७८७,
 ८०२. जी० ३१४४१, ४४२, ६८६, १०४८,
 १११५
 पञ्छाणुताविय [पश्चादनुतापिक] रा० ७७४,
 ७७५
 पञ्छयापिडय [पञ्छिकापिटक] रा० ७६१, ७७२
 पञ्जेमणम [प्रजेमनक] रा० ८०३
 पजोग [प्रयोग] रा० ७६४
 पज्ज [पद्य] रा० १७३. जी० ३१२८५
 पज्जत्त [पर्याप्त] जी० ११५१, ५५, ६३, ६५;
 ३१३३, १३४; ४१६, २२, २३, २५; ५११७, २६,
 २८ से ३०, ३२ से ३६, ३६, ४०, ४३, ४६, ४६,
 ५२, ५४ से ६०
 पज्जत्तग [पर्याप्तक] ओ० १८२. जी० ११४, ५८,
 ६७, ७३, ७८, ८१, ८४, ८८, ८९, ९२, १००, १०३,
 १११, ११२, ११६, ११८, १२१, १२६, १३५;
 ३१३६, १३६, १४०, १४६; ४१२, ६, १८, २१ से
 २३, २५; ५१३, ४, ७, १८ से २२, २४, २५, २७,
 ३१, ३३, ३४, ३६, ५०; ६१८, ८६, ९२, ९४
 पज्जत्तय [पर्याप्तक] ओ० १५६. जी० १११०१;
 ४१११; ५११२ से १६, २६, ५२, ६०
 पज्जत्ति [पर्याप्त] रा० २७४, २७५, ७६७.

जी० ११४, २६, ८६, ६६, १०१, ११६, १३३,
 १३६; ३१४४०, ४४१
 पज्जत्तिभाव [पर्याप्तभाव] रा० २७४, २७५,
 ७६७. जी० ३१४४०, ४४१
 पज्जलिय [प्रज्वलित] रा० ४५
 पज्जव [पर्यव] रा० १६६. जी० ३१५८, ८७,
 २७१, ७२४, ७२७, १०८१
 पज्जवसाण [पर्यवसान] ओ० १४६. रा० ८०६,
 ८०७. जी० १४६; ३१२५०, २५६, ६४८,
 ६४६
 पज्जालिय [प्रज्वलित] जी० ३१५८६
 √पज्जुवास [परि + उप + आस्] — पज्जुवासइ.
 ओ० ६६. रा० ६ — पज्जुवासति. ओ० ४७.
 रा० ६८७. — पज्जुवासति. रा० ६०
 — पज्जुवासामि. रा० ५८ — पज्जुवासामो.
 रा० १० — पज्जुवासिस्सति. रा० ७०४
 — पज्जुवासेइ. रा० ७१६ — पज्जुवासेज्जा
 रा० ७७६
 पज्जुवासणया [पर्युपासना] ओ० ४०, ५२.
 रा० ६८७
 पज्जुवासणा [पर्युपासना] ओ० ६६
 पज्जुवासणिज्ज [पर्युपासनीय] ओ० २.
 रा० २४०, २७६. जी० ३१४०२, ४४२, १०२५
 पज्जुवासमाण [पर्युपासनी] ओ० ८३
 पज्जुवासित्तए [पर्युपासितुम्] ओ० १३६.
 रा० ६
 पज्जोसवणा [पर्युषणा, पर्युपशमन] जी० ३१६१७
 पज्जोसमाण [पञ्चकमान] रा० ४०, १३२.
 जी० ३१२६५
 पट्ट [पट्ट] रा० ३७, २४५, ६६४, ६८३.
 जी० ३१३११
 पट्टण [पत्तन] ओ० ६८, ८६ से ९३, ९५, ९६, १५५,
 १५८ से १६१, १६३, १६८. रा० ६६७.
 जी० ३१५६५
 पट्टिया [पट्टिका] रा० १३०, १६०, ६६४, ६८३.
 जी० ३१२६४, ३००, ५६२

पट्ट [प्रठ] जी० ३।११८
 पठ [पट] ओ० २३, ६३
 पठंत [पतत्] जी० ३।५६०
 पठन [पटक] रा० ७५३
 पठवुद्धि [पटवुद्धि] ओ० २४
 पठल [पटल] रा० १२, १५४, १७४.
 जी० ३।११६, २८६, ३२८, ३३०, ३५५।३
 पठलग [पटलक] रा० १२, १५७, २५८, २७६.
 जी० ३।४१६, ४४५
 पठह [पटह] ओ० ६७. रा० १३, ७७, ६५७.
 जी० ३।१७८, ४४६, ५८८
 पडागा [पताका] ओ० ५५, ६४. रा० ३२, ५०, ५२,
 ५६, १३७, १७३, २३१, २४७, ६८१. जी० १।८०,
 ८२; ३।२८५, ३०७, ३७२, ३६३
 पडागाहपडागा [पताकातिपताका] ओ० २, १२,
 ५५. रा० २३, २८१. जी० ३।२६१
 पडागातिपडागा [पताकातिपताका]
 जी० ३।४४७
 √पडिकम्प [प्रति + कल्प्य] —पडिकम्पेइ.
 ओ० ५७—पडिकम्पेहि. ओ० ५५
 पडिकम्पिय [प्रतिकल्पित] ओ० ६२
 पडिकम्पेत्ता [प्रतिकल्प्य] ओ० ५७
 पडिकूल [प्रतिकूल] रा० ७५३, ७६७, ७६८, ७७६,
 ७७७
 पडिककंत [प्रतिक्रान्त] ओ० ११७, १४०, १५७,
 १६२. रा० ७६६
 पडिककमणारिह [प्रतिक्रमणार्ह] ओ० ३६
 पडिमय [प्रतिगत] ओ० ७६ से ८१. रा० ६१,
 १२०, ६६४, ६६७, ७१७, ७२२, ७७७, ७८७
 पडिगाहित्तए [प्रतिग्रहीतुम्] ओ० १११
 पडिगह [प्रतिग्रह] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,
 ७५२, ७८६
 पडिगाहित्तए [प्रतिग्रहीतुम्] ओ० ११२
 पडिचंद [प्रतिचन्द्र] जी० ३।६२६, ८४१
 पडिचार [प्रतिचार] ओ० १४६. रा० ८०२
 √पडिच्छ [प्रति + इष्] —पडिच्छइ. रा० ६८४

—पडिच्छए. ओ० २
 पडिच्छण [प्रतिच्छन्न] जी० ३।५८१
 पडिच्छमाण [प्रतीच्छत्] ओ० ६६
 पडिच्छयण [प्रतिच्छदन] रा० २४५. जी० ३।३११,
 ४०७
 पडिच्छायण [प्रतिच्छादन] रा० ३७
 पडिच्छिय [प्रतीष्ट] ओ० ६६. रा० ६६५
 पडिजागरमाण [प्रतिजाग्रत्] रा० ७६३
 पडिजागरेमाण [प्रतिजाग्रत्] रा० ५६
 पडिजाण [प्रतिघान] ओ० ६२
 पडिण [प्रतीचीन] जी० ३।५७७, १०३६
 पडिणिकाल [प्रतिनिकाश] रा० १४६. जी०
 ३।२२२
 √पडिणिकखम [प्रति + निस् + क्रम्] —पडिणि-
 कखमइ. ओ० २०. रा० २८६. जी० ३।४५४.
 —पडिणिकखमंति रा० १२. जी० ३।४५५
 पडिणिकखमित्ता [प्रतिनिष्क्रम्य] ओ० २०. रा०
 १२. जी० ३।४५५
 √पडिणिकखिव [प्रति + नि + क्षिप्] —पडिणि-
 कखिवइ. रा० २८८. जी० ३।५१६. —पडिणि-
 कखिवेइ. जी० ३।४५४
 पडिणिकखिवित्ता [प्रतिनिक्षिप्य] रा० २८८. जी०
 ३।५१६
 पडिणिकखिवेत्ता [प्रतिनिक्षिप्य] जी० ३।४५४
 √पडिणियत्त [प्रति + नि + वृत्] —पडिणियत्तइ.
 ओ० १७७—पडिणियत्तंति. जी० ३।७४६
 पडिणियत्तित्ता [प्रतिनिवृत्त्य] ओ० १७७
 पडिणीय [प्रत्यनीक] ओ० १५५. जी० ३।६१२
 पडिदुवार [प्रतिद्वार] ओ० २, ५५. रा० ३२, २८१.
 जी० ३।३७२, ४४७
 √पडिनिक्खम [प्रति + निस् + क्रम्] —पडिनिक्ख-
 मइ. रा० ७१०. —पडिनिक्खमंति, रा० २७६.
 —पडिनिक्खमंति जी० ३।४४६
 पडिनिक्खमित्ता [प्रतिनिष्क्रम्य] रा० २७६. जी०
 ३।४४६
 पडिपाद [प्रतिपाद] जी० ३।४०७

पडिपाय [प्रतिपाद] रा० २४५

√पडिपिषा [प्रति + पि + घा]—पडिपिषेइ. जी०
३।५।६

पडिपिघेत्ता [प्रतिपिघाय] जी० ३।५।६

√पडिपुच्छ [प्रति + प्रच्छ]—पडिपुच्छंति. ओ० ४५

पडिपुच्छण [प्रतिप्रच्छन] ओ० ५२. रा० ६७७

पडिपुच्छणा [प्रतिप्रच्छना] ओ० ४२

पडिपुच्छणिज्ज [प्रतिपुच्छनीय] रा० ६७५

पडिपुण्ण [प्रतिपूर्ण] ओ० १४, १५, १६, ६३, ७२,
१२०, १४३, १५३, १६२, १६५, १६६, १७०.

रा० १३१, १४७, १४८, १५०, १५२, २८०, २८६,
६७१ से ६७३, ६६८, ७५२, ७८६, ८०१, ८१४.

जी० ३।३०१, ३२३, ३२५, ४४६, ४५२, ५६२,
५६६, ५६७, ६१०

पडिपुण्णचंढ [प्रतिपूर्णचन्द्र] जी० ३।८६, २६०

पडिपुण्ण [प्रतिपूर्ण] जी० ३।५६६

पडिबंघ [प्रतिबन्ध] ओ० २८. रा० ६६५, ७७५

पडिबद्ध [प्रतिबद्ध] जी० ३।२२

पडिबोहण [प्रतिबोधन] रा० १५

पडिबोहिय [प्रतिबोधित] ओ० १४८, १४९. रा०
८०६, ८१०

पडिमट्टाइ [प्रतिभास्थायिन्] ओ० ३६

पडिमोघण [प्रतिमोचन] जी० ३।२७६, ५८१, ५८५

पडियाइविखय [प्रत्याख्यात] ओ० ११७

पडिरुव [प्रतिरूप] ओ० ७, १० से १२, १५, ७२, १६४-

रा० १, २, १६ से २३, ३२, ३४, ३६ से ३८,
१२४ से १२८, १३० से १३४, १३६, १३७,
१४१, १४५ से १४८, १५० से १५३, १५५ से
१५७, १६०, १६१, १७४, १७५, १८० से १८५,
१८८, १९२, १९७, २०६, २११, २१८, २२१, २२२,
२२४, २२६, २२८, २३०, २३१, २३३, २३८, २४२,
२४४ से २४७, २४९, २५३, २५६, २५७, २६१,
२७३, ६६८ से ६७०, ६७२, ६७३, ६७६, ६७७,
७००, ७०२, ७०३. जी० ३।२३२, २६० से २६३,
२६६ से २६९, २७६, २८६ से २९७, ३०० से
३०४, ३०६ से ३०८, ३१० से ३१२, ३१८,

३१९, ३२३ से ३२६, ३२८ से ३३०, ३३३,

३३४, ३३७, ३४७, ३४८, ३५२, ३५३, ३५५, ३६१,

३६५, ३७२, ३७७, ३८०, ३८१, ३८३, ३८५, ३८७,

३९०, ३९२, ३९३, ३९६, ४००, ४०१, ४०४, ४०६

से ४०८, ४१०, ४१३, ४१४, ४१६, ४२२, ४२७,

४३७, ५८१, ५८४, ५८५, ५९६, ५९७, ६३२, ६३६,

६४४, ६४६, ६४९, ६५५, ६६१, ६६८, ६७१, ६७२,

६७५, ६८६, ७२४, ७२७, ७३६, ७५८, ८३६, ८५७,

८६३, ८८१, ८८२, ८९१, ८९३ से ८९५, ८९७,

८९९, ९०४, ९०६, ९०७, ९११, ९१८, ९०३८,

१०३६, १०८१, ११२१, ११२२

पडिरुवय [प्रतिरूपक] रा० १६, २०, १७५ से १७९,

२०२, २३४, २६४. जी० ३।२८७, २८८, ३६३,

३६६, ५७६, ६४०, ६४१, ६६६, ६८४

पडिरुवय [प्रतिरूपक] रा० १६, ४७, ४८, ५६, ५७,

२७७, २८८, ३१२, ४७३, ६५६. जी० ३।४४३,

४५४, ४७७, ५३२, ५५६

√पडिलाभ [प्रति + लाभय्]—पडिलाभिससंति.

रा० ७०४.—पडिलाभेइ. रा० ७१६.

—पडिलाभेज्जा. रा० ७७६

पडिलाभेमाण [प्रतिलाभयत्] ओ० १२०, १६०.

रा० ६६८, ७५२, ७८६

√पडिलेह [प्रति + लिख्]—पडिलेहेइ. रा० ७६६

पडिल्लोम [प्रतिलोम] रा० ७५३, ७६७, ७६८, ७७६,
७७७

पडिवंसण [प्रतिवंसक] रा० १३०. जी० ३।३००

√पडिवज्ज [प्रति + पद्]—पडिवज्जेइ.

ओ० १८२. रा० ७७५.—पडिवज्जंति.

ओ० १५७.—पडिवज्जिस्सामि. रा० ६६५.

—पडिवज्जिस्सामो. ओ० ५२. रा० ६८७

पडिवज्जिन्ता [प्रतिपद्य] ओ० १५७

पडिवण्ण [प्रतिपन्न] ओ० २४, ७८, ८२, १८२

पडिवत्ति [प्रतिपत्ति] जी० १।१०; ६।८

पडिविरय [प्रतिविरत] ओ० १६१, १६३

√पडिविसज्ज [प्रति + वि + सर्जय्]

—पडिविसज्जेइ. ओ० ५४. रा० ६८४.

—पडिविसज्जेहिंति. ओ० १४७. रा० ८०८

पडिवूह [प्रतिव्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६

पडिसंखेवेमाण [प्रतिसंक्षिपत्] रा० ५६

पडिसंलीणया [प्रतिसंलीणता] ओ० ३१, ३७

पडिसंसाहणया [प्रतिसंसाधना] ओ० ४०

√पडिसार [प्रति + सं + ह]—पडिसाहरइ.

ओ० २१. रा० ८

पडिसाहरित्ता [प्रतिसंहृत्य] ओ० २१

पडिसाहरेत्ता [प्रतिसंहृत्य] रा० ८

पडिसाहरेमाण [प्रतिसंहरत्] रा० ५६

√पडिसुण [प्रति + श्रु]—पडिसुणति. रा० १०.

जी० ३१४४५.—पडिसुणिज्जासि. रा० ७५३.

—पडिसुणेइ. ओ० ५६. रा० १८.—पडि-

सुणेति ओ० ११७. रा० ७०७. जी० ३१५५५.

—पडिसुणेति. रा० १४. पडिसुणेज्जासि.

रा० ७५१

पडिसुणित्ता [प्रतिश्रुत्य] रा० १८. जी० ३१४४५

पडिसुणेत्ता [प्रतिश्रुत्य] ओ० ५६. रा० १०.

जी० ३१५५५

पडिसुय [प्रतिश्रुत] रा० १४

पडिसूर [प्रतिसूर] जी० ३१६२६, ८४१

पडिसेग [प्रतिषेक] रा० २५४

पडिसेविय [प्रतिषेवित] रा० ८१५

पडिसेह [प्रतिषेध] जी० २१६६, १०१

पडिहत [प्रतिहत] जी० ३१७४६

पडिहत्य [दे०] रा० १७४. जी० ३१३२४, ८५७,

८६३, ८६६, ८७५, ८८१, ८८८

पडिहय [प्रतिहत] ओ० १६५।१, २

पडोण [प्रतीचीन] रा० १२४. जी० ३१६३६

पडोणवात् [प्रतीचीनवात्] जी० ११८१

पडोणवाय [प्रतीचीनवाय] जी० ३१६२६

पडु [पटु] ओ० ६८. रा० ७, १३, ६५७.

जी० ३१३५०, ४४६, ५६३, ८४२, ८४५, १०२५

पडुच्च [प्रतीत्य] रा० ७६३. जी० ११३४

पडुत्पन्न [प्रत्युत्पन्न] जी० ३११६५ से १६७

पडुत्पाएमाण [प्रत्युत्पद्यमान] जी० ३१२५६

पडोयार [प्रत्यवतार] ओ० ४३. जी० ३१२१८,

२५६, ५७८, ५६६, ५६७

पडस [प्रथम] ओ० ४७, १४४, १७४, १७६, १८२.

रा० ८०२. जी० ३१२२६, ६८२, ६८३, ६८८;

७।१, २, ४, ११, १३, १५, १७, २०, २२, २३;

६।१ से ७, २३२, २३३, २३५, २३७, २४१, २४३,

२४५, २४७, २५०, २५२, २५३, २५५, २६७, २६८,

२७०, २७२, २७५, २७७, २७९, २८१, २८४, २८६,

२८८ से २६३

पडमग [प्रथमक] रा० २२८. जी० ३१३८७, ६७२

पडमसत्तराईदिया [प्रथमसत्तरात्रिदिवा] ओ० २४

पडमसरयकाल [प्रथमशरत्काल] जी० ३१११८, ११६

पडमा [प्रथमा] जी० ३१२, ३८८, ११११

पडमित्तुय [प्रथम] रा० ७६८

पणगजीव [पनकजीव] ओ० १८२

√पणच्च [प्र + नृत्]—पणच्चिसु. रा० ७५

पणत्तीस [पञ्चत्रिंशत्] जी० ३१८०२

पणपण [दे० पञ्चपञ्चाशत्] जी० ६।६

पणपन्न [दे० पञ्चपञ्चाशत्] जी० २।२०

पणमिय [प्रणत] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.

जी० ३१२६८, २७४

पणयाल [पञ्चचत्वारिंशत्] जी० ३१२२६।६

पणयालीस [पञ्चचत्वारिंशत्] ओ० १६२.

जी० ३१३००

पणयालीसविह [पञ्चचत्वारिंशद्विध] ओ० ४०

पणयासण [प्रणतासन] रा० १८१, १८३.

जी० ३१२६३

पणव [पणव] ओ० ६७. रा० १३, ७७, ६५७.

जी० ३१७८, ४४६, ५८८

पणवणिय [पणपन्निक] ओ० ४६

पणवीस [पञ्चविंशति] रा० १२७. जी० ३१६१

पणस [पनस] जी० ३१३८८

पणाम [प्रणाम] रा० ६८, २६१, ३०६.

जी० ३।४५७, ४७१, ५१६
 पणि [पण्य] जी० ३ ६०७
 पणिय [पणित, पण्य] ओ० १. रा० ७७४
 पणियगिह [पणित°, पण्यगृह] ओ० ३७
 पणियशाला [पणित°, पण्यशाला] ओ० ३७
 पणिहाय [पणियाय, प्रणिहाय] जी० ३।७३ से
 ७५, १२४, १२५, ७६५, १०२५
 पणीत [प्रणीत] जी० १।१
 पणीयरसपरिचक्षाय [प्रणीतरसपरित्याग] ओ० ३५
 पणुवीस [पञ्चविंशति] जी० ३।२२६।५
 पणोल्लिय [प्रणोदित] ओ० ४६
 पण्णओ [प्रज्ञातय] रा० ७५२, ७५४, ७५६, ७५८,
 ७६०, ७६२, ७६४
 पण्णगद्ध [पन्तगार्ध] जी० ३।३०२
 पण्णट्टु [पञ्चपण्डित] जी० ३।२२२
 पण्णट्टि [पञ्चपण्डित] रा० १६४
 पण्णत्त [दे०] ओ० १
 पण्णत्त [प्रज्ञत्त] ओ० २. रा० ३. जी० १।१
 पण्णत्तर [पञ्चवत्तति] जी० ३।२४६
 पण्णत्तरि [पञ्चसप्तति] जी० ३।६६१
 पण्णत्ति [प्रज्ञप्ति] रा० ८१७
 पण्णरस [पञ्चदशान्] जी० ३।१२
 पण्णरसविध [पञ्चदशविध] जी० ३।२२६
 पण्णरसविह [पञ्चदशविध] जी० १।८०; २।१४
 √पण्णव [प्र-।-ज्ञापय] —पण्णवईसु. जी० १।१.
 —पण्णवेइ, ओ० ५२. रा० ६८७. —पण्णवेइति.
 जी० ३।२१०.—पण्णवेइति. जी० ३।८३।३
 पण्णवणा [प्रज्ञापना] रा० ७७४. जी० १।५, ५८,
 ७२, १००, ११०, १११, ११६, ११८, १२६, १३५;
 २।८६; ३।१८४, २१४, २३२, २३३
 पण्णवणापव [प्रज्ञापनापद] जी० ३।२२०, २३१
 पण्णवित्तए [प्रज्ञापयितुम्] रा० ७७४
 पण्णवीस [पञ्चविंशति] जी० ३।१२
 पण्णवेमाण [प्रज्ञापयत्] ओ० ६८

१ द्रष्टव्यम्—निशीथभाष्ये ४४३५।

√पण्णाय [प्र-।-ज्ञा]—पण्णायति. जी० ३।६६६
 पण्णास [पञ्चाशन्] रा० २०६. जी० २।३६
 पण्हावागरणवसाधर [प्रश्नव्याकरणवसाधर]
 ओ० ४५
 पतणतणाइत्ता [प्रतनतनाय्य] रा० १२
 √पतणतणाय [प्र-।-तनतनाय]—पतणतणायति.
 रा० १२
 पतणु [प्रतनु] ओ० ६१, ११६
 पतरग [प्रतरक] जी० ३।३०२
 √पतव [प्र-।-तय]—पतवति. जी० ३।४४७.
 —पतवति. रा० २८१
 पतिट्ठाण [प्रतिष्ठान] रा० १६, १७५.
 जी० ३ २८७, ३००, ४४६, ४४८
 पत्ता [पत्र] ओ० ५, ६, ८, १३, १६, २७, ६४. रा० ६,
 १२, २६, ३१, १६१, १७४, २२८, २५८, २७०,
 २७६, ७८२. जी० १।७१, ७२; ३।११८, ११६,
 २७४, २७५, २७६, २८३, २८४, २८६, ३३४,
 ३८७, ४१६, ४३५, ४५४, ५८१, ५८६, ५८६,
 ६२२, ६४३, ६७२
 पत्त [प्राप्त] ओ० ३७, ११७, १४०, १५७, १६२,
 १६५।१६, २२. रा० १, ६३, ६५, ६६७, ७६६,
 ७६७. जी० ३।८६७
 पत्ताच्छेज्ज [पत्रच्छेद्य] ओ० १४६. रा० ८०६
 पत्तट्टु [दे० प्राप्तार्थ] ओ० ६३. रा० १२, ७५८,
 ७५६, ७६५ ७६६, ७७०
 पत्तभार [पत्रभार] ओ० ५, ८. जी० ३।२७४
 पत्तमंत [पत्रवत्] ओ० ५, ८. जी० ३।२७४
 पत्तल [पत्रल] ओ० १६, ४७. जी० ३।५६६, ५६७
 पत्तासव [पत्रानव] जी० ३।८६०
 पत्ताहार [पत्राहार] ओ० ६४
 √पत्तिय [प्रति-।-य]—पत्तियेज्जा. रा० ७५०.
 —पत्तियाभि. रा० ६६५
 पत्तिय [पत्रित] रा० ७८२
 पत्तियमाण [प्रतिपत्त] जी० १।१

१. अनुकरण वचन ।

पत्नी [पत्नी] जी० ३।५८७

पत्नेय [प्रत्येक] जी० ५।२६

पत्नेयशरीर [प्रत्येकशरीर] जी० ५।३१

पत्नेय [प्रत्येक] ओ० ५०. रा० २०, ४८, १३७,

१६४, १७०, १७४ से १७६, १८६, २११, २१५,

२१७ से २१९, २२१, २२२, २२४, २२६, २२७,

२३०, २३१, २३३, २५५, २५६, २८२, ६६४.

जी० ३।२५६, २८६ से २८८, ३०७ से ३१३,

३४५, ३५५, ३५६, ३५८, ३५९, ३६३, ३६८,

३६९, ३७२ से ३७८, ३८०, ३८१, ३८३ से

३८६, ३९२, ३९३, ३९५, ४१६, ४१७, ४४८,

५५८ से ५६२, ६३२, ६३४, ६३५, ६३७, ६४१,

६६१, ६६२, ६८३ ६८४, ७२५, ७२७, ७२८,

७६२, ७६३, ८५७, ८८२ से ८८५, ८८७ से

८९१, ८९३, ९०३, ९०६, ९०८, ९१०, ९११,

९१३, १०४८; ५।२८, ३०; ६।१७४

पत्नेयजीव [प्रत्येकजीव] जी० १।७१

पत्नेयबुद्धसिद्ध [प्रत्येकबुद्धसिद्ध] जी० १।८

पत्नेयरस [प्रत्येकरस] जी० ३।६६३

पत्नेयशरीर [प्रत्येकशरीर] जी० १।६८, ६९, ७२;

५।३१, ३३ से ३६

पत्तोमोदरिय [प्राप्तावमोदरिक] ओ० ३३

√पत्थ [प्र+अर्थय]—पत्थति. ओ० २०—पत्थेइ.

रा० ७१३—पत्थेति. रा० ७१३

पत्थ [प्रस्थ] ओ० १११

पत्थ [पथ्य] जी० ३।८५४, ८७८, ९५७

पत्थड [प्रस्तट] रा० १३०, १३७. जी० ३।३००,

३०७

पत्थडोदय [प्रस्तटादक] जी० ३।७८३, ७८४

पत्थय [पथ्यक] रा० ७७२

पत्थयण [पथ्यदन] रा० ७७४

पत्थर [प्रस्तर] ओ० ४६

पत्थिज्जमाण [प्राथ्यमान] ओ० ६९

पत्थिय [प्राथित] ओ० ७०. रा० ९, २७५, २७६,

६८८, ७३२, ७३७, ७३८, ७४६, ७६८, ७७७,

७९१, ७९३, ८०४. जी० ३।४४१, ४४२

पद [पद] रा० ७६, २६२. जी० ३।१८४, ४५७

९३७

पदाहिण [प्रदक्षिण] जी० ३।४४३

पदाहिणावत्तमंडल [प्रदक्षिणावर्तमंडल]

जी० ३।८४२

पदीव [प्रदीप] रा० ७७२

पदेस [प्रदेश] रा० १३५, २३६, ७७२. जी० १।४;

३।३०५, ३२७, ५७३, ५९७, ६६८, ७१७, ७८८,

७८९, ८०३, ८२८, ८२९, ८४५, ८५३, ९४६;

५।५१

पदेसद्वृता [प्रदेशार्थ] जी० ५।५१, ५२

पदेसद्वया [प्रदेशार्थ] जी० ५।५० से ५२, ५८

से ६०

पन्नगद्ध [पन्नगार्ध] रा० १३२

पन्नरस [पञ्चदशन्] रा० २०८. जी० ३।३८३।

१९

पन्नरसइ [पञ्चदश] जी० ३।८३८।१९

पन्नरसविह [पञ्चदशविध] जी० २।१४

पन्नास [पञ्चाशत्] रा० १२७. जी० २।२०

पप्पडमोयय [पपटमोदक] जी० ३।६०१

पप्फुल्ल [प्रफुल्ल] जी० ३।२५६

पन्मट्ट [प्रभ्रष्ट] रा० १२, २६१, २६३ से २६६,

३००, ३०५, ३१२, ३५५. जी० ३।४५७ से

४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५५४

पन्मार [प्राग्मार] ओ० ४६

पभंकरा [प्रभङ्करा] जी० ३।१०२३, १०२६

पभंजण [प्रभञ्जन] जी० ३।७२४

पभा [प्रभा] ओ० ४७, ७२. रा० २१, २३, २४,

३२, ३४, ३६, १२४, १४५, १५४, १५७, २२८, २७३

७७७, ७७८, ७८८. जी० ३।२६१, २६६, २६९.

३२७, ३८७, ६३७, ६५९, ६७२, ७२८, ७४३,

७५०, ७६३, ७६५, १०७७

पभाय [प्रभाति] ओ० २२. रा० ७२३, ७७७, ७७८,

७८८

पभास [प्रभास] रा० २७९. जी० ३।४४५

√प्रभास [प्र-भास्]—प्रभासिसु. जी० ३।७०३

—प्रभासिस्सन्ति. जी० ३।७०३—प्रभासेइ.

रा० ७७२. जी० ३।३२७—प्रभासेति.

रा० १५४. जी० ३।३२७—प्रभासेति.

रा० १५४. जी० ३।७४१

प्रभासेमाण [प्रभासमानं] ओ० ४७,७२.

जी० ३.११२१

प्रभिइ [प्रभृति] रा० ७६०,७६१

प्रभिति [प्रभृति] ओ० ५२,६३. रा० ६८७,६८८,
७०४. जी० ३।८३८।२५

प्रभु [प्रभु] रा० ७५८ से ७६१. जी० ३।११०,
६८८ से ६६७, १०२३ से १०२५,१११५,
१११६

प्रभूय [प्रभूय] ओ० १,१४,४६,१४१. रा० ६,
१२,६७१,७६६. जी० ५८६

√प्रमज्ज [प्र-मृज्]—प्रमज्जइ. रा० २६१

—प्रमज्जति. जी० ३।४५७

प्रमज्जिता [प्रमृज्य] रा० २६१. जी० ३।४५७

प्रमत्त [प्रमत्त] रा० १५

प्रमद्वण [प्रमद्वल] ओ० २६. रा० १२,७५८,७५९.
जी० ३।११८

प्रमाण [प्रमाण] ओ० १५,१६,३३,१२२,१४३.

रा० ६,१२,४०,२०५ से २०८,२२५,२५४,
२७६,६७२,६७३,६७५,७४८ से ७५०,७७३,

८०१. जी० ३।३१३,३६८ से ३७१,३८४,

४०६,४१०,४१५,४४२,५६८,५६९,५६६,५६७,
६५२,६६६,६७३,६७६,६७९,६८५,६८६,

६८८,६९१ से ६९६,७३७,७५०,७५३,७६४,
७६५,८००,८८६,८९६,८९८,९१६ से ९२१,

९४१,१०७४

प्रमाणपत्त [प्रमाणप्राप्त] ओ० ३३

प्रमाणभूय [प्रमाणभूत] रा० ६७५

प्रमाय [प्रमाव] ओ० ४६

प्रमावावरिय [प्रमावावरित] ओ. १३६

प्रमुइय [प्रमुदित] ओ० १,१६,४६. रा० १७३.

जी० ३।५६३

प्रमुच्चमाण [प्रमुच्चत्] जी० ३।११८

प्रमुदित [प्रमुदित] जी० ३।२८५

प्रमुह [प्रमुख] ओ० ५५,५८,६२,७०,७१,८१.
रा० २४६,७७६

प्रमोककल [प्रमं क] रा० ६६८,७५२,७८६

प्रम्ह [पक्षमन्] ओ० ८२

प्रम्ह [पक्ष] जी० ६।१६४

प्रम्हल [पक्षमल] ओ० ६३. रा० २८५.

जी० ३।४५१

प्रम्हलेस [पक्षमिष्य] जी० ६।१६०

प्रम्हलेस्स [पक्षमिष्य] जी० ६।१८५,१६६

प्रम्हलेस्सा [पक्षमिष्या] जी० ३।११०२

प्रय [पद] ओ० २१,५४. रा० ८,७१४.

जी० ३।२३६,२८५

प्रयंठम [प्रकण्ठक] जी० ३।३२२

√प्रयच्छ [प्र-यम्]—प्रयच्छइ. रा० ७३२

प्रयण [पचन] ओ० १६१,१६३

प्रयणु [प्रतनु] जी० ३।५६८,६११,७६५,८४१

प्रयत [प्रयत] जी० ३।४५७

प्रयत्त [प्रयत्त] रा० २६२. जी० ३।६०१,८६६

प्रयबद्ध [पदबद्ध] रा० १७३. जी० ३।२८५

प्रययदेव [पतमदेव,पतकदेव] ओ० ४६

प्रयर [प्रतर] रा० ४०,१३२

प्रयरग [प्रतरक] जी० ३।२६५,३१३,५६३

√प्रयला [प्र-लाम्]—प्रयलाएज्ज.

जी० ३।११८

प्रयलिय [प्रचलित] ओ० २१,५४. रा० ८,
७१४

प्रयसंचार [पदसंचार] रा० ७६,१७३.
जी० ३।२८५

√प्रया [प्र-जनम्]—प्रयाइइ. रा० ८०१
—प्रयाइति. ओ० १८३

प्रयाणुसारि [पदःसुसारिन्] ओ० २४

प्रयार [प्रचार] ओ० ३७

प्रयावण [पाचन] ओ० १६१,१६३

पयाहिण [प्रदक्षिण] ओ० ४७, ५२, ६६, ७०, ७८,
 ८०, ८१, ८३. रा० ६, १०, १२, ५६, ५८, ६५,
 ७३, ७४, ११८, १२०, ६८७, ६६२, ६६५, ७००,
 ७१६, ७१८, ७७८
 पयाहिणावत्त [प्रदक्षिणावत्त] ओ० १६.
 जी० ३।५६६, ५६७, ८३८।१०, ११
 पयोधर [पयोधर] जी० ३।५६७
 पर [पर] ओ० १५४, १५५, १६० से १६३, १६५,
 १६६. रा० ८१६
 परं [परम्] जी० ३।८३८।२३
 परंगमाण [पर्यङ्गण] रा० ८०४
 परंपर [परम्पर] जी० १।४३
 परंपरगय [परम्परगत] ओ० १६५।२०
 परंपरसिद्ध [परम्परसिद्ध] जी० १।७, ६
 परक्कम [पराक्रम] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७,
 १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७
 परग [परक] जी० ३।५८७
 परघर [परगृह] रा० ८१६
 परच्छंवाणुवत्तिय [परच्छन्दानुवर्तित] ओ० ४०
 परपरिवाडय [परपरिवादिक] ओ० १५६
 परपरिवाय [परपरिवाद] ओ० ७१, ११७, १६१,
 १६३
 परपरिवायविवेग [परपरिवादविवेक] ओ० ७१
 परपुट्ट [परपुष्ट] रा० २५. जी० ३ २७८
 परम [परम] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२,
 ६३, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४, १६
 से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, ९७७,
 २७६, २८१, २८८, २६०, ६५५, ६८१, ६८३,
 ६६०, ६६५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४,
 ७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७६५, ७७४, ७७८,
 ८०२. जी० ३।११६, ४८३, ४४५, ४४७, ४५५
 परमक्किह [परमकृष्ण] जी० ३।८३, ६४
 परमक्किहलेस्सा [परमकृष्णश्या] जी० ३।१०२
 परमट्ट [परमार्थ] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,
 ७५२, ७८६

परमण [परमान्न] जी० ३।५६२
 परमतीय [परमशीत] जी० ३।११५
 परममुक्कलेस्सा [परमशुक्ललेश्या] जी० ११०४
 परममुक्किल [परमशुक्ल] जी० ३।१०७६, १०६६
 परमहंस [परमहंस] ओ० ६६
 परमाउ [परमायुष्] ओ० ६८
 परमाणु [परमाणु] जी० ७७१. जी० १।५
 परलोग [परलोक] ओ० २६, ८६ से ६५, ११४,
 ११७, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७
 परवाइ [परवादिन्] ओ० २६
 परवाय [परवाद] ओ० २६
 परमु [परशु] रा० ७६५
 परस्सर [पराशर] जी० ३।६२०
 पराइय [पराजित] ओ० १४. जी० ६७१
 √परामुस [परा+मृष्]—परामुसइ. रा० २६४.
 जी० ३।४६०—परामुसति. रा० २६८.
 जी० ३।४५७
 परामुसित्ता [परामृश्य] रा० २६४. जी० ३।४५७
 √परावत्त [परा+वृत्]—परावत्तेइ. रा० ७२६
 —परावत्तेहि. रा० ७२८
 परासर [पराशर] ओ० ६६
 परिकच्छिय [परिकक्षित] रा० ५२
 परिकम्म [परिकर्मन्] ओ० ३६
 √परिकह [परि+कथय्]—परिकहेइ ओ० ७१.
 रा० ६१
 परिकहेउं [परिकथयितुम्] ओ० १६५।१६
 परिकिलंत [परिवलान्त] रा० ७२८, ७६०, ७६१
 √परिकिलेस [परि+क्लिष्]—परिकिलेसंति
 ओ० ८६
 परिकिलेस [परिक्लेश] ओ० १६१, १६३
 परिकिलेसित्ता [परिक्लिश्य] ओ० ८६
 परिक्वित्त [परिक्वित्त] ओ० १, ५२, ६४, ७०.
 रा० १७, १८, १३२, १७०, १७४, २३३, ६८१,
 ६८३, ६८७, ६८८, ६६२, ७००, ७१६, ८०४.
 जी० ३।२५६, २८६, ३०२, ३५८, ३६५, ६३२,
 ६६१, ६८३, ७६२, ८५७, ८८२, ६१०, ६११

परिक्लेष [परिक्षेप] ओ० १७०. रा० १२४, १२६,

१८८, १८९, २०१. जी० ३।५१, ८१, ८२, ८६,
१२७, २१७, २२२, २२६।३ से ६, २६०,
२६३, २७३, २९८, ३५१, ३६१, ३६२, ५७७,
६३२, ६५८, ६६१, ६६८, ६८६, ७०६, ७३६,
७५४, ७६२, ७६५, ७७०, ७९४, ७९५, ७९८,
८१२, ८२३, ८३२, ८३५, ८५०, ८८२, ९११,
९१८, ९५२, १०१० से १०१४, १०७३, १०७४

परिखित्त [परिक्षिप्त] रा० ५६, १७३, ६८१.

जी० ३।२८५

परिगत [परिगत] जी० ३।२८८, ३००, ३३२

परिगय [परिगत] ओ० २ रा० १७, १८, २०,

३२, १२६, १५६, ७६५. जी० ३।३७२

परिग्रह [परिग्रह] ओ० ७१, ७६, ७७, ११७,

१२१, १६१, १६३. रा० ६६, ७१७, ७६६

परिग्रहवेरमण [परिग्रहविरमण] ओ० ७१

परिग्रहसंज्ञा [परिग्रहसंज्ञा] जी० १।२०; ३।१२८

परिग्रहिय [परिग्रहीत] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६,

६२, ६४, ११७, १३६. रा० ८, १०, १२, १४, १८,

४६, ५१, ७२, ७४, ११८, २७६, २७६ से २८२, २९२,

६५५, ६८१, ६८३, ६८६, ७०७, ७०८, ७१३, ७१४,

७२३, ७६०, ७६१, ७६६. जी० ३।४४२, ४४५,

४४६, ४४८, ४५७, ४५५, ६३०, ७२७

परिघट्टिय [परिघट्टित] रा० १७३. जी० ३।२८५

परिघट्ट [परिघट्ट] रा० ५२, ५६, २३१, २४७. जी०

३।३६३, ४०१

परिचत्त [परित्यक्त] ओ० ६२

परिचुम्बिञ्जमाण [परिचुम्ब्यमान] रा० ८०४

परिच्छेय [परिच्छेद] ओ० ५७

परिजण [परिजन] ओ० १५०. रा० ७५१, ८०२

८११

√परिजाण [परि-+जा]—परिजाणाह. रा० ७०१

—परिजाणाति. रा० ७५३

परिजूसिय [परिजुष्ट] ओ० ४३

परिणत [परिणत] जी० १।५; ३।५८७, ५९३, ५९५,

५९८

√परिणम [परि-+णम्]—परिणमड. ओ० ७१.

रा० ७७१—परिणमति. जी० १।६५

परिणमंत [परिणमत्] रा० ७७१

परिणममाण [परिणमत्] जी० ३।६८२

परिणय [परिणत] ओ० ५, ८. रा० १२, ७५८, ७५९

८०६, ८१०. जी० १।५; ३।२२, ११८, २७४, ५८६

५८८ से ५९२, ५९४

परिणाम [परिणाम] ओ० ७१, ६०, ११६, १५६. रा०

१३३. जी० ३।१२८, ३०३, ५८६, ५८८, ५९२,

६७४, ६७६ से ६८२

√परिणाम [परि-+णाम्]—परिणामेड. रा० ७३२

√परिणिष्वा [परि-+निर्-+वा]—परिणिष्वाह. ओ.

१७७—परिणिष्वायति. ओ० ७२. जी० १।१३३

—परिणिष्वाहिति. ओ० १६६—परिणिष्वा-

हिति. ओ० १५४

परिणिष्वाण [परिनिर्वाण] ओ० ७१ जी० ३।६१८

परिणिष्वाय [परिनिर्वृत] ओ० ७१

परिताव [परिताव] ओ० ८६

परितावणकर [परितापनकर] ओ० ४०

परिताविय [परितापित] ओ० ६२

परित्ता [परीत] जी० १।२६, ६२, ६४, ६५, ७७, ७६,

८०, ८२, ८७, ८८, ९६, १०१, १०३, ११२, ११६,

११६, १२१, १२३, १२८, १३४, १३६; ६।७५,

७६, ८७

परित्तसंसारिय [परीतसंसारिक] रा० ६४

परिघाव [परि-+घाव]—परिघावति. रा० २८१.

जी० २।४८७

√परिनिष्वा [परि-+निर्-+वा]—परिनिष्वा-

हिति. रा० ८१६

परिपीलङ्गा [परिपीड्य] जी० १।५०

परिपुण्ण [परिपूर्ण] रा० २४

परिपूत [परिपूत] जी० ३।८७८

परिपूय [परिपूत] ओ० १११ से ११३, १३७, १३८

परिभव [परिभव] ओ० ४६

परिभ्रमण [परिभ्रमण] ओ० १५४, १६५, १६६
 परिभाइत्ता [परिभाज्य] रा० ६६५
 परिभाएमाण [परिभाजयत्] रा० ७६५, ७८७, ७८८,
 ८०२
 परिभायइत्ता [परिभाज्य] ओ० २३
 परिभुंजमाण [परिभुञ्जान] ओ० ११६, ११७
 परिभुंजेमाण [परिभुञ्जान] रा० ७६५, ८०२
 परिभुञ्जमाण [परिभुञ्जमान] रा० ३०, १३६, १७४,
 ८०४. जी० ३११८, ११६, २८३, २८६, ३०६
 परिभोगत्ता [परिभोगस्व] जी० ३१६१८
 ६१६, ६२१
 परिमंडल [परिमण्डल] रा० ६, १२, १४. जी०
 ११५; ३२२
 परिमंडित [परिमण्डित] जी० ३३७२
 परिमंडिय [परिमण्डित] ओ० १, ५७, ६४, ७०. रा०
 ३२, ५२, ५६, १७३, २३१, २४७, ६८१, ८०४.
 जी० ३३६३
 परिमहण [परिमर्दन] ओ० ६३
 परिमाण [परिमाण] जी० ३१२७३, २५०, २५८
 परिमित्य [परिमित] ओ० १५. रा० ६७२
 परिमित्योपिडवाइय [परिमितोपिडवातिक] ओ० ३४
 √परियट्ट [परि + वृत्] - परियट्टयति ओ० ४५
 परियट्टणा [परिवर्तना] ओ० ४२, ४३
 परियत्ता [परिवर्त] ओ० ४६
 परियर [परिकर] रा० ६६, ७६५
 √परियाइ [परि + आ + दा] —परियाइइ रा०
 १८—परियायति रा० १०. जी० ३१४४५
 परियाइत्ता [पर्यादा] रा० १०. जी० ३१४४५
 परियाइय [पर्यादा] रा० ६६४. जी० ३१५६२
 परियाय [पर्याय] ओ० ६४, १५५, १५८ से १६०,
 १६५, १६६
 √परियाण [परि + जा] - परियाणइ रा० ६४
 परियाय [पर्याय] ओ० २३, ११४, १४०.
 रा० ८१५
 परिवारणिद्धि [परिवारणद्धि] जी० ३११०२५
 परिवाल [परिवार] ओ० २३, ७०, ७१. रा० ७७७,

७७८, ८०४
 परियावणकर [परितापनकर] ओ० १६१, १६३
 परिरय [परिरय] ओ० १६२. जी० ३१२६११,
 २, ४, ५, ८३६, ६१०
 परिलित [परिलीयमान] ओ० ६२. जी० ३१२७५
 परिली [दे०] रा० ७७
 परिविञ्जमाण [परिविञ्जमान] रा० ८०४
 परिवच्छिय [परिवस्त्रित] ओ० ५७
 परिवञ्जिय [परिविञ्जित] जी० ३१६२२
 √परिवड्ड [परि + वृत्] —परिवड्डइ. जी०
 ३१८३८१. —परिवड्डिइस्सइ. रा० ८०४
 √परिवय [परि + वृत्] —परिवयति. रा० २८१.
 जी० ३१४४७
 √परिवस [परि + वस्] —परिवसइ. ओ० १४.
 रा० ७०३. —परिवसति ओ० १८६.
 रा० १८६. जी० ३१२३२. —परिवसति.
 जी० ३१२३४
 परिवसन [परिवसन] जी० ३१५६८
 √परिवह [परि + वह] —परिवहति
 जी० ३११०१५
 परिवहिताए [परिवोढुम्] रा० ७६०
 परिवाइणी [परिवादिनी] जी० ३१५८८
 परिवाइणी [परिवाटी] रा० १३१ से १३३, १३५,
 १३६. जी० ३१३०१ से ३०३
 परिवायणी [परिवादिनी] रा० ७७
 परिवार [परिवार] ओ० ७०. रा० ७, ४२, ४७,
 ५६, ५८, ६१, ६७, १६४, १८६, २०४ से २०६,
 २१६, २४३, २८०. जी० ३१३४०, ३५०, ३५६,
 ३६६, ३६८, ३७८, ४०५, ४४६, ४४८, ५५७,
 ५६३, ६३५, ६५७, ६६३, ६७३, ६८०, ६८५,
 ७३७, ७४०, ७४२, ७४५, ७५०, ७६२, ७६५,
 ७६८, ७७०, १०००, १०२३, १०५४
 परिवाल [परिवार] रा० १३, १२०
 परिविद्धंसइत्ता [परिविद्धवंस्य] जी० ११५०
 परिवुद्धि [परिवृद्धि] जी० ३१७८८, ७८६
 १. परिपक्षितं —परिगृहीतं परिवृत्तम् (वृ) ।

परिव्यय [परिव्यय] रा० ७७४
 परिव्यायग [परिव्याजक] ओ० १०१ से १३३
 परिव्याया [परिव्याजक] ओ० ६६ से ६६, ११७
 परिसडिय [परिसडित] ओ० ६४. रा० ७६०,
 ७६१, ७८२
 परिसप्प [परिसर्प] जी० १।१०२, १०४, १२०,
 १२२; ३।१४१, १४३
 परिसप्पी [परिसर्पी] जी० २।५, ७
 परिसा [परिपद्] ओ० ४३, ७६. रा० ६, ७, ४३,
 ५६, ५८, ६१, २७६ से २८०, २८४, २८७, ६६०
 से ६६२, ६६६, ६६३, ६६४, ७१२, ७१७, ७३२,
 ७३७, ७६६, ७६७, ७७६. जी० ३।२३५ से २३६,
 २४१ से २४३, २४५ से २४७, २४६, २५०, २५४
 से २५६, २५८, ३४१ से ३४३, ३५०, ३५६, ४४२
 से ४४६, ५५७, ५६०, ५६३, ८४२, ८४५, १०४०
 से १०४२, १०४४, १०४६ से १०५३, १०५५
 √परिसाड [परि + शाटय]—परिसाडंति
 जी० ३।४४५.—पडिसाडेइ रा० १८.
 —परिसाडंति रा० १०
 परिसाडइत्ता [परिशाटय] जी० १।५०
 परिसाडित्ता [परिशाटय] रा० १८. जी० ३।४४५
 परिसाडेत्ता [परिशाटय] रा० १०
 परिसामंत [परिसामन्त] जी० ३।१२६
 परित्सेय [परिषेक] जी० ३।४१५
 परिसोधित [परिशोधित] जी० ३।८७८
 परिस्संत [परिश्रान्त] ओ० ६३. रा० ७६५
 परिस्सम [परिश्रम] ओ० ६३
 √परिहा [परि + धा]—परिहेइ जी० ३।४४३
 परिहत्थ [वे०] ओ० ४६. रा० ६६, १५१.
 जी० ३।११८, ११६, २८६
 √परिहा [परि + हा]—परिहायइ.
 जी० ३।८३८।१६.—परिहायति. जी० ३.१०७
 परिहाणि [परिहाणि] जी० ३।६६८, ८३८।१६, २०
 परिहायमाण [परिहीयमाण] ओ० १६२.
 जी० ३।६६८, ८८२

परिहारविमुद्धिचरित्ताविणय [परिहारविमुद्धिचरित्र-
 विनय] ओ० ४०
 परिहित [परिहित] रा० ६८५, ६६२, ७००, ७१६,
 ७२६, ८०२. जी० ३।११२२
 परिहित्य [परिहित] ओ० २०, ४७, ५२, ५३, ७२.
 रा० ६८७, ६८६
 परिहीण [परिहीण] ओ० ७४।६, १८२, १६५।८.
 रा० १३, १५, १७
 परिहेत्ता [परिधाय] जी० ३.४४३
 परीसह [परीपह] ओ० ११७, १५४, १६५, १६६
 परूढ [प्ररूढ] ओ० ६२
 √परूव [प्र + रूपय]—परूवेइ. ओ० ५२.
 रा० ६८७.—परूवेति. जी० ३।२१०.
 —परूवेमि. जी० ३।२११
 परूविय [प्ररूपित] जी० १।१
 परूवेमाण [प्ररूपयत्] ओ० ६८
 पलंब [प्रलम्ब] ओ० ४७, ४६, ५७, ६४, ७२.
 रा० ५१, ६६, ७०
 पलंबमाण [प्रलम्बमाण] ओ० २१, ५२, ५४, ६३.
 रा० ८, ४०, १३२, ६८७ से ६८६, ७१४.
 जी० ३।२६५
 पलाल [पलाल] रा० ७६७
 पलिओवम [पल्योपम] ओ० ६४, ६५. रा० १८६,
 २८२, ६६५, ६६६, ७६८. जी० १।१२१, १२५,
 १३३; २।२०, २१, २५ से २८, ३० से ४६, ५३
 से ५५, ५७ से ६१, ७३, ८३, ८४, १३६; ३।१५६,
 १६५, २१८, २३८, २४३, २४७, २५०, २५६,
 २५०, ३५६, ४४८, ५६५, ५६५, ६२६, ६३७,
 ६५६, ७००, ७२१, ७२४, ७२७, ७३८, ७६१,
 ७६३, ७६५, ८०८, ८१६, ८२६, ८४१, ८५४,
 ८५७, ८६०, ८६३, ८६६, ८६६, ८७२, ८७५,
 ८७८, ८८५, ८८३, ८८५, १०२७ से १०३६,
 १०४२, १०४४, १०४६, १०४७, १०४६ से
 १०५३, १०५५, १०८६, ११३२, ११३५; ६।३,
 ६, ६; ७।५, ६, १२; ८।१८७ से १८६, २१२,
 २१४, २२५, २३८, २७३

पलिच्छन्न [परिच्छन्न] ओ० ६. जी० ३।२७५
 पलित्त [प्रदीप्त] जी० ३।५८६
 पलिय [पलित] जी० ३।५६७
 पलिधक [पर्यङ्क] रा० २२५. जी० ३।३८४
 पलिह [परिघ] ओ० १६
 √पलीव [प्र+दीपय्]—पलीवेज्जा. रा० ७७२
 √पल्लंघ [प्र+लंघ्]—पल्लंघेज्ज. ओ० १८०
 पल्लंघण [प्रलङ्घन] ओ० ४०
 पल्लग [पल्यक] जी० ३।६११
 पल्लत्थमुह [पर्यस्तमुख] रा० ७६५
 पल्लव [पल्लव] ओ० ५. न. रा० १३६. २२८.
 जी० ३।२७४. ३०६. ३८७. ६७२
 पल्लवपविभक्ति [पल्लवप्रविभक्ति] रा० १००
 पल्लविया [पल्लविका] ओ० ७०. रा० ८०४
 पल्लहायणिज्ज [प्रल्लादनीय] ओ० ६३
 पल्लच [प्रपञ्च] ओ० १६५
 पल्लेमाण [प्रपञ्चयत्] जी० ३।२३६
 पल्लक [पल्लक] ओ० १, २
 पल्लकप्रेक्षा [पल्लकप्रेक्षा] ओ० १०२. १२५. जी०
 ३।६१६
 पल्लण [पल्लण] ओ० ४८. ५७
 पल्लण [पल्लण] रा० १२. ७५८. ७५९. जी० ३।११८
 पल्लत्त [प्रवृत्त] रा० १८. ७८. ८०. ८२. ११२ जी०
 ३।४४७
 √पल्लत्त [प्र+वर्तय्]—पल्लत्तेट्. रा० ६७१—
 पल्लत्तेति. रा० ७५०—पल्लत्तेमि. रा० ७५०.
 पल्लत्तेहि. रा० ७५०
 पल्लत्तय [प्रवर्तक] रा० ६७१
 पल्लत्ताय [प्रवृत्तक] जी० ३।२८५
 पल्लयणिण्हण [प्रवचननिह्ववक] ओ० १६०
 पल्लर [प्रवर] ओ० २. २०. ४७. से ५३. ५५ से ५७,
 ६३से६५. ७२. रा० ६. १२. ३२. ५१. १३०. १३२,
 २३६. २८१. २९२. ६८५. ६८७. ६८९. ६९२,
 ७००. ७१६. ७२६. ८०२. जी० ३।३००. ३०२,
 ३७२. ३६८. ४४७. ४५७. ५६७. ११२२

पल्लया [दे०] जी० २।६
 पल्लहण [प्रवहण] ओ० १००. १२३
 पल्ल [प्रपा] ओ० ३७ रा० १२
 पल्लाइय [प्रवादित] ओ० ६७. ६८. रा० १३. ६५७.
 जी० ३।३५०. ५६३. १०२५
 पल्लदित [प्रवादित] रा० ८४२. ८४५. जी० ३।४४६
 पल्लदिय [प्रवादित] रा० ७
 √पल्लाय [प्र+वाद्य्]—पल्लायंसु. रा० ७५
 पल्लाल [प्रवाल] ओ० ५. न. १६. २३. ४७. रा० २७,
 २२८. ६६५. जी० १।७१. २७४. २८०. ३८७,
 ५६६. ६०८. ६७२
 पल्लालमंत [प्रवलवत्] ओ० ५. न. जी० ३।२७४
 पल्लिङ्गण [प्रविकीर्ण] ओ० १
 पल्लिकरमाण [प्रविकरित्] जी० ३।११८
 पल्लिचरित [प्रविचरित] रा० १७४
 पल्लिचरिय [प्रविचरित] जी० ३।२८६. ६३६
 पल्लिट्ट [प्रविष्ट] ओ० ६४. जी० ३।५५. ७८
 √पल्लिणी [प्र+वि+नी]—पल्लिणेज्जा. जी०
 ३।११८ ।
 पल्लित्तय [पल्लित्तक] ओ० १०८. ११७. १३१
 पल्लित्ति [प्रवृत्ति] ओ० १६. १७
 पल्लित्तिवाउय [प्रवृत्तिवशापृत, प्रवृत्तिवादुक] ओ०
 १६. १७. २०. २१. ५३. ५४
 पल्लित्थरमाण [प्रविस्तरत्] जी० ३।२५६
 पल्लित्थ [प्रविध्वस्त] जी० ३।११८. ११६
 पल्लिमोयण [प्रविमोचन] ओ० ७. न. १०
 पल्लियरित्तए [प्रविचरित्तुम्] रा० ७३२. ७३७
 पल्लिरल [प्रविरल] रा० ६. १२. २८१. ७६०. ७६१.
 जी० ३।४४७. ५६१
 पल्लिराय [दे०प्रस्फुटित] जी० ३।११८. ११६
 पल्लिलीण [प्रविलीन] जी० ३।११८. ११६
 √पल्लिस [प्र+विष्]—पल्लिसइ. रा० ७६६.
 —पल्लिसामो. रा० ७६५
 पल्लिसंत [प्रविशत्] जी० ३।८३८। १४
 पल्लिइय [प्रवीजित] ओ० ६७

√पवीणी [प्र+वि+नी]—पवीणेइ ओ० ५६

पवीणेत्ता [प्रविणीय] ओ० ५६

√पवुच्च [प्र+वच्] पवुच्चति जी० ३।८४१

पवेस [प्रवेश] ओ० १५४, १६२, १६५, १६६. रा०

१२६, २१०, २१२, ६६८, ७५२, ७८६, ८१६. जी०

३।३००, ३५४, ३७७, ५६४, ६४३, ८८५

पव्वइत्तए [प्रव्रजितुम्] ओ० १२०. रा० ६६५

पव्वइय [प्रव्रजित] ओ० २३, ७६, ७८, ६५, १५५,

१५६

पव्वग [पर्वग] जी० १।६६

पव्वत [पर्वत] रा० २७६. जी० ३।४४५, ६३२,

६३७, ६६१, ६६२, ६६४, ६६६, ६६८, ७३५, से

७४३, ७४५, ७४६, ७५०, ७६५, ८३१, ८३३, ८३६

से ६४२, ८४५, ८६६, ८८२, ६१० से ६१२, ६१४

से ६१६, ६१८ से ६२३

पव्वतग [पर्वतक] जी० ३।८६३, ८७५, ८८१, ६२७

पव्वतय [पर्वतक] जी० ३।८६३

√पव्वय [प्र+व्रज्]—पव्वइस्सति. रा० ८१२.

—पव्वइस्सामो. ओ० ५२. रा० ६८७.

—पव्वइहिति. ओ० १५१.—पव्वयति

रा० ६६५.

पव्वय [पर्वत] रा० ५६, १२४, २७६, ७५५, ७५७.

जी० ३।२१७, २१६ से २२१, २२७, ३००, ५६८,

५७७, ६३२, ६३३, ६३८, ६३९, ६६८, ७०१,

७३६, ७३८, ७४०, ७४२, ७४४, ७४५, ७४७, ७४९,

७५०, ७५४, ७६२, ७६५, ७६६, ७७५, ८८३, ६३७,

१००१, १०३६

पव्वयग [पर्वतक] जी० ३।५७६

पव्वयमह [पर्वतमह] जी० ३।६१५

पव्वयराय [पर्वतराज] जी० ३।८४२

पव्वहणा [प्रव्यथना] ओ० १५४, १६५, १६६

पव्वा [पर्वा] जी० ३।२५८

पसंग [प्रसङ्ग] ओ० ४६

पसंत [प्रशान्त] ओ० १४. रा० ६, १२, १५, २८१,

६७१. जी० ३।४४७

पसण्णा [प्रसन्ना] जी० ३।८६०

पसत्त [प्रसक्त] रा० १५

पसत्थ [प्रशस्त] ओ० १५, १६, ४६, ५२, ११६, १५६.

रा० ३३, १३३ ६७२. जी० १।१; ३।३०३,

३७२, ५६६ से ५६८

पसत्थकायविणय [प्रशस्तकायविणय] ओ० ४०

पसत्थमणविणय [प्रशस्तमनोविणय] ओ० ४०

पसत्थवइविणय [प्रशस्तवामुविणय] ओ० ४०

पसत्थु [प्रशास्तु] ओ० २३. रा० ६८७, ६८८

पसन्ना [प्रसन्ना] जी० ३।५८६

√पसर [प्र+सृ]—पसरति. रा० ७५

पसरिय [प्रसृत] ओ० ४६. जी० ३।५८६

√पसव [प्र+सृ]—पसवति. जी० ३।६३०

पसवित्ता [प्रसूय] जी० ३।६३०

पसाधण [प्रसाधन] रा० १५२. जी० ३।३२५

पसाधणघरण [प्रसाधनगृहक] रा० १८२, १८३

√पसार [प्र+सारय्]—पसारेति. रा० ६६

पसासेमाण [प्रसासयत्] ओ० १४. रा० ६७१, ६७६

पसाहणघरण [प्रसाधनगृहक] जी० ३।२६४

पसाहा [प्रशाखा] ओ० ५, ८. रा० २२८.

जी० ३।२७४, ३८७, ६७२

पसिठिल [प्रसिधिल] ओ० ५१

पसिण [प्रश्न] ओ० २६. रा० १६, ७१६

पसु [पशु] ओ० ३७. रा० ६७१, ७०३, ७१८.

जी० ३।७२१

पसेठि [प्रश्रेणि] रा० २४. जी० ३।२७७

पस्सा [पश्या] रा० ८१७

पस्सवणी [प्रसवणी] रा० ८१७

पह [पथ] ओ० ५२, ५५. रा० ६५४, ६५५, ६८७,

७१२. जी० ३।५५४, ८३८।१५

पहकर [दे०] ओ० १, ६. रा० ६८३. जी० ३।२७५

पहगर [दे०] रा० ५३

पहट्ट [प्रहृष्ट] ओ० १६. जी० ३।५६६

पहरण [प्रहरण] ओ० ५७, ६४. रा० १७३, ६६४,

६८१, ६८३. जी० ३।२८५, ५६२

पहरणकोस [प्रहरणकोश] रा० २४६, ३५५.

जी० ३४१०, ५२०

पहरणरयण [प्रहरणरत्न] रा० २४६, ३५५.

जी० ३४१०, ५२०

पहसित [प्रहसित] जी० ३१३०७, ३६४, ६३४, ६३६,

१००८

पहसिय [प्रहसित] रा० १३७, १८३. जी० ३१३५५,

३५६, ३६८ से ३७१, ५८६, ६७३

पहा [प्रभा] ओ० १२, २२. रा० १५४.

जी० ३१५८६

पहाण [प्रधान] ओ० २३, २५, १४६. रा० ६८६,

८०६, ८०७. जी० ३१५६२, ५६७

√पहार [प्र + धारय्]—पहारेणजा. ओ० ४०.

—पहारेत्थ. ६५, २८८. जी० ३१४५४

पहाविय [प्रधावित] ओ० ४६

पहिट्ट [प्रहृष्ट] ओ० ५१

पहिय [पथिक] रा० ७८७, ७८८

पहियकित्ति [प्रथितकीर्ति] ओ० ६५

पहीण [प्रहीण] ओ० ७२

पहु [प्रभु] ओ० ११६. रा० ७६१

पहेलिया [प्रहेलिका] ओ० १४६. रा० ८०६

पाई [पात्री] रा० २५८, २७६

पाईण [प्राचीन] रा० १२४. जी० ३१५७७, ६३६,

१०३६

पाईणवात [प्राचीनवात] जी० ११=१

पाईणवाय [प्राचीनवात] जी० ३१६२६

पाउ [प्रादुम्] ओ० २२. रा० ७२३, ७७७, ७७८,

७८८

पाउम् [प्रायोग्य] रा० ६६६

√पाउण [प्र + आप्]—पाउणइ. ओ० १८२.

—पाउणति. ओ० ६४—पाउणिहित्ति.

ओ० १४०. रा० ८१६

पाउणित्ता [प्राप्य] ओ० ६४. रा० ८१६

१ पाउम्भव [प्रादुम् + भू]—पाउम्भवति.

रा० १६—पाउम्भव. रा० १३

—पाउम्भवित्था. ओ० ४७

पाउम्भवमाण [प्रादुम्भवत्] रा० १७

पाउम्भूय [प्रादुम्भूत्] ओ० ७६ से ८१. रा० ६१,

१२०, ६६४, ६६७, ७१७, ७२२, ७७७, ७८७, ७६५

पाउया [पादुका] ओ० २१, ५४, ६४. रा० ५१,

७१४

पाओवगमण [प्रायोपगमन] ओ० ३२

पाओवगय [प्रायोपगत] ओ० ११७

पागडभाव [प्रकटभाव] ओ० २७. रा० = १३

पागडिय [प्रकटित] ओ० ५०, ५१

पागय [प्राकृत] जी० ३१८३८=३

पागसासन [पाकशासन] जी० ३११०३६

पागार [प्राकार] ओ० १. रा० १२७, १२८, १७०,

६५४, ६५५. जी० ३१३५२, ३५३, ३५८,

५५४, ५६४

√पाड [पातय्]—पाडेइ. रा० ७६५

पाडंतिय [प्रात्ययान्तिक] रा० ११७, २८१

पाडलि [पाटलि] ओ० ३०. जी० ३१२८३

पाडिनुय [प्रतिश्रुत] जी० ३१४४७

पाडियक्क [प्रत्येक] ओ० ५५, ५८, ६२, ७०

पाडिहारिय [प्रातिहारिक] ओ० १२०, १६२.

रा० ७०४, ७०६, ७११, ७१३, ७७६

पाडिहेर [प्रातिहार्य] ओ० २

पाण [पान] ओ० १४, ११७, १२०, १४१, १४७,

१४६, १५०, १६२. रा० ६७१, ६८६, ७०४,

७१६, ७५२, ७६५, ७७४, ७७६, ७८७, ७८८,

७६४, ७६७, ७६६, ८०२, ८०८, ८१०, ८११

पाण [प्राण] ओ० ८७, १६१, १६३. जी० ३११२७,

६७५, १०२८, ११३०

पाणक्खय [प्राणक्षय] जी० ३१६२६, ६२८

पाणत्त [प्राणत] जी० ३११०७६, १०८८

पाणय [प्राणत] ओ० ५१, १६२. जी० ३११०३८,

१०५३, १०६६, १०६८

पाणविहि [पानविधि] ओ० १४६. रा० ८०६

पाणाइवाय [प्राणातिपात] ओ० ७१, ७६, ७७,

११७, १२१, १६१, १६३. रा० ६६३, ७१७,

७६६

पाणाइवायवेरमण [प्राणातिपातविरमण] ओ० ७१

पाणि [पाणि] ओ० १५, १९, ३७, ६३, ६४, १४३.

रा० १२, ६६४, ६७२, ६७३, ७५८, ७५९, ८०१.

जी० ३११८, ५६२, ५६६

पाणिलेहा [पाणिरेखा] ओ० १९. जी० ३१५६६,
५६७

पाणिय [पानीय] ओ० ४६

पाताल [पाताल] जी० ३१७२६, ७२८

पाती [पात्री] रा० १५१. जी० ३१३२४, ३५५,
४१९, ४४५

पाद [पाद] रा० २८१, २८८. जी० ३१३११,
४०७, ४१५, ४४७, ४५४

पादचारविहारि [पादचारविहारिन्] जी० ३. ६१७

पादपीठ [पादपीठ] ओ० ६४

पादव [पादप] जी० ३३०३

पामिच्च [पामृत्य] ओ० १३४

पामोक्ख [प्रमुख, प्रमुख्य] रा० ३५५, ७८७, ७८८.
जी० ३१४१०, ५२०

पाय [पात्र] ओ० ३३

पाय [पाद] ओ० १५, ३७, ५२, ६३, ६९, ९०, १११

से ११३, १३७, १३८, १४३. रा० १२, ३७,

२४५, ६५६, ६७२, ६७३, ७५८, ७५९, ८०१.

जी० ३११८, ५५६

पायण् [पातुम्] ओ० १३४, १३५

पायचणी [पादकाञ्चनी] जी० ३१५८७

पायंत [प्रवृत्त, पादान्त] रा० ११५

पायंताय [प्रवृत्तक, पादान्तक] रा० २८१

पायच्छिण्णग [पादच्छिन्नक] रा० ७५१

पायच्छिण्णय [पादच्छिन्नक] रा० ७६७

पायच्छित्त [प्रायश्चित्त] ओ० २०, ३८, ३९, ५२,

५३, ७०. रा० ६८३, ६८५, ६८७ से ६८९,

६९२, ७००, ७१६, ७२६, ७५१, ७५३, ७६५,

७९४, ८०२, ८०५

पायच्छिण्णग [पादच्छिन्नक] ओ० ९०

पायजाल [पादजाल] जी० ३१५९३

पायतल [पादतल] रा० २५४. जी० ३१४१५

पायत्ता [पादात्त] ओ० ६४

पायत्ताणियाहिवइ [पादातानीकाधिपति, पादात्यनी-
काधिपति] रा० १३, १६

पायत्ताणियाहिवति [पादातानीकाधिपति,
पादात्यनीकाधिपति] रा० १४

पायत्ताणीय [पादातानीक, पादात्यनीक]
ओ० ६४

पायत्ताणीयाहिवइ [पादातानीकाधिपति,
पादात्यनीकाधिपति] रा० १५

पायत्ताय [प्रवृत्तक, पादान्तक] रा० १७३

पायपीठ [पादपीठ] ओ० २१, ५४. रा० ८, ३७,
५१, ७१४. जी० ३३११

पायपुंछण [पादपुंछण] ओ० १२०, १६२.
रा० ६९८, ७५२, ७८९

पायबद्ध [पादबद्ध] रा० १७३. जी० ३१२८५

पायरास [प्रातरास] रा० ६८३

पायव [पादप] ओ० ५, ८, १२, १३. रा० ३, ४,
१३३, ८०४. जी० ३१२७४

पावविहारचार [पादाविहारचार] ओ० ५२.
रा० ६८७ से ६८९, ७००

पायवीठ [पादपीठ] ओ० १९

पायसील [पादशीर्ष] जी० ३१४०७

पायसीसग [पादशीर्षक] रा० ३७, २४५.
जी० ३१३११

पायाल [पाताल] ओ० ४६. जी० ३१७२८,
७३१

पारंन्धियारिह [पारन्धिवार्ह] ओ० ३९

पारण [पारण] ओ० ९७

पारणय [पारणत] ओ० १९५१२०

पारणामि [पारणामिन्] ओ० २९

पारब्भमाण [पारभमाण] ओ० ११७

पारसी [पारसी] ओ० ७०. रा० ८०४

पारावय [पारावत] जी० ३१३८८

पारिजातकवण [पारिजातकवन] जी० ३१५८९

पारिणामिया [पारिणामिकी] रा० ६७५

पारियाय [पारिजात] रा० ४५

पारिहेरय [प्रातिहार्यक] जी० ३५६३

पारी [दे० पारी] जी० ३५८७

पारेवय [पारापत] रा० २६. जी० ३१२७६.
५८३

√पाल [पालय्]—पालयाहि. ओ० ६८.

जी० ३१४४८—पालेति. ओ० ६१—पालेहि
रा० २८२

पालव [पालव] ओ० २१,५२,५४,६३,१०८,
१३१. रा० ८,२८५,६८७ से ६८६,७१४.
जी० ३५६३

पालय [पालक] ओ० ५१

पालित्ता [पालयित्ता] ओ० ६१

पालियाय [पारिजात] रा० २७. जी० ३१२८०

पालेमाण [पालयत्] ओ० ६८. रा० २८२,७६१.
जी० ३१३५०,४४८,५६३,६३७

पाव [पाप] ओ० ७१,७६ से ८१,१२०,१६२.
रा० ६७१,६६८,७५२,७८६

पाव [प्र + आप्]—पावइ. ओ० १६५१४
—पाविज्जामि. रा० ७५१—पाविज्जिहिह.
रा० ७५१

पावकम्म [पापकर्मन्] ओ० ८४,८५,८७,८८.
रा० ७५०,७५१

पावकम्मोवएस [पापकर्मोपदेश] ओ० १३६

पावन [पापक] ओ० ७४,६

पावय [पापक] ओ० ७१

पावयण [प्रवचन] ओ० २५,७२,७६ से ८१,
१२०,१६२,१६४. रा० ६६५,६६८,७५२,
७८६

पावसज्जण [पापशकुन्] रा० ७०३

पास [पार्श्व] ओ० १६. रा० १३१ से १३८,
२५६,८१७. जी० ३१३५८,४१५,५६६,५६७,
७७५

पास [पाश] रा० ६६४. जी० ३५६२

पास [दृश्]—पासइ. ओ० ५४. रा० ७१४.
जी० ३१११८—पासति. ओ० ५२.

रा० ७६५. जी० ३११०७—पासति. रा० ७.

जी० ३१२००—पाससि. रा० ७७१- पासह.

रा० ६३—पासामि. रा० ७६६—पासिज्जा.

रा० ७७६. —पासिज्जासि. रा० ७५१.

—पासेज्जा. जी० ३१११८

पासंत [पश्यत्] रा० ७६४

पासण [पाशक] ओ० १४६. रा० ८०६

पासण्णाह [पाशग्राह] ओ० ६४

पासणया [दर्शन] रा० ७५० से ७५३

पासतो [पार्श्वतस्] रा० ५५

पासपाणि [पाशपाणि] रा० ६६४

पासमाण [पश्यत्] रा० ८१५

पासवण [प्रसवण] रा० ७६६

पाससूल [पार्श्वशूल] जी० ३१६२८

पासाइय [प्रासादीय, प्रसादिक] जी० ३१२८६ से
२८८,२९०

पासाईय [प्रासादीय, प्रासादिक] ओ० ७२. रा०
२०,३७,१३०,१३३,१३६,२५७. जी० ३१२६६,
३०६,३११,४०७,४१०,५८५,५६६,५६७,
६७२,११२१

पासाण [पाषाण] रा० १७४. जी० ३१२८६

पासाद [प्रासाद] जी० ३१७६२

पासादवर्द्धेसण [प्रासादावर्द्धेसक] जी० ३१७६२

पासादीय [प्रासादीय, प्रासादिक] ओ० १,७,८,
१० से १३,१५,१६४. रा० १,१६,२१ से २३,
३२,३४,३६,३८,१२४,१३७,१४५,१५७,
१७४,१७५,२२८,२३१,२३३,२४५,२४७,
२४९,६६८,६७०,६७२,६७६,६७८,७००,
७०२. जी० ३१२३२,२६१,२६६,२७६,३००,
३०३,३०७,३०८,३६३,५८१,५८४,६३६,
८५७,८६३,११२२

पासाय [प्रासाद] रा० १४,७१०,७७४. जी०
३५६४,६०४

पासायवर्द्धेसय [प्रासादावर्द्धेसक] जी० ३१७७०

पासायवर्द्धेसक [प्रासादावर्द्धेसक] जी० ३१३६६,
३७०

पासायबडैसग [प्रासादावर्तसक] रा० १३७, १८६,
 २०५, २०७, २०८, ७७८. जी० ३१३०७ से ३०६,
 ३१४, ३५५, ३५६, ३६४, ३६७, ३६६ से ३७३,
 ६३४, ६३६, ६८६, ६८६, ६६२ से ६६८, ७६२
 पासायबडैसत [प्रासादावर्तसक] रा० २०४
 पासायबडैसतय [प्रासादावर्तसक] रा० २०४ से
 २०६. जी० ३१३५६, ३६४, ३६८ से ३७१,
 ६६३, ६७३, ६८५, ६८८, ७३७
 पासावच्चिञ्ज [पाश्वर्पत्य] रा० ६८६, ६८७,
 ६८६, ७०६, ७१३, ७३३
 पासि [पाश्वर्] ओ० ६६. जी० ३१३०१ से ३०७,
 ३१५, ३५५, ४१७, ६३६, ७८८ से ७६०, ८३६,
 ८८६
 पासित्तए [प्राप्तुम्] रा० ७६५
 पासित्ता [दृष्ट्वा] ओ० ५२. रा० ८. जी०
 ३.११८
 पासेत्ता [दृष्ट्वा] रा० ६८८
 पाहृड [प्राभूल] रा० ६८०, ६८१, ६८३, ६८४,
 ६६६, ७००, ७०२, ७०८, ७०६
 पाहुणगभक्त [प्राघुणकभक्त] ओ० १३४
 पाहुणिञ्ज [प्राह्वनीय] ओ० २
 पि [अपि] रा० १०
 पिअदंसण [प्रियदर्शन] ओ० ६३
 पिउ [पितृ] ओ० १४. रा० ६७१, ७७३
 पिगल [पिङ्गल] ओ० ६३
 पिगलकख [पिङ्गलाक्ष] जी० ३१२७५
 पिगलकखग [पिङ्गलाक्षक] ओ० ६
 पिछि [पिच्छिन्] ओ० ६४
 पिजर [पिञ्जर] जी० ३१८७८
 पिडहलिद्दा [पिण्डहरिद्रा] जी० ११७३
 पिडि [पिण्डि] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५. जी०
 ३१२६८, २७४
 पिडिम [पिण्डिम] ओ० ७, ८, १०. जी० ३१२७६
 पिडियगसिरय [पिण्डिताग्रशिरस्क] ओ० १६
 पिडियसिर [पिण्डिताग्रशिरस्क] जी० ३१५६६

पिच्छज्जय [पिच्छध्वज] रा० १६२. जी० ३१३३५
 पिच्छणघरण [प्रेक्षणगृहक] रा० १८२, १८३
 पिच्छाघरमंडव [प्रेक्षागृहमण्डप] रा० ३२, ३३, ६६
 पिट्टण [पिट्टन] ओ० १६१, १६३
 पिट्टो [पृष्ठतस्] ओ० ६६. जी० ३१४१६
 पिट्ठंतर [पृष्ठान्तर] रा० १२, ७५८, ७५६. जी०
 ३१११८, ५६८
 पिट्टतो [पृष्ठतस्] रा० २५५, २८६, २६०. जी०
 ३१४५५, ४५६
 पिट्टुपयणन [पिष्टपचनक] जी० ३१७८
 पिट्टिकरंडम [पृष्ठिकरण्डक] जी० ३१२१८, ५६८
 पिडग [पिटक] जी० ३१८३८४ से ६
 पिडय [पिटक] जी० ३१८३८३, ५, ६
 पिणद्ध [पिनद्ध] ओ० १७, ६३. रा० ६६, ७०,
 १३३, ६६४, ६८३. जी० ३१३०३, ५६२
 पिणद्धय [पिनद्धक] रा० ७६१
 पिणय [पीनक] जी० ३१५८७
 √ पिणिद्ध [पि+नह्, पि+नि+घा]—पिणिद्धेइ.
 रा० २८५. जी० ३१४५१.—पिणिद्धेति.
 रा० २८५. जी० ३१४५१
 पिणिद्धत्ताए [पिनद्धुम्] ओ० १०८
 पिणिद्धेत्ता [पिनह्य] रा० २८५. जी० ३१४५१
 पित्तिपिडनिवेदन [पितृपिण्डनिवेदन] जी० ३१६१४
 पित्ताजर [पित्तज्वर] रा० ७६५
 पित्तिय [पित्तिक] ओ० ११७. रा० ७६६
 पिधान [पिधान] रा० १३१, १४७, १४८. जी०
 ३१४४६
 पिबित्ताए [पानुम्] ओ० १११
 पिय [प्रिय] ओ० १५, २०, ५३, ६८, ११७, १४३.
 रा० ७१३, ७५० से ७५३, ७७४, ७६६. जी०
 ११३५; ३१०६०, १०६६
 पिय [पितृ] ओ० ७१. रा० ६७१. जी० ३१६११
 √ पिय [पा]—पिज्जइ. रा० ७८४—पियइ. रा०
 ७३२
 पियंगु [प्रियङ्गु] ओ० ६, १०. जी० ३१३८८,
 ५८३

पियतराय [प्रियतरक] रा० २५ से ३१, ४५. जी०
३।२७८ से २८४, ६०१

पियबंसण [प्रियदशन] रा० ६७२, ६७३, ८०१.
जी० ३।८०८

पियय [प्रियक] ओ० ६, १०

पियर [पितृ] रा० ८०२, ८०३, ८०५, ८०८, ८१०

पियरबिखया [पितृरक्षिता] ओ० ६२

पियाल [प्रियाल] जी० ३।३८८, ५८३

पिरली [पिरली] जी० ३।५८८

पिरिपिरिया [पिरिपिरिया] रा० ७१, ७७

पिरिपिरियावायम [पिरिपिरियावादक] रा० ७१

पिव [इव] ओ० २७. रा० १७. जी० ३।४५१

पिवासा [पिवासा] ओ० ४६, ११७. रा० ७६६.
जी० ३।१०६, १२७, १२८, ५६२, १११४

पिवासिय [पिवासित] रा० ७६०, ७६१, ७७४.
जी० ३।११८, ११६

पिसाय [पिशाच] ओ० ४६. जी० ३।१७, २५२, २५३

पिसायकुमार [पिशाचकुमार] जी० ३।२५३

पिसायकुमारराथ [पिशाचकुमारराज] जी०
३।२५२ से २५६

पिसायकुमारिद [पिशाचकुमारेन्द्र] जी० ३।२५३
से २५६

पिहृङ्ग [पिठरक] जी० ३।७८

√पिहा [पि+धा]—पिहावेमि. रा० ७५४.

—पिहेड. रा० ७५५.—पिहेज्जा. रा० ७७२

पिहाण [पिधान] रा० २६०. जी० ३।३०१

पिहाणय [पिधानक] रा० ७५४, ७५६

पिहुणमिजिया [दे० पिहुणमज्जा] रा० २६

पिहुल [पृथुल] ओ० १६. जी० ३।५६६, ५६७

पीडगम [प्रीतिगम] ओ० ५१

पीडवाण [प्रीतिदान] ओ० २१, ५४, १४७. रा०
७१४, ७७६, ८०८

पीडमण [प्रीतिमनस्] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६,
६२, ६३, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४,
१६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७,

२७६, २८१, २९०, ६५५, ६८१, ६८३, ६६०,
६६५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६,
७१८, ७२५, ७२६, ७७४, ७७८. जी० ३।४४३,
४४५, ४४७, ५५५

पीठ [पीठ] ओ० २७, १२०, १६२. रा० ६६८,
७०४, ७०६, ७११, ७१३, ७५२, ७७६, ७८६

पीठग्गाह [पीठग्गाह] ओ० ६४

पीठमद्द [पीठमर्द] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६,
७६२, ७६४

पीण [पीन] ओ० १६. रा० १३३. जी० ३।३०३,
५६६, ५६७

√पीण [पीनम्]—पीणति. जी० ३।४४७.

—पीणेंति. रा० २८१

पीणजिज्ज [प्रीणपीय] ओ० ६३

पीत [पीत] जी० ३।५६५

पीतपाणि [पीतपाणि] रा० ६६४

पीय [पीत] रा० ६६४. जी० ३।५६२

पीयकणवीर [पीतकणवीर] रा० २८. जी० ३।२८:

पीयपाणि [पीतपाणि] जी० ३।५६२

पीयबंघुजीव [पीतबन्धुजीव] रा० २८.
जी० ३।२८१

पीयासोय [पीताशोक] रा० २८. जी० ३।२८१

पीलियम [पीडितक] ओ० ६०

पीलु [पीलु] जी० १।७१

पीवर [पीवर] ओ० १६. रा० ६६, ७०.

जी० ३।५६६, ५६७

√पीह [स्पृह]—पीहति. ओ० २०.—पीहेड.

रा० ७१३.—पीहेंति. रा० ७१३

पुंछणी [पुञ्छणी] रा० १३०, १६०. जी० ३।२६४-
३००

पुंज [पुञ्ज] ओ० २, ५५. रा० १२, ३२, ३८, १६०,
२२२, २५६, २८१, २६१, २६३ से २६६, ३००,
३०५, ३१२, ३५५. जी० ३।३१२, ३३३, ३७२,
३८१, ४१७, ४४७, ४५७ से ४६२, ४६५, ४७०,
४७७, ५१६, ५२०, ५५४, ५८०, ५६०, ५६१, ८६४

- पुंडग** [पुण्डक] जी० ३।८७८
- पुंडरिगिणी** [पुण्डरीकिणी] जी० ३।९१५
- पुंडरीय** [पुण्डरीक] ओ० १२, १९, २१, ५४.
रा० ८, २७९, २९२. जी० ३।११८, ११९, ४५७,
५९६, ८२९
- पुंडरीयद्रह** [पुण्डरीयद्रह] जी० ३।४४५
- पुक्खर** [पुक्कर] ओ० १७०. रा० २४, ६५, १७१.
जी० ३।२१८, २७७ ३०९, ५७८, ६७०, ७५५,
७७५, ८१६, ८१७, ८२१ से ८२५, ८२७, ८२९ से
८३१, ८४८, ८८३
- पुक्खरकणिग्या** [पुक्करकर्णिका] जी० ३।८६, २६०
- पुक्खरगय** [पुक्करगत] ओ० १४६. रा० ८०६
- पुक्खरणी** [पुक्करणी] जी० ३।९०१, ९१०, ९११,
९१४ से ९१६
- पुक्खरस्थिभुग** [पुक्करस्थिभुक] जी० ३।६५४
- पुक्खरस्थिभुय** [पुक्करस्थिभुक] जी० ३।६४३, ६५४
- पुक्खरद्व** [पुक्करार्थ] जी० ३।८३१ से ८३४
- पुक्खरपत्त** [पुक्करपत्र] ओ० २७. रा० ८१३
- पुक्खरवर** [पुक्करवर] जी० ३।७७४, ७७५
- पुक्खरवरग** [पुक्करवरग] जी० ३।७७४
- पुक्खरिणी** [पुक्करिणी] ओ० ६, ९९. रा० १७४,
१७५, १८०, २२३, २३४, २७३, २८८, ३१२, ३१३,
३५०, ३७६, ४३५, ४९६, ५५६, ६१६, ६५६.
जी० ३।११८, ११९, २७५, २८६, ३९५, ३९६,
४१२, ४२५, ४३८, ४५४, ४७७, ५१५, ५२३,
५२९, ५३७, ५४४, ५५१, ५५६, ६८३ से ६८६
- पुक्खरोद** [पुक्खरोद] जी० ३।४४५, ७७५, ८२५,
८४८ से ८५१, ८५४ से ८५६, ८५९, ८७९, ९४६,
९४९ ९५७, ९६२, ९६४
- पुक्खरोदग** [पुक्खरोदक] जी० ३।४४५
- पुक्खरोदय** [पुक्खरोदक] रा० २७९
- पुग्गलपरियट्ट** [पुग्गलारिवर्त] जी० १।१३९
- √पुच्छ [प्रच्छ]—पुच्छर. रा० ७१९.—पुच्छांत.
रा० ७१३.—पुच्छति. रा० ७३७.
—पुच्छिसामो रा० १६

- पुच्छणा** [प्रच्छना] ओ० ४३
- पुच्छा** [पृच्छा] ओ० १९०. जी० १।६१; ३।४,
१२, ३५, ४१, ४३, ८२, ९९ से १०२, ११३ से
११५, १२५, १५५, १५९, १६२, १६३, १६६,
१६८, १६९, १८७ से १९१, २३३, २३४, २४३,
७२२, ७३९; ८२०, ८३०, ८३४, ८३७, ९५६, ९५७,
९५९, ९६०, ९६८, ९७८, ९७९, १०११, १०४१,
१०४४, १०४५, १०५२, १०५९, १०६२ से १०६४,
१०६६, १०७४, १०८६, १११८, ११२९, ११३२;
४।६; ५।१७
- पुच्छित्तव्य** [प्रच्छित्तव्य] जी० ३।३६, ७७
- पुच्छिय** [पृच्छ] ओ० १२०, १६२. रा० ६९८,
७५२ ७८९
- पुच्छियव्य** [प्रच्छित्तव्य] जी० ३।२४४
- पुट्ट** [स्पृष्ट] ओ० १९५।९, १०. जी० १।४१;
३।२२, ५७१, ५७३, ५७७, ७१५, ७१७, ८०३,
८१६, ८२८
- पुट्ट** [पुट] जी० ३।५९७
- पुट्टलाभिय** [पृष्टलाभिक] ओ० ३४
- पुट्टि** [पुष्टि] जी० ३।५९२
- पुठ** [पुट] रा० ३०. जी० ३।२८३, १०७८
- पुठवि** [पृथिवी] ओ० १८९, १९१ से १९५.
जी० १।९२, १२१ से १२५; २।१००, १०८,
१३०, १३५, १३८, १४८, १४९; ३।१६१, १६२,
१६५, १६६, ३०३, ७७५, ९३७, ९७४; ५।२०, ३३
- पुढविकाइय** [पृथ्वीकायिक] जी० १।१२, १३, ६२,
१२८; २।१०२, १११, १३६, १३८, १४६;
३।१३१ से १३५, १८३, १८४, १९४, १९५;
५।१, २, ५, ८, १८ से २०; ८।५; ९।१८२, १८४,
२५६, २५७, २६२, २६३, २६६
- पुढविकाल** [पृथ्वीकाल] जी० ५।१७, २२, ३०;
८।३; ९।७७, ८५, ९६
- पुढविककाइय** [पृथ्वीकायिक] जी० १।६७;
२।१३६, १४९; ३।१२६, १३२; ५।१२, २०;
८।१, ३

पुढविसिलापट्टग [पृथ्वीशिलापट्टक] रा० १८५.

जी० ३१२६७,८५७,८६२

पुढविसिलापट्टय [पृथ्वीशिलापट्टक] रा० ४

पुढवी [पृथिवी] रा० १२४,१३३,७५५,७५७.

जी० २।१२७,१४८,१४९; ३।२ से ६,११ से
३५, ३७ से ४०, ४२, ४४ से ५७, ५९ से ६६,
७३ से ८१, ८३ से ९८, १०३, १०४, १०६ से
११२, ११६, ११७, १२०, १२७, १२८; १।६।५,
१८५ से १९१, २३०, २५७, ६००, ६०१,
१००३, १०३८, १०५७ से १०५९, १०६३,
१०६५, १०६६, ११११; ५।१७

पुढवीकाइयत्त [पृथ्वीकायिकत्व] जी० ३।१२८

पुढवीकाइयत्त [पृथ्वीकायिकत्व] जी० ३।११२८,
११३०

पुढवीसिलापट्टग [पृथ्वीशिलापट्टक] जी० ३।५७६

पुढवीसिलापट्टय [पृथ्वीशिलापट्टक] रा० १३

पुण [पुनर्] ओ० ५२. रा० ७५०. जी० २।१५०

√पुण [पू]—पुण्ड्रजइ. रा० ७८५

पुणम्भव [पुनर्भव] ओ० १६५

पुणो [पुनर्] ओ० ६३. जी० ३।८३।१४

पुण [पूर्ण] रा० १७४, २८८, ७६३. जी० ३।११८,
११९, २८६, ४५४, ५८६, ७८४, ७८७, ८७८

पुण्य [पुन्य] ओ० ७१, १२०, १६०. रा० ६९८,
७५२, ७५३, ७७४, ७८६

पुण्यकलस [पूर्णकलस] ओ० ४८, ६४. रा० ५०

पुण्यपभ [पूर्णपभ] जी० ३।८७८

पुण्यपमाण [पूर्णप्रमाण] जी० ३।७८४, ७८७

पुण्यभद्र [पूर्णभद्र] ओ० २, ३, १६ से २२, ५२, ५३,
६५, ६६, ७०

पुण्यमासिणी [पूर्णमासी, पूर्णमासी] ओ० १२०,
१६२. रा० ६९८, ७५२, ७८६. जी० ३।७२३,
७२६

पुण्यरक्ता [पूर्णरक्ता] ओ० ७१. रा० ६१

पुण्याग [पुन्याग] जी० १।७१

पुत्त [पुत्र] रा० ६७३, ७६१. जी० ३।६११

पुत्तानुपुत्तिय [पौत्रानुपुत्रिक] रा० ७७६

पुष्प [पुष्प] ओ० २, ६, १६, ४७, ५५, ६७, ६२, ६४.

रा० १२, १३, २६, ३२, १५६, १५७, २५८, २७६
से २८१, २९१, २९३ से २९६, ३००, ३०५,
३१२, ३५१, ३५५, ५६४, ६५७, ६७०, ७७६.
जी० १।७१; ३.१७१, २७५, २८२, ३२६, ३३०,
३७२, ४१६, ४४५ से ४४८, ४५७ से ४६२,
४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५४७, ५५४,
५८०, ५८१, ५८६, ५९१, ५९६, ५९७, ६००,
६०२, ८३८, १५, ८४२ ८७२

पुष्पग [पुष्पक] ओ० ५१

पुष्पचंगेरिया [पुष्पचङ्गेरिका] रा० १२

पुष्पछज्जिया [पुष्पछाज्जिका] रा० १२

पुष्पवंत [पुष्पदन्त] जी० ३।८६३

पुष्पमंत [पुष्पवत्] ओ० ५, ८. जी० ३।२७४

पुष्पवहलय [पुष्पवार्दलय] रा० १२

पुष्पासव [पुष्पासव] जी० ३।८६०

पुष्पाहार [पुष्पाहार] ओ० ६४

पुष्पिय [पुष्पित] रा० ७८२

पुष्पुत्तर [पुष्पुत्तर] जी० ३।६०१

पुष्पोदय [पुष्पोदक] ओ० ६३

पुमत्त [पुस्तत्र] ओ० १४१. रा० ७८६

पुर [पुर] ओ० २३. रा० ६७४, ६९५, ७६०, ७६१

पुरओ [पुरतम्] ओ० १६, ६४, ६६, ७०. रा० २०,
१२४, १३६ से १६१, १७६, २११, २२१.
जी० ३।३२७, ३५६, ३७४, ३७६, ३८०, ३८५,
३९२, ३९५, ४१६, ८८७, ८८९

पुरओकाडं [पुरस्कृत्य] ओ० २५, १६४

पुरच्छिम [पौरस्त्य] जी० ३।३००

पुरतो [पुरतस्] रा० ४६ से ५६, २१५, २३३,
२५७, २५८, २६१, ८०२. जी० ३।२८८, ३१६
से ३२६, ३६३, ४५७, ६४१, ८६३, ८६७, ८६९,
९०१

पुरत्याभिमुह [पुरस्तादभिमुख] ओ० २१, ५४,

११७. रा० ४७, २७७, २८३, २८६, ६५७, ७६६,
 जी० ३१४४३, ४४६, ४५२, ५५७
पुराणिक [पौरस्त्य] रा० १६, ४२, ४४, १२६, १७०,
 २१०, २१२, २३५, २३६, २४२, ६५६-
 जी० ३१३००, ३४०, ३४५, ३५१, ३७३, ३६७,
 ३६८, ४०४, ४४३, ४४६, ५५६, ५६२, ५६८,
 ५७७, ६२२, ६४७, ६६१, ६६६, ६६८, ६७३,
 ६८२, ६६४, ६६७, ६६८, ७०८, ७१०, ७३६,
 ७२६, ७६२, ७६४, ७६६, ७६८ से ७७०, ७७२,
 ७७३, ७७७, ७७९, ८००, ८१४, ८२५, ८५१,
 ८८२, ८८५, ९०२, ९३६, ९४४, १०१५,
 १०१६
पुराणिक [पौरस्त्य] रा० ४७, ५६, २७७,
 २८३, २८६, २८८, २९१, २९८, ३०३, ३०८,
 ३१६, ३२४, ३२६, ३३२ से ३४३ ३४७ से
 ३५१, ३६५, ४१४, ४५४, ४७४, ५१५, ५३४,
 ५७५, ५६४, ६३५, ६५६, ६५७, ६६४.
 जी० ३१३३ से ३५, ३७, २१६, २२२, २२३,
 २२७, ४४३, ४४५, ४५२, ४५४, ४५७, ४६३,
 ४६८, ४७३, ४८४, ४८६, ४६४ ४६७ से ५०८,
 ५१२ से ५१६, ५२५, ५२६, ५३१, ५३३, ५३६,
 ५४०, ५४६, ५४७, ५५३, ५५६, ५५७, ५७७,
 ६६८, ६७३, ६८६, ६९२, ६९३, ७०८, ७७०,
 ७७२, ७७४, ७७६, ७७८, ९१०
पुराणिक [पुण्ड] जी० १६ जी० ३१५६६
पुरा [पुरा] रा० १८५, १८७. जी० ३१२१७,
 २६०, २६८, ३५८, ५७६
पुराणिक [पुराणिक] जी० ११५
पुराणिक [पुराणिक] जी० १४, १६, १७, १९, ५२, ६३, ६४,
 १६५, १६८. रा० ८ २८, २९२, ६७१, ६८१ से
 ६८३, ६८७ से ६९१ ७००, ७०६, ७१४ से
 ७१६, ७३२, ७३५, ७३७, ७५१, ७५३ से ७५६,
 ७५८ से ७६२, ७६४, ७६५, ७६८, ७६९, ७७२,
 ७७४, ७७५, ७८७, ७८८. जी० २, १, ७५ से
 ८८, ९० से ९३, ९५, ९६, ९८, १४१ से १५१;

३१२७१५, १४८, १४९, १६४, ४५७
पुराणिक [पुराणिक] जी० ८६ से ९५, ११४,
 ११७, १५५ १५७ से १६०, १६२, १६७
पुराणिक [पुण्ड] जी० १४.
 रा० ६७१
पुराणिक [पुराणिक] जी० १४६.
 रा० ८०६
पुराणिक [पुराणिक] जी० ११८
पुराणिक [पुराणिक] जी० १४. रा० ६७१
पुराणिक [पुराणिक] जी० १४. रा० ६७१
पुराणिक [पुराणिक] जी० १४, १६, २१, ५४.
 १६, २१, ५४. रा० ८, २९२, ६७१ जी० ३१४५७
पुराणिक [पुराणिक] जी० १६, २१,
 ५४. रा० ८, २९२. जी० ३१४५७
पुराणिक [पुराणिक] जी० ११३६; २१६७, ९८;
 ६१२३, १२७
पुराणिक [पुराणिक] जी० ६१३०
पुराणिक [पुराणिक] जी० १२५
पुराणिक [पुराणिक] जी० ६१२१
पुराणिक [पुराणिक] जी० १४, १६, २१, ५४.
 रा० ८, २९२, ६७१. जी० ३१४५७
पुराणिक [पुराणिक] जी० १४. रा० ६७१
पुराणिक [पुराणिक] जी० ८
पुराणिक [पुराणिक] जी० ४६
पुराणिक [पुराणिक] जी० ८२. रा० १०, १२, १८, ६५,
 १६५, २७६
पुराणिक [पुराणिक] जी० ३१७
पुराणिक [पुराणिक] जी० ११८४
पुराणिक [पुराणिक] जी० ७०. रा० ८०४
पुराणिक [पुराणिक] रा० २४५. जी० ३१४०७
पुराणिक [पुराणिक] जी० ७२, ११६, १५६, १६७, १८२.
 रा० ४०, १३२, १७३, ६८५, ७७२.

जी० ३१२, ६५, २८५, ३५८, ८४१, ८८१, ९८८,
९८९
पुञ्ज [पूर्वाङ्ग] जी० ३८४१
पुञ्जकोडि [पूर्वकोटि] जी० ११०१, ११९, १२३,
१२४; २१२२, २४, २६ से ३४, ४८ से ५०, ५३
से ६१, ८३, ८४, १०९, ११३, ११४, ११६, १२२
से १२४; ३१६१, १६२, ११३५; ६९; ७११२;
९१४१, १४२, १४४, १४६, १६२, २००, २०३,
२१२, २२५, २३८, २७३
पुञ्जकोडिय [पूर्वकोटिक] ओ० १८८
पुञ्जकम [पूर्वकम] जी० ३१८०
पुञ्जणत्थ [पूर्वन्यस्त] रा० ४८. जी० ३१५५८ से
५६०, ५६२
पुञ्जपुरिस [पूर्वपुरिष] ओ० २
पुञ्जभणित [पूर्वभणित] जी० ३१८१
पुञ्जभव [पूर्वभव] रा० ६६७
पुञ्जरत्त [पूर्वरात्र] रा० १७३
पुञ्जविदेह [पूर्वविदेह] जी० २१२६, ५६, ६५, ७०,
७२, ८५, ९६, ११५ १२३, १३२, १३७, १३८,
१४७, १४९; ३१४५, ७९५
पुञ्जाणपुञ्जी [पूर्वाणुपूर्वी] ओ० १९, २०, ५२, ५३.
रा० ६८६, ६८७, ७०६, ७११, ७१३
पुञ्जाभिमुह [पूर्वाभिमुख] रा० ८
पुञ्जावर [पूर्वापर] रा० १६३, १६९. जी० ३११७४,
३३५, ३५५, ३५७, ६५८, ७२८, ७३३, १००६,
१०२३
पुञ्जि [पूर्व] ओ० ११७. रा० ६३, ६५, २७५,
२७६, ७८१ से ७८७. जी० २११५०; ३१४४१,
४४२
पुहत्त [पृथक्त्व] जी० ११०३, १११, ११२, ११६,
१२४, १२५; २१४८ से ५०, ५३, ५४, ५६, ८२
से ८४, ९८, ९९, १२२ से १२५, १२८; ३११०,
१९७, १११५, १११६, ११३५, ११३७; ४११५;
५११६२६; ६१९, ११; ९१८९, ९३, १०२, १०६,
१२३, १२८, २१९, २१७, २२५, २३८, २४४,
२७३, २८०

पुहत्तावियक्क [पृथक्त्ववितर्क] ओ० ४३
पुहत्तम्म [पूतिकर्मन्] ओ० १३४
पुहत्ताए [पूजयितुम्] ओ० १३९
पुह्य [पूजित] ओ० १४. रा० ६७१
पुह्य [पूतिक] रा० ९, १२. जी० ३१२२२
पुय [पूत] ओ० ९८
पुयण [पूजन] ओ० ५२. रा० १६, ६८७, ६८९
पुयणिज्ज [पूजनीय] ओ० २. रा० २४०, २७६.
जी० ३१४०२, ४४२
पुयफलिवण [पूयफलिवन] जी० ३१५८१
पूर [पूरय्]—पूरैइ. ओ० १७४
पूरिम [पूरिम, पूर्य] ओ० १०९, १३२. रा० २८५.
जी० ३१४५१, ५९१
पूस [पुष्य] जी० ३१८३८, ३२२
पूसमाण [पुष्यमाण] जी० ३१२७७
पूसमाणय [पुष्यमाणव] ओ० ६८
पूसमाणव [पुष्यमाणव] रा० २४
पेच्च [प्रेत्य] ओ० ८८
पेच्चभव [प्रेत्यभव] ओ० ५२. रा० ६८७
पेच्छणघरम [प्रेक्षणगृह] जी० ३१२९४
पेच्छणिज्ज [प्रेक्षणीय] ओ० १. जी० ३१५९७
पेच्छाघर [प्रेक्षागृह] जी० ३१५९१, ६०४
पेच्छाघरमंभव [प्रेक्षागृहमण्डप] रा० ३४, २१५,
२१६, २२०, २२१, ३०० से ३०४, ३३१ से
३३५, ३३८ से ३४२. जी० ३१३७६, ३७९,
३८०, ४१२, ४६५ से ४६९, ४८६ से ४९०,
५०३ से ५०७, ८८९, ८९३
पेच्छिज्जमाण [प्रेक्ष्यमाण] ओ० ६९
पेच्छित्तए [प्रेक्षितुम्] ओ० १०२, १२५
पेज्ज [प्रेयम्] ओ० ७१, ११७, १६१, १६३.
रा० ७९६
पेज्जवंधण [प्रेयवंधन] जी० ३१६११
पेज्जविवेग [प्रेयोविवेक] ओ० ७१
पेढ [पीढ] जी० ३१६६८
पेम [प्रेमन्] ओ० १२०, १६२. रा० ६९८, ७५२,
७८९

पेम्म [प्रेमन्] रा० ७५३
 पेया [पेया] रा० ७१, ७७
 पेयावायम [पेयावादक] रा० ७१
 पेरंत [पर्यंत] ओ० १६२. जी० ३१२५, ३००,
 ५६६, ५६६, ५६६, ७०५, ७११, ५००, ५१४,
 ५२५, ५५१, ६३६, ६४४
 पेलव [पेलव] रा० २५५. जी० ३४५१
 पेस [प्रेष] जी० ३१६१०
 पेसल [पेसल] जी० ३१५६, ५६०
 पेसुण्ण [पैसुण्ण] ओ० ७१, ११७, १६१, १६३.
 रा० ७६६
 पेसुण्णविज्जेग [पैसुण्णविवेक] ओ० ७१
 पेहुणमिजा [दे० पेहुणमज्जा] जी० ३१२२
 पीढरीय [पीण्डरीक] ओ० १५०. रा० २३, २६,
 १३७, १७४, १६७, २७६, २५५, ५११.
 जी० २:२५६, २५२, २५६, २६१, ३०७
 पीगल [पुद्गल] ओ० १६६, १७०. रा० १०,
 १२, १५, ६५, २७६, ७७१. जी० १५५, ५०, ६५,
 १३५; ३१५५, ५६, ५७, ६२, ६७, १०६, १२७,
 १२५, १२६, ३, १०, ४४५, ७२४, ७२७, ७५७,
 ६७४, ६७६, ६७७, ६५२ से ६५५, ६५५ से
 ६६७, १०५१, १०६०, १०६६
 पीगलपरिचट्ट [पुद्गलपरिवर्त] जी० २१६५, ५५,
 १३२; ५६, २६; ६१३, २६, ३३, ६६, ७१,
 ७३, ७५, १४६, १६४, १६५, १७५, २०२, २०४
 ✓ पीच्छल [प्रा०-उत् । शल्] — पीच्छलेति.
 रा० २५१. जी० ३४४७
 पीट्टरोग [दे०] जी० ३१६२५
 पीतय [पीतज] जी० ३१४६
 पीत्तिय [पीतिक] ओ० ६४
 पीत्तिया [दे०] जी० १५६
 पीत्थयग्गाह [पुस्तकग्रह] ओ० ६४
 पीत्थयरयण [पुस्तकैरत्न] रा० २७०, २५७, २५५,
 ५६४. जी० ३४३५, ४५३, ४५४, ५४७
 पीय [पात] ओ० ४६
 पीयय [पीतज] जी० ३१४७, १६१, १६३, १६४

पीराण [पुराण] ओ० २. रा० ११, ५६, १५५,
 १५७, ६७५. जी० १५०; ३१२७, २६७, २६५,
 ३५५, ५०६
 पीरेकव्व [पुरःकाव्य] ओ० १४६. रा० ५०६
 पीरेवच्च [पीरपत्तय, पीरोवृत्तय] ओ० ६५.
 रा० २५२. जी० ३१३५०, ५६३, ६३७
 पीस [पीस] जी० ३५६५
 पीसह [पीपध] ओ० १२०, १६२. रा० ६७१,
 ६६५, ७५२, ७५७, ७५६
 पीसहसाला [पीपधशाला] रा० ७६६
 पीसहोववास [पीपधोपवास] ओ० ७७, १२०, १४०,
 १५७. रा० ६७१, ७५२, ७५७, ७५६

(फ)

✓ फंव [फान्द] — फंडइ. रा० ७७१. — फंदंति.
 जी० ३४७६
 फंवंत [स्फन्दमान] रा० ७७१
 फंदिय [स्फन्दि] रा० १७३. जी० ३१२५५, ५५५
 फणस [फनस] ओ० ६, १०. जी० ११७२; ३१५२
 फरसु [फरसु] रा० ७६५
 फरिस [स्पर्श] ओ० १५, १६१, १६३. रा० २५५,
 ६७२, ६५५, ७१०, ७५१, ७७४. जी० ३४५१,
 ५५६, ५६२
 फरस [फरस] ओ० ४०, ४६. रा० ७६५.
 जी० ३:६६, ११५
 फल [फल] ओ० ६, ७१, १३५. रा० १५१, २२५,
 २५१, ६७०, ५१४. जी० ११७१, ७२; ३१७४,
 २७४, ३२४, ३५७, ५५६, ६००, ६०२, ६७२
 फलण [फलक] ओ० ३७, १२०, १६२, १५०. रा०
 १६, १५३, १७५, १६०, २३५, २३६, २४०, ६६५,
 ७०४, ७०६. जी० ३१२६४, २५७, ३२६, ३६७,
 ३६५, ४०२, ६०२
 फलगगाह [फलकग्रह] ओ० ६४
 फलमंत [फलवत्] ओ० ५, ५. जी० ३१७४
 फलय [फलक] रा० ७११, ७१३, ७५२, ७७६, ७५६.
 जी० ३१३२६, ४०२

फलवित्ति [फलवृत्ति] जी० ३१२७, २६७, २६८,
३५८, ५७६
फलविवाय [फलविपाक] ओ० ७४।६. रा० १८५,
१८७
फलहृत्सेवजा [फलकथय्या] ओ० १५४, १६५, १६६.
रा० ८१६
फलासव [फलाभव] जी० ३।८६०
फलाहार [फलाहार] ओ० ६४
फलिय [फलित] रा० ७८२
फलह [परिष] ओ० १, १६, १६२. रा० ६६८,
७५२, ७८६. जी० ३।५६६
फलह [स्फटिक] रा० १०, १२, १८, ६५, १६५, २७६.
जी० ३।७, ४५१, ८५४
फलहरयण [परिघरत्न] रा० २४६, ३५५.
जी० ३।४१०, ५२०
फलहा [परिषा] ओ० १
फाणिय [फाणित] ओ० ६३
फालिय [स्फाटिक] ओ० १५४, १७४.
जी० ३।२८६, ३२७
फालिय [पाटिक, स्फाटिक] रा० ७६४, ७६५
फालियग [पाटिक, स्फाटिक] ओ० ६०
फालियमय [स्फटिकमय] जी० ३।७४७
फालियामय [स्फटिकमय] ओ० १६. रा० २५४.
जी० ३।४१५, ८५७, ६११, १००८
फास [स्पर्श] ओ० १३, २७, ५७, ५१, ७२, १६६,
१७०. रा० ३१, ३३, ३७, ४५, ६५, १७२, १८५,
१६६, २०३, २३७, २४५, ८१३. जी० १।५, ३६,
५०, ५८, ७३, ७८, ८१; ३।५८, ८५, ८७, ६६,
१२२, १२३, १२७।१, ३, २७१, २८४, २६७, ३०६,
३११, ३३६, ३६४, ३७६, ३६६, ४०७, ४१२,
४२१, ५०८, ६०१, ६०२, ६४५, ६४८, ६५६,
६७०, ७२४, ७२७, ७५७, ८६०, ८६६, ८७२, ८७८,
६७२, ६८१, ६८२, १०७६, १०८१, १०८६,
१११७, १११८, ११२४, ११२५
फासओ [स्पर्शतत्] जी० १।४०, ५०
फासतो [स्पर्शतत्] जी० ३।२२

फासमंत [स्पर्शतत्] जी० १।३३, ३६
फासिदिय [स्पर्शन्द्रिय] ओ० ३७. जी० १।२२;
३।६७६
फासुय [प्रासुक, स्पर्णुक] ओ० ३७, १२०, १६२.
रा० ६६८, ७५२, ७७६, ७८६
फिडिय [स्फिटित] ओ० २३
फुंफुअग्नि [वे०] जी० २।७४
फुटमाण [स्फुटत्] रा० ७१०, ७७४
फुट्टिजंत [स्फोटयमान] रा० ७७
फुड [स्पृष्ट] ओ० १६६, १७०
फुड [स्फुट] रा० ७७४
फुडिय [स्फुटित] जी० ३।६६
फुल्ल [फुल्ल] ओ० २२. रा० १७४, ७२३, ७७७,
७७८, ७८८. जी० ३।११८, ११६, २८६
फुल्लग [फुल्लक] जी० ३।५६३
फुल्लावलि [फुल्लावलि] रा० २४. जी० ३।२७७
√फुस [स्पृश्] —फुसद्. ओ० ७१.—फुसंतु.
ओ० ११७. रा० ७६६
फुसित्ता [स्पृष्टत्वा] ओ० १६६
फुसिय [स्पृष्ट] रा० ६, १२, २८१. जी० ३।४४६
फुसिजंत [फुत्क्रियमान] रा० ७७
फेण [फेन] ओ० १६, ४६, ४७. रा० ३८, १३०,
१६०, २२२, २५६. जी० ३।३००, ३१२, ३३३,
३८१, ४१७, ५६६, ८६४
फेणक [फेनक] रा० ६६
फोडेमाण [स्फोटयत्] ओ० ५२. रा० ६८८

(ब)

बडसिया [वकुशिका] रा० ८०४
बंध [बन्ध] ओ० ४६, ७१, १२०, १६१ से १६३.
रा० ६६८, ७५२, ७८६
बंध [बन्ध] —बंध. ओ० ८६. रा० ७६५.
—बंधति. रा० ७७४. —बंधति रा० ७५.
—बंधाहि. रा० ७७४
बंधठिति [बन्धस्थिति] जी० २।७५, ६७, १३६, १५१
बंधण [बन्धन] ओ० १३, ४६, १७१, १६५।२१.
रा० ७५४, ७५६, ७६४, ७७४

बंधित्तए [बद्धम्] रा० ७७४

बंधिता [बद्धवा] रा० ७५

बंधुजीवगुम्भ [बन्धुजीवकगुम्भ] जी० ३५८०

बंध [ब्रह्मन्] ओ० २५, ५१, १६२, रा० ६८६

जी० ३१०४६, १०९६, १०८८, १०६४, १११०

बंधचेर [ब्रह्मचर्य] जी० ३१६६६

बंधचेरवास [ब्रह्मचर्यवास] ओ० १५४, १६५, १६६,

रा० ८१६

बंधण्य [ब्रह्मण्यक] ओ० ६७

बंधदत्त [ब्रह्मदत्त] जी० ३१११७

बंधलोग [ब्रह्मलोक] जी० ३१०७६

बंधलीय [ब्रह्मलीक] ओ० ११४, ११७, १४०,

जी० २१४८, १४६; ३१०३८, १०५६, ११०२

√बज्ज [बन्ध्]—बज्जती. ओ० ७४४

बत्तीस [द्वात्रिंशत्] ओ० ३३, रा० १२४,

जी० ३५

बत्तीसइगुण [द्वात्रिंशद्गुण] जी० २१५१

बत्तीसइबद्ध [द्वात्रिंशद्बद्ध] रा० ७३, ११८

बत्तीसइबद्धय [द्वात्रिंशद्बद्धक] रा० ७१०, ७७४

बत्तीसतिबद्ध [द्वात्रिंशद्बद्ध] रा० ६३, ६५

बत्तीसिध्या [द्वात्रिंशिका] रा० ७७२

बद्ध [बद्ध] ओ० ५, ८, ५७, रा० १३२, २३५, ६६४,

६८३, ७५४, ७५६, ७६४, ७७१, ७७४,

जी० ३१२२, १७४, २७४, ३०२, ३२६, ३६७, ५६२

बद्धग [बद्धक] रा० ७७

बद्धीसा [बद्धीसा] रा० ७७

बष्प [बष्प] जी० ३५६२

बब्बरिया [बर्बरिका] रा० ८०४

बब्बरो [बर्बरी] ओ० ७०

बरहण [बर्हन्] ओ० ६, जी० ३१२७४

बल [बल] ओ० २३, ६७, ७१, ८६ से ६६, ११४,

११६, १५५, १५० से १३०, १६२, १६७,

रा० १२, १३, ३१, ६५७, ६७४, ६६५, ७५८, ७५६,

७८७, ७८८, ७९०, ७९१ जी० ३१११८, ४४६,

५८६, ५६२

बलदेव [बलदेव] ओ० ७१, जी० ३१७६५, ८४१

बलध [बलवत्] ओ० १४, रा० १२, ६७१, ७५८,

७५६, ३१११८, ११६

बलवाउय [बलवाऽमृत] ओ० ५५ से ६३

बलसंपण [बलसंपन्न] ओ० २५, रा० ६८६

बलागा [बलाका] रा० २६

बलाया [बलाका] जी० ३१२८२

बलाभिभोग [बलाभिभोग] ओ० १०१, १२४

बलाहक [बलाहक] जी० ३१७८५, ७८६, ८४१

बलाह्य [बलाहक] रा० २६, जी० ३१२८२

बलि [बलि] जी० ३१२८० से २४३

बलिकम्म [बलिकम्मन्] ओ० २०, ५२, ५३, ७०,

रा० ६८३, ६८५, ६८७ से ६८६, ६६२, ७००,

७१०, ७१६, ७२६, ७५१, ७५३, ७६५, ७७४,

७६४, ८०२, ८०५

बलिपीठ [बलिपीठ] रा० २७२, २७३, ६५४, जी०

३१४३७, ४३८, ५५४, ५५६

बलिविसज्जण [बलिविसज्जन] रा० ६५४, जी०

३१५५६

बल्लकी [बल्लकी] रा० ७७

बहली [बहली] जी० ७०, रा० ८०४

बह्व [बहु] ओ० १२, १७, २३, ४७ से ५२, रा०

१६, १७, २८, २३, ५४, ५५, ७१ से ७५, ७६ से

८१, ८३, ११२ स ११८, १३२, १५३, १६७, १६८,

१७८ से १८०, १८२, १८४, १८५, १८७, १६२

से १६४, १६६, २३५, २३६, २४०, २४६, २८०,

२८२, २८६, ६८७ से ६८६, ६६५, ७०३,

७०४, जी० ३१८७, २१७, ३४८, ३५८, ३५६,

३६७, ३६७, ३६८, ४०२, ४१०, ४११, ४२०,

४४३, ४४८, ४५५, ४५६, ५७६ से ५८३, ५८६ से

५६५, ६४०, ७०२, ७२४, ७२४, ७२७, ७२६,

७८५ स ७८७, ८०७, ८२६, ८४१, ८५७, ९०२,

९१७, १०३०, १०३६, १०८१

बहि [बहि] रा० १३०, जी० ३१३००

बहिया [बहिस्, बहिस्तात्] ओ० २, रा० २, जी०

३१८३८१

बहु [बहु] ओ० १४, २३, ५२, ६३, ६४, ६६, ७०, ९१, ९२, ९४, ११४, ११७, १४०, १४१, १५४, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६५, १६६, १६५. रा० ७, १५, ५१, ५६, ५८, १२४, १७४, १८१, १८३, १८५, २४०, २७६, २८२, २९१, ६५७, ६७१, ६७५, ६८३, ६९८, ७१८, ७५२, ७७४, ७८७ से ७८९, ७९९, ८०३, ८०४, ८१६. जी० ३११११, ११८, ११९, २५९, २६९, २८६, २९३, २९५, ३८८, ३९०, ४०२, ४४४, ४८८, ४५७, ५५७, ५६३, ५६६, ५८४ से ५९५, ६३७, ६५९, ७२१, ७३८, ७४३, ७५०, ७६०, ७६३, ८५७, ८६३, ८६६, ८७५, ९०१, ९१७, ९६५, १०२५, १०३८

बहुउदग [बहुदक] ओ० ९६

बहुगुणतर [बहुगुणतर] रा० ७१८

बहुजन [बहुजन] ओ० २, १४, ५२, ११८, १४१. रा० ६७१, ६७५, ६८७

बहुतरक [बहुतरक] जी० ३११०१

बहुतरग [बहुतरक] जी० ३१९९, ११३, ११४

बहुदोस [बहुदोष] ओ० ४३

बहुपडिपुष्प [बहुप्रतिपुष्प] ओ० १४३. रा० १५१, १५२, ८०१. जी० ३३२४, ३२५

बहुपुरिसपरंपराभय [बहुपुरिषपरम्परागत] रा० ७७३

बहुष्पकार [बहुप्रकार] जी० ३१५६५

बहुष्पगार [बहुप्रकार] जी० ३१५८६ से ५८८, ५९३

बहुष्पसन्न [बहुप्रसन्न] ओ० १११ से ११३, १३७, १३८

बहुबीज [बहुबीज] जी० ११७०, ७२

बहुबीजग [बहुबीजक] जी० ११७२

बहुमञ्ज [बहुमञ्ज] ओ० ८, १९२. रा० ३, ३२, ३५, ३६, ३९, ६६, १२५, १६४, १८६, १८८, २०४, २१७, २१८, २२७, २३८, २५२, २६१, २६३, २६५, ३००, ३२१, ३२६, ३३३, ३३८, ३५६, ४१५, ४७८, ५३६, ५९६, ७३५, ७७२. जी०

३१२६३, ३१०, ३१३, ३१८, ३३८, ३५६, ३५९, ३६१, ३६४, ३६५, ३६६, ३६९, ३७७, ३८६, ४००, ४१३, ४२२, ४२७, ४६०, ४६५, ४८८, ४९१, ४९८, ५०३, ५२१, ५२७, ५३५, ५४२, ५४९, ५५४, ६३४, ६३९, ६४२, ६४६, ६४९, ६६३, ६६८, ६७१ से ६७३, ६७६, ६८५, ६९१, ७३७, ७५६, ७५८, ७६२, ८३१, ८८२, ८८४, ८८७, ८९१, ९०६, ९११, ९१३, ९१८, १०३९

बहुमय [बहुमत] ओ० ११७. रा० ७५० से ७५३, ७६६

बहुमाण [बहुमान] ओ० १४, ४०. रा० ६७१

बहुय [बहुक] ओ० १७१. रा० १९७.

जी० ११७२, १४३; २१६८ से ७२, ९५, ९६, १३४ से १३८, १४१ से १४९; ३१४०२, ५७९, १०२५, १०३७, १०३८; ४१९९, २२, २५; ५१९९, २०, २६, २७, ३२ से ३६, ५२, ५९, ६०; ७१२०, २२, २३; ९१७, १४, ५५, २५० से २५३, २५५, २८६ से २९७

बहुरय [बहुरत] ओ० १६०

बहुल [बहुल] ओ० १, ७, ८, १०, ४६, ४९.

रा० ६७१. जी० ३१११८, ११९, २३९, २७५, २७६

बहुविह [बहुविध] ओ० १९५, १९६

बहुसम [बहुसम] रा० २४, ३२, ३३, ३५, ६५, ६६, १२४, १७१, १८६ से १८८, २०३, २०४, २१७, २३७, २३८, २६१. जी० ३१२१८, २५७, २७७, ३०९, ३१०, ३३६, ३५९ से ३६१, ३६४, ३६५, ३६८, ३६९, ३७२, ३९९, ४००, ४२२, ४२७, ५८०, ६२३, ६३३, ६३४, ६४५, ६४६, ६४८, ६४९, ६५६, ६६२, ६६३, ६७०, ६७१, ६७३, ६९०, ६९१, ७३७, ७५५ से ७५८, ७६८, ८८३, ८८४, ८९०, ९०५, ९०६, ९१२, ९१३, १००३, १०३८, १०३९

बाण [बाण] रा० ३६. जी० ३१२७९

बाणवृत्ति [बाणवृत्ति] जी० ३१८१५

बाणगुम्म [बाणगुम्म] जी० ३.५८०
 बादर [बादर] जी० ३।८४१; ५।२६ से ३१, ३५,
 ५१, ५२, ५८ से ६०
 बादरआउकाइय [बादरअष्कायिक] जी० ५।२८
 बादरणिओद [बादरनिगोद] जी० ५।२६
 बादरणिओब [बादरनिगोद] जी० ५।२८ से ३०,
 ४०, ४७ से ४६, ५२
 बादरणिओबजीव [बादरनिगोदजीव] जी० ५।५३.
 ५५, ५८ से ६०
 बादरनिगोद [बादरनिगोद] जी० ५।४०
 बादरतसकाइय [बादरत्रसकायिक] जी० ५।२८ से
 ३०, ३३, ३५
 बादरतेउक्काइय [बादरतेजस्कायिक] जी० १।७८,
 ७६; ५।२८
 बादरपत्तेयवणस्सतिकाइय [बादरप्रत्येकवनस्पति-
 कायिक] जी० ५।२६
 बादरपुडवि [बादरपृथ्वी] जी० ५।२६
 बादरपुडविकाइय [बादरपृथ्वीकायिक]
 जी० १।५८; ३।१३२, १३४; ५।२, ३, २८ से
 ३०
 बादरवणस्सइकाइय [बादरवनस्पतिकायिक]
 जी० ५।३०
 बादरवणस्सति [बादरवनस्पति] जी० ५।२६
 बादरवणस्सतिकाइय [बादरवनस्पतिकायिक]
 जी० ५।२८ से ३१
 बादरवाउ [बादरवायु] जी० ५।२६
 बादरवाउकाइय [बादरवायुकायिक] जी० ५।२८,
 ३०
 बादरवाउक्काइय [बादरवायुकायिक]
 जी० १।८१
 बायर [बादर] जी० १।४४; ३।८४१; ५।२८, २६,
 ३१ से ३६; ६।६५, ६७, ६६, १००
 बायरआउकाइय [बादरअष्कायिक] जी० ५।२८
 बायरआउक्काइय [बादरअष्कायिक]
 जी० १।६३, ६५

बायरकाल [बायरकाल] जी० ६।६६
 बायरणिओद [बादरनिगोद] जी० ५।३८
 बायरणिओय [बादरनिगोद] जी० ५।३१, ३३, ३५,
 ३६
 बायरतसकाइय [बादरत्रसकायिक] जी० ५।३१ से
 ३४, ३६
 बायरतेउक्काइय [बादरतेजस्कायिक]
 जी० ५।३१, ३३, ३४
 बायरतेउक्काइय [बादरतेजस्कायिक]
 जी० १।७६; ५।३३, ३४, ३६
 बायरपुडवि [बादरपृथ्वी] जी० ५।३१, ३३, ३५, ३६
 बायरपुडविकाइय [बादरपृथ्वीकायिक]
 जी० १।१३, ५७, ६५, ७४; ५।३१, ३३, ३४, ३६
 बायरपुडविककाइय [बादरपृथ्वीकायिक]
 जी० १।५७, ५८, ६२
 बायरवणस्सइकाइय [बादरवनस्पतिकायिक]
 जी० १।६६, ६८, ६६, ७२ से ७४; ५।३३, ३४,
 ३६
 बायरवणस्सतिकाइय [बादरवनस्पतिकायिक]
 जी० ५।३१, ३३ से ३६
 बायरवाउकाइय [बादरवायुकायिक] जी० ५।३४
 बायरवाउक्काइय [बादरवायुकायिक] जी० १।८०,
 ८२
 बायाल [द्वाचत्वारिणत्] जी० ३।१०२२
 बायालीस [द्वाचत्वारिणत्] थो० १६२.
 जी० १।११२
 बारस [द्वादशन्] ओ० ६०. रा० ४३. जी० १।८६
 बारसभत्त [द्वादशभक्त] ओ० ३२
 बारसम [द्वादश] रा० ८०२
 बारसाह [द्वादशाह] जी० १४४
 बाल [बाल] रा० २७, ३१, ७५८, ७५६.
 जी० ३।२८०, २८४, ६६० से ६६७
 बालतवोकम्म [बालतपःकर्मन्] ओ० ७३
 बालदिवाकर [बालदिवाकर] रा० २७.
 जी० ३।२८०

बालभाव [बालभाव] रा० ८०६, ८१०

बालविहवा [बालविधवा] ओ० ६२

बालिय [बाल] रा० ४५

बावट्ट [द्वाषष्टि] जी० ३१३२

बावट्टि [द्वाषष्टि] रा० २०६, जी० ३१६१

बावण [द्विपञ्चाशत्] जी० ३१६७

बावत्तर [द्वावत्तति] जी० ३१६३२

बावत्तरि [द्वावत्तति] रा० २०६, जी० १११६

बावन [द्विपञ्चाशत्] ओ० १२६

बावीस [द्वाविंशति] ओ० १५४, रा० ८१६,

जी० ११५६

बाहल्ल [बाहल्य] ओ० १६२, रा० ३६, १३७,

१८८, २१८, २२१, २२४, २३०, २३८, २४२,

२४४, २४६, २५२, २६१, २७२, जी० ३५, १४

से २७, ३६ से ४७, ५२, ७३ से ७५, ७७, ८०,

१२४, १२५, १२७, २३२, २५७, ३०७, ३१०,

३५५, ३६१, ३६५, ३७७, ३८०, ३८३, ३८५,

३६२, ४००, ४०४, ४०६, ४०८, ४१३, ४२२,

४२७, ४३७, ६३४, ६४२, ६४४, ६४६, ६५३,

६५५, ६६८, ६७१, ७२४, ७२५, ७२७, ७२८,

७५८, ८६१, ८६३, ८६५, ८६७, ८६९, ९०६,

१००६, १०१० से १०१४, १०६५, १०६६

बाहा [बाहू] ओ० ११६, जी० ३१५४, ४१५

बाहि [बाहिस्] रा० ७७२, जी० ३१७७

बाहिर [बाह्य] ओ० ६, रा० ४३, जी० ३१७८,

२३६, २७५, ६४३, ६८१, ७६८, ७६९, ७७५,

८३१, ८३८, १२, ८४५, १०५५

बाहिरग [बाहिरक, बाह्यक] जी० ३१७८४, ७८७

बाहिरय [बाहिरक, बाह्यक] ओ० ३०, ३१, ३७,

जी० ३१६५८, ७८२, ७८६, ७८७, ६६० से ६६७

बाहिरिय [बाहिरिक, बाह्यक] रा० ६६२,

जी० ३१२३५ से २३६, २४१ से २४३, २४६,

२४७, २४९, २५०, २५४ से २५६, २५८, ३४३,

४४७, ५६०, ७३३, ८४२, १०४० से १०४२,

१०४४, १०४६, १०४७, १०४९ से १०५३

बाहिरिया [बाहिरिका] ओ० १८, २०, ५३, ५५,

५८, ६० से ६३ रा० ६८३, ६८५, ७०८, ७५४,

७५६, ७६२, ७६४

बाहिरिल्ल [बाह्य] जी० ३१७२३, १००७

बाहु [बाहु] ओ० १६, रा० १२, ७५८, ७५९,

जी० ३१११८, ५६६

बाहुजुड [बाहुजुड] ओ० १४६, रा० ८०६

बाहुजोहि [बाहुजोधिन्] ओ० १४८, १४९,

रा० ८०६, ८१०

बाहुप्पमहि [बाहुप्पमदिन्] ओ० १४८, १४९,

रा० ८०६, ८१०

बिइय [द्वितीय] ओ० ४७, १७६, १८२,

जी० ३१२२६

बिट [वृन्त] रा० २२८

बिदिय [बीन्द्रिय] ओ० १८२

बिबु [बिन्दु] ओ० २३

बिबफल [बिम्बफल] ओ० १६, ४७, जी० ३१५६६

बिहणिज्ज [बृहणीय] जी० ३१६०२, ८६०, ८६६,

८७२, ८७८

बिबोयण [दे०] रा० २४५, जी० ३१४०७

बिलपंतिया [बिलपंक्तिका] रा० १७४, १७५, १८०,

जी० ३१२८६, २८७, २६२, ५७६, ६३७, ७३८,

७४३, ७६३, ८५७, ८६३

बिसालग [द्विशालक] जी० ३१५६४

बीभच्छ [बीभत्स] जी० ३१८४

बीय [बीज] ओ० १३५, १८४

बीय [द्वितीय] ओ० १७४

बीयग [बीयक] जी० ३१२८१

बीयगुम्म [बीजगुह्य] जी० ३१५८०

बीयबुद्धि [बीजबुद्धि] ओ० २४

बीयमंत [बीजवत्] ओ० ५, ८, जी० ३१२७४

बीयय [बीयक] रा० २८

बीयासत्तराहंदिद्या [द्वितीयसप्तरात्रिदिवा] ओ० २

बीयाहर [बीजाहर] ओ० ६४

बुक्कार [दे०]—बुक्कारेति, रा० २८१,

जी० ३१४४७

√बुज्ज [दे०] — बुज्जइ. ओ० १७७. — बुज्जंति.

ओ० ७२. जी० ११३३. — बुज्जिहिति.

ओ० १६६. — बुज्जिहिति. ओ० १५४.
रा० ८१२

√बुज्ज [बुध्] — बुज्जिहिति. ओ० १५१

बुज्जिहिता [बुद्ध्वा] ओ० १५१

बुद्ध [बुद्ध] ओ० १६, २१, ५४. १६५।२०. रा० ८,
२६२. जी० ३।४५७

बुद्धबोहियसिद्ध [बुद्धबोधितसिद्ध] जी० १।८

बुद्धि [बुद्धि] रा० ६७५

बुद्धुय [बुद्धुय] ओ० २३

बुह [बुध] ओ० ५०

√बू [बू] — दूया. रा० ७३२

बूर [बूर] ओ० १३. रा० ७३२. जी० ३।२८४,
२६७, ३११, ४०७

बेइन्द्रिय [द्वीन्द्रिय] जी० १।८३, ८४, ८७, ८८,

१२८; २।१०१, १०३, ११२, १२१, १३१, १३६,

१३८, १४६, १४६; ३।१३०, १३६, १६६;

४।१, ४, ८, १२, १६, २०, २१, २३, २५; ८।१,

३, ५; ९।१, ३, ५, ७, २६४

बेंट [वृन्त] जी० ३।१७४

बेंटट्टाह [वृन्तस्थायिन्] रा० ६, १२

बेंदिय [द्वीन्द्रिय] जी० ४।१७; ९।१६७, १६६,

२२१, २२३, २६४

बेयाहिय [द्व्याहिक] जी० ३।६२८

बेलंघ [वेलम्ब] जी० ३।७२४

बेला [वैला] जी० ३।७३३

बोड [दे०] जी० ३।५६६

बोदि [दे०] ओ० ४७, ७२, १६५।१, २. रा० ७७२

बोद्धव्व [बोद्धव्य] ओ० १६५।५, ६.

जी० ३।१२६।१०

बोधव्व [बोद्धव्य] जी० १।६६

बोषिय [बोधित] जी० ३।५६६, ५६७

बोल [दे०] ओ० ४६, ४६, ५२. रा० १५, ६८७,

६८८. जी० ३।६२७, ८४२, ८४५

बोह्य [बोधक] ओ० १६, २१, २२, ५४. रा० ८,

२६२, ७७७, ७७८, ७८८. जी० ३।४५७

बोहि [बोध] ओ० १५१. रा० ८१२

बोहिय [बोधिय] रा० ८, २६२. जी० ३।४५७

बोहिय [बोधित] ओ० १६

भ

भइ [भृति] रा० ७८७, ७८८

भइणी [भगिनी] जी० ३।६११

भइय [भक्त्र] ओ० १६५।१५

भइय [भृतिक] रा० १२

भंगुर [भङ्गुर] ओ० १६. जी० ३।५६६, ५६७

भंजिजमाण [भज्यमान] रा० ३०

भंड [भाण्ड] ओ० ४६, ११७. रा० ३०, १५२,

२६६, २६८, २८४, ४७५, ५३५, ७७४, ७६६.

जी० ३।२८३, ३२५, ४२६, ४३२, ४५०, ५३४,

५४१, ११२८, ११३०

भंग [दे०] ओ० ५६

भंघियालिछ [भण्डिकालिञ्छ] जी० ३।११८

भंत [भदन्त] ओ० ६६, ७६, ८४ से ६५, ११४,

११७, ११८, १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७,

१६६ से १७२, १७४, १७५, १७७, १८१, १८४ से

१६२. रा० १०, ५८, ६२, ६३, ६५, १२१ से

१२४, १७३, १६७ से २००, ६६५ से ६६७,

६६५, ७००, ७०२ से ७०४, ७१८, ७२०, ७३६,

७३८, ७४७, ७४८, ७५० से ७५४, ७५६, ७५८

से ७६१, ७६२, ७६४ से ७६७, ७७०, ७७२ से

७७५, ७७७, ७८२ से ७८५, ७८८, ८१७.

जी० १।१५ से ३३, ४१ से ४६, ५१ से ५४,

५६, ५६ से ६२, ६४, ७४, ७६, ८२, ८५ से ८७,

९०, ९३ से ९६, १०१, ११६, १२७, १२८, १३०

से १३४, १३७ से १४३; २।२० से २४, २६ से

३०, ३२ से ३६, ३६, ४६, ४८, ४६, ५४, ५७ से

६३, ६६, ६८ से ७४, ७६, ८२ से ८४, ८६, ८८,

९२, ९५ से ९८, १०७ से १०९, १११, ११३,

११४, ११६ से ११९, १२२ से १२६, १३३ से

१५०; ३।३ से ६, ११ से २०, २४ से ३५, ३७

से ३६,४२,४४ से ६६,७३ से ६८,१०३ से
 ११०,११२,११८,११८ से १२८,१४७,१५० से
 १६२,१६५,१६७,१६६ से १८३,१८५,१८६,
 १६२ से २११,२१४,२१७ से २२३,२२७,
 २३२ से २४२,२४४ से २४६,२४८ से २५६,
 २६६ से २७२,२८३ से २८५,२६६,३००,
 ३५०,३५१,५६५ से ५७८,५६६,५६७,५६६
 से ६३२,६३७ से ६३६,६५६,६६०,६६४,६६६
 से ६६८,७००,७०१,७०३,७०५ से ७११,
 ७१३ से ७२३,७३० से ७३६,७३८,७४० से
 ७४३,७४५,७४६,७४८ से ७५०,७५४,७६०
 से ७६६,७६८ से ७७०,७७२,७७६ से ७७८,
 ७८१ से ७८५,७८७ से ८००,८०१ से ८०४,
 ८०८,८०९,८११ से ८१८,८१८ से ८२०,
 ८२३ से ८२५,८२७,८२९,८३०,८३२ से
 ८३७,८३६,८४०,८४२ से ८४७,८४६,८५०,
 ८५४,८५५,८५७,८६०,८६३,८६६,८६६,
 ८७२,८७५,८७८ से ८८१,८८६,८४०,८४४,
 ८५३ से ८५५,८५८,८६१,८६३ से ८६६,
 ८६६,८७२ से ८७७,८८२ से ८८४,८८८ से
 १००८,१०१०,१०१५,१०१७,१०२० से
 १०२७,१०३७ से १०४४,१०५४,१०५६,
 १०५६,१०६२,१०६३,१०६७,१०६६,१०७१,
 १०७३,१०७५,१०७७ से १०८३,१०८५,
 १०८७ से १०८६,११०१,११०५,११०७,११०६ से
 १११२,१११४,१११५,१११७,१११६,११२१,
 ११२२,११२४,११२८,११३०,११३१,११३३
 से ११३८; ४३,७ से ११,१३,१६,२२,२३,
 २५; ५५,८,१०,१२ से १६,१६ से २४,२६ से
 ३०,३२ से ३५,३७ से ३६,४१ से ५०,५२ से
 ५६,५८ से ६०; ६१; ७२,६,२०; ६१,७,
 १० से १४,१६,२३ से २६,३१,३३,३६,४१
 से ४८,५२,५५,५७ से ५६,६४,६८,७६ से
 ७६,८६,६०,६६,६७,१०२,१०३,११४,११५,

१२२,१२२,१४२,१६० से १६३,१७१,१८६ से
 १६३,१६५,१६८ से २०७,२१० से २१२,
 २१४ से २१६,२२२ से २२५,२२७ से २३०,
 २३३ से २३८,२४० से २४४,२४६,२४६ से
 २५३,२५५,२५७ से २६३,२६५,२६८ से
 २७३,२७५ से २८२,२८४ से २६३

भंतसंभंत [भ्रान्तमभ्रान्त] रा० १११,२८१.

जी० ३।४४७

भंभा [दे० भम्भा] रा० ७७. जी० ३।५८८

भंसेलकाम [श्रंशयितुकाम] रा० ७३७

भगंवल [भगवत्] जी० ३।६२८

भगव [भगवत्] ओ० १६,१७,१६ से २५,२७४७
 से ५५,६२,६६ से ७१,७८ से ८३,११७.

रा० ८ से १३,१५,५६,५८ से ६५,६८,७३,७४,
 ७६,८१,८३,११३,११८,१२०,१२१,६६८,
 ७१४,७६६,८१४,८१५,८१७

भगवई [भगवती] रा० ८१७

भगवंत [भगवत्] ओ० १६,२१,२३,२६ से ३०,
 ५१,५२,५४,११७,१५२,१६५,१६५. रा० ८,
 ६,११,५६,२६२,६८७,७१४,७५६,७६६. जी०
 १।१; ३।४५७

भगवती [भगवती] रा० ८१७

भगव [भगवत्] ओ० ६६

भग्जा [भार्या] जी० ३।६११

भट्टित [भर्तृत्व] ओ० ६८. रा० २८२. जी०
 ३।३५०,५६३,६३७

भट्ट [भट्ट] रा० ६,१२; २८१. जी० ३।४४७

भड [भट] ओ० १.२३,५२. रा० ५३,६८३,६८७,
 ६८८,६९२,७१६

भणित [भणित] जी० ३।८८१

भणिय [भणित] ओ० १५,४६,१६५।४ से ७. रा०
 ७०,६७२,८०६,८१०. जी० २।१५०;

३।१२६,५६७,८६८।१,२; ६।१५७

भण्ण [भण्] -- भण्णंति. जी० ३।६४६

भति [भति] ओ० १७

भक्त [भक्त] ओ० १४, १७, ३२, ३३, ११७, १४०,
१४१, १५४, १५७, १६२, १६५, १६६. रा०
६७१, ७७४, ७८७, ७८८, ७९६, ८१६
भक्तकहा [भक्तकथा] ओ० १०४, १२७
भक्तपञ्चखण्ड [भक्तप्रत्याख्यान] ओ० ३२
भक्तपाणविडम्बन [भक्तपाणव्युत्सर्ग] ओ० ४४
भक्ति [भक्ति] ओ० ४०, ५२. रा० १६
भक्तिघर [भक्तिगृह] जी० ३१५६४
भक्तिचिन्ता [भक्तिचिन्ता] ओ० १३, ६३. रा० १७,
१८, २०, २४, ३२, ३४, ३७, ५१, १२६, १३७,
१५६, २६२. जी० ३१२७७, २८८, ३००, ३०७,
३०८ ३११, ३३२, ३३७, ३५६, ३७२, ३६६,
४५७, ५६७, ५६३, ५६५, ६०४
भक्तिपुष्प [भक्तिपूर्वक] रा० ६३, ६५
भद्र [भद्र] ओ० ४७, ६८, ७२. रा० २८२. जी०
३१४४८
भद्रग [भद्रक] जी० ३१५६८, ६२०, ६२५, ७६५, ८४१
भद्रपडिमा [भद्रप्रतिमा] ओ० २४
भद्रमोत्या [भद्रमुस्ता] जी० ११७३
भद्रय [भद्रक] जी० ३१७६५
भद्र्या [भद्रता] ओ० ७३, ६१, ११६
भद्रसालवण [भद्रसालवन] रा० १७३, २७६.
जी० ३१२८५, ४४५
भद्रा [भद्रक] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३४४८
भद्रा [भद्रा] जी० ३१६१५
भद्रासन [भद्रासन] ओ० १२, ६४. रा० २१, ४१
से ४४, ४८, ४९, १८१, १८३, २६१, ६५८ से
६६४. जी० ३२८८, २६३, ३३६ से ३४५,
३६८, ३७०, ५५८ से ५६०, ६३५
भ्रमंत [भ्रमत्] ओ० ४६. रा० १७४. जी०
३१११८, ११६, २८६
भ्रममाण [भ्राम्यत, भ्रमत्] ओ० ४६
भ्रमर [भ्रमर] ओ० ६, १६. रा० २५. जी०
३१२७५, २७८, ५६६
भ्रमरपतंगसार [भ्रमरपतङ्गसार] रा० २५. जी०
३१२७८

भ्रमुया [भ्रू] ओ० ३१५६७
भ्रमुह [भ्रू] ओ० १६. रा० २५४, जी० ३१४१५
भय [भय] ओ० १४, २५, २८, ४६. रा० ६७१,
६८६. जी० ३१२७, १२८
भयंत [भदन्ता] ओ० ७२, १६७
भयग [भृतक] जी० ३१६१०
भयणा [भयना] जी० ११३६; ३१५२
भयव [भयवत्] रा० १२१
भयसण्या [भयमंज्रा] जी० ११२०; ३१२८
भर [भर] रा० २२८. जी० ३१३८७, ७८४, ७८७
भरणी [भरणी] जी० ३१००७
भरत [भरत] जी० २१३२, ३६७२
भरह [भरत] ओ० ६८. रा० २७६, २८२. जी०
२१४, २८, ५५, ७०, ७२, ६६, ११५, १२२, १४७,
१४६; ३१२२६, ४४५, ४४७ ७६५
भरिय [भरित] ओ० ४६, ५७, ६४. रा० १७३,
६८१
√भव [भू]—भवइ ओ० २८. रा० २००.
जी० ३१५६—भवउ. ओ० २०. रा० ७१३.
—भवति. ओ० २०. रा० १२४. जी० ३१७७
—भवति. रा० १२६. जी० ३१७२—भवह.
रा० ७१३—भवहि. रा० ७५०—भविस्सद.
ओ० ५२. रा० २००—भविस्सति.
जी० ३१५६—भविस्सामि. रा० ७७५
—भवे. रा० २५. जी० ३१८४—भवेज्जासि.
रा० ७७४—भुवि. रा० २००. जी० ३१५६
भव [भव] ओ० ४६, १६५, ३, ७, ८
भवंत [भवत्] रा० १५
भवकलय [भवकलय] ओ० १४१, १६५, ६.
रा० ७६६
भवगहण [भवग्रहण] जी० ७१५, ६, १०, १२, १५
से १८; ६२ से ४, ४०, ५१, १७१, २३६, २३८,

१. 'भयंतारो' ति भदन्ताः कल्याणिनः भक्तारो वा
नैग्रन्थप्रवचनस्य सेवयितारः [वृ० पृ० १५२]
'भयंतारो' ति भक्तारः अनुष्ठानविशेषस्य
सेवयितारो भयन्तारो वा [वृ० पृ० २०३] ।

२४३, २४४, २४६, २७१, २७३, २७६ से २८२
 भवण [भवन] ओ० १, १४, ६६, १८१ रा० ६७१,
 ६७५, ७६६. जी० ३१२३२ से २३४, २४०,
 २४४, २४८, ५६४, ५६७, ६०४, ६४६ से ६४८,
 ६५१, ६७३, ६८२, ६८६, ६९२ से ६९८, ७५६
 भवणवद् [भवनपति] रा० ११, ५६. जी० २।६५
 भवणवति [भवनपति] जी० ३।६१७
 भवजवासि [भवनवाशिन्] ओ० ४८. जी० १.१३५;
 २।१५, १६, ३६, ३७, ७१, ७२, ६१, ६५, ६६, १४८,
 १४९; ३।२३० से २३२, १०४२
 भवणवासिणी [भवनवासिनी] जी० २।७१, ७२,
 १४८, १४९
 भवणावास [भवनावास] जी० ३।२३२
 भवत्य [भवस्य] ६।४४ से ४८, ५२, ५३
 भवत्यकेवलनाण [भवस्यकेवलज्ञान] रा० ७४५
 भवधारणज्ज [भवधारणीय] जी० १।६४, ६६,
 १३५, १३६; ३।६१, ६३, १०८७ से १०८६,
 १०६१, १०६२, ११२१ से ११२३
 भवपच्चइय [भवप्रत्ययिक] रा० ७४३
 भवसिद्धिय [भवसिद्धिक] रा० ६२. जी० ६।१०६
 से १११, ११२
 भविता [भूत्वा] ओ० २३. रा० ६८७
 भसोल [भसोल] रा० १०६, ११६, २८१.
 जी० ३।४४७
 भाइल्लग [भागिक] जी० ३।६१०
 भाउय [भ्रातृक] रा० ६७५
 भाग [भाग] रा० ७८७, ७८८. जी० ३।५७७,
 ६३२, ६३६, ८३८।१६, १०१० से १०१४
 भागि [भागिन्] रा० ८१५
 भाजण [भाजन्] जी० ३.५८७
 भाणितव्व [भणितव्य] जी० २।११२; ३।७४,
 १२०, १२१, १४४, २२७, ५७८, ६३१, ६५७, ६४७
 भाणियव्व [भणितव्य] रा० ८०, १६४, २०१,
 २०४ से २०६, ७४२. जी० १।५१, ७२, ६६,
 ११८, १२३, १२६, १३५; २।७६, ७८, ८०, ८१,

१०५, १०८, १११, ११८, १२३; ३।७५, ७७,
 १५६, १६२, २३१, २५०, ३५६, ३५८, ३५९,
 ३६१, ४१२, ४६३, ६७३, ६७६, ६८२, ७५६,
 ७६६, ७६६, ७७५, ८००, ८०१, ८१८, ८२८,
 ८३६, ८३६, १०४४, १०५०, ११२६, ११२७;
 ८।२; ९।२२६
 भामरी [भ्रामरी] रा० ७७
 भाय [भ्रातृ] जी० ३।६११
 भाय [भाग] रा० ७८८. जी० ३।५७७
 √भाय [भाज्] — भाएति. रा० २८१. जी० ३।४४७
 भायरक्खिया [भ्रातृरक्षिता] ओ० ६२
 भार [भार] रा० ७७४
 भारह [भारत] रा० ८ से १०, १३, १५, ५६, ६६८
 भारुडपक्खि [भारुडपक्षिन्] ओ० २७. रा० ८१३
 भाव [भाव] रा० ६३, ६५, १३३, ७७१, ८१५.
 जी० ३।३०३, ७२६
 भावओ [भावत्स] ओ० २८. जी० १।३३, ३४,
 ३६, ३६
 भावविउस्सग्ग [भवव्युत्सर्ग] ओ० ४४
 भावाभिग्गहचरय [भावाभिग्रहचरक] ओ० ३४
 भावियप्प [भावितात्मन्] ओ० १६६
 भावेमाण [भावयत्] ओ० २१ से २४, २६, ४५,
 ५२, ८२, १२०, १४०, १५७. रा० ८, ६, ६८६,
 ६८७, ६८६, ६६८, ७११, ७१३, ७५२, ७५३,
 ७८७, ७८६, ८१४, ८१७
 भावोमोदरिया [भावावमोदरिका] ओ० ३३
 √भास् [भाष्] — भासइ. ओ० ५२. रा० ६१
 — भातेति. जी० ३।२१०
 भास (य) [भाषक] जी० ६।६६
 भासंन [भाषमाण] ओ० ६४. जी० ३।५६१
 भासण [भाषक] जी० ३।५६, ५६, ६१
 भासमणपज्जत्ति [भाषामनःपर्याप्ति] रा० २७४,
 ७६७. जी० ३.४४०
 भासय [भाषक] जी० ६।५७
 भासरसि [भरमराशि] रा० १२४
 भासा [भाषा] ओ० ७१. रा० ६१, ८०६, ८१०

भासासमिय [भापासमित] ओ० २७, १५२, १६४.

रा० ८१३

भासुर [भासुर] ओ० ४७, ७२. रा० ६, १२

भिडव्व [भार्गव] ओ० ६६

भिग [भृङ्ग] ओ० १६. रा० २६. जी० ३:२७६

भिर्गणय [भृङ्गाङ्गक] जी० ३:५८७

भिगणिभा [भृङ्गनिभा] जी० ३:६८७

भिगा [भृङ्गा] जी० ३:६८७

भिगार [भृङ्गार] ओ० ६४, ६७. रा० ५०, १४८,
२५८, २७६, २८१, २८८, ७५३. जी० ३:४४५,
४५४, ५८७

भिगारक [भृङ्गारक] ओ० ६. जी० ३:२७५,
३२१, ३५५, ४१६

भिगि [भृङ्गि] जी० ३:५६५, ५६६

भिण्डमाल [भिण्डमाल, भिन्दपाल]

जी० ३:११०

भिण्डिमाल [भिण्डिमाल, भिन्दिपाल] ओ० ६४

भिण्डिमालग [भिण्डिमालग, भिन्दिपालाग]

जी० ३:८५

√भिद [भिद]—भिद. रा० ६७१—भिज्जइ.
रा० ७८४

भिभसारपुत्ता [भिभसारपुत्त] ओ० १५, १८, २०,
२१, ५३ से ५६, ६२ से ६४, ६६, ६७, ६६,
७१, ८०

भिक्षलाभिय [भिक्षालाभिक] ओ० ३४

भिक्षायरिया [भिक्षाचर्या] ओ० ३१, ३४

भिक्षुपण्डिमा [भिक्षुप्रतिमा] ओ० २४

भिक्षुय [भिक्षुक] रा० ७१८, ७८७, ७८८

भिगु [भृगु] जी० ३:६२३

भिच्चा [भित्त्वा] रा० ७५५

भित्ति [भित्ति] रा० १३०. जी० ३:३००

भित्तिगुलिया [भित्तिगुलिका] रा० १३०.

जी० ३:३००

भिन्नमुट्ठत्त [भिन्नमुट्ठत्त] जी० ३:१२६:१२, १०

भिन्निभसमाण [भाभास्थमान] रा० १७, १८, २०,
३२, १२६. जी० ३:२८८, ३००, ३७२

भिलुंग [दे० भिलुङ्ग] रा० ७०३

भिस [विस] रा० २६, १७४. जी० ३:११८, ११६,
२८२, २८६

भिसंत [भासमान] ओ० ५, ८, ६४. रा० ५१
जी० ३:२७४

भिसकंद [विसकन्द] जी० ३:६०१

भिसमाण [भासमाण] रा० १७, १८, २०, ३२, १२६.
जी० ३:२८८, ३००, ३७२

भिसिया [वृषिका] ओ० ११७

भीत [भीत] जी० ३:११६

भीम [भीम] ओ० ४६, ५७. जी० ३:८३

भुंजमाण [भुञ्जान] ओ० ६८. रा० ७.
जी० ३:३५०, ५६३, ८४२. ८४५, १०२४,
१०२५

√ भुकुंड [दे०]—भुकुंडेति. रा० २८५.
जी० ३:४५१

भुकुंडेत्ता [दे०] जी० ३:४५१

भुजंग [भुजङ्ग] जी० ३:५६७

भुज्जतर [भुयस्तर] ओ० ८६

भुज्जो [भुयस्] ओ० १५६. रा० ७५१

भुत्त [भुक्त] रा० ६८५, ७६५, ८०२, ८१५

भुयग [भुजग] ओ० २, ५१

भुयगपह [भुजगपति] ओ० ४६

भुयगपरिसण्य [भुजगपरिसर्प] जी० २:११३

भुयगपेच्छा [भुजगप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५

भुयगोसर [भुजगेश्वर] ओ० १६. जी० ३:५६६

भुयपरिसण्य [भुजगपरिसर्प] जी० १:६०४, ११२.
१२२, १२४; २:७, ६, २४, ५२, १२२; ३:१४३,
१४४, १६१, १६२, १६६

भुयमोयग [भुजगमोचक] ओ० १६. जी० ३:५६६

भुया [भुजा] ओ० १६, २१, ४७, ५४, ६३, ७२.

रा० ८, ६६, ७०. जी० ३:४५७, ५६६

भुया [भ्रूका] जी० ३:५६६

भुसागणि [वृषाग्नि] जी० ३:११८

भूइकम्मिय [भूतिकम्मिक] ओ० १५६

भूओवघाइय [भूतोपघातिक] ओ० ४०
 भूत [भूत] रा० १,१२, ३२,२८१. जी० ३३६८,
 ४४३,७८०,८४२,८४५,९४७,९४९,९५०
 भूतक्खय [भूतक्षय] जी० ३१६२६
 भूतभगह [भूतग्रह] जी० ३१६२८
 भूतप्रडिमा [भूतप्रतिमा] जी० ३४१८
 भूतमंडलपविभक्ति [भूतमण्डलप्रविभक्ति] रा० ९०
 भूतमह [भूतमह] जी० ३१६१५
 भूतवड्डेसा [भूतान्तर्गा] जी० ३१६२१
 भूता [भूता] जी० ३१६२१
 भूताणंद [भूतानन्द] जी० ३१२५०
 भूमि [भूमि] ओ० ५२. रा० ७६६
 भूमिगय [भूमिगत] रा० ७६५
 भूमिचवेडा [भूमिचवेटा] रा० २८१. जी० ३१४४७
 भूमिभाग [भूमिभाग] ओ० १६२. रा० २४, ३२,
 ३३, ३५, ६५,६६,१२४,१६४,१७१,१८६ से
 १८८, २०३ से २०६,२०८,२१३,२१६,२१७,
 २३७,२३८,२५१,२६१. जी० ३१२१८, २५७,
 २७७,३०९,३१०,३३६,३५६,३५९ से ३६१,
 ३६४,३६५,३६८ से ३७२,३७४,३९९,४००,
 ४१२,४२१,४२२,४२७,५८०,६२३,६३३,
 ६३४,६४५,६४६,६४८,६४९,६५६,६६२,
 ६६३,६७०,६७१,६७३,६९०,६९१,७३७,
 ७५५ से ७५८,७६२,७६५,७६८,७७०,८८३,
 ८८४,८८८ से ८९०,९०५,९०६,९१२,९१३,
 १००३,१०३८
 भूमिभाय [भूमिभाग] जी० ३१४२६
 भूमिया [भूमिका] रा० ६७५
 भूमिसेज्जा [भूमिशाया] ओ० १५४,१६५,१६६.
 रा० ८१६
 भूमी [भूमी] जी० ३१६३१
 भूय [भूय] ओ० २,४,६,२६,४९,५५,६२.
 रा० १३२,१७०,२३६,७०३. जी० ३१२७,
 २७३,३०२,३७२,४४७,९७५,११२८,११३०
 भूयपडिमा [भूयप्रतिमा] रा० २५७
 भूयमह [भूयमह] रा० ६८८

भूयवादिय [भूयवादिक] ओ० ४९
 भूयणंद [भूयानन्द] जी० ३१२४९,२५०
 भूसण [भूसण] ओ० २१,४७,५४,५७. रा० ६६,
 ७०. जी० ३१५६३
 भूसणघर [भूसणघर] रा० ८,७१४
 भूसिय [भूसिय] ओ० ६४. रा० ५३, ७५१
 भेत्ता [भित्वा] जी० ३१६६१
 भेद [भेद] ओ० २६. जी० ११११८,१२१,१२३,
 १२४,१२६,१३५; २१७६,७८,१०५,१०६;
 ३१३५,१४२,१४४,२३१,२७९,२८१,६३६
 भेय [भेय] ओ० १. रा० २८,६७५,७६३.
 जी० ११५८; २११५१; ३१२९१६,९५०
 भेयकर [भेदकर] ओ० ४०
 भेरव [भैरव] ओ० ४६
 भेरी [भेरी] ओ० ६७. रा० १३,७७, ६५७,७५५.
 जी० ३१७८, ४४६
 भेरुंड [भेरुण्ड] जी० ३१८७८
 भेरुयालवण [भेरुतालवण] जी० ३१५८१
 भेसज्ज [भैपज्य] ओ० १२०,१६२ रा० ६९८,
 ७५२,७८६
 भो [भोस्] ओ० ५५. रा० १३. जी० ३१४४४
 भोग [भोग] ओ० १९,२३,४३,४६,१४८ से १५०.
 रा० ६७२,७५१,७५३,७९१,८०९ से ८११.
 जी० ३१५६६, ११२४
 भोग [भोज] ओ० ५२. रा० ६८७,६८८,६९५
 भोगस्थिय [भोगस्थिक] ओ० ६८;
 भोगपुत्त [भोजपुत्र] ओ० ५२. रा० ६८७
 भोगभोग [भोगभोग] ओ० ६८. रा० ७.
 जी० ३१३५०,५६३,८४२,८४५,१०२४,१०२५
 भोगरय [भोगरजस्] ओ० १५०. रा० ८११
 भोच्चा [भुक्त्वा] रा० ६६७
 भोजण [भोजन] जी० ३१५६२
 भोत्तए [भोक्त्तुम्] ओ० १३४
 भोत्तूण [भुक्त्वा] ओ० १६५११८
 भोम [भूम] रा० १३०. जी० ३१३००
 भोम [भौम] रा० १६४. जी० ३१३३६ से ३३८,

३४५, ३५५, ३५६
 भोमिज्ज [भौमेय] रा० २७६, २८०
 भोमेज्ज [भौमेय] जी० ३१२५१, २५२
 भोय [भोग] ओ० १५. रा० ६८५, ७१०, ७७४
 √भोय [भोजय]—भोयावेज्जा. रा० ७७६
 भोयण [भोजन] ओ० १३५, १६५।१८.
 जी० ३।६०२
 भोयणमंडव [भोजनमण्डप] रा० ८०२

म

मइ [मति] ओ० ४६, ५७
 मइअण्णाणि [मत्यज्ञानिन्] जी० १।३०, ८७, ६६;
 ६।२०२, २०६, २०८
 मउ [मृदु] रा० ७६, १७३
 मउदमह [मुकुन्दमह] रा० ६८८
 मउड [मुकुट] ओ० २१, ४७, ४६ से ५१, ५४, ६३,
 ६५, ७२, १०८, १३१. रा० ८, २८५, ७१४.
 जी० ३।४५१, ५६३
 मउय [मृदुक] ओ० १६. रा० २८८. जी० १।५०;
 ३।२२, २८५, ३८७, ५६६, ५६७, ६७२, १०६८
 मउल [मुकुल] जी० ३।५६७
 मउलि [मुकुलिन्] जी० १।१०६, १०८
 मउलि [मौलि] ओ० ४७, ७२
 मउलिय [मुकुलित] ओ० २१, ५४. रा० ७१४
 मऊर [मथूर] जी० ३।५६७
 मंल [मङ्ग] ओ० १, २
 मंलपेच्छा [मङ्गप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.
 जी० ३।६१६
 मंगल [मङ्गल] ओ० २, १२, २०, ५२, ५३, ६३, ६८,
 ७०, १३६. रा० ६, १०, ४६, ५८, १५६, २४०,
 २७६, २६१, ६८३, ६८५, ६८७ से ६८६, ६६२,
 ७००, ७०४, ७१६, ७१६, ७२६, ७५१, ७५३,
 ७६५, ७७६, ७६४, ८०२, ८०५. जी० ३. ३३२,
 ४०२, ४४२
 मंगलग [मङ्गलक] रा० २१, १६६, १७७, २०२,
 २०४ से २०८, २१४, २२०, २२३, २२६, २३२,

२४१, २४८, २५०, २५६, २६१. जी० ३।२८६,
 ३१४, ३४७, ३५६, ३६७ से ३७१, ३०५ ३७६,
 ३८२, ३६१, ३६४, ४०३, ४११, ४२०, ४२४,
 ४३० ४३३, ४३६ ६३६, ६५१, ६७७, ७०८,
 ७५६, ८८८, ८६२, ८६४, ८६८, ९००, ९०६, ९१३
 मंगलय [मङ्गलक] ओ० ६४. जी० ३।३५५, ४५७
 मंगल्ल [मङ्गल्य] रा० ६८५, ६६२, ७००, ७१६,
 ७२६, ८०२
 मंचाइमंच [मञ्जातिमञ्च] ओ० ५५. रा० २८१
 मंचातिमंच [मञ्जातिमञ्च] जी० ३।४४७
 मंजरि [मञ्जरी] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.
 जी० ३।२६८, २७४
 मंजु [मञ्जु] ओ० ६६. रा० १३५. जी० ३।३०५,
 ५६८
 √मंड [मण्ड]—मंडावेज्जा. रा० ७७६
 मण्ड [मण्ड] जी० ३।८७२, ६६०
 मंडणधाई [मण्डनधात्री] रा० ८०४
 मंडल [मण्डल] ओ० ५०, ६४. रा० १४६. जी०
 ३।३२२, ८३८।१० से १२
 मंडलग [मण्डलक] रा० २६५. जी० ३।४६०
 मंडलपविभत्ति [मण्डलप्रविभक्ति] रा० ६०
 मंडलरोग [मण्डलरोग] जी० ३।६२८
 मंडलिय [मण्डलिक] जी० ३।१२६।१
 मण्डन्यावाय [मण्डनिकावात] जी० १।८१
 मंडव [मण्डप] जी० ३।५६४, ८६३
 मंडवग [मण्डपक] ओ० ६ से ८, १०. जी०
 ३।२७५, ५०६
 मंडवय [मण्डपक] जी० ३।५७६, ८६३
 मंडित [मण्डित] जी० ३।२८५, ३०२, ४४७
 मंडिय [मण्डित] ओ० २, ४७, ५५, ५६, रा०
 २८१. जी० ३।२६५, ३१३
 मंडियल [मण्डितक] रा० १३२
 मंडियग [मण्डितक] रा० ४०
 मंत [मन्त्र] ओ० २५. रा० ६७५, ६८६, ७६१
 मंति [मन्त्रिन्] ओ० १८. रा० ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४

मंथ [मन्थ] ओ० १७४
 मंद [मन्द] रा० ७६, १७३, ७५५, ७५६. जी०
 ३१२८५, ६०१, ८६६
 मंदगति [मन्दागति] जी० ३१६८६
 मंदर [मन्दर] जी० १४, २७. रा० १२४, २७६,
 ६७१, ६७६, ८१३. जी० ३०१७, ११६ से
 २२१, २२७, ३००, ४४५, ५६६, ५६८, ५६९,
 ५७३, ६६८, ७०१, ७३६, ७४०, ७४२, ७४५,
 ७५०, ७५४, ७६२, ७६५, ७६६, ७७५, ६३७,
 १००१, १०३६
 मंदरगिरि [मन्द-गिरि] रा० १७३. जी० ३१२=५
 मंदलेस [मन्दाशय] जी० ३१३३२६
 मंदलेस्स [मन्दाशय] जी० ३१८४५
 मंदाय [मन्द] रा० ४०, ११५, १३२, १७३, २८१.
 जी० ३१६५, २८५, ४६७
 मंदायवलेस्स [मन्दातपलेशय] जी० ३१८४५
 मंस [मांस] ओ० ६२, ६३. रा० ७०३
 मंसल [मांसल] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६७
 मंससुह [मांससुख] ओ० ६३
 मंसु [मंसु] ओ० १६. जी० ३४१५, ५६६
 मकरंडक [मकराण्डक] जी० ३१२७७
 मगदंतियागुम्म [दे०] जी० ३१५८०
 मगर [मकर] ओ० १३, ४६. रा० १७, १८, २०,
 ३२, ३७, १२६. जी० १-६६, ११८; ३१२८८,
 ३००, ३११, ३७२, ५६६, ५६७
 मगरंडग [मकराण्डक] रा० २४
 मगरासन [मकरासन] रा० १८१, १८२. जी०
 ३१२६३
 मगरिया [मकरिका] रा० ७७. जी० ३१५६३
 मगुंद [मुकुन्द] जी० ३१५८६
 मग [मार्ग] ओ० ४६, ६५, ७२
 मगण [मार्गण] ओ० ११७, ११६, १५६
 मगतो [पृष्ठतस्] ओ० ५५
 मगदय [मार्गदय] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८,
 २६२. जी० ३१४५७
 मघमघेत [प्रसरत्] ओ० २, ५५. रा० ६, ६२, ३२,

१३२, २३६, २८१, २६२. जी० ३१३०२, ३७२,
 ३६८, ४४७
 मघव [मघवन्] जी० ३११०६८
 मघा [मघा] जी० ३१४
 मच्चु [मृत्यु] ओ० ४६
 मच्छ [मत्स्य] ओ० १२, ४६, ६४. रा० २१, ४६,
 १७४, २६१. जी० १११००; ३१८८, ११८,
 ११९, २८६, २८६, ५६७, ६६५, ६६६, ६६८, ६६९
 मच्छंडक [गतस्याण्डक] जी० ३१२७७
 मच्छंडग [मत्स्याण्डक] रा० ८४
 मच्छंडापविभत्ति [मत्स्याण्डकप्रविभत्ति] रा० ६४
 मच्छंडामयरंडाजाराभारापविभत्ति [मत्स्याण्डकमक-
 राण्डकआरकमारकप्राविभत्ति] रा० ६४
 मच्छंडिया [मत्स्याण्डिका] जी० ३१६०१, ८६६
 मच्छंडी [मत्स्याण्डी] जी० ३१५६२
 मच्छग [मत्स्या] जी० ११६६
 मच्छियपत्त [मक्षिकापत्र] ओ० १६२
 मच्छी [मत्स्यी] जी० २१४
 मज्ज [मच्च] ओ० ६२, ६३. जी० ३१५६६
 √मज्ज [मस्ज्] — मज्जावेज्जा. रा० ७७६
 मज्जण [मज्जन] ओ० ६३
 मज्जणघर [मज्जणगृह] ओ० ६३
 मज्जणघरग [मज्जणगृहक] रा० १८२, १८३.
 जी० ३१२६४
 मज्जणधार्ई [मज्जनधार्त्री] रा० ८०४
 मज्जार [मार्जार] जी० ३१८४
 मज्जिय [मज्जित] ओ० ६३
 मज्ज [मच्च] ओ० १५, १६, ६३, ६८. रा० १२५,
 १२७, २४०, २४५, २८२, ६७२, ७६६.
 जी० ११४६; ३१५२, ५७, ८०, २६१, ३५२,
 ५६६, ६३२, ६६१, ६८६, ७२३, ७२६, ७३६, ८३६,
 ८८२
 मज्झमज्झ [मध्यमच्च] ओ० २०, ५२, ६७ से ७०.
 रा० १०, १२, ५६, २७६, ६८३, ६८५, ६८७,
 ६६२, ७००, ७०६, ७०८, ७१०, ७१६, ७२६.
 जी० ३१४४५, ५५७

मज्झिमय [मध्यगत] रा० ७३२
 मज्झिच्छिण्णक [मध्यच्छिन्नक] ओ० ६०
 मज्झिम [मध्यम] ओ० १६५, ६. रा० ४३, ६६१.
 जी० ३।७७, २३६, ६५८, ६८१, १०५५
 मज्झिमरोविज्ज [मध्यमश्रवण] जी० २।६६
 मज्झिमरोवेज्जा [मध्यमश्रवण] जी० ३।१०५६,
 ११११
 मज्झिमिय [मध्यमिक] जी० ३।२३५ से २३६,
 २४१ से २४३, २४६, २४७, २४९, २५०, २५४
 से २५६, २५८, ३४२, ५६०, १०४० से १०४२,
 १०४४, १०४६, १०४७, १०४९ से १०५३, १०५५
 मज्झिय [मध्यक] जी० ३।५६७
 मज्झिल्ल [मध्यम] जी० ३।७२५, ७२८
 मट्टिया [मृत्तिका] ओ० ६८. रा० ६, १२, २७६ से
 २८१ जी० ३।४४५, ४४६, ४४८
 मट्टियापाय [मृत्तिकापात्र] ओ० १०५, १२८
 मट्ट [मृष्ट] ओ० १२, १६, ४७, ७२, १६४. रा० २१,
 २३, ३२, ३४, ३६, ५२, ५६, १२४, १४५, १५७,
 २३१, २४७. जी० ३।२६१, २६६, २६९, ३६३,
 ४०१, ५६६, ५६७.
 मड [मृत] जी० ३।८४, ६५
 मडंभ [मडंभ] ओ० ६८, ८६ से ९३, ९५, ९६, १५५,
 १५८ से १६१, १६३, १६८. रा० ६६७
 महुय [दे० महुक] रा० ७७
 मण [मनस्] ओ० २४, ३७, ४०, ५७, ६६, ७०
 रा० ३०, ४०, १३२, १३५, १७३, २२८, २३६,
 ७६५, ७७८, ८१५. जी० ३।२६५, २८३, २८५,
 ३०२, ३०५, ३८७, ३९८, ६७२
 मणगुत्त [मनोगुप्त] ओ० २७, १५२, १६४.
 रा० ८१३
 मणगुलिया [मनोगुलिका] जी० ३।४१२, ४१६, ४४५
 मणजोग [मनोयोग] ओ० ३७, १७५, १७७, १७८,
 १८२
 मणजोगि [मनोयोगिन्] जी० १।३१, ८७, १३३;
 ३।१०५, १५३, ११०६; ६।११३ ११४, ११७,
 १२०

मणपज्जवणाण [मनःपर्यवज्ञान] ओ० ४०.
 रा० ७३६, ७४४, ७४६
 मणपज्जवणाणविणय [मनःपर्यवज्ञानविनय]
 ओ० ४०
 मणपज्जवणाणि [मनःपर्यवज्ञानिन्] ओ० २४.
 जी० १।१३३; ६।१५६, १६२, १६५, १६६,
 १६७, २०२, २०४, २०८
 मणवत्तिय [मनोवत्तिक] ओ० २४
 मणविणय [मनोविनय] ओ० ४०
 मणसमिय [मनःसमित] ओ० १६४
 मणहर [मनोहर] ओ० ७, ८, १०. रा० १७, १८,
 २०, ३० ४०, ७८, १३२, १३५, १७३, २३६.
 जी० ३।२७६, २८३, २८५, ३०२, ३०५
 मणाभिराम [मनोभिराम] ओ० ६८
 मणाम [दे०] ओ० ६८, ११७. रा० ७५० से
 ७५३, ७७४, ७६६. जी० १।१३५; ३।१०६०,
 १०६६
 मणामतराय [दे०] रा० २५ से ३१, ४५.
 जी० ३।२७८ से २८४, ६०१, ६०२, ८६०,
 ८६६, ८७२, ८७८, ९६०
 मणि [मणि] ओ० २३, ४७, ४९, ५२, ६३, ६४.
 रा० १७, १८, २४ से ३३, ३७, ४०, ४५, ५१, ६५,
 ६६, ७०, १३०, १३२, १३७, १५४, १६०, १७१,
 १७३, १७४, २०३, २२८, २३७, २५६, २६२,
 ६८७ से ६८९, ६९५, ८०४. जी० ३।२६५,
 २७७ से २८६, ३००, ३०२, ३०७, ३०९ से
 ३११, ३३३, ३३६, ३६०, ३६४, ३७२, ३७६,
 ३८७, ३९६, ४१२, ४१७, ४२१, ४५७, ५७८,
 ५८७, ५८९, ५९०, ५९३, ६०८, ६४५, ६४८,
 ६५६, ६७०, ६७२, ६९०, ७५७
 मणि (पाय) [मणिपात्र] ओ० १०५, १२८
 मणि (बंधन) [मणिबन्धन] ओ० १०६, १२६
 मणिजाल [मणिजाल] रा० १६१. जी० ३।२६५,
 ५६३

मणिपेठिया [मणिपीठिका] रा० ३६, ३७, ६६, ६७, २१८, २१९, २२१, २२२, २२४ से २२७, २३०, २३१, २३८, २३९, २४२ से २४७, २५२, २५३, २६१, २६५, २६७, २६९, ३००, ३०५ से ३११, ३१७ से ३२१, ३३८, ३४४ से ३४७, ३५२ से ३५४, ४१४, ४७४, ५३४, ५६५.

जी० ३३१०, ३१११, ३६५, ३६६, ३७७, ३७८, ३८०, ३८१, ३८३ से ३८६, ३९२, ३९३, ४००, ४०१, ४०४ से ४०६, ४१३, ४१४, ४२२, ४२३, ४२७, ४२८, ४५७, ४६५, ४७० से ४७४, ४८२ से ४८६, ५०३, ५०६ से ५१२, ५१६ से ५१९, ५२६, ५३३, ५४०, ५४८, ५५७, ६२४, ६४६, ६५०, ६६३, ६७१ से ६७५, ७५८, ७५९, ७६५, ७६८, ७७०, ८६१ से ८००, ८०६, ८०७

मणिमय [मणिमय] रा० १६, २०, ३६, ३७, १३०, १३५, १३८, १५५, १६०, २१८, २२१, २२४, २२६, २२८, २३०, २३८, २४२, २४४ से २४६, २६१, २७०, २७६, २८०. जी० ३१२६५, २८७, २८८, ३००, ३०५, ३११, ३१३, ३२२, ३५३, ३६५, ३७७, ३८०, ३८३, ३८५, ३९२, ४००, ४०४, ४०६ से ४०८, ४१३, ४२२, ४२७, ४३५, ४४३, ४४५, ६४६, ६४९, ६५४, ६७१, ७५८, ८६१, ८६३, ८६५, ८६७, ८६९, ८०६

मणियंग [मण्यङ्ग] जी० ३१५६३

मणिलक्षण [मणिलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

मणिवट्टक [मणिवृत्तक] जी० ३:५८७

मणिसिलागा [मणिशलाका] जी० ३:५८६, ८६०

मणुई [मनुजी] जी० ३:५६७

मणुण [मनोज्ञ] ओ० ४३, ६८, ११७. रा० ३०, ४०, ७८, १३२, १३५, १७३, २३६, ७५० से ७५३, ७७४, ७६६. जी० १:१३५; ३:२६५, २८३, २८५, ३०२, ३०५, १०६०, १०६६, १११७

मणुणतराय [मनोज्ञतरक] रा० २५ से ३१, ४५.

जी० ३:२७८ हो २८४, ६०१

मणुय [मनुज] ओ० ४४, ६८, ६०, ६१, ६३, १६१,

१६३, १६८. रा० २२२, ८१५. जी० १:८२; ३:८८, १२६, ४४८, ५५६, ५६६, ५६८ से ६००, ६०३, ६०५ से ६२१, ६२५, ६२७ से ६३१, ७६५, ८४१, ११३७; ६:२५४

मणुयरायवसभ [मनुजराजवृषभ] ओ० ६५

मणुयलोग [मनुजलोक] जी० ३:८३८, ४ से ६

मणुयलीय [मनुजलोक] जी० ३:८३८, ३

मणुस्त [मनुष्य] ओ० ७३, १७०. रा० २७, ७३२, ७३७, ७७१. जी० १:५१, ५४, ५५, ५६, ६१, ६५, ७६, ८७, ६१, ६६, १०१, ११६, १२३, १२६, १२९, १३४, १३६; २:२, ११, १४, २६ से ३०, ३२ से ३४, ५४, ५७ से ६१, ६५, ६६, ६८, ७०, ७२, ७५, ७७, ८०, ८४, ८५, ८८, ६६, १०६, ११४, ११५, १२३, १२४, १२२ से १३४, १३७, १३८, १४३, १४५, १४७, १४९; ३:१, ८४, ११८, २१२ से २१५, २१७ से २२५, २२७ से २२९, २८०, ५७६, ८३६, ८३८, १३३, ८४०, ११३२, ११३५, ११३८; ६:१४, ६, १२; ७:१, ६, १२, १७, १८, २०, २३; ६:१५६, १५८, २०६, २१८, २२०, २३१

मणुस्तखेत्त [मनुष्यक्षेत्र] जी० १:१२७; ३:२१४, ८३५ से ८३७, ८३८, २१

मणुस्तजोणिय [मनुष्ययोनिक] जी० २:१६६

मणुस्तत्त [मनुष्यत्व] ओ० ७३

मणुस्तिसद [मनुष्येन्द्र] ओ० १४. रा० ६७१

मणुस्ती [मानुषी] जी० ३:५७६; ६:१:४, ६, १२; ६:२०६, २१८, २२०

मणुस [मनुष्य] ओ० १. जी० ३:६६३, ६६७; ६:२१२, २२१, २२५, २२६, २३२, २३७, २३८, २४५, २४६, २५०, २५१, २५५, २६७, २७२, २७३, २८१, २८२, २८६, २८७, २९०, २९३

मणुसपरिसा [मनुष्यपरिषद्] ओ० ७८

मणुसी [मानुषी] जी० ६:२१२

मणोगम [मनोगम] ओ० ५१

मणोगय [मनोगत] रा० ६, २७५, २७६, ६८८,

७३२, ७३७, ७३८, ७४६, ७६८, ७७७, ७९१,
७९३. जी० ३४४१, ४४२

मणोगुलिया [मनोगुलिका] रा० १५३, २३५,
२५८, २७९. जी० ३३०६, ३५५, ३९७, ६०२

मणोज्जगुम्भ [मनोज्जगुम्भ] जी० ३५८०

मणोणुकूल [मनोणुकूल] जी० ३५९४

मणोमाणसिय [मनोमानसिक] रा० ८१५

मणोरम [मनोरम] जी० ३, ६३४

मणोरमा [मनोरमा] जी० ३:६२०

मणोरह [मनोरथ] ओ० ६९

मणोसिलक [मनःशिलक] जी० ७४५

मणोसिलग [मनःशिलक] जी० ७४५

मणोसिलय [मनःशिलक] जी० ७३४, ७४३

मणोसिला [मनःशिला] रा० १६१, २५८, २७६.
जी० ३:३३४, ४१६, ७४७

मणोसिलापुढवी [मनःशिलापुढवी] जी० ३:१८५.
१८६

मणोहर [मनोहर] रा० ७६, १७३. जी० ३:२६५,
२८५

मति [मति] जी० ३:११८, ११९

मतिअण्णाणि [मत्यज्ञानिन्] जी० ३:१०७, ११०७,
६:१६७, २०२

मत्त [अमत्त] जी० ३:११२८, ११३०

मत्त [मत्त] जी० १, ६, २३, ५७, ६८. रा० १४८,
२८८. जी० ३:११८, ११९, २७५, ३२१, ४५४

मत्तंगय [मत्तङ्गक] जी० ३:५८६

मत्तगयविलंबिय [मत्तज्जविलम्बित] रा० ६१

मत्तगयविलसिय [मत्तज्जविलसित] रा० ६१

मत्तहयविलंबिय [मत्तहयविलम्बित] रा० ६१

मत्तहयविलसित [मत्तहयविलसित] रा० ६१

मत्थगसूल [मत्तकसूल] जी० ३:६२८

मत्थय [मत्तक] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२,
११७. रा० ८, १०, १२, १४, १८, ४६, ७२, ७४,
११८, २७६, २७९, २८२, २८२, ६५५, ६८१,
६८३, ६८६, ७०७, ७०८, ७१०, ७१३, ७१४,

७२३, ७७४, ७९६. जी० ३:४४२, ४४५, ४४८,
४५७, ५५५

मद [मद] जी० ३:८६०

मदण [मद्वेन] ओ० १६१, १६३

मद्वय [मद्वेक] जी० ३:५८६

मद्वल [मद्वल] रा० ७७

मद्वव [मद्वेव] ओ० २५, ४३. रा० ६८६, ८१४.
जी० ३:५९८, ७६५, ८४१

मधु [मधु] जी० ३:८८०

मधुर [मधुर] जी० ३:२८५

ममत्तभाव [ममत्त्वभाव] जी० ३:६०८

मम्म [ममन्] रा० ७६३

मय [मृत] रा० ७६२. जी० ३:८४

मयणसाला [वे०] ओ० ६. जी० ३:२७५

मयणज्ज [मद्वेव] ओ० ६३. जी० ३:६०२,
८६०, ८६३, ८७२, ८७८

मयपइथा [मृतपठिका] ओ० ६२

मयर [मकर] ओ० ४८

मयरंडापविभत्ति [मकरण्डकपविभक्ति] रा० ६४

√मर [म्]—मरन्ति. जी० १:५३

मरुगय [मरकत] ओ० १३

मरण [मरण] ओ० २५, ४६, ७४, १७२ १६५:८,
१२. रा० ६८६

मरीइ [मरीचि] जी० ३:११२२

मरीइया [मरीचिका] रा० २१, २३, २४, ३२, ३४,
३६, १२४ १४५

मरीचिया [मरीचिका] ओ० १६४

मरीचिकदय [मरीचिकवच] रा० ३२

मरुंडो [मरुंडो] जी० ७०

मरुपखंडोलम [मरुपखान्दोलक] ओ० ६०

मरुपडियण [मरुपतितक] ओ० ६०

मरुया [मरुयक, मरुत्तक] रा० ३०. जी० ३:२८३

मल [मल] ओ० ८६, ६२. जी० ३:५९८

√मल [मृद्]—मलज्जइ. रा० ७८५

१. मुरंडी (रा० ८०४) ।

मलय [मलय] ओ० १४. रा० १५६, १७३, २७६, ३८५, ६७१, ६७६. जी० ३१२८५, ३३२, ४४५, ४५१

मलिय [मदित] ओ० १४. रा० ६७१

मल्ल [माल्य] ओ० ४७, ५१, ६७, ७२, ६२, १०६, १३२, १४७, १६१, १६३. रा० १३, १३३, १५६, १५७, २५८, २७६ से २८१, २८५, २८६, २६१, ३५१, ५६४, ६५७, ७००, ७१४, ७१६, ७६४, ८०२, ८०८. जी० ३१३०३, ३२६, ४१६, ४४५, ४४६, ४५१, ४५७, ५१६, ५४७, ५६१

मल्ल [मल्ल] ओ० १२

मल्लइ [मल्लवि] ओ० ५२ रा० ६८७, ६८८

मल्लहपुत्त [मल्लविपुत्र] रा० ६८७, ६८८

मल्लग [दे० मल्लक] जी० ३१५८७

मल्लजुद्ध [मल्लुद्ध] ओ० ६३

मल्लदाम [माल्यदामन्] ओ० २, ५५, ६३ से ६५. रा० ३२, ५१, १३२, २३५, २५५, २६४, २६६३००, ३०५, ३१२, ३५५, ६८३, ६६५. जी० ३१२८२, ३०२, ३७२, ३६७, ४१६, ४४७, ४५२, ४५७, ४५६, ४६१, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०

मल्लपेच्छा [मल्लप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५. जी० ३१६१६

मल्लिया [मल्लिका] रा० ३०. जी० ३१२८३

मल्लियागुम्म [मल्लिकागुल्लम] जी० ३५८०

मल्लियामंडवग [मल्लिकामण्डपक] रा० १८४. जी० ३१२६६

मल्लियामंडवय [मल्लिकामण्डपक] रा० १८५

मसग [मसक] ओ० ८६, ११७. रा० ७६६. जी० ३१६२४

मसार [मसार] रा० १३

मसारमल्ल [मसारमल्ल] रा० १०, १२, १८, ६५. १६५, २७६. जी० ३१७

मसिहार [मसिहार] ओ० ६६

मसी [मसी, मपी] रा० २५, २७०. जी० ३१२७८, ४३५, ६०७

मसीगुलिया [मसीगुलिका] रा० २५. जी० ३१२०८

मसूर [मसूर] जी० १११८

मसूरग [मसूरक] रा० ३७. जी० ३१३११

मह [मह]—महेइ. रा० ७६५

मह [मह] जी० ३१६३१२

मह [महत्] ओ० ३, ७, ८, १०, १४, ४६, ५२, ६७ से ६९. रा० ३, ४, १२, १३, १५, ३२, ३५ से ३६, ५३, १२३, १४८, १८८, २०४, २३८, २४२ से २४६, २५१ से २५३, २६० से २६२, २६५, २६७, २६९, २७०, २७२, २७३, २८८, ६८८, ७६०, ७६१, ७७४. जी० ३१११०, ११८, ११९, २७३, २७६, २६८, ३३८, ३६१, ३६४ से ३६६, ४००, ४०१, ४०४ से ४०८, ४१०, ४१२ से ४१४, ४२१ से ४२३, ४२५ से ४२८, ४३१, ४३४, ४३५, ४३७, ४३८, ४४६ से ४४९, ४५४, ६४२, ६४६, ६५०, ६७१ से ६७५, ६८२, ६८३, ६८५, ६८६, ६९२ से ६९८, ७३७, ७५६, ७५८

महइ [महती] रा० ७३२. जी० ३१७७, २६२, ७२३

महंत [महत्] ओ० १४, ४६. रा० ६७१, ६७६. जी० ३११११, १२४, १२५

महंती [महती] रा० ७७

महगह [महागह] जी० ३१७०३, ७२२, ८०६, ८२०, ८३०, ८३४, ८३७, ८३८, १३, १०००

महग्य [महार्घ] ओ० २०, ५३. रा० २७८, २७९, ६८०, ६८१, ६८३ से ६८५, ६९२, ६९६, ७००, ७०२, ७०८, ७०९, ७१६, ७२६, ८०२. जी० ३१४४४, ४४५

महह्व [महार्च, महार्च्य] रा० ६६३, ६६४, ७१७, ७३२, ७६६, ७७६

महज्जुइतराय [महावृत्तितरक] रा० ७७२

महज्जुइय [महावृत्तिक] ओ० ४७, ७२, १७०. रा० १८६, ७७२. जी० ३१११६

महज्जूईय [महावृत्तिक] रा० ६६६

महज्जुतीय [महायुतिक] जी० ३।४६, ३५०,
७२१
महण [मथन] जी० ३।५६२
महता [महत्] जी० ३।३०१, ३०२, २२१ से
३२३
महति [महती] ओ० ७।१, ७८. रा० ५२, ५६, ६१,
६६३, ६६४, ७१७, ७७६, ७८७. जी० ३।१२,
११७, ११३०
महती [महती] जी० ३।५८८
महत्तर [महत्तर] ओ० ७०
महत्तरगत्त [महत्तरकत्त] ओ० ६८. रा० २८२.
जी० ३।३५०, ५६३, ६३७
महत्थ [महार्थ] रा० २७८, २७९, ६८०, ६८१,
६८३, ६८४, ६९६, ७००, ७०२, ७०८, ७०९.
जी० ३।४४४, ४४५
महद्वण [महाधन] ओ० १०५, १०६, १२८, १२९
महप्यभ [महाप्रभ] जी० ३।८८५
महफल [महाफल] ओ० ५२. रा० ६८७
महबल [महाबल] ओ० ४७, ७१, ७२. १७०.
रा० ६१, ६६६. जी० ३।५६५
महभूय [महाभूत] रा० ७५१
महयर [महत्तर] रा० ८०४
महया [महत्] रा० ७, १३१, १३२, १४७ से १५१,
१६७, २८० से २८३, ६१७, ६७१, ६७६, ६८३,
६८७ से ६८९, ६९२, ७००, ७१२, ७१६, ७३२,
७३७, ७५५, ८०३, ८०५. जी० ३।३२४, ३५०,
४४७, ५६३, ८४२, ८४५, १०२५
महरिह [महार्ह] ओ० ६३. रा० ६६, ७०, २७८,
२७९, ६८०, ६८१, ६८३, ६८४, ६९६, ७००,
७०२, ७०८, ७०९. जी० ३।४४४, ४४५,
५८६
महल्ल [महत्] ओ० ४६
महल्लिया [महती] ओ० २४
महासावतर [महासावतर] जी० ३।१२६
महाउत्सासतराय [महाच्छ्वासतरक]
रा० ७७२

महाकांदिय [महाकन्दित] ओ० ४९
महाकम्मतर [महाकर्मतर] जी० ३।१२६
महाकम्मतराय [महाकर्मतरक] रा० ७७२
महाकाय [महाकाय] ओ० ४६
महाकाल [महाकाल] जी० ३।१२, ११७, २५२,
७२४
महाकिरियतर [महाक्रियतर] जी० ३।१२६
महाकिरियतराय [महाक्रियतरक] रा० ७७२
महागुम्मिय [महागुम्मिक] जी० ३।१७१
महाघोस [महाघोष] जी० ३।२५०
महाजस [महायज्ञन्] ओ० १७०
महाजाइगुम्म [महाजातिगुम्म] जी० ३।५८०
महानुद्ध [महानुद्ध] जी० ३।६२७
महान्ही [महानदी] ओ० ११७. रा० २७६.
जी० ३।४४५, ६३६,
महाणगर [महानगर] जी० २।१४०
महाणदी [महानदी] रा० २७६. जी० ३।३००,
५६८, ६३२, ६६८, ७४६, ८००, ८१४, ९३७
महाणरग [महानरक] जी० ३।१२, ११७
महाणिरय [महानरक] जी० ३।७७
महाणील [महानील] ओ० ४७
महानुभाग [महानुभाग] ओ० ४७, ७२, १७०.
रा० १८६, ६६६. जी० ३।८६, ९८८ से ९९७,
१११६
महानुभाव [महानुभाव] जी० ३।३५०, ७२१
महातराय [महत्तरक] रा० ७७२
महातव [महातपस्] ओ० ८२
महापायइरुक्ख [महापातकीरुक्ख] जी० ३।८०८
महान्ही [महानदी] ओ० ११५, ११७.
रा० २७६
महानीसासतराय [महानिःसासतरक] रा० ७७२
महानीहारतराय [महानीहारतरक] रा० ७७२
महापउम [महापत्र] रा० २७६
महापउमइह [महापत्रइह] जी० ३।४४५
महापउमइरुक्ख [महापत्ररुक्ख] जी० ३।८२६

महापट्टण [महापत्तन] ओ० ४६
 महापरिभ्रमहया [महापरिभ्रमता] ओ० ७३
 महापह [महापथ] ओ० ५२, ५५. रा० ६५४,
 ६५५, ६५७, ७१२. जी० ३१५४
 महापाताल [महापाताल] जी० ३१७२३, ७२६
 महापायाल [महापाताल] जी० ३१७२३ से ७२५,
 ७२६
 महापुंडरीय [महापुण्डरीक] ओ० १२.
 जी० ३११२८, ११६
 महापुंडरीयद्वह [महापुण्डरीकद्वह] जी० ३१४४५
 महापुरिसनिपडण [महापुरुषनिपतन]
 जी० ३११७, ६२७
 महापौंडरीय [महापौण्डरीक] ओ० १५०.
 रा० २३, १६७, २७६, २८८, ८११.
 जी० ३१२५६, २६१
 महाबल [महाबल] रा० १८६. जी० ३१८६,
 ३५०, ७२१, १११६
 महाभद्रपडिमा [महाभद्रपतिमा] ओ० २४
 महाभरण [महाभरण] रा० ६६, ७०
 महमइ [महामति] रा० ७६५, ७३६, ७७०
 महमंति [महामन्त्रिन्] ओ० १८. रा० ७५४,
 ७५६, ७६२, ७६४
 महामहतराय [महामहतरक] रा० ७७२
 महामहिम [महामहिमन्] जी० ३१६१५, ६१७
 महामुह [महामुख] रा० १४८, २८८.
 जी० ३१३२१, ४५४
 महामेह [महामेघ] ओ० ४, ६३. रा० १७०, ७०३.
 जी० ३१२७३
 महायस [महायशस्] ओ० ४७, ७२. रा० १८६,
 ६६६. जी० ३१८६, ३५०, ७२१, १११६
 महारंभ [महारम्भ] जी० ३१२२६
 महारंभया [महारम्भता] ओ० ७३
 महारख [महारख] ओ० ४६
 महारुक्ख [महारुक्ख] जी० ३११७१
 महारोख्य [महारोख] जी० ३११२, ११७
 महासत्त [महत्] रा० ५६०

महालय [महत्] ओ० २४, ७१, ७८. रा० ५२,
 ६१, ६६३, ६६४, ७६६, ७७२, ७७६, ७८७.
 जी० ३११२, ७७, ११७, ७२३, ११३०
 महालयत्त [महत्त्व] जी० ३१२७
 महालिज्जर [महालिञ्जर] जी० ३१७२३
 महालिया [महती] रा० ७६६, ७७२
 महावत्त [महावर्त] ओ० ४६
 महावाय [महावात] रा० १२३
 महाविजय [महाविजय] जी० ३१६०१
 महावित्त [महावृत्] रा० २६२. जी० ३१४५७
 महाविदेह [महाविदेह] ओ० १४१. रा० ७६६.
 जी० २११४; ३१२२६
 महाविमाण [महाविमान] ओ० १६७, १६२.
 रा० १२६
 महावीर [महावीर] ओ० १६ से २५, २७, ४५, ४७
 से ५३, ५५, ६२, ६६ से ७१, ७८ से ८३, ११७.
 रा० ८ से १३, १५, ५६, ५८ से ६५, ६८, ७३,
 ७४, ७६, ८१, ८३, ११३, ११८, १२०, १२१, १
 ६६८, ८१७
 महावेयणतर [महावेदनतर] जी० ३१२६
 महासंगाम [महासंग्राम] जी० ३१६२७
 महासत्यनिपडण [महासत्त्वनिपतन] जी० ३१६२७
 महासन्नाह [महासन्नाह] जी० ३१६२७
 महासमुद्द [महामुद्र] ओ० ५२. रा० ६८७.
 जी० ३१८४२, ८४५
 महासवतराय [महासवतरक] रा० ७७२
 महासुक्क [महासुक] ओ० ५१, १६२. जी० २१६६,
 १४८, १४६; ३१०३८, १०५१, १०६१, १०६६,
 १०६८, १०८६, १०८८
 महासोक्ख [महासोख्य] ओ० ४७, ७२, १७०.
 रा० १८६, ६६६
 महाहारतराय [महाहारतरक] रा० ७७२
 महाहिमवंत [महाहिमवत्] रा० २७६.
 जी० ३१२८५, ४४५, ७६५
 महिद [महिन्द्र] ओ० १४. रा० ६७१, ६७६
 महिदकुम्भ [महिन्द्रकुम्भ] रा० १३१, १४७.

जी० ३३०१
महिदञ्जय [महिदञ्जय] रा० ५२, ५६, २३१ से
 २३३, २३६, २४७ से २४६, ३११, ३१४, ३४६,
 ३५४. जी० ३३२३ से ३६५, ४०१, ४०६,
 ४१०, ४१२, ४७६, ४७६, ५१४, ५१६, ६००, ६०१
महिच्छ [महिच्छ] जी० ४३
महिद्विय [महिद्विक] जी० ४० से ५१, ७२, १७०.
 रा० १८६ जी० ३२२३, २५७, ८५८, ७६५,
 ८०८, ८२६, ८५७, ८६०, ८६३, ८६६, ८६६, ८७३,
 ८७५, ८७८, ८२५, १०२१
महिद्वियतराय [महिद्विकतराय] रा० ७७२
महिद्वीय [महिद्वीय] रा० ६६६. जी० ३१८६,
 २५६, ६३७, ६३४, ७००, ७२१, ७२४, ७३८,
 ७४१, ७४३, ७४६, ७६०, ७६३, ७६५, ८१६,
 ८५४, ८५५, ८२३, ८६८ से ८६७, १०२१,
 १११६
महिम [महिमन्] जी० ३६१६
महिय [महियत] रा० ३८, १६०, २२२, २५६.
 जी० ३३१२, ३३३, ३८१, ८६४
महिय [महियत] जी० २, ५५. रा० ३२, २८१.
 जी० ३३७२, ४४७
महिया [महिका] जी० १६५; ३६२६
महिवइवह [महोपतिपथ] जी० १
महिस [महिप] जी० १, १४, १६, ५१, १०६, १२४,
 १४१. रा० २७, ६७१, ७७४, ७६६. जी० ३१८४,
 २८०, ५६६, ६१६, १०३८
महिसी [महिपी] जी० ३६१६
महु [महु] जी० ६२, ६३. जी० ३५८६, ५६२
महुयर [महुकर] जी० ५७
महुयरी [महुकरी] जी० ६. जी० ३२७५
महुयासव [महनाश्रव] जी० २४
महुर [महु] जी० ६, ७१. रा० १३, १४, १७, १८,
 २०, ६१, ७६, १७२. जी० १५, ५०; ३२२२,
 ११८, ११६, २७५, २८६, ५६७, ६३६, ८५७, ८६३
महेला [महेला] जी० ३५६७

महेसकष [महेशाख्य] जी० ३६६, ३५०, ७२१,
 १११६
महोरग [महोरग] जी० १२०, १६२. रा० १४१,
 १७३, १६२, ६६८, ७५२, ७७१, ७८६.
 जी० ११०५, १२१; ३२६६, २८५, ३१८, ६२५
महोरगकंठ [महोरगकण्ठ] रा० १५५, २५८.
 जी० ३३२८
महोरगकंठग [महोरगकण्ठक] जी० ३४१६
महोरगी [महोरगी] जी० २१८
मा [मा] जी० ११७. रा० ६६५
माइय [माइ] जी० ५, ८, १०. रा० १४५. जी०
 ३२६८ २७४
माइय [मात्रिक] जी० १६. जी० ३५६६, ५६७
माइरक्खिया [मातुरक्खिता] जी० ६२
माइल्लिया [मायिता] जी० ७३
माउ [मातृ] जी० १४. रा० ६७१
मागध [मागध] जी० ३४४५
मागह [मागध] जी० २, १११ से ११३. रा० २७६
मागहपेच्छा [मागधपेक्षा] जी० १०२, १२५. जी०
 ३६१६
मागहय [मागधक] जी० १३७, १३८
मागहिया [मागधिका] जी० १४६. रा० ८०६
माघवती [माघवती] जी० २४
माडंबिय [माडम्बिक] जी० १८, ५२, ६३. रा०
 ६८७, ६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४.
 जी० ३६०६
माण [मान] जी० १५, २८, ३७, ४४, ७१, ६१, ११७,
 ११६, १४३, १६१, १६३, १६८. रा० ६७१ से
 ६७३, ७४८ से ७५०, ७७३, ७६६, ८०१, ८१६.
 जी० ३१२८, ४३८, ५६८, ७६५, ८४१
माणकसाइ [मानकपायिन्] जी० ६, १४८, १४६,
 १५२, १५५
माणकसाय [मानकपाय] जी० ११६
माणणिज्ज [माननीय] रा० २४०, २७६. जी०
 ३४०२, ४४२

माणवक [मानवक] जी० ३१४०२, ४०४, ५१६
 मानवग [मानवक] रा० २४४, ३५१. जी०
 ३१४०३, ४०६, १०२५
 मानवय [मानवक] रा० २३६, २७६, ३५१. जी०
 ३१४०१, ४४२, ५१६
 माणविवेग [मानविवेक] ओ० ७१
 माणस [मानस] ओ० ७४. रा० १५
 माणसिय [मानसिक] ओ० ६६
 माणुस [मानुष] ओ० १६५, १३. रा० ७५१,
 ७५३. जी० ३१८३८२
 माणुसतग [मानुसतग] जी० ३८३८२, ३२
 माणुसभाव [मानुसभाव] ओ० ७४३
 माणुसुत्तर [मानुसुत्तर] जी० ३१८३१, ८३३.
 ८३६ से ८४२ ८४५.
 माणुस्स [मानुष्य] ओ० ७४१२. रा० ७५१, ७५३.
 जी० ३११६
 माणुस्सत [मानुष्यक] रा० ७५१
 माणुस्सय [मानुष्यक] ओ० १५. रा० ६८५, ७१०,
 ७५३, ७७४, ७६१
 मातंग [मातङ्ग] ओ० २६. जी० ३१११८
 माता [मातृ] जी० ३१६११
 माता [मात्रा] जी० ३१६६८, ८८२
 √माय [मा]—माएज्जा ओ० १६५१५
 मायंग [मातङ्ग] जी० ३१११६
 माया [मातृ] ओ० ७१, १६२. जी० ३१६३१२
 माया [माया] ओ० २८, ३०, ४४, ७१, ६१, ११७,
 ११६, १६१, १६३, १६८. रा० ६७१, ७६६.
 जी० ३११२८, ५६८, ७६५, ८४१
 मायाकसाइ [मायाकपायिन्] जी० ६१४८, १४६,
 १५२, १५५
 मायाकसाय [मायाकपाय] जी० ११६
 मायामोस [मायामृषा] ओ० ७१, ११७, १६१, १६३
 मायामोसविवेग [मायामृषाविवेक] ओ० ७१
 मायाविवेग [मायाविवेग] ओ० ७१
 मार [मार] रा० २४. जी० ३१२७७

मारणंतिय [मारणान्तिक] ओ० ७७. जी० ११८६
 मारणंतियसमुग्घात [मारणान्तिकसमुद्घात] जी०
 ३१११२, ११६३
 मारणंतियसमुग्घाय [मारणान्तिकसमुद्घात] जी०
 ११२३, ५३, ६०, ८२, १०१; ३११०८, १५८
 मारापविभत्ति [मारक विभक्ति] रा० ६४
 मारि [मारि] ओ० १४. रा० ६७१
 मालणीय [मालनीय] रा० १५, १८, २०, ३२, १२६.
 जी० ३१२८८, ३७२
 मालय [दे० मालक] जी० ३१५६४
 मालवंत [मालवन्त] जी० ३१५०७, ६६८, ६६७
 मालवंतद्दह [मालववद्दह] जी० ३१६६७
 मालवंतपरियाय [मालववपर्याय] रा० २७६
 जी० ३१४४०
 मालवंतपरियाय [मालववपर्याय] जी० ३१७६५
 माला [माला] ओ० ४७, ५२, ६३, ६६, ७२. जी०
 ३१५६१
 मालागार [मालाकार] रा० १२
 मालिघरग [मालिगृहक] रा० १८२ १८३. जी०
 ३१२६४
 मालिणीय [मालिनीय] जी० ३१३००
 मालुयामंडवग [मालुकामण्डपक] रा० १८४. जी०
 ३१२६६
 मालुयामंडवध [मालुकामण्डपक] रा० १८५
 मास [मास] ओ० २८, २६, ११५, १४३. रा०
 ८०१. जी० ११८६; ३१११६, १७६, १७८,
 १८०, १८२, ६३०, ८४१, ८४४, ८४७, १०८०;
 ४४, १४
 मास [मास] जी० ३१८१६
 मासपरियाय [मासपर्याय] ओ० २३
 मासल [मांसल] जी० ३१८१६, ८६०, ६५६
 मासिय [मासिक] ओ० ३२
 मासिया [मासिक] ओ० २४, १४०, १५४
 माहण [माहन] ओ० ५२, ७६ से ८१. रा० ६६७,
 ६७१, ६८७, ६८८, ७१८, ७१६, ७८७, ७८६

माहणपरिव्वाय [माहनपरिव्राजक] ओ० ६६

माहणपरिसा [माहनपरिषद्] रा० ७६७

माहण्य [माहात्म्य] ओ० ७१. रा० ६१

माहिंव [माहेन्द्र] ओ० ५१, १६२. जी० २।६६,

१४८, १४९; ३।१०३८, १०४७, १०५८, १०६६,

१०६८, १०७६, १०८८, १०९४, ११०२, ११११

मिउ [मृदु] रा० ३७, १३३. जी० ३।३०३, ३११,

५६२, ५६६, ५६८, ७६५, ८४१

मिउमहवसंपण [मृदुमार्दवसम्पन्न] ओ० ६१

मिउमहवसंपणया [मृदुमार्दवसम्पन्नता] ओ० ११६

मिजा [मज्जा] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,

७५२, ७८६

मिग [मृग] ओ० ५१. रा० २४. जी० ३।१०३८

मिगज्जाय [मृगज्जाय] रा० १६२. जी० ३।३३५

मिगलुद्धम [मृगलुद्धक] ओ० ६४

मिगलोम [मृगलोम] जी० ३।५६५

मिगवण [मृगवण] रा० ६७०

मिच्छ [म्लेच्छ] ओ० १६५, १६६

मिच्छत [मिथ्यात्व] ओ० ४६

मिच्छतकिरिया [मिथ्यात्वक्रिया] जी० ३।२१०,

२११

मिच्छताभिणिवेस [मिथ्यात्वाभिनिवेश] ओ०

१५५, १६०

मिच्छदिट्टि [मिथ्यादृष्टि] ओ० १६०. रा० ६२.

जी० ३।१०३, १५१

मिच्छा [मिथ्या] जी० ३।२११

मिच्छादंसणसल्ल [मिथ्यादर्शनसल्लय] ओ० ७१,

११७, १६१, १६३. रा० ७६६

मिच्छादंसणसल्लविवेग [मिथ्यादर्शनसल्लयविवेग]

ओ० ७१

मिच्छादिट्टि [मिथ्यादृष्टि] जी० १।२८, ८६;

३।१०५, ११०६; ६।६७, ६९

मिणालिया [मृणालिका] जी० ३।२८२

मित [मित] जी० ३।५६६, ५६७

मित्त [मित्र] ओ० १५०. रा० ७५१, ७७४,

८०२, ८११. जी० ३।६१३, ६३१

मित्त [मात्र] रा० २५४, ८०६, ८१०

मित्तपक्ख [मित्रपक्ख] जी० ३।४४८

मिथुण [मिथुन] जी० ३।६३६

मिथुण [मिथुन] जी० ३।३५५

मिय [मृग] रा० ६७१, ७०३, ७१८

मिय [मित] ओ० १६

मियगंध [मृगगन्ध] जी० ३।६३१

मियवण [मृगवण] रा० ७०६, ७११, ७१३, ७१६,

७२६

मिरिय [मरीचि] रा० १३३. जी० ३।२६१, ३०३

मिरीइकवच [मरीचिकवच] जी० ३।३७२

मिरीय [मरीचि] जी० ३।२६६, २६६, २७७

√मिल [मिल्]—मिलंति जी० ३।४४५

√मिसाय [मिल्]—मिसायंति. रा० २७६

मिलाइत्ता [मिलित्वा] रा० २७६

मिलायमाण [म्लायत्] रा० ७८२

मिलित्ता [मिलित्वा] जी० ३।४४५

मिलेच्छ [म्लेच्छ] जी० ३।२२६

मिसिमिसंत [दे०] ओ० ६३

मिसिमिसंत [दे०] रा० १७, १८, ६६, ७०

मिस्त [मिश्र] जी० १।७१२

मिहण [मिथुन] ओ० ६. जी० ३।२७५, २८६

मिहणय [मिथुनक] रा० १७४. जी० ३।३१८

मिहणय [मिथुनक] जी० ३।११८, ११९

मीरिय [मरीचि] ओ० १२

मीसजाय [मिश्रजात] ओ० १३४

मीसय [मिश्रक] ओ० ४६

मीसिय [मिश्रित] ओ० २८

मुइंग [मृदङ्ग] ओ० ६७, ६८. रा० ७, १३, २४, ७७,

६५७, ७१०, ७७४. जी० ३।२७७, ३५०, ४४६,

५६३, ५८८, ८४२, ८४५, १०२५

मुइत्ता [मुक्त्वा] रा० २८८

मुइय [मुदित] ओ० १४. रा० ६७१

मुएत्ता [मुक्त्वा] जी० ३।४५४

√मुञ्च [मुञ्] -मुञ्चइ. ओ० १७७. मुञ्चन्ति. ओ०
७२. जी० ११३३. —मुञ्चन्ती. ओ० ७४४.
मुञ्चिहिति. ओ० १६६. —मुञ्चिहिति. ओ०
१५४. रा० ६१६.

मुंड [मुण्ड] ओ० २३,५२,७६,७८, १२०. रा०
६८७,६८९,६९५,७३२,७३७,८१२

मुंडभाव [मुण्डभाव] ओ० १५४, १६५, १६६. रा०
८१६

मुंडमाल [मुण्डमाल] जी० ३५९४

मुंडि [मुण्डिन्] ओ० ६४

मुक्क [मुक्त] ओ० २,२७,५५. रा० १२,३२,
२८१. जी० ३१२९।९,३७२,४४७,५८०,
५९१,५९७

मुक्कतोय [मुक्ततोय] रा० ८१३

मुखछिन्नक [मुखछिन्नक] ओ० ९०

मुगुंद [मुकुन्द] रा० ७७

मुगुंदमह [मुकुन्दमह] जी० ३१६१५

मुगुंसिया [दे०] जी० २।९

मुच्छिज्जंत [मूच्छर्यमान] रा० ७७

मुच्छिता [मूच्छिता] जी० ३१२८५

मुच्छिय [मूच्छित] रा० १५,७५३

मुच्छिया [मूच्छिता] रा० १७३

√मुज्ज [मुह्]—मुज्जिहिति. ओ० १५०. रा०
८११

मुट्टि [मुष्टि] रा० १३३. जी० ३१३०३

मुट्टिजुद्ध [मुष्टिजुद्ध] ओ० १४६. रा० ८०६

मुट्टिय [मौष्टिक, मुष्टिक] ओ० १,२. रा० १२,
७५८,७५९. जी० ३११८

मुट्टियपेच्छा [मौष्टिकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.
जी० ३१६१६

मुणाल [मृणाल] ओ० १९४. रा० १७४. जी०
३११८, ११९, २८६

मुणालिया [मृणालिका] ओ० १९, ४७. रा० २९.
जी० ३१५९६

मुणिपरिता [मुनिपरिषद्] ओ० ७१. रा० ६१

मुणिय [जात्वा] ओ० २३

मुणतव्य [जातव्य] जी० ३१६३४

मुणोयव्य [जातव्य] जी० ३१८३८।११, २२

मुत्त [मुक्त] ओ० १९, २१, ४६, ५४. रा० ८, २९२.
जी० ३१४५७

मुत्ता [मुक्ता] रा० २०. जी० ३१२८८

मुत्ताजाल [मुक्तजाल] रा० १३२, १५९, १९१.
जी० ३१२६५, ३०२, ३३२

मुत्तावामि [मुक्तावामन्] रा० ४०. जी० ३१३१३,
३५५

मुत्तालय [मुक्तालय] ओ० १९३

मुत्तावलि [मुक्तावलि] ओ० १०८, १३१. रा०
८२५. जी० ३१४५१, ९३६

मुत्तावलिपविभक्ति [मुक्तावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

मुत्ति [मुक्ति] ओ० २५, ४३, १९३. रा० ६८६,
८१४

मुत्तिमग [मुक्तिमामं] ओ० ७२

मुत्तिसुह [मुक्तिसुख] ओ० १९५।१४

मुद्दा [मुद्रा] ओ० ४७. रा० २८५

मुद्दिया [मुद्रिका] ओ० ६३, १०८, १३१. जी०
३१४५१

मुद्दियामंडवग [मृद्धीकामण्डपक] रा० १८४. जी०
३१२९६

मुद्दियामंडवय [मृद्धीकामण्डपक] रा० १८५

मुद्दियासार [मृद्धीकासार] जी० ३१५८६, ८६०

मुद्ध [मूर्धन्] ओ० १९, २१, ५४. जी० ३१५९६

मुद्धज [मूर्धज] जी० ३१४१५

मुद्धय [मूर्धज] रा० २५४

मुद्धाण [मूर्धन्] रा० ८, २९२

मुद्धाहिसित्त [मूर्धाभिविक्त] ओ० १४. रा० ६७१

मुम्मुर [मुर्मुर] जी० १।७८; ३।८५

मुय [मृत] रा० ७६२, ७६३

√मुय [मुच्]—मुयइ. रा० २८८. मुयति. जी०
३१४५४

सुर्यग [मृदङ्ग] जी० ३।७८
 सुर्यंत [मुञ्चत्] ओ० ७,८,१०. जी० ३।२७६
 सुरंडी [मुरण्डी] रा० ८०४
 सुरय [मुरज] ओ० ६७. रा० १३,७७,६५७
 सुरव [मुरज] जी० ३।७८,४४६
 सुरवि [दे०] जी० १०८,१३१. रा० २८५
 सुरंडी [दे०] जी० १।७३
 मुसल [मुसल] ओ० १६. जी० ३।११०,५६६
 मुसावाय [मृषावाद] ओ० ७१,७६,७७,११७,
 १२१,१६१,१६३. रा० ६६३,७१७,७६६
 मुसावायवेरमण [मृषावादविरमण] ओ० ७१
 मुसुंढि [दे०] ओ० १. जी० ३।११०
 मुहमंगलिय [मुहमङ्गलिक] ओ० ६८
 मुहमंडव [मुखमण्डप] रा० २११ से २१५,२६५
 से २६६,३२६ से ३३०,३३३ से ३३७. जी०
 ३।३७४ से ३७६,४१२,४२१,४६० से ४६४,
 ४६१ से ४६५,४६६ से ५०२,८८७ से ८८६
 मुहमूल [मुहमूल] जी० ३।७२३,७२६
 मुहुत्त [मुहुत्त] ओ० २८,१४५. रा० ७५३,८०५
 मुहुत्तंतर [मुहुत्तन्तर] रा० ७६५
 मुहुत्ताग [मुहुत्त] रा० ७५१,७५३
 मूढ [मूढ] रा० ७३२,७३७,७६५
 मूढतराय [मूढतरक] रा० ७६५
 मूल [मूल] ओ० ६४,१३५. रा० १२७,२०४,
 २०५,२०६,२२८. जी० १।७१,७२; ३।२६१,
 ३५२,३६४,३७२,३८७,६३२,६४३,६५४,
 ६६१,६७२,६७८,६७९,६८६,७२३,७२६,
 ७३६,७६२,८३६,८७८,८८२,१००७
 मूलमंत [मूलमन्त] ओ० ५,८,१०. जी० ३।२७४,
 ३८६,५८१
 मूलय [मूलक] जी० १।७३
 मूलारिह [मूलार्ह] ओ० ३६
 मूलाहार [मूलाहार] ओ० ६४
 मूसग [मूषक] जी० ३।८४

मूसिया [मूषिका] जी० २।६
 मेइणी [मेदिनी] जी० ३।५६७
 मेंढमुह [मेघमुख] जी० ३।२१६
 मेघ [मेघ] रा० १३,१४
 मेढि [मेढी] रा० ६७५
 मेढिभूय [मेढीभूत] रा० ६७५
 मेत्त [मात्र] ओ० ३३,१२२. रा० ६,१२,४०,
 २०५ से २०८,२२५,२७६
 मेत्तय [मात्रक] जी० ३।४४०
 मेघावि [मेघाविन्] रा० १२,७५८,७५६
 मेरग [मेरक] जी० ३।५८६
 मेरय [मेरक] जी० ३।८६०
 मेरु [मेरु] जी० ३।८३८।१०,११
 मेरयालवण [मेरतालवण] जी० ३।५८१
 मेत्तिय [मेत्तित] जी० ३।५६२
 मेहमुह [मेघमुख] जी० ३।२१६
 मेहला [मेखला] जी० ३।५६३
 मेहस्तर [मेघस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५
 मेहावि [मेघाविन्] ओ० ६३. जी० ३।११८
 मेहुण [मैथुन] ओ० ७१,७६,७७,११७,१२१,
 १६१,१६३
 मेहुणवत्तिय [मैथुनप्रत्यय] जी० ३।१०२५
 मेहुणवेरमण [मैथुनविरमण] ओ० ७१
 मेहुणसण्णा [मैथुनसंज्ञा] जी० १।२०;
 ३।१२८
 मोक्ष [मोक्ष] ओ० ७१,१२०,१६२
 मोगगर [मुद्गर] जी० ३।११०
 मोगगरगुम्भ [मुद्गरगुम्भ] जी० ३।५८०
 मोगचरय [मौनचरक] ओ० ३४
 मोत्तिय [मौक्तिक] ओ० २३. रा० ६६५.
 जी० ३।६०८
 √मोय [मुच्]—मोएति. रा० ७३१
 मोयग [मोचक] ओ० २१,५४. रा० ८,२६२.
 जी० ३।४५६

भोयपडिमा [भोय' प्रतिमा] ओ० २४

भोयय [भोयक] ओ० १६

भोर [मयूर] रा० २६. जी० ३२७६

भोल्ल [मूल्य] ओ० १०५, १०६

भोसमणजोग [मृषावनीयोग] ओ० १७८

भोसवइजोग [मृषावाग्नीयोग] ओ० १७६

भोसाणुबंधि [मृषानुबन्धिन्] ओ० ४३

भोह [मोह] ओ० ४६. रा० ७७१

√भोह [मोह्य] ... मोहंति. जी० ३२१७

—मोहंति. रा० १८५

भोहणघर [मोहनगृह] जी० ३१५४

भोहणघरग [मोहनगृहक] रा० १८२, १८३.

जी० ३२६४

भोहणिउज [मोहनीय] ओ० ८५, ८६

भोहणीय [मोहनीय] ओ० ४४

भोहरिय [मौखरिक] ओ० ६५

य

य [च] ओ० ३२. रा० ७. जी० १२

यज्जुवेद [यजुर्वेद] ओ० ६७

या [च] रा० ७०५

र

रइ [रति] ओ० ४६. रा० १५, ८०६, ८१०

रइय [रचित] ओ० १, २१, ४६, ५४, ६४, १३४,

१८२. रा० ८, ३२, ६६, ७६, १३३, ७१४.

जी० ३१७२, ५६१, ५६६, ५६७

रइय [रतिद] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६७

रइय [रतिक] ओ० ६३, ६५

रइल [रजस्वत्] जी० ३१७२१

रउग्घात [रजउद्घात] जी० ३१६२६

रंगत [रङ्गत्] ओ० ४६

रक्खंत [रक्षत्] ओ० ६४

रक्खस [राक्षस] ओ० ४६, १२०, १६२.

रा० ६६८, ७५२, ७८६

रक्खसमहोरगगंधव्वमंडलपविभत्ति [राक्षसमहोरग-
गंधव्वमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६०

√रक्खाव [रक्षापय]—रक्खावेमि. रा० ७५४

रक्खोवग [रक्षोपग] रा० ६६४

रगसिगा [रगसिका] जी० ३१५८८

रचिय [रचित] जी० ३१३०३

रज्ज [राज्य] ओ० १४, २३. रा० ६७१, ६७४.

६७६, ७६०, ७६१

√रज्ज [रज्जु]—रज्जिहिति. ओ० १५०

रज्जधुराचितय [राज्यधुश्चित्तक] रा० ६७५

रज्जसिरी [राज्यश्री] रा० ७६१

रज्जु [रज्जु] रा० १३५. जी० ३, ३०५

रट्ट [राट्ट] ओ० २३. रा० ६७४, ७६०, ७६१

रण [अरण्य] ओ० २८

रतण [रत्न] जी० ३१४६

रतणसंनया [रत्नसञ्चया] जी० ३१६२२

रतणुच्चया [रत्नोच्चया] जी० ३१६२२

रति [रति] जी० ३११६८, ११६, ५६७

रतिकर [रतिकर] रा० ५६. जी० ३१६१८ से

६२२

रतिय [रतिद] जी० ३१५६६, ५६७

रतिय [रतिक] जी० ३१८४२, ८४५

रत्त [रक्त] ओ० ४७, ५१, ६६, ७१, १०७, १२०,

१३०, १६२. रा० २७, ७६, १३३, १७३, २२८,

६६४, ६६८, ७५२, ७७७, ७७८, ७८८, ७८९.

जी० ३१२८०, २८५, ३०३, ३८७, ५६२, ५६५ से

५६७, ६७२

रत्तमुय [रत्तांशुक] रा० ३७, २४५. जी०

३१३११, ४०७

रत्तकणवीर [रत्तकणवीर] रा० २७.

जी० ३१२८०

रत्तचंदण [रत्तचन्दन] ओ० २, ५५. रा० ३२,

२८१. जी० ३१३७२, ४४७

रत्ततल [रक्ततल] ओ० १६, ४७. जी० ३१५६६

रत्तपाणि [रक्तपाणि] रा० ६६४. जी० ३१५६२

रत्तबंधुजीव [रक्तबंधुजीव] रा० २७

जी० ३१२८०

रत्तरयण [रत्तरत्न] ओ० २३
रत्तवई [रत्तवती] रा० २७६
रत्तवती [रत्तवती] जी० ३१४४५
रत्ता [रक्ता] रा० २७६. जी० ३१४४५
रत्तासोम [रक्ताशोक] ओ० २२. रा० २७,७७७,
 ७७८,७८८. जी० ३१२८०
रत्ति [रात्रि] रा० ४५
रत्तुप्ल [रक्तोत्पल] ओ० १६. रा० २७.
 जी० ३१२८०, ५६६, ५६७
रत्या [रथ्या] ओ० ५५. रा० २८१.
 जी० ३१४४७
रथ [रथ] जी० ३१८६
रद्ध [राद्ध] जी० ३१५६२
रम् [रम्]—रमति. रा० १८५. जी० ३१२१७.
 —रमिज्जड. रा० ७८३
रमणिज्ज [रमणीय] ओ० १६, ४७, ६३, १६२.
 रा० २४, ३३, ३५, ६५, ६६, १२४, १७१, १८६
 से १८८, २०३, २०४, २१७, २३७, २३८, २६१,
 ७८१ से ७८७. जी० ३; २१८, २५७, २७७,
 ३०६, ३१०, ३३६, ३५६ से ३६१, ३६४, ३६५,
 ३६८, ३६९, ३६९, ४००, ४२२, ४२७, ५८०,
 ५९६, ५९७, ६२३, ६३३, ६३४, ६४५, ६४६,
 ६४८, ६४९, ६५६, ६६२, ६६३, ६७०, ६७१,
 ६७३, ६९०, ६९१, ७३७, ७५५ से ७५८, ७६८,
 ८८३, ८८४, ८९०, ९०५, ९०६, ९१२, ९१३,
 १००३, १०३८
रम्म [रम्य] ओ० ४, ६. रा० १७०, १७३, ६७०,
 ७०३, ८०४. जी० ३१२७३, २७५, २८५, ५६१
रम्मगवास [रम्यकवर्ष] रा० २७६. जी० २१३,
 ३२, ५६, ७०, ७२, ९६, १४७, १४९; ३१२२८,
 ४४५
रम्मगवास [रम्यकवर्ष] जी० ३१७६५
रय [रजम्] ओ० २३. रा० ६, १२, २८१.
 जी० ३१४४७, ५६८
रय [रय] ओ० ४६

रयण [रत्न] ओ० २३, ४७, ४९, ६३, ६४.
 रा० १०, १२, १७, १८, ३२, ३७, ४०, ५१, ६५,
 ६६, ७०, १३०, १३२, १३७, १६०, १६५, २२८,
 २५६, २७६, २८१, २८५, २९२, ६६५, ७७४.
 जी० ३१७, २४६० से ६३, २६५, ३००, ३०२.
 ३०७, ३११, ३३३, ३४६, ३५७, ३७२, ३८७,
 ४१७, ४४५, ४४७, ४५७, ५८७, ५८९, ५९०,
 ५९३, ६७२, ७७५, ९३६, ९३७
रयणकण्ड [रत्नकाण्ड] जी० ३१८, १५, २०
रयणकरण्डक [रत्नकरण्डक] ओ० २६. रा० १५४,
 २५८, २७६, ७५० से ७५३. जी० ३१३२७,
 ४१६, ४४५
रयणकरण्डय [रत्नकरण्डक] रा० १५४.
 जी० ३१३२७
रयणकरण्डा [रत्नकरण्डक] जी० ३१३५५
रयणजाल [रत्नजाल] रा० १६१. जी० ३१२६५
रयणप्रभा [रत्नप्रभा] रा० १२४. जी० ११६२;
 २११००, १२७, १३५, १३८, १४८, १४९; ३१३,
 ५ से ६, १२ से १६, २२ से २६, २९, ३०, ३३,
 ३७ से ३९, ४२, ४४, ४५, ४७ से ५७, ५९ से
 ६५, ७३, ७६ से ७८, ८०, ८१, ८३ से ९८, १०३
 से ११०, ११२, ११६, १२० से १२४, १२६ से
 १२८, २३२, २५७, १००३, १०३८, १०३९,
 ११११
रयणप्पहा [रत्नप्रभा] ओ० १८६, १६२.
 जी० १११०१; २१३५
रयणभार [रत्नभार] रा० ७७४
रयणभारय [रत्नभारक] रा० ७७४
रयणमय [रत्नमय] जी० ३१७४७
रयणा [रत्ना] जी० ३१६७ से ७२, ६२२
रयणागर [रत्नाकर] रा० ७७४
रयणामय [रत्नमय] ओ० १२. रा० २१, २३, ३८,
 १२४, १२५, १२७, १२८, १३१, १३४, १४१,
 १४५, १४८, १५१, १५२, १५५ से १५७, १६०,
 १६१, १६० से १८५, १६२, १६७, २२२, २५३,
 २५६, २५७, २७२. जी० ३१२६२, २६३, २६६,

२६८, २६९, २८६, २९१ से २९६, ३०१, ३०४,
 ३१०, ३१२, ३१८, ३१९, ३२४, ३२५, ३२८ से
 ३३०, ३३३, ३३४, ३४७, ३४८, ३८१, ४१४,
 ४१८, ४३७, ६७५, ७५०, ७५३, ८६३, ८६६,
 ९०७, ९१८, १०३८, १०३९, १०८१

रयणावलि [रत्नावलि] ओ० १०८, १३१.
 रा० २८५. जी० ३, ४५, १

रयणावलिप्रविभक्ति [रत्नावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

रयणि [रति] ओ० १६५।६

रयणिकर [रजनिकर] जी० ३।५६७

रयणियर [रजनिकर] ओ० १५. रा० ६७२.
 जी० ३।८३८।१२, १३

रयणी [रजनी] ओ० २२. रा० ७२३, ७७७, ७७८,
 ७८८

रयणी [रत्नी] ओ० १८७, १९५।७.
 जी० १।१३५; ३।९१, ७८८, १०८७ से १०८९

रयत [रजत] जी० ३।७, ३००, ३३३, ४१७

रयत्ताण [रजस्त्राण] रा० ३७, २४५.
 जी० ३।३११, ४०७

रयय [रजत] ओ० १४, १४१. रा० १०, १२, १८,
 ६५, १३०, १६०, १६५, १७४, २२८, २५५,
 २५६, २७९, ६७१, ७९९. जी० ३।२८६, ३००,
 ३८७, ४१६, ६७२, ६७६, ७४७

रयय [पाय] [रजतपाय] ओ० १०५, १२८

रयय [बंधण] [रजतबन्धन] ओ० १०६, १२९

रययामय [रजतमय] रा० ३७, १३०, १३२, १३५,
 १५३, १७४, १९०, २३६, २४०, २४५, २८८,
 २९१. जी० ३।२६४, २८६, ३००, ३०२, ३०५,
 ३११, ३२४, ३२६, ३९८, ४०२, ४०७, ४५४,
 ४५७, ६३९

रत्तग [रत्तक] जी० ३।५६५

रव [रव] ओ० ४६, ५२, ६७, ६८. रा० ७, १३,
 १५, ५५, ५६, ५८, २८०, २९१, ६५७, ६८७,
 ६८८. जी० ३।३५०, ४४६, ४५७, ५५७, ५६३,
 ८४२, ८४५, १०२५

रवंत [रवत्] ओ० ४६

रवभूय [रवभूत] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८

रवि [रवि] ओ० १९. जी० ३।५९६, ५९७, ८०९,
 ८३८।३

रस [रस] ओ० १५, १६१, १६३, १६९, १७०.
 रा० १७३, १९९, ६७२, ६८५, ७१०, ७५१,
 ७७४. जी० १।५, ३८, ५८, ७३, ७८, ८१;
 ३।५८, ८७, २७१, २८५, २८६, ३८७, ५८६, ५९२,
 ६०१, ६०२, ७२५, ७२७, ८६०, ८६६, ८७२,
 ८७८, ९७२, ९८०, ९८२, १०८१, १११८, ११२४

रसओ [रगतस्] जी० १।५०

रसतो [रसतस्] जी० ३।२२

रसपरिच्छाय [रसपरित्याग] ओ० ३१, ३५

रसमंत [रसवत्] जी० १।३३

रसविगह [रसविकृति] ओ० ९३

रसिय [रसित] रा० १३, १४

रसोदय [रसोदक] जी० १।६५

रह [रथ] ओ० १, ७, ८, १०, ५२, ५५ से ५७, ६२,
 ६४ से ६६, १००, १२३, १७०. रा० १५१,
 १७३, ६८३, ६८५, ६८७ से ६८९, ६९२, ७०८,
 ७१०, ७१६, ७२७ से ७२९, ७३१, ७३२.
 जी० ३।२६०, २७६, २८५, ३२३, ५८१, ५८५,
 ५९७, ६१७

रहघणघणाइय [रथघतघनायित] रा० २८१.
 जी० ३।४४७

रहजोहि [रथयोधिन्] ओ० १४८, १४९. रा०
 ८०९, ८१०

रहवाय [रथवात] रा० ७२८

रहस्स [रहस्य] ओ० ९७. रा० ६७५, ७९३

रहित [रहित] जी० ३।११२१ से ११२३

रहिय [रहित] ओ० १. जी० ३।५६७

रहोकम्म [रहकर्मन्] रा० ८१५

राइ [राजि] ओ० १९. रा० ७५४ से ७५७.
 जी० ३।५६७

राइंदिय [रात्रिदिव] ओ० २४, १४३. रा० ८०१.
 जी० १।७९, ८८; ३।६३०; ४।४, १३; ५।६, १३,
 २८, २९

राइण [राजन्] ओ० २३, ५२. रा० ६८७, ६८८
 राइय [रात्रिक] ओ० २६
 [एगराइय (एकरात्रिक) पंचराइय (पंचरात्रिक)
 राईभोयण [रात्रिभोजन] ओ० ७६
 राम [राग] ओ० ३७, ४६, ५२, ५५, ७४, ६, १०७,
 १३०, १६८. रा० १६, १३३, २८१, ७७१. जी०
 ३३०३, ४४७, ५६५
 रात्तिदिय [रात्रिदिव] जी० ३१२, १८
 राम [नाम] ओ० ६६. जी० ३११, १७
 रामरक्षिता [रामरक्षिता] जी० ३१६, १६
 रामा [रामा] जी० ३१६, १६
 राय [राजन्] ओ० १४ से १६, १८, २०, २१, ५२
 से ५६, ६२ से ६८, ७०, ७१, ८०, ६६. रा० ५,
 ६, १५, ६, १ से ६७, ६७ से ६८, ६८ से
 ६८, ६८, ६८, ६८ से ७००, ७०२ से
 ७०४, ७०८ से ७१०, ७१८ से ७२०, ७२३ से
 से ७२६, ७२८ से ७३४, ७३६ से ७३६, ७४७
 से ७८१, ७८८ से ७६१, ७६३ से ७६६. जी०
 ३:१२६, ३२७, ५६२, ६०२, ६०६, ६३१, ७४७,
 ८६६, ६५६
 रायंगण [राजाङ्गण] रा० १२, १७३. जी०
 ३१२, ८५
 रायतेउर [राजान्तःपुर] रा० १२, १७३
 रायकउह [राजककुद] ओ० ६६
 रायकज्ज [राजकार्य] रा० ६८०, ६६८
 रायकहा [राजकथा] ओ० १०४, १२७
 रायकिच्च [राजकृत्य] रा० ६८०, ६६८
 रायकुल [राजकुल] रा० ६७१
 रायणीइ [राजनीति] रा० ६८०, ६६८
 रायघाणी [राजधानी] जी० ३१४६, ७००, ७०१
 रायमग्य [राजमार्ग] ओ० १. रा० ६८४, ६८५,
 ७००, ७०६
 रायवक्ख [राजवक्ख] ओ० ६, १०. जी० ३३८, ८,
 ५८३
 रायलवखण [राजलक्षण] रा० ६७१

रायववहार [राजव्यवहार] रा० ६८०, ६६८
 रायहाणी [राजधानी] रा० २८२, ६६७. जी०
 ३३५०, ३५१, ३५४, ३५५, ३५७, ३५८, ३६०,
 ४३६, ४४२, ४४५, ४४७, ४४८, ५५४, ५५५,
 ५५७, ५६३, ५६७ से ५६६, ६३७, ६३८, ६५६,
 ६६०, ६६५, ६६६, ७०१, ७१०, ७१२, ७१३,
 ७२१, ७३८, ७३६, ७४१, ७४४, ७४७, ७५१ से
 ७५३, ७६०, ७६१, ७६३ से ७८०, ८००, ८१४,
 ६०२, ६१६ से ६२२, ६४०, ६४५
 रायारिह [राजार्ह] रा० ६८०, ६८१, ६८३, ६८४,
 ६६६, ७००, ७०२, ७०८, ७०६
 रासि [राशि] ओ० १६५, १५. रा० २७, २६, ३१.
 जी० ३१२, ८०, २८२, २८४, ८१६, ८३६
 राहु [राहु] ओ० ५०
 राहुविमाण [राहुविमान] जी० ३१८, ३८१, ३७
 रिउवेद [ऋग्वेद] ओ० ६७
 रिगिसिधा [दे० रिङ्गिसिका] रा० ७७
 रिक्ख [ऋक्ष] ओ० ६३. जी० ३१८, ३८६
 रिद्ध [ऋष्ट] रा० १०, १२, १८, ६५, १६५, २७६.
 जी० ३१७, ८, १५, २४, ३०, ६२, ३४६, ४४५
 रिद्धमय [ऋष्टमय] जी० ३४३, ५
 रिद्धय [ऋष्टक] ओ० १३
 रिद्धा [ऋष्टा] जी० ३४
 रिद्धाम [ऋष्टाम] जी० ३५, ८६
 रिद्धामय [ऋष्टमय] रा० १६, १३०, १७५, १६०,
 २२८, २५४, २७०. जी० ३१२, ६४, २८७, ३००,
 ३८७, ४१५, ४३५, ६४३, ६७२
 रिद्ध [ऋद्ध] ओ० १. रा० १, ६६८, ६६६, ६७६,
 ६७७
 रिमित [ऋमित] जी० ३४४, ७
 रिभिय [ऋमित] रा० ७६, १०६, ११६, १७३,
 २८१. जी० ३१२, ८५
 रिधारिय [ऋतारित] रा० १११, २८१.
 जी० ३४४, ७
 रिसि [ऋषि] ओ० ७१

रीतिया (पाय) [रीतिकापात्र] ओ० १०५,
१२८

रीतिया(बंधन) [रीतिकाबन्धन] ओ० १०६, १२६

रुह [रुचि] रा० ७४८ से ७५०, ७७३

रुहर [रुचिर] जी० ३५६६, ६७२

रुहल [रुचिर] ओ० ५, ८, १६. पा० २२८.

जी० ३१२७४, ३८७, ५६६, ५६७

रुंद [दे०] विस्तीर्ण ओ० ४६

रुक्ख [रुक्ष] रा० ७८२, जी० १६६, ७०, ७२;

३५८१, ६०३, ६०४, ६३१, ६७६, ६३७

रुक्खगेहालय [रुक्षगेहालय] जी० ३६०३, ६०५

रुक्खमह [रुक्षमह] रा० ६८८, जी० ३६१५

रुक्खमूल [रुक्षमूल] ओ० ८, १०. जी० ३३८६,

५८१ से ५८३, ५८६ से ५६५

रुक्खमूलिय [रुक्षमूलिक] ओ० ६४

रुचिज्जमाण [रुच्यमान] जी० ३१२८३

रुह [रौद्र] रा० ६७१

रुह [भ्राण] [रौद्रध्यान] ओ० ४३

रुहमह [रुद्रमह] रा० ६८८, जी० ३६१५

रुपकूला [रूपकूला] रा० २७६.

जी० ३१४४५

रुप्यच्छद [रूप्यच्छद] जी० ३३३२

रुप्यपट्ट [रूप्यपट्ट] रा० २२, २६. जी० ३१२८२,

२६०

रुप्यमणिमय [रूप्यमणिमय] रा० २७६, २८०

रुप्यमय [रूप्यमय] रा० १५६, २७६, २८०

रुप्याकर [रूप्याकर] रा० ७७४, जी० ३१११८

रुप्यामणिमय [रूप्यमणिमय] जी० ३४४५

रुप्यामय [रूप्यमय] जी० ३१४४५, ४४६

रुप्यि [रुपिमन्] रा० २७६. जी० ३१४४५,

७६५

रुयम [रुचक] जी० ८७. जी० ३१५६६, ५६७,

७७५, ६४२, ६५२

रुयगवर [रुचकवर] जी० ३१६३४

रुयगवरभट्ट [रुचकवरभट्ट] जी० ३१६३४

रुयगवरमहाभट्ट [रुचकवरमहाभट्ट] जी० ३१६३४

रुयगवरोभास [रुचकवरावभास] जी० ३१६३४

रुयगवरोभासभट्ट [रुचकवरावभासभट्ट]

जी० ३१६३४

रुयगवरोभासमहाभट्ट [रुचकवरावभासमहाभट्ट]

जी० ३१६३४

रुयगवरोभासमहावर [रुचकवरावभासमहावर]

जी० ३१६३४

रुयगवरोभासवर [रुचकवरावभासवर]

जी० ३१६३४

रुयय [रुचक] ओ० १६. जी० ३१६३४

रुह [रुह] ओ० १३. पा० १७, १८, २०, ३२, ३७,

१२६. जी० ३१२८८, ३००, ३११, ३७२

रुहिर [रुधिर] रा० २७. जी० ३१२८०

रुत [रुत] जी० ३१४०७

रुय [रुत] ओ० १३. रा० ३१, ३७, १८५, २४५.

जी० ३१२८४, २६७, ३११

रुव [रूप] ओ० १५, २३, ४७, ६३, ७२, १४६, १६१,

१६३, १६२. पा० १०, ४७, ५४, ६६, ७०, ७६,

१७३, १६०, ६७२, ६८५, ७१०, ७५१, ७७१,

७७४, ८०६, ८०६ ८१०. जी० २११५१;

३१११०, १११, २६४, २८५, ५६०, ५६४, ५६६,

५६७, ६८२, १११५, १११७, ११२४

रुवग [रूपक] रा० १७, १८, २०, ३२, १२६, १३२.

जी० ३१२८८, ३००, ३७२

रुवसंपण्ण [रूपसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६

रुचि [रुचिन्] रा० ७७१. जी० १३, ५

रेणु [रेणु] रा० ६, १२, २८१. जी० ३१४४७

रेयम [रेवक] रा० ७६

रेरिज्जमाण [राराज्यमान] रा० ७८२

रोइयावसाण [रोचितावसान] रा० ११५, १७३,

२८१. जी० ३१४४७

रोएमाण [रोचमान] जी० ११

रोचियावसाण [रोचितावसान] जी० ३१२८५

रोग [रोग] ओ० ४६, ११७. रा० ७६६.

जी० ३१६२८, ६३१

रोम [रोमन्] ओ० ६२. जी० ३।५.६७

रोमराइ [रोमराजि] ओ० १६. रा० २५४.

जी० ३.४१५,५६६,५६७

रोमसुह [रोमसुख] ओ० ६३

√रोय [रुच्] -- रोएज्जा रा० ७५०

.गेएमि. रा० ६६५

रोद्य [रोत्क] जी० ३।१२,११७

रोहिणिय [रोहिणिक] जी० १।८८

रोहिणी [रोहिणी] जी० ३।६२१

रोहितंसा [रोहितांसा] जी० ३।४४५

रोहिया [रोहिता] रा० २७६. जी० ३.४४५

रोहियंसा [रोहितांसा] रा० २७६

ल

लउड [लकुट] जी० ३।११०

लउय [लकुच] ओ० ६ से ११. जी० १।७२;

३।५८३

लउल [लकुट] ओ० ६४

लउलम्य [लकुटाभ्र] ओ० ३।८५

लउसिया [लाभोसिया, लउसिया] आ० ७०.

रा० ८०४

लंख [लङ्ख] ओ० १,२

लंखपेच्छा [लङ्खपेक्षा] ओ० १०२,१२५.

जी० ३।६१६

लंघण [लङ्घन] रा० १२,७५८,७५९.

जी० ३।११८

लंतक [लान्तक] ओ० ५१,१६२. जी० ३।१०३८,

१०५०,११११

लंतय [लान्तक] ओ० १५५. जी० २।१४८,

१४९; ३।१०६०,१०६६,१०६८,१०७६,

१०८८,१०९५,११०३

लंबंत [लम्बमान] जी० ३।५६१

लंबियग [लम्बितक] ओ० ६०

लंबूसग [लम्बुसक] रा० ४०,१३२,१६१.

जी० ३।२६५,३०२ ३।३३,३६७

लबखण [लक्षण] ओ० १४,१५,१६,४३,१४३,

१६५।११. रा० १३३,६७२,६७३,७७४,८०१.

जी० ३।३०३,५६६,५६७

लबखारसग [लाक्षारसक] रा० २७

लबखारसय [लाक्षारसक] जी० ३।२८०

लभा [लग्न] ओ० २३

लच्छी [लक्ष्मी] ओ० ६५

लज्जा [लज्जा] ओ० २५

लज्जासंपण्ण [लज्जासम्पन्न] ओ० २५.

रा० ६८६

लज्जु [लज्जावत्] ओ० १६४

लट्ट [लगट] ओ० १,१६,६३. रा० ३२,५२,५६,

२३१,२४७. जी० ३.३७२,३६३,४०१,५६६,
५६७

लट्टवंत [लट्टदन्त] जी० ३।२१६

लट्टिग्गाह [लट्टिग्रह] ओ० ६४

लडह [दे०] ओ० १६. जी० ३।५६६,५६७

लणह [लक्षण] ओ० १२,१६४. रा० २१,२३,३२,

३४,३६,१२४,१४५,१५७. जी० ३।२६१,
२६६,२६९

लता [लता] जी० १।६६; ३।१७३,३५५

लसिया [दे०] रा० ७७

लड [लघ्र] ओ० २०,४६,५३,१२०,१५४,१६२,

१६५,१६६. रा० ६३,६५,६६७,६६८,७१३,

७५२,७६५,७६६,७७०,७८६,७९७,८१६

लडपचचय [लघ्रप्रत्यय] रा० ६७५

√लभ [लभ्] -- लभति. रा० ७७४. -- लभइ.

रा० ७१६. -- लभेज्ज. रा० ७१६

लय [लय] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५

लया [लता] रा० १३६. जी० ३।३०६,६३१

लयाघरग [लतागृहक] रा० १८२,१८३.

जी० ३।२६४

लयाजुड [लतागुड] ओ० १४६. रा० ८०६

लयापविभति [लताप्रविभक्ति] रा० १०१

√लल [लल्] -- ललति. रा० १८५. जी० ३।२१७

ललिय [ललित] ओ० १५,५७,६३. रा० ७०,७६,

१७३,६७२. जी० ३।२८५,५६७

लव [लव] ओ० २८. जी० ३।८४१
लवइय [दे० लवकिन] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.
जी० ३।२६८, २७४
लवंग [लवङ्ग] रा० २६, ३०. जी० ३ २८२
लवण [लवण] जी० ३।२१७, २१६ से २२७, ३००,
५६६, ५६८, ५६९, ५७१, से ५७६, ७०४ से
७०८, ७१०, ७११, ७१३ से ७२३, ७२६, ७२८ से
७३१, ७३३, ७३६, ७३९ से ७४१, ७४५, ७४७,
७५०, ७५४, ७६१, ७६२, ७६५ से ७६९, ७७५,
७८१ से ७८६, ७८८ से ७९६, ८३८, ८४४, ८५४,
८६३, ८६६, ८६९
लवणग [लवणक] जी० ३।७१०
लवणतोय [लवणतोय] जी० ३।८३८, २३
लवणसिंहा [लवणशिखा] जी० ३।७३२
लवणाहिवइ [लवणाधिपति] जी० ३।७२१, ७५४,
७५६, ७६१
लवणोदय [लवणोदक] जी० १।६५
लवय [लवक] जी० ३।३८८
लहु [लघु] जी० ३।२२
लहुय [लघुक] ओ० ४६. जी० १।५; ३।८७८
लहुयत्त [लघुकत्व] रा० ७६२, ७६३
लाइय [दे०] ओ० २, ५५. रा० ३२, २८१.
जी० ३।३७२, ४४७
लाघव [लाघव] ओ० २५. रा० ६८६, ८१४
लाघवसंपण [लाघवसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६
लाभतिथ्य [लाभाधिक] ओ० ६८
लाला [लाला] रा० १३५, २८५. जी० ३।३०५,
४५१
लावणग [लावणिक] जी० ३।७६६ से ७६९
लावणिक [लावणिक] जी० ३।८३८, २४
लावण्य [लावण्य] ओ० १५, २३. रा० ६९, ७०.
जी० ३।५६७
√लास [लास्य]—लामेंति. रा० २८१.
जी० ३।४४७
लासग [लासक] ओ० १, २
लासगपेच्छा [लासकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.

जी० ३।६१६
लासिया [लहागिका] ओ० ७०. रा० ८०४
लिद्य [लिन्द्र] जी० ३।७२१
लिम्ब [लिम्ब] रा० ३७
लिक्खा [लिक्खा] जी० ३।६२४, ७८८
लिच्च [लिच्च] जी० ३।३११
लित्त [लित्त] रा० १२३, ७५५, ७७२
लिप्यासन [लिप्यासन] रा० २७०. जी० ३।४३५
लीला [लीला] रा० १७, १८, १३०, १३३.
जी० ३।३००, ३०३
लुक्व [लुक्] जी० १।५, ३६, ४०, ५०; ३।२२
लुङ्ग [लुङ्ग] रा० ७७४
√लुप [लू]—लुज्जइ. रा० ७८४
लूसणया [लूपण] ओ० १०३, १२६
लूसमाण [लूपत्] रा० १३३
लूसेमाण [लूपत्] जी० ३।३०३
√लूह [लूह्य, मृज्]—लूहेति. रा० २८५.
जी० ३।४५१
लूहाहार [लूहाहार] ओ० ३४
लूहिय [लूहित] ओ० ६३
लूहेत्ता [लूहयित्वा] रा० २८५. जी० ३।४५१
लेख [लेख्य] रा० २७०. जी० ३।४३५
लेच्छइ [लेच्छवि, लेच्छवि] ओ० ५२. रा० ६८७,
६८८
लेच्छईपुत्त [लेच्छविपुत्र, लेच्छविपुत्र] ओ० ५२.
रा० ६८७, ६८८
लेच्छतिपुत्त [लेच्छविपुत्र, लेच्छविपुत्र] जी० ३।११७
लेट्टु [लेट्टु] ओ० २६
लेण [लयन] ओ० १४९, १५०. रा० ८१०, ८११.
जी० ३।५६४
लेस [लेश्या] रा० ७७१
लेसणया [लेशन] ओ० १०३, १२६
लेसा [लेश्या] ओ० ४७, ७२, ११६ जी० १।१४
२१, ५६, ८६, ९६, १०१, १२८; ३।६८, ९६,
१२७।४, १२८, १५०, ८४१; ६।६६

लेस्सा [लेस्या] ओ० १५६. जी० ११२१, ७६,
११६, १३६,; ३११०१, १२८, १५०, १६०,
११०१

लेह [लेख] ओ० १४६. रा० ८०६, ८०७

लेहणी [लेखनी] रा० २७०. जी० ३१४३५

लोग [लोक] रा० ७५१, ७५३, ८१५. जी० १११४०;
३१७६५, ८३८२, ६७२; ५१६

लोगंत [लोकान्त] ओ० १६५, १६५१६

लोगट्टिति [लोकस्थिति] जी० ३१७६५

लोगणाह [लोकनाथ] रा० २६२. जी० ३१४५७

लोगनाली [लोगनाडी, "नाली] जी० ३११११

लोगनाह [लोकनाथ] रा० ८

लोगपईव [लोकप्रदीप] रा० ८, २६२. जी० ३१४५७

लोगपञ्जोयगर [लोकप्रद्योतकर] रा० ८, २६२.
जी० ३१४५७

लोगमज्जावसाणिय [लोकमध्यावसानिक]

रा० ११७, २८१ जी० ३, ४४७

लोगहिय [लोकहित] रा० ८, २६२. जी० ३१४५७

लोगाणुभाव [लोकानुभाव] जी० ३१७६५

लोगुत्तम [लोकोत्तम] रा० ८, २६२. जी० ३१४५७

लोगोवयारविणय [लोकोपचारविणय] ओ० ४०

लोग [लक्षण] ओ० ६२. जी० ३१७२१

लोद्ध [लोघ्न] ओ० ६, १०. जी० ११७२; ३१३८८,
५८३

लोभ [लोभ] ओ० ४६, ७१. जी० ३:१२८, ५६८,
७६५, ८४१

लोभकसाइ [लोभकपायिन्] जी० ११३११;

६११४८, १५०, १५५

लोभविवेक [लोभविवेक] ओ० ७१

लोभपक्खि [लोभपक्खिन्] जी० ११११३, ११५

लोमहृत्थ [लोमहृस्त] ओ० २. रा० १५६, १५७,
२५८, २७६, २६५ से २६६, ३५१. जी० ३१३२६,
३३०, ४१६, ४६०

लोमहृत्थय [लोमहृस्तक] रा० २६१, २६४ से
२६६, २६८, ३००, ३०५, ३१० से ३१२, ३५१
से ३५६, ४१४, ४०३ से ४७५, ५३४, ५३५,

५६४, ५६५. जी० ३१४४५, ४५७, ४६० से
४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५३२,
५४७

लोमहृत्थय [लोमहृस्तक] रा० २६१, २६४ से
२६७, ३००, ३०५, ३१० से ३१२, ३५२ से
३५६, ४१४, ४७३ से ४७५, ५३४, ५३५, ५६४
५६५. जी० ३१४५८

लोमहरिस [लोमहृष] जी० ३१८३

लोय [लोक] ओ० ७१, १६६, १७०, १७४.

जी० ११३६; २१२०, १३१; ३११८, ११६,
८४१; ५१८, २२; ६१२५७

लोयंत [लोकान्त] जी० ३१३३ से ३६, १००२

लाप्रग [लोकाध] ओ० १६८, १६३, १६५१२

लोदगयूभिषा [लोकायस्तूपिका] ओ० १६३

लोदगपडिबुद्धणा [लोकाप्रतिबोधना]
ओ० १६३

लोयण [लोचन] जी० ३, ५६७

लोल [लोल] ओ० ६. जी० ३१२७५

लोव [लोग] ओ० ११७

लोह [लोम] ओ० २८, ३७, ४४, ६१, ११७, १६१,
१६३, १६८. रा० ७६६. जी० ३१२८

लोहकसाइ [लोभकपायिन्] जी० ६१५३

लोहकसाय [लोभकपाय] जी० १११६

लोहया [लोमता] ओ० ११६

लोहारंबरिस [लोहकारम्बरीष] जी० ३११८

लोहित [लोहित] रा० १२८, १३६. जी० ३१२२,
४५

लोहितबल [लोहिताक्ष] जी० ३१७, ३००, ४१५

लोहितबलमणि [लोहिताक्षमणि] जी० ३१२८०

लोहितबलमय [लोहिताक्षमय] रा० १६, १७५,
१६०. जी० ३१२६४, २८७, ३००

लोहितग [लोहितक] जी० ३१२८०

लोहिय [लोहित] ओ० १२. रा० २२, २४, २७,
१५३. जी० ११५०; ३१११, २६०, ३२६,
१०७५, १०७६

लोहियबल [लोहिताक्ष] रा० १०, १२, १८, ६५,

१३०, १६५, २५४, २७६. जी० ३।४१५
 लोहियबखमणि [लोहिताक्षमणि] रा० २७
 लोहियबखमय [लोहिताक्षमय] रा० १३०, २४५
 जी० ३।४०७, ४७७
 लोहितपाणि [लोहितपाणि] रा० ६७१
 लोही [लोही] जी० १।७३
 लोही [लौही] जी० ३।७८

व

व [इव] ओ० २७
 व [च] जी. ३।१२६।६
 वह [वाच्] ओ० ३७, ४०
 वहकच्छछिण्णम [वैकक्षछिन्नक] ओ० ६०
 वहगुत्त [वाग्गुत्त] ओ० १६४
 वहजोग [वाग्ग्योग] ओ० ३७
 वहजोगि [वाग्ग्योगिन्] जी० १।३१, ८७, १३३;
 ३।१०५, १५३, ११०६; ६।११३, ११४, ११७,
 १२०
 वहर [वज्र] ओ० १२, १६, ४८. रा० १०, १२,
 १७, १८, २०, २२, ३२, ६५, १२६, १५६, १६०,
 १६५, २५६, २७६, २८१, २८२, ७७४.
 जी० ३।७, ६१ से ६३, २८८, २९०, ३००, ३३२,
 ३३३, ३४६, ३७२, ४१७, ४५७, ५६६
 वहरणाभ [वज्रनाभ] जी० ३।३२३
 वहरनाभ [वज्रनाभ] रा० १५०
 वहरभंड [वज्रभाण्ड] रा० ७७४
 वहरभार [वज्रभार] रा० ७७४
 वहरभारय [वज्रभारक] रा० ७७४
 वहरमञ्जा [वज्रमञ्जा] ओ० २४
 वहररिसहणाराय [वज्ररूपभनाराच] ओ० ८२
 वहरागर [वज्राकर] रा० ७७४
 वहरामय [वज्रमय] रा० १६, ३५, ३७, ३९, ४०,
 ५२, ५६, १३०, १३२, १३५, १३७, १५३, १७५,
 १६०, २१७, २१८, २२२, २३१, २३५, २३६,
 २४०, २४५, २४७, २४९, २५४, २७०, २७६,

३००, ३२१, ३३८, ३५१. जी० ३।८७, १११,
 २६१, २६४, २८६, २८७, ३००, ३०२, ३०५,
 ३०७, ३११, ३१३, ३२२, ३२६, ३५५, ३७७,
 ३८७, ३९३, ३९७, ३९८, ४०१, ४०२, ४०७,
 ४१०, ४१५, ४३५, ४४२, ४६५, ४८६, ५०३,
 ५१६, ५६२, ६४३, ६५४, ६७२, ६७६, ७२४,
 ७२७, ८८१, ८८१, ९००, ९२७, ९४८, १०२५

वहरोयणराय [वैरोचनराज] जी० ३।२४० से
 २४३
 वहरोयणिव [वैरोचनेन्द्र] जी० ३।२४० से २४३
 वहरोसभणाराय [वज्ररूपभनाराच] ओ० १८५
 वहरोसभनाराय [वज्ररूपभनाराच] जी० १।११६
 वहविणय [वाग्विणय] ओ० ४०
 वहसमिय [वाक्समित] ओ० १६४
 वंक [वक्र] ओ० १
 वंग [वङ्ग] जी० ३।५६५
 वंग [व्यङ्ग] जी० ३।५६७
 वंचण [वञ्चन] रा० ६७१
 वंचणया [वञ्चनता] ओ० ७३
 वंजण [व्यञ्जन] ओ० १५, १४३. रा० ६७२,
 ६७३, ८०१. जी० ३।५६६
 वंबद [वन्द]—वंबद. ओ० २१.—वंबदति
 ओ० ४७. रा० १०.—वंबदति. रा० ८.
 जी० ३।४५७.—वंबद. रा० ६.—वंबदामि.
 ओ० २१. रा० ८.—वंबदामो. ओ० ५२.
 रा० १०.—वंबदिज्जाह. रा० ७०६.
 —वंबदिस्तति रा० ६०४.—वंबदेज्जा. रा०
 ७७६
 वंब [वृन्द] ओ० ७०, ७१. रा० ६१, ६६२, ७१६,
 ८०४
 वंबण [वन्दन] ओ० २, ५२. रा० १६, ६८७, ६८९
 वंबणकलस [वंदनकलश] ओ० २, ५५. रा० ३२,
 १३१, १४७, २५८, २८१, २८०. जी० ३।३०१,
 ३२०, ३५५, ३७२, ४१६, ४४७, ४५६, ८८६
 वंबणकाम [वन्दनकाम] ओ० ५१

वंदणघड [वन्दनघट] ओ० २, ५५. रा० ३२,
२८१. जी० ३१३७२, ४४७

वंदणज्ज [वन्दनीय] ओ० २. रा० २४७, २७६.
जी० ३१४०२, ४४२

वंदावंदय [वृन्दवृन्दक] रा० ६८८, ६८९

वंदित्तए [वन्दित्तुम्] ओ० १३६. रा० ६

वंदिता [वन्दित्वा] ओ० २१. रा० ८.

जी० ३१४५७

वंस [वंश] ओ० १४. रा० ७६, ७७, १३०, १७३,
१६०, ६७१. जी० ३१२६४, २८५, ३००, ५८८

वंसकवेल्लुय [वशकवेल्लुक] रा० १३०, १६०.

जी० ३१२६४, ३००

वंसग [वंशक] रा० १३०. जी० ३१३००

वंसा [वंशा] जी० ३१४

वक्कंति [अवक्रांति] जी० ११५१; ३१२१, १५६,
१०८२

वक्कंतिय [अवक्रांतिक] रा० ७६५

√वक्कम [अव + क्रम्]—वक्कमति. जी० ११५८

वक्ख [वक्ष] जी० ३१५६७

वक्खार [वक्षार, वक्षस्कार] रा० २७६.

जी० ३१४४५, ५७७, ६६८, ७७५, ६३७

√वग्ग [वल्ग]—वग्गति. रा० २८१.

जी० ३१४४७

वग्गण [वल्गन] ओ० ६३

वग्गवग्गु [वग्गवर्ग] जी० १६५११४

वग्गु [वाक्] ओ० ६८. रा० ७६७

वग्गुरा [वागुरा] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८,
७००

वग्गुलि [वल्गुलि] जी० ११११४

वग्घ [व्याघ्र] रा० २४. जी० ३१८४, २७७, ६२०

वग्घमुह [व्याघ्रमुह] जी० ३१२१६

वग्घारित्त [दे०] जी० ३३०३, ३६७, ४४७, ४५६

वग्घारिय [दे०] ओ० २, ५५. रा० ३२, १३२,

२३५, २८१, २६१, २६४, २६६, ३००, ३०५,

३१२, ३५५. जी० ३१३०२, ३७२, ४६१, ४६२,

४६५, ४७०, ४७७, ५१६, ५२०

√वच्च [वच्]—वच्चंति. जी० ३१२१६६

वच्चंसि [वच्चंसिवन्] ओ० २५. रा० ६८६

वच्चग [वच्चक] जी० ३१५८८

वच्चघर [वच्चोगृह] रा० ७५३

वच्छ [वक्षम्] ओ० १६, २१, ४७, ५४, ५७,

६३, ६५, ७२. रा० ८, ६६, ७१४, जी०

३५६६, ११२१

वज्ज [वज] ओ० २६. जी० ११५१, ५५, ६१,

८७, १०१, ११६, १२३, १२८; ३१५५, ६०५;

६१०

वज्ज [वज्र] जी० ३१५६७

वज्जकंद [वज्रकन्द] जी० ११७३

वज्जरिसभनाराय [वज्ररूपभनाराय] जी०
३१५६८

वज्जित्ता [वर्जयित्वा] जी० ३१७७

वज्जिय [वर्जित] ओ० ४८. रा० ७७४,

जी० ३१५६८

वज्जेत्ता [वर्जयित्वा] रा० २४०. जी० ३१४०२

वज्जवत्तिय [वर्जवर्तित] ओ० ६०

वट्ट [वृत्] ओ० १, २, १६, ५५, १७०. रा० १२,

३२, ५२, ५६, २३१, २८१, २६१, २६४, २६६,

३००, ३०५, ३१२, ३५५, ७५८, ७५९.

जी० ११५; ३१२२, ४८ से ५०, ७७ से ७९,

८६, २६०, २७४, ३५२, ३७२, ३६३, ४०१,

४४७, ४५६, ४६१, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७,

५१३, ५२०, ५६४, ५६६, ५६७, ७०४, ७६३,

७६६, ८१०, ८२१, ८३१, ८४८, ८५६, ८५९,

८६२, ८६५, ८६८, ८७१, ८७४, ८७७, ८८०,

८१०, ८२५, ८२७ से ८३२, ८३८, ८४३, १०७१,

१०७२

√वट्ट [वृत्]—वट्टसि. रा० ७६७.---वट्टिस्सामि.

रा० ७६८

वट्टक [वर्तक] जी० ३१५८७

वट्टखेहु [वृत्तखेल] ओ० १४६. रा० ८०६

वट्टभाव [वृत्तभाव] ओ० ५, ८. जी० ३१२७४
 वट्टमग [वृत्तमार्ग, वृत्तमार्ग] ओ० ५६
 वट्टमाण [वृत्तमान] ओ० ४७. रा० २८१, ८१५.
 जी० ३, ४४७
 वट्टमाल [वृत्तमाल] जी० ३:५८२
 वट्टलोह [पाय] [वृत्तलोहपात्र] ओ० १०५, १२८
 वट्टलोह [बंधण] [वृत्तलोहबन्धन] ओ० १०६,
 १२६
 वट्टवेतङ्ग [वृत्तवेताढ्य] जी० ३:४४५
 वट्टवेयङ्ग [वृत्तवेताढ्य] रा० २७६. जी० ३:४४५,
 ७६५
 वट्टि [वृत्ति] जी० १:७०, ३:५८६
 वट्टिज्जमाणचरय [वृत्त्यमानचरक] ओ० ३४
 वट्टित्ता [वृत्तित्ता] रा० ७७६
 वट्टिय [वृत्तित] ओ० १६, ७१. रा० ६१, १३३,
 २४५, ७६८, ७७७. जी० ३:१७२, ३०३, ५६६,
 ५६७
 वड्ढभिया [वड्ढभिका] रा० ८०४
 वड्ढभी [वड्ढभी] ओ० ७०
 वड्ढसग [अवतंसक] ओ० १०
 वड्ढसय [अवतंसक] ओ० १२. जी० ३:५८४
 वड्ढसग [अवतंसक] ओ० ५, ८, ६४. रा० १२५,
 १४५. जी० ३:२६८, २७४, २८५, ७०२, ८०८,
 ८२६, १०३६
 वड्ढसय [अवतंसक] रा० १२५
 १. वट्टु [वृत्तु] - वड्ढइ. जी० ३:७३१. - वड्ढए.
 जी० ३:८३८:१४. - वड्ढइति. जी० ३:७२३
 वण [वण] रा० ४५, ६५४, ६५५, ७६५.
 जी० ३:५५४, ५८१
 वण (वया) [वनलता] जी० ३:२६८
 वणत्थि [वनाधिन्] रा० ७६५
 वणप्फइकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० ३:१६६
 वणप्फति [वनस्पति] जी० ३:१२३
 वणप्फतिकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० ३:१२६,
 १६६

वणमाला [वनमाला] ओ० ४७, ४८, ७२.
 रा० १३६, २१०, २१२. जी० ३:३०६, ३५४,
 ३७३, ५६१, ६४७, ६७३, ८८६, ८८८
 वणराइ [वनराजि] रा० ६५४, ६५५. जी०
 ३:२७६, ५५४, ५५५, ५८५, ६३१
 वणरात्ति [वनराजि] रा० २६
 वणलया [वनलता] ओ० ११, १३. रा० १७, १८, २०,
 ३२, ३७, १२६, १४५. जी० ३:२८८, ३००, ३११,
 ३७२, ५८४
 वणलयापविभत्ति [वनलताप्रविभक्ति] रा० १०१
 वणसंड [वनषण्ड] ओ० ३, ४, ८. रा० ३, १७०,
 १७१, १७४, १८२, १८४, १८६, १८६, २०१,
 २३३, २६३, ६५४, ६५५, ७०३, ७०१, ७८२,
 ७८६, ७८७. जी० ३:२१७, २५६, २७३, २७७,
 २८६, २८४, २८६, २८८, ३५८, ३५६, ३६२,
 ३६५, ५५४, ६३२, ६३६, ६६१, ६६८, ६८१ से
 ६८३, ६८८, ६८६, ७०६, ७३६, ७५४, ७६२,
 ७६५, ७६८, ७६८, ८१२, ८२३, ८३६, ८५०,
 ८५७, ८८२, ८१०, ८११
 वणस्सइ [वनस्पति] जी० ८:३
 वणस्सइकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० १:१२, ६६
 से ७४; २:१३८; ३:१३१, १३५; ५:१६, १५;
 ८:१; ९:१८४, २६३
 वणस्सइकाइयत्त [वनस्पतिकायिकत्व] जी०
 ३:१२७
 वणस्सइकाल [वनस्पतिकाल] जी० १:१४२;
 २:६३, ६५ से ६७, १:१७, १:२६, १:२७, १:३०;
 ४:१२७; ९:११७, १:२७, २:६४, २:७१
 वणस्सति [वनस्पति] जी० ५:१७
 वणस्सतिकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० २:१०२,
 १२०, १:३१, १:३६, १:३८, १:४६, १:४६; ३:१३५;
 ५:१, ३, ६, १८ से २०; ८:४, ५; ९:१८२, २:५६,
 २:५८, २:६६
 वणस्सतिकाल [वनस्पतिकाल] जी० २:८६ से
 ८८, ९० से ९२, १:१६, १:३१, १:३३; ३:११३४

११३७; ४।७; ५।१७, ३०; ६।८, १०; ७।१०,
१३ से १५, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३,
२४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१,
३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१,
४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१,
५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१,
६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१,
७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१,
८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१,
९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००

वर्णिय [वर्णिय] ओं १

वर्णोवजीवि [वर्णोवजीवित्] रा० ७६५

वर्ण [वर्ण] ओं २, १३, २३, २५, ४७, ४९ से ५१,
५५, ७२, १६९, १७०, १६४. रा० ६, १२, २४
से २६, ३२, ४५, ५२, ५६, १२८, १३०, १७१, १९६,
२३१, २७७, २८१, २८५, २९१, २९३ से २९६,
३००, ३०५, ३१२, ३५५. जी० १।५, ३४, ३८, ५०,
५८, ७३, ७८, ८१; ३।५८, ८३, ८७, ९४, १२७,
२७१, २७७ से २८२, ३००, ३०६, ३५३, ३६०,
३७२, ३९३, ४४७, ४५१, ४५७ से ४६२, ४६५,
४७०, ४७७, ५१६, ५२०, ५५४, ५७८, ५८०,
५८६, ५९१, ५९२, ५९५, ५९७, ६०१, ६०२,
६३७, ६४५, ६४८, ६५६, ६५९, ७२४, ७२७, ७३८,
७४३, ७६३, ८६०, ८६६, ८७२, ८७८, ९७२,
१०७५, १०७६, १०८१, १०८३ से १०८६

वर्णो [वर्णो] जी० १।३५, ५०, ६६, १३६

वर्णक [वर्णक] ओं ६३, १६१, १६३

वर्णल [वर्णल] रा० २४३, जी० ३।२१७

वर्णतो [वर्णतो] जी० ३।२२, २७, ४५

वर्णमंत [वर्णमंत] जी० १।३३, ३४

वर्णय [वर्णय] रा० ६६, १५६, १६४, १७०, २०१,
२०२, २०४ से २०८, २१६, २३८, २३९, २६१,
२६३. जी० ३।२६८, ३१५ से ३१७, ३२०, ३२१,
३३८, ३५४, ३५५, ३५८, ३६२, ३६३, ३६६,
३६८, ३७३, ३७४, ३७८, ३८५, ३८६, ४०१४०६,
४२३, ४२५, ४२८, ६३२ से ६३४, ६३६ से ६४१,
६४६, ६४७, ६५०, ६६१, ६६८, ६७३, ६७४,
६७८, ६७९, ६८३ से ६८५, ६८६, ७०६, ७३६,
७५४, ७५६, ७५९, ७६२, ७६८, ८१२, ८२३, ८३६,

८५०, ८५७, ८८२, ८८४, ८८५, ८८७, ९१०,
९११, ९३६, १००८

वर्णसंजलनया [वर्णसंज्वलनता] ओं ४०

वर्णाभ [वर्णाभ] रा १२५. जी० ३।७७, ६३७,
६५९, ६६४, ७३८, ७४३, ७६३, ८१६, ८५४,
८७२

वर्णावास [वर्णावास] रा० १६, २०, २५ से २६,
३७, ४५, १३५, १४६, १७५, १९०, २२८, २४५,
२५४, २७०. जी० ३।२६४, २७८ से २८२,
२८७, ३०५, ३११, ३२२, ३५६, ३८७, ४०७,
४१५, ४३५, ६४३, ६५४, ८६८

वर्त [वर्त] ओं १६. जी० ३।५६६

वर्तमंडल [वर्तमण्डल] ओं ६४

वर्तव्य [वर्तव्य] ओं ३३. जी० ६२५, ६८२

वर्तव्यता [वर्तव्यता] जी० ३।५६६, ८५६, ८८६,
९१३, ९२५, ९२७, ९३२, ९३४, ९३५

वर्तव्यया [वर्तव्यया] रा० ८२, २१५, ३२१, ७५०
से ७५३. जी० ३।३२, २५०, ४१२, ४३१, ४३४,
६७६, ६९१, ७०१, ७१०, ७७६, ८००, ८५६

वर्तिय [वर्तिय] ओं ५२. रा० १६, ६८७, ६८९

वर्त्य [वर्त्य] ओं २०, ३३, ४७, ४९, ५१ से ५३, ७२,
१०७, १२०, १३०, १४७, १४९, १५०, १६७.

रा० १५६, १५७, २५८, २७६, २८६, २९१,
६८५, ६८७, ६८९, ६९२, ६९८, ७००, ७१४,
७१६, ७१९, ७२६, ७५२, ७८६, ७९४, ८०२,
८०८, ८१०, ८११. जी० ३।३२६, ४१६, ४४७,
४५२, ५६५, ६७३, ७७५, ८७८, ९३७, ११२२

वर्त्यत [वर्त्यत] रा० ६६

वर्त्यविहि [वर्त्यविधि] ओं १४६. रा० ८०६

वर्त्यव्य [वर्त्यव्य] रा० २८२. जी० ३।४४२, ४४८,
५२७

वर्त्यव्यव [वर्त्यव्यव] जी० ३।३५०, ४४६, ५६३

वर्त्यि [वर्त्यि] रा० ७६३. जी० ३।५६७

१. वर्तं च सूत्रवर्तनकम् [ओं वृ०] ।

वर्तं - सूत्रवर्तनकम् [जी० वृ०] ।

वत्सु [वस्तु, वास्तु] ओ० १

वत्सुलगुम्म [वास्तुलगुत्तम] जी० ३।५८०

वत्सुविज्जा [वास्तुविद्या] ओ० १४६. रा० ८०६

√वद [वद्]—वदह. ओ० ६६. रा० ६६५.

—वदेज्जा. रा० ७५१

वदण [वदन] जी० ३।५६६ से ५६८

वदित्ता [वदित्वा] ओ० ७६

वद्लियाभत्त [वार्दलिकामत्त] ओ० १३४

वद्वण [वर्धन] जी० ३।५६२

वद्वणी [वर्धनी] जी० ३।५८७

वद्वमाण [वर्धमान] ओ० ४८, ६८

वद्वमाणय [वर्धमानक] ओ० १२, ६४. रा० २१,

२४, ४६, २६१. जी० ३।२७७, २८६

वद्वमाणा [वर्धमाना] रा० २२५. जी० ३. ३८४,

८६६

√वद्वव [वर्धय]—वद्ववेह. ओ० २०. रा० ६८०।

—वद्ववेति. रा० १२. जी० ३।४४२.

—वद्ववेति. रा० ४६

वद्ववेत्ता [वर्धयित्वा] ओ० २०. रा० १२.

जी० ३।४४२

वद्व [वप्र] रा० १७४. जी० ३।११८, ११६, २८६

वद्विणी [वे०] ओ० १

वद्विमय [वर्मित] रा० ६६४, ६८३. जी० ३।५६२

वद्व [वचस्] ओ० २४. रा० ८१५

वद्व [वयस्] ओ० ४७

वद्व [वत] ओ० २५, ४६

√वद्व [वद्]—वद्वस्मति. रा० ८०२.—वद्वज्जा.

रा० ७५०.—वद्वइ. ओ० ७१.—वद्वयामि.

रा० ७३४.—वद्वयामि. ओ० २०. रा० ७३४.

जी० ३।४४८.—वद्वयासी. रा० ८.

जी० ३।४४२.—वद्वयाहि. रा० १३

√वद्व [वच्]—वद्वच्छं. ओ० १६५।१७.

जी० ३।२२६

वद्वयंस [वयस्य] जी० ३।६१३

वद्वयंसय [वयस्यक] रा० ६७५

वद्वयगुत्त [वचोगुत्त] ओ० २७, १५२. रा० ८१३

वद्वयजोग [वचोयोग] ओ० १७५, १७७, १७६, १८२

वद्वयण [वचन] ओ० ४६, ५६, ५७, ५६, ६१, ६६.

रा० १०, १४ से १६, १८, ७४, २७६, ६५५, ६८१,

६६६, ७०७. जी० ३।४४५, ५५५

वद्वयण [वदन] ओ० १५, १६, २१, ५४. रा० ६७२.

जी० ३।५६७

वद्वयवलिद्य [वचोबलिक] ओ० २४

वद्वयरामय [वज्रमय] रा० १७४

वद्वर [वर] ओ० १२, ५, ८ से १०, १२ से १४, १६,

२१, ४६, ४८, ४६, ५१, ५४, ५७, ५६, ६३ से ६५,

६७ १०७, १५३, १६५, १६६, १७२. रा० ३, ४,

८, ९, १२, १३, २८, ३२, ४७, ५२, ५६, ६८ से ७०,

७६, १२६, १३१ से १३३, १४७, १४८, १५६,

१६२, १०३, १८५, २१०, २१२, २२८, २३१, २३६,

२४०, २७७, २८०, २८३, २८६, २६१, २६२, ३५१,

५६४, ६५७, ६६४, ६७१, ६८१, ६८३, ७१०,

७१४, ७६५, ७७४, ७६४, ८०२, ८०४, ८१४.

जी० ३।२७४, २८१, २८२, २८५, २६७, ३०० से

३०३, ३२१, ३३२, ३३५, ३५४, ३७२, ३७३,

३८७, ४४३, ४४६ से ४४६, ४५७, ५१६, ५४७,

५५७, ५६२, ५८६, ५६१ से ५६३, ५६५ से ५६७,

६०४, ६४७, ६७२, ८५७, ८६०, ८८५

√वद्वर [वरय]—वद्वरइ. जी० ३।८३८, १६

वद्वरंग [वराङ्ग] जी० ३।३२२

वद्वरदान [वरदानम्] रा० २७६. जी० ३।४४५

वद्वरपुरिस [वरपुरय] जी० ३।२८१

वद्वराह [वराह] ओ० १६, ५१. रा० २४, २७.

जी० ३।२७७, २८०, ५६६, १०३८

वद्वरिसघर [वर्षघर] ओ० ७०. रा० ८०४

वद्वरण [वरुण] जी० ३।७७५, ८५७

वद्वरणपभ [वरुणप्रभ] जी० ३।८५७

वद्वरणवर [वरुणवर] जी० ३।८५१, ८५६, ८५७,

८५६

वद्वरुणोद [वरुणोद] जी० ३।२८५, ८५६, ८६०,

८६२, ८५८, ८६३

बलवत्त [बलवत्त] जी० ३३२२, ५६३
 बलभी [बलभी] जी० ३६०४, ७६३
 बलभीघर [बलभीगृह] जी० ३५६४
 बलय [बलय] जी० १६६; ३३७ से ४०, ४२,
 ४४ से ५०, ५६३, ७०४, ७६३, ७६६, ८१०,
 ८२१, ८३१, ८४८, ८५६, ८६२, ८६५, ८६८,
 ८७१, ८७४, ८७७, ८८०, ८२५
 बलयमयग [बलयमृतक] ओ० ६०
 बलयामुह [बडवामुख] जी० ३१७२३
 बलयावलिपविभक्ति [बलयावलिप्रविभक्ति]
 रा० ८५
 बलि [बलि] जी० ३५६७
 बलित [बलित] जी० ३५६६
 बलिय [बलिय] ओ० १५, १६. रा० १२, ६७२,
 ७५८ से ७६१. जी० ३५६७
 बल्ली [बल्ली] जी० १६६, ३१७२
 बवगत [व्यपगत] जी० ३५६७, ६१०, ६१२ से
 ६१६, ६२४, ६२७, ६२८
 बवगय [व्यपगत] ओ० १४, ६२. रा० ६७१.
 जी० ३६०७, ६०६, ६२२
 बवरोव [व्यप + रोपय]—बवरोवएज्जा.
 रा० ७५१—बवरोविज्जइ. रा० ७६७
 —बवरोवेमि. रा० ७५६—बवरोवेहि.
 रा० ७५१
 बवरोवेत्ता [व्यपरोप्य] रा० ७५६
 बवस [वि + अव + सो]—बवसइ. रा० २८८.
 जी० ३५५४
 बवसइत्ता [व्यवसाय] रा० २८८. जी० ३५५४
 बवसाय [व्यवसाय] ओ० ४६. रा० २८८.
 जी० ३५५४
 बवसायसभा [व्यवसायसभा] रा० २६६, २७१,
 २७२, २८६, २८८, ५६४, ५६६, ५६७, ६१६,
 ६३४, ६३५. जी० ३५३४, ४३६, ४३७, ४५२,
 ४५४, ५४७, ५४६ से ५५३
 बवहार [व्यवहार] रा० ६७५

बवहारग [व्यवहारक] रा० ७६६
 बवहारि [व्यवहारिन्] रा० ७६६
 बस [वस] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२, ६३,
 ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४, १६ से
 १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७, २७६,
 २८१, २६०, ६५५, ६८१, ६८३, ६६०, ६६५,
 ७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८,
 ७२५, ७२६, ७७४, ७७८. जी० ३५४३, ४४५,
 ४४७, ५५५
 बस [वस]—बसाहि. ओ० ६८. रा० २८२.
 जी० ३५४८
 बसंतलया [वासन्तीलता] रा० २४
 बसट्टमयग [वशात्तमृतक] ओ० ६०
 बसण [वसन] रा० २६, २८, ६६, ७०, १३३.
 जी० ३१२७६, २८१, ३०३, ११२१ से
 ११२३
 बसणभूत [व्यसनभूत] जी० ३६२८
 बसणुप्पाडियग [उत्पादितकवृषण] ओ० ६०
 बसभ [वृषभ] ओ० २७. रा० ८१३.
 जी० ३१११५
 बसमाण [वसत्] रा० ६८३, ७०६
 बसह [वृषभ] रा० २४
 बसहि [वसति] ओ० ३७, ११८, ११६, १६५.
 जी० ३६०३
 बसु [वसु] जी० ३१११७
 बसुंधरा [वसुन्धरा] ओ० २७. रा० ८१३.
 जी० ३१६२२
 बसुगुत्ता [वसुगुप्ता] जी० ३१६२२
 बसुमित्ता [वसुमित्रा] जी० ३१६२२
 बसु [वसु] जी० ३१६२२
 बह [वध] ओ० ४६, ७३, १६१, १६३.
 रा० ६७१
 बहक [वधक] जी० ३१६१२
 बहमाणय [बहमानक] ओ० १११ से ११३, १३७,
 १३८
 वा [वा] ओ० ५२. रा० ६. जी० ३१११७

वाहज्जंत [वाद्यमान] रा० ७७
 वाइत्त [वादित्र] रा० ११४, २८१
 वाइय [वाद्य] जी० ३, ४४७
 वाइय [वादित] ओ० ६८, १४६. रा० ७, ७८,
 ८०६. जी० ३, ३५०, ५६३, १०२५
 वाइय [वातिक] ओ० ११७. रा० ७६६
 वाइय [वाचिक] ओ० ६६
 वाड [वायु] ओ० ४६. जी० १, १२८, १३३;
 २ १३०, १३६; ३: ३०७, ३६३; ५: ११७, २०, २४,
 २५, २७
 वाडकाइय [वायुकायिक] जी० २, १३८; ५: १, ६,
 २६, ३१, ३३, ३६; ८: ५; ९: १८२, १८४, २५६,
 २५७, २६२, २६६
 वाडकाय [वायुकाय] रा० ७७१. जी० ३, १३५,
 ७२५, ७२८
 वाडक्कलिया [वातोत्कलिका] जी० १, ८१
 वाडक्काइय [वायुकायिक] जी० १, ७५, ८०, ८२;
 २: १०२, १४६, १४६; ३: १६५; ५: ८, १४, २०,
 ८१, ३
 वाडब्भाम [वातोद्भाम] जी० १, ८१
 वाड्याय [वायुकाय] रा० ७७१
 वाड्येग [वायुवेग] जी० ३, ५६८
 वाएत्ता [वाचयित्वा] रा० २८८. जी० ३, ४५४
 वाकवासि [वलकवासिन्] ओ० ६४
 √वागर [वि + आ + कृ]—वागरेइ. ओ० ६६
 वागरण [व्याकरण] ओ० २६, ६७. रा० १६,
 ७१६, ७६८
 वागरमाण [व्याकुर्वाण] ओ० २६
 वागरेयब्ध [व्याकर्तव्य] जी० ३, ७७
 वाघाइम [व्याघातिन् व्याघातिम] ओ० ३२.
 जी० ३, १०२२
 वाघातिम [व्याघातिन्, व्याघातिम] जी० ३, १०२२
 वाघाय [व्याघात] जी० २, ४६, ८२
 वाड [वाड, वाट] जी० ३, ८७
 वाण [वाण] ओ० १३
 वाणपस्थ [वानप्रस्थ] ओ० ६४

वाणमंतर [वानव्यन्तर] ओ० ४६, ८६ से ६३.
 रा० ११, ५६. जी० १, १०१, १३५; २: १५,
 १६, ७१, ७२, ६५, ६६, १४८, १४६; ३: २१७,
 २३०, २५१, २६७, २६८, ३५८, ४०२, ४४६,
 ४४८, ४५५, ४५७, ६३७, ६५६, ७६०, ८५७, ६१७
 वाणमंतरी [वानव्यन्तरी] जी० २, ३८, ७१, ७२,
 १४८, १४६
 वाणिज्ज [वाणिज्य] जी० ३, ६०७
 वात [वात] रा० १७३
 वातकरग [वातकरक] जी० ३, ३५५, ४१६, ४४५
 √वाव [वादय्]—वादेति, जी० ३, ४४७
 वादित [वादित] जी० ३, ८४२, ८४५
 वावाहा [व्यावाहा] जी० ३, ६२०, ६२५
 वाम [वाम] ओ० २१, ४७, ५४. रा० ८, ७०,
 १३३, २६२, ७६७, ७६८, ७७६, ७७७. जी० ३, ४५
 वाम [वाम, व्याम^१] ओ० ५, ८ जी० ३, २७४
 वामण [वामन] जी० १, ११६
 वामणिया [वामनिका] रा० ८०४
 वामणी [वामनी] ओ० ७०
 वामहण [व्यामर्दन] ओ० ६३
 वामहृत्थ [वामहस्त] जी० ३, ३०३
 वामुत्तम [दे० वामोत्तक, व्यामोत्तक] जी० ३, ५६३
 वाय [वात] ओ० ४६, ६४. रा० ४०, ५०, ५२, ५६,
 १३२, १३७, २३१, २४७, २८५, ७७१.
 जी० ३, २६५, २८५, ४५१, ५८०, ७२६
 √वाय [वाचय्]—वाएति. रा० २८८.
 जी० ३, ४५४. वायति.—ओ० ४५
 √वाय [वादय्]—वाहज्जइ रा० ७८३—वाएति
 रा० ११४
 वायंत [वादयत्] ओ० ६४
 वायकरग [वातकरक] रा० १, ५३, २५८, २७६.
 जी० ३, ३२६
 वायणा [वाचना] ओ० ४२, ४३

१. अनेकाभिर्नरवामाभिः सुप्रसारिताभिः (ओ०वृ०
 अनेकैर्नरव्यामैः पुरुषव्यामैः सुप्रसारितैः
 (जी०वृ०)

वायमंडलिया [वातमण्डलिका] जी० १।८१
वायाम [व्यायाम] ओ० ६३
वारण [वारण] ओ० १६
वारय [वारक] जी० ३।५६६
वारि [वारि] रा० १३१, १४७, १४८, १८०.
 जी० ३।३०१, ४४६
वारिसेणा [वारिसेणा] रा० २२५. जी० ३।३८४,
 ८६६
वारुणि [वारुणी] जी० ३।८६०
वारुणिकंत [वारुणिकान्त] जी० ३।८६०
वारुणिवरोदय [वारुणीवरोदक] जी० ३।८५७
वारुणी [वारुणी] जी० ३।५८६
वारुणोद [वारुणोद] जी० ३।२८६
वारुणोदय [वारुणोदक] जी० १।६५
वारुणोयम [वारुणोदक] रा० १७४. जी० १।७४
वाल [व्याल] ओ० ११७. रा० ७६६.
 जी० ३।३००, ६२५, ८२२
वाल [वाल] रा० १६०, २५६. जी० ३।३३३,
 ४१७
वालम [वालक] ओ० १३. रा० १७, १८, २०,
 ३२, ३७, १२६. जी० ३।२८८, ३००, ३११,
 ३७२
वालमग [बालाग] जी० ३।७८८, ७८६
वालमगपोतिया [दे० बालागपोतिका] जी० ३।६०४
वालरुवम [व्यालरूपक] रा० १३०
वालरुवय [व्यालरूपक] रा० २६४, २६६ से
 २६६, ३१२, ४७३. जी० ३।४५६, ४६१, ४६२,
 ४७७, ५३२
वालवीइय [वालवीजित] ओ० ६३
वालवीयणम [वालवीजनक] ओ० ६६
वालवीयणी [वालवीजनी] ओ० ६७
वाली [दे०] रा० ७७
वालुयप्पभा [बालुकाप्रभा] जी० ३।३५, ४१, ४३,
 ४४, ६६, ११२
वालुया [बालुका] रा० १३०, १३७, १७४, २४५.

जी० ३।२८६, ३००, ३०७, ४०७
वालुयापुदवी [बालुकापुदवी] जी० ३।१८५, १८८
वालुयासंवारय [बालुकासंस्तारक] ओ० ११७
वावण्ण [व्यापन्न] जी० ३।८४
वावत्तरि [द्विमत्तति] ओ० १४६
वावी [वापी] ओ० ६, ६६. रा० १७४, १७५,
 १८०. जी० ३।२७५, २८६, २८७, २६२, ५७६,
 ५६७, ६६४, ८७५, ८८१, ६४८
वास [वर्ष] ओ० ६८, ८६ से ६५, ११४, १४०,
 १४१, १४५, १४४, १५५, १५७ से १६०, १६५,
 १६६, १८८, १६२. रा० ८ से १०, १२, १३,
 १५, ५६, २७६, २८१, ६६८, ७६६, ८०५, ८१६.
 जी० १।५१, ५५, ५६, ६१, ६५, ७४, ८२, ८७, ६६,
 १०१, १०३, १११, ११२, ११६, ११६, १३३,
 १३६, १३७; २।३५ से ३६, ४१, ६६, ७३, ६२,
 ६३, ६६, ६७, १०८, ११०, १११, ११८, १२६,
 १३६; ३।१५५, १८६ से १६२, ४४५, ४४७,
 ७८५, ७८६, ७६५, ८४१, १०२७ से १०३०,
 १०३८, ११३१; ४।३, ६, ११, १२, १६; ५।५,
 ६, १०, १२, १४, १५, २८, २६; ६।२, ६; ७।३,
 १३; ६।२, ४, २१०, २१४, २२४, २२८, २३४,
 २४१, २६६, २७७
वास [वास] रा० ३०, ६८३, ७०६. जी० ३।२८३
 ✓ **वास** [वृप्]—वासंति. रा० १२.
 जी० ३।४४७—वासह. रा० ६
वासंति [वासन्ती] जी० ३।५६७
वासंतिकलया [वासन्तिकलता] जी० ३।५८४
वासंतिमंडवग [वासन्तीमण्डपक] रा० १८४
वासंतिमंडवय [वासन्तीमण्डपक] रा० १८५
वासंतिय [लया] [वासन्तिकलता] जी० ३।२६८
वासंतियलया [वासन्तिकलता] ओ० ११.
 रा० १४५
वासंतियलयापविभत्ति [वासन्तिकलताप्रविभत्ति]
 रा० १०१
वासंतियागुम्म [वासन्तिकगुम्म] जी० ३।५८०
वासंतिसया [वासन्तीलता] जी० ३।२७७

वासंतीमंडवग [वासंतीमंडवक] जी० ३।२६६
 वासधर [वर्षधर] रा० २७६. जी० ३।२१७, २१६
 से २२१, २२७, ४४५, ६३२, ६६६, ७६५, ८४१,
 ९३७
 वासपरियाय [वर्षपर्याय] ओ० २३
 वासवहृत्य [वर्षवार्दलक] रा० १२३
 वासहर [वर्षधर] रा० २७६. जी० ३।४४५,
 ७७५, ७९५
 वासा [वर्षा] रा० ६, १२
 वासावास [वर्षावास] ओ० २६
 वासिकक [वार्षिक] रा० १६७. जी० ३।२६६
 वासित्ता [वर्षित्वा] रा० २०
 वासी [वासी] ओ० २६
 वासुदेव [वासुदेव] ओ० ७१. जी० ३।७६५,
 ८४१
 वासेत्ता [वर्षित्वा] रा० २०
 वाहन [वाहन] ओ० १४, २३, ५२, ५६, ६६, १४१.
 रा० ६७१, ६७४, ६७५, ६८७, ६९५, ७८७, ७८८
 ७६०, ७६१, ७६६
 वाहनशाला [वाहनशाला] ओ० ५६
 वाहणा [उपानह] ओ० ११७
 वाहा [बाहु] जी० ३।५६७
 वाहि [व्याधि] ओ० ७४।२. जी० ३।१२८,
 ५६७
 वाहित [व्याहत] जी० ३।२३६
 वि [अपि] ओ० ६७. रा० २७६
 विअट्टच्छउम [विवृत्तच्छदमन्] जी० ३।४५७
 विद्वय [द्वितीय] ओ० १८२
 विउक्कम [वि+उत्+कम्]—विउक्कमंति.
 जी० ३।८७
 विउल [विपुल] ओ० १, २, ५, ८, १४, १६, २३, ४६,
 ५२, ५५, ६८, १४१, १४७, १४६, १५०. रा० ७,
 १५, ३२, २२८, २७८, २७९, २८१, २८१, २८४,
 २८६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५, ६७१, ६७५,
 ६८०, ६८१, ६८३, ६८४, ६८७, ६९५, ६९६,

७००, ७०२, ७०४, ७०८, ७०९, ७१४, ७१६,
 ७६५, ७७४, ७७६, ७८७, ७८८, ७९६ ८०२,
 ८०८, ८१०, ८११. जी० ३।११०, ११७, २७४,
 ३७२, ४६१, ४६२, ४६५, ४७०, ४७७, ५१६,
 ५२०, ५६६
 विउलकयवित्ति [विपुलकृतवृत्तिक] ओ० १६
 विउलमह [विपुलमति] ओ० २४. रा० ७४४
 ५/विउव्व [वि+कृ]—विउव्वइ. रा० ३२.
 —विउव्वति. रा० १०. जी० ३।११०.
 —विउव्वति. रा० १६.—विउव्वहि. रा० १७.
 —विउव्विसु. जी० ३।१११६.—विउव्विस्सति.
 जी० ३।१११६
 विउव्विणिद्धिपत्त [विक्रियाद्धिप्राप्त] ओ० २४
 विउव्वणा [विकरण] जी० ३।१२७।४, १२६।२
 से ४
 विउव्वित्तए [विकर्तुम्] जी० ३।११०
 विउव्वित्ता [विकृत्य] रा० १० जी० ३।११०
 विउव्विन्न [विकृत] ओ० ४६
 विउव्वेमाण [विकुर्वाण] जी० ३।११०, १११५
 विउव्वेसग [व्युत्सर्ग] ओ० ३८, ४३, ४४
 विउव्वेसगारिह [व्युत्सर्गहि] ओ० ३६
 विओग [वियोग] ओ० ४६
 विओसरणया [व्युत्सर्जन] ओ० ६६, ७०. रा० ७७८
 विद [वृन्द] रा० ६८३. जी० ३।५८६
 विहणिज्ज [वृहणीय] ओ० ६३
 विकच्छमुत्तग [वैकक्षसूत्रक] रा० २८५
 विकल्प [विकल्प] ओ० ५७. जी० ३।५६४
 विकिट्ठ [विकुष्ट] ओ० १. रा० ६८३
 विकुस [विकुशा] ओ० ८, १०. जी० ३. ३८६, ५८१
 से ५८३, ५८६ से ५९५
 विक्कम [विक्रम] ओ० १६, २३. जी० ३।१७६,
 १७८, १८०, १८२, ५९६
 विकिरिज्जमाण [विकीर्यमाण] रा० ३०
 विक्कम्भ [विष्कम्भ] ओ० १३, १७०, १६२.
 रा० ३६, १२४, १२६ से १२६, १३७, १७०,
 १८६, १८८, १८९, २०१, २०४ से २१२, २१८,

२२१, २२२, २२४, २२६, २२७, २३०, २३१,
 २३३, २३८, २३९, २४२, २४४, २४६, २४७,
 २५१ से २५३, २६१, २६२, २७२. जी० ३।५१
 ८१, ८२, ८६, १२७, २१७, २२२, २२६, २६० से
 २६३, २७३, २९८, ३००, ३०७, ३१०, ३५१ से
 ३५५, ३५८, ३५९, ३६१, ३६२, ३६४, ३६५,
 ३६८ से ३७४, ३७६, ३७७, ३८०, ३८१, ३८३,
 ३८५, ३८८, ३९२, ३९३, ३९५, ४००, ४०१,
 ४०४, ४०६, ४०८, ४१२ से ४१४, ४२२, ४२५,
 ४२७, ४३७, ५७७, ६३२, ६३४, ६३६, ६४२,
 ६४४, ६४६, ६४७, ६४९, ६५३, ६५५, ६६१,
 ६६३, ६६८, ६७१ से ६७५, ६७६, ६८३, ६८५,
 ६८६, ७०६, ७२३, ७२६, ७३२, ७३६, ७३७,
 ७५४, ७५६, ७५८, ७६२, ७६५, ७६८, ७७०,
 ७९४, ७९५, ७९८, ८१२, ८२३, ८३२, ८३५,
 ८३६, ८५०, ८८२, ८८४, ८८५, ८८७, ८८८,
 ८९१, ८९३ से ८९५, ८९७, ८९९ से ९०१,
 ९०६, ९०७, ९१०, ९११, ९१८, ९५२, १०१० से
 १०१४, १०७३, १०७४

विकखरिज्जमाण [विकीर्यमाण] जी० ३।२८३

विकखेवणी [विकेवणी] ओ० ४५

विग [वृक] जी० ३।८४, २७७, ६२०

विगत [विगत] जी० ३।८४

विगतिय [विकसित] रा० ८, ७१४

विगोवइत्ता [विगोप्य] ओ० २३. रा० ६६५

विगह [विग्रह] ओ० ५६

विगहिय [विगृहीत] जी० ३।५६८

विचरिय [विचरित] जी० ३।११८, ११९

विचिक्की [दे०] रा० ७७

विचित्त [विचित्र] ओ० ६, ४७, ४८, ६३, ७२.

रा० १७३, २२८, ६८१. जी० ३।२७५, २८५,

३८७, ५८७, ५८९, ५९१, ६७२

विच्छड्डइत्ता [विच्छद्य] ओ० २३

विच्छड्डित्ता [विच्छद्य] रा० ६६५

विच्छड्डिय [विच्छदित] ओ० १४, १४१. रा० ६७१,
 ७९९

विच्छविय [विच्छविक] जी० ३।६६

विच्छिण्ण [विस्तीर्ण] ओ० १४, १९. रा० ६७५,
 ७७४. जी० ३।२६१, ३५२. ५६६, ५६७, ६३२,
 ६३६, ६८६, ८-२

विच्छिन्न [विस्तीर्ण] रा० ६७१

विच्छिण्यमाण [विस्पृश्यमाण] ओ० ६६

विच्छुय [वृश्चिक] जी० ३।८५

विजड [वित्यक्त] जी० ३।५४, ५६

विजडपुम्भ [वित्यक्तपुम्भ] जी० ३।५४, ५६

विजय [विजय] ओ० २०, ५३, ६२, ६४, ६८, १६२.

रा० १२, ४६, ५०, ५२, ५६, ७२, ११८, १३७,

२३१, २४७, २७६, २७६, ६६५, ६८३, ६८६,

७०७, ७०८, ७१३, ७२३. जी० ३।१८१, २६६ से

३०७, ३१५, ३३५, ३३६, ३३६ से ३५१, ३७२,

३९३, ४०२, ४१०, ४२६, ४३२, ४३५, ४३६ से

४५७, ४५५ से ५६५, ६०१, ६३८, ६६०, ६६५,

७०१, ७०७ से ७१०, ७१३, ७६२, ७७५, ७९९,

८००, ८१३, ८१४, ८२४, ८२५, ८५१, ८६८,

९१६, ९३७, ९३९, ९४०, ९४४

विजयदूस [विजयदूय] रा० ३८, ३९.

जी० ३।३१२, ३१३, ३३८, ६३४, ८६२

विजया [विजया] जी० ३।३५०, ३५१, ३५४, ३५५,

३५७, ३५८, ३६०, ४३६, ४४२, ४४५ से ४४८,

५५४, ५५५, ५५७, ७०४, ७१०, ७३६, ७४४, ९०२

विजाति [विजाति] जी० ३।७८१, ७८२

विज्जा [विद्या] ओ० २५. रा० ६८६

विज्जाधर [विद्याधर] जी० ३।७६५

विज्जाहर [विद्याधर] ओ० २४. रा० १७, १८,

२०, ३२, १२६. जी० ३।२८८, ३००, ३७२, ७६५,

८४०, ८४१

विज्जु [विद्युत्] ओ० ४८, ५७. रा० १३३.

जी० १।७८; ३।३०३, ५६०, ११२२

विज्जुकार [विद्युत्कार] जी० ३।८४१

विज्जुत [विद्युत्] जी० ३।६२६

विज्जुवंत [विद्युदन्त] जी० ३।२६६

विज्जुप्पभ [विद्युत्प्रभ] जी० ३।७४६
 विज्जुप्पभा [विद्युत्प्रभा] जी० ३।७५१
 विज्जुमुह [विद्युन्मुख] जी० ३।२१६
 विज्जुयंतरिय [विद्युदन्तरिक] ओ० १५८
 विज्जुयाइत्ता [विद्युतायित्वा] रा० १२
 ✓ विज्जुयाय [विद्युताय]— विज्जुयायति. रा० १२.
 जी० ३।४४७
 विज्जुयार [विद्युत्कार] जी० ३।४४७
 ✓ विज्जव [वि + ध्यापय]— विज्जवेज्जा. रा० ७६५
 विज्जाय [विद्ययान] रा० ७६५
 विट्ठर [विष्टर] जी० ३।५८७
 विडंम [विटङ्क] जी० ३।५६४
 विडाल [विडाल] जी० ३।६२०
 विडिम [दे० विटप] ओ० ५, ८, ५१. रा० २२७,
 २२८. जी० ३।२७४, ३८६, ३८७, ५६८, ६७२,
 ६७४, ६७६
 विणइय [विनयित] रा० ७२३
 विणट्ट [विनष्ट] जी० ३।८४
 विणमिय [विनत] ओ० ५, ८, १०. रा० १४५.
 जी० ३।२६८, २७४
 विणय [विनय] ओ० २, २३, ३८, ४०, ४७, ५२, ५६,
 ५७, ५९, ६१, ६६, ७०, ८३, १३६. रा० १०, १४,
 १८, ६०, ७४, २७६, ६५५, ६७१, ६८१, ६८७, ६६२,
 ७०७, ७१६, ७३७, ७७७, ७७८. जी० ३।४४५,
 ५५५
 विणयओ [विनयतस्] रा० ६६४
 विणयतो [विनयतस्] जी० ३।५६२
 विणयपडिदत्ति [विनयप्रतिपत्ति] रा० ७७६
 विणयसंपण [विनयसम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६
 विणासण [विनाशन] रा० ६, १२, २८१.
 जी० ३।४४७
 विणिच्छय [विनिश्चय] रा० ६८६
 विणिच्छिय [विनिश्चित] ओ० १२०, १६२.
 रा० ६६८, ७५२, ७८६
 विणिम्मयंत [विनिर्मुञ्चत्] रा० ३२, २६२.

जी० ३।३७२, ४५७
 विणिम्मयमाण [विनिर्मुञ्चत्] जी० ३।११८
 विणिवाय [विनिपात] ओ० ४६
 विणीत [विनीत] जी० ३।७६५, ८४१
 विणीय [विनीत] ओ० ६१. रा० ७६५, ७६६,
 ७७०, ८०४. जी० ३।५६८, ७६५, ८४१
 विणीयया [विनीतता] ओ० ११६
 विण्णय [विज्ञक] रा० ८०६, ८१०
 ✓ विण्णव [वि + ज्ञपय]— विण्णवेहि. रा० ६६६
 विण्णाण [विज्ञान] ओ० २३. रा० ७५८, ७५९,
 ७६५, ७६६, ७७०
 वितण्ह [वितुण्ह] जी० ३।१०६
 वितत [वितत] रा० २४, ११४, २८१.
 जी० ३।२७७, ४४७, ५८८
 विततपक्खि [विततपक्खिन्] जी० १।११३;
 २।१०
 वितार [वितार] रा० ७६
 वितिष्कंत [व्यतिक्रान्त] रा० ८०१
 वितिमिर [वितिमिर] जी० ३।५८६
 वित्त [वित्त] ओ० १४, १४१. रा० ६७१, ६७५
 वित्ति [वृत्ति] ओ० ६१ से ६३, १६१, १६३.
 रा० ७५२, ७७६
 वित्थड [विस्तृत] ओ० ७१. रा० ६१.
 जी० ३।८१, ८२; ८३८।१५, १०७३, १०७४
 वित्थरतो [विस्तरतस्] जी० ३।२५६
 वित्थार [विस्तार] जी० ३।७३
 वित्थिण्ण [विस्तीर्ण] ओ० १४१. रा० १७, १८,
 १२४, १२७, ७६६. जी० ३।५७७, ६६१, ७३६,
 १०३६
 विदिण्णविचार [विदत्तविचार] रा० ६७५
 विदित [विदित] ओ० २६
 विदिसा [विदिशा] जी० ३।६१८
 विदिसीवाय [विदिग्वात] जी० १।८१
 विदुपरिसा [विद्वत्परिषद्] रा० ६१
 विदेस [विदेश] ओ० ७०. रा० ८०४
 विदेह [विदेह] ओ० ६६. जी० २।८६

विदेहजंबू [विदेहजम्बू] जी० ३६६६
 विघाण [विघ्नान] जी० ३२५६
 विधि [विधि] जी० ३१६०, २५६, ४४७, ५५७ से
 ५५६, ५६५, ६३४
 विपंची [विपञ्ची] रा० ७७. जी० ३१५८
 विपक्क [विपक्व] जी० ३१५६२
 विपरिणामाणुपेहा [विपरिणामानुप्रेक्षा] ओ० ४३
 विपुल [विपुल] रा० ६५६, ७६५. जी० ३१४४४,
 ४४५, ४४७, ४५६, ५६६
 विप्वद्ध [विप्रकृष्ट] जी० ३१५६१
 विप्वओण [विप्रयोग] ओ० ४३
 विप्वजहणा [विप्रहाणि] ओ० १८२
 विप्वजहिता [विप्रहाय] ओ० १८२
 विप्वमुक्क [विप्रमुक्त] ओ० १४, २५, २७, ३६,
 १७२, १६५। रा० १२, १७३, २६१, २६३
 से २६६, ३००, ३०५, ३१२, ३५५, ६७१, ६८६,
 ८१३. जी० ३१२८५, ४५७
 विप्वरिणामइत्ता [विप्वरिणमय्य] जी० ११५०
 विप्वोसहिपल [विप्रुडोषधिप्राप्त] ओ० २४
 विप्वालिय [विस्फारित] जी० ३१५६६
 विफलीकरण [विफलीकरण] ओ० ३७
 विहभम [विभ्रम] जी० ३१५६४
 विभंगणणि [विभङ्गज्ञानिन्] जी० १।६६;
 ३।१०४, ११०७; ६।१६७, २०३, २०७, २०८
 विभत्त [विभक्त] जी० ३१५६७
 विभयमाण [विभजमान] जी० ३।८३१
 विभत्ति [विभक्ति] जी० ३१५६४
 विभाग [विभाग] जी० ३१५६१
 विभासा [विभाषा] जी० ३।२२७
 विभूह [विभूति] ओ० ६७. रा० १३, ६५७
 विभूति [विभूति] जी० ३।४४६
 विभूमण [विभूयण] ओ० ४६
 विभूसा [विभूषा] ओ० ३६, ६७. रा० १३,
 ६५७. जी० ३।४४६, ११२१ से ११२३
 विभूसित [विभूषित] जी० ३।४५१

विभूसिय [विभूषित] ओ० ६३, ७०. रा० २८५,
 २८६, ८०५. जी० ३।४५२
 विमउल [विमुकुल] ओ० १
 विमउलिय [विमुकुलित] जी० ३।५६०
 विमल [विमल] ओ० १५, १६, ४६, ४७, ५१, ६३,
 ६४, १६४. रा० ३२, ५१, ६६, ७०, १३०, १५६,
 १७४, २८८, २९२, ६६४, ६७२, ६८३.
 जी० ३।११८, ११६, २८६ ३००, ३३२, ३७२,
 ४५४, ४५७, ५६२, ५८६, ५६६, ५६७ ८६६
 विमलप्वभ [विमलप्रभ] जी० ३।८६६
 विमाण [विमान] ओ० ५१. रा० ७, १२ से १४,
 १२४ से १२६, १२६, १६२, १६३, १६६, १७०,
 २७४, २७६, २७६, २८१, २८२, ६५४, ६५५,
 ७६६. जी० ३।१७५ से १८२, २५७, ८४२,
 ८४५, १०२४ से १०२६, १०३८, १०३६,
 १०४३, १०४८, १०५६ से १०५६, १०६५,
 १०६७, १०७१, १०७३, १०७५ से १०८१,
 १०६७, ११११
 विमाणावास [विमानावास] रा० १२४.
 जी० ३।२५७, १०३८, १०३६, ११२८
 विमुक्क [विमुक्त] ओ० १६५।६, १८, २१.
 जी० ३।४५७ से ४६२, ४६५, ४७०, ४७७,
 ५१६, ५२०, ५५४, ५६७
 विमहावण [विस्मापन] ओ० ११६
 वियट्टछउम [विनृत्तछयन्] ओ० १६, २१, ५४.
 रा० ८
 वियड [विकट] ओ० १६. जी० ३।५६६, ५६७
 वियडावति [विकटापातिन्] जी० ३।७६५
 वियडावाति [विकटापातिन्] रा० २७६.
 जी० ३।४४५
 वियसंत [विकसत्] ओ० ४६
 वियसिय [विकसित] ओ० २१, ४७, ५४.
 रा० १३७. जी० ३।३०७
 वियाणंत [विज्ञानन्] ओ० १६५।१६
 वियाणय [विज्ञायक] रा० ८०४

विद्याणित्त [विज्ञाय] ओ० १४९. रा० ८१०
 विद्याणिय [विज्ञात] ओ० ७०
 विद्यालचारि [विकालचारिन्] ओ० १४८, १४९.
 रा० ८०९, ८१०
 विरइय [विरचित] ओ० ६, ६३. जी० ३१२७५
 विरचिय [विरचित] रा० ६९, ७०
 विरत [विरत] ओ० ४६
 विरय [विरत] ओ० १६८
 विरल्लिय [विरल्लित] जी० ३५९१
 विरसाहार [विरसाहार] ओ० ३५
 विरहित [विरहित] जी० ३१६१, ८४४
 विरहिय [विरहित] ओ० ३७. जी० ३१८७
 विराइय [विराजित] ओ० १४, ४७, ५७, ७२.
 रा० ७०, ६७१. जी० ३५९७, ११२१
 विरागया [विरागता] ओ० ४६
 विरायंत [विराजत्] ओ० २१, ५४, ५७. रा० ८,
 ७१४
 विरायमाण [विराजमान] ओ० १
 विराहय [विराधक] रा० ६२
 विरिय [वीर्य] जी० ३५९२
 विरुद्ध [विरुद्ध] ओ० ९३
 विरुवह्व [विरुवरूप] रा० ८१६
 विलविय [विलम्बित] रा० १०३, २८१.
 जी० ३५४७
 विलवणया [विलपनता] ओ० ४३
 विलविय [विलपित] ओ० ४६
 विलसिय [विलसित] ओ० १९
 विल्लास [विलास] ओ० १५. रा० ७०, ६७२,
 ८०९, ८१०. जी० ३५९७
 विलासित [विलासित] जी० ३५९६
 विलीन [विलीन] जी० ३५८
 विलेवण [विलेपन] ओ० ६३, १६१, १६३, १७०
 विलेवणविहि [विलेपनविधि] ओ० १४६.
 रा० ८०६
 विव [इव] ओ० १९. रा० १३३. जी० ३११११

विवच्चास [विपद्यास] रा० ७६७, ७६८, ७७६,
 ७७७
 विवणि [विपणि] ओ० १. जी० ३५०७
 विवर [विवर] रा० ७५४ से ७५७, ७९३
 विवागविजय [विवागविजय] ओ० ४३
 विवागसुवधर [विपावाश्रुतधर] ओ० ४५
 विवाह [विवाह] जी० ३५३१
 विवाहपणत्तिधर [व्याख्याप्रज्ञप्तिधर] ओ० ४५
 विवित्तसयणासणसेवणया [विवित्तसयणासण-
 सेवनता] ओ० ३७
 विविध [विविध] जी० ३१३०२, ३८७, ५८८, ५९४
 विविह [विविध] ओ० १, ४९, ५१, ११७. रा० २०,
 ४०, १३२, १३७, २२८, ७९६. जी० ३१२६५,
 २८८, ३०७, ३११, ५८६, ५८७, ५८९ से ५९३,
 ५९५, ६७२
 विवेग [विवेक] ओ० ४३, ७९ से ८१
 विवेगारिह [विवेकार्ह] ओ० ३९
 विस [विष] रा० ७९१, ७९४, ७९५
 विसज्जित [विसर्जित] रा० ६८५
 विसज्जिय [विसर्जित] ओ० २१. रा० ६८०
 ६९९, ७००, ७०२, ७१०
 विसप्पमाण [विसर्पित] ओ० २०, २१, ५३, ५४,
 ५६, ६२, ६३ ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२,
 से १४, १६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४,
 २७७, २७९, २८१, २९०, ६५५, ६८१, ६८३,
 ६९०, ६९५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४,
 ७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७७४, ७७८.
 जी० ३५४३, ४४५, ४४७, ५५५, ५९७
 विसभक्खियण [विषमक्षितक] ओ० ९०
 विसम [विषम] ओ० १७१. जी० ३५२३, ७०५,
 ७९७, ८११, ८२२, ८४९
 विसय [विशद] रा० १३३. जी० ३१३०३, ५९२,
 ५९६
 विसय [विषय] ओ० २३, ३७. रा० १५. जी०
 ३५७६, ६७७

विसह [विषह] ओ० २७. रा० ८१३

विसाण [विषाण] ओ० २७. रा० ८१३

विसाय [विषाद] ओ० ४६

विसारथ [विशारद] ओ० ६७, १४८, १४९.

रा० ६७५, ८०६, ८१०

विसाल [विशाल] ओ० ६४. रा० २२८. जी०

३३८७, ५६७, ६७२

विसाला [विशाला] जी० ३१६६६, ६१५

विसिद्ध [विशिष्ट] ओ० १६, ६३. रा० ३२, ५२

५६, १०५, २३१, २४७. जी० ३१२६७, ३७२,

३६३, ५६२, ५६६, ५६७, ६०४, ८५७

विसुज्जमान [विशुध्यमान] ओ० ११६, १५६

विसुद्ध [विशुद्ध] ओ० ८, १०, १४, ४६, १८३, १८४.

रा० २६२, ६७१. जी० ३३३८६, ४५७, ५८१

से ५८३, ५८६ से ५६५

विसुद्धलेस [विशुद्धलेष्य] जी० ३११६६, २०१,

२०३ से २०६

वितेस [विशेष] ओ० १६५, १७०. रा० ५४, १८८.

जी० ३१२६१५, २१७, २२६१५, ३५८, ५७६,

८३८, १३३

वितेसहीण [विशेषहीन] जी० ३१७३

वितेसाधिय [विशेषाधिक] जी० ३१८२

वितेसाहिय [विशेषाधिक] ओ० १७०, १६२. जी०

११४३; २१६८ से ७२, ६५, ६६, १३४ से १३८,

१४१ से १४६; ३१७३, ७५, ८६, १६७, २२२,

२६०, ३५१, ३६१, ६३२, ६६१, ६६८, ७३६,

८१२, ८३२, ८३५, ८३६, ८८२, १०३७, ११३८;

४११६ से २२, २५; ५११८ से २०, २५ से २७

३१ से ३६, ५२, ५६, ६०; ७१२०, २२, २३;

८५; ६५, ७, १४, ५५, १५५, १६६, १६६, १८४,

१६६, २०८, २३१, २५० से २५३, २५५, २६६,

२८६ से २६३

विस्संत [विशान्त] जी० ३१८७२

विस्सुयकित्तिय [विश्रुतकीर्तिक] ओ० २

विहंगिया [विहङ्गिका] रा० ७६१

विहग [विहग] ओ० १३, १६, २७. रा० १७, १८,

२०, ३२, ३७, १२६, ८१३. जी० ३१२८८, ३००,

३११, ३७२, ५६६

विहत्थि [विहस्ति] जी० ३१७८८

√विहर [वि+हृ] -विहरइ. ओ० १४. रा०

६. जी० ३१२३६.—विहरंति. ओ० २३. रा०

१८५. जी० ३११०६.—विहरति. रा० ७.

जी० ३१२३४.—विहरामि. रा० ७५२.—

विहराहि. ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३१४४८

—विहरिस्समइ. रा० ८१५.—विहारस्सति.

रा० ८०२.—विहरिस्तामि. रा० ७८७.

—विहरंज्जा. ओ० २१

विहरंत [विहरत्] रा० ७७४

विहरमाण [विहन्] ओ० १६, ३०, ७६, ७७, ६२,

६५, ११४, १५३, १५८, १५६, १६५. रा० ६८६,

७११, ७७४, ८१६

विहरित्तए [विहर्तुम्] ओ० ११७. रा० ७६१.

जी० ३१२०२४

विहारित्त [विहृत्य] ओ० १५५

विहव [विभव] रा० ५४

विहस्सति [वृहस्पति] ओ० ५०

विहाड [वि+घटय्]—विहाडेइ. रा० २८८.

जी० ३१५१६.—विहाडेति. ओ० ७४१५.

—विहाडेति. जी० ३१४५४

विहाडित्त [विघटय] रा० २८६

विहाडेत्ता [विघटय] रा० ३५१. जी० ३१४५४

विहाण [विधान] रा० ७१, ७५. जी० ११५८, ७३,

७८, ८१

विहाणमग्गण [विधानमार्गण] जी० ११३४, ३६,

३६

विहार [विहार] ओ० ३०, ६२, ६५, ११४, ११५,

१५३, १५८, १५६, १६५. रा० ८१४, ८१६

विहि [विधि] ओ० ६३. रा० २८१.

जी० ३१४७५. ४७६, ५८६, ५८८, ५६० से

५६५, ८३८, १३३; ५३०

विहिय [विहित] ओ० १५. रा० ६७२
 विहय [विधुय] जी० ३१५०
 विहूण [विहीन] जी० ३१२६८, ३६०
 वीहकंत [व्यतिक्रान्त] ओ० १४३, १४४.
 रा० ८०२
 वीहवइत्ता [व्यतिव्रज्य] ओ० १६२. रा० १२६.
 जी० ३१६३८
 वीहवयमाण [व्यतिव्रज्यत्] रा० १०, १२, २७६.
 जी० ३१४४५
 वीचि [वीचि] ओ० ४६. जी० ३१२५६
 वीचिपट्ट [वीचिपट्ट] जी० ३१५६७
 वीजेमाण [वीजयत्] जी० ३१४१७
 वीणगाह [वीणाग्राह] ओ० ६४
 वीणा [वीणा] रा० ७७, १७३. जी० ३१२८५
 वीतसोग [वीतशोक] जी० ३१६२७
 वीतिवइत्ता [व्यतिव्रज्य] जी० ३१७३६
 वीतिवतिसा [व्यतिव्रज्य] जी० ३१३५१
 √वीतिवय [वि + वति + व्रज्] — वीतिवइंसु.
 जी० ३१८४० — वीतिवइससति. जी० ३१८४०
 — वीतिवएज्जा. जी० ३१८६ — वीतिवयंति.
 जी० ३१८४०
 वीतिवयमाण [व्यतिव्रज्यत्] रा० ५६. जी० ३१८६,
 १७६, १७८, १८०, १८२
 वीतीवइत्ता [व्यतिव्रज्य] रा० १२६
 वीधि [वीधि] जी० ३१३५५
 वीरवलय [वीरवलय] ओ० ६३
 वीरासणिय [वीरासनिक] ओ० ३६
 वीरिय [वीर्य] ओ० ७१, ८६ से ६५, ११४, ११७,
 १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७. रा० ६१.
 जी० ३१५८६
 वीरिल्लद्धि [वीर्यलद्धि] ओ० ११६
 वीवाह [विवाह] जी० ३१६१४
 √वीसंद [वि + स्यन्द] — वीसंदति. जी० ३१५८६
 वीसंदित [विस्यन्दित] जी० ३१८७२
 वीसत्य [विश्वस्त] ओ० १
 वीससा [विससा] जी० ३१५८६ से ५६५

वीसाएमाण [विस्वादयत्] रा० ७६५, ८०२
 वीसादणिज्ज [विस्वादनीय] जी० ३१६०२, ८६०,
 ८६६, ८७२, ८७८
 वीहि [वीहि] जी० ३१६२१
 वीहि [वीधि] जी० ३१२६८, ३१८
 वीहिया [वीधिका] ओ० ५५. रा० २८१.
 जी० ३१४४७
 वीस [विशति] जी० ३११३६
 वुगाहेमाण [व्युद्ग्राहयत्] ओ० १५५, १६०
 √वुच्च [वच्] — वुच्चद. ओ० ८६. रा० १२३.
 जी० ३१२३६ — वुच्चंति. जी० ३१५८
 — वुच्चति. रा० १२३. जी० ३१२३६
 वुडुसावग [वृद्धसावक] ओ० ६३
 वुड्ढि [वृद्धि] जी० ३१७८१, ७८२, ८४१
 वुत्त [उक्त] ओ० ५६. रा० १०, १२, १४, १८,
 ६०, ६३, ६४, ७४, २७६, ६५५, ६८१, ७०१,
 ७०३, ७०७, ७२५, ७६२. जी० ३१४४५, ५५५
 वुप्पाएमाण [वृत्पादयत्] ओ० १५५, १६०
 वूह [व्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६
 वेइय [व्येजित] रा० १७३. जी० ६१२८५
 वेइयपुडंतर् [वेदिकापुटान्तर्] रा० १६७
 वेइयफलक [वेदिकाफलक] रा० १६७
 वेइया [वेदिका] रा० १७, १८, २०, ३२, १२६,
 १६७. जी० ३१३७२, ६०४, ७२३, ७७६, ७७७,
 ७७६, ६१०
 वेइयावाहा [वेदिकावाहा] रा० १६७
 वेडविय [विकारिन्] ओ० ५१
 वेडवियं [विकर्तुम्] रा० १८
 वेडविय [वैक्रिय] रा० २७६, २८०. जी० ११८२,
 ६३, ११६, १३५; ३१२६१४, ४४५, ८४२
 वेडवियभीसासरीर [वैक्रियकमिषकशरीर]
 ओ० १७६
 वेडवियलद्धि [वैक्रियलद्धि] ओ० ११६
 वेडवियसमुघात [वैक्रियसमुघात]
 जी० ३११११२, १११३

वेदविषयसमुच्चय [वैक्यसमुद्घात] रा० १०, १२,
१८, ६५, ७७६. जी० १।८२; ३।१०८, ४४५
वेदविषयसरीर [वैक्यसरीर] ओ० १७६.
जी० ६।१७०
वेदविषयसरीर [वैक्यसरीरिन्] जी० ६ १७०,
१७७, १८१
वेद [वृन्त] जी० ३।३८७, ६७२
वेग [वेग] ओ० ४६, ५७
वेच [व्युत्, व्यूत्] रा० ३७, २४५. जी० ३।३११,
४०७
वेजयंत [वैजयन्त] ओ० १६२. जी० ३।१८१,
२६६, ५६६, ५६७, ७०७, ७११, ७६६, ८१३,
८२४, ६४१
वेजयंती [वैजयन्ती] ओ० ६४. रा० ५०, ५२, ५६,
१३०, २३१, २४७. जी० ३।३०७, ३६३, ६१६,
१०२६
वेडंतिय [पाय] [दे०] ओ० १०५, १२८
वेडंतिय [बंधण] [दे०] ओ० १०६, १२६
वेढ [वेण्ट] रा० ७६७
वेढणग [वेण्टनक] जी० ३. ५६३
वेढिता [वेण्टित्वा] रा० ७६७
वेढिम [वेण्टिम] ओ० १०६, १३२. रा० २८५.
जी० ३।४५१, ५६१
वेणतिग [वेणतिकी] रा० ६७५
वेणु [वेणु] जी० ३।५८८
वेणुदेव [वेणुदेव] जी० ३।२५०
वेणुसलाइग [वेणुसलाकिकी] रा० १२
वेव [वेद] ओ० ६७. जी० २।१५१
√वेद [वेदम्]—वेदति. जी० ३।११२
वेदणा [वेदना] जी० ३।१११ से ११५, ११७,
१२८
वेदणासमुद्घात [वेदनासमुद्घात] जी० ३।१११२,
१११३
वेदणासमुच्चय [वेदनासमुद्घात] जी० ३।१०८,
१५७

वेदिया [वेदिका] जी० ३।२६६, २८८, ३००, ३७२,
७६५, ७६६ से ७७५, ७७८
वेदियापुडंतर [वेदिकापुटान्तर] जी० ३।२६६
वेदियाबाहा [वेदिकाबाहु] जी० ३।२६६
वेदेमाण [वेदयत्] ओ० ८६. रा० ७५१
वेदमाण्णी [वैमानिकी] जी० २।७१, ७२, १४८,
१४६
वेदमाण्य [वैमानिक] ओ० ५०. रा० ७, ११, १५,
से १७, ५५, ५६, ५८, ५९, १८५, १८७, २७६,
२८६, २६१, ६५७. जी० १।१३५; २।१५, १६,
४५, ४६, ७१, ७२, ६५, ६६, १४८, १४९; ३।२३०,
६१७, १०३८
वेद्य [वेद] ओ० २५. रा० ६८६, ७७१.
जी० १।१४, ११६; २।१५१; ६।६६
√वेद्य [वि+एज्]—वेद्य. रा० ७७१.—वेद्यति.
जी० ३।७२६
वेद्यंत [व्येजमान] रा० ७७१
वेद्यण [वेदन] रा० ७८७, ७८८
वेद्यण [दे० विक्रय] रा० ७७४
वेद्यणा [वेदना] ओ० १७, ४६, ७१, ७४. १६५.
रा० ७५१, ७६५. जी० १।८६; ३।७७, ११०,
१२७।४, ५, १२८।१, १२६।७
वेद्यणासमुच्चय [वेदनासमुद्घात] जी० १।२३, ८२.
१३३
वेद्यणिज्ज [वेदनीय] ओ० ८६, १७१
वेद्यणीय [वेदनीय] ओ० ४४
वेद्यहिय [वित्तदिक] ओ० २
वेद्यालिया [वेद्यालिकी] रा० १७३.
जी० ३।२८५
वेद्यावच्च [वेद्यावृत्त्य] ओ० ३८, ४१
वेर [वेर] जी० ३।६२७
वेरग [वैराम्य] ओ० ४६, ७४।५
वेरमण [विरमण] ओ० ७६, ७७, ७६ से ८१,
१२०, १४०, १५७. रा० ६६३, ६६८, ७१७,
७५२, ७८७, ७८६
वेराणुबंध [वेराणुबन्ध] जी० ३।६१२

वेरि | वैरिन् | जी० ३।६१२
 वेरिय | वैरिक | जी० ३।६३१
 वेरुलिय [वैडूर्य] ओ० ६४. रा० १०, १२, १८,
 ३२, ५१, ६५, १५४, १५६, १६०, १६५, १७४,
 २२८, २५६, २७६, २६२. जी० ३।७, ३३२,
 ३३३, ३४६, ३७२, ३८७, ४१७, ४५७, ६७२
 वेरुलियमणि [वैडूर्यमणि] जी० ३।२८६, ३२७
 वेरुलियमय [वैडूर्यमय] रा० १३०, १५३, २७०.
 २६२. जी० ३।३२२, ४३५
 वेरुलियामय [वैडूर्यमय] रा० १६, १३२, १७५,
 १६०, २३८. जी० ३।२६४, २८७, ३००, ३०२,
 ३२६, ३६८, ४५७, ६४३, ८७५
 वेलंघर | वेलंघर | जी० ३।७३४ से ७३६, ७४०,
 ७४२, ७४५, ७४७, ७८१, ७८२
 वेलंब | वेलम्ब | जी० ३।७२४
 वेलंबग | विडम्बक] ओ० १, २
 वेलंबगपेच्छा [विडम्बकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५.
 जी० ३।६१६
 वेलवासि [वलावासिन्] ओ० ६४
 वेला | वेला] ओ० ४६. जी० ३।७३२
 वेलु [वेणु] रा० ७७
 वेस [वेण] ओ० १५, ४६, ५३, ७०. रा० ७०,
 १३३, ६७२, ८०४. जी० ३।३०३, ५६७,
 ११२२
 वेसमण [वैश्रमण] ओ० ६५
 वेसमणमह [वैश्रमणमह] रा० ६८८.
 जी० ३।६१५
 वेसाणिय [वैषाणिक] जी० ३।२१६, २२१
 वेसाणियदीव [वैषाणिकद्वीप] जी० ३।२२१,
 २२५
 वेसासिय [वैश्वसिक] ओ० ११७. रा० ७५० से
 ७५३, ७६६
 वेहाणसिय [वैखानसिक] ओ० ६०
 वोच्छिणय [व्यक्च्छिन्नक] रा० ७५३

वोज्झ [उह्य] रा० २८५. जी० ३।४५१
 वोलट्टमाण [व्यपलोत्त्] जी० ३।७८४, ७८७
 वोसट्टमाण [विक्रयत्] जी० ३।७८४, ७८९
 \ वोसिर [वि + उत् + गृञ्]—वोसिरामि.
 ओ० ११७. रा० ७६६
 व्ज [इव] ओ० १६. रा० १३७. जी० ३।३०७

स

स | स] ओ० २, १२, १५, १६, ३०, ५४, ६० से ६५,
 ७०, ६७, १७०, १६४. रा० ७, ८, २१, २४, ३२,
 ३४, ३६, ३७, ४२, ४७, ५०, ५१, ५६, ५८, ६७,
 ६६, ७६, १२४, १४५, १५७, १६३, १६४, १६६,
 १७३, १८६, २०४ से २०६, २१६, २४३, २४५,
 २५५, २५६, २८०, ६७२, ६८१ से ६८३, ६६१,
 ६६२, ७००, ७०३, ७१४ से ७१६, ७७१, ८१५.
 जी० ३।३५, ३६, ४०, ४१, ४३, ४४, ४६, १७४,
 २६१, २६६, २६६, २७७, २८५, २८८, ३००,
 ३०६, ३०७-३११, ३३५, ३४०, ३५०, ३५२,
 ३५५, ३५६, ३६६, ३७२, ३७४, ३७८, ३८७,
 ३६५, ४०५, ४०७, ४१२, ४१६, ४२५, ४४६ से
 ४४८, ५५७, ५६३, ५६२, ५६६, ६५८, ६६३,
 ६७२, ६७३, ६८५, ७२८, ७३३, ७३७, ७४०,
 ७४२, ७४५, ७५०, ७६२, ७६५, ७६८, ७७०,
 ८३८।१२, १००६, १०३३, १०५४
 स [स्व] ओ० ६४, ७१. रा० ६, ११, १३, ५६, १५४
 २८१, ६८३, ७२३, ७२६, ७३२, ७३७, ७४७,
 ७७४. जी० ३।३२७, ३५६
 सह [स्मृति] ओ० ४३
 सहंविद्य [सेन्द्रिय] जी० ६।१५ से १७, ६६
 सह्य [शतिका] ओ० १८७. जी० ३।६८१
 सउण [शकुन] ओ० ६. रा० १७४. जी० ३।११।
 ११६, २७५, २८६, ६६६
 सउणहय [शकुनस्त] ओ० १४६. रा० ८०६, ८०
 सउणि [शकुनि] जी० ३।५६८
 सउणिज्ज्ञय [शकुनिज्जय] रा० १६२.
 जी० ३।३३५

संकंत [सङ्क्रान्त] रा० ७५३
 संकड [सङ्कट] ओ० ४६. रा० २८५.
 जी० ३१४५१
 संकण्य [सङ्कल्प] रा० ६. २७५, २७६, ६८८, ७३२,
 ७३७, ७३८, ७४६, ७४८ से ७५०, ७६५, ७६८,
 ७७३, ७७७, ७६१, ७६३ जी० ३१४४१, ४४२
 संकम [सङ्क्रम] जी० ३१८३८१२
 संकमण [सङ्क्रमण] जी० ३१८३८१२
 संकला [सङ्कला] रा० १३५, २७०.
 जी० ३१३०५, ४३५
 संकसमाण [सङ्कसत्] जी० ३१११८, ११६
 संकिट्ट [सङ्कट्ट] ओ० १
 √संकलित्स [सं+कलिष्]—संकलित्सन्ति.
 ओ० ७४१४
 संकु [सङ्कु] रा० २४. जी० ३१२७७
 संकुड्य [सङ्कुचित] ओ० ६६. जी० ३१८०
 संकुचियपसारिय [सङ्कुचितप्रसारित] रा० १११,
 २८१. जी० ३१४४७
 संकुय [सङ्कुच] जी० ३१८३८१५
 संकुल [सङ्कुल] ओ० ४६. रा० १४
 संकुसुमिय [सङ्कुसुमित] रा० ४५
 संख [सङ्ख] ओ० १६, २३, २७, ४७, ६७, १६४.
 रा० १३, २६, ३८, ७१, ७७, १६०, २२२, २५६,
 ६५७, ६६५, ८१३. जी० ३१२८२, ३१२, ३३३,
 ३८१, ४१७, ४४६, ५६६, ५६७, ६०८, ७३४,
 ७३५, ७४२ से ७४४, ८६४
 संख [साङ्ख्य] ओ० ६६
 संख (पाय) [सङ्खपात्र] ओ० १०५, १२८
 संख (बंधन) [सङ्खबंधन] ओ० १०६, १२६
 संखतल [सङ्खतल] रा० १३०. जी० ३१३००
 संखधमय [सङ्खध्मायक] ओ० ६४
 संखमाल [सङ्खमाल] जी० ३१५८२
 संखवाणिय [सङ्खवाणिज] रा० ७३७
 संखवाय [सङ्खवादक] रा० ७१
 संखान [सङ्खान] ओ० ६७

संखावतिय [सङ्ख्यावतिय] ओ० ३४
 संखिज [सङ्खिय] जी० ४१११
 संखित [सङ्खित] रा० १२३. जी० ३१२६१,
 ३५२, ६३२, ६६१, ६८६, ७३६, ८३६, ८८२
 संखितविउलतेयलेस [सङ्खितविउलतेजोलेश्य]
 ओ० ८२. रा० ६८६
 संखिय [शाङ्खिक] ओ० ६८
 संखियवाय [शाङ्खिकावादक] रा० ७१
 संखिया [शाङ्खिका] रा० ७१, ७७. जी० ३१५८८
 संखेज [सङ्खियेय] रा० १०, १२, १८, ६५, २७६.
 जी० ११५८, ७३, ७८, ८१, १०१, १३४; २१६३,
 १२१, १२६; ३१८१, ८२, ८६, ११०, ४४५, ८५०,
 ८५२, ८५५, ८५८, ८६१, ८६४, ८६७, ८७०,
 ८७६, ६२४, ६२६, १०७३, १०७४, १०८३,
 १०८४, १११५; ४१८, १२ से १४, १६; ५११०,
 १२ से १५, २६, ४१ से ५०, ५६, ५८; ८१३;
 ६१३, ४, २२३, २२८, २५६
 संखेज्जभाग [सङ्खियेतमभाग] जी० ११६४,
 १२४, १३५
 संखेज्जगुण [सङ्खियेयगुण] जी० २१६६ से ७२,
 ६५, ६६, १३६ से १३८, १४१ से १४६; ३१७३,
 ७५, १०३७; ४१२२, २५; ५११६, २०, २६, २७,
 ३५, ३६, ५२, ५८, ६०; ६११२, ६१३७, ६४, १३०,
 १६६, २२०
 संखेज्जतिभाग [सङ्खियेतमभाग] जी० ३१६१,
 १०८७
 संखेज्जभाग [सङ्खियेयभाग] जी० ३१६१
 संखेज्जहा [सङ्खियेयथा] रा० ७६४, ७६५
 संग [सङ्ग] ओ० १६८
 संगत [सङ्गत] जी० ३१५६६, ५६७
 संगतिय [सङ्गतिक] जी० ३१६१३
 संगय [सङ्गत] ओ० १५, १६ रा० ६६, ७०, ७५.
 ६७२, ८०६, ८१० जी० ३१५६७
 संगामिय [साङ्गामिक] ओ० ५७
 संगोल्लि [दे०] ओ० ६६

संगोवंग [सङ्गोपाङ्ग] ओ० ६७
 संघ [सङ्घ] ओ० ४० रा० ३२, २०६ २११
 जी० ३७२
 संघयण [सङ्घन] ओ० ८२, १८५ जी० ११४,
 १७, ८६, ६५ १२८, १३५; ३१२२, १२७३,
 ५६८, १०६०
 संघयणि [सङ्घयिन्] जी० ११६५, १०१, ११६,
 १३०, ३१६२, १०६०
 संघरिससमुद्रिय [संघर्षिसमुद्रिय] जी० ११७८
 संघवेयावच्च [सङ्घवेयावच्च] ओ० ४१
 संघाइम [सङ्घातिम] ओ० १०६, १३२,
 रा० २८५ जी० ३१४५१, ५६१
 संघाड [सङ्घाट] रा० १४१, १६२ जी० ३१२६४
 २६६, ३१८, ३५५
 संघाडम [सङ्घाटम] रा० १६०
 संघातत्त [सङ्घातत्त्व] जी० ३११०६०
 संघाय [सङ्घात] ओ० ४७, ७२, जी० ११७२१२, ३
 संघायत्त [सङ्घातत्त्व] जी० ११३३५; ३१६२
 संचय [सङ्चय] ओ० ४६ जी० ३१५६८
 √संचाय [सं+शक्] —संचाएइ. रा० ७५१
 —संचार्ति. रा० ७७४ —संचाएज्जा.
 जी० ३१११६ —संचाएति. रा० ७५३
 जी० ३१११८ —संचाएमि रा० ६६५
 √संचिट्ट [सं+ष्ठा] —संचिट्टइ. रा० ७०१
 —संचिट्टति. रा० ६४ जी० ३:७२५
 संचिट्टुणा [संस्थान] जी० ११४४१; २१६२, ८३,
 ८५, १५०, १५१; ५१२६; ६:७; ७१८, ८३;
 ६३, १६, ३६, १५७, १६८, १८३, २६३
 संछण्ण [सञ्छन्न] जी० ३:११८, ११६, २८६
 संछन्न [सञ्छन्न] रा० १७४
 संजतासंजत [संयतासंयत] जी० ६:१४४
 संजम [संजम] ओ० २१ से २४, ४५, ४६, ५२, ८२
 रा० ८, ६, ६८६, ६८७, ६८६, ७११, ७१३, ८१४,
 ८१७
 संजमासंजम [संयमासंयम] ओ० ७३
 संजय [संयत] जी० ४६ जी० ६१४१, १४२, १४६

१४७
 संजयासंजय [संयतासंयत] जी० ६१४१, १४६,
 १४७
 संजायकोऊहल [संजातकोतूहल] ओ० ८३
 संजायसंसय [सञ्जातसंशय] ओ० ८३
 संजायसड्ड [सञ्जातश्रद्ध] ओ० ८३
 संजुत्त [संयुक्त] रा० ७५३, ७६५ जी० ३१५६२
 संजोग [संयोग] ओ० २८, ४६
 संजभराम [सञ्ज्याभराम] रा० २७ जी० ३:२८०
 संझा [सञ्ज्या] जी० ३१६२६
 संझाविराम [सञ्ज्याविराम] जी ३१५८६
 संठाण [संस्थान] ओ० ४७, ५०, ७२, ८२, १७०,
 १८६, १६४, १६५, ३, ४, ८ रा० १२४, १२७,
 १३२, १८५ जी० ११५, १४, ७२, १२८, १३६;
 ३१२२, ४८ से ५०, ७८, ८६, १२७, १३, १२६, ३,
 ४, २५७, २६०, २६१, २६७, ३०२, ३५२, ५७७,
 ५६८, ६०४, ६३२, ६६१, ६८६, ७०४, ७२३,
 ७२६, ७३६, ७६६, ८१०, ८२१, ८३१, ८३६,
 ८४१, ८४२, ८४५, ८४८, ८५७, ८५६, ८६२,
 ८६५, ८६८, ८७१, ८७४, ८७७, ८८०, ८८२,
 ६११, ६१८, ६२५, १००८, १०७१, १०६१,
 १०६२
 संठाणओ [संस्थानतस्] जी० ३१२५६
 संठाणतो [संस्थानतस्] जी० ३१२२
 संठाणविजय [संस्थानविजय] ओ० ४३
 संठित [संस्थित] रा० १२४ जी० ३१२८ से ३२;
 ४८ से ५०, ७८ ७६, ६३, २६०, २६१,
 २६७, ३०२, ३५२, ५७७, ५६७, ६३२, ६६१,
 ७०४, ७०५, ७६३, ७६६, ७६७, ८१०, ८११,
 ८२१, ८२२, ८३१, ८३६, ८४२, ८४५, ८४८,
 ८४६, ८५७, ८५६, ८६२, ८६५, ८६८, ८७१,
 ८७४, ८७७, ८८०, ८८२, ६११, ६२५, १००८,
 १०६१, १०६२
 संठिति [संस्थिति] जी० ३१८११

संठिय [संस्थित] ओ० १, १३, १६, ५०, ८२, १७०,
 १६४. रा० ३२, ५२, ५६, १२७, १३२, १३३,
 १८५, २३१, २४७. जी० १।१८, ६४, ६५, ६७,
 ७४, ७७, ७९, ८६, ९६, ११०, ११६, १३०, १३६;
 ३।३०, ५०, ७८, २५७, २५९, २६७, ३०३, ३०७,
 ३७२, ३६३, ४०१, ५६४, ५६६ से ५६८, ६०४,
 ६८६, ७२३, ७२६, ७३६, ७६३, ८३८, ११५,
 ११५, ११८, १०७१

संढ [षण्ड] ओ० २२. रा० ७७७, ७७८, ७८८
 संढासय [संढासक] जी० ३।११८, ११९
 संढेय [षण्डेय] ओ० १
 संपिक्खित्त [सन्निक्षिप्त] जी० ३।४१५
 संत [सत्] ओ० २३. रा० ६६५. जी० ३।६०८
 संत [श्रान्त] ओ० ६३. रा० ७६५
 संताण [सन्तान] ओ० ४६
 संति [सत्] जी० १।७२।३
 √संथर [सं+स्तु]—संथरइ. रा० ७६६.
 —संथरति. ओ० ११७
 संथरित्ता [सस्तुत्थ] ओ० ११७
 संथार [सस्तार] रा० ६६८, ७०४, ७०६, ७५२,
 ७८६
 संथारण [सस्तारक] ओ० ३७, १२०. रा० ७११
 संथारय [सस्तारक] ओ० १६२, १८०. रा० ७१३,
 ७७६
 √संथुण [सं+स्तु]—संथुणइ. रा० २६२. जी०
 ३।४५७
 संथुणित्ता [सस्तुत्थ] रा० २६२. जी० ३।४५७
 संबट्ट [सन्दट्ट] जी० ३।३२३
 संबमाणिया [स्यन्दमानिका] ओ० १, ५२, १००,
 १२३. रा० ६८७ से ६८९. जी० ३।२७६,
 ५८१, ५८५, ६१७
 संबमाणो [स्यन्दमाती] रा० १७३
 संबमाणोया [स्यन्दमानिका] जी० ३।२८५
 संदिट्टु [सन्दिट्ट] रा० १५०
 √संविस्स [सं+दिण]—संविस्संतु रा० ७२
 संधि [सन्धि] ओ० १६. रा० १६, ३७, १३०,

१५६, १७५, १६०, २४५, ६६४. जी० ३।२६४,
 २८७, ३००, ३११, ३३२, ४०७, ५६२, ५६६, ५६७
 संधिवाल [सन्धिपाल] ओ० १८, ६३. रा० ७५४,
 ७५६, ७६२, ७६४
 √संधुक्ख [सं+धुक्]—संधुक्खइ. रा० ७६५
 संनिकास [सन्निक्काय] जी० ३।३०३
 संनिकिक्खित्त [सन्निक्षिप्त] जी० ३।४०२, ४१०,
 ४१८, ४१९, ४२६, ४३२, ४३५, ४४२
 संनिकिक्खित्त [सन्निक्षिप्त] रा० २४०, २४६, २५४,
 २५७, २५८, २६६, २६८, २७६
 संनिविट्टु [सन्निविष्ट] जी० ३।२८५, ३७२, ३७४,
 ६४६, ६७३, ६७४, ८८४, ८८७
 संपउत्त [सम्प्रयुक्त] ओ० १४, २१, ४३, ६४, १४१.
 रा० ६७१, ७१०, ७७४, ७६६
 संपओग [सम्प्रयोग] ओ० ४३. रा० ६७१
 संपक्खाल [सम्प्रथाल] ओ० ६४
 संपगाढ [सम्प्रगाढ] जी० ३।१२६।७
 संपट्ठिय [सम्प्रस्थित] ओ० ६४, ११५
 संपणाइय [सम्प्रवादित] रा० ३२, २०६, २११.
 जी० ३।३७२, ६४६
 संपण्ण [सम्पन्न] जी० ३।५६८
 संपत्त [सम्प्राप्त] ओ० २१, ५२, ५४, ११७, १४४.
 रा० ८, २६२, ६८७, ६८९, ७१३, ७१४, ७६६,
 ८०२. जी० ३।४५७
 संपत्ति [सम्पत्ति, सम्प्राप्ति] जी० ३।१११६
 संपस्थिय [सम्प्रस्थित] रा० ४६ से ५४, ७७४
 संपन्न [सम्पन्न] जी० ३।७६५, ८४१
 √संपमज्ज [सं+प्र+मज्ज]—संपमज्जइ. ओ०
 ५६. —संपमज्जेज्जा. रा० १२
 संपमज्जेत्ता [सम्प्रमज्ज] ओ० ५६
 संपरिक्खित्त [सम्परिक्खित्त] ओ० ३, ६, ११. रा०
 १२७, २०१, २६३. जी० ३।२१७, २६०, २६२,
 २६५, ३१३, ३५२, ३६२, ३६८ से ३७१, ३८८,
 ३९०, ६३६, ६५२, ६५८, ६६८, ६७८, ६७९,
 ६८१, ६८६, ७०४, ७०६, ७३६, ७५४, ७६६.

७६८, ८१०, ८१२, ८२१, ८२३, ८३३, ८३६,
 ८४८, ८५०, ८५६, ८६२, ८६५, ८६८, ८७१,
 ८७४, ८७७, ८८०, ६२५
 संपरिविख्यताणं [सम्परिविख्य] जी० ३१४८
 संपरिविख्य [सम्परिविख्य] रा० ४०, १८६, १६१
 २०५ से २०८
 संपरिवृत्त [सम्परिवृत्त] ओ० १८, १६, ६३, ६८,
 ७०. रा० ७, १३, ४७, ५६, ५८, १२०, २६१,
 ६५७, ६८३, ६८६, ७११, ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४, ७७७, ७७८, ८०४. जी० ३१४५७, ५५७,
 १०२५
 संपललित्य [सम्प्रललित] ओ० २३
 संपलियंक [सम्पर्यङ्क] ओ० ११७. रा० ७६६.
 जी० ३१८६६
 संपविट्ट [सम्प्रविट्ट] रा० ७६५
 संपाविडकाम [सम्प्राप्तुकाम] ओ० १६, २१, ५४,
 ११७. रा० ८
 संपिडिय [सम्पिण्डित] ओ० ६. जी० ३१२७५
 संपुच्छण [सम्प्रक्ष्ण] जी० ३१२३६
 संपुड [सम्पुट] जी० ३१७६३
 √संपेह [सं + प्र + ईह]—संपेहेह. रा० ६
 संपेहिता [सम्प्रेक्ष्य] रा० ६
 संपेहेता [सम्प्रेक्ष्य] रा० ६८८
 संबधि [सम्बन्धिन्] जी० १५०. रा० ७५१, ८०२
 ८११
 संबद्ध [सम्बद्ध] जी० ३११०, १११५
 संबाह [सम्बाध] ओ० ८६ से ६३, ६५, ६६, १५५,
 १५८ से १६१, १६३, १६८. रा० ६६७
 संबाहणा [सम्बाधना] ओ० ६३
 संबाहिय [सम्बाधित] ओ० ६३
 संबुद्ध [सम्बुद्ध] रा० ७७५
 संभम [सम्भ्रम] ओ० ६७. रा० ८, १३, ६५७,
 ७१४. जी० ३१४४६
 संभार [सम्भार] जी० ३१५८६
 संभिण्ण [सम्भिन्न] जी० ३११११३

संभिण्णसोय [सम्भिन्नसोय] ओ० २४
 संभोग [सम्भोग] ओ० ४०
 संमज्जण [सम्माज्जन] रा० ७७६
 संमज्जिय [सम्माजित] रा० २८१, ८०२
 संमट्ट [सम्मूट्ट] रा० २०१
 संमय [सम्मत] ओ० ११७. रा० ७६६
 √संमुच्छ [सं + मुच्छ]—संमुच्छति.
 जी० ३११२७
 संमुच्छिम [सम्मूच्छिम, सम्मूच्छिनज] जी० ११६६
 से ६८, १०१ से १०५, ११२, ११६, १२६ से
 १२८; ३१३८, १३६, १४२, १४५ से १४७,
 १४६, १६१, १६३, १६४, २१२ से २१४
 संमुहागय [सम्मुखागत] जी० ३१२८५
 संलद्ध [संलब्ध] रा० ७६८
 संलाव [संलाप] ओ० १५. रा० ७०, ६७२.
 जी० ३१५६७
 संलेहणा [संलेखना] ओ० ७७, ११७, १४०, १५४
 संवच्छर [संवत्सर] जी० ११८७; २१६७;
 ३१८४१; ४१४
 संवच्छरपडिलेहणग [संवत्सरप्रतिलेखनक]
 रा० ८०३
 संवट्ट [सं + वर्तय]—संवट्टेह. ओ० ५६
 संवट्टगवाय [संवत्तकवात] जी० ११८१
 संवट्टयवाय [संवत्तकवात] रा० १२
 संवट्टेता [संवर्त्य] ओ० ५६
 संवड्डिय [संवधित] रा० ८११
 संवर [मवर] ओ० ४६, ७१, १२०, १६२.
 रा० ६६८, ७५२, ७८६
 संवाह [संवाह] ओ० ६८
 संविकिण्ण [संविकीर्ण] रा० ३२, २०६, २११.
 जी० ३१३७२
 संविट्टुणित्ता [संविधूय] ओ० २३
 संवुड्ड [संवृद्ध] ओ० १५०. रा० ८११
 संवृत्त [संवृत] जी० ३१४०७
 संवृत्त [संवृत्त] रा० ७७१

संवुय [संवृत] रा० ३७,२४५. जी० ३३११
 संवेग [सवेग] ओ० ६६
 संवेयणी [सवेदनी] ओ० ४५
 संवेलित [वे०] जी० ३३०३
 संवेलिय [वे०] रा० ६६,७०,१७३
 संसट्टचरय [संसुष्टचरक] ओ० ३४
 संसत्त [संसक्त] ओ० ३७. जी० ३१८४
 संसार [संसार] ओ० २६,४६,१६५
 संसारअपरित्त [संसारपरीत] जी० ६१७६
 संसारपरित्त [संसारपरीत] जी० ६१७६,७८,८४
 संसारविडस्सग्ग [संसारव्युत्सर्ग] ओ० ४४
 संसारसमावण्ण [संसारसमापन्न] जी० १६,१०
 संसारसमावण्णग [संसारसमापन्नक] जी० १११०,
 ११,१४३; २११,१५१; ३११,१८३,११३८;
 ४११,२५; ५११,६०; ६११,१२; ७११,२३;
 ८११,५; ९११,७
 संसारसमावण्णय [संसारसमापन्नक] जी० १११०
 संसाराणुपेहा [संसाराणुप्रेक्षा] ओ० ४३
 संसारापरित्त [संसारपरीत] जी० ६१८१,८६
 संसुद्ध [संशुद्ध] ओ० ७२
 √ससेय [सं+स्विद्]—संसेयति. जी० ३१७२६
 संहत [संहत] जी० ३१५६७
 संहरण [संहरण] जी० २१३० से ३४,५७ से ६१,
 ६६,१३३
 संहित^१ [संहित] जी० ११७२१३; ३१५६६,५६७
 संहिय [संहित] रा० १७३. जी० ३१५६७
 सक [स्वक] ३१७६५,७७०
 सकक्कस [सककश] ओ० ४०
 सकसाइ [सकपायिन्] जी० ६१२८
 सकाइय [सकपायिक] जी० ६११८ से २०
 सकिरिय [सकिय] ओ० ४०,८४,८५,८७
 सकक [सक] जी० ३१६२०, ६२१, ६३७, १०३६
 से १०४२, ११११

१. संहितौ— मध्यकायपेक्षया विरली

सक्कय [संस्कृत] जी० ३ ५६५
 सक्करप्पभा [शर्कराप्रभा] जी० २११००; ३१४,
 ११,२०,२१,२७,३१,३२,३४,४०,४३,४४,४६,
 ६८,१०७
 सक्करा [शर्करा] रा० ६,१२. जी० ३१६०१,
 ६२२
 सक्करापुढवी [शर्करापुष्पी] जी० ३१६८५,१६०
 √सक्कार [सत्+कृ]—सक्कारिस्संति रा० ७०४
 --सक्कारेइ. ओ० २१. रा० ६८४
 --सक्कारेज्जा. रा० ७७६ --सक्कारेमि.
 रा० ५८ --सक्कारेमो. ओ० ५२.
 रा० १० --सक्कारेस्संति. रा० ८०२.
 --सक्कारेहिंति. ओ० १४७
 सक्कार [सक्कार] ओ० ४०,५२. रा० १६,६८७,
 ६८६,८०३,८०५. जी० ३१६०६
 सक्कारणिज्ज [सक्कारणीय] ओ० २. रा० २४०
 २७६. जी० ३१४०२,४४२
 सक्कारित्तए [सक्कारित्तुम्] ओ० १३६. रा० ६
 सक्कारेत्ता [सक्कारित्तुम्] ओ० २१
 सक्कुकुलिकण्ण [सक्कुकुलिकर्ण] जी० ३१२१६,२२५
 सक्कुकुलिकण्णदीव [सक्कुकुलिकर्णदीव] जी० ३१२२५
 सग [स्वक] जी० ३१७६८,७६६,७७२,७७३,७७६
 से ६७६,११११
 सगड [सकट] ओ० १००,१२३. जी० ३१२७६,
 ५८१,५८५,६१७,६३१
 सगडवूह [सकटव्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६
 सगल [सकल] जी० ११७२; ३१५६२
 सगल [सकल] जी० ३१५६६
 सगेवेज्ज [सगैवेय] रा० ७५४,७५६,७६४
 सग्ग [सर्ग] ओ० ६८
 सच्चित्त [सच्चित्त] ओ० २८,४६,६६,७०. रा०
 ७७८
 √सच्चित्तीकर [सच्चित्तीकृ]—सच्चित्तीकरेइ. रा०
 ७७२
 सची [सची] जी० ३१६२०

सञ्च [सत्य] ओ० २, २५, ७२, ११८. रा० ६८६
 सञ्चमणजोग [सत्यमनोयोग] ओ० १७८
 सञ्चवद्दजोग [सत्यवाग्योग] ओ० १७६
 सञ्चामोसमणजोग [सत्यमूषामनोयोग] ओ० १७८
 सञ्चामोसवद्दजोग [सत्यमूषावाग्योग] ओ० १७६
 सञ्चोवात [सत्यावपात] ओ० २
 सञ्छन्द [स्वच्छन्द] ओ० ४६
 सञ्छड [संस्तुत] रा० ७७४
 सजोगि [सयोगिन्] ओ० १८१. जी० ६१२१, ४६,
 ४८, ५२
 सज्ज [सज्ज] ओ० ६४. रा० १७, १८, १७३,
 ६८१, ६८२, ६६१. जी० ३१२८५
 सज्ज [सद्यस्] जी० ३१८७२
 √सज्ज [सज्ज]—सज्जावेइ रा० ६८०.
 —सज्जिहित्ति. ओ० १५०. रा० ८११.
 —सज्जेइ. रा० ६६६
 सज्जावेत्ता [सज्जयित्वा] रा० ६८०
 सज्जिय [सज्जित] जी० ३१५६२
 सज्जीव [सजीव] ओ० १४६. रा० ८०६
 सज्जेत्ता [सज्जित्वा] रा० ६६६
 सज्जाय [स्वाध्याय] ओ० ३८, ४२
 सट्ठाण [स्वस्थान] जी० ६१६६, २०८
 सट्ठि [षष्टि] ओ० १४०. रा० २३१.
 जी० ३१११८
 सट्ठित्त [षष्टितन्त्र] ओ० ६७
 सडंमवि [षडङ्गविद्] ओ० ६७
 सडुइ [श्राद्धकिन्] ओ० ६४
 सण [सन] ओ० १३
 सणकुमार [सनत्कुमार] ओ० ५१, १६०, १६२.
 जी० २१६६, १४८, १४६; ३११०३८, १०४५,
 १०४६, १०५८, १०६६, १०६८, १०८८, १०६४,
 ११०२, ११११, ११२६
 सणफ्फई [सनखपदी] जी० २१६
 सणफ्फय [सनखपद] जी० १११०३
 सणिच्चर [शनैश्चर] जी० ३१६३१

सणिच्चर [शनैश्चर] ओ० ५०
 सण्णद्ध [सन्नद्ध] ओ० ५७. रा० ६६४, ६८३
 सण्णय [सन्नत] ओ० १६. जी० ३१५६६, ५६७
 √सण्णव [संज्ञापय]—सण्णवेइ. रा० ७६६
 सण्णा [संज्ञा] रा० ७४८ से ७५०, ७७३.
 ओ० १११४, २०, ८६, ६६, १०१, ११६, १२८,
 १३६; ३११२८२
 √सण्णाह [सं+नह]—सण्णाहेहि. ओ० ५५
 सण्णाहिय [सन्नद्ध] ओ० ६२
 सण्णाहेत्ता [संनह्य] ओ० ५६
 सण्णि [संज्ञिन्] ओ० १५६, १८२. रा० १११४,
 २४, ८६, ६६, १०१, ११६, १३३, १३६; ६११०१,
 १०२, १०५, १०८
 सण्णिकास [सन्निकाश] जी० ३१३३३, ३८१, ४१७,
 ८६४, ११२२
 सण्णित्त [सन्निकषित्त] जी० ३११०२५
 सण्णिणाय [सन्निनाद] ओ० ६७. रा० १३,
 ६५७. रा० ३१४४६
 सण्णिपंचिच्चिय [संज्ञिपञ्चेन्द्रिय] ओ० १५६
 सण्णिभ [सन्निभ] रा० १६, ४७, ६३, ६५.
 जी० ३१५६६
 सण्णिमहिय [सन्निमहित] ओ० १
 सण्णिवाइय [सन्निपातिक] ओ० ७१, ११७.
 रा० ६१, ७६६
 सण्णिविट्ठु [सन्निविण्ट] ओ० १. रा० १७, १८,
 २०. जी० ३१२८८
 सण्णियेत्त [सन्निवेश] ओ० ६८, ८६ से ६३, ६५,
 ६६, १५५, १५८ से १६१, १६३, १६८.
 रा० ६६७
 सण्णियेत्ताह [सन्निवेशदाह] जी० ३१६२६
 सण्णिसण्ण [सन्निषण्ण] रा० ८, ४७, ६८, २७७,
 २८३. जी० ३१४४३, ४४६, ४५२, ५५७, ८३६
 सण्णिहिय [सन्निहित] ओ० २
 सण्ह [श्लक्ष्ण] ओ० १२, १६४. रा० २१ से २३,
 ३२, ३४, ३६, ३८, १२४, १३०, १३७, १४५, १५७,

१७४,२६१. जी० ११५७,५८; ३१२६१,२६२,
२६६,२६६,२८६,२९०,३००,३०७,३६५,
४२५,४५७,५६२,६३६,८३६
सण्हपुढवी [षलक्षणपृथ्वी] जी० ३११८५, १८६
सत [शत] रा० १२६. जी० ३१८२, १७२, १७३,
१६७, २२६, २४६, २५५, २५७, २६०, २८५,
३३५, ३५३, ३५४, ३५७, ३५८, ३६१, ३७२,
४१५, ४१६, ४४२, ५७७, ५६८, ६३२, ६३६,
६४६, ६४७, ६४६, ६५२, ६६१, ६६६, ६६८,
६७३, ६७४, ६७६, ७०३, ७१४, ७२४ से
७२६, ७२८, ७३३, ७३६, ७५०, ७५६, ७८८,
७६४, ७६५, ७६८, ८०६, ८१२, ८१५, ८२०,
८२७, ८३०, ८३२, ८३५, ८३७, ८३६, ८४१,
८४५, ८८२, ८८४, ८८७, ९०१, ९०८, ९११,
९१८, ९७०, १००० से १००४, १००६, १०१६,
१०३०, १०३८, १०४४, ११३७; ५१२६;
६१११; ७१६६; ९१८६, १०२, २१७
सतपत्त [शतपत्र] रा० २३. जी० ३१२५६, २६१
सतसहस्र [शतसहस्र] जी० ११५८; ३१२२, २७,
६७ से ७२, ८६, १६१, १६७, १६६, १७४, २५७,
२६६, ६०२, ६५८, ७०३, ७०६, ७१४, ७२३,
७६४, ७६५, ७६८, ८२३, ८३६, ९१०, ९६६,
९६८, १०३८, १०८७, १०८८, ११२८
सताउ [सतायुष्] जी० ३१५८६
सति [स्मृति] जी० ३१११८, ११६
सतिय [शक्ति] जी० ३१६७३, ६७४
सत्त [सप्तन्] ओ० २१. रा० ७. जी० ११६५
सत्त [सत्व] जी० ३११२७, ७२१, ६५५, ११२८,
११३०
सत्तग [शत्रुस्य] जी० ३१८५
सत्तघरंतरिय [सप्तगृहान्तरिक] ओ० १५८
सत्तट्टि [सप्तषष्टि] जी० ३१७२२
सत्तणउय [सप्तनवति] जी० ३१२२६
सत्ततीस [सप्तत्रिंशत्] जी० ३१३५१
सत्तपण [सप्तपर्ण] रा० १८६

सत्तम [सप्तम] ओ० १७४, १७६, १८६
सत्तमा [सप्तमी] जी० ३१२, ४, ७२, ७५, ७७, ६१,
१११
सत्तमासिया [सप्तमासिकी] ओ० २४
सत्तमी [सप्तमी] जी० ३१३६, ८८, १११११३
सत्तरस [सप्तदशन्] जी० ३१३५६
सत्तरि [सप्तति] जी० ३१२४६
सत्तवणवडैसय [सप्तपर्णवितसक] रा० १२५
सत्तवणवण [सप्तपर्णवन] रा० १७०. जी०
३१५८१
सत्तविष [सप्तविध] जी० २११००; ३१२; ६११८२
सत्तविह [सप्तविध] ओ० ४०. जी० १११०, ५८,
६२; ६११, १२; ६११८५, १६६
सत्तसत्तमिया [सप्तसप्तकिका] ओ० २४
सत्तसिखखावइय [सप्तशिक्षाव्रतिक] ओ० ५२, ७८
सत्ताणउति [सप्तनवति] जी० ३११०३८
सत्तावीस [सप्तविंशति] ओ० १७०. रा० १८८.
जी० ३१८२
सत्तावीसतिगुण [सप्तविंशतिगुण] जी० २११५१
सत्तावीसय [सप्तविंशति] जी० २११५१
सत्ति [शक्ति] ओ० ६४
सत्तिवण [सप्तपर्ण] ओ० ६, १०. जी० ३१३५६,
३८८, ५८३
सत्तिवणवण [सप्तपर्णवन] जी० ३१३५८
सत्तु [शत्रु] ओ० १४. रा० ६७१
सत्तुपण [शत्रुपक्ष] जी० ३१४४८
सत्थ [शास्त्र] ओ० ६७
सत्थ [शस्त्र] रा० ७६१
सत्थवाह [सार्थवाह] ओ० १८, ४६, ५२. रा०
६८७, ६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४.
जी० ३१६०६
सत्थोवाडियग [शस्त्रावपाठितक] ओ० ६०
सदारसंतोस [स्वदारसन्तोष] ओ० ७७
सदेस [स्वदेश] ओ० ७०. रा० ८०४
सद् [शब्द] ओ० ६, १५, ६३, ६४, ६७, ६८, १६१,

१६३. रा० १३ से १५, ३२, ४०, १३२, १३५,
१७३, २०६, २११, २८२, ६५७, ६७२, ६८५,
७१०, ७३२, ७३७, ७५१, ७५५, ७७१, ७७४.
जी० ३११८, ११६, २६५, २७५, २८५, २८६,
२९८, ३०५, ३६०, ३७२, ४४६, ४४८, ५७८,
६३६, ६४६, ६६०, ८५७, ८६३, ९०५, ९७७,
९८२, १११७, १११८, ११२४, ११२५
√सदह [श्रत् + धा] —सदहामि. रा० ६६५.
—सदहाहि. रा० ७५१.—सदहेज्जा.
रा० ७५०
सदहमाण [श्रद्धान] जी० १११
सदहालं [दे०] जी० ३११२२
√सदाव [शब्दव] —सदावेत्. ओ० ५८. रा० ६.
—सदावेति. ओ० ११७. रा० २७८. जी०
३१४४४. —सदावेति. रा० १३. जी० ३१५५४
सदावति [शब्दापातिन्] जी० ३१७६५
सदावाति [शब्दापातिन्] रा० २७६. जी० ३१४४५
सदाविय [शब्दायित, शब्दित] रा० ७२
सदावेत्ता [शब्दयित्वा] ओ० ५८. रा० ६.
जी० ३१४४४
सद्विय [शब्दित] ओ० २
सद्वूल [शार्दूल] ओ० १६. जी० ३१५६६
सद्ध [श्राद्ध] जी० ३१६१४
सद्धि [सार्द्धम्] ओ० १५. रा० ७. जी० ३१२३६
सन्नद्ध [सन्नद्ध] जी० ३१५६२
सन्निकास [सन्निकाश] रा० १३३. जी० ३१३१२
सन्निक्षिक्त [सन्निक्षिप्त] जी० ३१४४२
सन्निक्षिक्त [सन्निक्षिप्त] रा० २२५, २७०
सन्निगास [सन्निकाश] रा० ३८, १६०, २२२, २५६
सन्निभ [सन्निभ] ओ० १६. जी० ३१५६६
सन्निविट्ट [सन्निविष्ट] रा० ३२, ६६, १३८, २०६,
२११. जी० ३. ७५६
सन्निवेश [सन्निवेश] जी० ३१६०६, ८४१
सन्निवेशमारी [सन्निवेशमारी] जी० ३१६२८
सन्निसन्न [सन्निषण्ण] रा० १७३

१. नूपुर, किंकिणी ।

सपज्जवसित [सपर्यवसित] जी० ६१२४, ३१, ६८,
६९, ८१, १२५, १७४, २०२
सपज्जवसिय [सपर्यवसित] जी० ६१११, १३, १६,
२३, २५, २६, ३१, ३३, ३४, ५८, ६०, ६४, ६८, ६९,
७१, ७२, ८६, ११०, १२५, १३३, १४६, १६४,
१६५, १७६, २०२, २०६
सपडिकम्म [सप्रतिकर्मन्] ओ० ३२
सपि [सपिस्] ओ० ६२, ६३
सपियासव [सपिराश्रव] ओ० २४
सफल [सफल] ओ० ७१
सबरी [शबरी] ओ० ७०. रा० ८०४
सभा [सभा] रा० ७, १२ से १४, २०६, २१०, २३५
से २३७, २५०, २५१, २७६, ३५१, ३५६, ३५७,
३७६, ३६४, ३६५, ६५६, ६५७. जी० ३१३७२,
३७३, ३६७ से ३६६, ४११, ४१२, ४२६, ४४२,
५१६, ५२१, ५२२, ५२४, ५२५, ५५६, ५५७,
१०२४, १०२५
सभाव [स्वभाव] जी० ३१५६७
सम [सम] ओ० १६, २६, ५६, १७१, १६२. रा०
७०, ७५, ७६, ८०, ११२, १३३, १७३, १७४, ७७२.
जी० ३१५२, ११८, ११९, २८५, २८६, ३०३,
३६२, ३८७, ५८६, ५६६, ५६७, ७०५, ७२४,
७२७, ७३२, ७८४, ७८७, ७९७, ८११, ८२२,
८४६, ८१०, ८११, ८१८, ८६८, ११२२
सम [श्रम] रा० ७२६, ७३१, ७३२
समइक्कंत [समतिक्रान्त] ओ० ४७
समइच्छमाणं [समतिक्रामत्] ओ० ६६
समइय [सामयिक] ओ० १७३, १७४, १८२. जी०
६३, ५
समंता [समन्तात्] ओ० ३. रा० ६. जी० ३१४६
समवखाय [समाख्यात्] जी० ३१६७ से १६६
समग्र [समग्र] ओ० ६८
समचउरंस [समचतुरस्र] ओ० ८२. जी० २१११६,
१३६; ३१५६८, १०६१, १०६२

१. हे० ४१६२

समजोतिभूत [समज्योतिभूत] जी० ३।११८
 समज्जिगित्ता [समज्य] रा० ७५०
 समज्जुइय [समद्युतिक] जी० ३।११२०
 समट्ट [समर्थ] ओ० ८६ से ६५, ११४, ११७, १२०,
 १५५, १५७ से १६०, १६२, १६७, १६९, १७०,
 १७२, १७७, १८१, १८६ से १९१. रा० २५ से
 ३१, ४५, १७३, ७५१, ७५३, ७५५, ७५७, ७५९,
 ७६१, ७६३, ७७१. जी० ३।८४, ८५, ११८,
 १६८ से २०३, २७८ से २८५, ६०१, ६०२,
 ६०५ से ६०७, ६०९, ६१०, ६१२ से ६१७,
 ६२२ से ६२४, ६२६, ६२८, ७८२, ७८६, ८६०,
 ८६६, ८७२, ८७८, ९६० से ९६२, ९६४ से
 ९६६, १०२४

समण [श्रमण] ओ० १९ से २५, २७, ३३, ४६ से
 ५३, ५५, ६२, ६९ से ७१, ७८ से ८३, ९५, ११७,
 १२०, १५५, १५९, १६२, १७०. रा० ८ से १३,
 १५, ५६, ५८ से ६५, ६८, ७३, ७४, ७९, ८१, ८३,
 ११३, ११८, १२०, १२१, १३१, १३२, १४७ से
 १५१, १८५, १९७, ६६७, ६६८, ६७१, ६९८,
 ७१८, ७१९, ७३९, ७४८ से ७५०, ७५२, ७८७ से
 ७८९, ८१७. जी० १।५६, ६२, ६५, ८२, ९६,
 १२८; २।१४०; ३।१७६, १७८, १८०, १८२,
 २५९, २६९, २९७, ३०१, ३०२, ३२१ से ३२४,
 ५८२, ५८६ से ५९५, ५९८, ६००, ६०३ से
 ६०७, ६०९ से ६१७, ६२०, ६२२ से ६२५,
 ६२७, ६२८, ६३०, ७९५, ८४१, ९६५, १०५६,
 ११२०

समणी [श्रमणी] जी० ३।७९५, ८४१

√समणुगच्छ [सम् + अनु + गम्]—समणुगच्छंति
 रा० ५५

समणुगम्भमाण [समनुगम्भयमान] ओ० ६५.

जी० ३।१७४

समणुगाहिज्जमाण [समनुग्राह्यमान] जी० ३।१७४

समणुच्चित्तिज्जमाण [समनुच्चिन्त्यमान] जी० ३।१७४

समणुपेहिज्जमाण [समनुप्रेक्ष्यमान] जी० ३।१७४

समणुबद्ध [समनुबद्ध] रा० १४९, ६७०.

जी० ३।३२२, ५९१

समणोवासग [श्रमणोपासक] ओ० १६२

समणोवासय [श्रमणोपासक] ओ० ७७, १२०, १४०,
 १६२. रा० ६९८, ७५२, ७८९ से ७९१

समणोवासिया [श्रमणोपासिका] ओ० ७७.
 रा० ७५२

समण्णामय [समन्वागत] ओ० ४३. रा० १२,
 ७५८, ७५९. जी० ३।११८, २८५

समत्तल [समतल] ओ० १९. जी० ३।५१६

समताल [समताल] ओ० १४६. रा० ८०६

समतुरंगेमाण [समतुरङ्गायत्] जी० ३।१११

समत्त [समस्त] ओ० ६३. जी० ३।७०१

समत्तगणपिटग [समस्तगणपिटक] ओ० २६

समन्थ [समर्थ] ओ० १४८, १४९. रा० १२, ७३७,
 ७५८, ७५९, ७७०, ८०९. जी० ३।११८

समन्नामय [समन्वागत] रा० १७३

समप्पभ [समप्रभ] रा० २८५. जी० ३।४५१

समबल [समबल] जी० ३।११२०

समभिजाणित्ता [समभिजाय] रा० २७६.

जी० ३।४४२

√समभिलीय [सं + अभि + लोक्]—समभिलोएइ.

रा० ७६५—समभिलोएत्ति. रा० ७६५.

—समभिलोएमि रा० ७६४

समय [समय] ओ० १, १८, १९, २३ से २५, २७,

२८, ४५, ४७ से ५१, ८२, ११५, १७३, १७४,

१८२, १९५; ३. रा० १, ७, ७६, १७३, २७४,

६६८, ६७६, ६८५, ६८६, ७७१. जी० १।९, ३३;

२।४८, ५४ से ५६, ६५, ८६, ८८, ८९, ११७,

१२३, १३२; ३।८९, ९०, ११८, ११९, २१०,

२११, २८५, ४३९, ५८८, ५८९, ८४१, ८४४,

८४७, ९७३, १०८३, १०८५, १०८६; ७।१ से

६, ९ से १८, २० से २३; ९।१ से ७, २४,

२५, ४०, ४३, ४८ से ५१, ५७, ६०, ११४, ११८,

१२४, १२५, १२७, १३४, १३८, १४२, १४६,

१५०, १५२, १६१, १६२, १७१, १७२, १७६,

१६६,२००,२०३,२३२ से २३८, २४१ से
२४८, २५० से २५३,२५५, २६७ से २७३,
२७५ से २८२,२८४ से २६३

समय [समक] जी० ३१२७३,२६८
समयओ [समयतस्] रा० ६६४
समयखेत्त [समयक्षेत्र] रा० २७६. जी० ३१४४५
समयग [समयक] जी० ७१४
समयतो [समयतस्] जी० ३१५६२
समयस [समयशम्] जी० ३११२०
समयिक [सामयिक] जी० ६१२ से ५
समयिग [सामयिक] जी० ६१६
समरस [समरस] रा० २२८. जी० ३१३८७
समरसोद [समरसोद] जी० ३१२८६
√समलंकर [सं+अलं+कृ]—समलंकरेइ.

ओ० ५६

समलंकरेत्ता [समलङ्कृत्य] ओ० ५६
समल्लोण [समालीन] ओ० १३. रा० ४
समवायधर [समवायधर] ओ० ४५
समसोख्ल [समसौख्य] जी० ३११२०
समहिट्टिज्जमाण [समधिष्ठीयमान] रा० ७५१
समाइण्ण [समाकीर्ण] ओ० ७१. रा० ६१
समाउत्त [समावुक्त] ओ० ६४. रा० ५१
समाउल [समाकुल] रा० १३६. जी० ३१३०६
समाण [सत्] ओ० २०,५२,५६,६३,६४,६८,
११७,१४२,१४४,१५७. रा० १०,१२ से १५,
१८,४६,६०,६३,६४ ७२,७४,२७४,२७५,
२७६,२८३,२८६,६५५,६८१,६८५,७००,
७०१,७०३,७०७,७१०,७१३,७२५,७२८,
७५७,७६५,७७४,७६२,७६७,८००,८०२.
जी० ३११८८,११६,४४०,४४१,४४५,४४६,
४४२,५५५,६१७,६८६

समाण [समान] ओ० २३,२६,२६,११७.
रा० १३१,१३२,१४७ से १५१,१६७,२८८,
७५० से ७५३,७६६. जी० २१७४,६८,१४०;
३१११,११८,११६,२६६,३०१,३०२,३२१

से ३२४,४५४

समाणुभाग [समातुभाग] जी० ३११२०
समादाण [समादान] जी० ३११७
समामेव [समकमेव] रा० ७५
√समायर [समा+चर्]—समायरह. रा० ७५१
समायरित्ता [समाचर्य] रा० ६६७
समायरेत्ता [समाचर्य] रा० ७५१
समारंभ [समारम्भ] ओ० ६१ से ६३,१६१,१६३
समावडिय [समापतित] ओ० ४६
समावण्णम [समापन्नक] जी० ३१८४२,८४५
समास [समास] जी० ३१८३८१
समासओ [समासतस्] जी० ११५,५८,६५,७३,
८४,८८,८६,६२,१००,१०३,१११,११२,११६,
११८,१२१,१२६,१३५
समासतो [समासतस्] जी० ११७८,८१; ३१२२६
समाहय [समाहृत] ओ० ४६. रा० १२,७५८,
७५६. जी० ३१११८
समाहि [समाधि] ओ० ११७,१४०,१५७,१६२.
रा० ७६६
सभिडुय [समाधिक] जी० ३११२०
समिता [समिता] जी० ३१२३५.१०४०,१०४४,
१०४६
समिद्ध [समृद्ध] ओ० १,१४. रा० १,६६८ से
६७१,६७६,६७७
समिया [समिता] जी० ३१२३६,२४१
समुग्ग [समुद्ग] ओ० ७४१५. रा० १६१,२५८,
२७६,३५१. जी० ३१३३४,४१६,४४५,५६६
समुग्गक [समुद्गक] जी० ३१४०२,५१६
समुग्गम [समुद्गक] जी० ३१३००
समुग्गपक्खि [समुद्गपक्खिन्] जी० १११३३,११६
समुग्गय [समुद्गक] ओ० १७०. रा० १३०,२४०
२७६,३५१. जी० ३१४०२,४४२,५१६,१०२५
समुग्घात [समुद्घात] जी० ३११०८,१५७,१११८
समुग्घाय [समुद्घात] ओ० १७१,१७२,१७५,
१७७. जी० ११४,२३,८२,८६,६६,१०१,
११६,१३३,१३६; ३१२७४,१६०

समुच्छिष्णकिरिय [समुच्छिष्णक्रिय] ओ० ४३
 समुद्धित [समुत्थित] जी० ३।३०३
 समुद्धिय [समुत्थित] रा० १३३, ६७१
 समुदय [समुदय] ओ० ६७. रा० १३, ४०, १३२,
 ६५७, ८०३, ८०५. जी० ३।३०२, ४४६, ५६१
 समुद् [समुद्र] ओ० १७०. रा० १०, १२, ५६,
 २७६, ६८८. जी० ३।८६, २१७, २१६ से २२७,
 २५६, २६०, ३००, ३५१, ४४५, ५६६, ५६६,
 ५७१ से ५७६, ६३८, ७०४ से ७०८, ७१०, ७११,
 ७१३ से ७२३, ७२६, ७२८ से ७३१, ७३३, ७३६,
 ७३६ से ७४१, ७४५, ७४७, ७५०, ७५४, ७६१,
 ७६२, ७६४ से ७६६, ७७२ से ७६६, ८००,
 ८०३, ८०४, ८०६, ८१० से ८१६, ८१८ से ८२१,
 ८३८, ८४८ से ८५१, ८५४ से ८५६,
 ७५६, ८६०, ८६२, ८६५, ८६६, ८६८, ८७१,
 ८७२, ८७४, ८७७, ८७८, ८८०, ८२५, ८२७,
 से ८३५, ८३८, ८३९, ८४३ से ८४६, ८४६ से
 ८५२, ८५५, ८५८, ८६१, ८६३ से ८६६, ८६६,
 ८७२ से ८७५
 समुद्ग [समुद्रग] जी० ३।७७५, ७७८
 समुद्गलिक्खा [समुद्रलिक्षा] जी० १।८४
 समुपविट्ट [समुपविष्ट] जी ३।२८५
 √समुप्यज्ज [सं + उत् + पद्]—समुप्यज्जित्या.
 रा० ६—समुप्यज्जइ. ओ० १५६—समुप्य-
 ज्जति. जी० ३।५६६—समुप्यज्जित्या. रा०
 ६८८. जी ३।४४१—समुप्यज्जिहिति. ओ०
 १५३. रा० ८१४
 समुप्यण [समुत्पन्न] ओ० ११६ १५७. रा०
 २७६, ७३८, ७४६. जी० ३।४४२
 समुप्यणकोऽहल्ल [समुत्पन्नकौतुहल] ओ० ८३
 समुप्यणसंशय [समुत्पन्नसंशय] ओ० ८३
 समुप्यणसङ्ग [समुत्पन्नसङ्ग] ओ० ८३
 समुप्यन्न [समुत्पन्न] जी० ३।२३६
 समुपागत [समुपागत] जी० ३।६१७
 समुप्विट्ट [समुपविष्ट] रा० १७३
 समुत्सिय [समुत्सृत] रा० ५१

समूसिय [समुच्छ्रित] ओ० ६४
 समूह [समूह] रा० १२३
 समोगाढ [समवगाढ] ओ० १६५।६. जी० ३।८४५
 √समोयर [सं + अव + त्]—समोयरंति. जी०
 ३।१७४
 समोसढ [समवसृत] ओ० ५२, ५३. रा० ६,
 ६८७, ६८६, ७१३
 √समोसर [सं + अव + स्] समोसरह. रा०
 ७००—समोसरिज्जा. ओ० २१—समोस-
 रिस्तामि. रा० ७०३ समोसरिस्तामो. रा०
 ७०५
 समोसरण [समवसरण] रा० ७५, ८०, ८२, ११२,
 ७४८ से ७५०, ७७३
 समोसरिउकाम [समवसर्तुकाम] ओ० १६, २०
 समोहण [सं + अव + हन्]—समोहणंति, ओ०
 १७१—समोहणिसु. जी० ३।१११३
 —समोहणिसंति. जी० ३।१११३
 समोहणित्ता [समवहत्य] रा० १०. जी० ३।४४५
 समोहण [सं + अव + हन्]—समोहणइ. रा०
 १८—समोहणंति. रा० १०. जी० ३।४४५
 समोहत [समवहत] जी० १।१२८; ३।१५८,
 २००, २०१, २०६, २०७
 समोहतासमोहत [समावहतासमवहत] जी०
 ३।२०२, २०३, २०८, २०६
 समोहय [समवहत] ओ० १६६. जी० १।५३, ६०, ८७
 सम्मं [सम्यक्] ओ० १६२. रा० ६७१, ६६८,
 ७०३, ७१८, ७२६, ७३१, ७३२, ७३७, ७५०
 से ७५२, ७७७, ८७८, ७८६
 सम्मज्जय [सम्मग्नक] ओ० ६४
 सम्मज्जित [सम्मार्जित] जी० ३।४४७
 सम्मज्जिय [सम्मार्जित] ओ० ५५, ६० से ६२.
 जी० ३।४४७
 सम्मट्ट [सम्मृष्ट] ओ० ५५. जी० ३।४४७
 सम्मत्त [सम्यक्त्व] ओ० ४६
 सम्मत्तकिरिया [सम्यक्त्वक्रिया] जी० ३।२१०
 २११

सम्मदिवि [सम्यग्दृष्टि] रा० ६२. जी० ११२८,
८६; ३।१०३, १५१, ११०५, ११०६; ६।६७,
६८, ७१, ७४

सममय [सममत] रा० ७५० से ७५३

सममाण [सममान] ओ० ४०, ५२. रा० १६, ६८७,
६८६

√सममाण [सं- मानय]—सममाणिस्संति. रा०
७०४—सममाणेइ. ओ० २१. ७०६—सममा-
णेज्जा. रा० ७७६—सममाणेति. रा० ६८४
सममाणेमि. रा० ५८—सममाणेमो. ओ०
५२. रा० १०—सममाणेहिंति. ओ० १४७

सममाणिज्ज [सममाननीय] ओ० २. जी०
३।४०२, ४४२

सममाणित्तए [सममानयितुम्] ओ० १३६. रा०
६

सममाणेत्ता [सममान्य] ओ० २१

सममासिच्छदिवि [सम्यग्मिथ्यादृष्टि] जी०
१।२८, ८६; ३।११०५, ११०६

सममासिच्छादिवि [सम्यग्मिथ्यादृष्टि] जी०
३।१०३, १५१; ६।६७, ७०, ७३, ७४

सम्मुइ [सममति] जी० ३।२३६

सय [शत] ओ० ६३, ६४, ६८, ७१, ११५, ११८,
११९, १७०, १६२, १६५।५. रा० १७, १८, ३२,
६१, ६६, ६६ से ७१, १२४, १२७, १२९, १३७,
१६२, १७०, १७३, १८६, १८८, २०४ से २०६,
२०९, २११, २३३, २५१, २५४, २५८, २६२,
२६२, ६८१, ६८६, ७११, ७५३. जी० १।६४;
२।४१, ४८, ७३, ६२, ६७, १२५, १२८; ३।८२,
६१, १२६।६, १७४, २१७ से २२६, २२६।१, ३,
६, २२७, २३७, २४६, २४६, २५५, २५७, २६०,
२६२, २६३, ३५१, ३५२, ३६१, ३७४, ४१६,
४५७, ६३२, ६४७, ६४८, ६७४ से ६७६, ६८३,
७०३, ७०६, ७२२, ७३६, ७५४, ८०२, ८०६,
८२०, ८२३, ८३०, ८३४, ८३७, ८३८।६, ६, ३१,
८३६, ८८७, ९०८, ९१८, ९६९, १००३, १००५,

१०१४, १०१६, १०२२, १०४१, १०५२, १०५३,
१०५५, १०६५ से १०७०; ४।१५; ५।१६, २६;
६।६३, १०६, १२३, १२८, १४४

सय [स्वक] ओ० २०, ५३. रा० ५४, ६७१, ६८१,
७१०, ७१८, ७५०, ७७४

√सय [शी]—सयंति रा० १८५. जी० ३।२१७

सयंपभा [स्वयंप्रभा] जी० ३।१०७७

सयंबुद्धसिद्ध [स्वयंबुद्धसिद्ध] जी० १।८

सयंभूमहावर [स्वयंभूमहावर] जी० ३।६५१

सयंभूरमण [स्वयंभूरमण] जी० ३।२५६, ६४६ से
६५१, ६६२, ६६४, ६६५, ६६८

सयंभूवर [स्वयंभूवर] जी० ३।६५१

सयंभूरमण [स्वयंभूरमण] जी० ३।६७१

सयंभूरमणग [स्वयंभूरमणक] जी० ३।७८०

सयंसंबुद्ध [स्वयंसंबुद्ध] रा० ८, २६२.

जी० ३।४५७

सयग्घि [शतघ्न] ओ० १

सयण [शयन] ओ० १४, १४१, १४६, १५०.

रा० १८५, ६७१, ६७५, ७६६, ८१०, ८११.

जी० ३।२६७, ८५७, ११२८, ११३०

सयण [स्वजन] ओ० १५०. रा० ७५१, ८०२,
८११

सयणविहि [शयनविधि] ओ० १४६. रा० ८०६

सयणिज्ज [शयनीय] रा० २६१, २७७.

जी० ३।६५०, ६८२

सयपत्त [शतपत्र] ओ० १२, १५०, रा० ८११.

जी० ३।११८, ११६, २८६

सयपाग [शतपाक] ओ० ६३

सयपोराम [शतपर्वक] जी० ३।१११

सयमेव [स्वयंमेव] रा० ६७४, ६८०, ६६८, ७५४,
७६१

सयराहं [सप्तति] जी० ३।१०००

सयराह [दे०] अकस्मात् ओ० १२२

सयत्त [शकल] ओ० १६, ४७

सयवत्त [शतपत्र] ओ० ४७. रा० १३७, १७४,
१६७, २७६, २८८. जी० ३।३०७

सयसहस्र [शतसहस्र] ओ० १,२१,४६,५४,६८,
६४,६५,१७०,१६२. रा० १४,१७,१८,१२४,
१२६,१७०,१८८. जी० ११७३,७८,८१,१३५;
३१२,६३ से ६६,७७,८२,१२७,१६०,१६२,
१६६ से १६८,१७१,२३२,२६०,७०६,७१०,
७२२,७२३,७६४,८०२,८०६,८१२,८१५,
८२०,८२३,८२७,८३०,८३२,८३४,८३५,
८३७,८३८,८४०,८४१,८४५,८५०,८५२,८५०,
८४४,८६६,१०२७,१०३८,१०३९,१०७४

सयसाहस्रिय [शतसाहस्रिक] रा० ५६

सयसाहस्री [शतसाहस्री] जी० ३१६५८

सर [शर] ओ० ६४. रा० १७३,६८१,७६५.

जी० ३२८५

सर [स्वर] ओ० ६,७१. रा० १७,१८,२०,६१.

जी० ३१११,११६,२७५,२८५,२८६,८५७,
८६३

सर [सरस्] ओ० ६६

सरंधी [दे०] जी० २१६

सरग [सरक] जी० ३१५८७

सरगय [स्वरगत] ओ० १४६. रा० ८०६

सरडी [सरटी] जी० २१६

सरण [शरण] ओ० १६,२१,५४. जी० ३१५६४

सरणवय [शरणवय] ओ० १६,२१,५४. रा० ८,
२६२. जी० ३१४५७

सरतल [सरस्तल] रा० २४. जी० ३१२७७

सरपंतिया [सरःपड्दिकका] रा० १७४,१७५,१८०.

जी० ३१२८६

सरभ [शरभ] जी० १३. रा० १७,१८,२०,३२,
३७,१२६. जी० ३१२८८,३००,३११,३७२

सरभह [सरोमह] रा० ६८८

सरय [शरद्] जी० ३१५६०

सरल [सरल] जी० ११७२

सरलवण [सरलवन] जी० ३१५८१

सरस [सरस] ओ० २,५५,६३. रा० ३२,२७६,२८१,
२८५,२८१,२८३ से २८६,३००,३०५,३१२,
३५१,३५५,५६४. जी० ३१३७२,४४५,४४७,

४५१,४५७ से ४६२,४६५,४७०,४७७,५१६,

५२०,५४७,५५४

सरसरपंतिया [सरःसरःपड्दिकका] रा० १७४,

१७५,१८०. जी० ३१२८६

सरसी [सरसी] रा० १७४,१७५,१८०.

जी० ३१२८६

सरस्सी [सरस्वती] ओ० ७१. रा० ६१

सरागसंजम [सरागसंजम] ओ० ७३

सरासण [शरासन] रा० ६६४,६८३.

जी० ३१५६२

सरि [सदृश] जी० ३१६६६,७७५

सरिता [सरिता] जी० ३१४४५

सरित्तय [सदृक्त्वच्] रा० ६६,७०

सरिक्वय [सदृक्त्वयस्] रा० ६६,७०

सरिस [सदृश] ओ० १६,२२,४७. रा० ६६,७०,

२७०, ७७७, ७७८, ७८८. जी० ३११०, ४१२,
५६६ से ५६८, ६८२, ७०८, ७१०, ८१४, ६२८,
६४६, १११५

सरिसक [सदृशक] जी० ३१६६६

सरिसय [सदृशक] रा० ६६,७०. जी० ३१६६५,

७६२

सरिसव [सर्षप] जी० ११७२

सरिसवविगड [सर्षपविकृति] ओ० ६३

सरिसिक्व [सरीसृप] रा० ६७१

सरीर [शरीर] ओ० १५,२०,५२,५३,८२. ११७,

१४३. रा० १२२, १२३, ६७२, ६७३, ६८६ से
६८९, ६९२, ७००, ७१६, ७२६, ७२८, ७३२,
७३७, ७४८ से ७६४, ७७० से ७७३, ७६५,
७६६, ८०१. जी० ११४४, १६ से १८, ५०,
७२१, ३, ७४, ८६, ८८, ९०, ९४ से ९६, १०१,
१११, ११२, ११६, ११६, १२१, १२३, १२४,
१३०, १३५; ३१६१ से ६३, १२६४, १०, ५६८,
६६६, १०८७, १०८६ से १०६२

सरीरग [शरीरक] रा० ७६५. जी० ११५, ५६,

७४, ७७, ७६, ८०, ८२, ८५, ९०, ९३, १०१, १०३,
११६, १२८, १३०, १३५; ३१६४, १३६, १०६०,

१०६१, १०६३, १०६७, १०६८
 सरीरत्थ [शरीरस्थ] ओ० १७४
 सरीरपज्जत्ति [शरीरपर्याप्ति] रा० २७४, ७६७.
 जी० ११२६; ३, ४४०
 सरीरय [शरीरक] जी० ११६४; ३१६२, ६५, ६६,
 सरीरविउत्सम्म [शरीरव्युत्सर्ग] ओ० ४४
 सरीरि [शरीरिन्] जी० ६६६
 सरीसिध [सरीसृप] जी० ३१८८
 सलिल [सलिल] ओ० २७, ४६. रा० १७४, २८८.
 जी० ३११८, ११६६, २८६, ४५४
 सलिला [सलिला] रा० २७६. जी० ३१४४५
 सलील [सलील] रा० २५५, २५६. जी० ३१४१६,
 ४१७
 सलेस [सलेष्य] जी० ६१२६
 सलोद्द [सलोऽप] रा० ७५४, ७५६, ७६४
 सल्ल [सल्ल] ओ० ७२
 सल्लई [सल्लकी] जी० ३१८७२
 सल्ली [दे०] जी० २१६
 सवण [श्रवण] ओ० १६. रा० २५४.
 जी० ३१४१५, ५६६, ५६७
 सवणया [श्रवणता] ओ० २०, ५२, ५३. रा० ६८७,
 ७१३, ७१६, ७५० से ७५३
 सवियारि [सविचारिन्] ओ० ४३
 सविसय [सविषय] जी० ११४७
 सविसेस [सविशेष] जी० ३११०१०, १०१४
 सवेदम [सवेदक] जी० ६१२२, २५, २७
 सवेदय [सवेदक] जी० ६१२३, २८, ३२
 सव्व [सर्व] ओ० २७. रा० ६. जी० ११५०
 सव्वओ [सर्वतस्] ओ० ३, ६, २७, ७६, ११७.
 रा० ६, १२, ३०, ४०, ६३, ६५, १२७, १३२,
 १३५, १५४, १७३, १८६, २०१, २०५ से २०७,
 २३६, २६३, २८१, ६७०, ८१३. जी० ३१२१७,
 ३८८, ८१२, ८२३, ८५०
 सव्वओभद्द [सर्वतोभद्र] ओ० ५१
 सव्वओभद्दपडिमा [सर्वतोभद्रप्रतिमा] ओ० २४

सव्वंग [सर्वाङ्ग] ओ० १५. रा० ६७२, ६७३,
 ८०१. जी० ३१५६६, ५६७
 सव्वकामगुणिय [सर्वकामगुणित] ओ० १६५११८
 सव्वकाल [सर्वकाल] ओ० १६५११६
 सव्वक्खरसण्णिवाद्द [सर्वाक्षरऽग्निपातिन्] ओ० २६
 सव्वग्ग [सर्वाग्र] रा० २२७. जी० ३१३८६, ६४२,
 ६५३, ६७२, ६७६, ७६४, ७६५
 सव्वट्ठ [सर्वार्थ] जी० ३१६३४
 सव्वट्ठसिद्ध [सर्वार्थसिद्ध] ओ० १६७, १६२.
 जी० २१७८, ८१; ३११८४, १६२
 सव्वट्ठसिद्धय [सर्वार्थसिद्धक] जी० २१८५, ६६;
 ३१२३१
 सव्वण्णु [सर्वज] ओ० १६, २१, ५४. रा० ८, २६२.
 जी० ३१४५७
 सव्वतो [सर्वतस्] रा० १२, ४५, १६१, २०८, ७५५,
 ७६४, ७६५, ७७२, ७७४. जी० ३१४६, ५०,
 २६०, २६२, २६५, २८३, २८५, ३०२, ३०५,
 ३१३, ३२७, ३५२, ३६२, ३६८ से ३७१, ३६०,
 ३६८, ४४७, ५६१, ६३६, ६५२, ६५८, ६६८,
 ६७८, ६७९, ६८१, ६८६, ७०४, ७०६, ७३६,
 ७४१, ७५४, ७७०, ७७२, ७६६, ७६८, ८१०,
 ८२१, ८३३, ८३६, ८४५, ८४८, ८५६, ८६२,
 ८६५, ८६८, ८७१, ८७४, ८७७, ८८०, ८२५
 सव्वत्ता [सर्वता] ओ० ७६
 सव्वत्थ [सर्वार्थ] ओ० ४०
 सव्वत्थ [सर्वत्र] जी० २१८५
 सव्वदरिसि [सर्वदर्शिन्] ओ० १६, २१, ५४.
 रा० ८१२६२. जी० ३१४५७
 सव्वद्धपिण्डिय [सर्वाश्वपिण्डित] ओ० १६५११४,
 १५
 सव्वद्धा [सर्वाश्व] जी० ३१६६३, १६४
 सव्वपाणभूयजीवसत्तमुहावहा [सर्वपाणभूतजीव-
 सत्त्वमुखावहा] ओ० १६३
 सव्वभाव [सर्वभाव] ओ० १६५११२
 सव्वभासाणुगामि [सर्वभाषानुगामिन्] ओ० २६

सव्यभासाणुगामिणी [सर्वभासानुगामिणी]

ओ० ७१. रा० ६१

सव्वरतणा [सर्वरतना] जी० ३।६२२

सव्वागास [सर्वकाश] ओ० १६५।१५

सर्व्विदिय [सर्वेन्द्रिय] जी० ३।६०२, ६००, ६६६,
६७२, ६७८

सर्व्विदियकायजोमज्जुणया [सर्वेन्द्रियकाययोग-
योजनता] ओ० ४०

सव्वोउथ [सर्वतुंक] ओ० ४६. रा० १५६, ६७०.
जी० ३।३३२

सव्वोसहिपत्त [सर्वौषधिप्राप्त] ओ० २४

सस [शश] रा० २७

ससंभम [ससम्भ्रम] ओ० २१, ५४

ससक [शशक] जी० ३।२८०

ससक्खं [ससाक्ष्य, ससाक्षात्] रा० ७५४, ७५६,
७६४

ससग [शशक] जी० ३।६२०

ससण [श्वसन] ओ० १६. जी० ३।५६६

ससरीरि [सशरीरिन्] जी० ६।६२

ससि [शशिन्] ओ० १५, १६, ४७, ६३, १४३.

रा० ६७२, ६७३, ६०१. जी० ३।५६३, ५६६,
५६७, ६०६, ६३६, २४, २६, २८, ३०, ३१,
१०००

ससुरकुलरक्खिया [श्वमुरकुलरक्षिता] ओ० ६२

सस्तिरीय [सश्रीक] ओ० ६३. रा० १३६, २२८.

जी० ३।३०६, ३०७, ५६६, ६७२

सस्तिरीयक्ख [सश्रीकरूप] रा० १७, १८, २०, ३२,

१२६, १३०, १३७. जी० ३।२८८, ३००, ३०७,
३७२

सह [सह] जी० ३।६११

सहसंबुद्ध [स्वयंसम्बुद्ध] ओ० १६, २१, ५२, ५४

सहसा [सहसा] जी० ३।५८६

सहस्स [सहस्र] ओ० १६, ६८, ६६, ६६ से ६३,
१७०, १६२. रा० १७, १८, २०, २४, ३२, ५२,
५६, १२४, १२६, १२६, १५६, १६३, १६६,

१८८, २३१, २४७, २७६, २८०, ७८७, ७८८.

जी० १।५८, ५६, ६५, ७३, ७४, ७८, ८१, ६४,

६६, १०१, १०३, १११, ११२, ११६, ११६,

१२३, १३६, १३७; २।३५ से ३६, ६६, १०८,

११०, १११, ११८, १२८, १२६, १३६; ३।१४ से

२१, २३ से २७, ५१, ६० से ६३, ७७, ८० से

८२, ६१, ११८, १७४, १८६ से १६२, २२६।६,

२४२, २४६, २६०, २७७, २८८, ३००, ३३२,

३३५, ३३६, ३५१, ३५५, ३५८, ३६१, ३७२,

३६३, ३६८, ४४५, ४४६, ४४८, ५६६, ५६८ से

५७०, ५७७, ५६०, ५६८, ६३२, ६३८, ६३६,

६६०, ७०३, ७०६, ७१४, ७२२, ७२३, ७२५,

७२६, ७२८, ७३२, ७३३, ७३६, ७३६, ७४०,

७४२, ७४५, ७५०, ७५४, ७६१, ७६२, ७६४

से ७७६, ७८८ से ७६२, ७६४, ७६५, ७६८,

८०२, ८०६, ८१२, ८१४, ८१५, ८२०, ८२३,

८२७, ८३०, ८३२, ८३४, ८३५, ८३७, ८३८।२७,

३१, ८३६, ८४१, ८८२, ६११, ६१८, ६७१,

१०००, १०१५, १०१७ से १०१६, १०२२,

१०२३, १०२८, १०२६, १०३८, १०५१,

१०७३, १०७४, ११३१; ४।३, ६, ६, ११, १६;

५।५, ६, १०, १२, १४, १५, २८, २६; ६।२,

६, ७।३, १३; ८।३; ९।२ से ४, १३२, २१०,

२१४, २२४, २२८, २३४, २४१, २६०, २६६,

२७७

सहस्सपत्त [सहस्रपत्र] ओ० १२, १५०. रा० २३,

१७४, २२३, २७६, २८१, २८८, २८६, ८११.

जी० ३।११८, ११६, २५६, २६६, २८६, २६१,

३१५, ४४५, ४४७, ४५४, ४५५, ६३६, ६३७,

६५१, ६५६, ६७७, ७३८, ७४३, ७६३, ८६४

सहस्सपाग [सहस्रपाक] ओ० ६३

सहस्सभाग [सहस्रभाग] ओ० २

सहस्सरस्सि [सहस्ररश्मि] ओ० २२. रा० ७२३,

७७७, ७७८, ७८८

सहस्सवत्त [सहस्रपत्र] रा० १६७, २७६

सहस्ससो [सहस्रशस्] जी० ३।१२६।६

सहस्रार [सहस्रार] ओ० ५१, १५७, १६२.

जी० १११६, १२३; २ ६१, ६६, १४८, १४९;
३ १०३८, १०५२, १०६१, १०६६, १०६८,
१०७६, १०८३, १०८५, १०८८

सहस्रारग [सहस्रारक] जी० ३११११

सहा [सभा] ओ० ३७. जी० ३१४१२

सहिणग [सलक्षणक] जी० ३१५६५

सहित [सहित] जी० २११०५; ३ २८५, ६२७

सहिय [सहेत] ओ० १६

सहिय [सहित] रा० ७५. जी० ३१८३८२५

सही [सखी] जी० ३१६१३

सहोड [सहोड] रा० ७५४, ७५६, ७६४

साइ [साचि] रा० ६७१

√साइज्ज [स्वाद्] - साइज्जामो. ओ० ११७

साइज्जणया [स्वादन] ओ० ३३

साइज्जित्तए [स्वादयितुम्] ओ० ११७

साइम [स्वाद्य] ओ० ११७, १२०, १४७, १६२.

रा० ६६८, ७०४, ७१६, ७५२, ७६५, ७७६,
७८७ से ७८९, ७९४, ७९६, ८०२, ८०८

साइरेग [सातिरेक] ओ० २३, १४५, १८८.

रा० १७०, २११, २२२, २२७, २५३.
जी० २१६३; ३ २५०, ३५८, ३७४, ३७६, ३८६,
४१४, ६५३, ६७५, ८८२, ८८७, ८९४; ६ ३४,
८६, ६३, १३४, १६०, १६१, १६५

साउ [स्वादु] ओ० ६. जी० ३. २७५

सागर [सागर] ओ० २७, ४६, ७४५. ६६,

१६५।२२. रा० २४, ७६५, ८१३.

जी० ३१२७७, ५६६, ८३८।२३

सागरनागरपविभत्ति [सागरनागरप्रविभक्ति]

रा० ६२

सागरपविभत्ति [सागरप्रविभक्ति] रा० ६२

सागरमह [सागरमह] रा० ६८८, ६८९

सागरोवम [सागरोपम] ओ० ११४, ११७, १४०,

१५५, १५७ से १६०, १६२, १६७. रा० २८२.

जी० ११६६, १३६, १३८; २ १७३, ७६, ८२,

६३, ६७, १०७, १०८, ११८, १२५, १२७, १२९,

१३६; ३ १६२, १६७, ४४८, ८४१, १०४६,

१०४७, १०४९ से १०५३, १०५५, ११३१,

११३७; ४ ४६, १५, १६; ५ ६, १०, १६ २८,

२६; ६ २, ११; ७ ३, १६; ८ ३; ९ २ से ४,

३१, ३४, ६८, ७२, ८६, ९३, १०२, १०६, १२३,

१२८, १३२, १३४, १६०, १६१, १६५, १७२,

१७६, १८६ से १९१, १९६, १९८, १९९, २०३,

२०६, २१०, २१७, २२४, २२८, २३४, २४४,

२६०, २६६, २८०

सागार [साकार] ओ० १८२, १६५।११.

जी० ११३२, ८७; ३ १०६, १५४, १११०;

६ ३६, ३७

सानुक्कोसिया [सानुकोषता] ओ० ७३

सातासोक्ख [सातसौख्य] जी० ३।१११७

साति [साचि] जी० १।११६

साति [स्वाति] जी० ३।१००७

सातिरेग [सातिरेक] रा० ८०५. जी० १।७४;

२।४३, ४४, ४७, ८२, १२५, १२८; ३ २४७,

२५६, ३८१, ६४२, ६७२, ६७६, ६८६, ६९७,

१०३४, १०३६, ११३७; ४ ६, १५; ५ १६,

२६; ६ ११; ७ १६; ८ ३; ९ ३, ३१, ६८, ७२,

१०२, १०६, १२३, १२८, १३२, १६८, १६९,

२०६, २१७, २४४, २६०, २८०

सादीय [सादिक] ओ० १८३, १८४, १६५.

जी० ६।२४, २५, ३१, ३३, ३४, ८२, ११०, १२५,

१६३, १६२, १६५, २०१, २०२, २०५, २०६,

२१५, २१६, २२७, २३०, २४०, २४६, २६१,

२६५, २७६, २८५

साभाविय [स्वाभाविक] रा० २७६, २८०.

जी० ३।४४५, ४४६

साम [सामन्] रा० ६७५

सामंत [सामन्त] रा० ७५३

सामण्यपरियाग [श्रामाभ्यपर्याय] ओ० ६५, १५५,

१५६, १६०

- सामन्नओविणिवाइय [सामान्यतोविनिपातिक] रा० ११७, २८१
- सामन्नतोविणिवातिय [सामान्यतोविनिपातिक] जी० ३१४४७
- सामलतामंडवग [श्यामलतामण्डपक] जी० ३१८५७
- सामलतामंडवय [श्यामलतामण्डपक] जी० ३१८५७
- सामलया [श्यामलता] ओ० ११. रा० १४५. जी० ३१२६८, ३०८, ३७७, ३६०, ५८४
- सामलयापविभक्ति [श्यामलताप्रविभक्ति] रा० १०१
- सामलयामंडवग [श्यामलतामण्डपक] जी० ३१२६६
- सामलयामंडवय [श्यामलतामण्डपक] जी० ३१२६७
- सामलि [शाल्मली] जी० ३१५६६
- सामवेद [सामवेद] ओ० ६७
- सामाहय [सामायिक] ओ० ७७
- सामाहयचरित्तविणय [सामायिकचरित्रविनय] ओ० ४०
- सामानिय [सामानिक] रा० ७, ४१, ४८, ५६ से ५८, २७६ से २८०, २८२, २८४, २८७, २८९, २९१, ६५७, ६५८, ६६६. जी० ३१३३९, ३५०, ३५९, ४४२ से ४४६, ४४८, ४५५, ४५७, ५५७, ५५८, ५६३, ५६५, ६३५, ६३७, ६५७, ६५९, ६८०, ७००, ७२१, ७३८, ७६०, ७६३, ८४३, ८४६, १०२५
- सामाय [श्यामाक] रा० २६. जी० ३१२७९
- सामि [स्वामिन्] ओ० ५६. रा० ६, ६८१, ७०७, ७२३, ७२६, ७३१, ७३३ से ७३५, ७५१, ७५३
- सामित्त [स्वामित्व] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३१३५०, ५६३, ६३७
- सामुग्ग [समुद्ग] ओ० १९
- सामुच्छेइय [सामुच्छेदिक] ओ० १६०
- सामुद्दग [सामुद्ग] जी० ३१७८०
- साय [सात] जी० ३१२९१६
- साया [सात] जी० ३१११८, ११९
- सार [सार] ओ० १४, २३, ४६. रा० ३७, १७३, ६७१, ६७९, ६६५. जी० ३१२८५, ३११, ५८६, ६०८
- सारइय [शारदिक] जी० ३१२८२, ८७२, ९६०
- सारखणणुबंधि [सारखणणुबन्धिन्] ओ० ४३
- सारग [सारक, स्मारक] ओ० ६७
- सारतिय [शारदिक] रा० २९
- सारय [शारद] ओ० २७, ७१. रा० ६१. जी० ३१५६२, ५६७
- सारयसल्लि [शारदसल्लि] रा० ८१३
- सारस [सारस] ओ० ६. जी० ३१२७५
- सारहि [सारधि] ओ० ६४. रा० १७३, ६७५, ६८०, ६८१, ६८३, ६६५ से ७१०, ७१३, ७१४, ७१६ से ७३४, ७३६, ७४८. जी० ३१२८५
- सारा [दे०] जी० २१६
- सारिज्जंत [सार्यमान] रा० ७७
- सारीर [शारीर] ओ० ७४
- साल [शाल] ओ० ९, १०. जी० ११७१; ३१५८३
- सालघरग [शालामृहक] रा० १८२, १८३. जी० ३१२६४
- सालगग [शालनक] जी० ३१५६२
- सालभंजिया [शालभञ्जिका] रा० १३३, १३६, २६४, २६६ से २६९, ३१२, ४७३. जी० ३१३००, ३०३, ३१६, ३५५, ३७२, ४५६, ४६१, ४६२, ४७७, ५३२
- सालभंजियाग [शालभञ्जिका] रा० १७, १८, ३२, १३०
- सालमंत [शाखावत्] ओ० ५, ८. जी० ३१२७४
- सालवण [शालवन] जी० ३१५८१
- साला [शाखा] रा० १३३, २२८. जी० ३०३, ३८७, ५८०, ६२१, ६७२ से ६७४

१. 'सारय' ति अध्यापनद्वारेण प्रवर्त्तकाः स्मारका वा अन्येषां विस्मृतस्य स्मरणात् (वृ) ।

सालि [शालि] ओ० १. रा० १५०. जी० ३।६२१,
६३१
सालिपिट्ट [शालिपिट्ट] रा० २६. जी० ३।२८२
सालिसय [सदुशक] रा० २४५. जी० ३।४०७
सावएज्ज [स्वापतेय] रा० ६६५. जी० ३।६०८
सावज्ज [सावद्य] ओ० ४०, १३७, १३८
सावज्जजोग [सावद्ययोग] ओ० १६१, १६३
सावतेज्ज [स्वापतेय] ओ० २३
सावत्थी [श्रावस्ती] रा० ६७५, ६७७ से ६८०
६८३, ६८५ से ६८६, ६९२, ७००, ७०६,
७११
सावय [स्वापद] ओ० ४६. जी ३।६२०
सावय [श्रावक] जी० ३।७६५, ८४१
सावाणुग्गहसमत्थ [शापानुग्रहसमर्थ] ओ० २४
साविया [श्राविका] जी० ३।७६५, ८४१
सावैत्त [श्रावयत्] ओ० ६४
सास [शवास] जी० ३।६२८
सासत्त [शासत्] ओ० ६४
सासत्त [शाशवत्] जी० ३।५७, ५८, ८७, ७०२,
७६०
सासय [शाशवत्] ओ० १८३, १८४, १९५।१६, २१.
रा० १३३, १६८ से २००. जी० ३।५६,
१२७।२, २७० से २७२, ३०३, ३५०, ७२१,
७२४, ७२६, ७६०, १०८१
सासा [स्वाशा, शास्या] ओ० ४६
√साह [कथय्, शास्]—साहिति. रा० ११
—साहेति. रा० २८१. जी० ३।४४७
—साहेह. रा० ६
√साह [साध्]—साहेह रा० ७६५—साहेज्जासि.
रा० ७६५.—साहेमि. रा० ७६५
साहद्दु [संहृत्य] ओ० २१
√साहण [स+हन्]—साहणेज्जा. जी० ३।११८
साहम्मियवेवावच्च [साधमिकवैवावृत्त्य] ओ० ४१
साहय [संहत] ओ० १६. जी० ३।५६६, ५६७
√साहर [सं+ह]—साहरति जी० ३।४५७

साहरण [संहरण] जी० २।११६, १२४
साहरणसरीर [साधारणशरीर] जी० १।६८, ७३
साहरिज्जमाण [संहियमाण] रा० ३०, ८०४.
जी० ३।२८३
साहरिज्जमाणचरय [संहियमाणचरक] ओ० ३४
साहरित्ता [संहृत्य] जी० ३।४५७
साहसिय [साहसिक] ओ० १४८, १४९. रा०
८०६, ८१०
साहस्सित [साहसिक] जी० ३।८४२
साहस्सिय [साहसिक] रा० ५६. जी० ३।८४२,
८४५
साहस्सी [साहसी] ओ० १६. रा० ७, ४१ से ४४,
४८, ५६ से ५८, २३५, २३६, २८०, २८२, २८६,
२९१, ५६८, ६५७, ६५८, ६६० से ६६२, ६६४.
जी० ३.२३६, २४६, २५५, ३३६, ३४१ से
३४५, ३५०, ३६७, ३६८, ४४६, ४४८, ४५५,
४५७, ५५७, ५५८, ५६०, ५६२, ५६३, ६३५,
६३७, ६५७ से ६५९, ६८०, ७००, ७२१, ७३३,
७३८, ७६० से ७६३, ६०२, ६०३, १०२५,
१०३८, १०४१, १०४४, १०४६, १०४९ से
१०५२
साहस्सीय [साहसिक] रा० ६७१
साहा [शाखा] ओ० ५, ८. रा० २२८.
जी० ३।२७४, ३८७, ६७२
साहिता [कथयित्वा] रा० ६
साहिय [साधिक] ओ० १६५।७
साहिय [सहित] जी० ३।६२५
साहिय [साधित] रा० ७६५
साहु [साधु] ओ० ४६, १६१, १६३
सिग [शृङ्ग] रा० ७१, ७७
सिगवेर [शृङ्गवेर] जी० १।७३
सिगमेद [शृङ्गमेद] ओ० १३
सिगमाल [शृङ्गमाल] जी० ३।५८२
सिगवाय [शृङ्गवादक] रा० ७१
सिंगार [शृङ्गार] ओ० १५. रा० ७०, ७८, १३३,
६७३, ८०६, ८१०. जी० ३।३०३, ५६७, ११२२

सिधाडग [शुद्धाटक] ओ० १,५२,५५. रा० ६८७,
७१२. जी० ३,५५४,५५५
सिधाडय [शुद्धाटक] रा० ६५४,६५५
सिधुवार [सिन्धुवार] जी० ३,२८२
सिधुवारगुम्म [सिन्धुवारगुम्म] जी० ३,५८०
सिधु [सिन्धु] रा० २७६. जी० ३,४४५,५६५
६३७
सिभिध [श्लैष्मिक] ओ० ११७. रा० ७६६
सिह [सिंह] जी० ३,७८१,७८२,१०३८
सिहली [सिहली] ओ० ७०. रा० ८०४
सिक्कग [सिक्क] रा० १३२,१५३,२३६,२४०.
जी० ३,३२६,४०२
सिक्कय [सिक्कय] रा० १३२,१४०,७६१. जी०
३,३०२,३२६,३६८,४०२
सिक्खा [सिक्खा] ओ० ७६,७७,६७
सिक्खाव [सिक्खाय]—सिक्खाविहित ओ० १४६
—सिक्खावेहिह. रा० ८०६
सिक्खावय [सिक्खान्त] ओ० ७७
सिक्खावित्ता [सिक्खयित्ता] ओ० १४६
सिक्खवेत्ता [सिक्खयित्ता] रा० ८०७
सिघ [शीघ्र] रा० १०,१२,५६,२७६. जी०
३,१८६,१७६,१७८,१८०,१८२,४४५
सिघगति [शीघ्रगति] जी० ३,६८६,१०२०
सिघगमन [शीघ्रगमन] रा० १७,१८
✓सिज्ज [सिद्ध]—सिज्जइ. ओ० १७७—
सिज्जई. ओ० १६५,१२—सिज्जकति. ओ०
७२. जी० १,१३३—सिज्जहिहि. ओ०
१६६.—सिज्जहिहि ओ० १५४ रा० ८१६
सिज्जमाण [सिद्धयत्] ओ० १८५
सिडिल [सिद्धिल] रा० ७६०,७६१
सिणाइत्तए [सिनातुम्] ओ० १११
सिणेह [सिंह] ओ० १६८. जी० ३,२२२
सिता [सियात्] जी० ३,६०,१०६,११८,११९,
१७६,१७८,१८०,१८२,१६५,१६६
सित्त [सित्त] ओ० ५५. जी० ३,५६२

सित्थ [सिक्क] जी० ३,५६२
सिद्ध [सिद्ध] ओ० ७१,७४,३,६,१८३,१८४,
१८६ से १६२,१६५,१२,४ से ११,१३,१५,
१७,१९ से २१. जी० १,६; ६,१०,१२,
१४,१६,२६,४४,४५,५४,६२,६६,१५६,
१५८,२०६,२१५,२१६ से २२१,२२७,२३०
से २३२,२४०,२४६,२६५,२६७,२७५,२७६,
२८४ से २८७,२६२,२६३
सिद्धकेवलगाण [सिद्धकेवलज्ञान] रा० ७४५
सिद्धत्थ [सिद्धार्थ] रा० १५६,१५७,२५८,२७६.
जी० ३,३२६,४१६,४४५
सिद्धत्थय [सिद्धार्थक] रा० २७६,२८०.
जी० ३,४४५,४४६,४४८,५६३
सिद्धवसहि [सिद्धवसति] ओ० ७४,३
सिद्धाधतण [सिद्धाधतण] रा० २५१,२५२,२५६,
२६०,२७६,२८८,२९१,२९३,२९४,३१३,
३३१,३३२. जी० ३,४१२,४१३,४२०,४२१,
४५४,४५७ से ४५६,४७८,४६६,४६७,६७४,
६७६,६७७,६९१ से ६९८,८२५,८८४,९०१
से ९०५,९०६,९१३
सिद्धालय [सिद्धालय] ओ० ७४,६,१६३
सिद्धि [सिद्धि] ओ० ७१,१७२,१६३
सिद्धिगइ [सिद्धिगति] ओ० १६,२१,५४,११७.
रा० ८,२६२,७१४,७६६. जी० ३,४५७
सिद्धिमग्ग [सिद्धिमार्ग] ओ० ७२
सिद्धिमहापट्टणाभिमुह [सिद्धिमहापत्तनाभिमुख]
ओ० ४६
सिप्प [सिल्प] ओ० ६३. रा० १२,७५८ से ७६१.
जी० ३,११८,११९
सिप्पायरिय [सिल्पान्तरिय] रा० ७७६
सिप्पि [सिल्पिन्] ओ० १
सिप्पिय [सिक्ति] जी० ३,७६३
सिप्पिय [सिल्पिक] जी० ३,५६१
सिबिया [सिबिका] ओ० ५२
सिय [सित] ओ० ४६

सिध [स्यात्] जी० १।४६,७३,८२; ३।५७,५८,
२७०

सिधरक्त [सितरक्त] ओ० ४७

सिधा [स्यात्] जी० ३।८४,८५,११८,१६७,
२७८ से २८५,६०१,६०२,८६०,८६६,८७२
से ८७८,९८२,१०८५,१०८६

सिधाल [श्रुगाल] जी० ३।६२०

सिध [शिरस्] ओ० ५२,७१. रा० ६१,७६,६८७
से ६८६

सिधय [शिरोज] ओ० १६,५१. रा० १३३.
जी० ३।३०३,५६६,५६७

सिधय [शिरस्क] ओ० ६३,६५

सिधसावत्त [शिरसावर्त्त] ओ० २०,२१,५३,५४,
५६,६२,११७. रा० ८,१०,१२,१४,१८,४६,
७२,७४,११८,२७६,२७६,२८२,२६२,६५५,
६८१,६८३,६८६,७०७,७०८,७१३,७१४,
७२३,७६६. जी० ३।४४२,४४५,४४८,४५७,
५५५

सिधिकांता [श्रीकान्ता] जी० ३।६८८

सिधिचंदा [श्रीचन्द्रा] जी० ३।६८८

सिधिरिणलया [श्रीनिलया] जी० ३।६८८

सिधिवाम [श्रीवामन्] जी० ३।५६७

सिधियर [श्रीधर] जी० ३।८५४

सिधिरिपभ [श्रीप्रभ] जी० ३।८५४

सिधिमहिषा [श्रीमहिता] जी० ३।६८८

सिधिली [दे० श्रीली] जी० १।७३

सिधिवच्छ [श्रीवत्स] ओ० १२,१६,५१,६४.

रा० २१,४६,२५४,२६१. जी० ३।२८६,
३४७,४१५,५६६^१

सिरी [श्री] रा० ४०,१३२,१३५,२३६,७३२,
७३७,७७४,७८२. जी० ३।२६५,३०२,३०५,
३१३,३६८,५८०,५८१,५६१

सिरीस [शिरीष] ओ० ६,१०. रा० ३१.

जी० ३।२८४,३८८,५८३

सिरीसव [सरीसृप] रा० ७१८. जी० ३।७२१

सिरीसिध [सरीसृप] रा० ७०३

सिरीवेदना [शिरीवेदना] जी० ३।६२८

सिलप्यवालमय [शिलाप्रवालमय] रा० २५४.

सिला [शिला] ओ० १६,२३,४७. रा० २७,
६६५,७५५,७५७. जी० ३।२८०,५६६,६०८

सिलातल [शिलातल] जी० ३।५६६

सिलायल [शिलातल] ओ० १६

सिलिष [सिलिन्ध्र] ओ० ४७

सिलेस [म्लेष] जी० १।७२।५

सिलोय [श्लोक] ओ० १४६. रा० ८०६

सिव [शिव] ओ० १४,१६,२१,५४. रा० ८,
२६२,६७१. जी० ३।४५७

सिवग [शिवक] जी० ३।७४०

सिवमह [शिवमह] रा० ६८८. जी० ३।६१२

सिवय [शिवक] जी० ३।७३४,७४१

सिवा [शिवा] जी० ३।६२०।१,६२२

सिविया [शिविका] जी० ३।७४१

सिविया [शिविका] ओ० ७,८,१०. रा० ६८७ से
६८६. जी० ३।२८५

सिस्स [शिव्य] जी० ३।६१०

सिस्सारिली [दे०] जी० १।७३

सिहंडि [शिखण्डिन्] ओ० ६४

सिहर [शिखर] ओ० ५. रा० ५२,५६,१३७,
२३१,२४७. जी० ३।२७४,३०७,३७३

सिहरि [शिखरिन्] रा० २७६. जी० ३।२२७,
४४५,७६५

सीचंडी [दे०] जी० १।७३

सीओदा [शीतोदा] जी० ३।५६८,७०८

सीओभास [शीतावभास] ओ० ४. रा० १७०,
१७३. जी० ३।२७३

सीओया [शीतोदा] जी० ३।४४५

सीओसिणवेदना [शीतोष्णवेदना] जी० ३।११२,
११३,११४

१. श्रीवृक्षेणाङ्कितं—लाङ्कितं वक्षो येषां ते
श्रीवृक्षलाङ्कितवक्षसः (वृ० पत्र २७१) ।

सीत [शीत] जी० ३।२२, ११३, ११४, ११८,
११९

सीतल [शीतल] जी० ३।११८, ११९

सीतवेदना [शीतवेदना] जी० ३।११२ से ११४,
११९

सीता [शीता] रा० २७९. जी० ३।३००, ६३२,
६३९, ६६८, ७४६

सीतीभूय [शीतीभूत] जी० ३।११८

सीतोदय [शीतोदक] जी० १।६२

सीतोदा [शीतोदा] रा० २७९. जी० ३।७४६,
८१४

सीतोसिण [शीतोष्ण] जी० ३।११२, ११५

सीधु [सीधु] जी० ३।५८६, ८६०

सीमंकर [सीमंकर] ओ० १४. रा० ६७१

सीमंतोवणयण [सीमन्तोपनयन] जी० ३।६१४

सीमंघर [सीमंघर] ओ० १४. रा० ६७१

सीमा [सीमा] ओ० १

सीय [शीत] ओ० ४, ८९, ११७. रा० १७०, ७०३,
७९६. जी० ३।११२, ११३, ११५, ११८, ११९,
२७३

सीय [सित] ओ० १९५

सीयच्छाय [शीतच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
७०३. जी० ३।२७३

सीयकूड [शीतकूट] जी० ३।११९

सीयपडल [शीतपटल] जी० ३।११९

सीयपुंज [शीतपुंज] जी० ३।११९

सीयभूय [शीतीभूत] जी० ३।११८, ११९

सीयल [शीतल] रा० १५९, १७४, ६७०.
जी० ३।२८६, ३३२, ६०४

सीयवेदणिज्ज [शीतवेदनीय] जी० ३।११९

सीयवेयणिज्ज [शीतवेदनीय] जी० ३।११९

सीया [शीता] जी० ३।४४५, ८००

सीया [शिविका] ओ० १, १००, १२३.

रा० १७३. जी० ३।२७६, ५८१, ५८५, ६१७

सील [शील] ओ० ४६

सीलह [शीलजित्] ओ० ९६

सीलख्य [शीलव्रत] ओ० १२०, १४०, १५७.

रा० ६९८, ७५२, ७८७, ७८९

सीवण्णी [श्रीपर्णी] जी० १।७१

सीसगपाय [सीसकपात्र] ओ० १०५, १२८

सीसगबंधण [सीसकबन्धन] ओ० १०६, १२९

सीसगभारग [सीसकभारक] रा० ७६०, ७६१

सीसघडी [शीर्षघटी] रा० २५४. जी० ३।४१५

सीसछिण्णय [शीर्षछिन्नक] ओ० ९०

सीसछिण्णय [शीर्षछिन्नक] रा० ७६७

सीसपहेलियंग [शीर्षप्रहेलिकाङ्ग] जी० ३।८४१

सीसपहेलिया [शीर्षप्रहेलिका] जी० ३।८४१

सीसागर [सीसाकर] जी० ३।११८

सीह [शीघ्र] जी० ३।९८९

सीह [सिह] ओ० १९, २७, ४८. रा० २४, ३७,
८१३. जी० ३।८४, ८८, २७७, ३११, ५९६,
५९७, ६२०, ६३१, ७८२, १०१५

सीहकण्ण [सिहकर्ण] जी० ३।२१६

सीहकण्णी [सिहकर्णी] जी० १।७३

सीहगति [शीघ्रगति] जी० ३।९८९

सीहघोस [सिहघोष] जी० ३।५९८

सीहध्वज [सिहध्वज] रा० १६३. जी० ३।३३५

सीहणाय [सिहनाद] ओ० ५२. रा० ६८७, ६८८.
जी० ३।८४२, ८४५

सीहणिकीलिय [सिहनिष्कीडित] ओ० २४

सीहणिसाइ [सिहनिषादिन्] जी० ३।८३९

सीहनाद [सिहनाद] जी० ३।४४७

सीहनाय [सिहनाद] रा० २८१

सीहनिष्कीलिय [सिहनिष्कीडित] ओ० २४

सीहपुच्छियग [सिहपुच्छितक] ओ० ९०

सीहमंडलपविभक्ति [सिहमण्डलप्रविभक्ति]
रा० ९१

सीहमुह [सिहमुख] जी० ३।२१६

सीहस्वर [सिहस्वर] रा० १३५. जी० ३।३०५,
५९८

सीहासण [सिहासन] ओ० १३, १९, २१, ५४, ६४.

रा० ७, ८, ३७, ३९, ४१ से ४४, ४७, ५१, ६७,

६८, १५८, १६४, १८१, १८३, १८६, २०४ से
 २०७, २१६, २४३, २६५, २६७, २६६, २७७,
 २७६, २८३, २८६, २८८, ३००, ३२१, ३३८,
 ३५२, ४७४, ५३४, ५६५, ६५७. जी० ३१२६३,
 ३११, ३१२, ३३१, ३३६, ३४५, ३५५, ३५६,
 ३५६, ३६६, ३६८, ३७८, ४०५, ४१६, ४२८,
 ४३१, ४३४, ४४३, ४४५, ४४६, ४५२, ४५४,
 ४६५, ४८६, ५०३, ५१७, ५३३, ५४०, ५४८,
 ५५७, ६३४, ६३५, ६६३, ६७३, ६८५, ७३७,
 ७४०, ७४२, ७४५, ७५०, ७६२, ७६५, ७६८,
 ७७०, ८६२, १०२४ से १०२६

सुअवखाय [स्वाख्यात] ओ० ७६ से ८१
 सुअलंकित [स्वलङ्कृत] जी० ३१३०३
 सुअलंकिय [स्वलङ्कृत] रा० १३३
 सुइ [शुचि] ओ० १६, ५५, ६३, ६८. रा० १६,
 २८१. जी० ३:४४७, ५६६, ५६७
 सुइभूय [शुचीभूत] ओ० २१. रा० ७६५, ८०२
 सुइसमाचार [शुचिसमाचार] ओ० ६८
 सुईभूय [शुचीभूत] ओ० ५४. रा० २७७
 सुउत्तार [सुखोत्तार] रा० १७४. जी० ३१२८६
 सुउमाल [सुकुमार] ओ० ६३
 सुओपार [सुजावतार] रा० १७४
 सुंक [शुल्क] रा० ७२७
 सुंवर [सुन्दर] ओ० १५, १६, १४३. रा० ६७३,
 ८०१. जी० ३:५६६, ५६७
 सुंदरंगी [सुन्दराङ्गी] ओ० ६५. रा० ६७२
 सुंसुमार [शुंसुमार, शिशुमार] जी० ११६६, ११८
 सुंसुमारिया [शिशुमारिका] रा० ७७
 सुंसुमारी [शुंसुमार, शिशुमारी] जी० २१४
 सुक [शुक] जी० ३:५६७
 सुकंत [सुकान्त] जी० ३:८७२
 सुकवित [सुकवथित] जी० ३:८७२
 सुकविय [सुकवथित] जी० ३:८६६
 सुकय [सुकृत] ओ० २, ५२, ५५, ६३ से ६५.

रा० ३२, १७३, २८१, ६८१, ६८७, ६८६.
 जी० ३:२८५, ३७२, ४४७
 सुकुमाल [सुकुमार] ओ० ५, ८, १५, १६, ६३,
 १४३. रा० २२८, २८०, ६७२, ६७३, ८०१.
 जी० ३:३८७, ४४६, ५६६, ५६७, ६७२, १०६८
 सुक [शुक] ओ० ५०. जी० ३:११११
 सुक [शुक] रा० २६, ७८२ जी० ३:२८२
 सुक [शुक्ल] जी० ६:१५४
 सुक [ज्ञाण] [शुक्लध्यान] ओ० ४३
 सुकपकल [शुक्लपक्ष] जी० ३:१८८
 सुकलेस [शुक्ललेश्य] जी० ६:१६१
 सुकलेसा [शुक्ललेश्या] जी० ३:१५०
 सुकलेसस [शुक्ललेश्य] जी० ३:१८५, १६६
 सुकलेसा [शुक्ललेश्या] जी० ३:११०३
 सुकिल [शुक्ल] ओ० १२. रा० २२, २४, २६,
 १२८, १३२, १५३. जी० १:५, ३४, ३५, ५०,
 १३६; ३:२२, ४५, २७८, २८२, २६०, ३०२,
 ३२६, ३५३, ३६७, ५६५, १०७५, १०७६, १०६५
 सुकिलय [शुक्लक] जी० ३:२८२
 सुकल [सौख्य] ओ० १६५:२१
 सुगंध [सुगन्ध] ओ० २, ५५, ६३. रा० ६, १२, ३२,
 १३२, २३६, २८१, २८५. जी० ३:३०२, ३७२,
 ४४७, ४५१, ५६२, ५६६
 सुगंधि [सुगन्धि] ओ० ७, ८, १०. रा० १५६.
 जी० ३:२७६, ३३२
 सुगंधिय [सौगन्धिक] ओ० १५०. रा० २७६,
 ८११. जी० ३:४४५
 सुगुह्यवेस [सुगुह्यवेश] ओ० १६
 सुगूढ [सुगूढ] जी० ३:५६७
 सुघोसा [सुघोषा] रा० ७७. जी० ३:७८, ५८८
 सुवरिय [सुवरित] रा० ८१४
 सुचि [शुचि] जी० ३:५६६
 सुचिण [सुचीर्ण] ओ० ७१. रा० १८५, १८७.
 जी० ३:२१७, २६७, २६८, ३५८, ५७६
 सुजात [सुजात] जी० ३:३८७, ५८६, ५६६, ५६७

मुजाय [मुजात] ओ० ५, ८, १४, १५, १६, १४३.
 रा० १७४, २८८, ६७१ से ६७३, ८०१.
 जी० ३१११८, ११६, २७४, २८६, ५६६, ५६७,
 ६७२
मुजाया [मुजाता] जी० ३।६६६।२
मुज्ज [दे०] रा० १७४. जी० ३।२८६
मुट्टिय [मुस्थित] जी० ३।५६४, ७२१, ७५४, ७५६,
 ७६०, ७६१
मुट्टिया [मुस्थिता] जी० ३।७६१
√मुण [शृ]—मुणंतु. रा० १५—मुणह.
 ओ० १६५।१७—मुणिस्सामो .रा० १६
 —मुणस्सामो. ओ० ५२. रा० ६८७
मुण [श्वन्] जी० ३।८४
मुणग [शुनक] जी० ३।६२०
मुणत्ति [मुनत्ति] रा० ७६, १७३. जी० ३।२८५
मुणिउण [मुनिपुण] रा० ५७
मुणिद्ध [मुस्तिग्घ] ओ० १६
मुणिम्मिय [मुनिमित] जी० ३।५६७
मुणिसिय [मुनिशित] जी० ३।४१०
मुणोत्त [शृण्वत्] रा० ७७४
मुणोत्ता [श्रुत्वा] रा० ६८८
मुण्हा [स्नुषा] जी० ३।६११
मुत्तिक्खधार [मुत्तीक्ष्णधार] रा० २४६.
 जी० ३।४१०
मुत्त [सूत्र] रा० १३२, १५३, २३५. जी० ३।३०२,
 ३२६, ३६७
मुत्त [सुप्त] ओ० १४८, १४९. रा० ८०६, ८१०
मुत्तओ [सूत्रतस्] ओ० १४६. रा० ८०६, ८०७
मुत्तग [सूत्रक] जी० ३।५६३
मुत्तखेहु^१ [सूत्रखेल] ओ० १४६. रा० ८०६
मुत्तरुद्ध [सूत्ररुत्ति] ओ० ४३
मुत्ति [शुक्ति] जी० ३।५८७
मुत्थिय [मुस्थित] जी० ३।७६१
मुत्तंसण [मुदर्शन] जी० ३।८०६

मुत्तंसणा [मुदर्शना] जी० ३।६६८, ६७२, ६७३,
 ६७८ मे ६८३, ६८८, ६८९, ६९२ से ७००,
 ७६५, ६९० ६२१
मुत्तुत्तार [मुदुस्तार] ओ० ४६
मुत्त [शुद्ध] ओ० २७. रा० ७६, १७३, ८१३.
 जी० ३।२८५, ५८८
मुत्तवंत [शुद्धवन्त] जी० ३।२१६
मुत्तवन्ता [शुद्धवन्ता] जी० २।१२
मुत्तप्पावेश [शुद्धप्रावेश, शुद्धपावेश्य, शुद्धात्मवेश]
 ओ० २०, ५३. रा० ६८५, ६९२, ७००, ७१६,
 ७२६, ८०२
मुत्तपुढवी [शुद्धपृथ्वी] जी० ३।१८५, १८७
मुत्तवात [शुद्धवात] जी० ३।६२६
मुत्तवाय [शुद्धवात] जी० १।८१
मुत्तागणि [शुद्धाग्नि] जी० १।७८, ८५
मुत्तैसणिय [शुद्धैषणिक] ओ० ३४
मुत्तोवय [शुद्धोदक] ओ० ६३. जी० १।६५
मुत्तम्मा [मुत्तर्मा] रा० २६७, ६५६. जी० ३।३७२,
 ३६६, ४१२, ४२१, ४२६, ४४२, १०२४, १०२५
मुत्तिउण [मुत्तिपुण] रा० १२
मुत्तिवेसिय [मुत्तिवेशित] ओ० ६. जी० ३।२७५
मुत्तइट्ठ [सुप्रतिष्ठ] रा० २५८
मुत्तइट्ठक [सुप्रतिष्ठक] जी० ३।५६७
मुत्तइट्ठग [सुप्रतिष्ठक] रा० १५२. जी० ३।५८७
मुत्तइट्ठिय [सुप्रतिष्ठित] रा० १३३, १७३, २२८,
 ७५०, ७५२, ७५८. जी० ३।२८५, ३०३, ६७६
मुत्तक्क [सुपक्क] जी० ३।५८६, ८६०
मुत्तडियान्णं [सुप्रत्यानन्द] ओ० १६३
मुत्तण्णत्त [सुप्रजण] जी० ७६ से ८१
मुत्तण्ह [सुप्रण] ओ० ४६
मुत्ततिट्ठ [सुप्रतिष्ठ] रा० २७६. जी० ३।३५५
मुत्ततिट्ठक [सुप्रतिष्ठक] जी० ३।४१६, ४४५
मुत्ततिट्ठम [सुप्रतिष्ठक] जी० ३।३२५
मुत्ततिट्ठित [सुप्रतिष्ठित] जी० ३।३८७, ३६३,

१. सूत्रखेलं—सूत्रक्रीडा, अत्र खेलशब्दस्य 'खेहु'
इत्यादेशः (जंबु. वृत्ति)

सुप्रतिद्विध [सुप्रतिष्ठित] रा० ५२, ५६, २३१,
२४७, ७५४, ७५६, ७६०, ७६२, ७६४.
जी० ३१६६, ६७२
सुप्रवक्त [सुप्रवक्तान्त] रा० १८५, १८७.
जी० ३१२१७, २६७, २६८, ३५८, ५७६
सुपरिनिद्विध [सुपरिनिष्ठित] ओ० ६७
सुपस्था [सुपस्था] रा० ८१७
सुपिण्ड [सुपिण्ड] जी० ३१२८५
सुप्पद्विध [सुप्रतिष्ठित] ओ० १६
सुप्पडियाणंद [सुप्रत्यानंद] ओ० १६१
सुप्पबुद्धा [सुप्रबुद्धा] जी० ३१६६६
सुप्पभ [सुप्रभ] जी० ३१८७५
सुप्पभा [सुप्रभा] ओ० १६४
सुप्पमाण [सुप्रमाण] ओ० १३, १६. जी० ३१५६६,
५६७
सुप्पसारिय [सुप्रसारित] ओ० ५, ८. जी० ३१२७४
सुप्पसूय [सुप्रसूत] ओ० १४. रा० ६७१
सुफास [सुस्पर्श] जी० ३१६८१, ६८७
सुबद्ध [सुबद्ध] ओ० १६. रा० १७४.
जी० ३१२८६, ५६६, ५६७
सुबहु [सुबहु] रा० २६६, २६८, ७५० से ७५३,
७७४. जी० ३१४३२, ५३४, ५४१
सुभिगंध [सुगन्ध] जी० ११५, ३६, ३७, ५०;
३१६७६, ६८५
सुभिगंधत्त [सुगन्धत्व] जी० ३१६८५
सुभिंसद् [सुशब्द] जी० ३१६७७, ६८३
सुभिंसद्दत्त [सुशब्दत्व] जी० ३१६८३
सुभ [सुभ] ओ० ५१, ११६, १५६. रा० १८५,
१८७, ६७० जी० ११३३४; ३१२१७, २६७,
२६८, ३५८, ५७६, ६७२, १०६०, १०६६
सुभग [सुभग] ओ० १२, १५०. रा० २३, १७४,
१६७, २७६, २८८, ८११. जी० ३१११८, ११६,
२५६, २८६, २६१
सुभचक्षुकंत [सुभचक्षुकान्त] जी० ३१६३३
सुभद् [सुभद्] जी० ३१६२८

सुभद्दा [सुभद्दा] ओ० ५५, ५८, ६२, ७०, ७१, ८१.
जी० ३१६६६
सुभाविय [सुभावित] ओ० ७६ से ८१
सुभासिय [सुभासित] ओ० ७६ से ८१
सुभिवत्त [सुभिक्ष] ओ० १, १४. रा० ६७१
सुभूम [सुभूम] जी० ३१११७
सुमज्ज [सुमध्य] रा० १३३. जी० ३१३०३
सुमण [सुमनस्] जी० ३१६२५, ६३४
सुमणवाम [सुमनोवामन्] रा० २७६, २८५.
जी० ३१४४५, ४५१
सुमणभद् [सुमनोभद्] जी० ३१६२८
सुमणा [सुमनसी] जी० ३१६६६, ६२०
सुमहग्घ [सुमहाग्घ्य] ओ० ६३
सुय [शुक] ओ० ६. जी० ३१२७५
सुय [श्रुत] ओ० ५२. रा० १६, ६८७, ६८६
सुयअण्णाणि [श्रुताज्ञानिन्] जी० ११३०, ८७, ६६;
३११०४, ११०७; ६१६६७, २०२, २०६, २०८
सुयणाण [श्रुतज्ञान] ओ० ४०. रा० ७३६, ७४२,
७४६
सुयणाणविणय [श्रुतज्ञानविणय] ओ० ४०
सुयणाणि [श्रुतज्ञानिन्] ओ० २४. जी० ११८७,
६६, ११६, १३३; ३११०४, ११०७; ६१६६६,
१६०, १६५, १६६, १६७, १६८, २०४, २०८
सुयदेवया [श्रुतदेवता] रा० ८१७
सुयणाणि [श्रुतज्ञानिन्] जी० ११३३३
सुयपिच्छ [शुकपिच्छ] रा० २६. जी० ३१२७६
सुयमुह [शुकमुख] ओ० २२. रा० ७७७, ७७८,
७८८
सुरद् [सुरति] रा० ७६, १७३
सुरइय [सुरचित] ओ० ४६
सुरति [सुरति] जी० ३१२८५
सुरभि [सुरभि] ओ० २, ७, ८, १०, ४६, ५५.
रा० ३२, १३१, १४७, १४८, १५६, २२८, २८०,
२८१, २८५, २६१, ३५१, ६७०. जी० ३१२२,
२७६, ३०१, ३३२, ३७२, ३८७, ४४६, ४४७,
४५१, ५६८

सुरभिगंध [सुरभिगन्ध] रा० ६, १२
सुरम्म [सुरम्य] ओ० १, ६ से ८, १०, १३.
 रा० २२, ३७, २४५. जी० ३१, ७५, २७६,
 ३११, ३८६, ४०७, ५८१, ५८५
सुरवर [सुरवर] रा० ८, ६, १२
सुरस [सुरस] जी० ३१६०, ६८६
सुरहि [सुरभि] ओ० ६३. जी० ३६७२
सुरा [सुरा] जी० ३१५८६
सुरूव [सुरूव] ओ० १५, ४७ से ५१, १४३.
 रा० ५३, ६७२, ६७३, ८०१. जी० ३१२६०,
 ६७८, ६८४
सुरूवग [सुरूवक] जी० ३१५६६
सुरूवत्त [सुरूवत्त्व] जी० ३१६८४
सुलभबोहिय [सुलभबोधिक] रा० ६२
सुललिघ [सुललित] रा० १७३. जी० ३१२८५
सुवर्ण [सुवर्ण] ओ० २३, ५२, ६३. रा० ४०, १३२,
 १७४, २८१, ६८७ से ६८९. जी० ३१२६५,
 २८६, ३०२, ३१३, ४४७, ६०८, ८४०, ८८५,
 ११२२
सुवर्ण [सुपर्ण] ओ० ४८, १२०, १६२. रा० ६६८,
 ७५२, ७८६. जी० ३१२३२
सुवर्णकूला [सुवर्णकूला] रा० २७६. जी० ३१४४५
सुवर्णजुति [सुवर्णमुक्ति] ओ० १४६. रा० ८०६
सुवर्णजूहिया [सुवर्णयूधिका] रा० २८.
 जी० ३१२८१
सुवर्णद्वार [सुपर्णद्वार] जी० ३१८८५
सुवर्णपाग [सुवर्णपाक] ओ० १४६. रा० ८०६
सुवर्णमणिमय [सुवर्णमणिमय] रा० २७६, २८०.
 जी० ३१४४५
सुवर्णरूपमणिमय [सुवर्णरूप्यमणिमय] रा० २७६,
 २८०. जी० ३१४४५
सुवर्णरूपमय [सुवर्णरूप्यमणिमय] रा० १७५.
 जी० ३१४०२, ६०२
सुवर्णरूप्यामणिमय [सुवर्णरूप्यमणिमय]
 जी० ३१४४५

सुवर्णरूप्यामय [सुवर्णरूप्यमय] रा० १६, १५३,
 १६०, २३५, २३६, २४०, २७५, २८०.
 जी० ३१२६४, २८७, ३२६, ३६७, ३६८, ४४५
सुवर्णागर [सुवर्णाकर] रा० ७७४. जी० ३११८
सुवर्ण [सुवर्चन] ओ० ५२. रा० ६६७, ६८७
सुवासित [सुवासित] जी० ३१८७८
सुविणीय [सुविनीत] रा० ७६ से ८१
सुविभक्त [सुविभक्त] ओ० १, ५, ८, १०, १६.
 रा० ३२, १४५. जी० ३१२६८, २७४, ३७२,
 ५६६, ५६७
सुविरद्वय [सुविरचित] रा० ३७, २४५.
 जी० ३१४०७, ५६६, ५६७
सुविरचित [सुविरचित] जी० ३१३११
सुविहि [सुविधि] जी० ३१५६४
सुव्वत्त [सुव्वत्त] ओ० ७१. रा० ६१
सुव्वय [सुव्वत्त] ओ० १६१, १६३
सुसंपउत्त [सुसम्प्रमुक्त] ओ० ४६, ६४. रा० ७६,
 १७३, ६८१. जी० ३१२८५, ५८८
सुसंपगहित [सुसम्प्रगृहीत] जी० ३१२८५, ३०२
सुसंपगहित [सुसम्प्रगृहीत] ओ० ६४. रा० १३२,
 १७३
सुसंपरिगहित [सुसम्परिगृहीत] जी० ३१२८५
सुसंपरिगहित [सुसम्परिगृहीत] रा० १७३, ६८१
सुसंपिणद्ध [सुसंपिणद्ध] रा० १७३, ६८१
सुसंभास [सुसंभाष] ओ० ४६
सुसंघुय [सुसंवृत] ओ० ६३
सुसंहय [सुसंहत] ओ० १६
सुसक्कय [सुसंस्कृत] जी० ३१५६२
सुसज्ज [सुसज्ज] ओ० ५७. रा० ५३
सुसमाहित [सुसमाहित] ओ० ३७
सुसवण [सुश्रवण] जी० ३१५६६
सुसव्व [सुसर्व] रा० १५२. जी० ३१३२५
सुसामण्णरथ [सुश्रामण्णरथ] ओ० २५, १६४
सुसाहत [सुसंहत] जी० ३१५६६
सुसिणिद्ध [सुस्निग्ध] जी० ३१५६७
सुसिर [सुविर] रा० ११४, २८१

सुसिद्ध [सुश्लिष्ट] ओ० ११, ६३, ६४. रा० ३२,
५२, ५६, २३१, २४७. जी० ३३७२, ३६३, ४०१,
५६६
सुसील [सुशील] ओ० १६१, १६३
सुसुह [सुश्रुति] ओ० ४६
सुस्तर [सुस्वर] रा० १३५. जी० ३३०५, ५६७,
५६८
सुस्तरघोष [सुस्वरघोष] रा० १३५. जी० ३३०५
सुस्तरनिघोष [सुस्वरनिघोष] जी० ३३६८
सुस्तरा [सुस्वरा] रा० १४
सुस्सवण [सुश्रवण] ओ० १६
सुस्सज्जाविणय [सुश्रवणाविनय] ओ० ४०
सुस्समाण [सुश्रूषमाण] ओ० ४७, ५२, ६६, ८३.
रा० ६०, ६८७, ६६२, ७१६
सुह [सुख] ओ० १, २३, २६, ५२, १६५, १५, १६,
२२. रा० १५, २७५, २७६, ६८३, ६६७.
जी० ३१२६, ४४१, ४४२, ५६४, ६०४,
८३८, १३
सुह [सुभ] ओ० ६ से ८, १०. जी० ३२७५, २७६
सुहसुह [सुखंसुख] ओ० १६. रा० ६८६, ७११,
८०४. जी० ३१६१७
सुहफास [सुखस्पर्श, सुभस्पर्श] रा० १७, १८, २०,
३२, १२६, १३०, १३७. जी० ३२८८, ३००,
३०७, ३७२
सुहम्मा [सुधर्मा] रा० ७, १२ से १४, २०६, २१०,
२३५ से २३७, २५०, २५१, २७६, ३५१, ३५६,
३५७, ३७६, ३६४, ३६५, ६५७, ७६५, ७६४,
८०२. जी० ३३६७, ३६८, ४११, ४१२, ५१६,
५२१ से ५२५, ५५६, ५५७
सुहलेसा [सुभलेषणा] जी० ३३८, ३८१
सुहलेस्ता [सुभलेष्या] जी० ३३५५
सुहविहार [सुखविहार] जी० ३३६४
सुहासन [सुहासन] रा० ७६५, ७६४, ८०२
सुहि [सुखिन्] ओ० १६५, १६८, २२
सुहिय [सुहृद्] जी० ३३६३

सुहिरण [सुहिरण्य] रा० २८
सुहिरण्यथा [सुहिरण्यका] जी० ३३२८
सुहृम [सूक्ष्म] ओ० ४७, १७०, १८२. रा० १६०,
२५६. जी० ३१३३, ३३३, ४१७, ५६६;
५१२१ से २३, २५ से २७, ३४ से ३६, ५१, ५२,
५७ से ६०; ६१६५, ६६, ६६, १००
सुहृमआड [सूक्ष्माप्] जी० ५१२५
सुहृमआडकाइय [सूक्ष्माप्कायिक] जी० ५१२७, ३४
सुहृमआडकाइय [सूक्ष्माप्कायिक] जी० १६३, ६४
सुहृमकाल [सूक्ष्मकाल] जी० ६१६६
सुहृमकिरिय [सूक्ष्मक्रिय] ओ० ४३
सुहृमनिओद [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१३८, ३६, ४४
से ४६, ५२, ६०
सुहृमनिओदजीव [सूक्ष्मनिगोदजीव] जी० ५१५३,
५४, ५६, ६०
सुहृमनिओय [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१२१, २२, २५,
२७, ३४, ३५
सुहृमनिगोद [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१४४
सुहृमनिगोदजीव [सूक्ष्मनिगोदजीव] जी० ५१६०
सुहृमनिगोय [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१२६, ३६
सुहृमतेजकाइय [सूक्ष्मतेजस्कायिक] जी० ५१२५,
२७, ३६
सुहृमतेजकाइय [सूक्ष्मतेजस्कायिक] जी० ११७६,
७७; ५१३४
सुहृमनिओग [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१२४
सुहृमनिओय [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१३४, ३५
सुहृमनिगोद [सूक्ष्मनिगोद] जी० ५१३४
सुहृमपुढविकाइय [सूक्ष्मपृथ्वीकायिक] जी० ११३६,
१४, ५६; ३१३२, १३३, ५१२, ३, २४, २५,
२७, ३४
सुहृमपुढवी [सूक्ष्मपृथ्वी] जी० ५१२७
सुहृमवणस्तिकाइय [सूक्ष्मवणस्तिकायिक]
जी० ११६६, ६७; ५१२७, ३४, ३६
सुहृमवणस्तिति [सूक्ष्मवणस्तिति] जी० ५१२४
सुहृमवणस्तिकाइय [सूक्ष्मवणस्तिकायिक]
जी० ५१२५, २७, ३६

सुहमवाउकाइय [सूक्ष्मवायुकायिक] जी० ५१२७,
३४

सुहमवाउकाइय [सूक्ष्मवायुकायिक] जी० १।८०
सुहमसंपरायचरित्तविणय [सूक्ष्मसंपरायचरित्र-
विणय] ओ० ४०

सुहमसरीर [सूक्ष्मसरीर] जी० ३।१२६।६

सुहृद्य [सुहृत] ओ० २७. रा० ८१३

सुहोत्तार [सुखोत्तार] जी० ३।५६४

सुहोदय [शुभोदक, सुखोदक] ओ० ६३

सुहोयार [सुखावतार] जी० ३।२८६

सुद्धभूत [सूचीभूत] जी० ३।४४३

सुई [शुची] रा० १६, १३०, १७५, १८०, १६७.

जी० ३।२६४, २६६, २८७, ३००

सुईकलाव [सूचीकलाप] जी० १।७७, ७६

सुईपुडंतर [सूचीपुटान्तर] रा० १६७.

जी० ३।२६६

सुईफलय [सूचीफलक] रा० १६७. जी० ३।२६६

सुईभूय [सूचीभूत] रा० २८८

सुईमुख [सूचीमुख] रा० १६७

सुईमुह [सूचीमुख] जी० ३।२६६

सूचिकलाव [सूचिकलाप] जी० ३।८५

सूणगलच्छणय [सूणालाच्छणक] रा० ७६७

सूमाल [सुकुमार] रा० २८५. जी० ३।२७४, ४५१

सूयगडधर [सूयकृतधर] ओ० ४५

सूयपुरिस [सूयपुरुष] जी० ३।५६२, ५६७

सूर [सूर] ओ० १६, २२, २७, ५०. रा० १३३,

७७७, ७७८, ७८८, ८०३, ८१३. जी० २।१८;

३।२५८, ३०३, ५८६, ५६३, ५६६, ७६५, ७६७,

७६६, ७७१, ७७३, ७७५, ७७७, ७७९, ८३८, ४,

१०, १५, २१, २३, २४, २७, २८, २९, ३२, ६३७,

६५०, ६५३, १०१६, १०२०, १०२१, १०२६,

११२२

सूरकंतमणि [सूरकान्तमणि] जी० १।७८

सूरणकंद [सूरणकन्द] जी० १।७३

सूरत्पमणपविभत्ति [सूरास्तमनप्रविभक्ति] रा० ८६

सूरवीव [सूरद्वीप] जी० ३।७६५, ७६६, ७७१, ७७७

सूरद्वीव [सूरद्वीप] जी० ३।६३७

सूरपरिदस [सूरपरिवेश] जी० ३।८४१

सूरपरिवेस [सूरपरिवेश] जी० ३।६२६

सूरप्यभा [सूरप्रभा] जी० ३।७६५, १०२६

सूरमंडल [सूरमण्डल] रा० २४. जी० ३।२७७,

५६०

सूरमंडलपविभत्ति [सूरमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६०

सूरवडंसय [सूरावतंसक] जी० ३।१०२६

सूरवरोभास [सूरवरावभास] जी० ३।६३८

सूरविमाण [सूरविमान] जी० २।४१; ३।१००३

से १००५, १००६, १०११, १०२६

सूरागमणपविभत्ति [सूरागमनप्रविभक्ति] रा० ८७

सूराभिमुह [सूराभिमुख] ओ० ११६

सूरावरणपविभत्ति [सूरावरणप्रविभक्ति] रा० ८८

सूरावलिपविभत्ति [सूरावलिप्रविभक्ति] रा० ८५

सूरिय [सूर्य] ओ० १६२. रा० ४५, १२४.

जी० ३।१७६, १७८, १८०, १८२, २५७, ७०३,

७२२, ८०६, ८२०, ८३०, ८३४, ८३६, ८४१, ८४२,

८४५, ६८८ से १०००, १०२०, १०३७, १०३८

सूरियकंत [सूर्यकान्त] रा० ६७३, ६७४, ७६१ से

७६३

सूरियकंता [सूर्यकान्ता] रा० ६७२, ६७३, ७५१,

७७६, ७६१ से ७६४, ७६६

सूरियाभ [सूर्याभ] रा० ७, ६, १०, १२ से १८, ४१

से ४४, ४६ से ४६, ५५ से ६५, ६८, ६९, ७१ से

७४, ११८ से १२०, १२२, १२४, १२६, १२६,

१६२, १६३, १६६, १७०, १८७, २४०, २४०, २६६,

२६८, २७०, २७४ से २६१, ६५४ से ६६७,

७६६ से ७६६

सूरियाभविमाणपड [सूर्याभविमाणपति] रा०

सूरियाभविमाणवासि [सूर्याभविमाणवासिन्]

रा० ७, १५ से १७, ५५, ५६, ५८, २८०, २८२,

२८६, २६१, ६५७

सूरिल्लिमंडवग [दे० सूरिल्लिमण्डवक] रा० १८४.

जी० ३।२६६

सूरिल्लिमंडवय [दे० सूरिल्लिमण्डपक] रा० १८५
 सूहगमणपविभक्ति [सुरोद्गमनप्रविभक्ति] रा० ८६
 सुरोवराग [सुरोवराग] जी० ३।६२६, ८४१
 सुल [शूल] ओ० ६४. जी० ३।११०
 सुलग [शूलाय] जी० ३.८५
 सुलभिण्ण [शूलभिन्नक] ओ० ६०. रा० ७५१
 सुलाइग [शूलातिग] रा० ७५१
 सुलाइय [शूलातिग] रा० ७६७
 सुलाइयग [शूलाचितक, शूलातिग] ओ० ६०
 से [दे०] ओ० ३१. रा० १२. जी० १।२
 सेड [सेतु] ओ० १, ७, ८, १०. जी० ३।२७६
 सेउकर [सेतुकर] ओ० १४. रा० ६७१
 सेउजा [शय्या] ओ० ३७, १२०, १६२, १८०.
 रा० ६६८, ७०४, ७०६, ७११, ७१३, ७५२, ७७६,
 ७८६
 सेट्टि [दे० श्रेष्ठिन्] ओ० १८, २३, ५२, ६३.
 रा० ६८७, ६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२,
 ७६४. जी० ३।६०६
 सेढी [श्रेणी] ओ० १६, ४७. रा० २४, ७६०, ७६१.
 जी० ३।२७७, ५६६, ७२३, ७२६
 सेणा [सेना] ओ० ५५ से ५७, ६२, ६५
 सेणावह [सेनापति] ओ० १८, २३, ५२, ६३.
 रा० ६८७, ६८८, ७०४, ७५४, ७५६, ७६२, ७६४
 सेणावच्च [सेनापत्य] ओ० ६८. रा० २८२.
 जी० ३।३५०, ४४८, ५६३, ६३७
 सेणावति [सेनापति] जी० ३।६०६
 सेत [श्वेत] जी० ३।३००, ३५४, ४५४, ८८५
 सेतासोय [श्वेतासोक] जी० ३।२८२
 सेषा [दे०] जी० २।६
 सेय [श्वेत] ओ० ५१, ६५, ६७, १६४. रा० १२६,
 १३०, १६२, १६०, २१०, २१२, २२२, २८८.
 जी० ३।२६४, ३००, ३१२, ३३५, ३७३, ३८१,
 ६४७
 सेय [स्वेद] ओ० ८६, ६२. जी० ३।५६८
 सेय [श्रेयस्] ओ० ११७. रा० ६, २७५, २७६,
 ७७४, ७७७, ७८१. जी० ३।४४१, ४४२

सेय [सेक] जी० ३।५६२
 सेयकणवीर [श्वेतकणवीर] रा० २६.
 जी० ३।२८२
 सेयबंधुजीव [श्वेतबन्धुजीव] रा० २६.
 जी० ३।२८२
 सेयमाल [श्वेतमाल] जी० ३।५८२
 सेयविया [श्वेतविका] रा० ६६६ से ६७१, ६८१,
 ६८३, ६६६, ७००, ७०२ से ७०४, ७०६, ७०८,
 ७१० से ७१३, ७१६, ७२६, ७५० से ७५३,
 ७७५, ७७६, ७८०, ७८७, ७८८
 सेयासोय [श्वेतासोक] रा० २६
 सेरियागुम्म [सेरिकागुल्म] जी० ३।५८०
 सेल [शैल] ओ० ४६. जी० ३।५६४
 सेलपाय [शैलपाय] ओ० १०५, १२८
 सेलबंधण [शैलबन्धन] ओ० १०६, १२६
 सेला [शैला] जी० ३।४
 सेलु [शैलु] जी० १।७१
 सेलेसी [शैलेसी] ओ० १८२
 सेवालगुम्म [शैवालगुल्म] जी० ३।५८०
 सेवालभक्खि [शैवालभक्षिन्] ओ० ६४
 सेस [शेष] ओ० १२०, १६२. रा० २३६, ६६८,
 ७५२, ७८६. जी० १।६४, ६५, ७७, ७६, ८२,
 ८८, ९०, १०१, १०३, १११, ११२, ११६, १२१,
 १२३, १२४; २।३७, ८६, १२०; ३।६८ से ७२,
 १६६, १६५, २१६ से २२६, २४३, २५८, ३५५,
 ६८७, ७०६, ७११, ७४१, ७५०, ७६२, ७६५,
 ७६६, ७६६, ७७०, ७७२, ८३६, ८४२, ८५१,
 ८१४ से ८१६, ८३६, ८५०, ८६२, ११२२;
 ५।३१, ३४; ६।४, ६
 सेहवेयावच्च [शैक्षवेयावृत्य] ओ० ४१
 √सेहाव [शिक्षय्] —सेहाविहित्ति. ओ० १४६.
 —सेहावेहिइ. रा० ८०६
 सेहावित्ता [शिक्षयित्वा] ओ० १४६
 सेहावेत्ता [शिक्षयित्वा] रा० ८०७
 सोईदिय [श्रोत्रेन्द्रिय] ओ० ३७. जी० १।१३३

सौंडियालिख [शुण्डिकालिञ्छ] जी० ३११८

सौंडीर [शौण्डीर] ओ० २७. रा० ८१३

सोखल [सौख्य] ओ० २३, १६५, १३, १४, १७.

जी० ३११८, ११६

सोम [शोक] ओ० ४६. रा० ७६५. जी० ३१२८

सोमंघिय [सौमन्धिक] ओ० १२. रा० १०, १२,

१८, २३, ६५, १६५, १७४, १६७, २८८.

जी० ३११८, ११६, २५६, २८६, २६१

सोच्छा [श्रुत्वा] ओ० २१. रा० १३.

जी० ३१४४३

सोणंद [दे०] त्रिपदिका ओ० १६. जी० ३१५६६

सोणि [श्रोणि] जी० ३१५६७

सोणिय [शोणित] रा० ७०३

सोसुणित्तग [श्रोणिसूत्रक] जी० ३१५६३

सोत [श्रोतस्] जी० ३१७४६

सोतदिय [श्रोत्रेन्द्रिय] जी० ३१६७६, ६७७

सोत्थि [स्वस्ति] जी० ३११७७

सोत्थिकूढ [स्वस्तिकूट] जी० ३११७७

सोत्थिय [स्वस्तिक] रा० २१, २४, ४६, ८१, २६१.

जी० ३१२७७, २८६, ३१४, ३४७, ३५५, ५६७

सोत्थियकंत [स्वस्तिककान्त] जी० ३११७७

सोत्थियज्जय [स्वस्तिकज्जय] जी० ३११७७

सोत्थियप्रभ [स्वस्तिकप्रभ] जी० ३११७७

सोत्थियलेस [स्वस्तिकलेस] जी० ३११७७

सोत्थियवण [स्वस्तिकवण] जी० ३११७७

सोत्थियसिरिवच्छनदियावत्तवद्धमाणमभद्रासण-

कलसमच्छदप्यणमंगलभत्तिचित्त [स्वस्तिक-

श्रीवत्सनन्द्यावत्तवर्धमानकभद्रासनकलशमत्स्य-
दर्पणमङ्गलभत्तिचित्र] रा० ७६

सोत्थियावत्त [स्वस्तिकावत्त] जी० ३११७७

सोत्थिसिग [स्वस्तिसिङ्ग] जी० ३११७७

सोत्थिसिद्ध [स्वस्तिसिद्ध] जी० ३११७७

सोत्थुत्तरवडिसग [स्वस्तुत्तरवत्तग]]

जी० ३११७७

सोधम्म [सोधम] रा० ५६०. जी० २१६६, १४८,
१४६; ३१०३८, १०३६

सोधम्मक [सोधमक] जी० २१४८, १४६

सोधम्मग [सोधमग] जी० ३१०३६

सोधम्मवडैसग [सोधमवत्तसक] रा० १२६

सोधम्मवडैसय [सोधमवत्तसक] रा० १२५

सोपाण [सोपान] जी० ३१४५४, ५६४

सोभ [शोभ] ओ० ६३. जी० ३१७२२, ८२०, ८३०,
८३४, ८३७, ८५५

√सोभ [शोभय] -- सोभति. जी० ३१७०३.

सोभिसु. जी० ३१७०३. -- सोभिसमति.

जी० ३१७०३. -- सोभिसु. जी० ३१८०५

सोभंत [शोभमान] ओ० ४६. रा० ६६.

जी० ३१३०६, ५६७

सोभग [शोभाय] ओ० २३

सोभण [शोभन] ओ० १४५. रा० ८०५

सोभमाण [शोभमान] जी० ३१५६१

सोभिय [शोभित] ओ० १

सोभेमाण [शोभमान] जी० ३१५८६

सोम [सौम्य] ओ० १५, १६. रा० ७०, १३३,

६७२ जी० ३१३०३, ५६६, ५६७, ११२२

सोमणस [सौमनस] ओ० ५१. जी० ३१६२५, ६३४

सोमणसवण [सौमनसवण] रा० १७३, २७६.

जी० ३१२८५, ४४५

सोमणसा [सौमनसा] जी० ३१६६६, ६२०

सोमणस्सिय [सौमनस्सिय, सौमनस्सिक] ओ० २०

२१, ५३, ५४, ५६, ६२, ६३, ७८, ८०, ८१. रा० ८,

१०, १२ से १४, १६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३,

७२, ७४, २७७, २७६, २८१, २६०, ६५५, ६८१,

६८३, ६६०, ६६५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३,

७१४, ७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७३४, ७७८.

जी० ३१४४३, ४४५, ४४७, ५५५

सोमलेस [सौमलेश्य] ओ० २७. रा० ८१३

सोमाकार [सौम्याकार] ओ० १५, १४३.

रा० ६७२, ६७३, ८०१

सोमान [सोमान] रा० ४७, १७५ से १७६, ६५६.

जी० ३, ५५६, ६४०, ६४१, ८५७

सोय [शौच] ओ० २५. रा० ६८६

सोय [श्रोतस्] ओ० १२२

सोयधिय [सौगन्धिक] जी० ३१७

सोयणया [शौचनता] ओ० ४३

सोयधम्म [शौचधर्म] ओ० ६७

सोल [पोडश] जी० ३१२२६१२

सोलस [पोडशन्] ओ० ३३. रा० ७. जी० ३१४

सोलसय [पोडशक] जी० ३१५

सोलसभक्त [पोडशभक्त] ओ० ३२

सोलसविध [पोडशविध] जी० ३१७, ३५७

सोलसविह [पोडशविध] रा० १६५. जी० ३१४६

सोलसिया [पोडशिका] रा० ७७२

सोल्लिय [पक्व] ओ० १६४

सोल्लिणय [सौत्तणिक] रा० ३७, २४५, २७६, २८०.

जा० ३१३११, ४०७, ४४५, ४४६, ४४८

सोवत्थिय [सौवस्तिक] ओ० १२, ६४. रा० २४.

जी० ३१२७७, ५६६

सोवाण [सोपान] रा० १६, २०, ४८, ५६, ५७,

२०२, २३४, २६४, २७७, २८८, ३१२, ४७३.

जी० ३१२८७, २८८, ३६३, ३६६, ४४३, ४४७,

५३२, ५७६, ६६६, ६८४

सोस [शोष] जी० ३१६२८

सोह [शोभ] ओ० ५२. रा० ६८७ से ६८६

सोहंत [शोभमान] रा० १३६

सोहग [सौभाग्य] ओ० ६६

सोहम्म [सौधर्म] ओ० ५१, ६५, १६०, १६२.

रा० ७, १२, ५६, १२४, २७६, ७६६. जी० ११५६;

२१६, ४६, १४६; ३१६३७, १०३८, १०५७,

१०६५, १०६७, १०७१, १०७३, १०७५, १०७७

से १०८३, १०८५, १०८७, १०८०, १०८१,

१०८३, १०८७ से १०८६, ११०१, ११०५,

११०७, ११०८ से १११२, १११४, १११७,

११६, ११२१, ११२२, ११२४, ११२८

सोहम्मा [सुधर्मा] जी० ३१३७३

सोहि [शोधि] ओ० २५

सोहिय [शोमित] ओ० ५, ६, ८, १६४ जी० ३१२७४,

२७५

ह

हंत [हन्त] रा० १५

हंता [हन्त] ओ० ८४. रा० १७३. जी० ३१३३

हंस [हंसा] ओ० ६६. रा० २६. जी० ३१२८२,

५६७

हंसगम्भ [हंसगर्भ] रा० १०, १२, १८, ६५, १६५,

२७६. जी० ३१७, २८४

हंसगम्भतूलिया [हंसगर्भतूलिका] रा० ३१

हंसगम्भतूली [हंसगर्भतूली] जी० ३१२८४

हंसगम्भमय [हंसगर्भमय] रा० १३०. जी० ३१३००

हंससर [हंससर] रा० १३५. जी० ३१३०५, ५६८

हंसावलिपविभत्ति [हंसावलिपविभक्ति] रा० ८५

हंसासण [हंसासन] रा० १८१, १८३, १८५.

जी० ३१२६३, २६५, २६७, ८५७

√ह्वकार [आ + कारय]—ह्वकारेति रा० २८१.

जी० ३१४४७

हट्ट [हृष्ट] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२, ६३,

६८, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४, १६

से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७, २७६,

२८१, २६०, ६५५, ६८१, ६८३, ६६०, ६६५, ७००,

७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८, ७२५, ७२६,

७७४, ७७८. जी० ३, ४४३, ४४५, ४४७, ५५५

हट्टप्पगाह [हट्टप्पगाह] ओ० ६४

हट्टिवट्टग [हट्टिवट्टक] ओ० ६०

√हण [घातय]—हण रा० ७६१

हणु [हनु] ओ० १६

हणुया [हनुका] जी० ३१५६६, ५६७

हृत्य [हस्त] ओ० २१, ५४, ६६, १११ से ११३,

१३७, १३८. रा० १३३, २८१, २८८ से २९०,

६५६, ७१६, ७५३, ८०४. जी० ३१४४७, ४५४

से ४५६, ५६७

हृत्थ [दे०] ओ० ५७

हृत्थग [हस्तक] ओ० १२. जी० ३१२६१, ३१५५,
६३६, ६५१, ६७७, ६६४

हृत्थच्छिन्नग [हस्तच्छिन्नक] रा० ७५१

हृत्थच्छिन्नय [हस्तच्छिन्नक] रा० ७६७

हृत्थच्छिन्नग [हस्तच्छिन्नक] ओ० ६०

हृत्थतल [हस्ततल] रा० २५४. जी० ३१४१५

हृत्थमालग [हस्तमालक] जी० ३१५६३

हृत्थय [हस्तक] रा० २३, २२३

हृत्थाभरण [हस्ताभरण] ओ० ४७, ७२

हृत्थि [हस्तिन्] ओ० १०१, १२४. रा० ७७२.

जी० ३१८४, ६१८

हृत्थिक्खंथ [हस्तिस्कन्ध] ओ० ६५

हृत्थिगुलमुलाइय [हस्तिगुलमुलायित] रा० २८१.

जी० ३१४४७

हृत्थितावस [हस्तितापस] ओ० ६४

हृत्थिमुह [हस्तिमुख] जी० ३१२१६

हृत्थिरयण [हस्तिरत्न] ओ० ५५ से ५७, ६२ से
६४, ६६

हृत्थिवाउय [हस्तिव्यापृत] ओ० ५६, ५७

हृत्थिसौड [हस्तिशौण्ड] जी० ११८८

हृत्थिमय [हृत्थि] जी० ३१५६४, ६०४

हृत्थ [हृत्थ] ओ० १६, ४८, ५१, ५२, ५५ से ५७, ६२,
६५. रा० १४१ से १४४, १६२ से १६५,

२८५, ६८७ से ६८९. जी० ३१२६६, २६७,

३१८, ३५५, ४५१, ५६६

हृत्थकंठ [हृत्थकण्ठ] रा० १५५, २५८. जी० ३१३२८

हृत्थकंठग [हृत्थकण्ठक] जी० ३४१६

हृत्थकण [हृत्थकर्ण] जी० ३१२१६, २२२ से २२५,
२२६, ३

हृत्थकण्णदीव [हृत्थकर्णदीव] जी० ३१२२२

हृत्थजोहि [हृत्थयोधिन्] ओ० १४८, १४९.

रा० ८०६, ८१०

हृत्थलक्खण [हृत्थलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

हृत्थविलंबिय [हृत्थविलम्बित] रा० ६१

हृत्थविलसिय [हृत्थविलसित] रा० ६१

हृत्थहेसिय [हृत्थहेसित] रा० २८१. जी० ३१४४७

हृत्थतणुय [हृत्थतनुक] जी० १६५

हृत्थय [हृत्थ] रा० २६२ से २६५, २७३, २७७,

४७३. जी० ३१४२५, ४२६, ४३८, ४४३, ५३२

हृत्थि [हृत्थि] रा० २७६. जी० ३१४४५

हृत्थिओभास [हृत्थितावभास] रा० १७०, ७०३.

जी० ३१२७३

हृत्थिकंता [हृत्थिकान्ता] रा० २७६. जी० ३१४४५

हृत्थिकाय [हृत्थिकाय] जी० ३१७४

हृत्थिग [हृत्थिक] जी० ३१३२४

हृत्थिाभ [हृत्थिाभ] जी० ३१८७८

हृत्थिताल [हृत्थिताल] जी० ३१८७८

हृत्थिय [हृत्थि] ओ० ४, ५, ८, १०३, १२६, १३५.

रा० १७०, ७०३. जी० १६६: ३१२७३, २७४

हृत्थिय [भृत्थि] जी० ३१२८५

हृत्थियकाय [हृत्थियकाय] जी० ३१७४

हृत्थियग [हृत्थिक] रा० १५१, ७८२

हृत्थियच्छाय [हृत्थियच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,
७०३. जी० ३१२७३

हृत्थियाल [हृत्थिताल] रा० २८, १६१, २५८, २७६.

जी० ३१२८१, ३३४, ४१६

हृत्थियालिया [हृत्थितालिका] रा० २८

हृत्थियोभास [हृत्थितावभास] ओ० ४

हृत्थिवास [हृत्थिवर्ष] रा० २७६. जी० ४११३, ३२,

५६, ७०, ७२, ६६, १४७, १४६: ३१२२८, ४४५,

७६५

हृत्थिवाहण [हृत्थिवाहन] जी० ३१६२३

हृत्थि [हृत्थि] ओ० २०, २१, ५३, ५४, ५६, ६२, ६३, ७८,

८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४, १६ से १८,

४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७, २७६, २८१,

२६०, ६६५, ६८१, ६८३, ६६०, ६६५, ७००, ७०७,

७१०, ७१३, ७१४, ७१६, ७१८, ७२५, ७२६, ७७४,

७७८. जी० ३१४४३, ४४५, ४४७, ५५५

हृत्थिसय [हृत्थिक] जी० ३१५६३

हृत्थिसिय [हृत्थित] रा० १७३. जी० ३१२८५

हल [हल] ओ० १. जी० ३१११०

हलधर [हलधर] ओ० १३. रा० २६.

जी० ३।२७६

हलिद्रा [हरिद्रा] रा० २८. जी० ३।२८१

√हव [भू]—हवति ओ० १८३. जी० ३।१२

—हवेज्ज ओ० १६५।४.—हवेज्जा

ओ० १६५।१४

हव्व [अर्वाच्] ओ० ५७

हव्वं [अर्वाच्] ओ० १७०. रा० ७२०. जी० ३।८६

√हस [हस्]—हसति रा० १८५.—हसिज्ज

रा० ७८३

हसंत [हसत्] ओ० ६४

हसिय [हसित] ओ० १५, ४६. रा० ७०, ६७२,

८०६, ८१०. जी० ३।५६७

हस्स [हस्व] ओ० १८२, १६५।४

√हाय [हा]—हायइ जी० ३।७३१.—हायति

जी० ३।७२३

हायण [हायन] जी० ३।११८, ११६

हार [हार] ओ० २१, ४७, ५२, ५४, ६३, ६५, ७२,

१०८, १३१, १६४. रा० ८, २६, ४०, १३२,

२८५, ६८७ से ६८६, ७१४. जी० ३।२६५,

२८२, ३०२, ५६२, ६३५, ११२१

हारपुब्बय (पाय) [हारपुट्कपात्र] ओ० १०५,

१२८

हारपुब्बय (बंधण) [हारपुट्कबन्धन] ओ० १०६,

१२६

हारभद्द [हारभद्र] जी० ३।६३५

हारमहाभद्द [हारमहाभद्र] जी० ३।६३५

हारमहावर [हारमहावर] जी० ३।६३५

हारवर [हारवर] जी० ३।६३५

हारवरभद्द [हारवरभद्र] जी० ३।६३५

हारवरमहाभद्द [हारवरमहाभद्र] जी० ३।६३५

हारवरमहावर [हारवरमहावर] जी० ३।६३५

हारवरोभास [हारवरावभास] जी० ३।६३५

हारवरोभासभद्द [हारवरावभासभद्र]

जी० ३।६३५

हारवरोभासमहाभद्द [हारवरावभासमहाभद्र]

जी० ३।६३५

हारवरोभासमहावर [हारवरावभासमहावर]

जी० ३।६३५

हारवरोभासवर [हारवरावभासवर]

जी० ३।६३५

हालिद्द [हारिद्र] ओ० १२. रा० २२, २४, २८,

१२८, १३२, १५३. जी० १।५, १३६; ३।२२,

४५, २८१, २६०, ३२६, १०७५, १०७६

हालिद्दग्ग [हारिद्रक] जी० ३।२८१

हास [हास] ओ० २८, ४६, ५१

हास [हस्व] जी० ३।७८१, ७८२

हासकर [हासकर] ओ० ६४

हिग्गुलथ [हिङ्गुलक] रा० १६१, २५८, २८१.

जी० ३।३३४, ४१६

हिसिप्पयाण [हिसिप्रदान] ओ० १३६

हिसाणुबंधि [हिसानुबन्धिन्] ओ० ४३

हिद्धिमथ [अधस्तन] जी० ३।५

हित [हित] जी० ३।४४१, ४४२

हिम [हिम] रा० २५५. जी० १।६५; ३।११६,

४१६

हिमकूळ [हिमकूट] जी० ३।११६

हिमपडल [हिमपटल] जी० ३।११६

हिमपुब्ब [हिमपुज्ज] जी० ३।११६

हिमवंत [हिमवत्] ओ० १४. रा० १७३, ६७१,

६७६

हियज्जप्पाडियग [उत्पाटितकहृदय] ओ० ६०

हिय [हित] ओ० ५२. रा० १५, २७५, २७६, ६८७

हियय [हृदय] ओ० २०, २१, २७, ५३, ५४, ५६, ६२,

६३, ६६, ७८, ८०, ८१. रा० ८, १०, १२ से १४,

१६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७,

२७९, २८१, २६०, ६५५, ६८१, ६८३, ६९०,

६६५, ७००, ७०७, ७१०, ७१३, ७१४, ७१६,

७१८, ७२५, ७२६ ७५० से ७५३, ७७४, ७७८,

८१३. जी० ३।४४३, ४४५, ४४७, ५५५

हिययगमणिज्ज [हृदयगमनीय] ओ० ६८

हियसूल [हृदयसूल] जी० ३।११६, ६२८

- हिरण्ण [हिरण्य] ओ० २३. रा० २८१, ६६५.
जी० ३।४४७, ६०८, ६३१
- हिरण्णजुत्ति [हिरण्यजुत्ति] ओ० १४६. रा० ८०६
- हिरण्णपाण [हिरण्यपाक] ओ० १४६. रा० ८०६
- हिरण्णवय [हिरण्यवत] जी० ३।२८८
- हिरिलि [दे०] जी० १।७३
- हिरी [ही] रा० ७३२, ७३७, ७७४
- हीण [हीन] ओ० १६५।४. रा० ७७४.
जी० ३।७३
- हीर [हीर] जी० ३।६२२
- हीरय [हीरक] जी० ३।६२२
- हीलणा [हीलना] ओ० १५४, १६५, १६६,
रा० ८१६
- √हृ [भू]—हृति. जी० १।१४
- हृङ् [हृङ्] जी० १।८६, ६५, १०१, ११६; ३।६३,
१२६।३, ४
- हृबज्जु [दे०] ओ० ६४
- हृडुक्क [हृडुक्क] ओ० ६७. रा० १३, ६५७.
जी० ३।४४६
- हृडुक्की [हृडुक्की] रा० ७७
- हृतवह [हृतवह] जी० ३।५६६
- हृयवह [हृतवह] ओ० १६, ४७. जी० ३।५६०
- हृयासण [हृतासन] ओ० २७. रा० ८१३
- हृहुय [हृहुक] जी० ३।८४१
- हृहुयमाण [दे० जाज्वल्यमान] जी० ३।११८
- हेउ [हेतु] ओ० ११६. रा० १६, ७१६, ७४८ से
७५०, ७७३
- हेडा [अधस्] ओ० १३, १८२. रा० ४, २४०.
जी० ३।७७, ८०, ३५६, ४०२
- हेट्टि [अधस्] जी० ३।६६८
- हेट्टिम [अधस्तन] जी० ३।७० से ७२, ११११।३
- हेट्टिमगेविज्ज [अधस्तनग्रैवेय] जी० २।६६
- हेट्टिमगेवेज्जण [अधस्तनग्रैवेयक] जी० ३।१०५६
- हेट्टिममज्झिमिल्ल [अधस्तनमध्यम] जी० ३।७२६
- हेट्टिल्ल [अधस्तन] जी० ३।६०, ६२ से ७१, ७२५,
७२८, ७२९, १००३, १००४, १००७, ११११
- हेट्टिल्लमज्झिल्ल [अधस्तनमध्यम] जी० ३।७२६
- हेट्टिल्लातो [अधस्तनतस्] जी० ३।६६, ७२
- हेमंतिय [हैमन्तिक] ओ० २६. रा० ४५
- हेमजाल [हेमजाल] रा० १३२, १७३, १६१, ६८१.
जी० ३।२६५, २८५, ३०२, ५६३
- हेमण्य [हेमात्मन्] जी० ३।५६५
- हेमवत्त [हैमवत] जी० २।६६, १४७, १४९; ३।७६५
- हेमवय [हैमवत] ओ० ६४. रा० १७३, २७६, ६८१.
जी० २।१३, ३१, ५८, ७०, ७२; ३।२२८, २८५,
४४५
- हेरणवत्त [हैरण्यवत] जी० २।६६, १४७; ३।७६५
- हेरणवय [हैरण्यवत] जी० २।१४६; ३।४४५
- हेर [हेर] जी० ३।६३१
- हेरयालवण [हेरतालवण] जी० ३।५८१
- √हो [भू]—होइ ओ० १६५।५. रा० १३०.
जी० १।१३६—होई. जी० ३।१२६।३
—होड. ओ० १४४. रा० ७३०—होति.
रा० १३०. जी० १।७२—होति. ओ० १६५।८.
जी० ३।१६४—होज्ज. रा० ७५४.
जी० ३।५६२.—होज्जा. रा० ७१८,—होत्था
ओ० १. रा० १
- होत्तिय [होत्रिक] ओ० ६४
- होरंभा [होरम्भा] रा० ७७. जी० ३।५८८
- √ह्रस्वीकर [ह्रस्वी+कृ]—ह्रस्वीकरेज्ज
जी० ३।६६७
- ह्रस्वीकरित्तए [ह्रस्वीकर्तुम्] जी० ३।६६४

शुद्धि-पत्र

पृ०	पं०	अशुद्ध	'शुद्ध
३	१२	बससंडेअं	वणसंडेअं
१६	१७	धम्मोप०	धम्मोव०
१७	६	भगवाओ	भगवओ
२७	७	विउसअमे	विउस्सअमे
३६	३	विह्णि०	विह्णि०
५६	७	तुंबविणिपेच्छा	तुंबविणियपेच्छा
६७	१२	सयमेव	सयमेव
८४	२२	जायमेव	जीयमेव
९३	३	घोसेडिया	घोसाडिया
९३	१२	पोंडरिय०	पोंडरीय०
१०५	२	डिडिमाअ	डिडिमाअ
११६	६	रुच्छ०	अरुच्छ०
२७३	१५	गुब्बअ	हुब्बअ
२९७	१	ऊसित्ता	ऊसित्ता
३१५	११	सुअ	सुअ
३१५	टि० १३ का अन्तिम		'सुवण्णसुअअरययवालुयाओ' इत्ति सुवण्णं—पीतकान्तिहेम सुअ—रूप्यविशेषः रजतं—प्रतीतं तन्मय्यो वालुका यासु ताः सुवण्णसुअअरजतवालुका (मवू)
३२०	पं० ११	०विव्वुइ०	०णिव्वुइ०
३७५	टि० १२	३।६८६	३।८६६
३८१	पं० १६	पत्तयं-	पत्तयं-
४२६	पं० ६	उववेता	उववेता
४५७	पं० ६	वाघाइमे	वाघाइमे
४६५	पं० ६	अणत्तरो०	अणत्तरो०
४७३	पं० ४	तिरविख०	तिरिख०
६७६		पमोकख	पमोकख

